Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नववर्षाङ्क—

श्रीः

त्रैमासिक

श्रीस्वाध्याय

[शरदङ्क]

वर्ष
३
सं० २०००

संख्या
१
आश्विन

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

112786

वार्षिक
मूल्य
३)

इस अङ्क
का मूल्य
१।)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य—

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का मुख्य उद्देश्य है।

सञ्चालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जाएँगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएँगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन ५) रु० से अधिक ५०) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जाएँगे।

श्रीस्वाध्यायके नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य ३) और एक प्रतिका १) रु० है। स्थायी ग्राहक आश्विन से ही बनाये जाते हैं। श्रीस्वाध्यायके स्थायी ग्राहकों को हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें बिना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगी। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक पत्र प्रति वर्ष अपने ग्राहकोंको बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंको विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' मासिक कर दिया जायगा।

(२ जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना पूर्वक मँगवाये जाएँगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचानार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागज़के एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने या न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। जिस अस्वीकृत लेखको सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्रीका व्यय लेखकको भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपाईके नियम—

१ पृष्ठ या दो कालमकी छपाई	२०)	प्रति अङ्क
आधा पृष्ठ या एक कालमकी छपाई	११)	,,
चौथाई पृष्ठ या आधा ,, ,,	६)	,,

पूरे वर्ष या चार अङ्कोंमें एक पृष्ठकी छपाई ६५) रु० होगी।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के पृष्ठका आकार २०×३० अठपेजी। कालम स्थान ८×३ इञ्च है।

आधे पृष्ठसे अधिक विज्ञापन देनेवालोंको 'श्रीस्वाध्याय' बिना मूल्य भेजा जावेगा। छपाईका शुल्क (मूल्य) पहले प्राप्त होने पर ही विज्ञापन पत्रमें छापा जावेगा।

विशेष जाननेके लिए—

व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (पञ्जाब) से पत्र व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112786

श्रीस्वाध्यायके संरक्षक—

क्षत्रियकुल-कमल-दिवाकर बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्त्तण्ड
राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E., सोलन ।

प्रतिदिनमुदीयमानो रंजितदशदिग्वधूवदनचन्द्रः ।
दुर्गासिंहविवस्वान् जयतुतरां श्रीकरोल्लासी ॥

आपका ४३वाँ शुभजन्म-महोत्सव अभी गत ३० आश्विन सौर, ता० १५ सितम्बरको समारोहपूर्वक सुसम्पन्न हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

[त्रैमासिक-पत्र]

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E. सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

सहायक—

श्री १०५ मती माजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाट राज्य।

श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावनवालीजी (भरतपुर)

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंहजी नाहन (सिरमौर)

श्रीमान् कुँवर शिवसिंहजी B. A., L-L. B. सेशन जज सोलन।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कोर्ट आफ वार्ड्स् उदयपुर (मेवाड़)

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा।

सम्पादक—

ज्योतिषमार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न दैवज्ञमणि गणकरत्न

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदा ज्योतिश्शास्त्री

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पञ्जाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ विषय-सूची ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय

श्रीस्वाध्याय—भारतीय इतिहास प्रकाशित करनेका असाधारण साधन है।

श्रीस्वाध्यायको—भलीभांति पढ़ने और समझनेसे मनुष्य स्वावलम्बी, निर्भय, उदार, आर्य एवं व्यवहारकुशल हो कर संसारयात्रामें विजयी हो सकता है।

श्रीस्वाध्यायने—अपने प्रथमाङ्कके साथ ही आगामी वर्ष भरके भारतीय वेधसिद्ध दैनिक सूदमग्रह तथा शर, क्रान्ति, योग प्रतियोग आदि प्रचारित करनेका दृढ़ निश्चय करके महान् लोकोपकार किया है।

श्रीस्वाध्यायके लिए—भारतके प्रसिद्ध विद्वानोंकी सुन्दर सुन्दर सम्मतियाँ और महापुरुषोंके आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं।

श्रीस्वाध्यायसे—भारतीय महान् आदर्श तथा हमारी प्राचीन विद्याओंका पुनरुद्धार होगा।

श्रीस्वाध्यायका—पठन पाठन प्रत्येक प्रकारके उन्नति मार्गका प्रबोधन करायेगा।

श्रीस्वाध्यायमें—राष्ट्रको स्वतन्त्र करनेके प्रत्येक वैध उपायोंके साथ दर्शन, अर्थशास्त्र, ज्यौतिष-गणित-फलित-मुहूर्त, संस्कार, व्रतोत्सवादि निर्णय, दायभागादि धर्मशास्त्र निर्णय, सामाजिक व्यवस्थाएँ, संसारकी सामाजिक-धार्मिक-राजनैतिक व व्यापारिक परिस्थिति पर महत्त्वपूर्ण चमत्कारी भविष्य-वाणियां, आयुर्वेद, भूगोल, खगोल, महापुरुषोंके जीवन-चरित्र, विज्ञानके चमत्कार, ग्रन्थ-परिचय समालोचन इत्यादि विषयों पर अनुभवी विद्वानोंके गम्भीर लेख प्रकाशित होते हैं।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षण वर्ग किस दृष्टिसे देखता है--

'श्रीस्वाध्याय' पर प्राप्त हुई सम्मतियोंमेंसे भारतके सम्मानित धुरन्धर विद्वानों एवं राष्ट्रिय प्रसिद्ध पत्रोंकी सम्मतियाँ वा समालोचनाएं प्रथम और द्वितीय वर्षके गताङ्कोंमें क्रमशः प्रकाशित की गई थीं। गत ग्रीष्माङ्क प्रकाशित होनेके अनन्तर प्राप्त हुई अनेकों सुविख्यात साहित्यिक विद्वानोंकी सम्मतियोंमेंसे कुछ एकका संक्षिप्त भाग यहाँ और देखिये—.

जोधपुर-राज्य-पुरातत्त्वान्वेषण-विभागके अध्यक्ष इतिहासके सुप्रसिद्ध विद्वान् महामहोपाध्याय श्री पं० विश्वेश्वरनाथजी रेऊ लिखते हैं—

"श्रीस्वाध्याय" अपने ढंगका सुन्दर और श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्र है। इसमें अधिकतर ज्ञातव्य और मननयोग्य विषयोंको स्थान दिया जाता है। हम इसके संस्थापक श्रीमान् अमृतवाग्भवजी आचार्य और सम्पादक श्री पं० हरदेवशर्माजी त्रिवेदीको ऐसे सर्वाङ्गसुन्दर पत्रको प्रकाशित करनेके लिए हार्दिक धन्यवाद देते हैं। आशा है भारतवासी विद्वान् और श्रीमान् लोग इसे अपना कर इसकी उन्नतिमें सहायक होंगे।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके भू०पू० अध्यक्ष, काश्मीर राज्यकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य श्री पं० अमरनाथजी काक लिखते हैं—

मुझे "श्रीस्वाध्याय" पढ़ कर बहुत हर्ष हुआ। इन अङ्कोंमें जो लेख प्रकाशित हुए हैं वे भाषा तथा भावोंकी दृष्टिमें उच्चकोटिके हैं। वे लेख सारगर्भित होनेके अतिरिक्त बड़ी सुन्दर और सरल भाषामें लिखे हुए हैं।..............ऐसे पत्रोंकी आधुनिक समयमें बहुत आवश्यकता है। हमारी प्राचीन संस्कृति सभ्यता विद्या तथा विज्ञान लुप्त हो रहे हैं। आधुनिक समयके भारत निवासियोंमें अधिकांश लोगोंको विदित ही नहीं कि उनका भूतकाल कैसा उज्ज्वल था। उनकी सभ्यता और संस्कृति क्या थी और उनके पूर्वज विज्ञान और विद्यामें क्या उन्नति प्राप्त कर चुके थे ? ये सब बातें वे शास्त्रोंके स्वाध्यायसे जान सकते हैं; परन्तु अधिकांश लोग संस्कृत नहीं जानते। अतः उस सभ्यता, संस्कृति, विद्या और विज्ञानकी रक्षा और प्रचारका एक मात्र साधन यह है कि शास्त्रोंमें बताई हुई बातोंको वास्तविक रूपमें हिन्दी भाषा द्वारा लोगोंमें पहुंचाया जाय। यही लक्ष्य "श्रीस्वाध्याय" का है। इस प्रकारके पत्रोंसे मृतप्राय भारतीय-संस्कृतिका पुनरुत्थान सम्भव है। इसलिए भारतीय-संस्कृतिके प्रेमियोंको "श्रीस्वाध्याय" पत्रकी सहायता अवश्य करनी चाहिए। यह पत्र अध्यापकों, प्रचारकों तथा विद्यार्थियोंके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। इस पत्रके संचालकोंका यह प्रयत्न बहुत प्रशंसनीय है।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
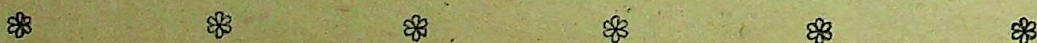
संस्कृत साहित्य वैदिक वाङ्मय और इतिहासके प्रकाण्ड-पण्डित, आर्यजगत्के ख्याति-प्राप्त विद्वान् पुरातत्वान्वेषक श्री भगवद्दत्तजी बी० ए० लिखते हैं—

"……… …… आपके "श्रीस्वाध्याय" का पाठ उसके आरम्भ दिनसे ही कर रहा हूँ। मुझे आशा नहीं थी कि इस अत्यन्त उपयोगी त्रैमासिकके प्रकाशनमें आप इतने सफल होंगे। इसकी भाषाका सौष्ठव, इसके विचारोंका उत्कर्ष, इसके विषयोंका वैलक्षण्य और इसका आर्य-संस्कृतिका संरक्षण मुझे अधिकाधिक आकर्षित करते आ रहे हैं। आपके पत्रके लेखोंमें भारतीयता मिलती है और योरूपीय छापका अभाव है। आपके पत्रके साथ विद्वद्वर श्री आचार्य अमृतवाग्भव जी महाराजका सम्बन्ध अत्यन्त श्रेयस्कर है। उनके नेतृत्वमें आपका पत्र निश्चय ही सदा उन्नतिकी ओर अग्रसर रहेगा। नए वर्षमें पदार्पणके लिए आपको हार्दिक बधाई हो।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

विद्याविभाग (कांकरोली) के संचालक संस्कृत-साहित्यके सुकवि और प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० कण्ठमणिजी शास्त्री लिखते हैं—

"…………वास्तवमें आपका प्रयत्न श्लाघ्य है। हिन्दी क्षेत्रमें प्रस्तुत विषयका पत्र प्रकाशित कर उसके एक आवश्यक अङ्गकी पूर्तिका प्रशंसनीय उद्योग किया है। जिसके लिए आप तथा उसके संचालक धन्यवादार्ह हैं। प्रत्येक अङ्कके लेख कविता आदि मननीय पठनीय हैं, जिनमें प्रत्येक विषय अपने मौलिक ढंगसे अतिशय उपादेयताको प्राप्त करता है। ऐसे कठिन समयमें भी पत्रका संचालन करते रहना एक बड़े साहसका कार्य है, जिसमें आपकी हार्दिक साहित्यिक लगनका दर्शन होता है…………।"

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

अर्थशास्त्र समाजशास्त्र और राजनीतिके सुप्रसिद्ध विद्वान्, कई ग्रन्थोंके यशस्वी लेखक, भारतीयग्रन्थमाला प्रयागके अध्यक्ष, श्री भगवानदासजी केला लिखते हैं—

"…………आपके 'श्रीस्वाध्याय' के अङ्क मैंने अवलोकन किये।……लेख मुझे काफी पसन्द आये, विशेषतया शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति सम्बन्धी। "कालाय तस्मै नमः" (दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र) भी ज्ञान पूर्ण है। आप पंजाबमें राष्ट्र-भाषाके प्रचारके लिए जो प्रयत्न कर रहे हैं, उसकी हृदयसे सराहना करता हूँ। आशा है कि आपको अन्य सज्जनों का यथेष्ट सहयोग प्राप्त होगा…………।"

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

हिन्दी और संस्कृत-साहित्यके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० हनुमान् शर्मा जी लिखते हैं—

"…………'श्रीस्वाध्याय' अवश्य ही स्वाध्याय करने योग्य है। इसके सभी विषय सर्वसाधारणसे ले कर विद्वान् पर्यन्तके ज्ञान और विज्ञानको बढ़ाने वाले, पठनीय, मननीय और संग्रहणीय हैं। कागज, छपाई, संपादन और शुद्धता आदि सराहनीय हैं। इतने पर भी मूल्य स्वल्प और काम तृप्ति कारक। यह सोनेमें सुगन्ध अथवा आपकी उदारता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भली-भांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन २ विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क, माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मंदी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थाकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमायें नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन २ अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियां आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (हेमन्ताङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

सङ्कष्ट-चतुर्थी, षट्तिला एकादशी, श्रीसीता जयन्ती, श्री महाशिवरात्रि, राष्ट्रियपर्व होली, बसन्त, भक्तवर प्रह्लादका संक्षिप्त जीवन-चरित्र, श्रीरामकृष्ण परमहंस तथा श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके महान् आदर्श जीवन पर स्वतन्त्र विचार, आदि आदि—

सब लेख कार्तिक शु० १५ ता० ११ नवम्बर १९४३ पर्यन्त "सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पञ्जाब)" इस पते पर पहुंचना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः । स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

[शरदंक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष	सोलन, आश्विन शु० १० शुक्रवार	संख्या
३	सं० २००० वि०	१

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

श्रीस्वाध्यायकी महिमा

[महामहोपाध्याय श्री० पं० परमेश्वरानन्दजी विद्याभास्कर]

धर्मब्रह्मरहस्यमस्ति मनुजाश्चेद् वो विजिज्ञासितं
वेदैतिह्यमनिन्द्यमार्यजनुषां भूम्नाऽनुसंधित्सितम् ।
सत्साहित्यसमुद्रवीचिनिचये चेत् साधु सिस्नासितं
श्रीस्वाध्यायमहर्निशं हरकृपोद्भासं तदाभ्यस्यत ॥

[प्रिय (श्रीस्वाध्यायके प्रेमी) सज्जनों ! धर्म तथा ब्रह्मके रहस्यको जाननेकी और अनुभूत करनेकी यदि आप लोगोंको इच्छा है, आर्यकुलोत्पन्न पुरुषोंके संसारश्रेष्ठ वेद तथा इतिहासका भलीभांति अनुसन्धान करनेकी यदि आप लोगों को इच्छा है, सुन्दर तथा हितकारक साहित्य-समुद्रके तरङ्ग-समुदायोंमें सम्यक् प्रकारसे अवगाहन कर पूर्ण पवित्र होनेकी यदि आप लोगोंकी इच्छा है तो हर कृपासे प्रकाशित होने वाले इस 'श्रीस्वाध्याय' का प्रतिदिन अभ्यास करिये ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय वर्षमें पदार्पण

**कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।
तमारोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वाः ॥ (अथर्व०)**

काल रूपी अश्वकी सरपट चालके बीच दो वर्ष जलके बुलबुलेके समान भी नहीं है, और उस समय जब कि भगवान्की "कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः" यह प्रलयङ्करी वाणी समस्त संसारमें श्रावणके काले बादलोंकी भीम गर्जनाके समान सुनाई दे रही है। हमारे अपने राष्ट्रमें ही जब अकाल (दुर्भिक्ष) और रोग मुँह बाये खड़े हैं, बंगालसे 'हा अन्न, हा अन्न' की करुण-ध्वनि आ रही है, उस समय 'श्रीस्वाध्याय' के सफलता पूर्वक बीते दो वर्षोंकी विपद्-कथा सुनाना कहाँ तक संगत होगा ?

हमने गत दो वर्षोंमें 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा जो सेवा की है, उसका मूल्याङ्कन करनेका हमें कोई अधिकार नहीं। परन्तु हम यह अवश्य कहेंगे कि हिन्दी-साहित्य के इतिहासमें हमने एक नया मार्ग चुना है। यह ऐसा पथ है जिस पर चलनेका इससे पूर्व और किसी ने इस रूपमें साहस नहीं किया। यदि हमारे महा-मान्य संरक्षकोंकी सक्रिय उदार सहायता, आचार्य चरणोंका वरदहस्त शुभाशीर्वाद एवं विद्वान् लेखकों और प्रेमी पाठकोंका प्रेमपूर्ण सहयोग भविष्यमें भी इसी प्रकार बना रहा तो विश्वास दिलाते हैं कि सेवाके इस स्वीकृत पथसे हम कदापि विचलित न होंगे।

दूसरे वर्षके प्रथमाङ्कमें हमने अपना ध्येय बताते हुए लिखा था कि—"जनताकी रुचिकी अपेक्षा उसके हितका ध्यान रखना ही राष्ट्रकल्याणका जीवित मार्ग है।" हमने यह भी निवेदन किया था कि—'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' तथा 'अप्रियस्य च पथ्यस्य श्रोता वक्ता च दुर्लभः' इसी कण्टकाकीर्ण मार्गको अपनानेके कारण असिधारा पर चलते हुए हमें अनेक विघ्नबाधाएँ झेलनी पड़ीं और उस समय यह प्रतीत होने लगा कि अब हम अपना कर्तव्य वास्तविक रूपमें पालन न कर सकेंगे। परन्तु ऐसे कठिन समयमें भी महामाया जगदम्बाने हमारी रक्षा की; उसीका यह सुफल है कि 'श्रीस्वाध्याय' आज इस अङ्कसे अपने तीसरे वर्षमें पदार्पण कर रहा है।

इन दो वर्षोंके स्वल्प-से समयमें ही 'श्रीस्वाध्याय' इतना लोकप्रिय और विद्वानोंकी दृष्टिमें आदरका पात्र बन गया है कि कई सहृदय महानुभाव इसे शीघ्र ही मासिक रूपमें देखना चाहते हैं। हमारा भी आरम्भसे यही (मासिक करनेका) सङ्कल्प रहा है, किन्तु अपना प्रेस हुए बिना और कागजकी वर्तमान दुष्प्राप्यता और अत्यधिक महर्घतामें अभी यह सम्भव नहीं दीखता। हम अपने उन प्रेमी पाठकोंसे इस अवसर पर यही निवेदन करना चाहते हैं कि वे भी हमारी भांति अनुकूल अवसरकी प्रतीक्षा करें और उस अवसरको लानेमें यथाशक्ति सहयोग दें।

इस तीसरे वर्षमें 'श्रीस्वाध्याय' को हम यथाशक्ति और अधिक लोकोपयोगी और राष्ट्रकल्याणकारी बनानेका प्रयत्न अवश्य करेंगे। गताङ्ककी सूचनाके अनुसार वर्तमान विषम-परिस्थितिमें भी यह 'नव-वर्षाङ्क' विशेषाङ्कके रूपमें पाठकोंको समर्पित है। इसके सम्पादनमें हम कहाँ तक सफल हो सके हैं इसका निर्णय महाकवि कालिदासके—

'आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥'

इन शब्दोंको दुहराते हुए सहृदय पाठकों पर ही छोड़ते हैं।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी
(सम्पादक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके संरक्षक—

राघराजा कैप्टन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी, भरतपुर।

मङ्गलरूपो भास्वान् गुरुकविबुधसेवकः पुरुषसोमः।
गिरिधारीशरणसिंहो जयतुतरां रावराजोऽसौ ॥

आपका ३१वाँ शुभजन्मोत्सव अभी गत भाद्रपद शुक्ला १४ सोमवार ता० १३ सितम्बरको सुसम्पन्न हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तिपूजा

स्वातन्त्र्याऽऽप्तिः साधनामन्तरा नो स्वातन्त्र्याऽऽप्तौ साधना शक्तिपूजा।
कल्याणानि प्राणिनां सैव सूते तस्मात् कार्या सा सदा साऽनुभावैः ॥

[साधनाके बिना स्वातन्त्र्यकी प्राप्ति नहीं होती, स्वातन्त्र्यकी प्राप्तिमें शक्तिपूजा ही साधना है। प्राणियोंके प्रत्येक प्रकारके कल्याणको उत्पन्न करना यह शक्तिपूजाके ही अधिकारमें है, इसलिए सत्पुरुषोंके निश्चित किये हुए इस सिद्धान्तको समझनेवाले महापुरुषोंको चाहिए कि वे सर्वदा शक्तिकी पूजा करें, तभी वे समस्त संसारका कल्याण कर सकेंगे।]

शक्तिपूजा स्वाभाविक है। इतनी स्वाभाविक कि जितनी वस्तुमें वस्तुत्वकी स्थिति। घट शब्द वैखरी वाणीसे उच्चारित होनेसे पहले ही घट-वस्तुका प्रतिभास होने लग जाता है। परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी चारों प्रकारकी वाणी वस्तुकी अभिव्यञ्जनामें निरन्तर लगी रहती है। शक्ति सर्वात्मरूप है। इसका सम्बोध वाणीको भी है, इसीलिए उसकी अभिव्यञ्जना निरन्तर करती हुई वाणी कभी थकती नहीं, उसे शक्तिपूजा अत्यन्त प्रिय है। जो जितना ही सन्निकट हो कर शक्तिकी पूजा करेगा शक्ति भी उसका उतना ही अधिक अभ्युदय करती है। आत्मभावके साक्षात्कारमें इसी कारण तारतम्य हो जाता है।

मूल वस्तु एक होने पर भी अनाद्यनन्त महिमा होनेके कारण वह अपने आपका अनन्त प्रकारसे साक्षात्कार करती रहती है। उसे पूर्णरूपसे विज्ञात है कि मैं सर्वशक्तिस्वरूप हूं। तिरस्कार तथा पुरस्कार दोनों ही भावोंसे वह अपने आपका पूजन करती रहती है। जीवानन्दनाथ तथा शिवानन्दनाथ नामसे अभिहित अपने स्वरूपोंको वह समान रूपसे प्यार करती है। उन्हें परखती है तथा आत्मसात् करती है। उसे आत्मपूजासे अत्यन्त प्रेम है। उसका सारा ही जीवन आत्मपूजामय है। वह प्रत्येक प्रकारके अनन्तानन्तस्वरूपोंमें विराजती है। परन्तु उसे आत्मविस्मृति स्पर्श भी नहीं करती। कदाचित् वह यदि स्पर्श कर ही ले तो वह भी आत्मस्वरूप हो कर पूर्ण आत्मविज्ञ हो रहती है। वैखरीका आधिपत्य जाग्रज्जगत्में, मध्यमाका स्वाप्नजगत्में, पश्यन्तीका सौषुप्तजगत्में तथा पराका तुर्यामें सीमित है। यों तो आत्मस्वरूपातिरिक्तकी शंका ही नहीं होती, इसलिये सब कुछ आत्मस्वरूप ही है। पुनरपि आत्म-क्रीड़ामें कुछ रूप शरीर तथा कुछ शरीरी स्थापित किये गये हैं। उनमें शरीर बाह्य तथा शरीरी आन्तर सम्बोधित होते रहते हैं; इसी कारण शरीरी आत्माके सन्निकट हैं, तथा शरीर आत्मासे उनके अपेक्षया कहीं दूर। शरीरकी आराधना करनेवाले बहिर्मुख होनेके कारण शक्तिके बाहरी रूपोंको ही सर्वस्व समझते हैं। वे शक्तिरूप अधिक स्थिर न होनेसे अपने उपासकोंको स्थिर शान्ति भी नहीं दे सकते। शक्तिके शरीरीरूप पूर्वापेक्षया कुछ स्थिर होनेसे कुछ स्थिर शान्ति अपने उपासकोंको दे सकते हैं। शरीरी-रूपोंके आराधकगण पहलेसे कुछ अन्तर्मुख अधिक होते हैं, इसीलिए उन्हें अधिक शान्ति प्राप्त हो सकती है। दैवी सम्पत्तिशाली शान्तिप्रिय होते हैं, एवं आसुरी सम्पत्तिवाले अशान्तिकारक होते हैं। करते तो दोनों ही शक्तिपूजा ही हैं, केवल पूजाकी विधिमें एक दूसरेसे भेदभाव रखते हैं। इसी भेदने किसीको साधु तो किसीको खल बनाया है। शक्तिपूजासे शक्तिका अनुग्रह होता है। यदि शक्ति-पूजक साधु आर्य होगा तो सबको सुखी करेगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं स्वयं भी सुखी हो रहेगा। खल अथवा अनार्य शक्तिपूजक सबको दुःखी करता रहता है, अतएव अन्तमें स्वयं भी दुःखी होगा। खलोंकी शक्तिपूजा लोककल्याणके स्थानमें लोकपीड़न ही करती है। नीतिकारोंने कितना सुन्दर कहा है :—

विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परिपीड़नाय।
खलस्य, साधोर्विपरीतमेतत्
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

[खलकी विद्या विवाद के लिए, धन अभिमानके लिए तथा शक्ति दूसरों को पीड़ित करनेके लिए ही उपयुक्त होती है। इसके सर्वथा विपरीत साधुकी विद्या ज्ञानके लिए, धन दानके लिए और शक्ति दूसरोंका संरक्षण करनेके लिए ही उपयुक्त होती है।]

शक्तिपूजक शक्तिस्वरूप हो रहते हैं। सृष्टि-स्थिति-प्रलयकारिता शक्तिपूजकका अपना स्वभाव है। विनयशील शक्तिपूजक विजयी तथा समस्त कल्याणकारक हो कर सबको स्वतन्त्र करता है, तथा अविनयशील शक्तिपूजक समस्त-नाशकारक हो कर सबको परतन्त्र करके अपनेको भी परतन्त्र करता हुआ अन्तमें अपनेको भी नष्ट कर बैठता है। विनयशीलको ही आर्य कहना चाहिए। उससे अन्य सभी अनार्य हैं। श्रीराष्ट्रालोकमें आर्योंका लक्षण यों किया है :—

निग्रहानुग्रहाभ्यां ये निर्लोभाः समदर्शिनः।
समुन्नयन्ति संसारं त एवाऽऽर्याः स्मृता बुधैः॥

[ज्ञानवान् पुरुषोंकी स्मृतिमें वे ही आर्य कहे जा सकते हैं जो संसारकी सम्यक् उन्नति करते हैं। जिनका लोभ पूर्णरूपसे विनष्ट हो चुका है, जो समस्त संसारके स्वभावसे पूर्ण परिचित होते हैं अत एव समस्त संसारका यथोचित परिचय करानेमें जिन्हें पूर्ण स्वातन्त्र्य प्राप्त है, इसीलिए वे निग्रह (दण्ड) तथा अनुग्रह (दया) दोनोंसे पूर्ण होते हैं और दोनों प्रकारकी शक्तियोंका सदुपयोग संसारकी समुन्नतिके लिए ही करते हैं।]

आर्योंकी शक्तिपूजा ही सबको सुख दे सकती है, अत एव आर्योंको चाहिए कि वे निरन्तर आत्मशक्तिकी पूजा करें और उससे सबको सुखी करें। उससे सब कुछ प्राप्त हो सकता है। इन्द्रादि देवगण शक्तिपूजा करते हुए उससे क्या क्या प्राप्त होता है, इस विषय में उन्हींका कहना देखिये क्या है :—

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥

[हे जगदम्ब! आप जिन पर प्रसन्न होती हैं उन्हें किस बातकी अपूर्णता रह सकती है? आपकी प्रसन्नता उनका प्रत्येक प्रकारका अभ्युदय करती है, जनपदोंमें वे सम्मानित होते हैं, नाना प्रकारके धन उन्हें प्राप्त होते हैं, सुन्दर अनेक प्रकारका यशोलाभ उन्हें छोड़कर किसे हो सकता है? धर्म अर्थ तथा काम इस त्रिवर्गके साधन और फलोंके उपभोगमें कभी उन्हें बाधाका साम्मुख्य नहीं करना पड़ता। उनके निर्मित शासनके नियमोंको तोड़ना यह साधारण पुरुषोंके हाथकी बात नहीं। वे ही सब प्रकारसे संसारमें धन्य कहे जा सकते हैं, उनके घरमें पुत्र भृत्य तथा दाराकी समृद्धि निरन्तर बनी रहती है।]

'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकों! वर्तमान संसारकी परिस्थिति देखकर किस आर्य पुरुषका हृदय प्रस्विन्न न होगा? स्वातन्त्र्यके बिना संसार सुखी नहीं हो सकता, तथा स्वातन्त्र्य बिना विधियुक्त आत्मशक्तिके पूजनके प्राप्त नहीं हो सकता। प्रत्येक राष्ट्रमें यावत्पर्यन्त स्वातन्त्र्य न प्रतिष्ठित होगा तावत्पर्यन्त संसारमें शान्ति प्रतिष्ठित नहीं हो सकती। स्वातन्त्र्य-प्रतिष्ठाके लिए प्रत्येक राष्ट्रको आर्यविधया शक्तिपूजा अवश्य करनी होगी, अनार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधया शक्तिपूजा करनेवाले संसारमें अशान्तिको ही उत्पन्न करते रहते हैं इस बातको कहनेकी अधिक आवश्यकता ही नहीं। उनकी शक्तिपूजा उनके बहिर्मुख होनेके कारण राज्यवाद संघवाद तथा व्यक्तिवाद जैसे उत्तरोत्तर अधिकाधिक घोरसे घोर अशान्तिजनक वातावरण उत्पन्न करती रहती है, जिनसे समस्त संसारको विनाशका ग्रास होना ही पड़ता है। वर्तमान-कालिक महायुद्धने अनार्यविधिसे शक्तिपूजाके रहस्य तथा फलको प्रकट कर ही दिया है। अतः प्रत्येक राष्ट्रियको चाहिए कि वह प्रत्येक राष्ट्रस्वातन्त्र्यके योगक्षेमके लिए विधियुक्त शक्ति-पूजा करे तथा उसका सदुपयोग ही करे। अपने राष्ट्र-स्वातन्त्र्यकी योगक्षेम-चिन्ता पहले किये बिना दूसरोंकी चिन्ता अथवा दूसरोंकी सहायता आत्म-विवञ्चनामात्र होगा। परवञ्चककी अपेक्षया आत्म-वञ्चक महान् अपराधी होता है, ऐसा त्रिकालदर्शी महर्षियोंका सिद्धान्त है। उनका कथन है कि आत्म-हत्या ब्रह्महत्यासे भी भयानक पाप है। पापीको सुख नहीं प्राप्त हो सकता, परतन्त्रको पुण्यकी प्राप्ति कहां? पुण्यवान् ही सुखी होनेका अधिकारी है। स्वातन्त्र्य-प्राप्तिके लिए जो शक्तिपूजा की जाती है सर्वाधिकपुण्यजनकता उसी शक्तिपूजाके अधि-कारकी बात है। सुखकी प्राप्ति स्वातन्त्र्यके बिना कभी नहीं हो सकती, इस विषयमें आत्मविलासमें कितना सुन्दर लिखा है देखिये:—

सुखाप्तिवाञ्छा हृदये वर्तते यदि यत्यताम्।
पूर्णस्वतन्त्रताप्राप्त्यै सैव पूर्णसुखप्रदा॥

[सुख प्राप्त करनेकी इच्छा यदि हृदयमें है तो पूर्ण स्वतन्त्रताकी प्राप्तिके लिए यत्न करिये, पूर्ण स्वतन्त्रता ही पूर्ण सुख दे सकती है।]

स्वातन्त्र्य प्राप्तिका सर्वश्रेष्ठ उपाय, श्रीराष्ट्रालोकमें यों वर्णित हुआ है—

स्वातन्त्र्यं भिक्षया नैव कदाचिदपि लभ्यते।
योगक्षेमसमर्थैका राष्ट्रशक्तिः प्रभाविनी॥

[भीख मांककर किसी कालमें भी स्वातन्त्र्यकी प्राप्ति नहीं हो सकती। प्रभाविनी राष्ट्रशक्ति ही योग (अप्राप्त वस्तुका प्राप्त करना) तथा क्षेम (प्राप्त वस्तुका संरक्षण) में सर्वोपरि सामर्थ्य रखती है।]

प्रिय पाठकवृन्द! भारतकी स्वतन्त्रताके लिए विधियुक्त आत्मशक्तिकी पूजासे उत्तम और क्या उपाय हो सकता है? अतः प्रत्येक भारतीय शक्ति-पूजामें संलग्न हो यही आत्मशक्तिके आगे नम्र निवेदन है। शिवमस्तु।

—अ० वा० आचार्य

प्रभुसे!

(कवयिता— श्री पं० चम्पालालजी विशारद कविशेखर 'मञ्जुल')

हम आएँगे भारतमें फिरसे बढ़ जाएँगे पापके पुञ्ज जभी।
इसी बातकी आशासे शान्त बने सहते ही रहे दुख द्वन्द्व सभी॥
जब 'मञ्जुल' विश्वमें पूर्णतया सुखके सब साधन प्राप्त अभी।
फिर जायगी क्या इस देश पै भी करुणानिधि कोर कृपाकी कभी॥१॥

पय पीकर पामर पन्नगोंके विषदन्त कभी किल जाएँगे क्या?
सभी देके निरन्तर यातनाएँ हिय पापियोंके हिल जाएँगे क्या?
कवि 'मञ्जुल' वारिके शोषणसे कुल पङ्कजके खिल जाएँगे क्या?
बिन आयुध जेलके सींखचोंसे अधिकार हमें मिल जाएँगे क्या?॥२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* मोक्ष *

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०]

मानव जीवनके चार ही मुख्य प्रयोजन माने जाते हैं। १ धर्म, २ अर्थ, ३ काम, ४ मोक्ष। इनमेंसे धर्म अर्थ और काम नश्वर हैं, दुःख सहित हैं और इनसे चिरस्थायी सुखकी प्राप्ति नहीं होती है। एक स्थावर पौदेसे लेकर ब्रह्मादि देव पर्यन्त सभी अनन्त सुखको चाहते हैं और इसके लिए प्रयत्न भी करते हैं। इस कारण अनन्त सुखकी प्राप्तिके निमित्त प्रत्येक जीवधारीको मोक्षके लिए ही प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि मोक्षसे ही अनन्त सुख मिलता है। अतः मोक्ष ही सर्वोत्कृष्ट है। यह भारतीय दार्शनिकोंका सिद्धान्त है। इस मोक्षके विषयमें भिन्न-भिन्न शास्त्रकारोंके भिन्न-भिन्न मत हैं। उन मतोंको संक्षेपसे समझा कर मोक्षके पारमार्थिक स्वरूपका वर्णन इस लेखमें किया जाएगा।

मीमांसक तो चोदना (प्रेरणा) स्वरूप धर्मका ही व्याख्यान करते हैं। उन्होंने केवल कर्मका ही उपदेश किया है, मोक्षका नहीं। कर्मसे स्वर्गादिकी प्राप्ति होती है। परन्तु वह स्वर्ग भी नश्वर है। कर्मफलके क्षीण होने पर जीवको पुनः जन्म-मरणके संसृति-समुद्रमें गोते खाने पड़ते हैं। इस कारण विद्वानोंने कर्मसे बढ़ कर उपासनाको और उससे भी बढ़ कर उपासनाके फल ज्ञानको माना है। ज्ञानसे ही जीव मुक्त हो जाता है। यह सभी भारतीय दार्शनिक मानते हैं। इनमेंसे एक सम्प्रदाय है जिस को तौष्टिक कहते हैं। इसके दो मुख्य भेद हैं—१ विदेह और २ प्रकृतिलय। विदेह नामक साधु तो भूत तथा इन्द्रियोंको ही आत्मा मानते हैं। इस कारण वे इनकी ही उपासना करते करते इनमें ही लीन हो जाते हैं। लीन होने पर ये लोग देहसे और जन्ममरणादि दुःखोंसे छूट जाते हैं, परन्तु वासना सहित अन्तःकरणसे नहीं छूट सकते। क्योंकि वासना सहित अन्तःकरण आत्मतत्त्वके ज्ञानके बिना छोड़ता नहीं। प्रकृतिलय उनको कहते हैं जो कि पञ्चतन्मात्रोंको, अहङ्कारको, बुद्धिको अथवा मूल प्रकृतिको आत्मा मानते हैं। अतः इन तत्त्वों की उपासना करते करते ये इन प्रकृति-तत्त्वोंमें ही लीन हो जाते हैं। ये लोग भी आत्मतत्त्वके यथार्थ-ज्ञानके अभावके कारण सर्वथा मुक्त नहीं होते। अन्तःकरण इनको भी नहीं छोड़ता। अन्तःकरण वासनाओंसे वासित होता है, इस कारण कुछ समय के अनन्तर ऐसे जीवोंको संस्कारकी प्रबलताके कारण पुनः संसृति-सागरमें डाल देता है, क्योंकि अन्तःकरणका यह स्वभाव ही होता है। अतः इनका मोक्ष अनन्त नहीं होता है। उसकी नियमित अवधि है। इस लिए यह मोक्ष पारमार्थिक तथा पूर्ण मोक्ष नहीं कहा जा सकता।

इसी कारण सांख्य-शास्त्र-कार कहते हैं कि प्रकृति और पुरुष (आत्मा) के विवेकसे ही मोक्ष होता है। जब तक यह विवेक प्राप्त न हो तब तक पुरुष सर्वथा और सर्वदाके लिए मुक्त नहीं होगा। तब तक यतः कुतश्चित् अर्थात् किसी किसी पदार्थसे ही मोक्ष होगा, सर्वतः अर्थात् सब क्लेशोंसे मोक्ष होना असम्भव है। प्रकृति पुरुषके विवेक द्वारा यह पूर्णतया विज्ञात होता है कि मैं (अर्थात् पुरुष) सर्वथा मुक्त तथा पुष्करपलाशकी भांति निर्लेप हूँ। धर्म अधर्म, सुख दुःख आदि सभी प्रकृतिके स्वभाव हैं, मेरे नहीं। इस कारण मैं सर्वथा असङ्ग तथा मुक्त हूँ। इसी अवस्थाको योगदर्शनकारने समाधिकी अवस्था कहा है। उन्होंने इस विषयमें सूक्ष्मतर विचार करके यह बताया है कि ऐसी समाधिके अनन्तर निर्बीज समाधि अर्थात् निर्विकल्प समाधि होती है जिसमें यह ख्याति भी नहीं रहती। केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषका चैतन्यस्वरूप ही अवशिष्ट रहता है। इसी अपने स्वरूपमें विश्रान्तिको ही उन्होंने मोक्ष कहा है। इस मोक्षके उन्होंने कई उपाय बताए हैं जिनको अष्टाङ्ग-योग कहते हैं। इस अष्टाङ्गयोगमें ध्यान, धारणा द्वारा ईश्वरकी उपासना की जाती है और उसीसे फिर क्रमशः सविकल्पक तथा निर्विकल्पक समाधि सिद्ध होती है। इस प्रकारसे सर्वदा तथा सर्वथा क्लेशोंकी निवृत्तिको ही मोक्ष कहा गया है।

इसी प्रकारका मोक्ष नैयायिक भी मानते हैं। उनका भी यही मत है कि आत्माको समस्त दुःखोंसे छुटकारा प्रमेय प्रमाणरूप पदार्थोंके यथार्थज्ञान द्वारा ही मिलता है। दुःखाभावको ही आनन्द श्रुतियोंमें कहा गया है। जैसे कोई बड़े भारी बोझ से पीड़ित हो तो बोझको फेंक देनेके अनन्तर वह अपने आपको सुखी समझता है। पर वस्तुतः उस को दुःखाभावके अतिरिक्त कोई और सुख प्राप्त नहीं होता। दुःखाभावको ही वह सुख समझता है।

बौद्धोंका भी यही सिद्धान्त है। वे भी दुःखाभावको ही मोक्ष मानते हैं। वे तो अभावसे भावकी उत्पत्ति मानते हैं। उनका यह सिद्धान्त है कि ज्ञान द्वारा जीव अभावमें ही लीन हो जाता है। इस कारण उसे पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता। वे तो 'आत्मा है' ऐसा भी नहीं मानते। क्षणिक विज्ञानको ही वे आत्मा मानते हैं। वह क्षणिक विज्ञान नए नए क्षणिक विज्ञानको उत्पन्न करता रहता है जब तक कि उसे उपासनादिके द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है। फिर उस क्षणिक विज्ञानकी धारा समाप्त हो कर अभावमें ही लीन हो जाती है, अतः जन्मादि किसका हो ? इनको तो सांख्यादि शास्त्रोंमें प्रकृतिलयोंमें ही गिना गया है। क्योंकि ये लोग भी क्षणिक विज्ञान अर्थात् बुद्धिको ही आत्मा मानते हैं और उसीकी उपासना द्वारा उसीमें वस्तुतः कुछ समयके लिए लीन हो जाते हैं। इस कारण इनका मोक्ष भी अनन्त मोक्ष नहीं कहा जा सकता। इस प्रकारके मोक्ष वादियोंके ही विषयमें वायुपुराणमें कहा हुआ है :—

दशमन्वन्तराणीह तिष्ठन्तीन्द्रियचिन्तकाः।
भौतिकास्तु शतं पूर्णं सहस्रं त्वाभिमानिकाः॥
बौद्धा दश सहस्राणि तिष्ठन्ति विगतज्वराः।
पूर्णं शतसहस्रं तु तिष्ठन्त्यव्यक्तचिन्तकाः ॥
पुरुषं निर्गुणं प्राप्य कालसंख्या न विद्यते ॥

अर्थात् प्रकृतिलय विदेह और बौद्धोंकी मुक्ति कई मन्वन्तरों तक ही रहती है। सदाके लिए वे मुक्त नहीं होते। सांख्य मतानुयायी ही प्रकृति-पुरुष-विवेकद्वारा काल-संख्या-रहित मोक्षको पाते हैं। वस्तुतः विचारें भी तो उपर्युक्त सब मतोंसे सांख्यमत ही सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होता है।

यहाँ तकके सभी मतोंका मोक्ष दुःखाभावस्वरूप ही है। चाहे उस दुःखाभावमें भी परिमाणकृत अथवा कालकृत तारतम्य हो, तथापि दुःखाभाव ही सब मतोंमें मोक्षका स्वरूप माना गया है। इस कारण इन मतोंमेंसे कोई भी श्रुतिमें उपदिष्ट "आनन्द" की यथार्थ उपपत्ति नहीं करता। वस्तुतः दुःखका अभाव भिन्न है और सुख अथवा आनन्द भिन्न वस्तु है। इस कारण श्रौत स्मार्त जिज्ञासुको मोक्ष विषयमें इन उपदेशों द्वारा जिज्ञासा विश्रान्त नहीं हो सकती। इस कारण उसको इन मतोंसे उत्कृष्ट विवर्तवाद अर्थात् वेदान्तकी शरण लेनी पड़ती है।

दूसरी बात यह है कि इन समस्त मतोंमें द्वैत माना गया है। जहाँ द्वैत है वहाँ अपूर्णता है और जहाँ अपूर्णता है वहाँ पूर्ण आनन्द नहीं। जहाँ पूर्ण आनन्द नहीं वहाँ सर्वतः और सर्वथा मोक्ष नहीं। इस कारण अद्वैतवादी वेदान्तीकी ही शरण लेनी पड़ती है। वेदान्ती फिर जिज्ञासुको समझाता है कि सब कुछ ब्रह्म है। जीवात्मा और परमात्मा अर्थात् ब्रह्म एक है। केवल अविद्याके कारण ही इस जीवात्माको अपना आप परमात्मासे भिन्न प्रतीत होता है। और इस भेद प्रतीतिसे ही समस्त क्लेश सहने पड़ते हैं। परमात्मा स्वभावसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही आनन्दस्वरूप है, पूर्ण है, सदा मुक्त है। इस कारण जीवात्मा भी स्वभावतः सदा मुक्त और आनन्दस्वरूप है। अतः अविद्याको योग आदि उपायों द्वारा दूर करके अपने मुक्त स्वभावको समझना ही वस्तुतः मोक्ष है। यह मोक्ष प्राप्त नहीं करना होता है, यह तो सदा प्राप्त ही है। केवल इसके आवरण-रूप अविद्याको हटानेकी आवश्यकता है। वह अविद्या अनादि है। और उस अविद्या ही के कारण सारा असत् संसार दिखाई देता है, वस्तुतः आत्मस्वरूपके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। जो अतिरिक्त प्रतीत होता है वह सब भ्रम है। आत्मस्वरूप सुख दुःखसे कर्तृत्वसे रागद्वेषसे सदा मुक्त है। यह अकर्ता और अभोक्ता है, पुष्करपलाश की तरह निर्लेप है। इसके ऐसे स्वरूपको समझ कर जीव पूर्णशान्तिको पाता है, इन सब गुणोंको भी प्राप्त करता है और तब वह पूर्ण शान्तिमें लीन हो कर आनन्दको प्राप्त करता है।

इस उपदेशसे जिज्ञासुके मनको शान्ति तो मिलती है परन्तु थोड़ी बहुत शङ्का फिर भी रह ही जाती है। वह प्रश्न करता है कि यह अविद्या तथा भ्रम अद्वैत परमात्मस्वरूपको हुए क्यों ? यदि अविद्या अनादि हो तो सम्भव है अनन्त भी हो, क्योंकि अनादि भाव प्रायः अनन्त भी हुआ करते हैं और अनादित्वके कारण यह भी प्रतीत होता है कि आत्मस्वरूपका इस पर कोई प्रभुत्व नहीं। यह एक प्रकारसे आत्मस्वरूपकी शत्रु है। और जिसके शत्रु हों उसको पूर्ण शान्ति कहां और पूर्ण आनन्द कहाँ ? अकर्तृत्व अभोक्तृत्व आदिमें भी आनन्द प्रायः नहीं। यहाँ तो पूर्वमतवादियोंका दुःखाभाव ही सिद्ध होता है। इस प्रकारसे मोक्ष पूर्ण आनन्दस्वरूप कैसे है ?

इन समस्त शङ्काओंको शान्त करनेके लिए भारतीय दार्शनिकोंका मौलिभूत स्वातन्त्र्यवादी वेदान्ती (जिसको हम शैव कहते हैं) पूर्णतया समर्थ है। इस कारण उसकी शरणमें जा कर हमें विदित होता है कि मोक्षका स्वरूप पूर्ण स्वातन्त्र्य है। स्वातन्त्र्य ही वस्तुतः आनन्द है और पारतन्त्र्य ही दुःख है। अतः पूर्णस्वातन्त्र्य ही पूर्ण आनन्द है। इस लिए पूर्ण स्वातन्त्र्यको ही सर्वथा सर्वतः और सर्वदा मोक्ष कहा जा सकता है। मोक्षके और सभी लक्षण अधूरे हैं। पूर्ण स्वातन्त्र्य ही वस्तुतः पूर्ण अद्वैत है। यह पूर्णस्वातन्त्र्य हमें प्राप्त नहीं करना होता है। यह तो हमें स्वभावतः प्राप्त ही होता है। केवल अपने इस स्वभावको पहिचानना ही होता है। इसी कारण इस शास्त्रको "प्रत्यभिज्ञा" नामसे भी कहते हैं। यह प्रत्यभिज्ञा अर्थात् अपने स्वभावका पहिचानना ही वस्तुतः मोक्ष है। इसी कारण स्वामी रामतीर्थ भी अनेकों स्थानों पर कहते हैं कि — "Realize your own-self and you are the lord of the lords" (अर्थात् अपने आपको केवल पहिचानो तो तुम ईश्वरोंके भी परमेश्वर हो।) तो इस अपने परमेश्वर-भावको, परम प्रभुत्वको, परम स्वातन्त्र्यको, तथा परम-आनन्दको समझना ही मोक्ष का वास्तविक स्वरूप है। जितने भी बन्धन हैं उनका मूल अस्वातन्त्र्य है। इस कारण अपने स्वातन्त्र्यके समझ लेने पर आत्मा सर्वथा मुक्त हो जाता है अथवा अपने मुक्तभावको समझता है। ऐसा समझनेसे ही उसको आनन्द प्राप्त होता है। समस्त आनन्दका मूल स्वातन्त्र्य ही होता है। 'जो जितना स्वतन्त्र है उसे उतना आनन्द होता है', यह बात तो प्रत्यक्ष-सिद्ध है ? अतः जो पूर्ण स्वतन्त्र है वही पूर्ण आनन्दी भी है। इस प्रकार से पूर्ण मोक्ष तथा पूर्ण आनन्द की उपपत्ति होती है। अब रही बात अविद्याकी, तो यह प्रश्न तभी हो सकता है जब आत्मस्वरूपको अकर्ता अभोक्ता आदि जड़तुल्य माना जाए। जब आत्मस्वरूपको पूर्ण स्वातन्त्र्य माना गया तो यह प्रश्न ही नहीं हो सकता है कि स्वतन्त्र आत्मा क्यों परतन्त्र प्रतीत होता है, क्योंकि "क्यों" का स्थान पारतन्त्र्यमें ही होता है। स्वातन्त्र्यके शब्दकोषमें "क्यों" शब्द आ ही नहीं सकता। स्वातन्त्र्य-स्वभाव होनेके कारण आत्मस्वरूप स्वयमेव अपने आपको अविद्यामें डालकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः स्वयमेव उसे पुनः प्रकाश देता है, क्योंकि आत्मस्वरूपका स्वभाव ही पूर्ण स्वातन्त्र्य है। स्वातन्त्र्य ही के कारण वह ऐसा करता है। ऐसा करने से उसे आनन्द ही होता है। यह सारी सृष्टि उसकी क्रीड़ा है, उसके आनन्दका अतिरेक है। वह अनन्त शक्तियोंसे परिपूर्ण है (जड़तुल्य नहीं है)। वह शक्तियाँ भी उससे भिन्न नहीं, क्योंकि उन अनन्त शक्तियोंके पूर्ण एक भावको ही पूर्ण स्वातन्त्र्य शक्ति कहते हैं। और स्वातन्त्र्य शक्ति ही आत्मा है। शेष सभी शक्तियाँ इस पूर्ण स्वातन्त्र्यशक्ति रूप आत्माके केवल रूप-भेद हैं। इन शक्तियोंमेंसे अपने आनन्दके कारण यह कभी किसी, तो कभी किसी शक्तिको उल्लासित करता है। इन शक्तियोंके उल्लास मात्रसे ही विश्वकी सृष्टि, स्थिति, संहार आदि हुआ करते हैं। अपोहन शक्ति द्वारा यह अपने तात्त्विक स्वरूपको छिपाता है और जीव भावको प्रकट करता है। अनन्तर पुनः अनुग्रहशक्ति द्वारा अपने ही जीव स्वरूपको ज्ञानमार्ग में प्रवृत्त कराके विमर्शनशक्ति द्वारा उस जीव रूपमें स्वयमेव छिपाए हुए अपने ही स्वातन्त्र्य स्वरूपको समझाता है। इसीको मोक्षप्राप्ति कहते हैं। इसी कारण आचार्य अभिनवगुप्तपाद परमार्थसारमें कहते हैं—

> **मोक्षस्य नैव किञ्चिद् धामास्ति**
> **न चापि गमनमन्यत्र।**
> **अज्ञानग्रन्थिभिदा स्वशक्त्य-**
> **भिव्यक्तता मोक्षः॥**

भाव यह है कि अपनी स्वातन्त्र्य-शक्ति का प्रकट होना अर्थात् उसको पहिचानना ही वस्तुतः मोक्ष है, और कुछ नहीं। शिव सूत्रोंमें भी आत्माका लक्षण 'चैतन्यमात्मा' ऐसा कहा है। "चैतन्य" का अर्थ श्रीक्षेमराजजी "पूर्ण स्वातन्त्र्य" ही विमर्शिनी टीकामें करते हैं।

भगवान्‌के इस पूर्ण स्वातन्त्र्यके ही अभिप्रायसे श्रीमान् उत्पलदेवाचार्य शिवस्तोत्रावलीमें इस प्रकार से स्तुति करते हैं:—

> **नमः सततबद्धाय नित्यनिर्मुक्तिभागिने।**
> **बन्धमोक्षविहीनाय कस्मैचिदपि शम्भवे॥**
> **मायाविने विशुद्धाय गुह्याय प्रकटात्मने।**
> **सूक्ष्माय विश्वरूपाय नमश्चित्राय शम्भवे॥**
> **संसारैकनिमित्ताय संसारैकविरोधिने।**
> **नमः संसाररूपाय निःसंसाराय शम्भवे॥**

जो केवल बद्ध ही या केवल मुक्त ही या केवल उभय स्वरूप ही या केवल अनुभय स्वरूप ही हो, वह कभी पूर्ण नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उसमें अन्य रूपोंकी कमी सिद्ध होती है और कमी पूर्णताकी बाधक होती है। अपूर्णतामें आनन्द नहीं। आनन्द तो पूर्णतामें ही होता है। इसी कारण भक्तश्रेष्ठ भगवान् उत्पलदेव अपने उपास्य परमेश्वरको समस्तरूप मानकर ही स्तुति करते हैं। यही तो भगवान्‌का पूर्ण स्वातन्त्र्य है कि स्वयमेव बद्ध है, स्वयमेव मुक्त है और स्वयमेव न बद्ध है और न मुक्त है। समस्त-विश्वस्वरूप है और समस्त विश्वसे उत्तीर्ण है। यह उसके स्वातन्त्र्यका केवल उल्लास ही है, और कुछ नहीं। इस उल्लासको ही श्रुतिने आनन्द कहा है। इसी आनन्दकी प्राप्तिके लिए ऋषियोंने मोक्षके उपदेश किए हैं। इस मोक्ष प्राप्ति का उपाय समस्त शास्त्रोंमें गुरुकी सेवा ही बताया गया है। शिवसूत्रोंमें भी "गुरुरुपायः" ऐसा कहा हुआ है। इस प्रकारसे यहाँ संक्षेपसे यह दिखाया गया कि मोक्षका वास्तविक स्वरूप 'पूर्ण स्वातन्त्र्यकी प्रत्यभिज्ञा' ही है। अन्य सभी मोक्षके लक्षण अधूरे हैं।

अब प्रश्न यह होता है कि जिन्होंने वे अधूरे लक्षण बताए हैं वे भी तो बड़े तपस्वी और विद्वान् थे, उन्होंने ऐसा क्यों कहा? इस प्रकारसे भारतीय दार्शनिक मुनियोंमें मतभेद क्यों है? किसके मतको हम प्रमाण मानें और किसके मतको अप्रमाण? और क्यों? इसका उत्तर स्पष्ट है। भारतीय ऋषियों और मुनियोंमें वस्तुतः मतभेद नहीं। अब रह गई बात उनके ग्रन्थोंकी। ग्रन्थ तो उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकोपकारके लिए बनाए। लोगोंकी बुद्धि अनेक प्रकारकी होती है। यदि हमारे ऋषि लोग एक ही निश्चित बातको एक स्वरसे कहते और सबके लिए एक ही मार्गको नियत कर रखते तो लोग कभी उन्नति नहीं कर सकते। क्योंकि भिन्न भिन्न बुद्धि वालोंको कभी एक ही बातपर मन स्थिर नहीं रह सकता। किसीकी रुचि कैसी तो किसीकी कैसी हुआ करती है। यह लोगोंकी अवस्था और मानसिक तथा शारीरिक शक्तिकी बात है। इसी कारण ऋषियोंने अनेक सिद्धान्तों तथा मार्गोंका उपदेश किया, जिसकी जैसी बुद्धि, जैसी रुचि, जैसा मन, जैसी शक्ति हो उसके लिए वैसा मार्ग और वैसे सिद्धान्तोंका उपदेश किया जाता है। इस कारण प्रत्येक शास्त्रीय सिद्धान्तोंके पारस्परिक विरोध की उपपत्ति देश, काल, अवस्था और अधिकारी के भेदसे करनी चाहिए। विरोधकी शंका उचित नहीं।

प्रत्यभिज्ञा शास्त्रका आविर्भाव तो केवल आठवीं या नववीं शताब्दीमें वसुगुप्त और श्रीसोमानन्द द्वारा हुआ जब कि अवन्तिवर्मा काश्मीरमें राज्य करते थे। तो क्या इससे पहिले इस शास्त्रको भारतवर्षमें कोई नहीं जानता था? इस प्रश्न का उत्तर यह है — यह शास्त्र तो आदि-कालसे भारतवर्षमें प्रचलित था। श्रीसोमानन्द और श्रीवसुगुप्तके समय तक यह शास्त्र उपदेश द्वारा ही प्रचलित था। इस शास्त्रका कोई ग्रन्थ विशेष नहीं लिखा गया था। जैसे पंचशिख आचार्य के समय तक सांख्यशास्त्र केवल गुरु परम्परा द्वारा ही प्रचलित था। अथवा हो सकता है कि इस शास्त्रके अति प्राचीन ग्रन्थ बौद्धकालमें लुप्त हो गए हों। परन्तु तथापि प्राचीन उच्च दार्शनिक ग्रन्थोंमें इस शास्त्रके सिद्धान्त पाए जाते हैं। ब्रह्मसूत्रों के शाङ्कर भाष्यका सूक्ष्म अध्ययन करनेसे ज्ञात होता है कि भगवान् शङ्कराचार्यको भी यही मत अभिप्रेत था। अनेकों स्थानों पर उन्होंने ब्रह्मके विशेषण "सर्वज्ञं, सर्वकर्तृ, सर्वशक्ति" इत्यादि दिए हैं। उपनिषदोंमें भी इन सिद्धान्तोंका स्पष्ट व्याख्यान मिलता है। यजुर्वेदके रुद्राध्यायमें भी रुद्रके सर्व-व्यापक भावको इसी सिद्धान्तके अनुसार वर्णन किया है। जैसे श्रीअभिनवगुप्तपाद कहते हैं कि —

"सुरमानुषपशुपादपरूपत्वं तद्वदीशोऽपि।
धत्ते..॥"

इसी प्रकार रुद्राध्यायमें भी रुद्रको ही समस्त रूपोंमें वर्णन किया है। यहाँ तक कि कर्मार, चर्मार, तायु (चौर), मृगायु (शिकारी), श्वा (कुत्ता), और शुनी (कुत्तों वाले शिकारियों) को भी रुद्रभगवान्‌के रूप कहा गया है। इन समस्त रूपों वाला होते हुए भी भगवान् रुद्र अपने स्वातन्त्र्यके माहात्म्यसे अपने परम आनन्द स्वरूपसे च्युत नहीं होता। यह इस मन्त्रसे कहा गया है —

"नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च"।

यही तो परम स्वातन्त्र्य होता है। संसारके समस्त ग्रन्थोंमें सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदमें भी पुरुषसूक्तमें इसी प्रकारका विश्वनिर्भर परमात्मस्वरूप व्याख्यात है। वागाम्भृणीय सूक्त तो इससे भी अधिक आत्मस्वरूपकी अद्वैतता और स्वतन्त्रताका वर्णन करता है। इन सूक्तोंसे तो भगवान् ही सब कुछ है केवल यही अर्थ ध्वनित होता है। परन्तु इस वागाम्भृणीय सूक्तमें तो यह बताया है कि 'अहम्' अर्थात् आत्मस्वरूप ही सब कुछ है। वही सबकी उत्पत्ति और पालन आदि करता है, अर्थात् स्व स्वातन्त्र्य महात्म्यसे वही सब कुछ है; इस सूक्तमें सूक्त के ऋषिको ठीक उसी प्रकारसे आत्मस्वरूपकी प्रत्य-भिज्ञा हो रही है जिस प्रकारसे शैव आचार्योंने अपने ग्रन्थोंमें उसका वर्णन किया है। उस सूक्तके एक दो मन्त्र उदाहरणार्थ यहाँ दिए जाते हैं —

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्य-
हमादित्यैरुत विश्वदेवैः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्य-
हमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा
भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि
जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥

और भी अनेकों अद्वैतपरक दार्शनिक सूक्त ऋग्वेदमें हैं जिनमेंसे नीचे वर्णित सूक्त देखने योग्य हैं — मण्डल १ का सूक्त १६४, मण्डल दसके सूक्त ८२, १२१, १२५, १२६, १९० आदि।

परमार्थसारमें भी प्रत्यभिज्ञाकी दशाका वर्णन ठीक इसी प्रकार किया है। उदाहरणार्थ —

अहमेव विश्वरूपः करचरणादिस्वभाव इव देहः।
मत्तः प्रसरति सर्वं स्वप्नविचित्रत्वमिव सुप्तात् ॥

इससे यह बात सिद्ध हो गई कि भारतीय इस सर्वोच्च दार्शनिक सोपान पर ऋग्वेदके समयमें भी पहुँच चुके थे। इस प्रकारसे पूर्ण स्वातन्त्र्य स्वरूप आत्माकी प्रत्यभिज्ञा ही जो हमने मोक्षका वास्तविक स्वरूप बताया उसमें अनुमान, ब्रह्मनिष्ठ योगियोंके अनुभव और श्रुति ये तीन प्रमाण हैं। इस लेखमें तो मोक्षके स्वरूपका व्याख्यान बहुत संक्षेपसे किया गया है। अतः जिस महानुभावने इस विषय पर अधिक कुछ देखना हो उसे चाहिए कि 'ईश्वर-प्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी' पढ़े। यदि यह पुस्तक कठिन प्रतीत हो तो पहले 'परमार्थसार', 'प्रत्यभिज्ञाहृदय', 'शिवसूत्रविमर्शिनी' आदि ग्रन्थोंको पढ़े। यदि पाठक संस्कृत थोड़ा जानते हों तो उन्हें श्रीमान् आचार्य अमृतवाग्भवजी द्वारा निर्मित 'आत्म-विलास' पढ़ना चाहिए, क्योंकि इस ग्रन्थकी टीका (अथवा भाष्य) हिन्दी भाषामें अतीव सरल और मनोरञ्जक रीतिसे लिखी गई है।

स्वातन्त्र्यवाद अथवा प्रत्यभिज्ञा पर एक कथा

ऊपरके लेखमें मोक्षके वास्तविक स्वरूपका वर्णन करते हुए प्रत्यभिज्ञाके भी स्वरूपका वर्णन थोड़ा बहुत किया गया है। इस विषयमें हमारे काश्मीर देशमें एक पंचतन्त्रकी कथाओं जैसी कथा प्रचलित है—

एक बार एक वनमें एक सिंहिनीका बच्चा उत्पन्न हुआ और उसी समय प्रसवपीड़ासे सिंहिनी मर गई। एक गड़रियेने उस स्तनन्धय सिंहशावकको मृत माता-के पास पड़ा देखकर उठाया और बकरियों का दूध पिलाकर उसे पाला। सिंह-शावकको यह ज्ञान नहीं था कि मैं सिंह हूँ। वह बकरियोंका दूध पीता हुआ और उनके बच्चोंके साथ खेलता हुआ अपने आप को भी बकरा ही समझता था। परन्तु उसके स्वा-भाविक बल-विक्रम आदि गुण नष्ट नहीं हो गये थे। वह सारे पशुवृन्दमें फिरता था और अकेला ही पशुओंकी रक्षा भी करता था। अर्थात् सिंह हो कर भी अपने आपको बकरा समझता हुआ वह एक कुत्तेका जैसा काम गड़रियेको देने लगा। एक बार उस वनमें एक बड़ा सिंह आ गया। उसको अपने भाईकी यह दशा देख कर बहुत खेद हो गया। उसने उसको बुलाया और उससे कहा कि "तू सिंह है; तू इस वनमें स्वतन्त्रतासे क्यों विहार नहीं करता? गड़-रियेकी आधीनतामें क्यों रहता है?" बच्चा बोला—"मैं सब समझता हूँ। तू मुझे खाना चाहता है। मैं तो बकरा हूँ। इसी कारण मुझे मूर्ख समझ कर तू मुझे धोखेसे अपने पास बुलाता है। परन्तु मैं कभी तेरे पास आनेवाला नहीं। क्योंकि तू स्वभावसे ही बकरों का शत्रु है।" बड़े सिंहने बहुत प्रयत्न किया परन्तु बच्चा उसके पास नहीं गया। अन्तमें सिंहने सोचकर उस बच्चेसे फिर कहा—"अच्छा, एक बात सुनो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम दोनों एक नदी पर चलेंगे। तू इस तट पर रह और मैं पारके तट पर खड़ा हो जाऊंगा, इस प्रकार तुझे मेरेसे किसी भयकी आशङ्का नहीं होगी, फिर वहाँ खड़ा हो कर तू जलमें अपने और मेरे प्रतिबिम्ब को देख कर स्वयं ही निश्चय कर लेना कि तू वास्तवमें सिंह है कि बकरा।" बच्चा इस बातको मान गया। फिर ज्योंही उसने प्रतिबिम्बको देख कर अपने सिंहत्व स्वभावको पहचाना त्योंही समस्त सिंह-गुण उसमें प्रकट हो गए। वह शीघ्र ही गरजकर एक छलांग मारकर नदीके पार हो गया और स्वातन्त्र्य पाकर स्वतन्त्र रूपसे सारे जङ्गलमें पशुओंका शिकार खेलता हुआ आनन्दसे विहार करने लगा।

ठीक ऐसी ही दशा हम जीवोंकी है। हम परमेश्वर हो कर भी अपने आपको जीव समझते हैं। इस जीवत्वसे हम तभी छूट सकते हैं जब सद्गुरु के उपदेशसे हम बुद्धिदर्पणमें देख कर यह निश्चय करें कि हम परमेश्वराभिन्न सद्गुरुके समान स्वयं परमेश्वर हैं. हम जीव नहीं हैं, इसीको प्रत्यभिज्ञा कहते हैं। यही वास्तविक मोक्ष है। जिन बन्धनोंसे बंधे हुए हम अपने आपको समझते हैं वे बन्धन हमें बांध नहीं सकते, क्योंकि हम स्वभावसे ही बन्धन-रहित हैं। बन्धन सभी कल्पित हैं। कल्पित बन्धन वास्तविक स्वातन्त्र्यको हटा नहीं सकते। क्योंकि वे कल्पित होनेके कारण असत्प्राय हैं। उनकी कल्पना हमने (आत्मस्वरूपने) स्वातन्त्र्यको हटाने और बन्धन डालनेके लिए नहीं की। यह कल्पना तो केवल एक क्रीड़ामात्र ही है। इसी कारण हम परमात्मस्वरूपको महादेव कहते हैं, क्योंकि दिवु धातुका सबसे पहला अर्थ क्रीड़ा ही होता है। और आत्मस्वरूप अपने आनन्दके लिए अनन्तकोटि ब्रह्माण्डोंकी कल्पना करता है। इस कल्पनासे उसको विचित्र आनन्द आता है। दुःखमय सृष्टिमें भी उसे आनन्द ही आता है। क्योंकि दुःखसे दुःखी परतन्त्र ही हुआ करता है। स्वातन्त्र्यमें दुःख कहां? ऐसा ही भगवान् उत्पलदेव शिवस्तोत्रावलीमें कहते हैं :—

दुःखान्यपि सुखायन्ते विषमप्यमृतायते।
मोक्षायते च संसारो यत्र मार्गः स शाङ्करः॥

परमेश्वरकी इस परम क्रीड़ाके विषयमें भी वे परमेश्वरसे इस प्रकार प्रश्न करते हैं :—

त्वद्धाम्नि विश्ववन्द्येऽस्मिन्नियति क्रीड़ने सति।
तव नाथ! कियान् भूयानानन्दरससम्भवः?॥

इस प्रकारसे 'अखिल प्रपञ्चको परमेश्वरकी क्रीड़ा समझना और अपने आपको ही परमेश्वर समझना' इसीको मुक्ति कहते हैं। यही पूर्ण आनन्द होता है। इसीका नाम पूर्ण स्वातन्त्र्य है। इसीको पूर्ण चैतन्य कहते हैं।

समस्त मुमुक्षु लोगोंने मोक्षकी ऐसी भावना रखकर प्रयत्न करना चाहिए कि यह भावना केवल भावना ही न रहे, अपितु इस बातका प्रत्यक्ष अनुभव भी हो जाए। अनुभवके बिना तो सब बातें केवल बातें ही हैं। ग्रन्थसे पढ़कर अथवा सत्संगसे सुनकर वस्तुका समझना और होता है और उसका अनुभव करना और होता है। वह अनुभव श्रवण मनन और निदिध्यासनके बिना और सद्गुरुके अनुग्रहके बिना कभी होता नहीं है। अतः सद्गुरुका अन्वेषण अवश्य करना चाहिए। ज्ञानकी और मोक्षकी केवल बातें ही करनेसे मनुष्य उभयभ्रष्ट हो जाता है। इति शम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख-साधन पद्धति

[लेखक—श्री १०८ मुनि श्री वीरविजयजी महाराज]

अनादि संसारमें परसुखमें बना हुआ आत्मा स्वसुखको भूल जाता है। आत्मिक सुखको प्रकट या प्राप्त करनेके लिए साधनकी भरसक आवश्यकता है।

साधन पद्धतिका अभ्यास करनेका तात्पर्य यह भी है कि तीन शक्तियाँ और मनकी एकाग्रता सिद्ध हो। क्योंकि एकाग्रता सिद्ध होने पर तीन शक्तियाँ अनन्त सुख अर्थात् अनन्त आनन्दका स्रोत बहने लगता है।

दिनमें थोड़ेसे थोड़ा तीन बार—प्रातःकाल चार बजे, मध्याह्न काल बारह बजे, सायंकालमें और रात्रि सोते समय। थोड़े समयके लिए प्रति दिन परपदार्थ अर्थात् ममत्व भावसे पीछे हटकर स्वस्वरूपको जाननेका जो मार्ग है, वह ही आत्मिक सुख को प्रकट करनेका साधन है।

इसलिए अपने स्वस्वरूप (साधन) में साधकको स्थिर होनेका अभ्यास करना चाहिये।

कोई भी मनुष्य साधनके अभ्यासके बिना आत्मिक सुख, शान्ति, बल, शक्ति और साध्य आत्म-विकास प्राप्त नहीं कर सकता।

मनुष्य चाहे जिस जातिका हो और किसी भी धर्मका हो, परन्तु आत्मविकास पूर्णतया प्राप्त करने की इच्छा जगत्के सभी मनुष्योंकी एक समान है। चाहे निर्धन हो चाहे सधन, चाहे राजा हो चाहे रङ्क, चाहे साधु हो चाहे गृहस्थ, चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो। सभी मनुष्योंके लिए साधनका अभ्यास करना यह भावना सर्वोत्तम हृदय में होनी चाहिए।

राग द्वेष मोह माया ममत्व इत्यादिका त्याग कर स्थूल और सूक्ष्म देहसे यह आत्मा पृथक् होनेके लिए मूल स्वरूप साधनका अभ्यास करता हुआ पूर्णतया विकसितता प्राप्त करता है। जैसे सिद्धस्वरूप, वैसे प्रत्येक जीव मूल सत्तागत सिद्ध स्वरूपवान् है।

प्रवाहसे अनादि कर्म जड़ताकी उपाधिसे भारी हुआ हुआ यह जीवात्मा जन्म मरण दुःख अशान्ति और परस्वरूपमें बना हुआ है। यदि इनसे अतिरिक्त हो कर अपने स्वस्वरूपका विचार किया जाय तो ज्ञात हो जायगा कि इस शरीर या देहसे मैं अलग हूँ। कर्मोंकी उपाधियोंसे भी मैं पृथक् हूं। मैं किसीका नहीं हूँ। मेरा कोई नहीं है। मैं ईर्ष्या कपट ममत्व आदि उपाधियोंसे भी अतिरिक्त हूँ। इस प्रकारकी भावना समय समय पर आनेसे आत्मा परस्वरूप अर्थात् काम क्रोध मान माया लोभ इत्यादि परस्वरूपसे पीछे हटकर शुद्ध ज्ञान-दर्शन-चारित्र पूर्णतया विकसित करता हुआ मूलस्वरूपको प्राप्त करता है।

कोई भी साधना साध्य ज्ञानके बिना प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए साध्यका निश्चय करे। बिना साधनाके अभ्यास प्राप्त नहीं हो सकता।

क्योंकि साधन एक ऐसी शक्ति है जो बाह्य आत्माओंको अन्तरात्मा तक पहुंचानेमें नौकाके समान है। और साधना भी वीतराग देव कथित होनी चाहिये। क्योंकि साधनाका बतानेवाला भी वैसा शुद्ध वीतराग होना चाहिये। वीतराग उन्हें कहना चाहिये जिनमें राग और द्वेष बिलकुल न हो अर्थात् मूलसे राग द्वेष क्षय हो गया हो। उनको वीतराग देव कहते हैं। आप्त भी कहते हैं और केवलज्ञानी भी कहते हैं।

बाह्य साधना और आभ्यन्तर साधनाका क्या तात्पर्य है?

बाह्य साधना शुद्ध होनेसे अज्ञानी आत्मा परपदार्थसे या मोह ममत्वसे पीछे हटता है। प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय पर आत्मविकासके लिए ध्यान, माला, पूजा, सामायिक, योग इत्यादि क्रियाओं द्वारा शुद्ध ध्येय तक पहुँच सकता है। इसीका नाम साधना है, क्रिया है और पूर्णतया आत्मविकास करनेके लिए यह एक मार्ग भी है। बाह्य साधनामें आभ्यन्तर साधना भी प्राप्त हो जाती है। जैसे द्रव्य-पूजाके अन्तर्गत भावपूजा है। द्रव्यपूजाके बगैर भावपूजा प्राप्त नहीं हो सकती। वैसे बाह्य साधनाके बिना आभ्यन्तर साधनाकी प्राप्ति नहीं की जा सकती। इसी कारणसे बाह्य साधना सामान्य साधना है। और आभ्यन्तर साधना विशेष साधना है।

बाह्य साधना द्वारा आभ्यन्तर साधना प्रकट की जाती है। वह भी पहली पावड़ीसे सप्तम पावड़ी तक, अर्थात् सप्तम गुण स्थान पर्यन्त। आभ्यन्तर साधना सिद्ध होने पर बाह्य साधनाकी आवश्यकता नहीं बत् है।

आभ्यन्तर साधन प्रकट होने पर आत्मा प्रमादसे रहित होता है। जैसा भगवान् महावीर देव दीक्षाके अनन्तर ध्यानस्थ निश्चलरूप थे। वैसे प्रत्येक आत्मा अपनी शक्तिको बाह्य साधन द्वारा विकसित करता हुआ आभ्यन्तर साधन पर्यन्त पहुंचकर अपने किये हुए कर्मोंका क्षय कर पूर्णतया आत्म-स्वरूपको प्रकट करके परम ज्ञानवान् हो कर वीतराग भावको भी प्रकट करता है।

ऐसे ही भव्य आत्माओंको वीतराग बननेका प्रयत्न करना चाहिये। शुद्ध विचारों द्वारा अशुद्ध विचारों पर वशीकार करनेका भी प्रयत्न मनकी एकाग्रता और बुद्धिकी तीव्रता पर है। अहंकार काम क्रोध ममत्व इत्यादिका त्याग करना यह है साधन शुद्ध साध्य आत्माका। क्योंकि आत्मा निर्लेप है, निराकार है, अमूर्त्त है, अरूपी है, सत् चित्त् और आनन्द स्वरूपसे अनन्त है। "अहं वीतरागोऽस्मि" मैं वीतराग हूँ इस वाक्यका उच्चारण करनेवाला आत्म-घाती कर्मोंसे रहित ही होता है, सम्पूर्णतया शुद्ध भी है और "अहं सर्वज्ञोऽस्मि" "अहं अरिहंतोऽस्मि" "अहं ईश्वरोऽस्मि" तथा "अहं शुद्धोऽस्मि" यह भी कह सकता है।

अशुद्ध आत्मा याने संसारी आत्मा इस वर्तमान कालिक क्रियाका उपयोग करनेके लिए समर्थ नहीं हो सकता। क्योंकि अशुद्ध आत्मा रागद्वेषसे सहित है। और इस क्रियाका अधिकारी होनेसे "अहं अवितरागोऽस्मि" "अहं असर्वज्ञोऽस्मि" यह कह कर अपनी अल्पज्ञता प्रकट कर सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्तिको यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रवाहसे अनादि कर्मोंकी उपाधिसे यह आत्मा अशुद्ध और लेपवाला है। मैं वीतरागके मार्ग पर बराबर विधिसे चलूंगा तो एक दिन वीतराग बन सकूंगा याने "अहं वीतरागो भविष्यामि" "अहं सर्वज्ञो भविष्यामि" इस क्रियाका उपयोग वर्तमा-निक आत्मा कर सकता है।

मैं रागद्वेष वाला हूँ इस वाक्यसे आत्मविकास दबा हुआ है, जैसे भगवान् महावीर स्वामीका प्रेम गौतम स्वामीको था, तबतक केवल ज्ञान नहीं हुआ था। यदि मैं रागद्वेषको सर्वथा क्षय करूंगा तो मुझे केवल ज्ञान हो सकेगा। और सम्पूर्णतया आत्मविकास करनेकी इच्छा किसी भी मनुष्यकी हो उसे मनकी एकाग्रताका अभ्यास करना चाहिए।

"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ॥"

मनुष्यका मन सविकास और विकास रहित होनेमें कारणभूत है। अर्थात् सांसारिक कर्मोंका बन्ध और मोक्ष मनुष्योंके मनके ही आश्रित है। जिसने मनको मारा या जीत लिया उसने जगत्को भी जीत लिया। मन वशमें हो जानेसे साधनका अभ्यास भी शुद्ध होता है। शुद्ध साधन द्वारा आत्मविकास हो सकता है। इसलिए रागद्वेष मोह ममत्व इत्यादिका लय करना यह सद्भावना ही विश्वकल्याणकी होनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ शाक्वरी व्रत ❋

[लेखक—श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल एम० ए०, एल-एल० बी]

गोभिलगृह्यसूत्र ३।२।७६ में एक उल्लेख है कि प्राचीन कालमें माताएँ अपने बच्चोंको दूध पिलाते समय उस अमृत-क्षीरके साथ इस मङ्गलात्मक आशीर्वादका पान कराती थीं कि हे पुत्रों ! तुम इस जीवनमें शाक्वरी व्रतके पारगामी बनो—

अथाहि रौरुकिब्राह्मणं भवति। कुमारान-हास्म मातरः पाययमाना आहुः— शाक्वरीणां पुत्रका व्रतं पारयिष्णवो भवतेति।

यह किसी प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थका वचन है, जो इस समय अप्राप्य है और जिसका नाम रौरुकि ब्राह्मण था। रोरुकनगर प्राचीन सौवीर देशकी जिसे आज कल सिन्ध कहते हैं राजधानी थी। रोरुकका वर्तमान नाम रोड़ी है जो सक्खर के पास सिन्ध के तट पर है। सम्भवतः इसी सीमान्त देशके एक ऋषि प्रवरने इस शाक्वरी व्रतके माहात्म्यको भली भांति समझ कर राष्ट्रिय कुमारोंके जीवनके साथ उसके सम्बन्धका उपदेश दिया था। जिस राष्ट्रमें माताएँ कुमारोंके जीवन-सूत्रका प्रारम्भ शाक्वरी मन्त्रोंसे करें, जहाँ स्तन्य-पानके साथ ही शाक्वरी भावना ओत प्रोत हो, वहाँकी उदयात्मक शक्तिका केवल अनुमान किया जा सकता है। जीवनमूल मङ्गल मंत्रका रहस्य शाक्वरी व्रत है। यदि यह पूछा जाय कि मानवी जीवन क्या है ? तो इस प्रश्नका यथार्थ उत्तर यह कह कर दिया जा सकता है कि प्रत्येक मनुष्यका जीवन 'डुकृञ् करणे' धातुके अनन्त रूपों का विकास है। मनुष्य जो कर्म करता है उसीके अनुरूप अपने जीवनको ढालनेमें समर्थ होता है। कर्म करनेकी क्षमता जीवनका अक्षय्य धन है। इस अनन्त भण्डारमेंसे प्रत्येक मनुष्य जो चाहे प्राप्त कर सकता है।

'डुकृञ् करणे' या 'करना' धातुका मेरुदण्ड 'शक्लृ' या 'सकना' धातु है। मनुष्यकी शक्ति उसके कार्यकी सनातनी मेरु है। शक्तिकी नीव पर जीवन का प्रासाद खड़ा किया जा सकता है। हम जितना कर 'सकते' हैं वही हमारे जीवनकी कसौटी है। 'शक्लृ' धातुके जिन लकारोंका हमारे जीवनमें पारायण हो पाता है वे ही हमारी गतिके ध्रुवमापदण्ड बनते हैं। जीवनके शान्त मुहूर्तोंमें जब हम सोचते हैं— "क्रतो स्मर, कृतं स्मर" अर्थात् अपने संकल्पका स्मरण करो और अपने कर्मसे उसका मिलान करो, तो यही निष्कर्ष निकलता है कि 'सकना' ही 'करना' है। हमारे दृढ़ सङ्कल्पकी शक्ति बाहुमें अवतीर्ण हो कर हमें कर्मकी ओर प्रेरित करती है। शक्ति-विहीन सङ्कल्प कोरे कागजकी भांति है।

कर्मशक्ति या शाक्वरीके अङ्कोंसे लिखा हुआ पत्र जीवनमें दर्शनी हुण्डीके समान काम देता है। वह जीवन लक्ष्यको वीरके अमोघ बाणकी भांति वेध देता है।

इस विश्वमें जहाँ भी देखो शाक्वरी व्रतका प्रकाश है। प्रजापति अपने अनन्त ईक्षण, तप और श्रमसे सृष्टि बनानेमें समर्थ हुए— यही उनका शाक्वरी व्रत था :—

"यदिमांल्लोकान्प्रजापतिः सृष्ट्वेदं सर्वम-शक्नोद्यदिदं किंच तच्छक्वर्योऽभवंस्तच्छक्व-रीणां शक्वरीत्वम्।" (ऐतरेय ब्रा० ५।७)

अर्थात् प्रजापतिने इन लोकोंको बना कर यहाँ जो कुछ भी है उस सबको शक्ति समन्वित किया। यही शक्ति शक्वरी हुई। प्रजापतिके 'सकने' सृजन सामर्थ्यमें ही शक्वरीका शक्वरीपन है। कौशतिकी

112786

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
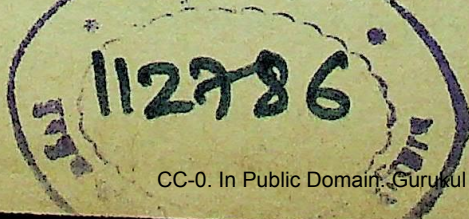
ब्राह्मणमें कहा है कि इन्द्रने जिस शक्तिसे वृत्रासुरका वध किया उसका नाम शक्वरी है।

एताभिर्वा इन्द्रो वृत्रमशकद्धन्तुम् तद्यदाभिर्वृत्रमकशद्धन्तुं तस्माच्छक्वर्यः ॥ कौ० २३।२॥

एक ओर आसुरी शक्तिका प्रतीक वृत्र है दूसरी ओर दैवीशक्तिके प्रतिनिधि इन्द्र हैं। देवों और असुरोंके शाश्वत-संग्राममें जो विशाल संचित शक्तिसे देवता असुरों पर विजय पाते रहे हैं उस शक्तिका नाम शाक्वरी है। जब तक विश्व-नियन्ताके सर्वाभिभावी नियमोंके अनुकूल सृष्टिके कार्योंका संचालन होता रहेगा तब तक आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक क्षेत्रोंमें अवश्य ही असुरोंको शाक्वरी शक्तिके अनुशासनमें रहना पड़ेगा। ताण्ड्य ब्राह्मणमें स्पष्ट कहा है कि इन्द्रके द्वारा वृत्रासुरकी पराजय पापकी पराजय है।

जितना शीघ्र हम जीवनके प्रत्येक क्षेत्र में शक्तिके अवलम्बनसे पापको पराजित कर देते हैं उतने ही वेगसे हम जीवनके श्रेष्ठ कल्याणोंको प्राप्त करनेमें समर्थ होते हैं।

एताभिर्वा इन्द्रो वृत्रमहन् क्षिप्रं वा एताभिः पाप्मानं हन्ति क्षिप्रं वसीयान् भवति।

(ताण्ड्य १२।१३।२३)

इन्द्रका वज्र शक्वरी शक्तिसे बना हुआ है, इसलिए उसे प्राचीन परिभाषामें शाक्वर कहा गया है। "शाक्वरो वज्रः" (तै० २।१।५।११)। राष्ट्रका रक्षक बल शक्वरी ही का सुन्दर रूप है। ब्राह्मणोंका ब्रह्मवर्चस् तेज भी शाक्वरी शक्ति पर निर्भर है, वैश्योंकी श्री और शूद्रोंकी पशु समृद्धि तभी तक सुरक्षित है जब तक राष्ट्रमें शक्वरी मन्त्रोंका महानाद जीवित रहता है। इस दृष्टिसे ब्राह्मणकारोंने निम्नलिखित परिभाषाओंका उल्लेख किया है।

"ब्रह्म शक्वर्यः" (तां० १६।५।१८) वज्रः शक्वर्यः" (ता० १२।१३।१४) श्रीः शक्वर्यः (ता०१३।२।२)। पशवःशक्वर्यः(ता०१३।१।३)

गोभिल-गृह्यसूत्र में यह भी कहा गया है कि प्राचीन कालमें ब्रह्मचारी वेदाध्ययन समाप्त करनेके बाद कुछ काल पर्यन्त विशेष रूपसे शाक्वरी व्रत की आराधनाके लिए आचार्यके पास ठहर जाते थे। विद्याध्ययनके द्वारा जो कुछ उन्हें उपलब्ध हुआ था उसे इस समयमें अपनी संकल्प शक्तिके बलसे जीवनके लिए उपयोगी बनाते थे। स्वामी दयानन्दने भी दण्डी विरजानन्दसे दीक्षा लेनेके पश्चात् और प्रचार-कार्यसे पूर्व, वर्षों तक गंगा-तट पर भ्रमण करते हुए इसी शक्तिको जागरित एवं समृद्ध किया था। ऐतरेय आरण्यकमें भी इन मन्त्रोंका पाठ है।

इस शाक्वरी व्रतकी अवधिमें विशेषरूपसे महानाम्नी ऋचाओंका अध्ययन और पारायण करना पड़ता था। ये दस ऋचाएं सामवेदके अन्तर्गत पूर्वार्चिकके अनन्तर और उत्तरार्चिकके पहले दी गई हैं। इनका गान महानाम्नी साम कहलाता था और शाक्वरी छंदमें होनेके कारण इन्हींको शाक्वरी भी कहते थे। किसी समय इन मन्त्रोंकी महिमा गायत्रीमन्त्रके समान समझी जाती थी। गौतम और बौधायनके धर्मसूत्रोंमें इनको परमपावन कहा गया है। जिस समय राष्ट्रमें वैदिक शिक्षाके आदर्श जीवित थे उस समय माताएँ अपने बच्चोंको स्तन्यपान कराते समय ये आशीर्वाद देती थीं कि हे पुत्रों! तुम यथाविधि ब्रह्मचर्याश्रमका पालन करके विद्याध्ययन करते हुए अन्तमें महानाम्नी साम पर्यन्त उच्च शिक्षामें पारङ्गत बनो। ऐतरेय ब्राह्मणमें स्पष्ट कहा है कि अपनी आत्माको महान् बनानेका प्रयोग महानाम्नी है।

इन्द्रो वा एताभिर्महानात्मानं। निरमिमीत तस्मात् महानाम्न्यः (एत० ५।७)

शतपथब्राह्मणके अनुसार यज्ञके माध्यन्दिन सवनमें महानाम्नी ऋचाओंका गान किया जाना चाहिये। इसका अभिप्राय यही है कि मनुष्यका यौवनकाल जो कि उसकी आयुरुपी यज्ञका माध्यंदिन सवन है, भरपूर शक्तिके सञ्चय और अभिव्यक्तिका सर्वोत्तम समय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानाम्नी ऋचाओंमें जिस शक्तिशाली इन्द्रका आवाहन किया जाता है, उस वज्रशाली देवकी वीर्यवती महिमाका जीवनमें साक्षात्कार करने वाले नवयुवक जिस राष्ट्र व समाजमें जन्म लेते हैं वह समाज कृतकृत्य हो जाता है। जहाँ आलस्य और मूर्च्छा रूपी घोर पापोंको पैरों तले रौंद कर प्रजायें सोतेसे उठ खड़ी होती हैं वह राष्ट्र इन्द्रकी भांति ही महान् बन जाता है। उसके सभेय और रथेष्ठ युवक इन्द्रका आवाहन करते हुए कहते हैं :—

"हे देवोंमें बलिष्ठ और महिष्ठ इन्द्र! तुम पूर्वजों की शक्तियोंके अधिपति हो। हम अपने नवजागरणमें उन दलोंका पुनर्दर्शन करना चाहते हैं। अतएव हे वज्रिन्! तुम्हारे अपराजित तेजका श्रद्धाके साथ आवाहन करते हैं। तुम्हारी अबाधित गति हमारे रथ चक्रोंमें निनादित हो। हे शूर! अपनी समस्त रक्षणशक्तिसे हमारी रक्षा करो। अभ्युदय और रक्षाके लिए तुम्हारा सान्निध्य हमें प्राप्त हो। हे वसुपते! हमको सब प्रकारसे पूर्ण करो। क्योंकि जो भरे-पूरे हैं उन्हींकी संसारमें प्रशंसा है। हे अद्वितीय सखे! तुम्हारी विजय चिरजीवी हो।"

जिस समय महानाम्नी ऋचाओंके उत्कर्षशाली स्वर गूंजने लगते हैं, उस समय सब प्रजाएँ उसका अनुमोदन करती हुई पुकार उठती हैं —

"एवा ह्येव। एवा ह्येव। एवा ह्यग्नेः।
एवाहि इन्द्र। एवाहि पूषन्। एवाहि देवाः॥

ऐसा ही होगा, अवश्य ऐसा ही होगा! हे अग्नि, ऐसा ही है। हे इन्द्र, ऐसा ही है। हे पूषा, ऐसा ही है। और हे अन्य सब देव, ऐसा ही है।

अर्थात् — हमारे कर्मकी शक्तिसे राष्ट्रके जीवन की परिधि उत्तरोत्तर विस्तारको प्राप्त होगी और हमारे दृढ़ संकल्पोंसे सिंचित यह महावृक्ष युग युगान्त तक जीवनलाभ करता रहेगा।

माँ लक्ष्मीसे——

(कवयिता—श्री यज्ञदत्तजी 'रसिक' शास्त्री)

तेरा नाम सुना हमने 'माँ'
कृत्य विमातासे लखते।
नीर भरे नैनोंसे तेरे
पुत्र पराए मुख तकते॥१॥

जग-जननी कहलातीं तुम तो
भेद-भाव फिर यह कैसा?
सुधाभरा इक ओर चषक है
यहाँ हलाहल यह कैसा?॥२॥

लहू पसीना यहाँ एक कर
रूखे टुकड़े पाते हैं।
षड्रस रञ्जित वहाँ निठल्ले
मोहनभोग उड़ाते हैं॥३॥

यहाँ पयाल बिछा कर सरदी
सी-सी करते कटती है।
वहाँ तुलाई तोषक तकियों
से वर-शय्या सजती है॥४॥

धूलिधूसरित फटे पुराने
चिथड़े ही जिनका शृंगार।
दीन हीन सब भांति हुए ये
जननी! तुमको रहे पुकार॥५॥

कहो यातना क्यों इतनी यह
क्यों यह इतना ताप मिला?
कौन कुकर्म किए जगदम्बे!
जिनका यह अभिशाप मिला?॥६॥

वन-विहगोंमें मृगयूथोंमें
जन्म कहीं जो हो पाता।
परवशताके दारुण दुःखसे
छुटकारा तो हो जाता॥७॥

मानवताका सार यही क्या
गौरवका यह शुभ बाना।
अभिचारकके पाशकमें पड़
तड़प तड़प कर मर जाना॥८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू पर्व (त्यौहार)

[ले०—श्री पं० हनुमान् शर्मा जी राज ज्यौतिषी]

[इस निबन्धके लेखक भारतके एक सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध विद्वान् हैं, ज्यौतिष संस्कृत एवं हिन्दी साहित्यकी आपने पर्याप्त सेवा की है। 'श्रीस्वाध्याय' अपनी सर्वतोभद्र नीति और लोकसेवा द्वारा इतना लोकप्रिय तथा विद्वानोंकी दृष्टिमें आदरका पात्र बन गया है कि भारतके सुप्रसिद्ध विद्वान् अपनी मौलिक रचनाएँ इसमें प्रकाशनार्थ भेजकर गौरवका अनुभव करते हैं। उक्त लेखक महानुभावने इस समय अपनी अशक्त अस्वस्थ वृद्धावस्थामें भी यह 'हिन्दू-पर्व' शीर्षक सुविस्तृत सारगर्भित लोकोपयोगी निबन्ध लिखकर 'श्रीस्वाध्याय' के लिए भेजनेका उपक्रम आरम्भ किया है, इसके लिए 'श्रीस्वाध्याय' के संचालक और पाठकगण आपके आभारी हैं। हमें आशा है कि इस निबन्धके द्वारा भारतीय पर्वोंका पुनरुज्जीवन और प्राचीन आर्य संकृतिका संरक्षण होगा। —सम्पादक]

भूमिका—

भारतके तत्त्वदर्शी महर्षियोंने किसी भी देव-देवी या महापुरुषके सत्कर्मोंका सदैव स्मरण रहने और उनका व्यापक प्रचार बढ़ानेकी कामनासे पर्व नियत किये थे। उनमें कोई कहीं और कोई कहीं सर्वत्र ही होते हैं। अनुसन्धानसे सूचित होता है कि अन्य देशोंकी अपेक्षा भारतमें और भारतीय अन्य जातियोंकी अपेक्षा हिन्दुओंमें इनका आधिक्य है और इसी कारण 'सात बार-नौत्यौहार' विख्यात हुए हैं।

हिन्दू पर्व अकेले हिन्द या हिन्दूओंको ही लाभ नहीं पहुँचाते; इनसे सभी देश और जातियोंको लाभ होता है। इनमें यह विशेषता है कि ये हर्ष और उत्साहसे मनाये जाते हैं। और स्नान ध्यान गायन वादन और गोष्ठी आदिसे सम्पन्न होते हैं। इनमें छोटेसे छोटा और बड़ेसे बड़ा कोई भी पर्व तथ्यहीन नहीं है। सभीसे संसारकी आर्थिक, पारमार्थिक, सामाजिक, व्यावहारिक, राजनैतिक या लोकसत्तात्मक और मनोविनोदात्मक वा आरोग्य-बर्द्धक परिस्थितियाँ स्फुरित होती हैं।

खेद है कि ऐसे हितकारी पर्वके (त्यौहारोंके) स्वरूपको स्वयं हिन्दू ही भूलते जाते हैं। मेरा विचार है कि 'श्रीस्वाध्याय' के द्वारा इनका प्राचीन और अर्वाचीन लोक-प्रशस्त या शास्त्र-सम्मत दोनों स्वरूप प्रकाशित करूं। आशा है विशेषज्ञ विद्वान् अपने यहाँ होनेवाले पर्वोंका (त्यौहारोंका) आवश्यक दिग्दर्शन और ज्ञातव्य परिचय भेजकर इस लोकोपयोगी विषयको सार्वदैशिक स्वरूप बनानेमें यथोचित सहायता अवश्य देंगे।

यद्यपि इस विषयकी दो तीन पुस्तकें विभिन्न स्थानोंसे प्रकाशित हुई हैं और उनके नाम भी आकर्षक हैं, किन्तु विषय योजनाकी उनमें अवश्य ही बहुत न्यूनता है और पर्व (त्यौहार) भी सब नहीं; इने गिने थोड़े ही हैं। अतः उन सब त्रुटियों की पूर्ति करनेके विचार से ही मैंने हिन्दू-पर्व नामके इस निबन्धका आरम्भ किया है। इससे पाठक जान सकेंगे कि इसमें कैसे आवश्यक और प्रयोजनीय विषयोंका समावेश होगा।

(१) नवीन वर्ष—

(सम्वत्का आरम्भ और उसके उत्सव समारोह)

भारतमें अबतक अनेक संवतोंका उदय और अस्त अथवा आरम्भ और समाप्ति हो चुकी। उनमें अधिकांश सम्वत् किसी चक्रवर्ती राजा, बादशाह या सम्राट्के नामसे हैं और कई एक किसी त्यागी तपस्वी लोकमान्य या उत्कृष्टगुण-सम्पन्न व्यक्ति विशेष के हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवज्ञ विद्वानोंने कलियुग सम्वतोंमें छः 'शककर्त्ता' माने हैं। उनमें पहले युधिष्ठिर, दूसरे विक्रमादित्य, तीसरे शालिवाहन, चौथे विजयाभिनन्दन, पांचवें नागार्जुन और छठे कल्कि हैं। इनके सम्वत् यथा समय पहले हुए थे, अब भी हैं और आगे भी होंगे। इनके अतिरिक्त देशी विदेशी और भी कई सम्वत् हुए हैं, जिनका व्योरे-वार पूरा विवरण यहाँ नहीं दिया है। केवल नामोल्लेख किया है। साथ ही यह भी लगा दिया है कि वे विक्रमसे पहले या पीछेके हैं।

यथा – (१) 'कोलम्ब' सम्वत् वर्तमान विक्रम सम्वत् २००० से ६६७७ वर्ष पहले था। इसी प्रकार (२) 'सप्तर्षि' सम्वत् ८७२१, (३) 'बार्हस्पत्य' ५०७२, (४) 'युधिष्ठिर' और (५) 'कलि' संवत् ५०४४, (६) 'तिब्बी' या चीनाब्द २४१४, (७) रोमकाब्द८०६, (८) 'ब्रह्म' ६००, (६) 'बौद्ध' ४८६, (१०) 'महावीर' ४७०, (११) 'शंकराब्द' ४००, (१२) 'मौर्य' ३१२, (१३) 'सलौकी' २५५, (१४) 'पार्थिव' ११०, और (१५) 'आनन्द' सम्वत् विक्रम सम्वत्से २० वर्ष पहलेका है।

इसके अतिरिक्त (१) 'खृष्ट्यब्द' (ईसवी सन्) विक्रम सम्वत् ५७ से आरम्भ हुआ है इसी प्रकार (२) 'ग्रहपरिवृत्ति' ८१, (३) 'नवद्वीपी' १३१, (४) 'शालिवाहन' १३५, (५) 'वालिद्वीपी' १३८, (६) 'कलचुरी' (चेदी) ३०६, (७) 'गुप्त' ३७६, (८) 'हिजरी' ५३८, (मक्कासे मदीना गए तबसे) (६) 'मालवी' ५७१, (१०) 'वलभी' ६०७, (११) हर्षाब्द' ६०७, (१२) 'पारसी' ६८१, (१३) सिंहाब्द ११९४, (१४) 'चालुक्य' १२१६, और (१५) 'बंगला' विक्रम सम्वत्में आरम्भ हुआ।

उपर्युक्त अनेक सम्वतोंमें वर्तमान विक्रम सम्वत् भारतका 'चक्रवर्ती राजा' या 'सार्वभौम सम्वत्' है। यह प्रतिवर्ष पंचांगोंके रूपमें प्रकट होता है, जिसमें सौर और चान्द्र दोनों सम्वतोंका समावेश रहता है। यह गणित, फलित, सद्भविष्य, महर्घ समर्घ, व्रतउत्सव, शुभाशुभ और महूर्तादिके देखने तथा लोक-व्यवहार चलाने आदिमें उपयुक्त होता है।

(२) विक्रमादित्य—

वे बड़े विख्यात राजा थे। प्रजाके हितके लिए उन्होंने अनेकों काम किए थे, जिनसे अकेले भारतका ही नहीं अन्य देशोंका भी बहुत उपकार हुआ और होरहा है। वे कला-कुशल, व्यवहारदक्ष-धर्मप्राण और शास्त्रज्ञ थे। उन्होंने प्रजामें धन विद्या और कलाका अतः पर प्रचार किया था और पुत्रकी भांति पोषण किया था।

विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे प्रारम्भ होकर (सौरके ३६० और चान्द्रके ३६५ दिन पूर्ण होने पर) चैत्र कृष्ण अमावसको समाप्त होता है। यदि प्रमादवश इसे वैशाख ज्येष्ठ या माघ फाल्गुन में प्रतिपद् भिन्न मनमानी तिथिसे आरम्भ किया जाय तो पञ्चाङ्गके आधारसे होने वाले सभी काम अस्त व्यस्त होजायँ—ऋतु परिवर्तनादिकी सीमा घट बढ़ जाय—और उदयास्तादिका तो ज्ञान ही दूसरे साधनों से हो। अस्तु।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे देशहितके अनेक कामोंका आरम्भ होता है। उनमें संवत्सरका पूजन, पञ्चाङ्गका श्रवण, ध्वजाका रोपण, गोद्विज देवादिकी सेवा, प्रपा (प्याऊ) का प्रारम्भ, नवरात्रोंका स्थापन, लोक हितके साधन, विधानादिकी व्यवस्था, और प्रेमोपहारादिका समर्पण आदिका आरम्भ किया जाता है। स्वयं ब्रह्माजीने भी इसी दिन सृष्टिका आरम्भ किया था। इसी लिए यह दिवस अधिक महत्त्वका माना गया है।

सम्वत्सरके आरम्भकी प्रतिप्रदा उदय व्यापिनी ली जाती है। यदि वह वृद्धिक्रमसे दो दिन तक उदय व्यापिनी रहे तो पहले दिन और उसका क्षय हो जाय तो (अमावसके अनन्तर) प्रथम दिनमें सम्वत्सरारंभ मानना चाहिए। कदाचित् चैत्र अधिक मास हो (अर्थात् चैत्र दो हों तो) दूसरे चैत्रकी उदय व्यापिनी प्रतिपदाको शुभ कर्मोंका आरम्भ करना चाहिए।

कार्यकर्त्ता चैत्र शुक्ला प्रतिपदाको प्रातःकालके समय शौचस्नानादि नित्यकृत्यसे निवृत्त होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यारम्भकी सामग्री आदिको यथास्थान स्थापित करके शुभासन पर पूर्वाभिमुख बैठे और चौकी या बालूकी वेदी पर वस्त्र बिछा कर अक्षतोंका अष्टदल बनावे और उस पर गणेशादिका स्थापन करके आगे दी हुई प्रयोग विधिके अनुसार उनका तथा संवत्सरके ब्रह्मादि देवताओंका यथाविधि पूजन करे। इसके अनन्तर—

संवत्के १ राजा, २ मंत्री, ३ सस्येश, ४ धान्येश, ५ मेघेश, ६ रसेश, ७ निरसेश, ८ फलेश, ९ धनेश, १० दुर्गेश (इन दशाधिकारियों) का फल श्रवण करके नीमके कोमल पत्तोंमें अन्दाजका हींग, जीरा, नमक और अजमोद मिला कर भक्षण करे। यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे प्रतिदिन एक एक पत्ती बढ़ा कर पूर्णिमाको १५ पत्ती खाय और वैशाख कृष्ण प्रतिपदासे प्रतिदिन एक एक पत्ती घटा कर अमावस को केवल एक पत्र भक्षण करे तो इस कल्पसे अनेक व्याधियां नष्ट हो जाती हैं और भविष्यमें शरीर निरोग रहता है।

संवत्सर सम्बन्धी पूजा समारोह किसी देशमें स्वल्प और किसीमें अधिक विधानसे किए जाते हैं। यथा (१) संवत्सरका पूजन—दक्षिण भारतमें (२) ध्वजारोपण—देशी रियासतोंमें, (३) पंचांग-श्रवण— ग्रामीणोंमें, (४) निम्बपत्र प्राशन— वैद्य-समाज में, (५) नवरात्र महोत्सव— बंगाल और बंगालियोंमें और (६) प्रपा प्रारम्भ सर्वत्र ही यथोचित प्रकारसे सम्पन्न होते हैं।

(३) प्रयोग-विधि—

संवत्सरप्रतिपदि प्रातर्गृहांगणाद्युपलिप्य रंगवल्लीतोरणादिभिरलंकृत्य सपरिवारः (एकाकी वा) तैलाभ्यंगं कृत्वा मांगलिकस्नानं विधाय कृतनित्यक्रियो वस्त्रालङ्कार भूषितो गृहद्वारदेशे सुशोभितं पुष्पमालादि भूषितं आरक्तवस्त्रनिर्मितं (परंपरागत रंगरंजितं वा) ध्वजं संस्थाप्य पट्टिकापीठे संवत्सर पूजनार्थं गणेशमपि संस्थाप्य पूजयेत्। 'आचम्य प्राणानायम्य सुमुखश्चेति गणपतिं स्मृत्वा संकल्पं कुर्यात्। देशकाल संकीर्तनान्ते शुभफलप्राप्तिकामनया सकलाभीष्टसिद्धये संवत्सरपूजनमहं करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं च करिष्ये। गजास्य गणनाथत्वेति — गणपतये नमः आवाहनं आसनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनं स्नानं (वस्त्रं) यज्ञोपवीतं गंधं अक्षतानि पुष्पाणि धूपं दीपं नैवेद्यं आचमनं ताम्बूलं दक्षिणां नीराजनं प्रदक्षिणां च समर्पयामि। उद्यद्दिने० वक्रतुंडे० त्यादिना मंत्रपुष्पांजलिं दद्यात्। ततः वामकरे अक्षतानि गृहीत्वा दक्षिणकरेण किञ्चिन्निक्षिप्य। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि। सूर्याय नमः सूर्यं आवाहयामि। सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। (एवं सर्वत्र) भौमाय नमः भौमं०। बुधाय०। गुरवे०। शुक्राय०। शनैश्चराय०। राहवे०। केतुभ्यः०। ब्रह्मणे०। कालायै०। निमेषाये०। त्रुटये०। लवाय०। क्षणाय०। काष्ठायै०। कलायै०। सुषुम्णायै नाड़िकायै०। मुहूर्ताय०। निशाभ्यो०। पुण्यदिवसाय०। देशाय०। पक्षाय०। मासाय०। ऋतुभ्यः०। अयनाय०। सपरिवाराय संवत्सराय०। इडावत्सराय०। अनुवत्सराय०। वत्सरेभ्यो०। कृतयुगादिभ्यो०। नक्षत्रेभ्यो०। योगेभ्यो०। करणेभ्यो०। राशिभ्यो०। व्यतीपाताय०। प्रतिवर्षाधिपाय०। विज्ञाने०। सानुपात्रे०। कुलनागे०। चतुर्दश मनुभ्यः०। पुरंदरे०। पंचभ्यो दक्षकन्याभ्यो०। देव्यै०। सुभद्रायै०। जयायै०। भृगुशास्त्रायै०। सर्वशास्त्रजनकाय०। बहुपात्राय पत्निसहिताय०। वृद्ध्यै०। ऋद्ध्यै०। मित्राय०। धनदाय०। गुह्यक स्वामिने०। नलकूबराय०। शंखपद्माय०। निधिस्थिते०। भद्र काल्यै०। सुरेभ्या०। वेदविदाय०। वेदांगविद्या संस्थापकाय०। नागयक्षसुपर्णेभ्यो०। गरुड़ाय०। वरुणाय०। सप्त द्वीपाय०। सप्तसमुद्रे०। सागरेभ्यो०। उत्तर कुरुभ्यो०। ऐरावताय०। भद्राश्वकेतुमालाय०। इलावृताय०। हरिवर्षाय० किंपुरुषाभ्यां० नवभारतभेदेभ्यो० सप्तपातालेभ्यो० सप्तनरकेभ्यो० कालाग्निरुद्रशेषाभ्यां० हरयेक्रोड़रुपिणे० सप्तलोकेभ्यो० महाभूतेभ्य० तमसेतमप्रकृत्यै० रजसेरजप्रकृत्यै० प्रकृतये-पुरुषाय० अभिमानाय० अव्यक्तमूर्तये० हिमवानादि-पर्वतेभ्यो० सुपर्णेभ्यो० गंगादिनदीभ्यो० सप्तमुनीभ्यो०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारदादिसप्तर्षिभ्यो० पुष्करादितीर्थेभ्यो० वितस्ताद्या-निम्नगानदीभ्यो० चतुर्दशदीर्घेभ्यो० धारिणिभ्यो० धात्रेभ्यो० विधात्रेभ्यो० छंदोभ्यो० सुरभ्यै० रावणाभ्यां० उच्चैश्रवसे० ध्रुवाय० धन्वन्तरये० शस्त्रास्त्राभ्यां० विनायककुमाराभ्यो० विघ्नेभ्यो० शाखाय० विशाखाय० विनायकस्कंधगृहेभ्यो० स्कंधमातृभ्यो० ज्वरापरोगपत्तये० भष्मकहरणाय० ऋत्विगभ्यो० बालखिल्येभ्यो० काश्यपाय० अगस्तये० नारदाय० व्यासादिभ्यो० अप्सरेभ्यो० सोमपाभ्यो० असोमपाभ्यो० स्तुषितेभ्यो० द्वादशादित्येभ्यो० सगणैकादशरुद्रेभ्यो० पुण्येभ्यो० विश्वेदेवेभ्यो० अष्टवसुभ्यो० योगीभ्यो० द्वादशभृगुभ्यो० अंगिरेभ्यो तपस्विभ्यां० नासत्यदस्राभ्यां० अश्विभ्यां० द्वादशसाध्येभ्यो० द्वादशपौराणिकेभ्यो० एकोनपंचाशद्मरुद्गणेभ्यो० सिल्पाचार्याय-देवायविश्वकर्मणे० आसनेभ्यो० दुंदुभिभ्यो० देवेभ्यो० दैत्यराक्षसगंधर्वपिशाचेभ्यो० सप्तभेदेभ्यो० पितृभ्यो० प्रेतेभ्यो० सूक्ष्मदेवेभ्यो० भावगम्येभ्यो० बहुरूपाय विष्णवेनमः विष्णुं आवहयामि। ससंवत्सर ब्रह्मादि स्थापित देवेभ्यो नमः आसनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनं स्नानं वस्त्रं उपवीतं अलंकारं गंधं अक्षताणि, पुष्पाणि धूपं दीपं नैवेद्यं आचमनं ताम्बूलं दक्षिणां नीराजनं प्रदक्षिणां चेतिसंपूज्य यज्ञेनयज्ञमयादिना पुष्पाञ्जलि दद्यात्।

ततः प्रार्थना—

भगवंस्त्वं प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे।
संवत्सरोपसर्गा मे विलयंयात्वशेषतः॥

इति प्रार्थनां कुर्यात्। ततो ब्रह्मध्वजायनमः। इति षोडशोपचारैःध्वजं संपूज्य प्रार्थयेत्। "ब्रह्मध्वज नमस्तेस्तु सर्वाभीष्ट फलप्रद। प्राप्तेऽस्मिन्वत्सरे नित्यं मद्गृहे मङ्गलं कुरु।" ततः मरीचि हिंग्वादि संस्कृतं निम्बपत्रं भक्षयेत्।

पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः।
अजमोदादि संयुक्तं भक्षयेद्रोगशान्तये॥

इति पठित्वा। ततो पंचांगपूजनं। पंचांग श्रवण कल्पोक्त फल प्राप्तये पंचांगस्थ देवता पूजनं। ज्योतिर्विन्मुखात्पंचांग श्रवणं च करिष्ये। ज्योतिर्विदं संपूज्य तन्मुखात्पंचांगस्थ दशाधिकारीणां श्रुत्वा गणकादिभिः संपूज्य तेभ्य फल पुष्पान्नानि च दद्यात्।

॥ इति संवत्सरपूजा विधिः॥

यह भी जीवनका उपहार

[कवयिता—श्री पं० चन्द्रदत्त जी जोशी शास्त्री "चन्द्र"]

सुन्दर उपवन विकसित कलियाँ
मादक सुरभि मधुव्रत गुञ्ज।
नयनाकर्षक कर्ण - रसायन
मधुर मनोहर कुञ्चित कुञ्ज॥१॥

झञ्झाका आघात निष्करुण
सब पलमें देखा पुञ्जित।
कर्दम संछादित शाखाएँ,
कलियाँ शोभासे वञ्चित॥२॥

भ्रमर मर रहा भ्रम से मूर्च्छित
उपवनमें था हाहाकार।
पुष्प-पराग कलुष मुख था
थी मधु बिन्दुच्युति आंसूधार॥३॥

ऐ माली! तू तो माली था
कुछ लेता करुणाका नाम।
दूर भले कर देता पर लेने
देता, अन्तिम विश्राम॥४॥

निर्मम करसे ऐ! करुणामय! करके पावकका संचार।
तूने मुझको बता दिया है यह भी जीवनका उपहार॥५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणपति पूजन

[लेखक—विद्याभूषण विद्यावागीश श्री पं० दीनानाथ जी शर्मा शास्त्री सारस्वत]

(गताङ्कसे आगे)
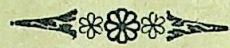
बृहत्पराशरस्मृतिको स्नातक धर्मदेव आर्य-समाजिकने काश्मीरिक 'श्री' पत्रिकाके ५।१ अङ्कके ४१ पृष्ठमें मूलधर्मशास्त्र माना है। उसमें भी—

"तस्मात् तदुपशान्त्यर्थं समभ्यर्च्य गणेश्वरम्।" (६।६)
'एतेन सम्पूज्य गणाधिदेवं विघ्नोपशान्त्यै।' (६।३१)

इत्यादि स्थलों पर विघ्नोंके विघातके लिए गणपतिका पूजन माना है।

गृह्यसूत्रोंको वादी लोग भी प्रमाण मानते हैं। उनमें बोधायन-गृह्यशेषसूत्रके तृतीय प्रश्नके दशम अध्यायमें भी विनायककल्प अर्थात् गणेशपूजन वर्णित किया है। हमने इनके पूरे प्रमाण तथा उनपर ऊहापोह अपने बनाये हुए चार हजार पृष्ठके "श्रीसनातनधर्मालोक" नामक संस्कृत ग्रन्थमें (जिसमें सनातनधर्मके ढाई सौ २५० विषयों पर विचार किया गया है) लिखे हैं। यहां पर विस्तारभयसे लिखना कठिन है। केवल दिग्मात्र कुछ शब्द उद्धृत करते हैं।

"मासि मासि चतुर्थ्यां .... अभ्युदयादौ सिद्धि-काम .... भगवतो विनायकस्य बलिं हरेत्" (बो० गृ० शे० सू० ३।१०।१) '....... हस्तिमुखाय स्वाहा' ३।१०।६ इस प्रकार, गणेशपूजन गृह्यसूत्र प्रोक्त भी सिद्ध हुआ।

कई लोग उक्त ग्रन्थमें "इत्याह भगवान् बोधा-यनः" यह शब्द देखकर उसे बोधायन-कर्तृक माननेको प्रस्तुत नहीं होते। पर यह कथन व्यर्थ है। क्योंकि प्राचीनोंकी शैली ही ऐसी है कि वे अपने ग्रन्थ शिष्यों द्वारा ही प्रकट करते थे। इसीलिए ऐसा लिखना सम्भव है। जैसे सुश्रुत-संहितामें प्रत्येक अध्यायके आरम्भमें "इत्याह भगवान् धन्वन्तरिः" चरकसंहितामें 'यथाह भगवान् पुनर्व-सुरात्रेयः' लिखा है। इसी प्रकार मन्वादि सभी स्मृतियोंमें भी शैली दिखाई देती है। तब क्या सभी पुस्तकें अप्रमाण हो जाएँगी ? कभी नहीं।

कृष्णयजुर्वेदकी मैत्रायणी संहितामें

'तत्कराटाय विद्महे हस्तिमुखाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्'

यह गणेशगायत्री भी प्रसिद्ध है। इससे भी गणेशपूजन वैदिक सिद्ध हुआ। महाभाष्यके **पस्पशाह्निक** में यजुर्वेदकी १०१ शाखाएँ गिनी गई हैं। उसमें १५ शाखा शुक्लयजुर्वेदकी हैं, और ८६ शाखायें कृष्णयजुर्वेदकी गिनी गई हैं। मैत्रायणी शाखाकी भांति बौधायनादि शाखा भी कृष्णयजुर्वेद की हैं। वेदकी शाखायें भी वेद होती हैं। तभी 'सर्वे देशान्तरे' वार्तिकके महाभाष्यमें 'वेद' यह कहकर 'यन्मे नर श्रुत्यं ब्रह्मचक्रं' (६।१८) यह काठिकसंहिता-का तथा 'यद्वो रेवती रेवत्यां तमूष' यह लुप्त-शाखाका उदाहरण दिया गया है। इस विषयमें अन्य भी बहुत प्रमाण हैं; समय पर उपस्थित किये जायेंगे।

इसी प्रकार कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयारण्यकमें 'तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात् (१०।१)

यह गणेशका मन्त्र दिया गया है। उपनिषद् आरण्यकादि भाग ब्राह्मणभागान्तर्गत हैं। ब्राह्मण-भाग भी मन्त्रभागकी भांति वेद है। इस विषयमें भी कभी अन्य समयमें लेख दिया जायेगा। महा-भाष्यमें ३।१।७ सूत्रमें 'शृणोत-ग्रावाणः' १।३।१३।१ इस तैत्तिरीयसंहिता (कृष्णयजुर्वेद) के मन्त्रको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ऋषि' शब्दसे वेद माना गया है। इससे कृष्णयजुर्वेद भी वेद सिद्ध हुआ। जो इस पक्षको नहीं मानते उनका आधार हठके अतिरिक्त कुछ नहीं।

प्रकरणवश गणेशके गजाननत्व पर भी विचार किया जाता है। कई लोग गणेशकी कथामें शिवके द्वारा उसके सिरका काटना, फिर पार्वतीके अनुनयसे गजके सिरका उसके ऊपर जोड़ना असम्भव मानते हैं। उनका अभिप्राय है कि 'सिर कटनेसे पुरुष मर जाता है। तब उसकी ग्रीवा पर गज सिरकी प्राप्ति वा सन्धान ही कैसे हुआ?' इस पर शङ्काकर्ताओंकी व्यवहारानभिज्ञतासे शोचनीयता सिद्ध होती है। यहाँ पर लौकिकदृष्टिसे भी असम्भव नहीं। कबन्धोंका नृत्य प्रसिद्ध है। सिरके सहसा काट देनेसे शरीर-स्थित धनञ्जय वायु बहुत काल तक ठहरती है। इसलिये कबन्ध नाचते हैं। पठान जाति वाले लोग भी पहले हिन्दुओंका सिर तत्काल काटकर गर्म तवे पर डाल देते थे, तब भीतर धनञ्जय वायुके होनेसे सिर नाचता था, और पठान प्रसन्न होते थे। सर्पके सिर मसल देने पर भी उसका शरीर कांपता रहता है। छिपकलीकी पूंछ काट देने पर भी कुछ समय तक हिलती रहती है। फिर इसमें देवताओंकी तो बात ही क्या। जरासन्धका जब जन्म हुआ था, उसके दो टुकड़े थे, जरा नामक राक्षसीने उसका सन्धान किया था। इस कारण इसमें अनुपपन्नता नहीं। दैवी घटनाओंको मानुषी घटनाके दृष्टिकोणसे देखना अन्याय है।

बहुत स्थानों पर इस ढङ्गकी उत्पत्ति भी हो चुकी है, इस कारण इसमें अप्राकृतिकता भी निरस्त होगई। जयपुरीय 'संस्कृत-रत्नाकर' पत्रके सम्पादक महोदयने द्वितीय वर्षकी अष्टम सञ्चिकाके २५५ पृष्ठमें एक घटना लिखी थी, जिसका संक्षिप्त अनुवाद यह है कि "श्रावणशुक्ल दशमी सम्वत् १९९१, २०.८.३४ ई० में मद्रासके कारेडा नामक गांवमें बादागा खानदानके किसी पुरुषके घरमें एक बच्चा उत्पन्न हुआ। उसका मुख हाथी जैसा और शरीर मनुष्यके समान है। कान बड़े हैं, सिर भी बड़ा है। नाकके नीचे तीन अंगुलिकी सूँड है। उसके दोनों ही ओर दो हाथीदांत जैसे छोटे दान्त हैं। वह ११ दिनका भी छः मासके बच्चेके समान है........" इत्यादि।

इस प्रकार बेलगाम (कर्णाटक) से प्रकाश्यमान 'मधुरवाणी' पत्रिकाके ४।१ अङ्कके अन्तिम टाइटल पेजमें भी एक घटना वर्णित की गई है कि—"हरदेयि प्रान्तमें रघुपुर नामक गांवमें एक स्त्रीके तीन बच्चे एक साथ उत्पन्न हुए। उसमें तीसरे बालकके नाकके स्थानमें हाथीकी भांति छोटी-सी सूँड है। बच्चा उसे पीनेके काममें लाता है........" इत्यादि। सर्कस करनेवाले भी हाथीको गणेशकी तरह चौकी पर बैठाते हैं। यह प्रत्यक्ष है। इसलिए इसमें असम्भव बात न रही।

अब इस विषयमें वेदकी साक्षी भी देखिये। शतपथब्राह्मणकी १४।१।१।१८।२०।२१।२२।२३।२४ कण्डिकामें एक घटना आई है, जिसका संक्षिप्त अनुवाद यह है कि अथर्वाके लड़के दध्यङ्को इन्द्रने कहा हुआ था कि यदि इस यज्ञको पूर्ण करने वाली विद्या को तुम किसी औरको बतलाओगे; तो मैं तुम्हारा सिर काट डालूंगा। उसने स्वीकार किया। एक बार उसके पास अश्विनीकुमार आए। उसे उक्त विद्या बतलानेके लिए अनुरोध करने लगे। तब दध्यङ्ने इन्द्रकी धमकी सुना कर निषेध कर दिया। वे थे देवताओंके वैद्य। उन्होंने कहा हम तुम्हें उससे बचावेंगे। दधीचिने कहा— कैसे? उन्होंने उत्तर दिया—

'यदा नौ उपनेष्यसे, अथ ते शिरः छित्त्वा अन्यत्र अपनिधास्यावः। अथ अश्वस्य शिरआहृत्य तत् ते प्रतिधास्यावः। तेन नौ अनुवक्ष्यसि। स यदा नौ अनुवक्ष्यसि; अथ ते तद् इन्द्रः शिरः छेत्स्यति। अथ ते स्वं शिर आहृत्य तत् ते प्रतिधास्यावः'

१४।१।१।२३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्—जब तुम उक्त विद्या हमें देने लगोगे, तब हम तुम्हारा सिर काट कर अलग रख देंगे और घोड़ेका सिर लाकर तुमसे जोड़ देंगे। उससे हमें उक्त विद्या देना तब तुम्हारे उस अश्वके शिरको इन्द्र काट डालेगा। फिर हम तुम्हारा सिर तुमसे जोड़ देंगे। यह घटना आगे हुई। जैसे कि—

"तौ ह उपनिन्ये। तौ यदा उपनिन्ये, अथ अस्य शिरः छित्त्वा अन्यत्र अपनिदधतुः। अथ अश्वस्य शिर आहृत्य तद् ह अस्य प्रतिदधतुः। तेन ह आभ्याम् अनूवाच। स यद् आभ्यामनूवाच, अथास्य तद् इन्द्रः शिरःचिच्छेद। अथ अस्य स्वथंशिर आहृत्य तद्हअस्य प्रतिदधतुः" (शतपथ १४।१।१।२४)

अर्थ पूर्व जैसा ही है। शतपथ ब्राह्मणको स्वा० दयानन्दजी भी प्रमाण मान गये हैं। उन्होंने अपने यजुर्वेद भाष्यकी सत्यतामें शतपथब्राह्मणकी ही साक्षी दी है।

शायद शतपथ ब्राह्मणकी यह अपनी ही कल्पना लोग न मान लें। इसलिये शतपथब्राह्मणने इस कथामें मन्त्रभाग, जिसे वादी लोग वेद मानते हैं— की भी साक्षी दी है। जैसे कि 'तस्माद् एतद् ऋषिणा अभ्यनूक्तम् — 'दध्यङ् ह यन्मधु आथर्वणो वाम् (अश्विनौ) अश्वस्य शीर्ष्णा प्रयदीमुवाच' (ऋ० १।११६।१२) शत० १४।१।१।२५।

वेदके अन्य स्थलोंमें भी दधीचके सिर पर अश्वियों द्वारा अश्वके सिर स्थापन करनेका मूल मिलता है। जैसे कि—

'आथर्वणाय अश्विनौ दधीचे अश्व्यं शिरः प्रत्यैरयताम्। (ऋग्वेद १।११७।२२) युवं दधीचो मन आविवासथो ऊथा शिरः प्रतिवाम् अश्व्यं वदत्' (१।११९।९)।

फलतः उक्त वैदिक कथाकी भाँति गज-मुखका सन्धानभी असम्भव नहीं। जिस प्रकार वेदमें अश्व-मुख द्वारा भी सम्भाषणशक्ति निरूपित की गई है, वैसे गजमुखमेंभी सम्भाषण शक्ति जान लेनी चाहिये। अन्य बात यह भी स्मर्तव्य है कि — देवता स्वभाव से ही अमृतभक्षक होते हैं। वेदमें यह बात मानी गई है, जैसा कि— 'देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम्' अथर्व० ११।७(५)।२३, 'यत्र देवा अमृतमानशानाः' अथर्व० २।१।५ 'देवा अमृतेन उदक्रामन्। अथर्व० १९।१९।१०। सुश्रुतसंहिताके उत्तरतन्त्रमें लिखा है—

येनाऽमृतमपां मध्याद् उद्धृतं पूर्वजन्मनि।
यतोऽमरत्वं सम्प्राप्तास्त्रिदिवास्त्रिदिवेश्वरात्॥
(३९।३)

यह बात धन्वन्तरिके लिये कही गई है। पारस्कर-गृह्यसूत्रमें कहा है—

"देवा आयुष्मन्तस्त अमृतेन आयुष्मन्तः।"
(१।१८।८)

स्वा० दयानन्दजीने भी यह मन्त्र अपनी संस्कार-विधिके अट्ठावन पृष्ठमें उद्धृत किया है। फलतः अमृताशी होने पर सिर काटने से भी शरीर मृतक नहीं हो जाता। इस पर राहु केतु को नहीं भूलना चाहिये। इस प्रकार गणपतिके भी अमृताशी होनेसे शिर कटने पर भी उसकी प्राणवायु निकल नहीं गई। इस पर वेदान्तदर्शनके १।३।३३ सूत्रके भाष्यमें कहा हुआ —

'ऋषीणामपि [एवं देवादीनामपि] सामर्थ्यं न अस्मदीयेन सामर्थ्येन उपमातुं युक्तम्।'

यह श्रीस्वामी शङ्कराचार्यका वचन सदा याद रखना चाहिये। तब गजके शिरके जोड़नेसे यथापूर्व भाषणशक्ति होगई। जैसे जरासन्धकी दोनों सन्धियों के जरा राक्षसी द्वारा जुड़नेसे उसकी अव्यक्त प्राण-वायु फिर व्यक्त हो गई, वैसे हाथीके शिरके सन्धान से भी अन्तर्हित प्राणवायु प्रकटरूपमें होगई। गणेश-पूजनके विषयमें गणेशाऽथर्वशीर्ष पुस्तक भी [जो प्राचीन है] प्रसिद्ध है। विस्तार भयसे उसके अंश उद्धृत नहीं किये गये। उसका प्रकृतोपयुक्त अंश यह है—

"'एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
.......मूषकध्वजम्।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

..............लम्बोदराय एकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय नमः ....।"

कई लोग फिर भी प्रश्न करनेसे नहीं चूकते कहते हैं—"हाथीका सिर बहुत बड़ा, वह छोटे पुरुषकी ग्रीवा पर कैसे समा सका ?" परन्तु यह शङ्का व्यर्थ है। गणपतिको मनुष्य शरीर समझना शङ्काकर्ताकी भूल है। गणपति मनुष्य नहीं, किन्तु देव हैं। देवताओंके शरीर मनुष्य तुल्य नहीं होते; किन्तु बहुत बड़े होते हैं। चाहे आप चित्रोंमें गणेशको ह्रस्व आकारवाला देखें, परन्तु वहाँ वास्तविकता नहीं होती। सूर्य देवताका भी चित्र बनाया जाता है। चित्रमें सूर्य कितना छोटा होता है, परन्तु क्या उतना ही सूर्यका आकार होता है ? नहीं। सूर्य तेरह लाख पृथ्वी जितना है। इस प्रकार देवताओंमें आकारकी दीर्घता जाननी चाहिये। हाथी भी वहाँ पर दिव्य जानना चाहिये, इस लोकका प्राणी नहीं। ऐसा समझने पर फिर कोई विप्रतिपत्ति नहीं ठहर सकती।

दूसरे पुरुष एक अद्भुत परन्तु हास्यास्पद एक कल्पना करते हैं। वे गणपति देवको पृथक् स्वीकार ही नहीं करते। उनका अभिप्राय यह है कि 'ॐ' का पूजन ही गणेशपूजन है। 'ॐ' के आरम्भमें हाथीकी सूंडका आकार दिखलाई देता है। उसे पौराणिकोंने गणेशकी सूंड बना दिया। 'ॐ' में जो अनुस्वार दीखता है उसे गणेशका मोदक (लड्डू) बना दिया गया। इस प्रकार गणपतिपूजन ओङ्कारपूजनकी विस्मृतिका कारण है। इस पर हम यह कहते हैं कि यदि यह कल्पना सत्य मानी जावे, तो फिर चारों वेदों तथा सभी अक्षरोंको भी कल्पित मानकर उन्हें छोड़ देना पड़ेगा। क्योंकि जैसे उन्होंने 'ॐ' से गणेशकी मूर्त्ति सिद्धकी है; वैसे ही 'ॐ' से सभी अक्षर तथा आकार बनाये जा सकते हैं। कई पुरुष इस बातको सिद्ध कर भी चुके हैं। तब आप क्या यह मान कर अन्यान्य अक्षरोंको वर्णमालासे बहिष्कृत कर देंगे ?

वास्तवमें आक्षेपकोंकी यह कल्पना ही बालूकी भित्ति है। क्योंकि 'ॐ' यह आकृति ही स्वयम् अर्वाचीन तथा अशुद्ध है। तब वह औरोंको ही क्या अर्वाचीन सिद्ध कर सकेगी ? प्राचीनकालमें ओङ्कार 'ॐ' इस रूपमें नहीं लिखा जाता था; किन्तु 'ओम्' इस रूपमें ही। बल्कि इसमें 'ओ' भी 'ओ' इस 'अ' वाले आकारमें ही प्राचीनकालमें लिखा जाता था। मकारको अनुस्वार हल् प्रत्याहार परे होने पर हो सकता है, हल्के अभावमें नहीं। तब इसमें हाथीकी सूंड वा मोदककी भ्रान्ति हो ही नहीं सकती। तब यह वादियोंका गणेशपूजा हटानेके लिए व्याजमात्र ही सिद्ध हुआ। गणपतिपूजन तो बहुत प्राचीन है, जबकि 'ॐ' यह आकृति प्रचलित भी नहीं हुई थी।

वादियोंको यह बात भी ध्यानमें रखनी चाहिए कि 'ॐ' शब्दको देखकर जो उसके अग्रभागसे हाथीकी सूँड समझें, और उसके अनुस्वारको देखकर जो उसका लड्डू समझें, वे मूर्ख क्या महामूर्ख हो सकते हैं। उन जैसोंके लिए ही यह कहावत प्रसिद्ध है। 'काला अक्षर भैंस बराबर'। परन्तु गणेशकी हस्तिमुखकी कल्पना निरक्षरोंकी नहीं, किन्तु साक्षरोंकी है। इसमें स्मृतियें, इसमें कृष्णयजुर्वेद, इसमें गृह्यसूत्र भी साक्षी हैं। तब क्या इनके वक्ता वा प्रणेताओंको मूर्ख कहनेका साहस कोई धृष्ट कर सकता है ?

अन्य यह भी विचारणीय है कि ओङ्कारमें न तो कोई हाथीकी आकृति है, न ही उसमें कोई एकदन्तकी आकृति है, न उसमें कोई स्थूलोदरता है, और न ही उसमें कोई मूषकवाहनकी भ्रान्ति हो सकती है। तब गणेशपूजा ओङ्कारपूजा-विस्मरणमूलक है, यह वादियोंकी बात कट गई। बल्कि जहाँ पर गणपतिपूजा होती है, वहाँ पर ओङ्कारकी पूजा पृथक् ही हुआ करती है। गणेशपूजाके ओङ्कारपूजन-विस्मरण मूलक होने पर गणेशसे पृथक् ओङ्कारकी पूजा नहीं होनी चाहिये थी। परन्तु ओङ्कारकी गणेशसे पृथक् जो पूजा की जाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे स्पष्ट है कि वादियोंकी कल्पनाका व्याजसे अधिक मूल्य नहीं।

कई लोग गणेशका मूषकवाहन सुनकर उस पर मखौल उड़ाते हुए उसे दबी जीभसे अप्रामाणिक तथा असम्भव कहनेके लिए बद्धकटि हो जाते हैं कि एक छोटा सा चूहा स्थूलोदर गणेशको कैसे उठा सकता है इत्यादि। इस पर भी दो-चार शब्द लिखना उचित प्रतीत हुआ है, पाठक ध्यानसे देखें।

यजुर्वेदके तीसरे अध्यायके सत्तावन मन्त्रमें यह अंश है—'आखुस्ते पशुः'। इसका अर्थ यह है कि चूहा तेरा वाहन है। यद्यपि इस मन्त्रका देवता 'रुद्र' है, तथापि इसमें रुद्रको ही गणपति रूपमें वर्णित किया गया है। तभी रुद्रसूक्तके 'नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च' यजुः १६।२५। इस मन्त्रमें रुद्रको भी गणपतिरूपमें कहा गया है। इसी प्रकार 'रुद्रस्य गाणपत्यं' यजुः ११।१५। इसमें भी रुद्रको गणपति कहा गया है। उसमें कारण पहले बताया जा चुका है। इस प्रकार यहाँ अप्रमाणिकता तो हट गई। शेष प्रश्न असम्भवका है। उसमें यह निवेदन है कि जब कि गणपति एक देव हैं, तब उसका वाहन मूषक भी दिव्य ही है; साधारण मूषक नहीं। इस प्रकार कार्तिकेयका वाहन मयूर है। उस विषयमें भी जानना चाहिये। तब गणेशका उस पर आरोहण भी अनुपपन्न नहीं। लौकिक मूषकके आकारसादृश्य से तो उसे भी मूषक कहा जाता है, इससे उसका परिमाण भी उतना हो, यह बात नहीं हो सकती।

आकाशमें वृश्चिक, मकर, मीन आदि राशियाँ हैं। उनका यह नाम लौकिक वृश्चिक (बिच्छू), मकर (मगरमच्छ), मीन (मत्स्य) के आकारके सादृश्यको लेकर पड़ा है, क्योंकि उस उस राशिका तारामण्डल उसी आकार प्रकारका है। अतएव नाममें भी सादृश्य है। परन्तु क्या परिमाण लौकिक वृश्चिकका वा राशिमण्डलके वृश्चिकका तुल्य हो सकता है ? — कभी नहीं। उन्हीं वृश्चिक आदि राशि पर सूर्यादि ग्रह आरोहण करते हैं। सूर्य १३-१४ लाख पृथिवियोंके परिमाण वाला माना जाता है; तब इतना बड़ा सूर्य छोटसे वृश्चिक (बिच्छू) पर कैसे चढ़ सकता है ? यदि उस वृश्चिकका आकार विशाल माना जाता है तो इसी प्रकार गणेशके मूषकका आकारभी विशाल समझना चाहिये। क्योंकि दिव्य और लौकिकमें परस्पर बहुत भेद हुआ करता है। तब दिव्य मूषक पर गणपतिके आरोहणमें असम्भव दोष हट गया और फिर यह भी याद रखना चाहिये कि वे वाहन भी देवताओंके अवतार विशेष होते हैं, यह साधारण लौकिक नहीं।

इन कुतर्कोंको काट कर फिर हम प्रकरणमें पहुँच कर उसको समाप्त करके प्रकृतविषयका उपसंहार करते हैं। केवल कृष्णयजुर्वेदमें ही गणपति-पूजन नहीं कहा गया, प्रत्युत शुक्लयजुर्वेदमें भी गणपतिकी पूजा बतलाई गई है। जैसे कि—'गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे' (यजुः २३।१९) यहाँ पर अश्वमेधके अश्वका गणपतिरूपसे आह्वान किया जाता है। इसी लिये आर्यसमाज वैदिक प्रेस अजमेरसे प्रकाशित यजुर्वेदमें इस मन्त्रका देवता भी 'गणपति' लिखा गया है, इससे हमारा ही पक्ष पुष्ट हुआ। इसी प्रकार 'रुद्रस्य गाणपत्यं मयोभूरेहि' (यजुः ११।१५) इस मन्त्रका भी देवता आर्यसमाजसे प्रकाशित उक्त वेदमें 'गणपति' लिखा गया है। ऋग्वेदमें भी ब्रह्मणस्पति गणपतिका आवाहन मिलता है, जैसा कि—'गणानां त्वा गणपतिं हवामहे' (ऋ० २।२३।१) अन्य स्पष्ट मन्त्र यह है। देखिये—

'निषुसीद गणपते ! गणेषु
त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्।
न ऋते त्वत् क्रियते किञ्चनारे
महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च ॥'
ऋग्वेद १०।११२।६

यहां पर गणपतिके लिये कहा गया है कि—'न ऋते त्वत् क्रियते किञ्चन' अर्थात् तेरे पूजनके बिना कोई काम प्रारम्भ नहीं किया जाता। इस वेद के मूलको तथा गृह्यसूत्र, स्मृति, एवं पुराणादिकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षीको लेकर ही सनातनधर्मने गणपतिपूजा स्वीकृत की है। 'त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्' इस अंशमें 'विप्र' का निघण्टु ३।१५ के अनुसार 'मेधावी' यह यौगिक अर्थ है। अथवा—

'जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते।
विद्यया याति विप्रत्वं' १३६।

इस अत्रिस्मृतिके प्रमाणके अनुसार 'ब्राह्मणवर्णस्थ-विद्वान्' यह योगरूढ़ अर्थ होगा, क्योंकि वेदमें यौगिक, रूढ़, योगरूढ़ तथा यौगिकरूढ़ सभी प्रकार के शब्द आते हैं। देवताओंमें भी वर्णविभाग माना गया है। इस कारण 'ब्राह्मण वर्णस्थ विद्वान्' यह अर्थ सङ्गत हुआ। गणपतिकी विद्वत्ता महाभारतके लेखक बननेके समय जिसका विवरण महाभारतके आदिपर्व १।७५।८३ में विद्यमान है, स्पष्ट ही है।

कई लोग इस मन्त्रका देवता 'इन्द्र' देख कर कहते हैं कि यह इन्द्रका मन्त्र है, गणपतिका नहीं। उनसे पूछना यह है कि आपके नेता स्वा० दयानन्द जीने अपने भाष्यमें स्वयं लिखित देवताओंसे विरुद्ध भी अर्थ किये हैं। 'द्वादश प्रधयश्च क्रमेकम्' ऋ० १।१६४।४८। इस मन्त्रका देवता स्वामीजीने 'संवत्सरात्मक काल' माना है। परन्तु अर्थ किया है— 'आकाशयान' (हवाईजहाज) का। स्वप्रमाणित निरुक्तका भी यहां अनादर कर दिया। सत्यार्थ-प्रकाशके ११० पृष्ठमें सप्तम समुल्लासमें स्वामीजीने ही लिखा है — 'क्या एक अर्थके अनेक नाम, और एक नामके अनेक अर्थ नहीं होते?' तब उनके अनुयायी हमारे पक्षमें यह बात क्यों भूल जाते हैं?

वास्तवमें हमारा पक्ष तो स्पष्ट भी है, तथा सोपपत्तिक भी। इस मन्त्रमें 'गणपति' शब्द स्फुट ही है। यहां पर इन्द्र 'गणपति' रूपसे वर्णित किया गया है। निरुक्तमें भी यह प्रसिद्ध है —

'एकस्य आत्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति।'
(७।४।६)

इस लिये वहीं पर दैवतकाण्ड सप्तमाध्यायमें तीन देवतामात्र स्वीकृत कर अन्य देवताओंका उन्हीं तीनोंमें अन्तर्भाव माना है। और भी निरुक्तमें देखिये — देवताओंके लिये वहां पर लिखा है —

इतरेतरजन्मानो भवन्ति इतरेतरप्रकृतयः। ७।४।१२
'माहाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते'
(निरुक्त ७।४।८)

एतदादि प्रमाण हमारे पक्षको स्पष्टतया पुष्ट कर रहे हैं।

सबसे प्रबल प्रमाण यह है कि शतपथब्राह्मण में लिखा है— 'इन्द्रः सर्वा देवताः' (३।४।२।२), 'इन्द्रो वै सर्वे देवाः' (शत० १३।२।७।४), 'इन्द्राऽग्नी वै सर्वे देवाः' (शत० ६।३।३।२१) इन प्रमाणोंसे स्पष्ट हुआ कि— इन्द्र देवता हो, चाहे अग्नि देवता; इनकी सब देवताओंके रूपसे स्तुति हो सकती है। इसी लिए ही—

'त्वमग्ने! इन्द्रो······त्वं विष्णुः······त्वं ब्रह्मा' ऋ० २।१।३ 'त्वमग्ने! राजा वरुणो······त्वं मित्रो ······। त्वमर्यमा······' ऋ० २।१।४ 'त्वमग्ने! रुद्रो······। त्वं पूषा······' ऋ० २।१।६

इत्यादि मन्त्रोंमें अग्निको बहुत देवताओंके रूप वाला कहा गया है। इस प्रकार इन्द्रके लिए भी जानना चाहिए। तब इन्द्रकी गणपति रूपसे भी स्तुति की जा सकती है। इससे गणपति देव, तथा उसका पूजन वैदिक सिद्ध हुआ। गणपति कोई देवता विशेष ही वेदमें नहीं, यह बात नहीं कही जासकती। क्योंकि— 'गणानां त्वा गणपतिं ँ हवामहे' यजु० २३।१९ इस, तथा यजु० ११।१५ मन्त्रका आर्यसमाज से छपाये वेदमें भी 'गणपति' देवता लिखा है; यह हम पहले कह ही चुके हैं। तब गणपति देवताकी सिद्धि होनेसे हमारा पक्ष ही सिद्ध हुआ।

इससे यदि उक्त मन्त्रमें इन्द्र ही गणपति-देव रूपसे वर्णित किया गया है; तथापि इससे गणपति देवताका पृथक् अभाव सिद्ध नहीं हो सकता। इसी लिए निरुक्त ७।५।२ में केवल तीन देवता लिखकर शेष देवता इन्हीं तीनके अन्तर्गत माने गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीभगवद्भक्ति

[लेखक—श्री पं० भवानीदत्त जी शर्मा व्याकरणाचार्य]

अखिलचराचर-कारागार - दुस्तार - असार इस संसारमें शूकर - कूकर - कीटपतङ्ग दानव मानवादि चौरासी लक्ष योनियोंमें सर्वश्रेष्ठ ज्ञानवान् मनुष्ययोनि अनेक जन्मके पुण्यसे प्राप्त होती है। इस अलभ्य मनुष्यजीवनपथ पर आरूढ़ हो कर श्रीपूर्णतम पुरुषोत्तम अखण्डकोटि - ब्रह्माण्डनायक सर्वान्तरात्मा परमात्माकी भक्ति ही अपारदुस्तार सागरसे पार करने वाली एक नौका है। इस भगवद्भक्तिका अवलम्बन करते हुए मनुष्य आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक दुःखभयसे निर्मुक्त हो कर सर्वान्तरात्मा परमात्माके विशुद्ध सत्स्वरूपका ज्ञान प्राप्त करके जन्ममरणादि सांसारिक दुःखोंसे निर्मुक्त हो जाता है। अतएव—"तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय"—यह वेदोक्तिप्रमाण है। श्रीभगवान् वेदव्यासजीने श्रवणादि भेदसे नवप्रकार भक्तिका वर्णन किया है। यथा—

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥

मानसिक तथा निष्काम भक्तिका अवलम्बन करना ही मनुष्यको सर्वश्रेष्ठ है। इसका विवरण इस प्रकार है कि— "अयौगपद्याज्ज्ञानानां तस्याणुत्वमिहेष्यते" इत्यादि प्रमाणसे मन परमाणु परिमाण है। मनसे मनुष्य भक्ति समर्पण करता है तो सत्स्वरूप परमात्मा भी मनसे ही ग्रहण करते हैं। इस लिए मनुष्यकी मानसिक स्वल्प भक्ति भी परमेश्वरके मनको पूर्णतया तृप्त कर सकती है। जैसे मानसिक भक्तिसे दिये हुए भक्त सुदामाके मुष्टिद्वय तण्डुल सद्घनचिद्घन घनश्यामके तृप्त्यर्थ हुए। अन्यथा अमानसिक भक्तिसे समर्पित सेवाको भगवान् अपने विराट् मनसे ग्रहण करते हैं। तो कौन शक्तिमान पुरुष परमात्माके विराट् मनकी तृप्ति करनेके लिए समर्थ हो सकता है। अतएव मानसिक भक्तिका अवलम्बन ही सर्वश्रेष्ठ है। एवं सकाम एक व्यापार है। जितनी कोई वस्तु देगा तत्तुल्य ही अन्य वस्तु उसको प्राप्त होगी, न्यूनाधिक नहीं और निष्काममें कई गुणा अधिक फल प्राप्ति होती है। जैसे कि कोई व्यक्ति राजाको निष्प्रयोजन कुछ भेंट समर्पण करता है तो राजा समय प्राप्त होने पर कई गुणा पुरस्कार उस पुरुषको देते हैं। अतएव निष्काम भक्ति मनुष्य

इन्हीं तीन देवताओंमें इन्द्रका भी नाम है। परन्तु इससे "चन्द्रमा देवता, वसवो देवता, रुद्रा देवता, आदित्या देवताः" (यजु० १४।२०) इत्यादि पृथक् देवताओंकी पृथक् सत्ता निषिद्ध नहीं हो सकती।

पुराणोंमें तो गणपति पूजा व्याप्त ही है, जैसे कि भविष्यपुराणके प्रतिसर्ग-पर्वमें द्वितीय भागमें—

पूजयेद् गन्धपुष्पाद्यैः पायसेन घृतेन च।
गणेशं तु चतुर्बाहुं व्यालयज्ञोपवीतिनम्॥२०।१३६

'गजेन्द्रवदनं देवं·······' २०।१४० 'मूषकस्थं महाकायं' २०।१४१ इत्यादि। परन्तु वादियोंकी पुराणोंमें विप्रतिपत्ति होनेसे उन प्रमाणोंका उद्धरण प्रयासमात्र है। वादी लोग स्वयं ही गणेशपूजाको पौराणिक मानते हैं। वैसा माननेमें पुराणोंके प्रमाणों की क्या आवश्यकता ? इसलिए हमने वे ही प्रमाण चुने हैं, जिनमें वादियोंकी विप्रतिपत्ति न हो सके। इस प्रकार गणपति पूजन जहां पौराणिक सिद्ध हुआ वहां स्मार्त्त भी सिद्ध हुआ, गृह्यसूत्रोक्त भी, एवं वैदिक भी सिद्ध हुआ। तब वादियों द्वारा कही जाती हुई—गणपति-पूजाकी अर्वाचीनता— अपास्त हो गई। इतना ही कह कर प्रकृत विषय उपसंहृत किया जाता है। यदि पाठकोंकी रुचि देखी गई तो आगे ग्रहोंके शुभाऽशुभ प्रभाव पर निबन्ध दिया जा सकेगा, क्योंकि गणपतिपूजनके साथ ग्रहपूजन भी प्रसिद्ध है। शम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सर्वश्रेष्ठ है। भगवद्भक्तिमें मनुष्यमात्रका ही अधिकार नहीं अपितु प्राणीमात्रका अधिकार है। अन्यथा गजेन्द्रकी भक्तिसे कैसे व्रजेन्द्र नन्दनन्दन प्रसन्न होते। अशिक्षित मनुष्य भी मानसिक भक्तिसे सर्वान्तरात्मा परमात्माको प्रसन्न कर सकता है।

व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेन्द्रस्य का?
कुब्जायाः किन्नामरूपमधिकं किन्तत् सुदाम्नो धनम्?
वंशः को विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषं?
भक्त्या तुष्यति केवलं न च गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः॥

आचरणहीन होने पर भी व्याधने भक्ति द्वारा अपना उद्धार किया, राजा उत्तानुपातका पुत्र पञ्चवर्षीय बालक ध्रुव अपनी सपत्नीमातासे तिरस्कृत हो कर पूर्णतमपुरुषोत्तम भगवान्का स्मरण करता हुआ सघनारण्यपथवर्ती हुआ। महर्षि नारदके बहुशः प्रतिरोध करने पर भी विचलित नहीं हुआ। इस प्रकार ध्रुवकी निश्चित भक्ति जानकर महर्षिनारदने उसको परमात्माका मूलमन्त्र "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का उपदेश किया। तदनन्तर ध्रुवकी अविच्छिन्न भक्तिसे नारायणदेव प्रसन्न हुए और ध्रुव-पद दिया। जलमें डूबते गजेन्द्रने सर्वान्तरात्मा परमात्मा व्रजेन्द्र नन्दनन्दनका स्मरण किया तो भक्तवत्सल भगवान्ने ग्राहसे उसको निर्मुक्त किया। यदि रूपवान् की भक्तिसे ही परमेश्वर प्रसन्न होते हैं तो कुब्जाका क्या रूप था? जो श्रीकृष्णचन्द्र उसके प्रति प्रसन्न हुए। यदि धनाढ्यकी भक्तिसे भगवान् प्रसन्न होते हैं तो सुदामाके पास क्या धन था? बृहत्परिवारकी भी परमेश्वरको अपेक्षा नहीं। अन्यथा विदुरका कैसे उद्धार होता? यदि बलवान्की अपेक्षा परमात्माको होती तो उग्रकी भक्ति कैसे स्वीकृत होती? इसलिए सर्वान्तरात्मा परमात्मा केवल भक्तिसे ही प्रसन्न होते हैं, गुणोंसे नहीं। प्रथम घोर दुराचार करने पर भी पश्चात् अपने दोषोंका ज्ञान करते हुए दुखित हो कर उतनी ही प्रचुर परमात्माकी भक्ति द्वारा अपने पापोंको समूलोच्छेद करके परमात्माको मनुष्य प्राप्त कर सकता है। जैसे कि भक्त सूरदासजी ने प्रथम घोर दुराचरण करने पर भी पश्चात् अविच्छिन्न भक्ति द्वारा भगवत्प्राप्ति की। कतिपय जन रामकृष्णादि भगवदवतारोंमें भेदबुद्धि रखते हैं। कतिपय जन शैव वैष्णवादिमें भेदबुद्धि रखते हैं। वस्तुतः एक अनादि परमात्मा ही समयानुकूल इस संसारचक्र को चलानेके लिए भक्तोंकी रक्षाके लिए तथा धर्म मर्यादा सुरक्षित करनेके लिए तत्तदवतारादि रूपसे प्रादुर्भाव हुए। गीतामें भगवान् स्वयं कहते हैं कि 'यदा यदा हि धर्मस्य.... परित्राणाय साधूनामित्यादि।' जैसे एक वृक्षसे अनेक शाखायें निकलती हैं किन्तु जड़ एक है। इसी प्रकार एक परमात्माके ही अनेक रूप हैं। इस लिए भेदबुद्धिका नाश करके किसी भी परमेश्वरका रूप स्मरण कर भक्ति द्वारा उस आशुतोष भक्तवत्सल परमात्माको प्रसन्न करे। इस घोर कलिकालमें दारुण दुःखसागरको पार करनेके लिए भक्त्यतिरिक्त अन्य कोई भी साधन हमको प्राप्त नहीं है। द्वापरान्तमें जब श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् अपने उत्तम लोकको प्रस्थान करने लगे तब भक्तोंने प्रार्थना की कि "भगवन्! आपके बिना आपके भक्त इस मर्त्यलोकमें किस प्रकार कालयापन करेंगे? इसलिए इसका कुछ उपाय विचारिए।" तब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने भक्तोंको उपदेश किया कि — "मेरे शरीरसे उत्पन्न मेरी ही आदिशक्ति भक्ति यहां है। उस भक्तिके द्वारा यथासमय मैं अपने भक्तोंको दर्शन देता रहूंगा और दुःख दूर करता रहूंगा।" इसीलिए "नाहं वसामि वैकुण्ठे" इत्यादि वाक्य संगत है, और इसीलिए सर्वकल्याणकारिणी भक्ति ही है।

सुगमं भगवन्नाम जिह्वा च वशवर्तिनी।
तथापि नरकं यान्ति धिग्धिगस्तु नराधमान्।

परमात्मका नाम बहुत मधुर है और जिह्वा भी अपने वशमें है, तो भी नरक जाने वाले मनुष्यको धिक्कार है। धन, पशु, भार्या, बन्धुवर्ग, शरीर सब यहींके साथी हैं। परलोकमें केवल भगवन्नाम ही सहायक है। इसलिए जिस प्रकार भक्त प्रह्लाद, श्री महाराणी द्रौपदी, भक्त ध्रुव, भक्त सूरदास, भक्त सुदामा, भक्तगृद्धराज, भक्त हरिश्चन्द्र, भक्त मोरध्वज इत्यादि कई भक्त सर्वान्तरात्मा भक्तवत्सल श्रीपरमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशहरा

[ले०—कविरत्न काव्यतीर्थ काव्यमनीषी श्री पं० रामदत्तजी त्रिवेदी 'बिमल' साहित्यालङ्कार शास्त्री]

जगन्नियन्ता जगदीश्वरकी नाट्यशालामें सदा अनेक प्रकारके नाटक हुए हैं, होते हैं और होंगे। हुए नाटकोंमें एक 'दश-हरा' का नाटक भी बहुत कुछ महत्त्व रखता है। जब रावणका चारों ओर राज्य था; उसके अत्याचारोंसे पृथ्वी थर्रा रही थी, ऋषि-निकर 'त्राहिमाम्' की पुकारसे नभोमण्डलको विदीर्ण कर रहा था; देवता अपनी-अपनी सेवा बजानेमें तल्लीन थे; तब मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्रजी दशरथके घर अपनी शक्तियोंके साथ कौशल्याके उदरसे जन्म लेके इस नाटकके प्रधान नट बन जाते हैं। उनका जन्म सुनकर ऋषि-मुनियोंके झुण्डके झुण्ड दर्शन करनेके लिए दशरथके घर आते हैं और उन्हें आशीर्वाद देकर धर्मरक्षाके लिए प्रेरित करते हैं।

उनके कुछ बड़े हो जाने पर मुनी विश्वामित्रजी दशरथके दर्बारमें उपस्थित होकर यज्ञ-रक्षार्थ राम लक्ष्मणको लेकर जाते हैं। मार्गमें ताड़का वधसे ही धर्म-रक्षा और पाप-संहारका श्रीगणेश हो जाता है। इधर विश्वामित्र मुनिका यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हो जाता है और उधर महामहिमा माया श्रीसीताजीका स्वयंवर जनक करते हैं। स्वयंवर-समारोहमें मुनिके साथ दोनों भाई राम लक्ष्मण पहुंचते हैं, और शङ्करके धनुषके दो टुकड़े कर डालते हैं। झट सीताजी स्वयंवर-माला श्रीरघुनन्दनके गलेमें डालती हैं। सीतारामकी जोड़ी आदर्श जोड़ी बन जाती है।

विवाह होते ही रामचन्द्रजी घर आते हैं, और दशरथजी शीघ्र राज्याभिषेक करनेके लिए समय निर्धारित करते हैं और ईश्वर-सङ्केतसे नाटकके दूसरे अङ्कका पर्दा उठता है। अभिषेकका दिन निर्वासनमें परिणत हो जाता है। साकेत निवासियों-का सूर्य उदय होनेसे पहले ही अस्त हो जाता है। वह वनका दिन श्रीरामके चरितके ग्रामोफोनमें एक ऐसा डबल रेकार्ड है जिसमें एक ओर राज्याभि-षेकके आनन्दकी भैरवीका आलाप पूर्ण न होनेसे पहले ही दूसरी ओर वन-यात्राकी सोहिनीका शोक-सङ्गीत आरम्भ हो जाता है। सरस्वती मन्थराके द्वारा केकैयीसे श्रीरामचन्द्रको चौदह बर्षका बनवास दशरथसे दिलवाती हैं और रामचन्द्रजी उन चौदह वर्षके अन्दर ही लोक-सन्तापकारी रावणका सकुटुम्ब-विभीषणको छोड़के संहार करते और धराके भारको मिटाते हैं।

जिस दिन रावणका नाश किया गया; उसी दिनको हम 'दश-हरा' कहकर पुकारते हैं। निदान 'दशहरा' है दश मस्तकवाले रावणका नाश होने-वाला दिन। यह दिन जितना व्यापक और पूजनीय है; उतना ही प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण भी है।

(२)

रावण-हन्ता श्रीरामजी क्षत्रिय कुलोत्पन्न थे। क्षत्रियका धर्म वर्णाश्रमधर्मकी रक्षा करना है। इसी-लिए क्षत्रिय संसारकी भुजाएँ कहलाते हैं:—"बाहु-भ्यां क्षत्रियाः स्रष्टः" भुजाका जो धर्म है वही धर्म क्षत्रियका है। जिस प्रकार शरीरकी रक्षा भुजाएँ करती हैं; उसी प्रकार लोककी रक्षा क्षत्रियोंको करनी चाहिए। इसी पुनीत उद्देश्यको लेकर अपने पवित्र कर्तव्यको दिखलाते हुए:—

त्माको प्रसन्न कर इस सांसारिक दुःखसे निर्मुक्त हो कर सदा सुखी हुए। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपनी अविच्छिन्न भक्तिसे श्रीपरमात्माको प्रसन्न कर इस सांसारिक दुःखसे निर्मुक्त हो कर सदा सुखी होवें। इति शिवम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत!
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥१॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥२॥

संहार करनेके लिए भगवान् क्षत्रियकुलमें उत्पन्न हुए थे। आपने दुर्जय रावणका नाशकर सनातन-धर्मको सुदृढ़ एवं चिरस्थायी बनाया था। इसी दिन सनातनधर्मावलम्बियोंकी मन चाही हुई थी, अतः यह त्यौहार दशहरा विशेषरूपेण प्रचलित है और हिन्दू इसे प्राणपणसे मनाकर अपनेको कृतकृत्य मानते हैं।

(३)

रावणके साथ-साथ कुम्भकरणका भी नाम विशेषोल्लेखनीय हैं। पुराणोंसे जाना जाता है कि किसी समयमें यह दोनों भाई थे और जय विजयके नामसे प्रसिद्ध थे। यह विष्णुके यहां द्वार-रक्षकका काम किया करते थे। एक दिन कहींसे घूमते-घामते सनत्कुमार विष्णुके अतिथि बनकर आये; इन्होंने उनको रोका और उन्होंने इनको शाप दे डालाः—"जाओ, तुम दोनों राक्षस हो जाओ।" जय और विजय दोनों शापको सुनकर झेंपे; चट सनत्कुमारोंके चरणों पर गिरकर गिड़-गिड़ाने लगे। इनको आर्त्त देखकर दयालुऋषियोंको दया आई। उन्होंने कहा, कि "पुत्रों! खड़े हो, हमारा शाप तो मिथ्या हो नहीं सकता; किन्तु तुम राक्षस तीन जन्मतक रहोगे, आगे मोक्ष पा जाओगे और तीनों जन्मोंमें भगवान् विष्णु ही अवतार लेकर तुम्हें मारेंगे।" तभीसे वह दोनों राक्षस कुलमें उत्पन्न हुए और हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकशिपुके नामसे पुकारे गये। दूसरे जन्ममें यही रावण और कुम्भकर्ण बने; जिनको मोक्ष देनेके लिए लीलामयको मनुष्यावतार धारण करना पड़ा। बस इतना ही इस पुनीत 'दश-हरा' का संक्षिप्त इतिहास है। यह कहना न होगा कि यही दोनों तीसरी पीढ़ीमें शिशुपाल और दन्तवक्रके नामसे पुकारे गये।

कोई भारतीय ऐसा न होगा, जो इस 'दश-हरा' को न मनाता हो। बंगालियों और रजवाड़ोंमें तो इसे विशेष उत्साहसे मनाते हैं। विशेषतः राजपूतानेमें इस अवसर पर एक भैंसेको रावण मानकर मारते हैं। यद्यपि अब समयके साथ कई स्थानोंमें इस प्रथाका अन्तसा होगया है; तथा बहुतसे स्थानों पर यह अब भी प्रचलित है।

'दश-हरा' प्राचीन गौरवका चिह्न है। इसे मनसा-वचसा एवं धनेन मनाना प्रत्येक भारतीयका पहला एवं मुख्य कर्त्तव्य है। क्योंकि अपने आदर्श पूर्वजोंकी विजयके उपलक्ष्यमें कुछ-न-कुछ अवश्य उत्साह मनावें, जिससे उनकी यादगारी एवं कीर्त्ति चिरस्थायी बनकर हमें पुनीत करती हुई अपने कर्त्तव्यकी ओर अग्रसर करती रहे।

आज जैसे पवित्र दिन बहुत दिनों पर आया करते हैं। इसलिये रामकृष्णके भक्त सभी हिन्दुओं-को वैर-भाव छोड़कर अपने भाइयोंसे गले मिलकर यह प्रतिज्ञा दृढ़ हो कर कर लेना चाहिये, कि हम आजसे अपना सब वैर-भाव छोड़कर एकताके दृढ़ सूत्रमें आबद्ध हो कर प्रातःस्मरणीय श्रीरामचन्द्रजीके पवित्रः—

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नापि मे व्यथा॥

सुनु जननी! सोई सुत बड़भागी।
जो पितु मातु चरण अनुरागी॥
मातु-पिता गुरु-स्वामि निदेशू।
सकल धर्म धरणीधर शेशू॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जायँ पर बचन न जाई॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ।
स्वारथ सुयश धर्म परमारथ॥
पितु आयसु पालिय दोउ भाई।
लोक वेद भल भूप भलाई॥
नर तनु पाय विषय मन देहीं।
पलटि सुधाते शठ विष लेहीं॥

इन मननीय उपदेशों पर अमल करते हुए मर्यादा पालक अपने बचनों पर दृढ़ रहनेवाले,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली वा सुखरात्रि

[लेखक—श्री पं० वृद्धिचन्द्रजी शर्मा वैद्य]

कार्तिक कृष्ण अमावस्या चार रात्रियोंमें प्रधान महारात्रि है। इसका दूसरा नाम सुखरात्रि और कौमुदीरात्रि भी है। इस दिन भारतमें सर्वत्र 'दीपोत्सव' किया जाता है। सर्वत्र दीपदान होता है। इस लिए इसको दीपावली या दीवाली भी कहा जाता है। इसी दिन भगवती लक्ष्मीकी उपासना होती है। लक्ष्मीजीकी पूजाके साथ ही आज ही सरस्वती और केदारगौरी-व्रत भी कहीं कहीं किया जाता है। मुख्यतः यह त्योहार उन लोगोंका है जो अर्थोपासक हैं। किन्तु आज ऐसा कौन है जिसे अर्थकी आवश्यकता नहीं है? जिसे अर्थोपासक न कहा जा सके? भारतवासियोंके सभी कार्य तो अर्थाभावसे रुके पड़े हैं। इस युगमें अर्थ बल ही सर्वोपरि बल है, इस बलकी न्यूनतासे बलवान् रहते हुए भी निर्बल बनकर रहना पड़ता है।

पूर्वकालमें भी सुशासन व्यवस्था और शत्रुदमनके लिए क्षत्रियोंको अर्थकी आवश्यकता सदा रहा करती थी। अर्थ पाकर ही वे पृथ्वी पर एकच्छत्रधर्म-राज्य स्थापित करनेका प्रयत्न करते थे और उसमें सफल होते थे। अर्थके महत्त्वके सम्बन्धमें भीष्म पितामह युधिष्ठिरसे कहते हैं:—

तस्मात् सञ्जनयेत्कोशं सत्कृत्य परिपालयेत्।
परिपाल्यानुगृह्णीयात् एष धर्मः सनातनः ॥

अबलस्य कुतः कोशो ह्यकोशस्य कुतो बलम्।
अबलस्य कुतो राज्यमराज्ये श्रीर्भवेकुतः ॥
तस्मात् कोशं बलं मित्रमथराजा विवर्धयेत्।
हीनकोशं हि राजानं समन्यन्ते न शत्रवः ॥

अबलके पास कोश नहीं होता और जिसके पास कोश न हो वह बलवान् कहाँ होता है? अबलके पास राज्य नहीं होता और बिना राज्यके श्री (लक्ष्मी) कहां हो सकती है? इस लिए कोश, बल और मित्रोंकी वृद्धि करे, क्योंकि अर्थरहित राजाकी शत्रुगण अवमानना करते हैं। इससे यह प्रकट होता है कि यह क्षत्रियोंका प्रधान त्योहार है, न कि वैश्योंका जैसाकि सामान्यतः समझा जाता है। जब हिन्दुओंका साम्राज्य था तभी देशमें सच्ची दीपावली मनायी जाती थी। आज वैश्योंके घरोंमें चाहे कैसे ही आनन्दके साथ बही-बसना-दवात कलमकी पूजा प्रार्थना होती हो, किन्तु पूर्वयुगकी यह प्रार्थना कहीं भी सत्य दिखलाई नहीं देती कि:—

ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै इन्द्राय ते नमः ॥

वैसे तो यही वह दिन है जिसकी प्रतीक्षा आस्तिक धनी-जन वर्ष-दिनसे किया करते हैं, किन्तु प्रायः नास्तिक पुरुष इसका महत्त्व कुछ समझते ही नहीं हैं।

शास्त्रकारोंने लिखा है कि भगवतीके उपासकोंको तन्मय हो कर पूजा करनी चाहिए और रात्रि भर जागरण और नृत्य-वाद्ययुक्त उत्सव करना चाहिए। उनका यह विधान सर्वथा देशकाल-पात्रानुसार उपयुक्त है।

दुराग्रही तो कहते हैं कि रात्रिमें क्यों जागें और फिर दिन में क्यों शयन करें? किन्तु होली

सत्यवक्ता बड़ोंकी आज्ञा माननेवाले सबके प्रिय एवं सनातनधर्मके उपासक बनकर इस विशाल विश्वमें अपने गौरव एवं आदर्शका पाठ पढ़ाते हुए:—

'एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥'

के अभ्रच्छेदी तुमुल नादको निनादित कर दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवाली आदि उत्सवों पर जागरणका ही विधान शास्त्रोंमें है और शास्त्रविहित कालोचित कार्यकलापसे ही मनुष्य लाभ उठा सकता है।

चार महारात्रियां जागरणपूर्वक व्यतीत करनेका विधान है, जिनमें दीपावली उत्सव विशेष प्रमोदमय है। दीपावली उत्सवके दूसरे दिन गोवर्धन पूजा होती है। दिनके प्रत्येक भागमें धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न होती रहती हैं। प्रातःकाल ही "परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ" का सुन्दर विधान अनुष्ठित होता है। देखिये इसके सम्बन्धमें शास्त्र क्या कहते हैं—

सुखरात्रेरुषःकाले प्रदीपे ज्वलिते सति।
सर्वान्बन्धूनबन्धूंश्च वाचाकुशलयार्चयेत् ॥

कितने उदात्तभाव हैं? कहते हैं कि जो अबन्धु हैं उनकी भी मधुर वचनोंसे कुशल क्षेम प्रश्नपूर्वक पूजा की जाय। यहां जबानी जमा खर्चसे काम नहीं चल सकता। यहां तो जो शास्त्रकी मर्यादा है वैसा ही कार्य करना पड़ेगा। किसीका चरणस्पर्श, किसीको प्रणाम, किसीको नमस्कार और अभिवादनादि (जिसका जो अधिकारी है) किया जाता है। ऐसा न करने पर "अपूज्या यत्र पूज्यन्ते" वाली बात चरितार्थ होती है। इसीलिए शास्त्रकी आज्ञा है कि माता पिता गुरु और श्रेष्ठजनोंके चरणोंको स्पर्श कर प्रणाम करें और अबन्धुओंसे मधुर वाणी द्वारा प्रणाम करके मनोमालिन्य दूर करें। महाराष्ट्रमें विजयादशमीको स्वर्णपत्र दानपूर्वक दृढालिङ्गन करते हैं और वर्षभरकी भूलोंके लिए क्षमा याचना करते हैं। सनातनसे चली आने वाली प्रथाका समुचित आदर देखकर असीम आनन्द होता है किन्तु भाव बनावटी होते जाते हैं यह देखकर बड़ा दुःख होता है। जनताको उसी पथ पर आना चाहिए जो सबके लिए आदर्श है।

———

भाईदूज

[लेखक—राजकुमार गुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

कार्तिक शुक्ल द्वितीयाके दिन पूर्वकालमें यमुनाने यमदेवकी पूजा की थी। उस समयसे यह भाईदूजका उत्सव प्रचलित है।

कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वितीयायां युधिष्ठिर !
यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहे स्वयम् ॥१॥
अतो यमद्वितीया सा प्रोक्ता लोके युधिष्ठिर !
अस्यां निजगृहे पार्थ ! न भोक्तव्यमतो बुधैः ॥२॥
यत्नेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं पुष्टिवर्धनम्।
दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विशेषतः ॥३॥
(भविष्योत्तर)

[कार्तिक शुक्ल द्वितीयाके दिन पूर्वकालमें यमुनाने यमको अपने घर में स्वयं भोजन कराया था। हे युधिष्ठिर ! वह तिथि संसारमें यम द्वितीया कही जाती है। हे कुन्तीपुत्र ! इसलिए इस दिन विद्वानोंको अपने घरमें भोजन नहीं करना चाहिए। यत्नसे बहिनके हाथसे पुष्टिकारक भोजन करना चाहिए। बहिनोंको दान भी विशेषरूपसे देने चाहिए।]

कार्तिककी अमावस्याके अन्तमें सूर्य-चन्द्रमा नित्य तुलाराशिमें होते हैं। भरणी यमदेवका नक्षत्र है। (यमस्याप भरणीः। तै० १।५।१।५।।) यह मेषराशिके अन्तर्गत है। तुलाराशिमें सूर्य-चन्द्रमा मेषराशिको सप्तम दृष्टिसे देखते हैं। मेषराशिके स्वामी मङ्गलकी द्वितीय राशि 'वृश्चिक' भी उस समय सूर्य-चन्द्रमाके समीपमें होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य आत्म-ग्रह और चन्द्रमा मनोग्रह है। "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।" (यजु० ७।४६) "चन्द्रमा मनसो जातः।" (यजु० ३१।१२) "पराशर उवाच— कालात्मा च दिवानाथो मनः कुमुदबान्धवः।" (बृहत्पाराशर होरा, खं० १ अ० १ श्लो० २) इस प्रकार इस समय आत्मा और मनका यम-देवके साथ सम्बन्ध होता है। यह तुलाराशि शनिरूप यम-देवका उच्चराशिरूप विशिष्ट बलस्थान भी है।

इस समय आत्मग्रह सूर्यके नीचराशिमें होनेसे और मनोग्रह चन्द्रमाके क्षीण और नीचासन्न होनेसे आत्मशक्ति और मानसिक शक्ति क्षीण होती है। इस कारण मारकशक्तियोंका प्राबल्य होता है। अतएव यह काल मृत्युके अधिष्ठाता यमदेवकी उपासना के योग्य है।

यह — कार्तिककी अमावस्या तिथि — और इससे पूर्व दो तिथियां — त्रयोदशी चतुर्दशी — और इससे आगे दो तिथियां — प्रतिपदा द्वितीया— ये पांच यम पञ्चक तिथियां हैं। इनमें चतुर्दशी, अमावास्या, प्रतिपदा ये मङ्गलकार्यमें अधिक निषिद्ध हैं।

"अमातिथिः पार्श्वतिथिद्वयेन
समं न माङ्गल्यमुपादधाति।
लोकंपृणस्तत्र तिथेः प्रणेता
यस्मान्न पीयूष वपुर्वपुष्मान् ॥१॥"
(विवाह वृन्दावन, अ० ८ श्लो० ३३)

इसलिए कार्तिक शुक्ल द्वितीयाको यमुनाने भ्रातृपूजोत्सवके लिए योग्य माना। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशीके दिन चन्द्रमाके क्षीयमाण होनेके कारण यह उससे उत्तम मानी गयी है।

विशेष रहस्य

यमुनाकी उत्पत्ति सूर्यसे है। 'कालिन्दी सूर्यतनया' (अमरकोश)। चन्द्रमा जलदेवत्य ग्रह है। 'वह्न्यम्बुशिखिकाः....' (बृहत्पाराशर होरा, खं० १ अ० १ श्लो० ८) जलकी उत्पत्ति (अग्नेरापः) इस श्रुतिके अनुसार अग्निसे है। अग्नि सूर्यका अंशरूप है। यम-द्वितीयाके दिन चन्द्रमाके सूर्यके समीपमें होनेके कारण उसमें सूर्यका प्रभाव विशेषरूपसे पड़ता है। इसलिए उस समय उसमें सर्वव्यापिनी यमुनादेवीकी शक्तियां विशेष रूपसे प्रकट होती हैं।

इस दिन यह तुला या वृश्चिकमें होता है। यदि तुलामें होता है तो सप्तमदृष्टिसे यम नक्षत्रमें भरणीसे युक्त राशिमें, यदि वृश्चिकमें होता है तो इस यम नक्षत्रयुक्तराशिके पतिकी राशिमें योगसे इसका प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार चन्द्ररूप यमुनाका मेषराशि रूप और वृश्चिकराशिरूप यमसे सम्बन्ध इस दिन सिद्ध होता है। चन्द्ररूप यमुनाका किरणरूप अमृत मेषरूप या वृश्चिकरूप यमदेवसे इस—यमद्वितीया—दिनमें स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार प्रतिवर्ष इस तिथिमें यम-यमुनाका सम्बन्ध आकाशमें होता है। जिस समय यह योग बलिष्ठ हुआ होगा, उस समय प्रत्यक्ष रूपसे यमलोकमें इस कार्यका आरम्भ हुआ होगा।

मृत्युके अधिष्ठाता विश्वनियन्ता यमदेवकी इस उत्सवतिथिमें मर्यादा पालन करना अत्यन्त आवश्यक है।

इस लेखका साररूप स्वनिर्मित श्लोकः—

दिनेशसूनुर्जगतो नियामक-
श्चकार यस्यां हि तिथौ महोत्सवम्।
स्वया भगिन्या सह तत्र युज्यते
जनस्य सर्वस्य तथा विधोत्सवः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बली काल

"समय एव करोति बलाबलम्"

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

'समय' शब्दके संस्कृत-साहित्यमें तत्तत् परिस्थितिके अनुसार प्रकरणवश कई प्रकारके अर्थ हुआ करते हैं, इस बातको विद्वद्वर्ग प्रायः सभी जानता है। यहाँ 'समय' शब्दका अर्थ 'काल' है। प्रत्येक पुरुष अपनी वस्तुको दूसरेके अधिकारमें देना रुचिकर तथा हितकर नहीं समझता, किन्तु ऐसा होने पर भी परिस्थितिवश अपनी वस्तुको दूसरेके अधिकारमें देना पड़ता है। इसका कारण है काल। काल महान् बली है, इसकी अनुकूलता उन उन पदार्थोंको बली बना देती है, तथा इसकी प्रतिकूलता उन प्रत्येक पदार्थोंको निर्बल बना देती है। वस्तुका निर्बल होना अथवा प्रबल होना यह उस बली कालका ही पूर्ण स्वायत्त अधिकारका खेल है, कारण प्रत्येक पदार्थकी सृष्टि स्थिति तथा लय काल ही किया करता है। बड़े बड़े दार्शनिकोंने "भावानामवभासकः शक्तिविशेषः कालः" इस प्रकार कालका निर्वचन किया है। यह अपनी इच्छानुसार अपनी क्रीड़ाके लिए प्रत्येक पदार्थको प्रबल दुर्बल बनाता रहता है। इसमें ननुनच करनेका किसी जन्तुको अधिकार नहीं। मनुष्य प्राणी मनुष्य लोकमें प्रधान बना, किन्तु उसे प्रधान बननेका सौभाग्य कालने ही प्रदान किया था, इसीलिए उस प्रधान पदको समय समय पर वह छीन भी लेता है। विज्ञ पुरुष इस बातको भली भांति जानते हैं, वे दूसरेकी दी हुई किसी भी शक्ति पर अभिमानसे वृथा इतराया नहीं करते। कालकी अनुकूलतासे बल प्राप्त होनेपर साधु पुरुष वस्तुमात्रके कल्याणके लिए तथा उनकी सुव्यवस्थाके लिए प्रयत्न किया करते हैं, किन्तु असाधु इसके विपरीत वृथा अभिमानसे ग्रस्त हो कर पदार्थमात्रके लिए अकल्याणकारक तथा वस्तुमात्रके अव्यवस्थाकारक कर्म कर बैठते हैं। वे अपने आपको सबसे बढ़कर समझा करते हैं, किन्तु भगवान् वासुदेवके मतमें ऐसे पुरुष अज्ञानसे मूढ़ ही कहे गये हैं। देखिये भगवान् क्या कहते हैं—

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोजिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥

[मैं सम्पन्न हूँ, मैं कुलीन हूँ, मेरे समान और कौन हो सकता है, मैं बड़े बड़े यज्ञ करता हूँ, मैं ही लोगोंको नाना प्रकारके पदार्थोंका दान करता हूँ, मैं ही आनन्द कर सकता हूँ, अज्ञानसे मूढ़ पुरुष इस प्रकारकी निरर्गल तथा अभिमानयुक्त बातें किया करते हैं।]

यह बात सर्वथा सत्य है कि अपनी वस्तुकी प्राप्ति दुर्बलको नहीं हुआ करती, प्राचीन सनातन महर्षियोंका यह एक अटल सिद्धान्त है। उपनिषदोंमें लिखा है कि "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः" [यह आत्मा बलहीनको प्राप्त नहीं होता] किन्तु बड़े बड़े हाँ हाँ करने वाले कालके फेरसे निर्बल क्या विनष्ट भी हो जाते हैं और ऐसे विनष्ट कि मानो उनका अस्तित्व कभी था ही नहीं। भारतीय इतिहासको ही लीजिए, कालकी कड़ी पीठ पर इसी भारतने कितने ही अच्छे अच्छे सुन्दर चित्र लिखे थे, किन्तु आज उन चित्रोंमेंसे बहुतोंका लेशमात्र भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा। किसी समय समस्त भूमण्डलमें शिरोमणिरूपसे विराजमान भारत आज कितना दुर्गत दीन दरिद्र हुआ जा रहा है। जहाँ घृतकुल्या मधुकुल्या बहा करती थीं वहाँ कण-कणके लिए भारतवासियोंका तरस तरस कर प्राण छोड़ देना क्या कालकी महिमा को अभिव्यक्त नहीं करता? ऐसा होने पर भी काल की कृपासे जिन पुरुषोंको थोड़ा बहुत बल अधिकार प्राप्त हुआ है वे इस प्रकार अभिमानसे इतराना छोड़ कर लोक कल्याणके लिए कुछ प्रयत्न करें तो वे काल की दृष्टिमें अपराधी न हो कर पुरस्कारके पात्र भी हो सकते हैं। किन्तु उन्हें इसकी चिन्ता नहीं है, वे उस मिलने वाले पुरस्कारको ठुकराते हुए इस बात को सिद्ध करनेका मानो प्रयत्न कर रहे हैं कि असाधु पुरुष यदि न हों तो संसारका विनाश तथा संसारका अकल्याण किस प्रकार होगा? बली कालकी महिमा अपार है। प्रत्येक राष्ट्रका कर्णधार इसी बात की डौंडी पिटानेमें मत्त है कि मैं ही सम्पूर्ण संसार की रक्षा कर सकता हूँ। संसारकी रक्षाके लिए ही निश्शस्त्र तथा निर्बल बनाना मुझे अभीष्ट हो रहा है। युद्धका विरोध करना मानो अपने आपको नरक लोक ही भेजना है, ऐसा समझाया जाता है, किन्तु क्या उन उन राष्ट्रोंके वास्तविक अधिकारोंकी सुरक्षा तथा सुव्यवस्थाके बिना युद्ध रुद्ध हो सकता है? नहीं कदापि नहीं, बली काल ऐसा नहीं कर सकता। वर्तमान महायुद्धके विगत ४ वर्षोंमें बली कालने कौन कौनसे खेल नहीं खेले हैं? जो जो खेले जाचुके हैं वे जनताके समक्ष आचुके हैं। अब आगे खेले जाने वाले खेल कौन कौनसे होंगे तथा किस प्रकार के होंगे? इस विषय में निश्चित रूपसे कौन क्या कह सकता है? तथापि आज दो वर्षोंसे 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक भली-भांति जान चुके हैं कि 'श्रीस्वाध्याय' की भविष्यवाणियाँ कितनी सत्य सिद्ध हुई हैं। विज्ञ पाठकोंका ही कहना है कि "श्रीस्वाध्याय की भविष्यवाणियाँ ६५ प्रतिशत ठीक उतरी हैं"। वर्तमान परवश परिस्थितिको दृष्टिमें रखते हुए जो कुछ जितना लिख सकते हैं, उतना हम निर्भयता-पूर्वक स्पष्ट शब्दोंमें लिखते आए हैं और भविष्यमें भी लिखते रहेंगे।

श्रीस्वाध्यायके गताङ्कमें हमने ६ महा भीषण अशुभ योगोंका उल्लेख करके उनका सप्रमाण विस्तृत फल लिखा था, वह अब प्रत्यक्ष घटित हो रहा है। 'ग्रीष्माङ्क' में लिखा था कि "नववर्षाङ्क पाठकोंके हाथोंमें पहुँचनेसे पूर्व ही नभोमण्डलमें कई अशुभ योग घटित हो जाएँगे जिनका अनिष्ट परिणाम जन धन विनाशके रूपमें भूमण्डल पर होना आरम्भ होगा"। आषाढ शु० ११ से श्रावण कृष्ण ३० पर्यन्त ४ अशुभ योगोंका उल्लेख करके लिखा था कि—"यह महामारी, राजयुद्ध, देशविप्लव, दुर्भिक्ष, जननाश, अतिवृष्टि आदि उपद्रवोंसे नाना प्रकारका दुःख सूचक है।" तदनुसार श्रावण कृ० १४ ता० ३० जुलाईको राजस्थानके सैकड़ों वर्गमील विस्तृत भूप्रदेशमें विनाशकारी जलप्रलय (बाढ़) ने लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति और असंख्य प्राणियोंके प्राण नष्टकर एवं सहस्रोंको दीन हीन भिखारी बनाकर जो लोमहर्षण उत्पात मचाया वह पाठकोंको विदित ही है। इसी प्रकार पूर्वीय भारत बंगालमें कुछ तो भयानक बाढने और उससे भी अधिक अन्नाभाव (दुर्भिक्ष) ने साक्षात् प्रलयङ्कर शङ्कर (रुद्र) का रूप धारण करके जनसंहार आरम्भ कर दिया है और यह दुर्भिक्षकी व्याधि अभी बढ़ती ही जा रही है; इससे सारा भारत सशङ्क सतर्क हो उठा है। इधर भारत की यह भयावह स्थिति है और उधर यूरोपमें जो युद्धकी भयङ्कर स्थिति बनती जा रही है वह भी संसार के लिए कल्याणकर नहीं है। इन्हीं गत दो मासोंमें इटलीमें जो नाटकीय घटनाएँ घटी हैं अथवा जो अवाञ्छनीय आशातीत राजनैतिक उलटफेर हुए हैं उसकी पहले किसे कल्पना थी? आजसे ठीक ३ मास पूर्व 'श्रीस्वाध्याय' के ग्रीष्माङ्कमें इसी स्तम्भमें हमने ६वें अशुभ योगका उल्लेख करके स्पष्ट लिखा था कि—

"यह योग रोमपत्तन इटलीका अग्निकाण्ड युद्ध विग्रहादि द्वारा पतनका द्योतक है।" उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कई मित्रोंको भी इस वाक्य पर विश्वास नहीं हुआ था, परन्तु इटलीकी वर्तमान दुर्दशाने आज उस योगको अक्षरशः सत्य सिद्ध कर दिया है। इसी प्रकार सन् १६४० में मुसोलिनीके पतनकी भविष्य-वाणी हमने सन् १६४० के मार्चमें समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित करवाई थी। उसीके सत्य सिद्ध होने पर विश्वबन्धुके सुयोग्य सम्पादकजीने अभी ता० १६ अगस्तके अङ्कमें सम्पादकीय टिप्पणीमें लिखा है कि—"मुसोलिनीका पतन सन् १६४३ के जुलाईमें हुआ है परन्तु भारतके विख्यात ज्योतिषी और त्रैमासिक 'स्वाध्याय' के यशस्वी सम्पादक पं० हरदेव-शर्मा त्रिवेदीने मार्च १६४० में ही मुसोलिनीके पतनकी भविष्यवाणी कर दी थी और समय भी बता दिया था…………"

विज्ञ पाठकोंको विदित ही है कि भारतके कई लब्ध प्रतिष्ठ ज्योतिर्विदोंने सं० २००० सन् १६४३ में युद्ध समाप्ति और कइयोंने तो श्रावण या अगस्त माससे ही सुख शान्तिका साम्राज्य स्थापित होना और कराची आदिके कुछ ज्योतिषियोंने २३ अगस्त-को गान्धीजीके बन्धन-मुक्त होनेकी निश्चित घोषणा भी कर दी थी, किन्तु आरम्भसे ही हमारा मत ऐसी भविष्यवाणियोंके सर्वथा विरुद्ध रहा है, यह 'श्रीस्वा-ध्याय' के पाठकोंको विदित ही है। 'श्रीस्वाध्याय' के हेमन्ताङ्क पौष सं० १६६६ के अङ्कमें हमने "युद्ध शीघ्र समाप्त नहीं होगा" शीर्षकसे एक विस्तृत भविष्यवाणी प्रकाशित की थी वह पाठकोंको अवश्य देखनी चाहिए। उस अङ्कका मूल्य अब १) रु० है।

इन तीन मासोंमें क्या होगा ?

आश्विन शु० १० से पोष शु० १० तकके ये ३ मास भी संसारके लिए महान् अनिष्टकर सिद्ध होंगे। मिथुनके शनि और बृहस्पतिके वक्रातिचार द्वारा राशित्रयके स्पर्शका जो सप्रमाण विस्तृत अनिष्ट फल गताङ्कमें लिखा जा चुका है वह तो न्यूनाधिक रूपमें १४ मास पर्यन्त होता ही रहेगा, किन्तु उन अशुभ योगोंमें ही कार्तिक मार्गशीर्ष पौषमें चार-पांच भयङ्कर अशुभयोग और बन रहे हैं; अतः इन मासोंमें संसारमें युद्ध-विग्रह अराजकता आर्थिक संकट दुर्भिक्ष महामारी देशविप्लव पर-चक्रभय अग्निप्रलय आदि आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रवोंसे भीषण विनाश होगा।

(१) पहला अशुभयोग दीपमालाको बन रहा है। चतुर्दशी शुक्रवारको सायंकाल दीपोत्सव लक्ष्मी-पूजनके समय स्वाति नक्षत्र नहीं है और दूसरे दिनप्रातःकाल गोक्रीड़ा गोवर्द्धनपूजनके समय विशाखा नक्षत्र नहीं है, यह किसी सम्राट्की मृत्यु या पतन और दुर्भिक्षका द्योतक है, इसका फल यों लिखा है—

स्वातिमें दीवा ना बले विशाखा न खेले गाय
तो धरतीका पति मरे (वा) समया निष्फल जाय॥

(२) दूसरा अशुभयोग कार्तिक शुक्ल ५ मंगल-वारमें मूल नक्षत्र सम्पर्कका है। यह योग भयानक दुर्भिक्षका द्योतक है। यथा—

दीवा बीती पंचमी जो मूल नक्षत्र होय।
खप्पर हाथां जग भ्रमे भीख न घाले कोय॥

का० शु० ५ को क्रूरवारका होना भी अनिष्ट सूचक है।

(३) तीसरा अशुभयोग कार्तिक शुक्ल पक्षमें १३ दिनके पखवाड़ेका है। यह त्रयोदश दिनका पक्ष युद्धमें भयङ्कर स्थिति उत्पन्न करके महाविनाशका द्योतक है। लिखा भी है।

"त्रयोदश दिने पक्षे तदा संहरते जगत्"

गत सं० १६६७ में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १३ दिनका था, उसी समय फ्रांसका पतन हुआ था। अतः इस समय भी किसी असम्भाव्य अप्रिय अनिष्टकर घटना घटित होनेकी सम्भावना है।

(४) चौथा अशुभयोग कार्तिक शुक्ल १५ को भरणी नक्षत्रके कारण बना है, यह अवर्षण दुर्भिक्ष महामारी हृद्रोग शोक चिन्ता और संसारमें विग्रह-कारक है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा भरणी तद्वत् पूर्णास्यात्पूर्णिमा दिने।
कुत्रचिच्च भवेद्वृष्टिः कुत्रचित्स्यादवर्षणम् ॥
दण्डखडेन हृद्रोगो वियोग गदपीड़नम्।
भ्रामतीति तदा भ्रान्तो विग्रहेण हतं जगत् ॥

(५) पांचवाँ अशुभयोग मार्गशीर्ष मासमें पाँच शनिवार और सूर्यमंगलका प्रतियोग है। इसी मासमें मंगल शनि ये दोनों क्रूर ग्रह वक्री चल रहे हैं, यह संसारमें भयानक विनाश करेंगे। युद्ध-अग्निभय दुर्भिक्ष रोगादि उपद्रवोंसे अनेक दुर्घटनाओंका सामना करना पड़ेगा। शनि मंगलके कारण अनार्य कूटनीतिकी अनेक घातक चालें चली जावेंगी। अधिकारियों और राष्ट्रिय नेताओंमें मतभेद उपस्थित होगा।

(६) छठा अशुभयोग पौष मासमें मंगल बुध गुरु शनि और हर्शल ये पांच ग्रह वक्री हो रहे हैं, ये अनावृष्टि, जन धन नाश, रोग, शीत ओले आदिसे खेतियोंका नाश और भांति-भांतिके उत्पात-के सूचक हैं—

भौमवक्रे अनावृष्टिर्बुधवक्रे धनक्षयः।
गुरुवक्रे स्थिरारोगाः शनिवक्रे जनक्षयः ॥

सारांश—

उक्त अशुभयोगोंका सारांश यह है कि कार्तिक माससे संसारमें युद्ध दुर्भिक्षादि उत्पात जनित भयङ्कर अश्रुतपूर्व आश्चर्यकारक घटनाओंका उपक्रम आरम्भ होगा। महायुद्ध भीषण रूप धारण करेगा और कोई विचित्र परिस्थिति उत्पन्न होगी। मित्र शत्रु और शत्रु मित्रके रूपमें परिवर्तित होनेकी सम्भावना है। यूरोप और भारतके सुदूरपूर्वमें भयानक आक्रमण होंगे और व्यापारमें भयङ्कर उथल-पुथल होगी। अन्न वस्त्र रुई आदि प्रत्येक पदार्थका भाव अत्यधिक महंगा होगा। कण्ट्रोल और राशनिंग पद्धतिके कारण जनता तथा अधिकारियोंकी असुविधाएँ अधिक बढ़ेंगी। कई प्रान्तोंमें अधिकारी स्वयं कण्ट्रोलकी असफलताका अनुभव करके इस बन्धनको ढीला करेंगे और कई प्रान्तोंमें दृढ़ होगा। भारतीय राजनीतिमें नई नई विचित्र समस्याएँ सामने आएँगी। सामाजिक धार्मिक झगड़े भी बहुत होंगे। परस्परमें राजनैतिक और सामाजिक सुधारोंकी चर्चा चलेगी परन्तु इनका परिणाम सफलतामें परिणत न होगा। प्रभावशाली विदेशी शासकों द्वारा राजनैतिक गत्यवरोध दूर करनेका प्रयास किया जायगा, परन्तु पूर्णरूपेण सन्तोषजनक सफलता प्राप्त न होगी।

महात्मा श्री गांधीजीको गुरुमहादशा चल रही है। इसमें अभी ११ मास ६ दिनके लिए मंगलका अन्तर आरम्भ हो रहा है, यह मंगल द्वितीयद्यूननाथ हो कर धन (मारक) स्थानमें दशेश (गुरु) से अष्टम पड़ा है; अतः इस अन्तरमें श्री गांधीजीको शारीरिक मानसिक कौटुम्बिक और राजनैतिक चिन्ताएं अधिक व्याप्त होंगी। रक्ताभिसरण (खूनके दबाव) की व्याधि भी हो सकती है, अतः परिश्रमसे सावधान रहना चाहिए। कार्तिकके अनन्तर श्री गांधीजीको किसी नई राजनैतिक परिस्थितिके लिए बाध्य होना पड़ेगा। तत्कालीन परिस्थितिके अनुसार अधिकारियों से विचारविमर्श करनेके लिए वे स्थानान्तरित वा स्वतन्त्र भी हो सकते हैं।

शनि मंगल स्वभावतः क्रूर हैं और वक्र होने पर इनका क्रूरत्व और भी बढ़ जाता है। आश्विन शुक्ल १३ को शनि वक्री हो रहा है और आगे आर्तिक कृ० ३० को मंगल भी वक्री हो जावेगा। तबसे बड़े बड़े राष्ट्रोंमें रक्तपात, मारधाड़, पारस्परिक कलह, असन्तोष, सामूहिक गत्यवरोध (हड़ताल या असहयोग) रोगवृद्धि और राजवर्ग वा बड़े अधिकारीवर्ग अथवा किसी महापुरुषकी मृत्युकी भी सम्भावना है।

वायुप्रकोप, शीताधिक्य, हिमपात तथा कभी कहीं भूकम्प भी होंगे। अरब, आस्ट्रेलिया, इटली, इंगलेण्ड, जर्मनी, हंगरी, स्पेन, संयुक्तराज्य अमेरिका,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेल्जियम, इजिप्ट, वेल्स, आरमेनिया आदि देशोंमें तथा हमारे भारतमें ब्रह्मदेश, बंगाल, आसाम, बिहार, उड़ीसा, मद्रास, बम्बई और कृष्णासे लङ्का तथा कृष्णासे गोदावरीके बीचके प्रदेशोंमें इनका अनिष्ट परिणाम अधिक होगा। यद्यपि भारतके सुदूरपूर्व तथा पश्चिमके सभी छोटे-बड़े राष्ट्रों और राष्ट्रकर्णधारों के लिए यह समय अनिष्टकारक ही है, तथापि पूर्वकी अपेक्षया पश्चिमी राष्ट्रोंमें अनिष्टकर घटनाएँ अधिक घटित होनेके कुयोग बन रहे हैं। भारतके लिए अभी इतना अनिष्ट नहीं है जितना कि यूरोपादि अन्य देशोंके लिए। हां, इस समय बंगालमें दुर्भिक्ष के कारण जो क्षुधामृत्युकी ज्वाला धधक रही है उसकी लपटें उत्तरोत्तर धीरे धीरे सांसर्गिक रोगकी भांति समस्त भारतमें प्रथित होती प्रतीत होती हैं। "बुभुक्षितः किन्न करोति पापं क्षीणानराः निष्करुणा भवन्ति" के अनुसार दुःखी तृस्त जनता विवेकहीन हो कर अकार्य करनेको उद्यत होगी। जिससे यत्रतत्र क्रांति पारस्परिक संघर्ष लूट खसोट चोरी डाके आदिकी घटनाएँ अधिक होंगी। संक्रामकरोग सन्निपात (निमोनिया) ग्रान्थिक सन्निपात (प्लेग) की व्याधियाँ और आततायी गुण्डोंके उत्पात अधिक होंगे। शारीरिक सम्पत्तिशाली लोगों पर आपत्तियां आएँगी। भारतमें एक नवीन विचारधाराका आविर्भाव होगा; उसका समस्त देश पर प्रभाव पड़ेगा।

पौष शु० ६ शनिवारको प्रारम्भ होने वाला ईस्वी सन् १९४४ किनकिन विशेषताओंको लेकर आ रहा है? और इसमें क्या क्या इष्टानिष्ट परिणाम घटित होंगे? यह जाननेके लिए 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी अङ्क (हेमन्ताङ्क) की प्रतीक्षा कीजिए।

वाणिज्य-व्यवसाय

कार्तिक मासमें—

तुला संक्रान्ति कार्तिक कृष्ण ४ रविवारको मिथुन लग्नमें प्रवेश हुई है। मंगल राहुकी कर्तरीमें लग्नस्थ शनि संसारके लिए अनिष्टसूचक है। गेहूँ चावल तिल उड़द मूंग कम्बल वस्त्र चन्दन केसर रुई कपास मजीठ लाख चपड़ा अलसी सरसों घृत तैल अरण्डी सुपारी राई विशेष तेज। कृष्णपक्ष (बदी) की अपेक्षया शुक्लपक्ष (सुदी) में तेजी अधिक होगी। पाट किरानामें घटाबढ़ी। सुवर्ण चान्दी सुदीमें तेज। अलसी बदीमें कुछ मंदी, सुदी ५ से तेज। गेहूं और सुवर्ण भी बदीमें कुछ मन्दा रह कर सुदीमें तेज होगा।

मार्गशीर्ष मासमें—

वृश्चिक संक्रान्ति मार्ग० कृ० ४ मंगलवारको मिथुन लग्नमें लगी है। लग्न पर मंगल राहुकी कर्तरीमें चन्द्र शनिका योग और लग्नेशका छठे होना किसी भयानक अनिष्ट और महान् आपत्तिका सूचक है। रुई चांदी अलसी पाट गेहूं और सुवर्णमें विशेष तेजी। लाल रंगकी प्रत्येक वस्तु गेहूँ गुड़ शक्कर तांबा चणा मिर्चें ईख और घृत चावल उड़द कम्बल रेशमी वस्त्र किराना तेज। कृषिमें हानि, शीत अधिक। शुक्लपक्षमें मिर्चें वस्त्र अलसी सुवर्ण चान्दी बिनौला सूत घृत अस्थाई रूपमें एक बार कुछ मन्दा होगा। लाख चपड़ा सरसों अलसी तेज।

पौष मासमें—

पौष कृष्ण ५ गुरुवारको धनुर्लग्नमें धनुः संक्रान्ति प्रवेश होगी। रुई चान्दी पाट अलसी सुवर्ण और तुषधान्य गेहूं चावल जौमें विशेष तेजी। ताम्बा चन्दन मोती तिल तैल कपास सूत वस्त्र तेज। इस मासकी ग्रहपरिस्थिति बड़ी विषम है, अतः व्यापार सावधानीसे करें। अचानक कई वस्तुओंमें तेजीमें मंदी और मंदीमें तेजी आना सम्भव है। अन्तमें बाजारका रुख तेजीकी ओर रहेगा। विशेष विवरण अर्थस्तम्भमें 'व्यापारिक तेजीमंदी और ज्योतिष' 'व्यापार विमर्श' आदि लेखोंमें देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंख-ध्वनि

[लेखक—श्री 'शङ्खपूजक']

भारतवर्षका हिन्दू-समाज सहस्रों वर्षोंसे कार्त्तिकी अमावस्याके दिन श्रीमहालक्ष्मीका पूजन करके दीपावलीका उत्सव मनाता है, परन्तु फिर भी देशका दारिद्र्य घटनेकी अपेक्षा दिन प्रतिदिन भारतीयोंके लिए भोजनकी समस्या और भी विकट होती जा रही है। सूक्ष्मतत्त्वान्वेषी लोग इस दारिद्र्य-वृद्धिका कारण चाहे जो समझते रहें परन्तु अपने रामकी मोटी बुद्धिके अनुसार तो इसका वास्तविक और प्रबल कारण प्रतिवर्ष लक्ष्मीपूजामें होने वाली एक भयङ्कर भूल ही हो सकती है; जिसकी ओर आज तक किसीने भी ध्यान नहीं दिया है। केवल इस वर्ष लक्ष्मीपूजाके अवसर पर उस भूलसे सावधान करके सच्चे लक्ष्मीपात्र बननेका प्रयोग बतानेके लिए ही अपने रामने आज यह लेखनी उठाई है; आशा है सब लोग सावधान होकर सुनेंगे।

यह एक मानी हुई बात है कि बहिनका भाईके साथ जो सच्चा प्रेम होता है, वह दूसरे किसीके साथ नहीं हो सकता। इसी प्रकार बहिन भाईके यहाँ जिस प्रसन्नताके साथ आ जा सकती या उसके घर रहकर अल्प-स्वल्प सेवासे सन्तुष्ट हो जाती और सदैव उसकी मङ्गलकामना किया करती है, उतनी वह सुसरालवालोंके प्रति उदार नहीं हो सकती। उसमें भी फिर स्त्री-भक्त भावुक जनोंकी तो बात ही न पूछिए। उन बेचारोंसे तो वह बलपूर्वक भी अपने भाईका सम्मान करवाती रहती है। लोग इस स्त्रैणता पर भले ही नाक भौंह सिकोड़ें परन्तु अपने राम तो इसका पूर्ण अनुभव करके शिक्षा ले चुके हैं। आपके आत्माराम भी यदि थोड़ासा साहस कर सकें तो उनके लिए यह बहुमूल्य प्रयोग बड़ा लाभकारी हो सकता है। भय खाने-जैसी कोई बात नहीं है, और न कोई सर्वथा नवीन आदर्श ही आपके सामने रक्खा जाता है, जिसमें कि आगे बढ़ने पर आपको नक्कू बनना पड़े। क्योंकि किसी नये सुधारको अपने घरसे आरम्भ करते ही लोग प्रायः झिझकने लगते हैं, किन्तु उनकी उत्साह-वृद्धिके लिए किसी साधारण राजा महाराजा वा अन्य महापुरुषका उदाहरण न रखकर स्वयं अखिल ब्रह्माण्डके सञ्चालक लोकपति श्रीमन्नारायण भगवानकी ही स्त्री-भक्तिका आदर्श उपस्थित किया जाता है। भला आप ही विचारिये कि इससे अधिक स्त्रैणताका आदर्श क्या होगा कि सर्वशक्तिमान् परमात्माको अपने नामके पहले (भयसे वा भक्तिके कारण कुछ भी समझ लीजिए) अर्धाङ्गिनी श्रीलक्ष्मीजीके नामाक्षर जोड़कर ही पूर्णता प्राप्त करनी पड़ी है। "भय बिनु होत न प्रीति" के अनुसार बहुत सम्भव है कि नारी जातिकी शक्तिसे भयभीत हो कर ही श्रीमन्नारायण भगवान्को श्रीलक्ष्मीनारायण नाम धारण करना पड़ा है; और कदाचित् इसी भयसे कि कहीं देवीजी असन्तुष्ट न हो जाएँ, उन्होंने अपने सालभद्र श्रीशङ्खदेवको चतुरायुधोंमें प्रधान मान कर दिनरात हाथमें धारण कर रक्खा है। यही क्यों है, जब कभी उन्हें कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करना होता है या संसार को किसी प्रकारकी महान् घोषणा सुनानी होती है तब वे इन्हीं महानुभावका मुंहसे स्पर्श करते हैं, जिसे स्पर्श करनेका अधिकार एकमात्र लक्ष्मीजीके अतिरिक्त और किसीको भी नहीं हो सकता। अर्थात् स्वयं भगवान्ने जिस व्यक्तिको यहाँ तक मुंह लगा रक्खा है कि प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य उसकी सहायता से, किम्बहुना उसीकी वाणीमें शब्द उच्चारण करते हुए निपटाना पड़ता है, तब इससे बढ़ कर स्त्री-भक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रमाण और क्या मिल सकता है ? एक उदाहरण और भी लीजिए — जब समुद्रमन्थन हो चुका और उसमेंसे निकले हुए चौदह रत्नोंका विभाजन होने लगा, तब भी भगवान्‌ने अपनी स्त्री-भक्तिका परिचय दिया है। सबसे प्रथम उन्होंने सागर-सुता श्रीलक्ष्मी जीको अपनी भार्याके रूपमें ग्रहण किया, इसके अनन्तर कौस्तुभ-मणिको कण्ठमें स्थान दिया और तब जाकर शेष वस्तुएँ दूसरोंको लेनेकी सम्मति दी। किन्तु शङ्ख जैसी वस्तुका महत्त्व कौन जान सकता था ? क्योंकि सभी उसकी उपयोगितासे अपरिचित थे। अतः हाथी, घोड़ा, चन्द्रमा प्रभृति वस्तुएँ तो अन्य देवताओंने अपनी अपनी इच्छानुसार ले लीं, किन्तु शङ्खको जब किसीने भी हाथ नहीं लगाया तब बेचारी लक्ष्मीजीसे भाईका यह अपमान सहन न हो सका और उन्होंने श्रीमन्नारायणको इस बातके लिए विवश किया कि उनके भाई अर्थात् अपने सालेको आश्रय दें। भला भगवान्‌की क्या शक्ति थी कि वे इसे अस्वीकार कर देते। तत्काल उन्हें प्रधान आयुधके रूपमें उसे धारण करना पड़ा। सारांश, श्रीमन्नारायणने नारी-जातिकी महत्ताको स्वीकार कर उसके सन्तोषके लिए प्रतिक्षण उद्योग किया है, और यहां तक कि समुद्रसे निकले हुए रत्नोंमेंसे स्त्री-वाचक रत्नोंको तो उन्होंने ग्रहण किया ही; किन्तु इसीके साथ साथ सुधा (अमृत) वितरण करते समय भी उन्हें मोहिनी बन कर स्त्री-शक्तिसे सहायता लेनी पड़ी। इस प्रकार जहाँ देखिये वहीं स्त्रीत्वका प्राधान्य दृष्टिगोचर होता है, और स्वयं भगवान् श्रीमन्नारायणने ही आगे बढ़कर अपने आदर्शका अनुकरण करनेके लिए लोगोंको सम्मति दी है। इतने पर भी लोग नारी-भक्तिसे घृणा करें तो अतिरिक्त उनके दुर्भाग्यके और क्या कहा जा सकता है ? यदि मनुष्य अपनेको भगवान् मनुकी सन्तान कहलानेका अधिकार रखता हो तो भी उसे अपने आदि-पुरुषके इस वचन पर ध्यान दे कर नारी-जातिकी महत्ता स्वीकार करनी चाहिए, क्योंकि—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।"

नारी-जातिके सन्तोषके लिए ही भगवान् विष्णुने वैकुण्ठ धामको छोड़ क्षीर-सागर (सुसराल) में जा कर निवास किया है। सारांश नारी-जातिको सन्तुष्ट करने द्वारा ही मनुष्यको सब कुछ प्राप्त हो सकता है। इसके लिए सबसे सरल उपाय है अपने सालभद्रका आदर करके उसे प्रसन्न रखना, जैसा कि स्वयं भगवान् करते आये हैं।

पाठकगण! क्षमा कीजिये, मुझे क्या कहना था और मैं क्या कह गया। भारतवासियोंको लक्ष्मीपूजनमें होनेवाली भूलका ज्ञान कराना छोड़कर स्त्री-भक्तिका आदर्श सिद्ध करनेके फेरमें पड़ गया। किन्तु यह भी मैंने अपने विषयकी पुष्टिके लिए ही किया है। क्योंकि भारतवासी लक्ष्मीपूजा तो प्रतिवर्ष करते हैं किन्तु उस महाशक्तिके सन्तोषके लिए शङ्ख-देवताको कहीं फटकने तक नहीं देते। ऐसी दशामें यह कैसे सम्भव है कि शङ्खविहीन पूजासे लक्ष्मीजी सन्तुष्ट हो सकें। इसलिए अब इस सिद्धान्तके प्रचारकी परमावश्यकता है कि लोग लक्ष्मीपूजाके ही साथ साथ शङ्खकी भी आराधना करें, जिससे कि भगवान् लक्ष्मीनारायण सन्तुष्ट हो कर धन-जनकी वृद्धि करते रहें।

शङ्खकी पूजाका प्रस्ताव सुनकर लोग भले ही हँसते रहें, किन्तु उपर्युक्त कारणोंके अतिरिक्त भी शङ्खकी महत्ता बहुत बढ़ी हुई है। श्रीरामानुज संप्रदायमें तप्तमुद्राके रूपमें शङ्ख-चक्र धारण करने पर ही वैष्णवको मुक्तिका अधिकार बतलाया है। भगवान् विष्णुके अतिरिक्त शिव, गणेश, दुर्गा आदि देवताओंके हाथमें भी शङ्ख विद्यमान रहता है, और वह मिलिटरीको सावधान करनेवाले बिगुलकी भांति इन सब देवताओंकी शक्तिको एकत्रित करनेमें सहायता देता है। पुराणोंमें शङ्खासुरकी कथा प्रसिद्ध ही है; इसी कारण भगवान्‌के कर-कमलोंमें शङ्ख विराजमान होने पर भी देवपूजाके समय शङ्खकी अनिवार्य आवश्यकता रहा करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नानके समय देवप्रतिमा पर चढ़ाया जाने वाला जल भी शङ्खमें डाल कर ही काममें लानेसे पवित्र माना जाता है। इस प्रकार शङ्ख-पूजाका माहात्म्य शास्त्रसिद्ध विषय है। यहाँ तक कि एक ऋषिने तो स्वयं शङ्ख नाम धारण कर शङ्खस्मृति भी लिख डाली है।

अन्य युगोंकी बात छोड़ भी दें तो भी महाभारत की शङ्ख-घोषणा तो सर्वथा समीचीन एवं इतिहास प्रसिद्ध वार्ता है। कुरुक्षेत्रकी युद्धभूमि पर जब दोनों दलकी सेनाएँ अपने बड़े-बड़े महारथियोंके अधिनायकत्वमें आकर डट जाती हैं, ठीक उसी समय—

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥

अर्थात् श्वेत घोड़ोंके बहुत बड़े रथ पर बैठे हुए भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र और अर्जुन वहाँ आकर अपने अपने शङ्ख बजाते हैं। बस, फिर तो एकबार जैसे ही श्रीकृष्णचन्द्रके पाञ्चजन्यकी शङ्खध्वनि लोगों के कान पर पड़ती है कि तत्काल अर्जुन देवदत्तको, भीम पौण्ड्रको, युधिष्ठिर अनन्त-विजयको, नकुल सुघोषको और सहदेव मणिपुष्पक नामके शङ्खको यथाक्रम फूंकना आरम्भ कर देते हैं। यहाँ तक कि काशीराज, महारथी शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट् सात्यकि, द्रुपद और महाबाहु अभिमन्यु आदि सैकड़ों वीर मारे शङ्खध्वनिके पृथ्वी और आकाश तकको गुँजाते हुए कौरवोंके हृदय कम्पायमान कर देते हैं।

भला, जिस शङ्खका इतना प्रताप है उसकी अवहेलना करके कोई अपना कल्याण कैसे साध सकता है? किन्तु फिर भी क्या विद्वान् और क्या मूर्ख, सभी एक स्वरसे "शङ्ख" शब्दका प्रयोग बुरे अर्थमें करते हैं, अर्थात् एक प्रकारसे उन्होंने इसे गाली का ही रूप दे डाला है। किसी भी मूर्खकी भर्त्सना करते समय लोग उसे शङ्खके ही विशेषणसे सम्बोधन करते हैं। ऐसी दशामें कैसे संभव है कि अपने भाई का अपमान सहकर श्रीमहालक्ष्मीजी उन लोगों पर दया कर सकें। सारांश, वे इसी अदूरदर्शिताको देख कर रुष्ट हो रही हैं। इसलिए सब लोगोंको चाहिए कि श्री भगवती महालक्ष्मीके कृपापात्र बननेके लिए उनके अनुज श्रीशङ्खमहाराजकी उपासना आरम्भ कर दें, जिससे कि वे शीघ्र ही महाशङ्खपतिके रूपमें अतुल वैभवके अधिकारी हो सकें। क्योंकि गणितशास्त्रमें भी इकाई-दहाईसे आरम्भ करके गणनाका अन्त महाशङ्खके ही नाम पर किया गया है। इससे अधिक संख्या होने पर वह अगणित कहलाने लगती है। अर्थात् यहाँ भी सृष्टिकर्ताने शङ्खको सर्वश्रेष्ठ सम्मान प्रदान किया है। भारतमें तो स्यात् ऐसे महाशङ्ख एक-आध ही होंगे किंतु पाताल (अमेरिका) लोक अवश्य ही ऐसे कई शङ्खपतियोंसे सुशोभित है, और यही कारण है कि आज संसारमें उसका आदर बहुत बढ़ा हुआ है। लोग पूछ सकते हैं कि अमेरिका वाले आजकल शङ्खकी सेवा कहाँ और किस रूपमें करते हैं? किन्तु उन्हें विचारना चाहिए कि यद्यपि वे प्रत्यक्षरूपमें महाभारतकी भांति दिव्य शङ्ख तो नहीं फूँकते हैं किन्तु फिर भी उन्होंने पर्यायरूपसे अपने यानका स्वर (मोटरका भोंपू) शङ्खध्वनिसे मिलता-जुलता ही बनाया है और दिनरात वे उसी के महाघोषसे जनताको भयभीत किया करते हैं। बहुत संभव है कि पिछले किसी जन्ममें उन्होंने प्रत्यक्ष शङ्खसेवा की हो और उसके फलस्वरूप वे इस जन्ममें महाशङ्खपति कहलाते हों, अस्तु। यद्यपि भारतवासियोंने भी मोटरके भोंपू द्वारा शङ्खकी सेवा आरम्भ कर दी है, किंतु इन्हें इसमें सफलता इस लिए नहीं मिल सकती कि यहाँ शङ्खपूजाका साहित्य प्रत्यक्ष वर्तमान है, जब कि पातालवालोंको केवल बैठककी शोभा और सजावटके लिए ही इनेगिने शङ्ख मिल पाते हैं। सारांश अपने ध्येय और धर्मका आदेश छोड़ कर परमुखापेक्षी बननेसे भारतवासियों ने पराधीनता तो मोल ले ही ली है; अब यदि वे शङ्खध्वनि भी उन पातालयन्त्रियोंके बतलाए हुए ढंग से करेंगे तो कहींके भी न रहेंगे। भारतमें जैनधर्म अत्यन्त शान्त एवं अहिंसाका प्रचारक माना जाता है, किन्तु शङ्खके उपयोग और उसकी पवित्रता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ये लोग भी भलीभांति मानते हैं। इनके बाईसवें तीर्थ श्रीनेमिनाथजीका मुख्य चिह्न शङ्ख ही माना गया है। इसी प्रकार तिब्बतके बौद्धविहारोंमें भी शङ्खका सम्मान किया है।

धर्मकी बात छोड़ कर यदि हम समाजशास्त्रमें शङ्खका महत्त्व देखना चाहें तो हमें सृष्टि-रचनाका नियम सिखाने वाले मनसिज मदन रतिपति श्रीकाम-देव रचित कामशास्त्रमें भी किसी न किसी रूपमें शङ्खका उल्लेख अवश्य मिलेगा। आधुनिक असली और नकली कोकशास्त्रोंकी बात छोड़ दीजिये जिनमें कि महा निकम्मी नारीका उल्लेख शंङ्खिनीके नाम से किया गया है किन्तु अन्यान्यमें कई पुस्तकों यथा हस्तरेखा आदिमें शङ्खकी प्रशंसा और उसका माहात्म्य भी अवश्य लिखा मिलता है। इस प्रकार भगवान्‌का यह आयुध धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पदार्थ सुलभ कर देनेवाला है। इनमेंसे धर्म और पर्यायरूपसे अर्थ एवं कामकी प्राप्तिके उपाय तो हम ऊपर बतला ही चुके हैं; अब व्यवसायकी दृष्टिसे इस पर विचार करना चाहिए।

वैसे तो भारतके तीनों किनारों पर समुद्रदेव अपने भक्तोंको शंखरत्न प्रदान करते ही रहते हैं; किन्तु दक्षिणावर्त शङ्ख उनमें इने गिने ही उपलब्ध होते हैं। जिसके पास यह शङ्ख हो उस पर श्रीमहा-लक्ष्मीजीकी पूर्ण कृपा ही समझनी चाहिए। पर ऐसे भाग्यशाली ढूंढ़ने पर ही मिल सकते हैं। अधिक संख्या सामान्य शङ्खपूजकोंकी ही है। गङ्गा-सागर (पूर्व) मेंसे शङ्ख-सीपी आदि निकाल सकना जरा टेढ़ी खीर है; किन्तु फिर भी वहाँके निकले हुए शङ्ख कलकत्ता, ढाका प्रभृतिनगरोंमें बहुत अच्छे मूल्य पर बिकते हैं। दक्षिणमें रामेश्वर और मद्रासमें भी शंखकी बिक्री खूब होती है। रामेश्वरमें तो "शङ्ख निधिकार्यालय" ही इसका प्रचारकर्ता बना हुआ है। वहाँ पूजनीय शङ्ख तो मिलते ही हैं किन्तु इसके साथ साथ अँगूठी, कड़े, छल्ले, खिलौने, चूड़ियाँ आदि प्रकार प्रकारकी वस्तुएँ भी शङ्खके टुकड़ोंसे निर्माण की जाती है। द्वारकाके श्रीरण-छोड़रायजीने तो शङ्खका माहात्म्य यहाँ तक बढ़ा दिया है कि कोई भी मनुष्य जबतक द्वारका जा कर वहाँकी छाप नहीं लगवा आता, तबतक उसको चारों धामकी यात्राका फल ही नहीं मिल सकता। अर्थात् द्वारकाकी छाप एक प्रकारसे भगवान्‌के खजानेकी सील (मुहर) है, जिसके द्वारा मनुष्यके जन्मभरकी सुकृतकमाई भक्तिभण्डारमें सञ्चित हो कर आजन्म विद्यमान रहनेवाला प्रमाणपत्र मिल जाता है। इस छापमें भी शङ्ख और चक्रका ही प्राधान्य है।

इसी प्रकार पुण्यभूमि भारतवर्षको शङ्खरत्न प्रदान करनेका भार जिन जिन प्रधान क्षेत्रों पर है उनमें द्वारका और रामेश्वर केवल पूजाके ही शङ्ख विशेष प्राप्त हाते हैं। यद्यपि ढाका (बंगाल) इस कार्यमें सबसे आगे बढ़ा हुआ है। कोई समय था जब ढाका मलमल, मोतीके बटन और शङ्खकी बनी वस्तुओंके लिए विख्यात था, किन्तु अब तो वहाँ केवल शङ्खका ही प्राधान्य रह गया है। कारण भी स्पष्ट है कि जब मलमल जैसी मूल्यवान् वस्तु ही वहाँ नामशेष हो गयी, तब क्या कोई शोभाके लिए मोतीके बटन बनवाएगा ?

ढाकामें सरवारी नामकी एक श्रमजीवी जाति निवास करती है जिसका निर्वाह आज भी केवल शङ्ख-सीपीकी बनी हुई वस्तुओंके व्यवसाय द्वारा ही होता है। विशेषतः ये लोग शङ्खकी चूड़ियाँ, कड़े, अँगूठी आदि बनाते हैं। बच्चोंके खिलौने भी कुछ लोग शङ्खके ही निर्माण करते हैं। बङ्गमहिलाएँ शङ्खकी चूड़ियाँ और शङ्खके ही भुजबन्ध प्रधानरूपसे धारण कर इन्हें सौभाग्यका मुख्य चिह्न समझती हैं। यहां तक कि सोनेकी चूड़ियोंसे भी वे इन्हें बहु-मूल्य समझती हैं। श्रीसम्पन्न महिलाएँ तो शङ्खकी कामदार चूड़ियाँ सोनेमें मढ़ाकर पहनती हैं, किन्तु सामान्य महिलाओंके लिए शङ्खकी चूड़ियाँ धारण करना सौभाग्य-चिह्नके रूपमें प्राचीन कालसे ही अनिवार्य हो चुका है। इसी प्रकार प्राचीनकालमें भी शङ्खकी चूड़ियां धारण करनेका उल्लेख मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूड़ियां बना सकने योग्य कच्चे शङ्ख अधिकतर बङ्गालकी खाड़ी और तूंतीकोरिन तथा रामेश्वरके ही किनारे पर मिलते हैं। इस समय इन केन्द्रों पर मद्रास-सरकारका अङ्कुश और अधिकार है। "तित-कुती" नामकी सीप इनमें सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है और यह मद्राससे ही ढाका भेजी जाती है। ढाकेका श्रमजीवी संघ उन शङ्ख और सीपियोंको थोड़ा थोड़ा करके आपसमें बाँट लेता है, क्योंकि सङ्घ टेण्डर देकर सब माल एकसाथ खरीद लेता है। यह टेण्डर-पद्धति अब चली है। इसके पहले समुद्र व्यवसायी सब अपना माल ले कर कलकत्ता आते थे, और आपसमें एक मत रखकर उसे पर्याप्त लाभ पर बाजारमें बेच दिया करते थे, किन्तु सन् १६१० ई० में ढाकाके मेसर्स जे० बी० दत्तकी कम्पनीने थोक मालके खरीददारके रूपमें आगे बढ़नेका साहस दिखलाया। बस फिर क्या था? तत्काल ही मद्रास-सरकारने उक्त समुद्र-व्यवसाइयों (नखोदा-समाज) का गुट तोड़नेके लिए मेसर्स दत्तकी मांग स्वीकार कर ली। किन्तु कुछ दिनोंके अनन्तर यह अनुभव हुआ कि ऐसा करनेमें मद्रास सरकारसे भयङ्कर भूल हुई है। क्योंकि लोग दत्त कम्पनीकी स्वेच्छाचारिता और मुँह माँगे दाम पर माल बेचकर बहुत अधिक लाभ उठानेके विषयकी शिकायत लेकर सरकारके सम्मुख उपस्थित होने लगे और उन्होंने बङ्गाल सर-कारसे निवेदन किया कि इस कलाके जानकारों द्वारा दत्त कम्पनी पर अङ्कुश बैठाया जाय। फल स्वरूप सरकारके सहकारी समिति-विभागने शङ्खकलाभिज्ञ लोगोंका एक मण्डल सङ्गठित कर मद्रास-सरकारको सूचित किया कि वह इस मण्डलकी माँग स्वीकार करे। किन्तु यह योजना भी थोड़े ही दिन चल सकी, क्योंकि इस मण्डलके लोग भी परस्पर विश्वासघात करके स्वार्थ-साधनमें प्रवृत्त हो गए। अन्ततः विवश होकर बङ्गाल सरकारको इसकी जाँच आरम्भ करनी पड़ी, और परिणाममें उसने शङ्ख-कलाभिज्ञ मण्डलकी उपेक्षा करके ढाकाके श्रमजीवि सङ्घको नियुक्त कर दिया। इस संस्थाने अनेक छोटी छोटी समितियाँ बनाकर यह सब कार्य नियमित रूपसे चलाया और इससे मजदूरों एवं कारीगरोंको भी लाभ पहुँचाया।

चूड़ियाँ बनानेके लिए शङ्ख या सीपी पर तीन प्रकारके संस्कार किए जाते हैं। (१) शङ्ख या सीपी के टुकड़े करना (२) उन्हें चूड़ीके आकारमें काटना (३) उन पर चित्रकारी करके पालिश कर देना।

सर्व प्रथम छोटी सी तेज आरी से शङ्ख काटा जाता है। और इसके लिए उसे लकड़ीके शिकञ्जेमें फँसा देते हैं। एक गोलाकारके काटनेमें न्यूनातिन्यून पाँच मिनट लगते हैं। इस गणना से एक साधारण कारीगर दिन भरमें १०० गोल टुकड़े सहज ही काट सकता है।

ये टुकड़े बिलकुल गोल नहीं होते, इसलिए उन्हें घिसकर चिकने और गोल बनाना पड़ता है। इसके पश्चात् उनमें छेद करना खुदाई करना और चमक-दार बनानेके लिए पालिश चढ़ाना पड़ता है। यह कार्य भी महीन आरी या कानस द्वारा किया जाता है।

इस कार्यमें चतुर कारीगरकी आवश्यकता रहा करती है, अतएव आधुनिक अर्थशास्त्रके युगमें इस प्रकारके हस्तकौशलकी प्रणाली नहीं लड़ सकती। क्योंकि इस काममें प्राचीन और आरम्भिक युगके शस्त्रोंका उपयोग करनेसे शक्ति और समय दोनोंका अपव्यय होता है। किन्तु बेचारे सरवारी लोगोंके लिए इससे बढ़िया उद्योग ही दूसरा कोई नहीं है, अतएव वे इसीमें बहुत कुछ श्रम करके ज्यों त्यों पेट भरते हैं। बेचारे स्त्री पुरुषोंको घण्टों परिश्रम करने पर भी भरपेट मजदूरी नहीं मिलती। इसके भी दो कारण हैं प्रथम तो यह कि कच्चा माल जुटानेवालेकी दृष्टि सदा अपने लाभकी ओर होती है, दूसरे यह कि इस मशीनरीकी स्पर्धाके युगमें उन श्रमजीवियों के पुराने ढर्रेके शस्त्र (औजार) टिक नहीं सकते। फिर भी यदि कोई चाहे तो इस व्यवसायमें बहुत कुछ उन्नति और सुधार करके लाभ उठा सकता है। इसी प्रकार कार्यपद्धतिको सरल बनाकर वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधन द्वारा भी इस व्यवसायका पुनरुद्धार किया जा सकता है।

इस प्रकार हमारे पाठक देख सकते हैं कि भगवान्के ये निकट सम्बन्धी शङ्ख देवता इस मर्त्य-लोकमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थके दाता हैं, अतएव इसी शुभ मुहूर्तसे हिन्दू समाजको शङ्खकी आराधना आरम्भ कर देनी चाहिए। आशा है जनता अवश्य इस पर ध्यान देकर इसे शङ्ख-ध्वनिसे सफल करेगी।

वर्तमान विश्वव्यापी संग्राम और ज्योतिष

[लेखक – श्री पं० विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्योतिषाचार्य]

उक्त शीर्षक लेख "श्रीस्वाध्याय, में निरन्तर अब आ रहा है। वस्तुतः यह विश्व-व्यापार निखिल ब्रह्माण्ड नायक श्री भगवान्का स्वाभाविक एक कार्य है। सब कारणोंके कारण-जगन्नियन्ता भगवान्के सृष्टि-पालन-संहारादि व्यापारमें किसी भी प्रयोजन या उद्देश्यकी अथवा हेतुकी बात उठ ही नहीं सकती, यह तो उनका एक प्राकृतिक स्वभाव है। उनके इस स्वभावके ऊपर अन्तःस्थित अथवा वहिःस्थित अन्य किसी भी शक्ति, प्रयोजन, कारण, अथवा किसी उद्देश्यका अभाव न होनेके कारणसे ही वे पूर्ण स्वाधीन, पूर्णस्वतन्त्र, तथा एकमात्र अद्वैत भी कहलाते हैं। समग्र कार्य-कलाप नित्य स्वच्छन्दता-से चलता है, उनकी इच्छाशक्तिके सामने कोई अभीष्टरूप कल्पित नहीं रह सकता है। मनुष्य जीवनकी विशेषता यही है कि वह ज्ञानसे और प्रेमपूर्वक, शास्त्रसे अनन्त ज्ञानमय और अनन्त प्रेममय श्री भगवान्की इस प्राकृतिक लीलाका सम्भोग कर सकता है। मनुष्यके साथ जितने लोगों-का जितने प्राणियोंका जिस जिस प्रकारका सम्बन्ध स्थापित होता है तथा अन्यान्य प्राणियोंके साथ जड़ प्रकृतिके साथ जिस जिस प्रकार सम्बन्ध बनता है तथा मिटता है, इन सब सम्बन्धोंमें उन उन प्राणियोंके साथ आदान प्रदान तथा घात प्रतिघातके अन्दर जितना सुख दुःखका भोग होता है कर्मानु-सार सब प्राकृतिक सिद्धान्तसे उक्त सम्बन्ध यथा समय चलता ही रहता है और उसका परिज्ञान भी मनुष्योंको होता ही रहता है। यद्यपि इस वर्त-मान वर्षके वर्तमान शताब्दीकालकी विवेचना पर "श्रीस्वाध्याय" के गताङ्कोंमें सम्पादक महोदयने बहुत ही सुन्दर प्रकाश डाला है। तो भी अपने-अपने दृष्टिकोणसे ग्रहोंकी चालका विवेचन तथा ऋषियोंके एवं शास्त्रकारोंके अनुभव तथा विज्ञानका प्रकथन समय समय पर कैसा फल रखता है, इस पर प्रकाश डालना परमावश्यक भी हो जाता है। क्योंकि ऋषियोंका अपना अनुभव तथा शास्त्रकारोंका अपना विज्ञान लोकके हिताहित के लिए होता है। वर्तमान समयमें तथा निकट भविष्यकी सांग्रामिक परिस्थिति जगत्के लिए शुभ फलदायक प्रतीत नहीं होती है। प्रत्युत अशुभ फलदायक ही भासित होती है। जितने अंशमें अंशतः शुभफलदायक है इसका विवेचन भी इस लेखमें मिलेगा।

गत श्रावण मासकी अमावस्या रविवारके मध्याह्न कालिक सूर्यके परिवेषको भारतवर्षके अन्दर प्रायः सभी मनुष्योंने देखा होगा। परिवेष कुण्डलको कहते हैं, परिवेष सूर्य अथवा चन्द्रमाका ही प्रायः देखनेमें आया है। सूर्य अथवा चन्द्रमाकी किरणें पवनसे टकराकर भूमिमें स्थित पर्वतोंसे प्रतिबिम्बित होने पर पवनके द्वारा मंडलाकार हो कर स्वल्प मेघवाले आकाशमें अपने अनेक रंग और आकारकी दिख-लाई देती हैं, उनको परिवेष कहते हैं। परिवेष दिनमें सूर्यका और रात्रिमें चन्द्रमाका होता है। प्रायः आकाशमें इसी नियमसे सूर्यकी किरणें पवनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवरुद्ध होने पर धनुष्यका आकार भी मेघ युक्त आकाशमें धारण कर लेती हैं। इसको इन्द्रधनुष्य भी बोलते हैं। सूर्यकी स्थिति जब आकाशमें याम्योत्तरवृत्तमें खस्वस्तिकसे पूर्वकपालमें रहती है, अर्थात् मध्याह्नसे पूर्व सूर्यकी स्थितिमें सूर्यकी किरणें प्रतिबिम्बित हो कर काले, पीले, नीले, लाल रङ्गोंसे मिश्रित धनुष्यके आकारमें पश्चिमकी ओर दिखलाई दिया करती हैं और इसी प्रकार जब सूर्यकी स्थिति याम्योत्तर वृत्तमें ही खस्वस्तिकसे परकपालकी ओर रहती है अर्थात् सूर्यकी मध्याह्नोत्तरकी स्थितिमें सूर्यकी किरणोंसे पूर्वकी ओर धनुष्यका आकार विचित्र रंगवाला दिखाई दिया करता है। प्रतिबिम्ब का स्वरूप विरुद्ध दिशामें ही बना करता है, यह नियम है। और जब सूर्यकी स्थिति याम्योत्तरवृत्तमें ठीक खस्वस्तिकमें होती है तब सूर्यकी किरणें पवनसे टकराकर सूर्यके चारों ओर ही गोलाकारमें नीले, हरे, लाल, श्वेत रङ्गके आकारमें परिणत होकर दिखाई देती हैं जैसा कि श्रावण कृ० अमावस्या रविवारको मध्याह्नकालमें २॥ या ३ घण्टेके लगभग आकाशमें गोलाकार वृत्तगत विचित्र रङ्गकी स्थितिमें परिवेष दिखलाई दिया था। इस परिवेषकी स्थिति प्रायः सर्वत्र ही उक्त समयमें दिखलाई दी थी। उक्त परिवेषके शास्त्रीयफल विवेचनके विषयमें प्रथम तो—

वृष्टि स्त्र्यहेण मासेन विग्रहो वा ग्रहेन्दुपरिवेषे।
होराजन्माधिपयोर्जन्मर्क्षे वा शुभो राज्ञः॥

इस उक्तिसे परिवेषकी उक्त स्थितिमें प्रथम तो तीन दिनमें वर्षा जहाँ तहाँ अच्छी हो जानी चाहिये, और अच्छी वर्षा होती भी है। दूसरे एक मासमें राजाओंमें विग्रहकी स्थिति तथा विग्रहकी भावना बन जाती है। यह शुभफलदायक नहीं है। तीन दिन पश्चात् वर्षा प्रायः परिवेषके होनेके अनन्तर दूर-दूर तक अच्छी ही हुई यह प्रायः किसीसे भी आविदित नहीं है। विग्रहकी परिस्थिति जहाँ तहाँ उपस्थित प्राय है समय स्वयं बतला ही रहा है।

सूर्यकी मासिक गतिके नियमसे अथवा संक्रान्ति भोगकालकी गतिके नियमसे एक राशि पर एक मासमें भोग सूर्यका होता है। उस श्रावण कृष्णा अमावस्या रविवारमें सूर्यका सांक्रान्तिक भ्रमण भोगकाल कर्कराशि पर चल रहा था। कर्कराशिकी संक्रान्ति उक्तामावस्यामें थी। "दर्शः सूर्येन्दुसंगमः" इस नियमसे सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों ग्रह एक ही कर्कराशि पर ही थे। इसलिए अमावस्यामें कर्कराशिस्थ सूर्यके परिवेषमें चन्द्रमा भी आ गया था। और परिवेषके अन्दर ही चन्द्रमाकी स्थिति उक्त समयमें थी।

युद्धानि विजानीयात् परिवेषाभ्यन्तरे द्वयोर्ग्रहयोः।
दिवसकृतः शशिनो वा क्षुदवृष्टिभयं त्रिषु प्रोक्तम्॥

इस बचनसे यदि एक परिवेषके अन्दर दो ग्रह होवें तो राजाओंमें युद्ध होता है। तीन ग्रह यदि परिवेषके अन्दर होवें तो और भी अशुभफल जगत्के लिए होता है।

केवल कर्कराशिस्थ चन्द्रमाके होनेसे चन्द्रमा ही परिवेषके अन्दर नहीं आया है प्रत्युत गत श्रावण मासकी अमावस्यामें कर्कराशिमें बुध, राहु, गुरु, चन्द्रमा, ये चारों ग्रह और भी थे। इससे यह अभिप्राय निकला कि सूर्य सहित पाँच ग्रह कर्कराशिस्थ होनेसे परिवेषके अन्दर पाँच ग्रह माने गये और पाँच ग्रहोंका ही उक्त परिवेष बना था।

याति चतुर्षु नरेन्द्रः सामात्य पुरोहितो वशं मृत्योः।
प्रलयमिव विद्धि जगतः पञ्चादिषु मण्डलस्थेषु॥

यदि परिवेषके अन्दर चार ग्रह होवें तो मन्त्री और पुरोहितके सहित राजाके लिए अहितकारक होते हैं और यदि देवयोगसे पाँच ग्रह मण्डलके अन्दर होवें तो जगत्में मानो एक प्रकारका प्रलय हो जाय। इससे अधिक नेष्टफल और हो भी क्या सकता है।

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥

यह उक्ति भी सर्वथा युक्तिसंगत ही है। शकुन शास्त्रसे एवं ग्रहादिकोंके विचार विमर्शसे उक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दीका फलादेश जगत्के लिए सुन्दर प्रतीत नहीं होता है। दो ग्रहोंका फल नेष्ट, तीन ग्रहोंका और भी अशुभ, पाँच ग्रहोंके लिए जो फलादेश शास्त्रकारोंने बतलाया है कि—"प्रलयमिव विद्धि जगतः पञ्चादिषु मण्डलस्थेषु" यह सर्वथा अन्य योगों-से भी स्पष्ट प्रतीत हो रहा है और होना जँचता भी है।

"कुर्यादमापञ्चदश्यां पीड़ां नराधिपस्यैव"

इस नियमसे अमावस्या अथवा पञ्चदशीमें होनेवाला परिवेष राजाओंके लिए विशेष शुभफल-दायक नहीं हुआ करता है। और जब राजाओंके लिए अशुभफलदायक हैं, तो राज्य एवं प्रजाका परस्पर अङ्गाङ्गी भाव होनेसे "मूलंमनुजाधिपति प्रजातरोस्तदुपघात संस्कारात्" इस नियमसे प्रजा रूपी तरुके लिए राजा मूल हुआ करता है, मूल कारण आदि कारण भी कहलाता है; उसे जड़ भी बोलते हैं। "छिन्नेमूले नैव पत्रं न शाखा" इसीलिए मूलके दोषास्पद् होनेसे तरुका वृक्षका हरा-भर रहना कहाँ तक सम्भव हो सकता है? इसीलिए प्रजाके लिए प्रत्युत प्राणीमात्रके लिए समय भयावह नहीं है तो क्या स्थिति सुन्दर कही जा सकती है?

नागरकाणामभ्यन्तर स्थिता यायिनां च बाह्यस्था।
परिवेष मध्यरेखा विज्ञेया क्रन्दसाराणाम्॥

आगमके इस नियमसे विधानसे आदेशसे परिवेषमें प्रायः तीन ही रेखा प्रधान हुआ करती हैं, जिनमें सबसे अन्दरकी रेखा उन राजाओंकी होती है जिनके राष्ट्रों पर चढ़ाई की जाय। अर्थात् चढ़ाई किये जानेवाले राजाओंकी सबसे अन्दरकी रेखा होती है और परिवेषके बाहरकी रेखा उन राजाओं की होती है, जो यायि होते हैं जो चढ़ाई करनेवाले हैं अथवा चढ़ाई करके किसी राष्ट्र पर जावे।

रक्तश्यामो रुक्षश्च भवति येषां पराजयस्तेषाम्।
स्निग्धः श्वेतो द्युतिमान् येषां भागो जयस्तेषाम्॥

इस आगम वचन प्रमाणसे जिस राष्ट्रके जिन राजाओंके अधिकारमें अथवा भागमें आई हुई रेखा लाल होती है उन राष्ट्रोंका उन राजाओं-का पराजय हुआ करता है। और जिन राजाओं-का भाग श्वेत होगा उनके लिए जय देनेवाली शुभ फल देने वाली उक्त श्वेत रेखा होती है। गत श्रावण कृष्णा अमावस्याके उक्त परिवेषके अन्दर का भाग अर्थात् सबसे अन्दरकी रेखा लाल थी और बीचकी हरी नीली थी और बाहरकी श्वेत रङ्गकी थी। इसका आशय यही है कि जो राष्ट्र जिस राष्ट्र पर यायि बनेगा अथवा उक्त समयमें बना है उसका विजय होगा और विजय हुआ करता है, ऐसा शास्त्र-कारोंका अनुभव है और अन्य राजाओंके लिये अन्य राष्ट्रोंके लिये जो कि यायि नहीं बने हैं उनके लिये हानिकारक अशुभ फलदायक पराजयसूचक समय सिद्ध होगा। "अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः" इस नियमसे विचारशील दैवज्ञ एवं विचारशील विद्वान् इसका भलिभांति विवेचन समझ सकते हैं कि उक्त वर्तमान विश्वव्यापी संग्रामके विषयका क्या परिणाम होगा। तथा उक्त वर्तमान विश्वव्यापी संग्रामके विषयमें परिवेषकी स्थितिका फलादेश कितने अंशमें किसके लिये शुभ एवं अशुभ फल-दायक है, यह अर्थतः सिद्ध है।

समस्त भूमण्डल पर ग्रहोंका तथा समस्त प्राणियोंमें एवं समस्त वस्तु मात्र पर दैविक नियमों का कैसा प्रभाव है? तथा कृषि विज्ञानमें उक्त दैविक नियमोंकी कैसी स्थिति रहती है और सम्वत्सर सुभिक्ष दुर्भिक्षके विचारांशमें कैसा रहेगा? इस विषयमें यद्यपि पिछली आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमाकी वायु परीक्षा भी (मध्यप्रान्तकी) उक्त फलादेशकी ही पोषक सिद्ध हुई है।

वायुकी उस समयकी गति पूर्वसे पश्चिम दिशा को थी, और वायुका झुकाव विशेषकर आग्नेयकोण से था, इसका फलादेश शास्त्रकारोंके मतसे धान्या-दिकोंकी उत्पत्तिके दृष्टिसे अच्छा ही है। पूर्वदिशासे वायुका चलना वर्षाकी दृष्टिसे धान्यादिकोंकी उत्पत्ति के नियमसे बड़ा ही शुभ फल देने वाला है। अर्थात् वर्षा भी अच्छी होनी चाहिए, जहाँ तहाँ धान्यादिकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उत्पत्ति भी अच्छी ही होनी चाहिए। परन्तु आग्नेयकोणकी ओरका झुकाव होनेसे शुभ फल होते हुए भी अशुभकी ओर झुकाव रहना चाहिए। अच्छी धान्यादिकोंकी उत्पत्ति होते हुए भी धान्यादिकोंकी महर्घतासे धान्योंकी दुष्प्राप्यता होनी पूर्ण सम्भव है। और अग्निकोणके सम्बन्धित होनेके नियम से—

आषाढ़ी पूर्णमास्यां तु चाग्नेयो यदि मारुतः।
राजमृत्युं विजानीयाच्चित्रं सस्यं तथा जलम् ॥

यह फलादेश स्पष्ट रूपसे देखनेमें आही रहा है। जलका वर्षना भी विचित्र रूप रखता है। कहीं वर्षा विशेष है और कहीं अल्प भी है। सस्यादिकोंकी उत्पत्तिमें भी यही विचित्रता रहेगी। कहीं सस्य सम्पत् अच्छी रहेगी, कहीं बिल्कुल धान्य नष्ट हो जावे। और किसी अंशमें होने पर भी महर्घताके कारण दुष्प्राप्यता होनेसे 'चित्रं सस्यं तथा जलम्' यह शास्त्रकारोंका वचन सर्वथा अपना लक्षण समन्वय रखता है और रखेगा, ऐसा स्पष्ट प्रतीत भी होता है। हमारे यहाँ मध्य प्रांतके बुलन्दशहरके एग्रीकल्चर कालेज तथा लखावटी डिगरी कालेजके वायुयन्त्रसे परीक्षित वायुका फलादेश तो यही है। उक्त दोनों कालेजोंमें भी मेरे प्रति मास भारतीय वायुशास्त्र तथा वृष्टि विज्ञानके सम्बन्धमें व्याख्यान हुआ करते हैं। बुलन्दशहरके उक्त कालेजमें प्रति मास ४ लेक्चर और लखावटी कालेजमें प्रति मास दो ही व्याख्यान होते हैं। उक्त कृषि कालेजोंमें वनस्पति विज्ञान एवं भूमि संशोधन सम्बन्धी विषयों पर भी व्याख्यान नियमित एफ० ए० तथा बी० ए० के छात्रोंके लिए होते हैं। गत आषाढ़ शुक्ला १५ पूर्णिमाको भारतीय वायुशास्त्रके विज्ञान पर व्याख्यान होकर वायुयन्त्रसे वायु परीक्षा करके क्रियात्मक फलादेश उक्त निश्चित किया है और शास्त्रकारोंके नियम एवं वचनानुसार उसका उक्त फलादेश वैसा ही जँचता भी है। भारत के अन्य भूभागोंकी वायु परीक्षा चाहे जैसी होवे। मध्यप्रान्तके यू० पी० की वायु परीक्षासे तो "चित्रं सस्यं तथा जलं" की उक्ति स्पष्ट ही यथातथ्य ही प्रतीत होती है। लिखनेका आशय यह है कि उक्त लक्षणोंका उत्पातोंका ग्रह जन्य परिस्थितिके दूषित होनेका ग्रह योग समय कार्तिकसे ही बनता है, यहाँ तक तो समय साधारण रूपसे ही चलता रहेगा। "चित्रं सस्यं तथा जलम्" की परिस्थिति ही किसी अंशमें जैसी है रहेगी। परन्तु कार्तिक अमावस्यासे समय दोषास्पद ही विशेष प्रतीत होता है। बृहस्पति का अतिचार भी ठीक कार्तिकसे ही आरम्भ होकर चैत्र वदी अमावस्या तकका समय विशेष दूषित बनता है। मङ्गलका भी अतिचारी वक्री होना इस वर्ष विशेष दोषकारक और उक्त समयमें ही विशेषकर श्रावण शुक्ला पूर्णिमाके ग्रहणके फलादेशकी दोषकारक स्थिति भी उक्त समयमें ही दोषास्पद होगी।

प्रायः समस्त भूमण्डलके विचारांशसे समय विवेचनाके साथ भारतवर्षस्थ प्रान्तोंमें भी दोषास्पद स्थिति कार्तिकसे बृहस्पतिके अतिचार काल पर्यन्त भयावह एवं दोषकारक कष्टकारक प्रतीत होती है। यद्यपि आगेके सं० २००१ वर्षके ग्रहोंकी विवेचना भी विशेष दूषित प्रतीत होती है, परन्तु प्रस्तुतमें तो शताब्दीके ग्रह परिस्थितिकी ही क्रम विवेचना उपस्थित है।

ऐसे दोषकारक समय परिस्थितिमें क्या उपादेयता है, मनुष्यमात्रका क्या कर्तव्य हो जाता है? ऐसे दैविक उत्पातोंमें दूषित ग्रहजन्य परिस्थितिके समयमें शास्त्रकारोंका क्या आदेश है? यह विषय इस अङ्कमें भी पाठकगणके सम्मुख उपस्थित नहीं किया जा सका, सम्भव है आगामी अङ्कमें विवेचन किया जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्यौतिष-प्रणाली

[लेखक—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्र जी ओझा, केतकी पञ्चाङ्गकर्ता]

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कोंसे विदित हुआ ही होगा कि गणित सूक्ष्म वेधतुल्य होने पर ही फलित धर्मशास्त्र आदिका निर्णय योग्य समय पर होगा अन्यथा नहीं। पञ्चाङ्गोंमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण ऐसे पांच अङ्ग होनेसे उसे पञ्चाङ्ग कहते हैं—

प्रथम तिथिका विचार करते हैं। ग्रहलाघवमें "भक्ताव्यर्कविधोर्लवा यमकुभिः" से रवि चन्द्रका १२ अंशका अन्तर होने पर १ तिथि होती है और पूर्णिमाको रवि चन्द्रका परम अन्तर १८० अंशका होता है, अर्थात् जिस समय रवि चन्द्रका उक्त अन्तर १२×१५=१८० होने पर पूर्णिमाका अंत होता है, और जिस समय रवि चन्द्रका अन्तर शून्य होता है उस समय अमावास्याका अन्त होता है। यदि हमें तिथिका काल सूक्ष्म लाना हो तो पहले रवि चन्द्र सूक्ष्म लाने पड़ेंगे। रवि चन्द्र सूक्ष्म होने पर ही तिथिका काल सूक्ष्म आ सकता है। रवि चन्द्र स्पष्ट करनेके लिए मध्यम सूर्य चन्द्रमें मन्दफल संस्कार किया जाता है। प्रथम तो मध्यम रविचन्द्र सूक्ष्म होने चाहिएँ और मन्दफल भी सूक्ष्म वेधतुल्य होगा, तभी रविचन्द्र सूक्ष्म मन्द स्पष्ट होंगे। प्राचीन मन्दफलमें कालान्तरजन्य स्थूलता है और सूक्ष्म परम रवि मन्दफल १।५५।१६ तथा चन्द्रमामें सूक्ष्म परम फलैक्य संस्कार ८।२०।० है; और चन्द्र परम मन्दफल ६°.३ है। ग्रहलाघव मतसे परम रवि मंद फल २°.२ और चन्द्र परम मन्दफल ५ अंश है। इन सूक्ष्म और स्थूलके भेदसे सूक्ष्म गणित द्वारा तथा ग्रहलाघव गणित द्वारा भेद होना स्वाभाविक है। इसी कारणसे प्राचीन गणितके पञ्चाङ्गोंमें तथा केतकी आदि सूक्ष्म गणितके पञ्चाङ्गोंमें तिथिमें अन्तर रहा करता है। यह अन्तर पूर्णिमा तथा अमावास्याके समीप स्वल्पान्तरसे रहता है और अष्टमीके समीप ७।८ घटी तकका अन्तर हो जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि पूर्णिमा अमावसके समीपके मूलाङ्क प्राचीन ग्रन्थकारोंने अधिक वेधसे निश्चित किये हैं और अष्टमीके समीपके अङ्क सूक्ष्म वेधयुक्त नहीं होनेसे वहाँ अन्तर अधिक आया करता है। गणित शुद्ध लेनेका जहाँ प्राचीन आचार्योंका एक मत है वहाँ स्थूल मूलाङ्क द्वारा आए हुए गणितके अङ्क त्याज्य हैं और जिन सूक्ष्म वेधतुल्य परिमाणों द्वारा जो तिथि प्राप्त हो वही ग्राह्य और माननीय है। उपर्युक्त रवि-परम मन्दफलमें (ग्रहलाघवमें) ०°.३ तथा चन्द्र परम मन्दफलमें १°.३ क्रमसे ऋण और धन यही प्राचीन परम मन्दफलमें कालान्तर जन्य बीज संस्कार है। ऐसे ही प्राचीन चन्द्रगति न्यूनसे न्यून ७२० तथा परम ८६० कला है। यही सूक्ष्म परिमाणों द्वारा वेधतुल्य न्यूनसे न्यून ६६० तथा परम ९२० कला है। उक्त अन्तर भी चन्द्रमें कालान्तर जन्य मध्यमगतिमें अन्तर है। यह अन्तर भारतीय तथा पाश्चात्त्योंने अनेक वेधों द्वारा निश्चित किया हैं। उक्त मध्यमगति में अन्तर सूक्ष्म और स्थूलके भेदसे है सो न्यूनमें ३० कला और परममें ६० कला क्रमसे ऋण धन मध्यमगतिमें बीज है। अतः यह बीज मध्यम चन्द्र गतिमें देकर शुद्ध किये हुए रविचन्द्रसे आई हुई तिथि सर्वत्र ग्राह्य है। जिसके लिये वसिष्ठ वचन यह है—

"यस्मिन्पक्षे यत्रकाले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादि निर्णयम्॥"

इस वसिष्ठ प्रमाणसे निश्चित है कि जिस समय में दृक्तुल्य गणित जो आती हो उसी पक्षके अनुसार तिथ्यादिका निर्णय करना चाहिये। निर्णयका अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मशास्त्र मुहूर्त्त आदिका निर्णय समझना चाहिये।

नारदीय पुराणे—

ज्ञात्वा तिथिं नरः सम्यक् संवत्सरमुदीरितम्।
सकुर्यादुपवासं तु अन्यथा नरकं व्रजेत्॥

विष्णुधर्मोत्तरे—

चन्द्रार्कगत्या कालस्य परिच्छेदो यदा भवेत्।
तदा तयोः प्रवक्ष्यामि गतिमाश्रित्य निर्णयम्॥

गोभिल—

"यः परमो विप्रकर्षः सूर्याचन्द्रमसोः सा पौर्णमासी।
यः परः संनिकर्षः सा अमावास्या॥"
आदित्याद्विप्रकृष्टस्तु भागद्वादशके यदा।
चन्द्रमाः स्यात्तदाराम तिथिरित्यभिधीयते॥

इत्यादि प्रमाणों द्वारा ज्ञात होता है कि तिथिका निर्णय स्पष्ट रविचन्द्रके अन्तर पर करना चाहिये और रविचन्द्र सूक्ष्म दृश्य गणितयुत परिमाणों द्वारा बना कर ही तिथि साधन करना चाहिये।

रविचन्द्रका द्वादश अंशका अन्तर होने पर १ तिथिके प्रमाणसे ही पूर्वाचार्योंने तिथि साधन की है और वेदमें भी "दृष्टे तत्परिमाणम्" ऐसा कहा है (का० श्रौ० सू० १–४४) अर्थात् जो खगोल शास्त्र द्वारा गतिमान दृष्टिगोचर होवें उसीको प्रमाण मानना चाहिये और उसी प्रमाणों द्वारा (सूक्ष्म वेधतुल्य परिमाणों द्वारा) ही निर्णय करना चाहिये एवं चन्द्रके स्पष्टगति स्थिति पर ही तिथियोंका निर्णय तथा फल होता है।

सूर्यसिद्धान्ते—

अर्काद्विनिस्सृतः प्राचीं यद्यात्यहरहः शशी।
तच्चान्द्रमानमंशैस्तु ज्ञेया द्वादशभिस्तिथिः॥

इसी प्रकार सूर्यसिद्धान्तमें भी सूर्यसे चन्द्र द्वादश अंश आगे जाने पर १ तिथि पूर्ण होती है। अर्थात् तिथिमापन प्रत्यक्ष सूर्यचन्द्रसे की जाती है यह निर्विवाद बात है। सूर्यचन्द्र सूक्ष्म होने पर ही तिथिका काल सूक्ष्म आयगा और वैसा सूक्ष्म काल आया हुआ ही धार्मिक कार्योंके लिए ग्राह्य करना, यह ज्योतिष शास्त्रकी उत्पत्तिसे ही सिद्ध होता है। मुहूर्त ग्रंथकारोंने सूर्यचन्द्रका अन्तर शून्य होने पर अमावास्या पूर्ण होती है और उसका फल भी नेष्ट होता है ऐसा बतलाकर उसके लिए शान्ति भी बतलाई है। पीयूषधारा में अमावस्याके दो लक्षण कहे हैं। १ सिनिवाली, २ कुहुः। यथा—

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः।
सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुःकला कुहुः॥
(अमरः)

अर्थात् जबतक चन्द्र दीख रहा है तब तक वह सिनीवाली है और चन्द्र पूर्ण क्षीण हो गया हो तो वह कुहुः अमावास्या है। अर्थात् कृष्ण चतुर्दशीके अंतसे याने अमावस्याके प्रारम्भसे जबतक चन्द्र कुछ अंश भी दृष्टिगोचर होता हो वह सिनीवाली और चन्द्र किञ्चिन्मात्र भी न दीखता हो अर्थात् रविचन्द्रका संगम पूर्ण हुआ हो उसकी कुहुः नामक संज्ञा है। "सिनीवालीचन्द्रवती नष्टचन्द्रा कुहुर्मता" इस कश्यप वचनसे भी यही लक्षण है। यहाँ चन्द्रका पूर्ण क्षयकाल गणितसे ही आ सकता है। वह गणित सूक्ष्म होने पर ही सिनीवाली, कुहुः अमावास्याका काल सूक्ष्म आयगा और ऐसे आये हुए सूक्ष्म कालका ही फल विशेष बतलाया है। बिना गणित सूक्ष्मकाल कैसे निकाल सकेंगे ? इसमें दृश्य गणितका ही फल है। तदेतदुक्तं छंदोगपरिशिष्टे—

"इन्दुक्षयकालः श्राद्धकालः।"

अर्थात् श्राद्धके लिये जो अमावास्या ली जाती है वह भी चन्द्रक्षीणकी ग्राह्य है।

अत्रेन्दुराद्ये प्रथमेऽवतिष्ठते चतुर्थभागोनकलावशिष्टः। तदन्तरा च क्षयमेति कृत्स्नमेवंज्योतिश्चक्रविज्ञा वदन्ति॥

"तेन देशकालगणनाकुशला यथा यथा गणयन्ति तदेवाङ्गीकार्यमिति सूच्यते" "तत्रोपपन्नस्य सिनीवालीजननफलमादेश्यं सिनीवालीप्रयुक्ता शान्तिश्च विधेया॥ अथ तस्याममावास्यायां यदा नष्टेन्दुकलात्वं स्यात्तदा कुहूरिति तत्र "सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दु कला कुहूः" इत्यादिषु हि दर्शन शब्देन चाक्षुषं दर्शनं विवक्षितम्।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि विचारसे तिथि सूक्ष्म दृश्य गणनानुसार ही लेनी चाहिए। और भी कई प्रमाण हैं, विस्तार-भयसे नहीं देता हूं। ऐसे ही नक्षत्र यह चन्द्रभ्रमण है, अतएव नक्षत्र भी सूक्ष्मगणितागत जो आवे उसीसे धार्मिकनिर्णय तथा फल या दशान्तर्दशा बर्तना चाहिए। रविचन्द्र सूक्ष्म हो जाने पर उससे आए हुए योग समाप्तिके काल ही पञ्चाङ्गोंमें देने चाहिएं। इसी प्रकार तिथि सूक्ष्म होने पर तिथिके ही दो भाग करण हैं, अतः करण स्वयं शुद्ध हो ही जाते हैं। इस प्रकार पञ्चाङ्गके पांचों ही अङ्ग शुद्ध होने पर उसी पञ्चाङ्ग द्वारा अपने धार्मिक कार्य फल मुहूर्त आदिका विचार करने पर वह किया हुआ धार्मिक कार्य योग्य समयमें होकर जो फल मिलना लिखा है वह फल मिलेगा। यदि स्थूल पञ्चाङ्गों द्वारा धार्मिक् क्रियाएं हुईं तो जिस फलकी अपेक्षासे किया हुआ कार्य जिस समयमें करना चाहिये उस समयमें (गणितकी स्थूलतासे) नहीं होनेसे वास्तवमें जो फल मिलना आवश्यक है वह नहीं मिलेगा। इसी लिये धर्मकार्य तथा फल ज्योतिषके लिये कालज्ञान ही मुख्य है और कालज्ञान ज्योतिषशास्त्रके आधीन है; अतएव धर्मकार्यके लिये कालज्ञान सूक्ष्मसे सूक्ष्म होना चाहिये और कालज्ञान सूक्ष्म होनेके लिये सूक्ष्म वेध तुल्य परिमाणों द्वारा आए हुए गणितसे ही धार्मिक क्रियायें करनी चाहिएं, यही भारतीय ज्यौतिषशास्त्रकी प्राचीन प्रणाली है।

इस प्रणालीके विरुद्ध जो प्राचीन गणितके स्वाभिमानी हैं उनका यह कहना है कि प्राचीन गणितसे तिथि अधिकसे अधिक ६५ घटी और न्यून से न्यून ५४ घटी आती है तथा नूतन वेधतुल्य सूक्ष्म परिमाणोंको स्वीकार करनेसे यह परमावधि नहीं आती। अतः 'बाणवृद्धि रसक्षयः' कहे हुए वचन को वाधा पहुँचती है, किन्तु इन प्राचीन मताभिमानी मित्रोंको यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ज्योतिष शास्त्रकी व्याप्ति ही खगोल विज्ञान पर निश्चित है और खगोल विज्ञानसे निश्चित हुए काल-ज्ञानसे धर्मशास्त्रका निर्णय करना है तो यह प्राचीन स्थूल गतिजन्य वचन प्रमाणको ज्योतिष शास्त्रमें स्थान नहीं है। आद्यज्योतिःशास्त्र और ज्योतिष शास्त्रसे किये हुए काल निर्णयसे धर्मशास्त्र (धर्मसूत्रं ततः पश्चाद्) हैं। ज्योतिषशास्त्र में दृक्तुल्यताके विरोधी कमलाकर-भट्ट शक १५८० में हुए जिनका मत पहले लेखमें कह आए हैं, उन्होंने मुख्यतः सूर्यसिद्धान्तको वेद तुल्य माना है और इसी हेतुसे "अदृष्टफलसिद्धयर्थं यथा-र्काद्युक्तितः कुरु" अर्थात् अदृष्टफल सिद्धिके लिए सूर्य-सिद्धान्तसे गणित करनी चाहिये। किन्तु सूर्यसिद्धान्त में ही दृक्तुल्यताको प्राधान्यता दी गई है—

"तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः"

'जिन जिन गति द्वारा ग्रह दृक्तुल्यताको प्राप्त होवे ऐसी गणितको कहता हूँ" ऐसा सूर्यसिद्धान्तकार का स्पष्ट वक्तव्य है। यदि सूर्यसिद्धान्तमें स्थूलता हो जाय तो उसमें बीज देना चाहिये ऐसा सूर्यसिद्धान्त का प्रमाण गताङ्कमें दे चुके हैं, अतः कमलाकरभट्टका यह कथन श्रद्धाजाड्य है। वह इस लिए है कि बीज के लिए वे भ्रमयुक्त हो गए थे, कालान्तर जन्य अन्तरको मानकर किस बीजको कहां और कैसा मिलाना चाहिए इसका उनको पता नहीं लगनेसे सूर्यसिद्धान्तको ही उन्होंने वेदतुल्य मान लिया है। वास्तवमें कमलाकर भट्ट कालान्तर जन्य अन्तरको मानने वाले हैं, इस लिए उनके गलेमें यह बीजकी माला पहिनानी ही पड़ेगी, अर्थात् बीजयुक्त वेधतुल्य गतिमानको स्वीकार करके ही धार्मिक निर्णय लेना चाहिए। स्व० पं० लालचन्द्रशर्मा अध्यक्ष ज्यौतिष यन्त्रालय जयपुरने अपने 'पञ्चाङ्ग सारणी संस्कारदर्पण' में लिखा है—

"कितने ही विद्वान् लोग दृक्प्रत्ययसे बने हुए पञ्चाङ्गको धर्मशास्त्रके विरुद्ध बताते हैं उसमें कोई प्रमाण नहीं मालूम होता है; केवल उन लोगोंका हठमात्र ही मालूम होता है। यदि दृक्प्रत्यय धर्मशास्त्र के विरुद्ध होता तो काशी प्रभृति स्थानोंके विद्वान् लोग इस दृक्प्रत्ययको ग्रहण क्यों करते? तथा ज्योतिषके गणित ग्रन्थ प्राचीन वा अर्वाचीन सिद्धा-न्तादिकोंमें दृक्प्रत्ययका नाम क्यों लिखते? ज्योतिष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सर्वसिद्धान्तकारोंका विरोधी एक कमलाकर भट्ट हुआ जिसने शक १५८० में "सिद्धान्त तत्त्व विवेक" बनाया है उसको आधा दृक्प्रत्यय तो जबरदस्तीसे मानना ही पड़ा है"।

सारांश प्राचीन कालसे वेधप्रणालीसे चले आये मानोंको स्वीकार करके ही आर्योंके पञ्चाङ्ग बनते थे। इसी लिए सब ही सिद्धान्तोंमें दृक्तुल्यता लानेको बतलाया गया है। यदि भारतीय ज्योतिषशास्त्रमें वेध प्रणाली नहीं होती तो आज ग्रहोंमें प्रत्यक्ष दीखने में और गणितमें महद् अन्तर आता और आज जो भी सूक्ष्मयन्त्रों द्वारा तथा पाश्चात्त्योंके सूक्ष्म साधनों-द्वारा यदि भारतीय ज्योतिष शास्त्रकी तुलना करें तो प्राचीन स्थूल यन्त्रोंसे भी पर्याप्त सूक्ष्मता भारतीय ग्रन्थोंमें है। इसमें भारतीय विद्वानोंके प्रति पाश्चिमात्यों ने आश्चर्य प्रकट किया है, तथापि कालान्तर जन्य तथा ग्रन्थागत स्थूलता यदि ग्रन्थोंमें सूक्ष्म यन्त्रों द्वारा प्रतीत होती है तो उसी स्थूलको मानते बैठना केवल अन्धश्रद्धा है, वास्तवमें प्राचीन आचार्योंके मतसे ही संशोधन करना सिद्ध है, अर्थात् सूक्ष्मगणितागत निर्माण हुए पञ्चाङ्गोंमें ही भारतीय जनताको अपने धार्मिक् जातक ताजिक आदिका विचार करना चाहिए और उसीके अनुसार आचरण करना चाहिए, यही भारतीय ज्योतिष शास्त्रकी प्रणाली है।

सिंहस्थ-गुरु-व्यवस्था

[लेखक—राजज्यौतिषी श्री० पं० लक्ष्मीकान्त जी शास्त्री राजपण्डित]

इस वर्ष कतिपय पञ्चाङ्ग-रचयिता महोदयोंने सिंहराशि पर गुरु आनेसे कुछ पञ्चाङ्गोंमें विवाह-मुहूर्त्त नहीं लगाए हैं। परन्तु निम्नलिखित परिहारों से इस वर्ष सिंहस्थ गुरु विचारणीय नहीं है—

१. परिहार—"सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टः।" अर्थात्—सिंहके गुरुमें सिंहका नवांशक ही विशेष त्याज्य है।

सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः॥
अतोऽवशिष्टेष्वंशेषु विवाहादि शुभं भवतीत्यर्थः।

इस वर्ष सिंह राशिके सिंहके नवांशकमें गुरु नहीं है, अतः विवाहादि होने उचित हैं। यह योग (सिंह राशिके सिंहके नवांशकमें गुरु) संवत् २००१ के भाद्रपदमें होना पाया जाता है।

२. परिहार—यदि माघ शुक्ल पौर्णमासी मघा-युक्त नहीं हो तो सिंह राशिस्थ गुरु दूषित नहीं होता।

माघमासे पौर्णमासी मघायुक्ता यदा भवेत्।
सिंहस्थस्य गुरोर्दोषस्तस्मिन्वर्षे न चाऽन्यथा॥ (मु०)

माघ्यां यदि मघा नास्ति सिंहेगुरुरकारणम्।
(शतानन्दः)

यदा न माघी मघया युता स्यात्
तदा गुरुः सिंहगतोऽप्यकारणम्॥ (टोडरानन्दः)

गुरौ हरिस्थे न विवाहमाहु-
र्हारीत गर्ग प्रमुखा मुनीन्द्राः।
यदा न माघी मघया युता स्यात्
तदा च कन्योद्वहनं वदन्ति॥ (दक्षः)

यह योग (मघा युक्त माघ शुक्ल पौर्णमासी हो और उसी वर्षमें सिंहका गुरु भी हो) संवत् २००२ के वैशाख शुक्लसे प्रारम्भ होगा। वहाँ पर ही सिंहस्थ गुरु विचारणीय है। अतः समस्त दैवज्ञ महानुभावोंसे प्रार्थना है कि इस वर्ष उपरि-निर्दिष्ट प्रमाणोंसे भागीरथीके दक्षिण तटवर्ती तथा गोदावरीके उत्तर तटवर्त्ती देशोंमें भी वर कन्याओं के शुभ विवाह मुहूर्त्त बतलानेकी कृपा करते रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक राशिफल

[लेखक—गणकभास्कर श्री पं० सखाराम जी जोशी शास्त्री]

आश्विन सुदी और कार्तिक वदीमें

(ता० ३० सितम्बरसे २६ अक्टूबर तक)

मेष शरीर स्वास्थ्य साधारण, साम्पत्तिक दुःख सहसा उत्पन्न हो, मन उदास, प्रवास, यशप्राप्ति, सन्तान सुख उत्तम, शत्रु नाश, स्त्रीसुख, भाग्य वृद्धि, व्यय अधिक, आय थोड़ी। अक्टू० ता० (दिनाङ्क) ६, ७, १०, ११, १६, १७ शुभ। अशुभ ता० ३, ४, ५, २१, २२, १२, १३। शेष साधारण।

वृषभ शरीरमें गर्मीका अधिक प्रभुत्व रहे, धन लाभ साधारण. पराक्रम वृद्धि, सन्तान सुख साधारण, भाग्यवृद्धि, स्त्रीपीड़ा। शुभ दिनाङ्क ३०, ७, ६, १२, १३। अशुभ दिनाङ्क २४, २५, १, २, ६, ७ शेष साधारण।

मिथुन शरीरमें आलस्यका पूर्ण वास, कुटुम्बमें लड़ाई झगड़े, यश प्राप्ति, शरीर सुख उत्तम, सन्तान सुख, बुद्धिमें तीव्रता, शत्रु नाश, स्त्रीको वात विकारसे पीड़ा, आय साधारण, कौटुम्बिक व्यय अधिक। शुभ दिनाङ्क १, २, १०, ११, १४, १५, २१, २२। अशुभ दिनाङ्क ७, ८, १६, १७, २६, २७। शेष साधारण।

कर्क शरीर प्रकृति उत्तम, कौटुम्बिक सुख, राज पक्षसे यश प्राप्ति, सन्तान सुख, शत्रु पीड़ा, स्त्री पीड़ा, भाग्य वृद्धि, लाल वस्तुओंसे इस मासमें अधिक लाभ हो, व्यय साधारण। शुभ दिनाङ्क ३, ४, १२, १३, १६, १७। अशुभ दिनाङ्क १, २, १०, ११, १९, २०। शेष साधारण।

सिंह शरीर प्रकृति उत्तम, मनमें उच्चकोटिकी कल्पना खेलती रहे। कौटुम्बिक पीड़ा, पराक्रम साधारण, सन्तान कष्ट, शत्रु वृद्धि, स्त्रीजाति से लाभ, राजघरानेसे शोक (दुःख) उत्पन्न हो। आय साधारण हो। शुभ दिनाङ्क ६, ७, १४, १५, १९, २०। अशुभ दिनाङ्क ४, ५, १२, १३, २१, २२। शेष साधारण।

कन्या निवास स्थान छोड़ना पड़े, धनकी प्राप्ति साधारण, यशप्राप्ति, शरीर स्वास्थ्य साधारण, सन्तानको वात विकारसे रोग उत्पन्न हो, भाग्यकी अवनति, मन अस्थिर, व्यय अधिक, स्त्री सुख उत्तम। शुभ दिनाङ्क ८, ६, १६, १७, २१, २२। अशुभ दिनाङ्क ६, ७, १४, १५, २४, २५। शेष साधारण।

तुला शारीरिक सुख, चित्तमें भय उत्पन्न हो, शत्रु पीड़ा, कुटुम्बमें कलह, स्त्री पीड़ा, सन्तान कष्ट, साम्पत्तिक रुकावट, धर्म कार्यमें मनकी प्रवृत्ति न हो, उच्चवर्गसे विरोध बढ़े, अनेक हानियाँ होनेकी सम्भावना है। शुभ दिनाङ्क १०, ११, १६, २०, २४, २५। अशुभ दिनाङ्क ८, ६, १६, १७, २६, २७। शेष साधारण।

वृश्चिक शरीरमें गर्मीके विकारसे पीड़ा, पराक्रम वृद्धि, व्यय अधिक रहे, कौटुम्बिक कलह, राजघरानेसे लाभ, स्त्रीसुख, सन्तान कष्ट, अधिकारी वर्गसे लाभ, आय थोड़ी। शुभ दिनाङ्क १२, १३, २१, २२, २६, २७। अशुभ दिनाङ्क ६, १०, १९, २०, २८, २९। शेष साधारण।

धनुः शरीरमें पीड़ा, कुटुम्बमें वैर वृद्धि, साधारण धन लाभ, पराक्रम वृद्धि, सन्तान कष्ट, स्त्री पीड़ा, वस्त्र लाभ, मन वाञ्छित कार्यमें सिद्धि हो। शुभ दिनाङ्क १४, १५, २४, २५। अशुभ दिनाङ्क १२, १३, २१, २२, ३०, ३१। शेष साधारण।

मकर शारीरिक सुख साधारण, सम्पूर्ण मास चिन्ता ही में व्यतीत होगा। सन्तान के विषयमें अधिक व्यय बढ़े। बुद्धिमें तीव्रताका वास रहे। स्त्री कष्ट, अकस्मात् धनयोग, पराक्रम वृद्धि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु नाश। शुभ दिनाङ्क ६, ७, १६, २०, २६, ३०। अशुभ दिनाङ्क ३१, १, ८, ६। शेष साधारण।

कुम्भ शरीर कष्ट, कौटुम्बिक कलह, चित्तमें भय उत्पन्न हो, सन्तानको अधिक कष्ट रहे, पोष्य वर्ग (पोषण करने वाले) से झगड़ा होता रहे। अकस्मात् शोक उत्पन्न हो, स्त्री कष्ट। राज तथा अधिकारी वर्गसे लाभ हो। शुभ दिनाङ्क १, २, ६, ७, १६, २०। अशुभ दिनाङ्क १६, १७, २६, २७। शेष साधारण।

मीन शरीरिक सुख उत्तम, कौटुम्बिक सुख, साधारण धन प्राप्ति, शत्रु पीड़ा, सन्तान सुख, स्त्री कष्ट होनेकी सम्भावना है, प्रवास होना आवश्यक है, भाग्य वृद्धि, न्यायालयसे यश प्राप्ति। शुभ दिनाङ्क ४, ५, ८, ६, २१, २२। अशुभ दिनाङ्क १०, ११, ४, ५, १६, २०। शेष साधारण।

कार्तिक सुदी और मार्गशीर्ष वदीमें
(ता० ३० अक्टूबर से २७ नवम्बर तक)

मेष शरीर स्वास्थ्य उत्तम, साम्पत्तिक बाधा, पराक्रम वृद्धि, निजी लोगोंसे वैर बढ़े, सन्तान सुख, प्रवास, स्त्रीको पीड़ा, राज्य घरानेसे लाभ। शुभदिनाङ्क नवम्बर १, २, ३, ६, ७, २०, २१। अशुभ दिनाङ्क ८, ६, ३१। शेष साधारण।

वृषभ रक्तविकार, धनका अधिक व्यय, पड़ोसियोंसे तथा सम्बन्धियोंसे लड़ाई झगड़े, सुख अधिकांशमें थोड़ा ही मिलेगा। यह सम्पूर्ण मास किसी प्रकारसे अच्छा नहीं है।

मिथुन शारीरिक पीड़ा, आलस्य उत्पन्न हो, धन हानि, पड़ौसियोंसे झगड़ा, अपयश प्राप्ति, सन्तान कष्ट, शत्रु वृद्धि, स्त्री कष्ट, भाग्य वृद्धि, राजघरानेसे लाभ, व्यय अधिक। शुभ दिनाङ्क २६, ३०, ६, ७, १०, १२। अशुभ दिनाङ्क ४, ५, १३, १४ शेष साधारण।

कर्क अनेक प्रकारकी चिन्ता, धन लाभ, कौटुम्बिक सौख्य, वस्त्र लाभ साधारण होगा, मान हानि होनेकी सम्भावना है, उदरमें व्यथा, सन्तान कष्ट, शत्रु वृद्धि, स्त्री कष्ट। शुभ दिनाङ्क ३१, १७, ६, १३, १४। अशुभ दिनाङ्क २६, ३०, ६, ७, १५, १६। शेष साधारण।

सिंह मानसिक पीड़ा, शरीर सुख, पराक्रम वृद्धि, शत्रुसे भय उत्पन्न हो, भ्रातृ सुख, स्त्री सुख, धन लाभ साधारण, सन्तान सुख, भाग्य वृद्धि तथा अनेक प्रकारसे धन लाभ हो। शुभ दिनाङ्क २, ३, ११, १२, १५, १६, १७। अशुभ दिनाङ्क ३१, १, ८, ६, १०, १८, १६। शेष साधारण।

कन्या शारीरिक पीड़ा, स्वजनोंसे भय, साधारण लाभ, सन्तानपीड़ा, बुद्धिमें मंदपना, शत्रु नाश, स्त्री पीड़ा, भाग्य अवनति, राजसे चिन्ता, परन्तु कष्ट कुछ नहीं, व्यय अधिक। शुभ दिनाङ्क ४, ५, १३, १४, १८, १६। अशुभ दिनाङ्क २, ३, ११, १२, २०, २१। शेष साधारण।

तुला शारीरिक सुख, स्थानान्तर अवश्य होगा, कुटुम्बमें मृत्यु, पराक्रम वृद्धि, भाई बहिनसे लाभ, उदर व्यथा तथा अपचन, सन्तान सुख, तथा विद्या सम्बन्धी विषयमें सुकीर्त्ति प्राप्त हो, शत्रु लाभमें हानि करे, स्त्री पीड़ा, धर्ममें अभिरुचि न रहे, भाग्यमें बाधा, अधिकारी वर्गसे वैर बढ़ें, लाभ अधिक, व्यय थोड़ा। शुभ दिनाङ्क ६, ७, १५, १६, २०, २१। अशुभ दिनाङ्क ४, ५, १३, १४, २३, २४। शेष साधारण।

वृश्चिक शरीर सुख साधारण, गर्मीके विकारसे पीड़ा, धन लाभ साधारण, सुयश प्राप्ति, बुद्धिमें तीव्रता, सन्तान सुख, व्यापारमें शत्रुता बढ़कर उससे अधिक हानि, साधारणतः यह मास हानिकारक है, सावधानीसे ही व्यवहार करना चाहिए।

धनु: शरीर सुख उत्तम, कुटुम्बमें लड़ाई झगड़े, पृथ्वीसे लाभ, दोषारोपण, स्त्री कलह, शत्रु नाश, सन्तान कष्ट, ठोकर लगनेसे महान् दुःख प्राप्त हो, भाग्य तथा धनकी वृद्धि, वस्त्र लाभ। शुभ दिनाङ्क ११, १२, २०, २१, २५, २६। अशुभ दिनाङ्क ८, ६, १८, १६, २७, २८। शेष साधारण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकर शरीर सुख साधारण, मन चिन्तासे ग्रस्त रहे, अपयश प्राप्ति, सन्तान कष्ट, बुद्धिमें तीव्रता, साधारण धन लाभ, स्त्री तथा व्यापार कलह, मनकी इच्छा इस मासमें पूर्ण होगी। शुभ दिनाङ्क १३, १४, २३, २४, २७, २८। अशुभ दिनाङ्क ११, १२, २०, २१, २६, ३०। शेष साधारण।

कुम्भ शरीर सुख उत्तम, कौटुम्बिक सुख, पराक्रम वृद्धि, अपचन तथा शत्रु द्वारा पीड़ा, धन तथा पोष्यवर्ग (पालन करनेवाले) का नाश, परन्तु मासके अन्तमें शत्रु द्वारा सम्पत्ति मिले या लाभ हो, मान बढ़े, स्त्री पीड़ा, कार्य सिद्ध, सन्तान कष्ट। शुभ दिनाङ्क १५, १६, २५, २६, २६, ३०। अशुभ दिनाङ्क १०, ११, २०, २१,। शेष साधारण।

मीन शारीरिक पीड़ा, यश प्राप्ति, शत्रु वृद्धि सन्तान कष्ट, बुद्धि मंद, मामासे साधारण हानि, प्रवास, स्त्री कष्ट, अधिकारीवर्गसे अनबन, अधिक व्यय। शुभ दिनाङ्क ३०, ३१, ४, ५, १७, १८। अशुभ दिनाङ्क २८, २६, ६, ७, १५, १६। शेष साधारण।

मार्गशिर्ष सुदी और पौष वदीमें

(ता० २८ नवम्बरसे २७ दिसम्बर तक)

मेष शरीर सुख साधारण, कुटुम्बमें कलह वृद्धि, अधिक व्यय, पड़ौसियोंसे अधिक सहायता मिले, मानसिक पीड़ा, सन्तान सुख, स्त्री पीड़ा, भाग्य वृद्धि, व्यापारमें हानि, धर्म कार्यमें व्यय हो। शुभ दिनाङ्क नवम्बर २६, ३०, दिसम्बर ४, ५। अशुभ दिनाङ्क २७, २८, ६, ७। शेष साधारण।

वृषभ मानसिक दुःख, शत्रु भीति, धनका व्यय, पराक्रम वृद्धि, प्रवास, शारीरिक सुख उत्तम, पुत्र प्राप्ति तथा विद्या सम्बन्धी अनेक लाभ हों, स्त्री पीड़ा, पापकी वृद्धि, भाग्यकी अवनति, अधिकारीवर्गसे लाभ हो। शुभ दिनाङ्क २, ३, ६, ७। अशुभ दिनाङ्क २६, ३०, ८, ६। शेष साधारण।

मिथुन मानसिक चिन्ता रहे, शारीरिक सुख उत्तम, धनका अधिक व्यय, कुटुम्बमें कलह वृद्धि, भाई बहिन सेवक द्वारा दुःख उत्पन्न हो, अपयश, मातृ सुख उत्तम, शत्रु पराजय, समाजमें उन्नति प्राप्त हो, भाग्यकी अवनति, राजघरसे लाभ, स्त्री सुख, सन्तान सुख उत्तम। शुभ दिनाङ्क ४, ५, ८, ६। अशुभ दिनाङ्क २, ३, १०, ११। शेष साधारण।

कर्क मानसिक पीड़ा, कुटुम्बमें आनन्द प्राप्त हो, धनका आगम भली-भांति होता रहे, प्रवास, पराक्रम वृद्धि, बुद्धिमें भ्रम उत्पन्न हो, सन्तान कष्ट, व्यापार तथा राजघरानेसे लाभ हो, अधिकारियोंकी प्रसन्नता, स्त्री कष्ट, दोषारोपण। शुभ दिनाङ्क ३०, १, ६, ७, १०, ११। अशुभ दिनाङ्क ४, ५, १२, १३। शेष साधारण।

सिंह शरीर सुख उत्तम, परन्तु मनमें भय उत्पन्न हो, पराक्रम उत्तम, विद्या सम्बन्धी विषयोंमें अरुचि, सन्तान कष्ट साधारण, धन साधारण व्यापार द्वारा मिले, परन्तु मासके अन्तमें अधिक व्यय है, स्त्रीसे लाभ हो, अधिकारीवर्गसे लाभ हो। शुभ दिनाङ्क २६, ३०, ८, ६, १२, १३। अशुभ दिनाङ्क ६, ७, १५, १६। शेष साधारण।

कन्या शरीर सुख साधारण, वस्त्र लाभ, कुटुम्भमें शुभ उत्सव, मान हानि होना सम्भव है, अधिकारीवर्गसे झगड़ा उत्पन्न हो, सन्तान कष्ट, स्त्री कष्ट साधारण, यह मास अत्यन्त कष्टकारक है अतः सावधानीसे रहना चाहिये।

तुला शरीर सुख उत्तम, कौटुम्बिक सुख, यश, शत्रु वृद्धि, व्यापारसे हानि, अधिकारीवर्गसे हानि, सन्तान कष्ट, स्त्री कष्ट, मासका उत्तरार्ध अच्छा होगा, परन्तु मासके पूर्वार्धमें सावधानीसे रहना चाहिए।

वृश्चिक शारीरिक सुख उत्तम, कुटुम्बमें कलह, तथा भय, व्यापारमें धन का विनाश, स्त्री कष्ट, सन्तान कष्ट, भाग्यमें बाधा, अधिकारीवर्गसे झगड़ा, पितासे लड़ाई झगड़ा, ग्रन्थ प्रकाशन द्वारा लाभ। शुभ दिनाङ्क ६, ७, १५, १६, २०, २१। शेष साधारण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुः स्वजनोंसे वैर बढ़े, शत्रुनाश, दोषारोपण, मातृ सुख, शरीर सुख उत्तम, सन्तान कष्ट, स्त्री कष्ट, भाग्यमें अवनति, व्यापारमें लाभ, अधिक व्यय, आय न्यून। शुभ दिनाङ्क ८, ९, १७, १८, २२, २३। अशुभ दिनाङ्क ६, ७, १५, १६, २५, २६। शेष साधारण।

मकर मानसिक चिन्ता, कुटुम्ब हानि, पराक्रम वृद्धि, शारीरिक सुख उत्तम, सन्तान पीड़ा, शत्रु नाश, स्त्री कलह, व्यापारमें हानि, वस्त्र लाभ, कार्यसिद्धि, अधिकारीवर्गसे लाभ तथा नौकरी पेशा वालोंको यह मास बहुत अच्छा है। शुभ दिनाङ्क १०, ११, २०, २१, २५, २६। अशुभ दिनाङ्क ८, ९, १७, १८, २७, २८। शेष साधारण है।

कुम्भ शारीरिक सुख उत्तम, परन्तु मानसिक चिन्ताकी अधिक वृद्धि हो, स्वजनोंसे भय उत्पन्न हो; शत्रुओंका अधिक प्राबल्य रहेगा, मासके अन्तमें शत्रुनाश अवश्य होगा, राज द्वारा सम्मान, व्यापारमें अच्छा लाभ तथा भाग्यवृद्धि, स्त्री कष्ट, सन्तान सुख। शुभ दिनाङ्क १२, १३, २२, २३। अशुभ दिनाङ्क १०, ११, २०, २१। शेष साधारण।

मीन शरीर सुख उत्तम, पराक्रम वृद्धि, राजद्वारसे लाभ, बहिन तथा भाइयोंका सुख पूर्ण, सन्तान कष्ट, सट्टेसे हानि होगी, ब्राह्मणवर्ग शत्रु बनेंगे, धनका अकस्मात् विनाश, कार्यमें सिद्धि प्राप्त हो। शुभ दिनाङ्क १५, १६, २५, २६, २, ३। अशुभ दिनाङ्क १२, १३, २२,२३। शेष साधारण।

सायन तुला संक्राति

[लेखक—गणक भास्कर श्री पं० सखाराम जी जोशी]

आश्विन कृष्ण १० गुरुवार ता० २३ सितम्बर शून्य मेरीडियन पर ३ घं० २२ मि० स्थानिक समय पर सायन कुम्भ लग्नमें सूर्यका सायन तुलाराशिमें प्रवेश हुआ है।

लग्नेश शनि पंचम स्थानमें मिथुनके हो कर विराजमान हैं, अतः संसारमें जनताका व्यवहार बिगड़ कर असंतोष उत्पन्न होवे। पश्चिमीय देशोंमें अधिकतर भूकम्प व वर्षासे महान् उपद्रव होनेकी सम्भावना है। अति वर्षाके कारण कहीं कहीं तो खेतीको अत्यन्त हानि हो कर वहांके निवासियोंको दुष्कालका सामना करना पड़ेगा। इन्हीं तीन मासोंमें अग्निप्रलय होनेकी भी सम्भावना है। राजवर्ग व अधिकारारूढ़ पक्षको महान् आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। जनताका विशेष ध्यान नाटक व सिनेमाकी ओर न रहे। जुआरी तथा सट्टेवालोंको विशेष कर लाभ ही होता रहेगा। देशोंमें छोटे बच्चों की मृत्यु संख्या बढ़ेगी व जन्म संख्या न्यून होगी। शिक्षा विभागमें दिन प्रतिदिन अधिक उन्नति होवेगी। न्याय-विभागमें घूँसकी प्रथा उच्च श्रेणी पर पहुंचने की चेष्टा करे। भिक्षुकवर्गके लिये यह समय महान् कष्टकारक है। शास्त्रप्रगति तथा परराष्ट्रिय व्यापार को यह समय इतना ठीक नहीं है जितना कि होना चाहिये।

चन्द्रमा अपने घरका अधिपति हो कर छठे स्थान में बैठा है, अतः देशोंमें किसी प्रकारका महान् रोग उत्पन्न न होकर शांतता फैलती रहेगी। श्रमजीवीवर्ग तथा कारखानेदारोंको यह समय बहुत हितकारक है। इनके हित तथा सुखके लिए अनेक सुविधाएँ होंगी। संग्राममें मृत्यु संख्याकी वृद्धि होगी, अधिकारी तथा राजवर्गमें मृत्यु होवे। उष्णताका विकार वायुमें फैलता रहे। ग्रन्थकार तथा सम्पादक लोग वास्तविक परिस्थितिको जनताके सम्मुख लाने व छपवानेमें असमर्थ रहें। इनको सङ्कुचित अवस्थामें रहना पड़ेगा। पर राष्ट्रोंसे नयी नयी सन्धियां होंगी। स्त्रीवर्ग में शान्ति रहेगी। इसी समयमें शान्तिका विचार करनेके लिये अनेक विचारविनिमय हों। अनेक धर्मावलम्बी एकत्रित हो कर जनताको सदुपदेश करेंगे। देशोंमें चोरियां, रक्तपात तथा डाके आदिके उत्पात अधिक हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

मास पक्ष	तिथि	वार	तारीख	पर्व व्रतादि
आश्विन शुक्ल	११	शनिवार	ता० ६ अक्टूबर	पापाङ्कुशा एकादशी व्रत स्मार्त्तोंका।
	१२	रविवार	ता० १०	एकादशी व्रत वैष्णवोंका।
	१३	सोमवार	ता० ११	सोमप्रदोष व्रत
	१५	बुधवार	ता० १३	शरद्पूर्णिमा कोजागर व्रत आकाशदीपदान सत्यव्रत कार्तिकस्नानारम्भ।
कार्तिक कृष्ण	३	शनिवार	ता० १६	श्रीगणेश ४ करक (करवा) चौथ व्रत चन्द्रोदय वर्द्धित स्टेण्डर्ड घं० ६ मि० १२ रात्रि।
	४	रविवार	ता० १७	तुला संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर।
	८	गुरुवार	ता० २१	अहोई ८, राधा ८, अशोकाष्टमी, गुरुपुष्ययोग।
	११	रविवार	ता० २४	रमा एकादशी व्रत स्मार्त्तोंके लिए।
	१२	सोमवार	ता० २५	एकादशी व्रत वैष्णवोंका।
	१३	मंगलवार	ता० २६	भौमप्रदोष व्रत धन १३ धन्वन्तरी जयन्ती, बलिपूज
	१४	बुधवार	ता० २७	श्रीहनुमज्जयन्ती, नरक १४, रूप १४।
	१४	गुरुवार	ता० २८	दीपमालिका श्रीमहालक्ष्मीपूजन।
	३०	शुक्रवार	ता० २९	अन्नकूट, गोवर्द्धनपूजन, वर्ष्टिकाकर्षण (रस्साकशी)
कार्तिक शुक्ल	१	शनिवार	ता० ३०	यमद्वितीया, भ्रातृटिका २, चन्द्रदर्शन।
	५	मंगलवार	ता० २ नवम्बर	सौभाग्यपञ्चमी।
	८	शुक्रवार	ता० ५	गोपाष्टमी।
	९	शनिवार	ता० ६	अक्षया ९, परिक्रमा ९।
	११	सोमवार	ता० ८	हरिप्रबोधिनी ११ व्रत, चातुर्मास्य व्रत समाप्ति, तुलसीविवाह, भीष्मपञ्चकारम्भ।
	१२	मंगलवार	ता० ९	भौमप्रदोष व्रत।
	१३	बुधवार	ता० १०	वैकुण्ठ १४ व्रत।
	१४	गुरुवार	ता० ११	टुकरी १५, सत्यव्रत, भीष्मपञ्चक समाप्ति, निम्बार्क-जयन्ती, कार्तिकस्नान समाप्ति।
मार्गशीर्ष कृष्ण	१	शुक्रवार	ता० १२	मृगछौड़ी १।
	४	सोमवार	ता० १५	श्रीगणेश ४ व्रत।
	४	मंगलवार	ता० १६	वृश्चिक संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर।
	६	गुरुवार	ता० १८	गुरुपुष्य योग
	७	शुक्रवार	ता० १९	श्रीमहाकाल भैरव जयन्ती।
	११	मंगलवार	ता० २३	उत्पन्ना एकादशी व्रत।
	१२	बुधवार	ता० २४	मल्लद्वादशी।
	१३	गुरुवार	ता० २५	प्रदोष व्रत।
	३०	शनिवार	ता० २७	शनैश्चरी अमा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्गशीर्ष शुक्ल	२ सोमवार	ता० २६		चन्द्रदर्शन।
	५ गुरुवार	ता० २	दिसम्बर	श्री बलदेवजयन्ती।
	६ शुक्रवार	ता० ३		चम्पा ६।
	११ मंगलवार	ता० ७		मोक्षदा एकादशी व्रत, गीताजयन्ती।
	१३ गुरुवार	ता० ६		प्रदोष व्रत।
	१४ शुक्रवार	ता० १०		मतान्तरेण गीताजयन्ती, पिशाचमोचन श्राद्ध।
	१५ शनिवार	ता० ११		सत्य व्रत, श्रीदत्तजयन्ती।
पौष कृष्ण	४ बुधवार	ता० १५		श्रीगणेश ४ व्रत।
	५ गुरुवार	ता० १६		धनुः संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल ३-३६ उपरान्त [१६-३६ यावत्
	११ गुरुवार	ता० २३		सफला एकादशी व्रत।
	१२ शुक्रवार	ता० २४		प्रदोष व्रत।
	३० सोमवार	ता० २७		सोमवती अमावस्या।
पौष शुक्ला	१ मंगलवार	ता० २८		चन्द्रदर्शन।
	३ बुधवार	ता० २६		हिजरी सन् १३६३ प्रारम्भ।
	६ शनिवार	ता० १	जनवरी	सन १६४४ ई० प्रारम्भ।

महापुरुषोंकी जयन्तियां, निर्वाणदिन और प्रसिद्ध मेले

कार्तिक कृ०	६ शुक्रवार	ता० २२	अक्तूबर	स्व० श्री० विट्ठलभाई पटेल निर्वाण दिन
	१० शनिवार	ता० २३	,,	श्रीकृष्णसखा पार्थ (अर्जुन) जन्मदिन
	१४ गुरुवार	ता० २८	,,	दीपमाला मेला अमृतसर।
	३० शुक्रवार	ता० २६	,,	श्री स्वामी रामतीर्थ जयन्ती।
कार्तिक शुक्ल	८ शुक्रवार	ता० ५	नवम्बर	स्व० श्री चित्तरञ्जनदास जन्मदिन।
	११ सोमवार	ता० ८	,,	भक्त श्री नामदेव जन्मदिन।
	१५ गुरुवार	ता० ११	,,	मेला पुष्करराज और ऋणमोचन कपालमोचनतीर्थ श्रीगुरु नानकदेवजयन्ती।
मार्गशीर्ष कृष्ण	५ बुधवार	ता० १७	,,	स्व० श्री ला० लाजपतराय पुण्यदिन।
	६ गुरुवार	ता० १८	,,	श्री पं० जवाहरलाल नेहरू जन्मदिन।
	१३ गुरुवार	ता० २५	,,	श्रीज्ञानेश्वर महाराज पुण्यदिन
	१४ शुक्रवार	ता० २६	,,	मेला पुरमण्डल (काश्मीर) देविका स्नान।
	१४ शुक्रवार	ता० १०	दिसम्बर	अखण्ड सौ० श्री १०५ मती महाराणी साहिबा बघाटराज्य सोलन जन्मोत्सव
पौष कृष्ण	३ मंगलवार	ता० १४	दिसम्बर	सम्राट षष्ठजार्ज जन्मदिन।
	८ सोमवार	ता० २४	,,	महामना श्री पं० मदनमोहनजी मालवीय जन्मदिन।
पौष शुक्ल	१ मंगलवार	ता० २८	,,	अखिल भारतीय राष्ट्रिय महासभा कांग्रेस जन्मदिन, मेला बाबा हरवल्लभ जालन्धर।
	७ रविवार	ता० २	जनवरी	श्रीगुरु गोविन्दसिंह जयन्ती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न-विज्ञान

[लेखक—विद्याभूषण श्री पं० मोहन शर्माजी, विशारद, पूर्व सम्पादक "मोहिनी"]

प्राचीन समयमें भारतके अधिवासी सात्त्विक जीवन यापन करना उत्तम समझते थे, जड़वाद और आध्यात्मवादके भेदको समझ कर उन्होंने अपने जीवनको पूर्ण सात्त्विकी बनाया था। उनकी आवश्यकतायें स्वल्प थीं, बाह्याडम्बरकी आसुरी मायासे उन्होंने अपनेको सुरक्षित रक्खा था, इसीलिए तत्त्व चिन्तनमें उनकी स्वभावतः गति और मति होती थी। वे उच्च विचारोंके पोषक और कल्पक होनेके कारण ही अपने अपूर्व अन्वेषणों द्वारा हमारे कल्याण के जो ज्ञानका भण्डार छोड़ गये हैं, यदि हम उसकी उपयोगपूर्वक रक्षा कर सकें तो यह अभ्रान्त प्रमाणोंसे सिद्ध है कि हम भी अपने जीवनको उसी भाँति गौरवनीय और उच्च बना सकते हैं। हमारे धर्मग्रन्थ और शास्त्रोंकी प्रणालियोंका आधार इतना सुदृढ़ और सच्चा है कि विरोधियों द्वारा उसकी सार हीनताके झूठे दावे अब तक व्यर्थ होते आये हैं। वह किसीके हिलाये नहीं हिल सका है। जीवन की क्षुद्रातिक्षुद्र घटनाओंके सम्बन्धमें शास्त्रावलोकन से हमें जो अपार ज्ञान प्राप्त होता है, हममेंसे बहुतों को इसका विवेक तक नहीं है। अन्यथा एतद्देशीय आर्ष-ग्रन्थोंमें वे सब बातें भरी पड़ी हैं, जिनकी गुत्थियोंके फेरमें हम नवीन प्रकाश (सभ्यता) के उपनेत्र (चश्में) से पश्चिमी सभ्यताकी चकाचौंधमें सुलझावको ढूंढनेका व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं।

भारतकी अपनी इन विचित्र अन्वेषणाओंमें स्वप्न-विज्ञान भी एक अलग विद्या है। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसे स्वप्न सुषुप्ति और जागृतिकी विभिन्न अवस्थाओंका भान न होता हो, स्वप्न नित्य ही आते रहते हैं। स्वप्नमें मनुष्य जो देखता और अनुभव करता है वह जागृतिमें उसने कभी देखा और सुना भी न था। कितने ही मनुष्य स्वप्नकी मायामें आत्म-हत्या करते पाये गये हैं। अघटित और अज्ञात घटनायें स्वप्न द्वारा सत्य रूपमें घटित होती देखी गयीं हैं। रात्रिके चतुर्थ प्रहरके स्वप्नका फलाफल कभी २ दूसरे ही दिन प्रत्यक्ष होता पाया जाता है। धरित्रीके क्रोड़से धन मिलने के स्वप्न, जीवनकी नाना अज्ञात घटनाओंके स्वप्न, मृत्यु और जन संहारकी लीला के स्वप्न ये सब भी अपनी सत्यताकी बराबर साक्षी देते आ रहे हैं। इस प्रकार स्वप्न देखने और उनकी चर्चा करनेका विषय मानव स्वभावके पक्षमें नित्य की अनिवार्य घटना है। अधिकांश मनुष्य जो स्वप्न शास्त्रमें कोरे हैं स्वप्नोंको व्यर्थ समझकर, इनके वादविवाद में पड़ना उचित नहीं समझते और जिन्हें स्वप्नोंके फलाफल जाननेकी उत्सुकता तथा रुचि है वे भी इसको परिणाम-भोग तक सीमित रखकर अपनी इतिकर्त्तव्यता समझ लेते हैं। फलतः स्वप्न-विज्ञानकी वास्तविक जानकारी और खोजका विषय अंधेरेमें रह जाता है। इसका तात्त्विक अनुसन्धान मानव-जीवनको कितना ऊपर उठा सकता है, इसे हम कल्पना द्वारा जानते हैं। आजका मानव जीवन नाना प्रकारके दुःख शोकका प्रतीक बन गया है। यदि ऐसे भीषण समयमें मनुष्य अपनी इच्छानुसार स्वप्न देख सकता तो संसारके आधेसे भी अधिक दुःख सदैवके लिए बिदा माँग लेते। परन्तु प्रकृतिने स्वप्नमें जिस महाविस्मयकी मदिराको उड़ेल दिया है; मानव स्वभाव उसकी अवज्ञा नहीं कर सकता। यदि सपने सबके सब सत्य और प्रत्यक्ष हुआ करते तो हम स्वप्नावस्थामें मृत स्नेहियोंसे मिलकर अपनी विरह-व्यथाको क्षणमें शान्त कर सकते थे। दुःखद्वन्द्वकी प्रचण्ड अग्निसे झुलसते हुए इस जीवनमें कितना स्वाद आ जाता, यदि स्वप्नकी आड़में हम दैनिक गुत्थियोंको सुलझानेका बल प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते। किन्तु, प्रकृतिने अपने नियम पर वह दृढ़ मोहर लगायी है कि उसमें किसी उलटफेरके लिए सोचना व्यर्थ प्रयत्न जैसा है। "मनसा चिन्तये-कार्यं दैवो अन्यत्र चिन्तयेत्" मनुष्य कुछ सोचता है और प्रकृति कुछ और ही कर दिखाती है।

परञ्च, मानव शक्तिका जिस पर कोई अधिकार नहीं, उस स्वप्नकी मायाका वास्तविक रहस्य क्या है? स्वप्न कभी मनुष्यके मन पर भारी आघात पहुंचाते, कभी आशाओंका समुद्र उमड़ाते, कभी आनन्दकी धारा बहाते, मनुष्यको अदृश्य जगत् की झांकी कराते और कभी २ भय भावनासे व्याकुल बना कर उसे पेचीदगीमें डाल रखते हैं। इस प्रकार स्वप्नोंका संसार आजकी मानवात्माके लिए निरन्तर रूपसे जिज्ञासा और विस्मयका बोध करा रहा है। विचित्र स्वप्नोंको देखनेवाला मनुष्य प्रायः विचारोंमें ही डूबा रहता है और जब उनका कार्य फलाफल सामने नहीं आता तो उनकी धीरे २ विस्मृति हो रहती है। परन्तु, जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं साहित्य और संस्कृतिके धनी आर्यावर्त्त के प्राचीन आर्य-द्रष्टाओंने इस सम्बन्धमें हमारे ज्ञान लाभार्थ पुष्कल सामग्री एकत्र कर दी है। पाश्चात्य विद्वान् जिस विषयमें आज भी अपनी अज्ञानता और कठिनाइयोंका अनुभव करते हैं, उस स्वप्नकी माया पर हमारे पूर्वज़ोंने नितान्त खोजपूर्ण और उपादेय ग्रन्थोंका प्रणयन किया है। स्वप्नके सम्बन्ध में शकुन-शास्त्रके अन्तर्गत जो विशेष प्रकरण दिये गये हैं उनसे इनका रहस्य जाननेमें यथेष्ट सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त दूसरे २ शास्त्रोंमें भी उपयुक्त विषयोंके अङ्गभूत स्वप्नों पर आवश्यकतासे अधिक साहित्य लिखा हुआ मिलता है। आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें भी स्वप्नका स्पष्टीकरण दिया है। अमुक जातिका स्वप्न अमुक रोगके आक्रमणका सूचक है। इस प्रकारका वर्णन उपर्युक्त ग्रन्थोंमें स्थान २ पर पाया जाता है। एतद्देशीय आयुर्वेद शास्त्रमें स्वप्नों को क्रमशः ७ प्रकारोंमें विभाजित किया है। वे स्वप्नोंके सात प्रकार नीचे लिखे अनुसार हैं :—

(१) **दृष्ट**—मनुष्यने कोई भयानक, करुण, शृंगारिक या विशिष्ट प्रकारकी मानसिक अनुभूति का प्रसङ्ग आंखों देखा हो और कुछ समयोपरान्त उसी प्रसंगको वह स्वप्नमें देखे तो इस प्रकारके स्वप्नको 'दृष्ट स्वप्न' कहते हैं।

(२) **श्रुत**—अनेक अवसरों पर हम दूसरोंके मुंह जिन प्रसंगों और घटनाओंकी चर्चा सुनते हैं, उनकी हमारे मस्तिष्क पर पर्याप्त छाप पड़ जाती है। और समय २ पर इन प्रसंगोंकी स्मृति हमें गुलाबी सपने दिया करती है। शास्त्रमें ऐसे ही स्वप्नको "श्रुत स्वप्न" अभिहित किया है।

(३) **अनुभूत**—मनुष्यको उसकी दैनिक जीवन-घटनाएं भी सपने देती हैं। इन घटनाओंका स्वप्न ही "अनुभूत स्वप्न" कहा गया है।

(४) **प्रार्थित**—अपनी इष्ट वस्तुके प्राप्त न होने पर मनुष्य बारम्बार उसका चिन्तन करता है और इस चिन्तनके कारण उसकी इच्छित वस्तु उसे जागृतिमें नहीं तो स्वप्नमें अवश्य ही प्राप्त होती है। शास्त्रमें इसे "प्रार्थित स्वप्न" बताया है।

(५) **कल्पित**—मनुष्यमें स्वभावतः यह बात विद्यमान है कि उसे प्रत्यक्ष जगत्में जो वस्तुएं प्राप्त नहीं होतीं, उसकी वह व्यर्थ कल्पना करता रहता है। बेकारी और अन्न-कष्टसे पीड़ित मनुष्योंकी कल्पनाओं का पूछना ही क्या, मनमानी कल्पना करने और वायवी दुर्ग (हवाई किले) बांधनेमें ही उनके दिन व्यतीत होते हैं। ऐसी कल्पनाओंके प्रभावसे यदि मनुष्य उन्हें ज्योंकी त्यों स्वप्नमें भी देखता है तो इस भांतिके स्वप्नोंको "कल्पित स्वप्न" कहते हैं।

(६) **भाविक**—स्वप्नोंका यह एक विशेष प्रकार है। किसी कार्य वश जाते हुए मार्गमें अमुक व्यक्तिसे भेंट होना, अमुक जातिके पशुओंको देखना, अपने आसपाससे नाना जीवोंके शब्दोंका सुनना इत्यादि इत्यादि अनेक अवसरों पर शकुन अपशकुनके सूचक सिद्ध होते हैं। इसी भांति कई स्वप्न जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवकी भावी जीवन घटनाओं पर प्रकाश डालते हैं उन्हें स्वप्न शास्त्रमें "भाविक स्वप्न" कहा है।

(७) दोषज—स्वप्नोंका यह सबसे अन्तिम प्रकार है। मनुष्यके शरीरमें मलिनता व्याप्त होने पर उसकी प्रकृति ठिकाने नहीं रहती। शरीरमें मल अथवा दूसरे अप्रत्यक्ष दोष सञ्चित हो कर मनुष्यको नाना प्रकारके स्वप्नोंके संसार दिखलाते हैं। इस विकृतावस्थामें वह अगणित स्वप्नोंको देखता और अनुभव करता है। इस जातिके स्वप्न "दोषज स्वप्न" कहलाते हैं। एक पश्चिमी विद्वान्का कथन हैः—

"Every dream is the fulfilment of a wish."

अर्थात् प्रत्येक स्वप्न किसी एक वासनाका प्रतिबिम्ब है, अथवा इच्छाओंकी पूर्णताको बतलाता है और यह बात इस परसे भली-भांति स्पष्ट है कि मनुष्यके हृदयमें संख्यातीत वासनाएँ उत्पन्न होती रहती हैं। इन वासनाओंके दो भाग हो सकते हैं। ज्ञात-वासना और अज्ञात-वासना। मुझे धन मिल जाय या मैं अमुक परीक्षामें उत्तीर्ण हो जाऊँ यह 'ज्ञात-वासना' है। और 'अज्ञात-वासना' वह है जिसके अस्तित्वको हम आप नहीं जानते। हमने अमुक प्रकारकी वासना कभी की थी या हमारे मनमें उसका उदय था या नहीं, इसकी रञ्च मात्र भी हमें स्मृति नहीं रहती। पर स्वप्नमें हम उसके उदय और विचित्र बनावको देखकर विस्मय विमुग्ध हो उठते हैं। इस प्रकार स्वप्न मीमांसा दो मुख्य वासनाओंका समर्थन करातो हैं। विषयको स्पष्ट करने के लिए साधारणतः यह कह सकते हैं कि छोटे बालकोंके स्वप्नमें ज्ञात-वासना और प्रौढ़ावस्थाके पुरुषोंके स्वप्नमें अज्ञात-वासनाका बाहुल्य होता है। कारण यह कि नन्ही अवस्थाके बालकोंका मानसिक जीवन अत्यन्त सरल होता है। अतः उनके जीवनमें अज्ञात-वासना नहीं होती, वे उन्हीं कामनाओंको कर सकते हैं, जिनका उन्हें पूरा-पूरा ज्ञान होता है।

इधर प्रौढ़ मनुष्यके स्वप्नोंमेंसे वासनाके अस्तित्वको ढूँढ़ निकालना नितान्त कठिन है। क्योंकि साधारणतया इनके स्वप्नमें किसी ज्ञात-वासनाकी प्रतिच्छाया नहीं होती। इसके विपरीत उनमें अज्ञात-वासनाका ही अधिक भाव होता है। प्रौढ़ मनुष्योंका मानसिक जीवन बालकों जैसा सरल और बोधगम्य नहीं होता। इस अवस्थामें आशाएँ मनुष्यको टिड्डी दलकी भांति घेरे रहती हैं। अतः उसे अलग अलग परिस्थितियोंमें रह कर अलग अलग वस्तुओं और अलग अलग पद्धतियोंको देखने और अनुभव करनेके लिए बाध्य होना पड़ता है। इससे उसके मनमें रात दिन नाना प्रकारकी धारणाएँ उत्पन्न होती हैं। पर वह प्रत्येक प्रकारकी धारणाको आदर-पूर्वक स्वीकार नहीं कर सकता। क्योंकि उसे समाज, धर्म और राज्यशासनको ध्यानमें रखकर चलना पड़ता है। अतः पार्थिव संसारमें जिस प्रकार शक्ति-संरक्षण (Conservation of Energy) का सिद्धान्त सत्य सिद्ध है, उसी प्रकार मानसिक संसार-में धारणा-संरक्षण (Conservation of Idias) के सिद्धान्तकी मान्यता है। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। दिनमें जागृत अवस्थामें हम जिन वासनाओंको सहसा भूल बैठते हैं, निन्द्रावस्थामें वही वासनाएँ स्वप्नरूपसे अनायास सामने आ पहुँचती हैं। इसकी सत्यता सर्वथा अनुभव सिद्ध है।

स्वप्न प्रत्येक मनुष्यको नित्य ही आते हैं। किन्तु, वे सबके सब स्मरण पटल पर स्थिर नहीं रहते। केवल स्पष्ट सम्बन्धवाले और तर्क युक्त स्वप्न या उनका भाग-विशेष स्मरण रह जाता है। सार्थक स्वप्न और डंकेकी चोटका फल देनेवाले स्वप्न भी भुलायेसे नहीं भूलते। देखा जाय तो स्वप्नोंका स्मरण रहना अपनी अपनी स्मरणशक्तिकी तीव्रता पर आधारित रहता है। एक प्रसिद्ध लेखकका कथन है कि स्वप्नको बारम्बार स्मरण करनेका प्रयत्न करना अनुचित है। जो मनुष्य स्वप्नके विषयमें अधिक विचार करता है वह या तो किसी सीमा तक विक्षिप्त स्वभावका है या उसके मस्तिष्कको कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकार हो गया है। अनुभवी पुरुषोंका कथन है कि विक्षिप्त प्रकृतिका मनुष्य अपने स्वप्नोंके विषयमें अधिक सोच विचार करनेका अभ्यासी होता है। आयुर्वेदके मतानुसार जिसे रात्रिमें अधिक स्वप्न आते हों, जो एकाधिक स्वप्न बार बार देखता हो, उसकी शारीरिक स्थिति और प्रकृति बिगड़ी हुई जानना चाहिए। जिसे अधिक स्वप्न दिखाई दें उसको प्रगाढ़ निद्रा हो ही नहीं सकती और जिन्हें प्रगाढ़ निद्राका अनुभव होता है उन्हें स्वप्न अत्यन्त स्वल्प प्रमाणमें दिखाई देते हैं। स्वप्ननोंके अनुभव और उन्हें स्मरण रखनेके सम्बन्धमें व्यक्ति-भेद पाया जाता है। अवस्थाकी दृष्टिसे भी स्वप्नोंके प्रकार और संख्याके भेदाभेद परिलक्षित होते हैं। एक अनुभवी लेखकका कहना है कि बालकको अधिक और प्रौढ़ अवस्थावालेको बहुत थोड़े स्वप्न आते हैं। परन्तु प्रौढ़ व्यक्तिके स्वप्न प्रायः सम्बन्धित होते हैं। बालकोंकी भांति स्त्रियाँ भी अधिक स्वप्न देखती हैं। इसका यह कारण है कि उन्हें स्वच्छ जलवायु नहीं मिलती। घर आँगनकी संकुचित सीमित परिधिमें उन्हें रहना पड़ता है। जङ्गली मनुष्योंकी अपेक्षा विचारवान् पुरुष भी अधिक स्वप्न देखते हैं। स्वप्न विशारदोंका इसमें एक ही मत है कि मनुष्यके मस्तिष्क पर जितना अधिक दबाव पहुँचता है, स्वप्न भी उतने ही अधिक और कई बार आते हैं। रोगकी अवस्थामें विशेष प्रकारके स्वप्नोंका दीखना स्वाभाविक है। हिस्टीरिया आदि रोगोंकी अवस्थामें एकाएक अलग ढंगके स्वप्न देखनेमें आते हैं।

एक डूबते हुए मनुष्यका उदाहरण देते हुए एक मनोवैज्ञानिकने बताया है कि एक डूबे हुए मनुष्य-को बचाये जाने पर यह जाना गया कि वह अखण्ड जलराशिमें दो मिनट पर्यन्त एकाएक अचेत और बेसुध रहा था। इस बीचमें उसे अपने सारे जीवन-की घटनाएँ स्मरण हो गयीं। उसके बाल्यकालसे ले कर ५० वर्षकी आयु तककी समस्त घटनाएँ एक सिनेमा फिल्मके रूपमें उसकी स्मृति पटल पर घूम गयीं। इस प्रकार स्वप्नावस्थामें वर्षोंका अनुभव क्षणोंमें चित्रपटकी भांति सामने फिर जाता है। और जागृत अवस्थाका एक क्षण, स्वप्नावस्थाका एक वर्ष भी बन सकता है। किसीको रात्रिमें ३-४ से भी अधिक स्वप्न दीखते हैं। और किसी किसीको एक ही स्वप्न आता है। पशु पक्षियोंको भी स्वप्नानु-भूति होती है और वे मनुष्योंके स्वप्नोंसे लगते हुए स्वप्न देखते हैं।

स्वप्न-विशारदोंके मतानुसार बड़ेसे बड़ा स्वप्न केवल मात्र १० मिनिट पर्यन्त स्थायी रहता या लगा-तार दिखाई देता है। और इससे अधिक समय तक कोई भी स्वप्न चालू नहीं रहता। स्वप्न देखनेके पश्चात् यदि मनुष्य पुनः निद्रा लेनेका प्रयत्न न करे तो वह स्वप्न विशेष फलदायी होता है। अशुभ स्वप्न देखनेके पश्चात् यदि तुरन्त ही दूसरा स्वप्न आजाए तो वह भी श्रेष्ठ फल प्रदान करता है। और तब पहिलेके बुरे स्वप्नका कुछ भी प्रभाव नहीं रह जाता। जिसके शरीरमें वायु पित्त और कफ कुपित हो कर शरीरको विकृत बना डालते हैं उसे स्वप्नोंका टोटा नहीं रहता; अर्थात् स्वप्न फिर उसका पीछा नहीं छोड़ते। इस प्रकारके स्वप्न "दोषज स्वप्न" कहे जाते हैं।

स्वप्नोंका संसार अपनी विचित्रताका आप ही प्रमाण है। पर जन-साधारणका स्वप्नके प्रति अवि-श्वास देख कर हम इससे उनके भोलेपनका ही तात्पर्य लेंगे। क्योंकि प्रधान-मस्तिष्क और लघु-मस्तिष्कके क्रिया कलाप और भेदाभेदको न जाननेसे ही लोगोंमें स्वप्नोंके लिए पूर्ण जिज्ञासा और आदरका एकान्ता-भाव बना है। स्वप्नका अद्‌भुत और विचित्र संसार रहस्यसे कभी रिक्त नहीं हो सकता। हमारे प्राचीन ग्रन्थ इसकी मीमांसामें स्पष्ट विघोषित कर रहे हैं कि स्वप्नका एक अलग विज्ञान है और बिना उसका अध्ययन किये कोई भी इसमें पारङ्गत होनेका अभि-मान नहीं कर सकता। जो स्वप्न विषयको रहस्यहीन और थोथा जानकर इसकी हँसी उड़ाते और इसके प्रति उदासीन रहते हैं वे एक बार इस विषयका पूरा पूरा अभ्यास कर देखें। हमारा एकान्त विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थशास्त्रीसे !

[लेखक—श्री भगवानदासजी केला]

[लेखक भारतीय ग्रन्थमाला दारागंज प्रयागके संस्थापक और संचालक हैं। राजनीति और अर्थ-शास्त्रके विद्वानों में आपका प्रमुख स्थान है। नागरिक राजनैतिक और आर्थिक साहित्यका निर्माण करके अपनी ग्रन्थमाला द्वारा आपने पर्याप्त ख्याति एवं यश प्राप्त किया है। उक्त ग्रन्थमालाकी ४२ पुस्तकें प्रकाशित हुई जिनमेंसे ३७ इस समय उपलब्ध हैं। प्रत्येक पुस्तक ज्ञानवर्द्धक रोचक एवं पठनीय है। हम अपने पाठकोंसे अनुरोध करेंगे कि वे श्री केलाजीकी साहित्य सेवासे (ग्रन्थोंसे) अवश्य लाभ उठावें। 'श्रीस्वाध्याय' के लिए अभी आपने यह छोटासा किन्तु ज्ञातव्य लेख भेजा है, वह यहां प्रकाशित किया जाता है। —सम्पादक]

मैंने एक अर्थशास्त्रीके पुत्रसे पूछा— "कहो जी ! तुम भी अर्थशास्त्री बनोगे ?"

'क्यों नहीं ? हम भी अर्थशास्त्री बनेंगे।' लड़केने हँसते हुए उत्तर दिया।

'क्यों भाई ! अर्थशास्त्र पढ़नेसे क्या होता है ?' मुझे उस लड़केसे बात करनेमें आनन्द आ रहा था।

'अर्थशास्त्र पढ़नेसे यह ज्ञान होता है कि किस प्रकार पर्याप्त मात्रामें द्रव्योपार्जन किया जाय, और सम्पन्न (मालदार) बना जाय।' लड़केने तुरन्त उत्तर दिया।

'अच्छा, तुम धनाढ्य (मालदार) हो जाओगे। पर तुम अपने धनका करोगे क्या ?' बातचीत आरम्भ रखते हुए मैंने पूछा।

'क्या करोगे ? खूब खायें-पीयेंगे, मौज करेंगे, मोटर रक्खेंगे, मकान बनवायेंगे।' लड़केने प्रश्नको अनावश्यक-सा समझते हुए कहा।

'और ?'

'और ? धन जोड़ कर रक्खेंगे।'

अर्थशास्त्रकी शिक्षाके सम्बन्धमें ये हैं एक बालकके विचार। और बालकका ही क्यों, प्रायः बड़ी आयु वालोंका भी तो दृष्टिकोण कुछ ऐसा ही होता है।

अर्थशास्त्री जी ! तुमने इस विषयका पर्याप्त अध्ययन किया है। सिद्धान्तिक वादविवादमें तुम खूब कुशल हो। तुम्हारे शब्द चाहे जो हों, तुम्हारी भाषामें चाहे जितना पांडित्य और विद्वत्ता हो, क्या तुम्हारा भाव संक्षेपमें वही नहीं है जो उस भोले बालककी स्वाभाविक भाषामें व्यक्त हुआ है। कमसे कम व्यावहारिक बात तो यही प्रतीत होती है। तुम्हारी दृष्टि सदैव धन पर रहती है। कोई काम करने योग्य है या नहीं, इसकी कसौटी तुम्हारे विचारसे यही है कि उससे धन मिलता है या नहीं। जिस कामसे जितना अधिक धन प्राप्त होगा, उतनी ही तुम उसकी उपयोगिता अधिक मानते हो। यद्यपि

है कि उन्हें निराशा नहीं होगी और वे इससे अपने लिए कौतूहल तथा ज्ञानकी नई सामग्री ही प्राप्त करेंगे। स्वप्न-विज्ञान एक साङ्केतिक-विद्याके समान है, जिससे हमें जीवनके उतार चढ़ावके लिए प्रतिदिनकी साधारण और महत्त्वपूर्ण घटनाओंके लिए स्पष्ट सङ्केत मिलते रहते हैं। यदि उन सङ्केतोंको जानने और तदनुसार प्रयासी होनेके ठीक ठीक भाव का उदय हो सके तो हम अपने जीवनमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पाठकोंको यह विषय रुचिकर हुआ तो "स्वप्नके सत्य अनुभव" के रूपमें हम इस पर धारावाहिक लेख लिखनेका प्रयत्न करेंगे। प्रस्तुत लेखमें उसकी प्रस्तावना मात्र दी गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहनेको तुम यह कहा करते हो कि धन (मनुष्य या समाजके लिए) व्यय करनेको ही होता है, पर व्यवहारमें प्रायः यह बात भुला दी जाती है। मुख्य लक्ष्य धन रहता है, व्यक्ति या समाजका हित नहीं। क्या तुम आतशबाजी नशे या विलासिताकी वस्तु बनानेके श्रमको 'उत्पादक' श्रम नहीं कहते ? यद्यपि यह सर्व विदित है कि इससे समाजको भयङ्कर क्षति पहुँचती है। तुम तो शायद सिद्धान्तसे चोरी करने वालेके श्रमको भी उत्पादक श्रम कह सकते हो। इसके विपरीत यदि कोई मनुष्य केवल अपने मनोरञ्जन या मानसिक शान्तिके लिए अच्छे साहित्यका अवलोकन करता है, या निस्वार्थ भावसे दूसरोंको सुनाता है तो तुम उसके श्रमको 'अनुत्पादक' कहोगे। तुम्हारी दृष्टिमें निष्काम कार्यका कुछ महत्त्व नहीं, प्रत्येक कार्य स्वार्थ साधन होने न होनेके आधार पर ही उत्पादक या अनुत्पादक ठहराया जाता है। इस प्रकार यदि सबके सब मनुष्य 'उत्पादक' कार्य करने में लगे रहा करें तो यह मानव-जीवन कितना शुष्क रसहीन हो जाय। प्रेम, दया, उदारता आदिका इसमें कुछ स्थान न रहनेकी दशामें यह जीवन क्या मनुष्योंके योग्य रह सकता है ?

अर्थशास्त्रीके विचारसे उत्पत्ति या उत्पादन-कार्य का लक्ष्य लाभ (मुनाफा) है। जिन-जिन उपायों या तरीकोंसे लाभका परिमाण बढ़ाया जा सकता है, उनकी ओर प्रतिक्षण तुम्हारी दृष्टि लगी रहती है। इसी लिए तो अर्थशास्त्रमें बड़ी मात्राकी उत्पत्ति ('लार्ज स्केल प्रोडक्शन') और मशीनोंका इतना गुणगान किया जाता है। अपनी निष्पक्षता दिखानेके लिए अर्थशास्त्र इनके कुछ दोष भी गिना देता है, परन्तु उन्हें विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता, गुणों का पलड़ा ही भारी रक्खा जाता है। पाठकों पर यह प्रभाव डालनेका प्रयत्न किया जाता है कि कुल मिला कर बड़ी मात्राकी उत्पत्ति, और मशीनें अत्यन्त लाभकारी हैं। देशकी धन-वृद्धिके लिए इनका अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। जिस कामको आज सौ मनुष्य कर रहे हैं, उसे मशीनके सहारे केवल दस मनुष्य कर सकें और नव्वे ९० श्रमजीवी मनुष्योंका वेतन बच सके, तो क्यों न मशीनसे काम लिया जाय। इस प्रकार छोटे कलाकौशल (दस्तकारियों) और घरू उद्योग धंधोंका ह्रास करके और बड़े पैमानेकी उत्पत्तिका प्रचार करके तुम पहले तो बेकारीका रोग बढ़ानेमें सहायक होते हो, और पीछे इसे दूर करनेके लिए कुछ मरहम पट्टीकी योजना करते हो। उस पद्धतिका ही तुम प्रबल विरोध क्यों नहीं करते, जो इस रोगको जन्म देती है, और बढ़ाती है।

एक शुष्क वैज्ञानिककी भांति तुम इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हो कि पदार्थोंका मूल्य माँग और पूर्तिके नियमके अनुसार निर्धारित होता है। यही नियम तुम पारिश्रमिक (मजदूरी) के सम्बन्ध में भी लगाते हो। तुम्हारी दृष्टिसे पारिश्रमिक एक क्रय-विक्रयका पदार्थ है, तुम इसे अपने अनेक बन्धुओं के जीवन-मरणके प्रश्नके रूपमें नहीं देखते। श्रमजीवी अपना भलीभांति निर्वाह करे, और सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करे, इसके लिए उन्हें कितना पारिश्रमिक मिलना चाहिए, यह प्रश्न तुम नीतिशास्त्रियों के लिए छोड़ देते हो।

अर्थशास्त्रीजी ! तुम्हारा 'माँग और पूर्ति' का नियम बड़ा निर्दयी है; अथवा यह कहना ठीक होगा कि तुम उसका उपयोग करनेमें बड़ी हृदयहीनताका परिचय देते हो। यदि किसी गृहस्थ पर कोई आकस्मिक विपत्ति आ जाय, और वह अपनी वस्तु (माल) सस्ते मूल्यमें लुटाने पर बाध्य हो तो यह जानकर कि इस मालकी मांग करने वाले खरीदार कम हैं, तुम ऐसे अवसरका स्वागत करनेको कैसे उत्सुक रहते हो। यदि किसीके घरमें आग लग जानेसे उसका सामान कुछ बिगड़ जाय और तुम्हें वह नाम मात्रके मूल्य पर मिलता हो तो तुम उसे लेनेसे कब चूकने वाले हो। और, इस बातकी तो तुम्हें हर समय खोज ही रहती है कि कहीं अनाथों विधवाओं या अन्य दुर्दशाग्रस्त मनुष्योंकी सम्पत्ति बिके और साधारण सा व्यय करनेसे ही वह तुम्हारे अधिकारमें आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय। कब दूसरों पर सङ्कट हो और तुम्हारी बन आवे। क्या तुम अपने अर्थशास्त्रमें इस 'मांग और पूर्तिके' नियमकी सिद्धान्तिक चर्चा करना ही पर्याप्त समझते हो? क्या इस नियमके भयङ्कर दुरुपयोगकी ओर भी यथेष्ट ध्यान देना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है?

अर्थशास्त्रीजी! तुम्हारी नीतिका मूल सूत्र यह रहता है कि थोड़ेसे थोड़े व्ययसे अधिकसे अधिक माल तैयार करके उसे पर्याप्त लाभ (मुनाफे) से बेचा जाय। इस नीतिका फल यह है कि कोई माल उत्पादन करते समय इस बातका विचार नहीं किया जाता कि जनताको वास्तवमें उसकी आवश्यकता है या नहीं। मुख्य लक्ष्य यह रक्खा जाता है कि जो माल तैयार हो वह बिक जाय। यही कारण है कि अनेक बार जीवन-रक्षक पदार्थोंकी उत्पत्ति न कर, ऐसे पदार्थ उत्पन्न करनेमें शक्ति लगाई जाती है, जिनकी मांग केवल विलासिता या शौकीनीके लिए होती है। यदि यह पदार्थ देशमें पर्याप्त खपता हो तो इसके लिए विदेशोंमें बाजार ढूंढे जाते हैं। यदि दूसरे देश निवासी इन्हें क्रय करनेसे अस्वीकार करते हैं तो उन पर ये छल-बल-कौशलसे लादे जाते हैं; यहां तक कि इसके लिए उनसे भयङ्कर युद्ध ठाननेमें भी सङ्कोच नहीं किया जाता। कोई उन्नत और सबल राष्ट्र स्वयं चाहे जितने समय तक व्यापार-संरक्षण (प्रोटेक्शन) नीतिसे काम लेता रहा हो और भविष्यमें भी चाहे जब इस नीतिको अपनानेको तैयार हो, दूसरे देशोंसे मुक्त-द्वार व्यापारका ही व्यवहार चाहता है और अपने राज्यका रुख देख कर अर्थशास्त्री वैसा ही उपदेश पाठकोंको देता है। क्या शास्त्रवेत्ता और शास्त्र-प्रेमी कहे जाने वाले व्यक्तिसे यह आशा न की जाय कि वह स्वतन्त्रतापूर्वक सत्यका प्रचार करे?

अर्थशास्त्रीजी! क्या-क्या कहूँ। एक ही बात की ओर तुम्हारा ध्यान और दिलाता हूँ। क्या प्रत्येक समय धन ही धनकी पुकार होना उचित है? क्या प्रत्येक उत्पादनका और प्रत्येक व्यापार व्यवसायका उद्देश्य लाभ ही होना चाहिए? क्या मानव जीवन की उपयोगिता केवल यह है कि किसी भी प्रकार मुनाफेके द्वारा खूब धन संग्रह किया जाय, चाहे उससे देश और समाज पर सङ्कट आए, और चाहे संसारमें महायुद्धसे विनाश कार्य हो? यह ठीक है कि मनुष्यका उद्देश्य सुख शान्ति प्राप्त करना है, और इसके लिए एक सीमा तक अर्थोपार्जन आवश्यक है। अपने निर्वाहके लिए परिश्रमपूर्वक धन कमाना ठीक है, परन्तु हर बातमें मुनाफे पर दृष्टि रखते हुए काम करने अनुचित ही हैं। केवल अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में लगे रहनेसे चाहे जितना द्रव्य संग्रह किया जाय, वह अन्ततः सुख शान्ति देने वाला नहीं होता। वास्तविक सुख शान्ति तो उसे ही प्राप्त होती है, जो दूसरों की सेवा और परोपकारका यथेष्ट ध्यान रखता है, जिसका विचार-क्षेत्र विस्तृत है, जो अपने ग्राम नगर या राज्यमें ही नहीं, विश्वभरमें अपनेपनका अनुभव करता है। इसलिए हमारी विविध क्रियायें या श्रम केवल 'आर्थिक' न हो कर लोकहित-मूलक होनी चाहिएँ। यही सच्चा अर्थशास्त्र है; आधुनिक अर्थशास्त्री इसे मान्य करें या न करें। अर्थशास्त्रके नामसे जो कुछ आज दिन पढ़ा-पढ़ाया जाता है, वह तो स्वार्थशास्त्र है; नहीं नहीं उसे शास्त्रका नाम देना ही भूल है। और उससे सच्चे स्वार्थका भी तो ज्ञान नहीं होता। हमारा सच्चा स्वार्थ जनता या संसारके स्वार्थमें ही है, उससे पृथक् नहीं। आह! इस विश्वमें सच्चे अर्थशास्त्रका प्रणयन और प्रचार कब होगा? अर्थशास्त्रीजी! क्या तुम इस पवित्र कार्यमें कुछ योग दोगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपएका मूल्य ह्रास

[लेखक—श्री अवनीन्द्रकुमार जी विद्यालङ्कार]

जीवन-निर्वाह व्यय दिन-प्रति-दिन 'जस जस सुरसा बदन बढ़ावा। तस तस कपि निजरूप दिखावा॥' के समान बढ़ता जाता है। मासिक व्ययका बनाया बजट प्रति मास बदलना पड़ता है। अकल्पित दैनिक व्यय बढ़ रहा है। खाद्य पदार्थों, कपड़ा और जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुओंका भाव बढ़ता जाता है। महंगी आज निर्धन (गरीब) को खाए जा रही है। इसका विकराल रूप कब अदृश्य होगा, यह कोई नहीं जानता। जन साधारण तो इतना जानता है कि जो एक रुपया पहले उसके घर आठ सेर दूध लाता था, अब वह केवल ३ सेर या चार सेर लाता है। गेहूँ रुपएका अब तीन या साढ़े तीन सेर ही आता है। घी चार छटाँक आता है। सोना जो २१) रु० तोला था, अनन्तर ३२–३६ रु० हुआ, आज वह ७०) रु० तोला है। इससे यह तो वह समझता और अनुभव करता है कि रुपएकी क्रय-शक्ति घट गई है। परन्तु सहसा ऐसा क्यों और कैसे हो गया, इसकी व्याख्या वह नहीं कर पाता। वह तो यह जानता है कि १९४१ के अन्तसे महँगीका जोर बढ़ा है और उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। फरवरी १९४२ में रुपएका आठ सेर गेहूँ मिल जाता था, किन्तु इस वर्ष तीन सेर भी मिलना दुर्लभ हो गया। एक वर्षमें यह परिवर्तन कैसे और क्यों होगया? क्या मालकी सहसा इतनी कमी हो गई? किसानों धनियों और मुनाफाखोरोंने स्टाक जमा करके क्या माल रोक लिया? या मुद्रा-प्रसार अत्यधिक मात्रामें हुआ है और वह 'फुलाव' या 'फुगाव' (इनफ्लेशन) की स्थिति पर पहुँच गया है? क्योंकि वस्तुओंका भाव बढ़नेके दो मुख्य कारण हो सकते हैं। पहला यह कि मांगके अनुसार वस्तुका अभाव हो या बाजारमें मुद्राका प्रसार इतना हो कि वस्तुओंका मूल्य बढ़ जाय। प्रश्न यह है कि किस कारण वस्तुओंका भाव बढ़ा है?

प्रत्येक वस्तुका भाव बढ़ा है यह निर्विवाद है। यह भी असन्दिग्ध है कि संयुक्तराष्ट्र अमरीका और ग्रेट ब्रिटेनकी अपेक्षा भारतमें वस्तुओंका भाव अधिक बढ़ा है। इसके साथ यह भी सत्य है कि रुपए के मूल्यमें ह्रास हुआ है। १९१४ में बम्बई बाजार-भावकी निदर्शक संख्या यदि १०० मानी जाय तो १९३९ में वह १०९ थी और जुलाई १९४२ में बढ़ कर वह २२५ हो गई, नवम्बर १९४२ में २२८ होगई। और वह निरन्तर बढ़ती जा रही है। यही बात कलकत्ता बाजारभावकी निदर्शक संख्या सूचित करती है। १९३९–४० में यह ११५ थी और नवम्बर १९४२ में २२७ हो गई। संयुक्तराष्ट्र और ग्रेटब्रिटेनके अद्यतन आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। किन्तु जो प्राप्त हैं उनमें उल्लेख योग्य बात यह है कि दिसम्बर १९४० से दिसम्बर १९४१ के बीच कलकत्ता और बम्बई की थोक निदर्शक संख्या क्रमशः २४ बिन्दु और ४३ बिन्दु ऊपर चढ़ गई। इसी अवधिमें ग्रेटब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र अमरीकामें क्रमशः ७ और १४ बिन्दु बढ़ीं। उल्लेख योग्य बात यह है कि भारतमें भाव इसके पश्चात् बहुत अधिक बढ़े हैं। इस सम्बन्धमें दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रुपएके मूल्यमें आन्तरिक दृष्टिसे अवनति हुई है, उसी प्रकार बाह्य दृष्टिसे भी हुई है। राष्ट्रसंघ द्वारा प्रकाशित 'मनी एण्ड बैंकिंग १९४०–४२' नामक पुस्तकसे ज्ञात होता है कि दिसम्बर १९३८ में रुपया ३४·३६ सेण्टके समान और मार्च १९४२ में वह ३०·१२ सेण्टके समान रह गया। इसके विपरीत जो मानते हैं कि मुद्रा-प्रसारके कारण वस्तुओंके भावमें तेजी नहीं आई, उनका कहना है कि भावोंकी तेजी चरमसीमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर नहीं पहुँची है। १८६६–१९३६ कालका पूर्वार्ध भावोंके चढ़ने और उत्तरार्ध उतरनेका है। १८६८ में जब भाव चढ़ने लगे, तब अखिल भारतीय निदर्शक संख्या १२१ (१८७३=१००) थी और १९२० में ३०२ हो गई थी। अधिक तेजी पिछली लड़ाईमें आई थी। १९१४ में १८७ थी और १९१९ में ३०१ पर पहुंच गई थी। १९३९ में निदर्शक संख्या १३४ थी और जुलाई १९४२ में २०० और नवम्बर १९४२ में २५० बिन्दु पर पहुंच गई है। किन्तु १८७३ साल को इकाई मानने वाले एक बातको ओझल कर जाते हैं कि पिछले युद्धमें रुपएका चार सेर तक गेहूँ मिला था और इस लड़ाईमें रुपएका तीन सेर मिल रहा है। उत्पादनमें २० से ३० प्रतिशत वृद्धि हुई है जब कि मूल्योंमें २१८ प्रतिशत तक वृद्धि हुई है।

फुलाव या फुगाव क्या है ?

युद्ध-रत राष्ट्रका उद्देश्य लड़ाईमें येनकेन प्रकारेण विजय पाना होता है। इसीके अनुसार राष्ट्रकी अर्थ-नीति बदल जाती है, और उसको शान्तिके आधार से बदल करके लड़ाईके आधार पर लाया जाता है। उत्पादन बढ़ाया जाता है और उत्पन्न मालकी मात्रा बढ़ाई जाती है, मजदूरोंको आय अधिक होने लगती है, फलतः साधारण समयकी अपेक्षा माल और सर्विसोंकी मांग अधिक बढ़ती है।

राज्यको युद्ध-व्यय पूरा करना होता है। युद्ध-राजस्वका यह आधारभूत प्रश्न है कि लड़ाईका व्यय पूरा करनेका सर्वोत्तम मार्ग क्या है ? जनताकी देश भक्तिकी भावनाको अपील कर या जनताको वाध्य कर सरकार प्रयत्न करके उन स्रोतोंको ले लेती है, जिनका दूसरी दशामें वह उपभोग न करती। नागरिक जनताकी उपभोगकी वस्तुओंको युद्ध-उद्देश्यकी पूर्तिमें लगाना युद्ध-व्ययको पूरा करनेका सर्वोत्तम मार्ग है। इसलिए सरकार जनताके उपभोग पर पाबन्दी लगाने में विशेषरूपसे दिलचस्पी रखती है। नागरिक जिन वस्तुओंके बिना काम चला सकते हैं, या जिनको लड़ाईके लिए छोड़ सकते हैं, वे सब युद्ध-प्रयत्नमें सहायक होती हैं।

आधुनिक समाजमें यह परिवर्तन वस्तु-विनिमय द्वारा नहीं अपितु मुद्रा द्वारा होता है। राज्य तीन प्रकारसे रुपया लेता है— करों द्वारा, जनताकी वास्तविक बचतको उधार लेकर, और फुलाव (इन-फ्लेशन) द्वारा। पहली दो चीजें आपत्तिजनक नहीं हैं। परन्तु कर एक सीमाके अनन्तर नहीं लगाया जा सकता। जनता पर इसका बुरा प्रभाव होता है। कर इतनी ही मात्रा तक लगाया जा सकता है, जितना जनताकी देनेकी शक्ति है और जितना वह प्रसन्नता व स्वेच्छासे दे सकती है, या जितना भार वह सहन कर सकती है। इससे बाहर कर लगानेका परिणाम विपरीत होगा। युद्ध लम्बा होनेके साथ व्यय बढ़ता जाता है। करोंकी आयसे वह पूरा नहीं हो सकता। राष्ट्र ऋण लेता है। नागरिकोंने अपनी जो आय सञ्चित रक्खी होती है उसको राष्ट्र ऋण में ले लेता है। किन्तु इन दोनों उपायोंके समाप्त हो जानेके अनन्तर भी सरकारके पास एक उपाय शेष रह जाता है। सरकारकी आय और वास्तविक व्ययके बीचके अन्तरको पूरा करनेके लिए सरकार नई मुद्रा उत्पन्न करनेको वाध्य होती है।

सरकार जब इस प्रकार युद्ध-व्ययको पूरा करने के लिए मुद्राका प्रसार करती है, तब उसको अर्थ-शास्त्री 'फुलाव' या 'फुगाव' या इनफ्लेशन कहते हैं। लड़ाईके दिनोंमें युद्धसामग्री, गोलाबारूद, सेनाके वस्त्रों, खाद्यपदार्थों आदिकी मांग अत्यधिक बढ़ जाती है। इस मांगको साधारण उत्पन्न और बड़ी उत्पन्न मात्रासे पूरा करनेका यत्न किया जाता है। किन्तु पूर्ति सीमित रहती है। जहाजोंकी कमीके कारण कुछ चीजें प्राग् युद्ध-कालकी दर पर नहीं दी जा सकतीं। फलतः राशनिंग किया जाता है। नाग-रिकोंके लिए आटा दालकी मात्रा निश्चित कर दी जाती है। जब राज्य नये सिक्के ढालता या छापता है, और अपनी खरीदका मूल्य इस नये धनसे चुकाता है, तब नये सिक्के ढालने या नोट छापनेसे पहलेकी अपेक्षा बाजारमें जितनी मुद्राका चलन था उससे अब चलनमें मुद्राकी मात्रा बढ़ जाती है। यह प्रसृत मुद्रा जब जनताके हाथमें पहुँचती है तब सीमित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल और सर्विसों पर और अधिक दबाव बढ़ता है और भाव और अधिक ऊंचे चढ़ जाते हैं। अतः हम 'फुलाव' की परिभाषा इस प्रकार कर सकते हैं—

मुद्राके अनुचित प्रसारके फलस्वरूप जब कि उसी अनुपातमें समाजके पास उपभोगके लिए माल और सर्विसें नहीं बढ़तीं, कीमतोंकी आम सतह असाधारण रीतिसे ऊपर चढ़ सकती है। उस समय समझना चाहिए कि 'फुलाव' या इन्फ्लेशन मौजूद है। डा० गोल्डन वेजरने इसको इस रीतिसे स्पष्ट किया है— फुलाव उस समय उत्पन्न होता है जब कि प्राप्त पूर्ति—सप्लाई—की अपेक्षा उपभोगके माल और सर्विसोंके लिए मुद्राकी मात्रा सक्रिय रूपसे तेजीसे बोलने लगती है और जब कि राष्ट्रकी आमदनी मुद्रा इकाइयोंमें भौतिक इकाइयोंमें उत्पन्न की अपेक्षा अधिक बढ़ जाती है।

परन्तु युद्ध-कालमें भाव सदा 'फुलाव' के कारण नहीं चढ़ते। मुद्राका कोई दोष न होने पर भी कीमतें बढ़ जाती हैं। अनिश्चित और अस्थिर अवस्थाका लाभ उठा कर सटोरिये सट्टा करके भाव चढ़ा देते हैं, मुनाफेखोर व्यापारी माल न बेच कर और अधिक नफा पानेकी आशासे मालको रोके रखते हैं। यदि मांग और पूर्तिकी शक्तियोंको कायम करनेके लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय, तब भी कीमतें चढ़ जायेंगी। क्योंकि पूर्ति सीमित होती है और मांग निरन्तर युद्ध-कालमें बढ़ती जाती है। लड़ाईके प्रारम्भमें दाम जो चढ़ते हैं उसका कारण मुद्रा नहीं होती। परन्तु जब दाम चढ़ने लगते हैं, तो नौकरीपेशा लोग अधिक वेतन की मांग करते हैं। प्रायःकर के वे सफल होते हैं। गवर्नमेण्ट इस बात के लिए उत्सुक रहती है कि जनता कमसे कम चीजोंसे अपना जीवन निर्वाह कर ले और इस प्रकार वह जनताके उपभोगके स्रोतोंको एक एक करके अपने हाथमें लेनेके लिए नई मुद्रा छाप कर या ढालकर बाजारमें भेज देती है। क्रय-शक्तिकी इस वृद्धिसे दाम और अधिक चढ़ जाते हैं। इस प्रकार 'फुलाव' का दूषित चक्र चल पड़ता है। इसमें चढ़ता मूल्य ऊँची मुद्रा आयका अनुसरण करता है। जिससे कि मूल्य और ऊँचा चढ़ जाता है। यदि इन दो प्रवृत्तियोंको— मूल्यके चढ़ने और बढ़ी क्रय-शक्तिको बेरोकटोक छोड़ दिया जाय— तो एक उभाड़से और दूसरी गतिके कारण ये बराबर ऊँचे ही ऊँचे चढ़ते जाते हैं। पिछली लड़ाईके बाद जर्मनी में यही हुआ था। कागजी मार्कका मूल्य उसके स्वर्ण मूल्यके दस खरबका एक हिस्सा रह गया था; १९२४ में १००,००,००,००,०० कागजी मार्कके बदले नवीन एक रीश मार्क मिलता था।

उपर्युक्त परिभाषाको दृष्टिमें रख कर विचार करना चाहिए कि भारतमें फुलाव या फुलाव है या नहीं। सितम्बर १९३९ में लड़ाई आरम्भ हुई, मगर इसका असली प्रभाव जापान द्वारा युद्ध-घोषणा करने के बादसे विशेष रूपसे प्रतीत होने लगा। लड़ाई छिड़ने पर बाजारमें एक बार घबड़ाहट होने पर व्यापारियोंने चीजोंका भाव चढ़ा दिया। परन्तु यह वृद्धि टिकी नहीं रही। विदेशसे मालके बन्द हो जाने और देशमें युद्ध कार्यके लिए मालकी मांग बढ़नेसे अपरिहार्य रूपसे जो वृद्धि होनी थी, वह उस समय टिकी रही। और इससे आगे भी बाजार-भाव थोड़ा थोड़ा बढ़ता रहा। परन्तु १९४१ के अन्त भाग से बाजार-भाव तेजीसे चढ़ने लगा वह बराबर बढ़ता गया, और उसमें किसी प्रकारकी कमी नहीं आई। इसका कारण यही है कि कागजी चलनी नोटोंकी संख्या बढ़ने लगी और रुपएका मूल्य गिर गया। कागजी चलनी नोटोंमें हुई वृद्धि दर्शनीय है—

		चलनी नोटोंकी संख्या
अगस्त १९३९	....	१७९ करोड़ रु०
मार्च १९४०	....	२०८ करोड़ रु०
मार्च १९४१	....	२४१ "
जुलाई १९४१	....	२७७ "
मार्च १९४२	....	३०८ "
जुलाई १९४२	....	४५० "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ सितम्बर १९४२	५१४·१६ करोड़ रु०	
१३ नवम्बर १९४२	५३५	,,
दिसम्बर १९४२	५७०	,,
१५ जनवरी १९४३	५८६	,,
५ फरवरी १९४३	६०२	,,

कागजी मुद्रामें कितना विस्तार हुआ है यह उपर्युक्त अङ्कोंसे स्पष्ट है। २० फरवरी १९४२ से २६ फरवरी १९४३ के एक वर्षके अन्तरमें साढ़े तीन करोड़ रु० अधिकके चलनी नोट निकले हैं—

(अङ्क हजारोंमें)

	१९४२ २० फरवरी	१९४३ १९ फरवरी	१९४३ २६ फरवरी
नोट बैङ्कोंमें	१०४९४३	१२२४१४	११८७३०
नोट चलनमें चालू	३५०१९२६	६११७१९१	६१४३५६८
कुल योग	३६०६८६९	६२३९६०५	६२६२२९८

इस प्रकार एक वर्ष और एक सप्ताहके अन्दर नोटों की संख्या ३६५५४२९०००रु०की बढ़ गई। प्रश्न यह है क्या इनका बाजार पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा ? इस प्रसङ्गमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इस अर्से में उत्पादनमें वृद्धि केवल २० से ३० प्रतिशत हुई है। मुद्रा और उत्पादनके इस अन्तरको हम फिर क्या कहें ? क्या यह 'फुलाव' या 'फुगाव' नहीं है।

पीठ बल

चलनी नोट धड़ाधड़ छापे जा रहे हैं। प्रश्न यह है कि आज अकस्मात् रुपयोंकी वर्षा कैसे होने लगी ? इससे पहले क्यों नहीं होती थी ? इसके पीछे कोई नियम काम कर रहा है या नहीं ? इसका उत्तर एक मात्र यही है कि चलनी नोटोंकी वृद्धिके लिए पहले जो नियम थे उनको सरकारने शिथिल कर दिया है।

भारतमें रिजर्व बैङ्क चलनी नोट निकालता है। रिजर्व बैङ्क एक्टके अनुसार चलनी नोटोंके पीछे (१) स्वर्ण, (२) स्टर्लिङ्ग सिक्यूरिटीज, (३) रूपी सिक्यूरिटीज—भारत सरकारकी हुण्डियां, (४) चान्दी मिश्रित धातवीय रुपया और एक रुपएके कागजी नोट रक्खे जाते हैं। न्यूनतम स्वर्ण पृष्ठबल ४०करोड़ रु० नियत किया गया है। सम्पूर्ण पृष्ठबलका ४० प्रतिशत स्टर्लिङ्ग और सोनेका होना चाहिए। भारत सरकारके रूपी-सिक्यूरिटीज २५ प्रतिशत या ५० करोड़ रु० से— इनमेंसे जो कोई अधिक हो—बढ़ना नहीं चाहिए।

१० फरवरीको ६०४ करोड़ रु० के नोट निकले हुए थे। इनमेंसे ११ करोड़ रु० के रिजर्व बैंकके बैंकिंग डिपार्टमेंटके पास थे; ३४३ करोड़ रुपयेके नोट वस्तुतः चलनमें थे; और इनको ४४ करोड़ रु० के स्वर्ण, ३५५ करोड़ रु० की स्टर्लिङ्ग सिक्युरिटीज भारत सरकारके १८९ करोड़ रु० के ऋणपत्रों और १४ करोड़ रु० रौप्य मुद्राका पृष्ठबल प्राप्त था। स्टर्लिंग और स्वर्ण पूंजी मिलाकर कुल पूंजीका ६६ प्रतिशत है। किन्तु स्वर्णका मूल्य २१ रु० ३ आना १० पाईके हिसाब से लगाया गया है, जब कि आज उसका मूल्य ७० रु० तोला है। इसलिए स्वर्ण पीठ बलका वास्तविक मूल्य १३३ करोड़ रु० है, अतः स्वर्ण और स्टर्लिङ्ग पूंजी मिलकर कुल पूंजी का ८१ प्रतिशत है। स्वर्णका बढ़ा मूल्य होनेसे ९० करोड़ रु० का अधिक सोना है, यह बात स्मरण करने योग्य है, साथ ही यह भी ख्याल रखनेकी बात है कि स्टर्लिङ्गका मूल्य सदा यही नहीं बना रहेगा।

रूपी सिक्युरिटीज कुल पूंजीका ३१ प्रतिशत है, और फरवरी १९४१ के आर्डिनेन्सके अनुसार निश्चय किया गया है और २५ प्रतिशतकी सीमा दूर कर दी गई है। यदि स्वर्ण मूल्य-वृद्धिके कारण स्वर्ण ९० करोड़ रु० का अधिक है, अतः रूपी सिक्यु-रिटीज केवल ९९ करोड़ रु० के लिए पीठबल हैं, जोकि कुल का २५ प्रतिशत की जगह १६॥ प्रतिशत है। अगस्त १९३९ के बादसे नोटोंमें ४१४ करोड़ रु० या २३२ प्रतिशतकी वृद्धि हुई है। इस कालमें स्टर्लिङ्ग सिक्युरिटीजमें वृद्धि ५९ करोड़ से ३३५ करोड़ रु० की हुई है। भारत में चलनी नोट इसी स्टर्लिङ्गके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे निकाले गये हैं, जिनका मूल्य अनिश्चित और अस्थिर है।

वृद्धिका कारण

स्टर्लिंग सिक्युरिटीजमें वृद्धि होनेके निम्न कारण हैं—(१) भारतमें विदेशोंसे आयात होनेवाले माल की अपेक्षा भारतसे विदेशोंको माल अधिक निर्यात होता है; (२) ब्रिटिश राष्ट्र व उसके मित्रराष्ट्रोंके लिए भारत सरकार भारतमें युद्धोपयोगी वस्तुओंका क्रय करती है और (३) ब्रिटिश और अमरीकन सरकारकी ओरसे ब्रिटिश और अमरीकी सेनाके लिए भारतमें बड़े प्रमाणमें व्यय हो रहा है। इस व्यय का मूल्य विलायतमें स्टर्लिङ्ग हुण्डियोंके रूपमें भारत सरकारको मिलता है। इस प्रकार आई हुई स्टर्लिंग निधिमेंसे पहले सरकारने विलायतमें लिए गए स्टर्लिङ्ग-ऋणको वापस किया। मगर ब्रिटिश और अमरीकन सरकारका व्यय भारतमें चालू होनेके कारण भारत सरकारको विलायतमें मिलनेवाली स्टर्लिङ्ग हुण्डियोंका परिमाण निरन्तर बढ़ता जाता है। उसमेंसे ब्रिटिश सरकारकी सिक्युरिटीज क्रय करके उसके पृष्ठबल पर भारत सरकार यहां कागजी चलनी नोट निकाल रही है। ये नोट दे कर सरकार भारतमें मित्रराष्ट्रोंके लिए माल क्रय कर रही है। इस प्रकार चलनी नोटोंमें वृद्धि होने पर भी भारत में ब्रिटिश और अमरीकन सरकार द्वारा क्रय की जाने वाली मात्रा निश्चित है, उसकी एक मर्यादा है, परन्तु भारत सरकार अपने तात्कालिक रूपी सिक्युरिटीज दे कर उसके पीठबल पर जो चलनी नोट निकाल रही है, उस पर मानसिक मर्यादाके सिवाय और कोई बन्धन नहीं रहा है।

मूल्य क्यों बढ़ा है ?

सरकारी पक्ष और कुछ व्यवसायी नेताओंका मत है कि भारतमें मूल्योंके बढ़नेका कारण फुलाव या फुगाव नहीं है। वे यह भी कहते हैं कि अभी इस देशमें फुलाव या फुगावकी स्थिति नहीं आई है। रिजर्व बैंकके गवर्नर स्व० सर जेम्स टेलरका कहना था :— मूल्योंके बढ़नेका कारण मुद्रा-प्रसार नहीं है, बल्कि इन दोनोंका कारण ब्रिटिश गवर्नमेण्ट द्वारा भारतमें बड़ी मात्रामें की गई माल और सर्विसों की खरीद है, जिसके लिए कि वे हमें स्टर्लिंग देते हैं और जिसको हम फिर रुपयेमें बदल देते हैं। परन्तु इसके आगे ही चल कर वे अपनी बात काटते हुए कहते हैं—जब तक क्रय शक्तिमें हुई वृद्धिकी पूर्ति इसी परिमाणमें सब वस्तुओंकी वृद्धिसे नहीं होती देशके अन्दर चीजोंकी कीमतें अनिवार्य रूप से बढ़ेंगी। हम पूछना चाहते हैं क्या इसीको मुद्रा में कृत्रिम वृद्धि या 'इन्फ्लेशन' नहीं कहते ?

जो लोग कहते हैं कि मूल्योंमें वृद्धि मुद्राप्रसारके कारण नहीं बल्कि दुर्लभताके कारण है, उनका कहना है कि लड़ाई आरम्भ होनेके बादसे २५ दिसम्बर १९४२ तक चलनसार सिक्कोंका मूल्य ३ अरब ८८ करोड़ बढ़ गया। ६२ करोड़के तो केवल चांदीके सिक्के ढलकर बाजारमें पहुँच गए। कुल ४॥ अरबके सिक्के ढले। यह सारी राशि तो काम नहीं आ रही ? बैंकोंमें जमा रकम २। करोड़ बढ़ गई। १ करोड़ ३ लाखकी रकम रक्षा-विभाग के ऋणपत्रों द्वारा वापस ले ली। १९३९ की तुलनामें खजानेकी हुण्डियोंकी कीमत ६५ करोड़ अधिक है। इस तरह ४॥ अरबके जो नये सिक्के ढले थे उनमें से ४ अरब १० करोड़का हिसाब सरलतासे किया जा सकता है। केवल ४० करोड़के बच रहते हैं, जो तिजोरियोंमें या जमीनके अन्दर पहुँच गए होंगे या माल जायदाद खरीदनेमें लगे होंगे। परन्तु प्रश्न तो यह है कि इस अवधिके अन्दर उत्पादनमें कितनी वृद्धि हुई है ? मुद्रा और मालके बीचकी खाईका अधिकाधिक बढ़ना ही तो मुद्रामें कृत्रिम वृद्धिका सूचक है। ये लोग यह भी भूल जाते हैं कि संयुक्त राष्ट्र और ब्रिटेनमें खाद्य-पदार्थोंकी कीमतें २१ प्रतिशत बढ़ी है और भारतमें २०० से २१५ प्रतिशत बढ़ी है।

इस अवधिमें बैंकोंमें जमा रकमकी मात्रा बढ़ी है, मगर उसका उपयोग नहीं हुआ है और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेकार पड़ी है। यदि वह उत्पादनमें लगती तो यह अवस्था नहीं आती। बैंकोंके चालू खातेमें जहाँ रकम १६३६-४० में १४० करोड़ रु० थी, वहाँ नवम्बर १६४२ में वह बढ़कर ३३३ करोड़ हो गई। मगर इस अवधिमें स्थिर खातेमें रकम लगभग १०५ करोड़ रु० ही रही। रिजर्वबैंकका देय १० से १७.५ प्रतिशत बढ़ गया। मुद्रा बेकार थी यह क्लियरिङ्ग हाउसकी रिपोर्टसे भी स्पष्ट है। १६३६-४० में जहाँ २३०८ करोड़ रु० का हुआ था वहाँ १६४२ में वह घटकर १६३५ करोड़ रु० का ही रह गया। बैंकोंमें जमा इस रकमके मूल्योंकी सतह पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। इससे क्या इन्कार किया जा सकता है? दूसरे बैंकोंमें जमा रकमसे चलनकी राशिका अनुमान करना गलत है। क्योंकि भारतमें बैंकोंमें रुपया जमा करनेवालोंकी संख्या ५ प्रतिशतसे अधिक नहीं है।

मुद्राप्रसारके साथ किस प्रकार मूल्य बढ़े हैं यह निम्न तालिकासे स्पष्ट हो जायगा:—

	अक्टूबर १६३६ रु.आ.पा.	अक्टूबर १६४० रु.आ.पा.	अक्टूबर १६४१ रु.आ.पा.	अक्टूबर १६४२ रु.आ.पा.
गेहूं	२-६-६	३-२-३	४-३-२	५-१-०
चावल	५-२-०	५-०-०	७-०-०	१०-६-०
खाण्ड	१०-१४-०	६-५-०	६-१०-६	१२-३-६
मूंगफली	३--२-०	२४-४-०	२२-४-०	४६-१५-०
मूँ०कीखली	२-५-०	१-८-०	१-८-०	२-८-०
कपास भड़ौंच	१८६-०-०	१६७-०-०	२३२-०-०	१८८-०-०
लट्ठा	०-६-५	०-६-५	१-२-१०	१-१०-६
जूट(फ़िस्टरु)	५०-८-०	३३-०-०	६२-०-०	५५-०-०
किरासीन वि०	५-१०-६	६-६-६	६-१४-६	६-१३-०
खाल बकरी	१३५-०-०	६५-०-०	१३०-०-०	१२०-०-०
चलनी नोट (करोड़ोंमें)	२१०	२२६	२६३	५११

इससे स्पष्ट है कि कीमतोंमें वृद्धि लड़ाईके कारण उत्पन्न अस्थिरता और तज्जन्य मनोवैज्ञानिक अवस्था के कारण नहीं हुई है, यह अक्तूबर १६३६ और अक्तूबर १६४० के भावोंका मिलान करनेसे स्पष्ट हो जाता है।

क्या सरकार उत्तरदायी नहीं?

अर्थ सदस्य सर जेरमी रैजमैनका कहना है कि मुद्राका अत्यधिक विस्तार और कीमतोंका बढ़ना इन दोनों बातोंकी सह-स्थिति फुलाव या इन्फ्लेशन को सिद्ध नहीं करती। गवर्नमेण्ट इसके लिए दोषी है या नहीं इसकी एक मात्र कसौटी यह है कि उसने अपनी साखका मुद्रा-विस्तार करनेमें उपभोग किया है या नहीं। चूँकि भारत सरकारने रिजर्व बैंकसे कर्ज नहीं लिया है, या रिजर्व बैंकने 'एडहाक' सिक्युरिटीज (मियादी कर्ज) के विरुद्ध मुद्रा नहीं चलाई अतः सरकारकी नीति मुद्रा-फुलावकी नहीं है। मगर यह सचाई नहीं है। जैसे ईश्वरको पहुँचनेके अनेक मार्ग हैं, उसी प्रकार गवर्नमेंटके पास अपनी साख का उपभोग करनेके अनेक मार्ग हैं। अर्थ सदस्यने स्वतः अपने भाषणमें इसकी सामग्री दी है। अर्थ-सदस्यने बताया है कि स्टर्लिङ्ग प्रत्यावर्तनकी योजना जबसे आरम्भ हुई है; तबसे इस देशमें लगभग ४०० करोड़ रु० कर्ज द्वारा जमा किया गया है। इस आंकड़ेमें विविध रक्षा-ऋण, प्रत्यावर्त्तनका ऋण, प्रान्तीय ऋण आदि शामिल हैं। अर्थ सदस्यने कहा है कि इन कर्जोंसे जमा की गई रकमका किस किस तरह विनियोग किया गया यह बताना कठिन है। मगर एक बात स्पष्ट है कि पिछले दो सालका १०८ करोड़ रुपएका बजटका घाटा इसमेंसे पूरा किया गया। यह सारा धन जनताने नहीं दिया है, क्योंकि ४०० करोड़ रु० जमा ऋणमेंसे १६० करोड़ रु० रिजर्व बैंकने दिये हैं। भारतमें फुलाव या फुगावकी स्थिति है इसका यह एक निर्णयात्मक प्रमाण है। क्योंकि मुद्राका उचित विस्तार वही है जो कि मुद्राका व्यवहार करने वाले वर्गकी मांग पर किया जाता है। इसको ठीक ठीक बताने वाले ट्रेड बिल (हुण्डियां) हैं। क्योंकि ये माने हुए द्वार-अवरोधक हैं। मगर रिजर्व बैंकका बिल विभाग बराबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घट रहा है और चलनी कागजी मुद्राका विस्तार तेजीसे हो रहा है। इस लिए फुलावकी जिम्मेदारीसे सरकार मुक्त नहीं हो सकती।

दूषित चक्र

यह माना जा सकता है कि बजटको संतुलित करनेके लिए सरकारने चलनी कागजी मुद्राका विस्तार नहीं किया है। मगर मित्रराष्ट्रों और ब्रिटेन के लिए भारत सरकार द्वारा खरीदे गए मालका मूल्य चलनी कागजी मुद्राका विस्तार करके चुकाया गया है। वह ऐसे कल्पना कीजिए कि सरकारने इस सप्ताह करोड़ों रुपयेका माल खरीदा और उसका मूल्य नये चलनी नोट छाप कर चुकाया। इससे विद्यमान मालके स्टाकमें कमी उस सीमा तक हो जाती है, जिस सीमा तक कि खरीदे गए मालकी मात्रामें इस अवधिके अन्दर और उत्पादन नहीं बढ़ता। खरीदे मालकी जितने अंशोंमें नये उत्पन्न मालसे पूर्ति नहीं होती, उतनी मात्रामें दुर्लभता बढ़ जाती है। इस दुर्लभताके कारण पहलेसे कीमत और चढ़ जाती है। क्योंकि दुर्लभ वस्तुओंका विनिमय जनताके हाथमें अधिक मात्रामें आई चलनी कागजी मुद्रासे होता है। फलतः चीजों के दाम और बढ़ जाते हैं। अगले सप्ताह जब गवर्नमेण्ट पुनः बाजारमें वही माल खरीदने जाती है, तो वह कीमतें चढ़ी पाती है और उसी मात्राके माल के लिए और अधिक मात्रामें नोट छापनेके लिए बाध्य होती है। यह प्रक्रिया इस प्रकार बार-बार दुहराई जाती है। अन्तर बढ़ता जाता है, मालकी दुर्लभता निरन्तर बढ़ती जाती है और मालकी घटी राशिके विरुद्ध चलनमें मुद्राका विस्तार बढ़ता जाता है, फलतः कीमतोंकी सतह ऊँची होती जाती है। यह दूषित चक्र है! फुलाव राजस्वसे (इन्फ्लेशनरी फाइनान्स) से दुर्लभता आती है, दुर्लभता से कीमतें चढ़ती हैं, ऊंची कीमतें होनेसे मुद्राप्रसार की और आवश्यकता होती है। इसलिए इस दूषित चक्रकी हरेक कुण्डली पहलेसे और अधिक ऊँची होती है। इसलिए ऊँची कीमतोंके कारणोंमें फुलाव और दुर्लभतामें भेद करना ठीक नहीं है, जैसा कि नियन्त्रण विरोधी कुछ व्यवसाइयों और सरकारने किया है। क्योंकि ये तीनों चीजें एक साथ कार्य-कारण हैं, वे एक चक्र बनाती हैं और इसकी प्रेरक शक्ति समय २ पर अधिकाधिक चलनी कागजी मुद्रा का छापना है।

प्रतिकार

उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि आजकी कागजी समृद्धि भ्रमात्मक और कृत्रिम है। मगर प्रश्न तो यह है कि इसका प्रतिकार कैसे किया जाय? पहली बात तो यह है कि भारत सरकार स्वतः मित्रराष्ट्रों और ब्रिटेनके लिए भारतके बाजारमें माल खरीदना बन्द कर दे। वे स्वतः इस देशमें माल खरीदें और खरीदे मालका मूल्य चुकानेके लिए इस देशमें कर्ज लें। भारत इससे पहले लन्दनमें यह करता रहा है। इससे चलनी कागजी नोटोंको छापनेकी सरकारको जरूरत न रहेगी। क्योंकि आज ब्रिटेन और अमरीका द्वारा भारतमें खरीदे मालका मूल्य व सैनिक-व्यय स्टर्लिङ्ग बिलोंमें चुकाते हैं, उसका रुपएमें रूपान्तर करनेके लिए सरकार नोट छापती है। यदि वे इस देशमें कर्ज लेकर मूल्य चुकायेंगे तो नोट छापनेकी इस मात्रामें जरूरत नहीं रहेगी। दूसरा लाभ इससे यह होगा कि युद्धजन्य लाभजनक उत्पादनके कारण लोगोंके हाथमें आया पैसा माल खरीदनेमें न लगकर सरकारी तिजोरीमें वापस चला जायगा। रिजर्व बैङ्क उनकी ओरसे कर्ज उभारेगा, अतः उसके पूरे होनेकी दुश्शङ्का नहीं करनी चाहिए।

अमरीका और ब्रिटेन भारतमें जो माल खरीदें उसका मूल्य स्वर्णमान परित्यक्त व घटस्फोट किये स्टर्लिङ्ग हुण्डियोंमें न दे कर स्वर्णमें या ऐसी मशीनरी या यन्त्रोंमें दें, जो कि भारतका उत्पादन बढ़ानेमें सहायक हो, सोनेमें मूल्य मिलनेसे लाभ यह होगा कि सोना न होनेसे जो लोग नाज जमा करने लगे हैं वे नाज जमा करना छोड़ देंगे और नाजकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमतें गिर जावेंगी। तीसरा उपाय यह है कि विभिन्न उद्योग धन्धोंमें शेयरों या अन्य तरहसे जो ब्रिटिश पूँजी लगी हुई है, उसके बदलेमें ब्रिटेन भारतसे माल खरीदे, जैसा कि उसने संयुक्त राष्ट्र अमरीकासे माल खरीदते समय किया है।

मगर ब्रिटेन इन तीनोंमेंसे एक भी बात मानता हुआ नहीं दीखता। यहाँ ऋण लेनेमें उसको सम्मान का प्रश्न बाधक होता है। अपने पास जमा सोना छोड़नेके लिए वह तैयार नहीं और मैशीनरी दे कर वह भारतको अपना प्रतिस्पर्द्धी नहीं बनाना चाहता। यदि ब्रिटिश पूंजीपतियोंका मालमत्ता भारतीयोंके हाथ दे दिया गया, तो ब्रिटिश पूँजीपतियोंके हाथसे प्राप्तिका एक भाग छिन जायगा और भारतीय विधानमें संरक्षणोंकी जरूरत नहीं रहेगी। फलतः स्वतन्त्र राष्ट्र चलन विषयक जिन सिद्धान्तोंका अनुसरण करते हैं और जो कि अन्तर्राष्ट्रिय कानूनों द्वारा विहित हैं, उनको भारतमें अपनाया नहीं जा सकता, क्योंकि भारत स्वाधीन नहीं है और यहाँ राष्ट्रिय सरकार नहीं है।

ब्रिटेन और अमरीकामें ऐसी आर्थिक नीतिका अवलम्बन किया गया है जिससे बाजार भाव यथाशक्ति नीचा रहे। स्टर्लिङ्गका अन्तर्गत भाव उभरे नहीं और जीवनकी आवश्यक चीजोंका भाव चढ़े नहीं इसके लिए ग्रेट ब्रिटेनमें (१) कागजी मुद्राकी रकम मर्यादित रक्खी गई है, (२) धनियोंकी क्रयशक्ति बढ़े नहीं इसलिए आमदनी पर इस मात्रामें कर लगाया गया है कि किसीके पास छः हजार पौण्ड वार्षिकसे अधिक आमदनी न रहे; (३) निम्न और मध्यम वर्ग युद्धके कारण बढ़ी आमदनीका खर्च न करे, बल्कि उसको युद्धोत्तर कालके लिए बचा के रक्खे इसके लिए सारे देशमें प्रचार किया जाता है। भारतमें भी ये उपाय बरते जा सकते हैं।

विजयादशमी

वीरावलीहृदयसारसजागराये
मार्त्तण्डभैरववपुर्जगति प्रसिद्धा।
सम्प्रेरयेदखिलराष्ट्रजनाऽवनाय
सम्पादनाय विजया दशमी जयस्य ॥

वीर पुरुषोंके हृदयरूपी कमलोंको जगानेके लिए प्रचण्ड सृष्टि-स्थितिप्रलयकारी मार्त्तण्डका रूप धारण करनेवाली, संसारमें अति प्रसिद्ध, यह विजयादशमी सम्पूर्ण राष्ट्र और राष्ट्रिय लोगोंके रक्षणके लिए तथा संसारमें विजय सम्पादनके लिए भलीभांति प्रेरणा करे।

—अ० वा० आचार्य

दीपावली

दीनाऽवनीयदयनीयदशादिशाना-
मालोचनाय कमनीयदृशं दिशन्ती।
श्रीपूजनाय निजराष्ट्रसमृद्धिवृद्ध्यै
दीपावली दिशतु शाश्वतिकं प्रकाशम् ॥

दरिद्री भिखारी लोगोंकी दयनीय परिस्थितिकी दिशाओंको विचार पूर्वक देखनेंके लिए, समुचित सुन्दर कामना पूर्ण करनेवाली दृष्टिको देनेवाली लक्ष्मीका पूजन करनेके लिए, अपने राष्ट्रकी समृद्धिकी वृद्धिके लिए यह दीपावली चिरस्थायी सनातन प्रकाशको देवे।

—अ० वा० आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक महर्घ समर्घ (तेजी मन्दी) विचार

[लेखक—दैवज्ञरत्न श्री पं० आनन्दस्वरूपजी ज्योतिषालङ्कार]

आज तक जितने अङ्कों में मैंने अपने विचार जनताके सामने रक्खे हैं अब की वार व्यापारिक वातावरण उससे बहुत कुछ विचित्र है। पहले जहाँ पर प्रत्येक मण्डीमें व्यापारी वर्ग बड़े बलके साथ व्यापारमें लगे हुए दिखाई देते थे और जहाँ पर वायदेके सौदे वाली मण्डियोंमें व्यापारियोंका मेला सा लगा रहता था, वहाँ आज सरकारी कण्ट्रोलके कारण मुर्दनीसी छाई हुई है। अपनी समझसे या व्यापारिक अनुभवके आधारपर कार्य करनेवाले आज ज्ञान शून्य हो कर पड़े हुए हैं। इसका कारण है प्रति तृतीय मास गवर्नमेंटकी वक्रदृष्टि। परन्तु इतनेपर भी ज्यौतिष विद्याके अनुभवसे ज्ञात हुआ है कि यह सारी उथल पुथल ग्रहयोगानुसार ही होती है। जिन वस्तुओंकी भरपूर तेजी चल रही थी और जिन वस्तुओंकी स्वप्नमें भी यह आशा न थी कि यह वस्तुएं आधुनिक समर समाप्त होनेसे पहले मन्दी हो जावेंगी, ग्रहगतिने यह कर दिखाया। यानी शनि मार्गी होने पर वे समस्त वस्तुएं मन्दी हो गईं। अतः यह अनुभव सिद्ध बात है कि आजकलके उत्कट समयमें ज्यौतिषका सहारा ले कर कार्य करनेवाले व्यक्ति अवश्य लाभ उठाएंगे। अब सूक्ष्म रूपसे अपने विचार पाठकोंके सम्मुख रखता हूं। आशा है इसका आश्रय ले कर पाठक गण अवश्य लाभ उठावेंगे।

लम्बा चान्स

यह चान्स ता० ८ अक्टूबर ४३ से प्रारम्भ हो कर ८ दिसम्बर ४३ तक रहेगा। इसमें इमली, ईख, बाजरा, बारदाना, बिनौला, कोयला, धान, सब धातुएं तेज रहेंगी और हैशियन विशेष तेज रहेगा।

इन्हीं दिनोंमें घटा बढ़ीके विशेष दिन नीचे लिखे अनुसार हैं। १० अक्तूबरको बन्द बाजारमें खरीद करें। १४ अक्तूबरकी प्रातः तक अधिक तेज रहेगा। फिर लिया हुआ माल बेच दें परन्तु फालतू न बेचें। फिर ६ नवम्बर सायंकालसे १० नवम्बर तक तेज रहेगा। फिर १० नवम्बर सायंकालसे १३ नवम्बर तक तेज रहेंगे। इसमें ६ नवम्बरको माल खरीद कर १३ नवम्बरको सेटिल कर दें। बीचमें यदि कोई मन्देका उछाला आवे तो घबरावें नहीं। वह फिर ठीक हो जायेगा। इसी समय १३ नवम्बरको माल फालतू बेच दें। २३ की शाम तक बाजारमें जोरदार मन्दा आवेगा। इस दिन अपना बिका हुआ सब माल खरीद लें और कुछ फालतू खरीद करें। फिर २७ से २६ तक बाजार एक दम तेजीकी तरफ चल पड़ेगा और शनैः शनैः तेज होता जावेगा। ५ दिसम्बरकी रात्रि तक बाजार अच्छा तेज रहेगा। फिर १२ दिसम्बर तक बाजार कुछ मन्दा रहेगा। १३ दिसम्बरकी शामसे बाजारमें फिर तेजी चल पड़ेगी और वह ३० दिसम्बरकी शाम तक निरन्तर चलती रहेगी। यह लाइन खरीदवालोंको विशेष लाभदायक रहेगी। इसमें यदि बीचमें कुछ मन्दा आ जावे तो घबरानेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि यह मन्दा क्षणिक होगा।

नोट—ऊपर जो तेजीके विशेष चांस लिखे हैं, यह ऊपर लिखी हुई चीजोंके लिए ही हैं।

नं० २ इनके रुपये घटा-बढ़ीके अबकी बार नहीं लगाये गये हैं, वह व्यापारीवर्ग यदि चाहें तो हमसे पत्र द्वारा पूछ सकते हैं।

नं० ३ इन्हीं दिनोंमें जो ऊपर लिखे हुए हैं, रंग और चांदी पर भी विशेष प्रभाव पड़ेगा और रंग पर विवश हो कर शायद सरकार कण्ट्रोल भी कर देगी। आगे भगवान् जाने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारिक तेजी मन्दी और ज्यौतिष

[लेखक—श्री प्रो० बी० सी० महता म्यूनिसपल कमिश्नर]

इसके पहले कि मैं अपने लेखको प्रारम्भ करूँ, सुज्ञ पाठकोंका ध्यान मेरे गत उस लेखकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जिसका प्रकाशन 'श्रीस्वाध्याय' के हेमन्ताङ्कमें ८२ वें पृष्ठमें हुआ था जो आजसे प्रायः १० मास पूर्व निकला था। पाठकोंको सम्भव है उस लेखकी कुछ अन्तिम पंक्तियाँ अब भी स्मरण होंगी, जिसमें मैंने २४ मार्चसे २४ सितम्बर १९४३ तकका समय व्यापारिक क्षेत्रमें अनहोनी घटा-बढ़ीका बतला कर सावधान रहनेका अनुरोध किया था। मुझे पूर्ण आशा है कि 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकोंने उस चेतावनीका ध्यान अवश्य रक्खा होगा और उक्त अवधिमें हुई रुई, चांदी, सोना, सूत आदिकी महान् उथल-पुथलके भयसे अपनेको अवश्य बचाया होगा।

अब २४ सितम्बर समाप्त प्राय है अतः मेरा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि मैं अपने नये लेखों द्वारा अपने स्नेही 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंकी कुछ और सेवा करूँ।

यह लेख पाठकोंके पास ८ अक्टूबरके लगभग पहुँचेगा, उक्त तारीख तक कई ऐसे योग बने हैं कि जिसके फलस्वरूप सरकारको कई वस्तुओंके व्यापार परसे कण्ट्रोल हटा देनेके लिए बाध्य होना पड़ेगा। कण्ट्रोलकारक योग विशेषकर राहु गुरुकी युति समाप्त हो चुकी है और बृहस्पति स्वतन्त्र हो कर सिंहराशिमें प्रवेश करेगा। सिंहराशिमें बृहस्पतिका प्रवेश अर्वाचीन अयनांश द्वारा ठीक ता० १० अक्टूबरको होता है। और मेरा ख्याल है कि इस तारीख तक रुई, चांदी, सोना, अलसी, सींगदाना, हरड़, सूत आदि कन्ट्राक्ट व्यापारसे सरकारी कन्ट्रोल हट जावेगा। हाँ, कुछ रस्ट्रीकेशन सरकार इन सट्टेके व्यापार पर अवश्य रक्खेगी। परन्तु जो सहस्रों मनुष्य सट्टा बन्द होनेसे निठल्ले (बेकार) हो गये हैं उनकी शिकायत मिट जावेगी।

इस लेखमें आगामी तीन मास अर्थात् अक्टूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर मासकी रुई, चांदी, सूत, सोना इन चार वस्तुओंकी तेजी-मन्दीका विवेचन भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिषके अनुभवी सिद्धान्तोंके आधार पर किया जाता है। जो व्यापारियोंके लिये विशेष लाभदायक व सहायताप्रद सिद्ध होगा, ऐसी आशा है।

ता० ८ अक्टूबरको बुध ग्रहका केन्द्र Square) योग शनिसे बनता है यह योग रुई और सूतकी मन्दीका द्योतक है, किन्तु चांदी सोने पर इसका प्रभाव विशेष दृष्टिगोचर नहीं होगा। १० अक्टूबरको शनि वक्री मिथुनराशिमें हो रहा है। यह राजनैतिक वातावरणमें जागृति उत्पन्न करेगा, शनिका मिथुनराशिमें वक्री होना कलकत्ता और बङ्गालके लिए हानिप्रद है, क्योंकि कलकत्तेके धनुर्लग्नसे यह पूर्णरूपसे प्रतियोग (Oppose) करेगा, जिससे इस ओर की स्थिति बड़ी सोचनीय हो जावेगी, इसका प्रभाव सोने चांदीमें अच्छी घटा-बढ़ी तथा रुई सूतमें तेजीका होगा। परन्तु रुई सूतकी तेजी ठहरेगी नहीं, क्योंकि ता० १२ अक्टूबरको शुक्र हरशलका फिर Squre योग बनता है। यह सब वस्तुओंमें मन्दी करेगा, इस दिन बुध भी सायन तुलाराशिमें प्रवेश करता है, ता० १३ को बुधका नेपचूनसे युति Con. करता है जो सूत और चांदीमें थोड़ी तेजीका द्योतक है।

इसके पश्चात् ता० १५ को और १८ को सूर्यका Trine त्रिकोण मङ्गलसे और सेक्स्टाईल बृहस्पतिसे होगा। ये दो दिन चांदी सोनेमें अच्छी मन्दीके द्योतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। यद्यपि सूतमें इन योगोंका उल्टा प्रभाव दिखाई देगा, चांदी सोनेकी यह कुछ समयके लिए अन्तिम मन्दी समझनी चाहिये, क्योंकि ता० २१ से बृहस्पतिका प्रवेश प्राचीन अयनांश द्वारा सिंहराशि निरयनमें हो रहा है तथा ता० २२ को बुध पे० शुक्र होगा और उसी दिन मङ्गल अपना नोड बदलेगा। यह सोना चांदी, सूत, कपड़ा रङ्ग आदि अन्य वस्तुओंमें तेजी का ट्रेन्ड उत्पन्न करता है, जिसका प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ता जावेगा। बीच-बीचमें यद्यपि मन्दीके रीएक्शन आवेंगे किन्तु ता० २६ से बाजार इकतरफा चलेगा। ता० ३ नवम्बरसे शुक्र भी अपना पात (नोड) बदलता है यह चांदी और सोनेमें अनहोनी तेजी उत्पन्न करता है, इसलिए ता० २ नवम्बरसे चांदी सोनेमें तेजीके व्यापार करनेवालोंको विशेष लाभ हो सकता है। इसका विशेष विवरण हमारे आफिस ब्यावरसे पत्र-व्यवहार द्वारा मिल सकता है। `नवम्बर मासमें आपके सामने जो पहली चीज होगी वह सोना चांदीकी अच्छी व जनरल ट्रेन्ड होगी। व्यापारियोंको अधिक सावधानीसे काम करना चाहिये, यह तेजी पहले जैसी नहीं होगी कि महीनों इकतरफ चले, इसकी समाप्ति अनायास ही हो सकती है।

६ नवम्बर को बुध पे० बृह० बना है यह सूतमें अच्छी तेजीका द्योतक है। ता० ८ को सूर्य बृह० का आपोजिशन हुआ है यह चांदी सोनेमें अच्छी घटा-बढ़ी और तेजीका द्योतक है। ता० १२ और १३ को शुक्र पेरेलल और Con. नेपच्यूनसे बना है। अतः रुई सूत कपड़ा आदिमें कहींसे भी तेजीके अच्छे कारण बनेंगे और तेजी आवेगी। इस सूतकी तेजीकी समाप्ति १५ को सायङ्काल तक वा १६ को दोपहर तक हो जावेगी तथा सूत रुईमें अनायास मन्दीके कारण उत्पन्न हो जावेंगे। ता० १७ को चांदीकी तेजीका कारण बना है। इस दिन शुक्र हरशल त्रिकोण तथा प्लूटोका सेक्स्टाईल बना है। जो मामूली तेजी करता है, यदि यहाँ सूत रुई चांदी सोनामें तेजी आ जावे तो डबल बेचना चाहिए, किन्तु तेजीका व्यापार नहीं करना चाहिये, क्योंकि ता० १९-२०-२१ और २३ ये दिन सब चीजोंकी मन्दीके द्योतक हैं। विशेषकर रुई सूत और चांदी आदिमें पर्याप्त मन्दी करनेकी सामर्थ्य रखते हैं।

ता० २४ से मन्दीका सब व्यापार बराबर कर तेजीमें पड़ जाना चाहिए, जो केंवल तीन दिन तक तेजी रहेगी। फिर २८-२९-३० सूतमें मन्दी, लेकिन चांदी सोनेमें तेजी होगी सो ध्यान रहे।

दिसम्बर महीनेमें बुध मकरराशिमें प्रवेश करता है। तथा बृहस्पति वक्री भी ता० १४ को होता है। शनि मंगल और हरशल पूर्णतया वक्री हैं ही। इस प्रकार इस महीनेमें चार बड़े ग्रह वक्री हुए हैं जो निश्चयात्मक रूपसे महान् भयङ्कर घटा-बढ़ीके द्योतक हैं। इस महीनेमें भी बहुत सावधानीसे व्यवसाय करना चाहिए। चार ग्रहोंका वक्री होना व्यापारिक व राजनैतिक क्षेत्रमें पर्याप्त उथल-पुथल मचानेवाले हैं। यह भारतकी स्थितिको बहुत अशान्त बना देंगे, प्राकृतिक प्रकोपसे भी भारतको कष्ट उठाना पड़ेगा। खाद्य-पदार्थोंका अभाव भारतके प्रत्येक कोनेमें दृष्टिगोचर होगा। चांदी सोनाका मूल्य विशेष बढ़ेगा। कपड़ा भी अप्राप्य सा होगा। कहीं ऐसा न हो कि खाद्य-पदार्थ जैसे कपड़ेके लिए भी भारतको कठिनाइयोंका सामना करना पड़े। प्रथम सप्ताहमें ता० ४ को छोड़कर सब दिन तेजीके हैं। ता० ६ और ७ सूत सोना चांदीमें विशेष अच्छी तेजीके द्योतक हैं।

ता० १० को बुध Squre नेपचून रुई सूतमें मन्दी करता है, जो तेजीवालोंकी बेचवालीसे आवेगी। इसके बाद ता० १४ से फिर वही तेजीका योग बनता है, अर्थात् बृहस्पति वक्री होता है और ता० १५ को सूर्यका शनिके साथ प्रतियोग Opposition होता है, ता० १५ को शनि भी पुनः लौटकर वृषराशिमें प्रवेश होता है सिंहराशिमें बृहस्पतिका वक्री होना सोना चांदी आदिमें और रुई सूतमें तेजीका द्योतक है। ता० २० तक बराबर इन चीजोंकी तेजीके ही योग बने हैं। फिर कुछ दिन बाजारमें विशेष घट-बढ़ दिखाई नहीं आवेगी। किन्तु ता० २६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक व्यापार बिमर्श (तेजी मन्दी)

[लेखक—श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञ]

[विद्वान् लेखकने बम्बईमें रह कर सट्टेके व्यापार पर ग्रहोंके प्रभावका विशेष अनुभव प्राप्त किया है; अतः इस लेखमें भी उन्होंने जो भाव या विचार लिखे हैं वे सट्टेके व्यापारसे विशेष सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु इस समय भारत सरकार या प्रान्तीय सरकारोंने कई वस्तुओंके सट्टेका व्यापार बन्द कर दिया है, इस कारण निम्न लेखके निर्दिष्ट भावोंमें कुछ साधारण अन्तर पड़ सकता है। प्रेमी पाठक इसका अनुभव करके स्वयं लाभ उठावें और विद्वान् ज्यौतिषीजीके परिश्रमको भी सफल करें। व्यापारियोंके लाभार्थ व सुगमतार्थ हमने लेखकका प्रत्येक शब्द वैसे ही रक्खा है उसका परिवर्तन करके शुद्ध हिन्दी शब्दका रूप नहीं दिया है। —सम्पादक]

सौर कार्तिक मासका ब्यौरा

(ता० १७ अक्तूबरसे १५ नवम्बर तक)

इस मासमें बुधका पूर्वमें अस्त होना, गुरुका सिंह राशिमें आना, शनिका वक्रगत चरण बदलना, कृष्णपक्षमें तिथि वृद्धि, शुक्लपक्षमें तिथिक्षय, मंगलका वक्री होना, सूर्यबुध युति आदि २ कई महत्त्वके संयोग हुए हैं, अतः प्रत्येक वस्तुके भावोंमें जोरदार घटबढ़ चलेगी। पहले-पहल मन्दीवाले हल्ला मचायेंगे, पीछे-पीछे तेजीवाले बम्बाट करें। इन्हीं हल्ले-गुल्लेमें रुई ५०) ६०), चांदी शींगदाणा ५) ७), सोना बिनौला २) २॥), अलसी गेहूँ १) २) टकेकी तादाद में रंग दिखावेंगे। घटनेमें कम व बढ़नेमें गुञ्जायश अधिक है व्यापार सावधानीसे करें।

अब हम 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी व्यापारीवर्गके लाभार्थ अर्धसाप्ताहिक और साप्ताहिक तेजी-मन्दी का विचार लिखते हैं। पाठक इसका अनुभव करें और लाभ उठावें।

ता० १७ अक्तूबर ६ बजे रातसे (३॥ दिनमें)

रुईमें १०) २०) सुवर्ण बिनौला ।)॥ ।॥=) शींगदाना एरण्डा चांदी ४) ५) अलसी, गेहूं ।−) ।≡) की तादादमें तेज हों, ऐसा योग है। खासकर रुई के लिए अच्छी तेजीके संयोग चालू हैं।

ता० २१ अक्टूबर ७ बजे प्रातः से (३॥ दिन में)

मार्केटमें अच्छी घटबढ़ चलते रुईके भावमें भली प्रकार तेजी पाई जाती हैं यह योग परीक्षित है! इस चान्सको अमलमें लानेके लिए ४-६ रोज पहले हीसे तैयारी कर लीजिये।

ता० २४ अक्तूबर ३ बजेसे (३॥ दिनमें)

यहां साधारण योग मन्दीके बनते हैं। पिछले उछालेमें माल बेचना या मन्दी लगाके घटे भाव नफासे सौदा सुलट लेना।

ता० २७ अक्तूबर १० बजे रातसे (३॥ दिनमें)

योगायोग घटबढ़ दोनों ओरके हुए हैं। रुई २०) ३०), सोना बिनौला १॥) २), चांदी एरण्डा ४) ५),

से पुनः बाजारमें थोड़ी मन्दी अवेगी। किसी प्रकार सरकारी कन्ट्रोल व अन्य प्रकारके रोलोंसे रुई सूतमें मन्दी आरम्भ होगी, किन्तु सोना चांदीमें विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। यहाँसे केवल एक दिन छोड़ अर्थात् २६ को छोड़ ३१ दिसम्बर तक उतनी ही मन्दी वापिस आ सकती है जितनी इसके पहले सप्ताहमें तेजी आई थी, सो पाठक सावधानीसे कार्य करें। लेख पर्याप्त बड़ा हो चुका है और स्थानाभाव-का ध्यान भी बना रहता है, इसलिए पाठकोंसे क्षमा चहाता हुआ अपनी लेखनीको यहाँ ही बन्द करता हूँ, आशा है यदि पाठक चाहेंगे तो फिर आगामी अङ्कमें विशेष रूपसे सेवा करूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलसी गेहूं १) ।॥) टकेकी तादादमें घटाबढ़ी होते फौरन ही मजबूती पकड़ेंगे।

३१ अक्तूबर ७ बजे प्रातः से (३॥ दिनमें)

रुई आदि वस्तुके लिए अच्छी तेजीके योग हैं। अधिक तेजीके संयोगोंमें थोड़े योग मन्दीके भी हो जाया करते हैं। अतः इस मौके आई हुई तेजीका उपयोग भली प्रकारसे करें। मतलबके आगे होने वाली ड्यूडेटका ख्याल रख किसी वस्तुकी तेजी लगा लीजिये और सुधरता सौदा सुलटाते जाइये।

ता० ४ नवम्बर २ बजे दिनसे (३॥ दिन में)

रुई आदि वस्तुकी महंगाईमें प्रत्याघाती मन्दी आवे। ऐसे मौके झटसे माल खरीद कर उपयोगी चांस का उपयोग करें।

ता० ६ नवम्बर ११ बजे रातसे (३॥ दिनमें)

प्रत्येक वस्तुके भावोंमें साधारणतया ढिलाई चलना प्रतीत होता है।

ता० १० नवम्बर ५ बजे प्रातः से (३॥ दिनमें)

भाव कितने ही ऊँचे नीचे हो कर पुनः रहेंगे पूर्ववत् लेबिल पर ही। रुई सोना चांदी अलसी गेहूं एरण्डा मूङ्गफली और बिनौलोंके भावमें काफी चढ़ाव उतार होगा।

ता० १३ नवम्बर १ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)

मारकेटमें घटाबढ़ी खूब चलेगी आंकड़े चौकस नहीं लिख सकते।

सौर मार्गशीर्ष मासका ब्यौरा

(ता० १६ नवम्बरसे १५ दिसम्बर तक)

इस मासमें पापी ग्रहोंका वक्र चलना, शुभ ग्रहों का शीघ्रगामी होना, राहुका नक्षत्र परिवर्तन, बुधका पश्चिममें उदय होना, शुक्लपक्षकी तिथिक्षय, गुरुवक्री, क्रूरवारकी संक्रांति और अमावस पूर्णमासी इत्यादि योगोंसे "सृष्टि संहार कारकम्" वाक्य घटित होना प्रतीत होता है, ऐसी स्थितिमें जगत्में प्रत्येक वस्तुके भावोंमें तहलका मच जाया करता है।

ता० १६ नवम्बरसे एक सप्ताह तक (७ दिनमें)

घटाबढ़ी अधिक हो, पहले तेजी बाद मन्दी।

ता० २३ नवम्बरसे एक सप्ताहमें—

साधारण घटाबढ़ी, अधिकतर प्रत्येक वस्तुके भाव टिके रहेंगे।

ता० २६ नवम्बरसे एक सप्ताहमें—

बाजारमें घटाबढ़ी चलते रुख तेजीका होगा। रुई २०) ३०), सोना बिनौला १॥) २), चांदी मूंगफली एरण्डा ३) ४), अलसी गेहूँ ।॥=) ।॥) घटबढ हो कर अन्तिम झुकाव तेजीकी ओर रहेगा।

ता० ६ दिसम्बरसे एक सप्ताहमें—

युद्धकी भयङ्कर खबरोंसे मारकेटका भाव अव्यवस्थित रहे। रुई और चान्दीके भावमें शिकस्त लगी है इनके साथ दूसरी वस्तुओंके भावमें भी घटबढ़ अवश्य होगी तेजीका तूफान आकर अन्तमें कुछ मन्दी दिखाई देगी। रुईमें २०) ३०), चान्दीमें ३) ४) और अलसी गेहूँमें ॥|) के लगभग तेजी हो सकती है।

ता० १३ दिसम्बरसे ३॥ दिनमें—

भाव टिके रहें या साधारण मन्दी आवे।

सौर पौषमासका ब्यौरा

(ता० १६ दिसम्बरसे १३ जनवरी तक)

इस मासमें कई महत्त्वके संयोग बने हैं, इन योगोंकी अधिकतम राय तेजीकी है और थोड़े अंशमें मन्दी। रुई ४०) ६०), सोना बिनौला ३) ४), चान्दी मूंगफली एरण्डा ८) १०), अलसी गेहूँ १॥) २) का उतार चढ़ाव लेते प्रथम मन्दी फिर तेजी, बाद मन्दी, पुनः तेजी क्रमसे मार्केटकी चाल रहेगी। प्रत्येक वस्तु के वायदेकी ड्यू डेटका ध्यान रख नजराणा लगा घटबढ़के चान्ससे सौदा सुधारते जावें।

ता० १६ दिसम्बरसे एक सप्ताहमें—

युद्धके भयङ्कर समाचारोंसे प्रत्येक वस्तुकी स्थिति डांवाडोल हो कर भाव तेजीकी ओर चलेंगे।

[शेष पृष्ठ ९२ पर देखिये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-प्रद कहानी

कुमार्गसे सुमार्ग

[लेखक—श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा कौशिक]

शामके ठीक छः बजे मिलमें छुट्टीकी सीटी हुई। सीटी होनेके पांच मिनट पश्चात् मिल-कर्मचारियोंकी भीड़की भीड़ निकलने लगी। तीन व्यक्ति, जो वेष-भूषासे साधारण मजदूर प्रतीत होते थे, परस्पर बातें करते हुए निकले। एक कह रहा था — सुनते हो भइया रामचरण! अब तो इस मिलकी नौकरीसे प्राण ऊब गये। अब तो भगवान् कहींसे छप्पर फाड़ के छप्पन-करोड़की चौथाई भेज दें तब तो जिन्दगी का मजा है।

जिसका नाम रामचरण था वह हँस कर बोला—हाँ सो भेजि हैं, आजै रातिका भेजि हैं। ऐसी ते एक सन्दूक लेत जायो।

तीसरा व्यक्ति—अरे, सन्दुकवा का होई ?

रामचरण—आज रातिका इनके घरमाँ रुपैवा बरसी कि नाहीं — सन्दुकिया न होई तो धरि हैं काहे माँ ?

तीसरा व्यक्ति—हाँ सो तो तुम ठीक कहत हौ। जागेसुर हो, सन्दुकवा लेत जायो !

जागेश्वर बोला—अरे पहले रुपया तो मिले, सन्दूक तो बहुत आ जायेंगे।

रामचरण—भयऊ, हमरे लोगनके करममाँ तो यह जेलखाना बदा है। सबेरे छः बजेसे धँधित है। शामका छः बजे छूटित है। रुपैवा मिलैका होत तो कौनो लखपती सारेके हियन जनम होत।

तीसरा व्यक्ति—अरे भइया, सो न कहो। मिलैका होत है तो हर सूरतसे मिलत है। हमरे काका रहे, ना! सो मँजूरी करके पेट जियावत रहे। तौन एक साल दिवारीमाँ जुआ खेले ना, भइया परमेसुरकै कुछ अस लीला भै कि तीन हजार रुपिया जीते। फिर का रहै, मालौ-माल होइगे।

रामचरण—उइ अबहीं जियत हैं ?

तीसरा व्यक्ति—हाँ जियत हैं। गांव माँ रहत हैं। दूकान किये हैं। देन-लेन करत हैं, बड़े मजेमां हैं। सो भइया भगवान्का देत देर नहीं लागत।

रामचरणने जागेसुरसे कहा—तब तो भइया, तुम हूं अबकी दिवारी जगाओ – देखो भगवान् का करत है।

जागेश्वर—भइया जुआ तो हम अभी तक कभी खेले नहीं। पारसाल मनमें आया था कि खेलें, सो हमारी घरवाली बहुत नाराज हुई।

रामचरण—वाह रे मरदवा, कहतौ सरम नाहीं लागत! मेहरारू डपट दिहिस तो जुआ नहीं खेलें!

इतना कह कर रामचरण खूब हँसा।

तीसरा व्यक्ति भी हँसते हुए बोला—काहे भइया जागेसुर, तुम सब काम मेहरारूते पूछके करत हो ?

जागेश्वर—सब काम तो क्या, हाँ कोई ऐसा वैसा काम होता है तो सलाह ले लेते हैं।

रामचरण—तब तो तुम्हार मेहरारू कौनो वकील वलिष्टर होई। काहे नाँ ? तू नहकै मरदके जामा माँ जनम लिहेऔ।

तीसरा व्यक्ति—हम बताई—सुनत हो जागेसुर! अबकी दिवारी माँ खेलौ, मेहरारूए न बताओ। जीत जायौ तौ सामने जायकै धरयौ। तब देख्यौ कैसे लुकायके धरत है।

जागेश्वर—धर चाहे ले, रुपया बड़ी चीज है, पर उसे जुएसे बड़ी चिढ़ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरण—जुआसे चिढ़ है हारै खातिर। जीतै खातिर कौनौका चिढ़ नहीं होत।

जागेश्वर—अच्छा ? जीत गया तब तो खैर, और जो हार गया तो ?

तीसरा व्यक्ति—तब का, तब कुछ न कह्यौ।

जागेश्वर—हारनेके लिए रुपये कहाँसे आवेंगे ? घरसे लेकर हारेंगे तो उसे पता लग जायगा।

तीसरा व्यक्ति--तू तो पूर मेहरारूके गुलाम हौ हो। तोहरे कीन्हे कुछौ न होई।

रामचरण—अच्छा सुनत हो ! हमरे एक महाजन हैं। उनके हियाँसे हम तोहका दस रुपयाकी किस्त कराय देब। मुदा मेहरारूसे न बतायौ, नहीं छुँड़ाय लेई। सुनत हौ ? उनहीं दस रुपयासे खेल्यौ।

जागेश्वर—जो हार गये तो अदा कहाँसे करेंगे ?

रामचरण—अरे तू तो महा पोंगा हौ बाम्हन हौ कि नाहीं। बाम्हन साठ बरस तक पोंगा रहत है, साठ बरस पीछे सठियाय जात है।

तीसरा व्यक्ति--हाँ बाम्हनका जनम पोंगेपन माँ बीतत है।

रामचरण—हाँ पूछत है कि अदा कैसे करब ! अरे दुइ रुपया महीना करके अदा कर दीन्हेउ। कौन मुसकिल बात है ? बीस रुपया महीना पावत हौ कि नाहीं ? तौन दोइ रुपया महीना देब कौन मुसकिल है ?

जागेश्वर—हमारे लिए तो दो रुपये महीना ही बहुत है।

रामचरण—अच्छा, तू इतना डिरात हो तो जाओ, जीतेउ तो दे दीन्हेउ नहीं न दीन्हेउ, तोहरे बदले हम दै देब।

तीसरा व्यक्ति—लेओ ! अब का चहत हौ ? अब की दिवारी पर खेलौ।

जागेश्वर—अच्छा देखा जायगा, अभी दिवाली के आठ दिन हैं।

रामचरण—अरे कहा मानौ ! परौं अतवार है, परौं हमारे साथ चलौ, तौ तोहका दश रुपया दिवाय देई।

जागेश्वर--परसोंकी परसों देखी जायगी।

तीसरा व्यक्ति—अबकी तौ हमहूँ खेलब, चाहे जौन होय।

रामचरण—तोहूं मेहरारूसे पूछिहौ का ?

तीसरा व्यक्ति—कौन ? हमार मेहरारू 'मेहरारू' है—हमार खसम नहीं होय। जादा टिर्र-पिर्र करै तो ले चैला जुट जाई और मारत-मारत हाड़-गोड़ तूर (तोड़) देई ! हम होई मरद, जनाना न होई !!

जागेश्वर बोला - तुम्हारी मेहरारू ही ऐसी है जो मार खाती है। हमारी मेहरारू तो कभी भी मारखानेका काम करती ही नहीं।

तीसरा व्यक्ति--अब औरका तुम्हरी खोपरी पर मूती ? जुआ का मना करत है कि नहीं ?

जागेश्वर—यह तो अच्छी बात है—कोई बुरी बात तो है नहीं। जुआ बुरी चीज है, इसी वास्ते मना करती है।

तीसरा व्यक्ति—अच्छा होय चाहै बुरा, हमार मेहरारू मना करै ना, तो परान ले लेई। हम चहै नीक करी चहै नकारा, वह छिनार कहैवाली कौन होत है ? मेहरारूका मेहरारूकी तना रहा चाही। मरदके मूँड़ पर चढ़ै वहौ कौनौ मेहरारू है ?

जागेश्वरने मनमें सोचा—एक यह है, जो स्त्री को कोई चीज ही नहीं समझते और एक हम हैं जो स्त्रीकी आज्ञा बिना कुछ नहीं कर सकते। हम दोनों में कौन अच्छा, यह या हम ?

उसी प्रकार ये तीनों एक चौराहे पर पहुंचे। उसी समय रामचरण बोला—अच्छा भइया, हमार रस्ता आयगा। अब तुम अपनी रस्ता जाओ, हम अपनी रस्ता। परौं हमरै साथ चलि हौ ना ?

जागेश्वर – हाँ, कल जवाब देंगे।

तीसरा व्यक्ति—मेहरारूसे सलाह करिहौ काहे ना ? अच्छा पाँय लागी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरण—पाँय-लागी !

जागेश्वर—आनन्द रहो ।

दोनों अपने अपने रास्ते पर चले गये। इधर जागेश्वर दीपावली पर जुआ खेल कर भाग्यकी परीक्षा करनेके प्रश्न पर विचार करता हुआ अपने घरकी ओर चला।

[२]

जागेश्वरप्रसाद गरीब ब्राह्मण है। एक कपड़ेके मिलमें बीस रुपये मासिक पर काम करता है। उसके परिवारमें केवल तीन प्राणी हैं। एक तो वह स्वयं, दूसरी उसकी पत्नी और तीसरी उसकी एक पञ्चवर्षीया कन्या। यद्यपि जागेश्वर निर्धन है तथापि वह अनेक ऐसे लोगोंकी अपेक्षा, जो धनी कहे जाते हैं, सुखी है। उसके सुखका मूलाधार उसकी लक्ष्मीरूपा पत्नी है। उसकी पत्नी एक विद्वान् ब्राह्मणकी कन्या है। जागेश्वरके श्वसुर बड़े विद्वान् तथा धर्मात्मा-ब्राह्मण हैं। इसी कारणसे जागेश्वरकी पत्नी सुशीला तथा पतिव्रता है। पढ़ी-लिखी भी है, हिन्दी भली-भांति लिख-पढ़ लेती है। जागेश्वरप्रसाद यद्यपि पढ़ा-लिखा अधिक नहीं है तथापि बड़ा सच्चरित्र है। वंश कुलीन होनेके कारण तथा प्राचीन मान-मर्यादा का सिक्का जमा रहनेके कारण जागेश्वरप्रसादको ऐसी अच्छी पत्नी मिल गयी। जागेश्वरके श्वसुर पण्डिताईका व्यवसाय करके अपने परिवारका पालन पोषण करते हैं, इस कारण उन्हें अपनी कन्याके लिए कोई धनी वर नहीं मिला। जागेश्वरप्रसाद न धनी है और न विद्वान्, परन्तु फिर भी उसकी पत्नी और उसकी ससुरालके लोग उससे परम सन्तुष्ट हैं।

अपनी पत्नीको अपनी अपेक्षा अधिक चतुर तथा बुद्धिमान् समझनेके कारण जागेश्वर बिना पत्नी के परामर्शके कोई काम नहीं करता। जिस कामके करनेके लिए उसकी पत्नी परामर्श नहीं देती उसे वह कदापि नहीं करता और जिस कामके लिए वह परामर्श देती है उसे अवश्य करता है। इसी कारण उसके इष्टमित्र उसे "जोरूका गुलाम" "जनाना" इत्यादि उपाधियोंसे अलंकृत किया करते हैं।

जागेश्वर रामचरणकी बातों पर विचार करता हुआ घर पहुँचा। घर पहुँच कर पहले वह नित्यक्रिया से निवृत्त हुआ, तत्पश्चात् भोजन करके अपनी चारपाई पर लेट कर विचारमें डूब गया।

जागेश्वरप्रसादकी पत्नी भी गृह-कार्यसे निवृत्त हो कर अपनी चारपाई पर आ गई। जागेश्वरकी कन्या कई बार पिताके पास आई और उसने अनेक प्रकार से पिताका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहा, परन्तु जब जागेश्वरने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया तो वह म्लानमुख हो कर अपनी माताके पास चली गई और उसके कानमें धीरेसे बोली— अम्माँ, आज पिताजीका जी अच्छा नहीं है।

माता भी पतिकी इस उन्मनस्कताको देख रही थी, कन्याकी बातसे उसका ध्यान इस ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुआ। उसने पतिसे पूछा – आज किस सोचमें पड़े हो ?

जागेश्वरप्रसादने चौंक कर कहा— नहीं, सोच तो कोई नहीं है।

पत्नी—कुछ तो अवश्य है। इतने गुम-सुम तो आप कभी बैठते नहीं थे।

जागेश्वरप्रसाद—बात और कुछ नहीं केवल यह है, कि मिलकी नौकरीसे जी ऊब गया। मिलकी नौकरी जेलखानेके बराबर है। यही सोच रहा था कि कोई दूसरी नौकरी मिल जाती तो अच्छा था, या फिर इतना रुपया मिल जाता जिससे कोई छोटा-मोटा रोजगार कर लेते।

पत्नी—हाँ, यह तो मैं भी सोचा करती हूँ। किसी महाजनके यहाँ नौकरी मिल जाय तो अच्छा है।

जागेश्वर—हाँ, कई लोगोंसे कह तो रक्खा है। पर, इन सबसे अच्छा तो यह है कि कहींसे थोड़ा रुपया मिल जाता तो स्वतंत्र हो जाते। पत्नी एक दीर्घ-निश्वास ले कर बोली—रुपया तो जब भगवान् ही दें तब मिल सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागेश्वर—भगवान् कोई ऐसे घर बैठे थोड़ा ही दे देते हैं। मनुष्यको उद्योग करना चाहिए। जब उद्योग ही न किया जायगा तो भगवान् कहांसे और कैसे दे देंगे ?

पत्नी—यह न कहो, भगवान्‌की इच्छा होती है तो हर तरहसे मिल जाता है।

जागेश्वर—कुछ बहाना तो होता ही है यह तो मानना ही पड़ेगा।

पत्नी—हाँ, बहाना क्यों नहीं होता।

जागेश्वर—हमारे साथ एक अहीर काम करता है उसके काका दिवाली पर जुआ खेले, उसमें उन्होंने कई हजार रुपए जीते। ऐसा ही बहाना हो जाता है। अब यदि वह जुआ न खेलते तो कैसे मिलता ?

पत्नी—जुएमें मिला तो कौन बड़ा अच्छा मिला। ऐसा धन किस कामका ?

जागेश्वर—यह कोई बात नहीं। ईश्वरकी देन है। किसीको किसी प्रकार देता है और किसीको किसी प्रकार !

पत्नी—हम तो जुएका पैसा कभी न लें। हमें पापका पैसा नहीं चाहिए।

जागेश्वर—इसमें पाप काहेका ?

पत्नी—क्यों ? पाप क्यों नहीं। दूसरोंका पैसा ही तो जीता जाता है ?

जागेश्वर—जीता जाता है, कोई छीन तो लाता नहीं !

पत्नी—जो हारता है उसकी आत्माको कष्ट तो होता ही है।

जागेश्वर—यह कोई बात नहीं। रोजगारमें हानि होती है तब क्या कष्ट नहीं होता ? हानि-लाभ तो हर व्यवसायमें लगा हुआ है।

पत्नी—व्यवसायकी बात दूसरी है। जुएको सब बुरा कहते हैं। जुएमें मनुष्यकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, नियत बिगड़ जाती है। जुआरी सदा यही सोचा करता है कि फलानेका धन मुझे मिल जाय।

जागेश्वर—यह तो उनकी दशा होती है जो पक्के जुआरी हैं, जिन्होंने जुआ खेलना अपना व्यवसाय बना रक्खा है। भाग्यकी परीक्षा के लिए कभी कभी खेलना बुरा नहीं होता।

पत्नी—बुरा काम बुरा ही है; चाहे सदा किया जाय और चाहे एक बेर किया जाय।

जागेश्वर—यही तो तुम समझती नहीं।

पत्नी—शास्त्र-पुराणोंमें जुएकी कितनी निन्दा लिखी है।

जागेश्वर—निन्दा चाहे जितनी लिखी हो पर खेलते सब थे। युधिष्ठिर जो धर्मराज कहलाते थे इतना खेले कि द्रोपदी तकको हार गये। राजा नल खेले और भी सभी राजे महाराजे खेलते रहे।

पत्नी—युधिष्ठिर खेले तो फल भी तो भोगा। उसीके पीछे महाभारत हुआ, सारा वंशक्षय हो गया और अबतक उनके नाम पर यह कलङ्क लगा चला जाता है। राजा नल खेले, उन्होंने भी दुःख उठाये।

जागेश्वर—दुःख उन्हीं लोगोंने उठाये जो पक्के जुआरी थे, कभी-कभी खेलनेवालोंने कभी दुःख नहीं उठाये।

पत्नी—यह कुछ नहीं। जुआ बड़ी बुरी चीज है, भले आदमीको उसके पास भी न फटकना चाहिए।

जागेश्वर चाहते थे, कि उनकी पत्नी कभी-कभी के खेलनेको बुरा न समझना स्वीकार कर ले, तो वह दीपावली पर अपने भाग्यकी परीक्षा करनेके निमित्त जुआ खेलनेका प्रस्ताव करें। परन्तु, जब उनकी पत्नी ने जुएका समर्थन किसी भी रूपमें न किया तब उनका यह साहस न हुआ कि वह उक्त प्रस्ताव करें। उनकी पत्नी बुद्धिमान् तो थी ही। उसने जो पतिके वार्त्तालाप तथा दीपावलीके आगमन इत्यादिका तारतम्य मिलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसे यह सन्देह हो गया कि पति महोदयकी इच्छा है कि दीपावली पर जुआ खेलें। अत एव यह समझ कर उसने कहा—चाहे जो हो, आप किसीके कहे सुनेमें आ कर दीपावली पर न खेलना। यदि आपने ऐसा किया तो मुझे बड़ा दुःख होगा। हमें सूखे चने मिलें वह गौ है; पर ऐसा निषिद्ध पैसा नहीं चाहिए।

जागेश्वर—नहीं, मैं भला क्या खेलूंगा? और खेलूंगा भी तो तुमसे कह दूँगा।

इस प्रकार जागेश्वरप्रसादने वार्त्तालापका अन्त किया।

(३)

परन्तु पत्नीके मना करने पर भी जागेश्वरका जी न माना। इसका कारण यह था कि वह मिलकी नौकरीसे इतना ऊब गया था कि वह उससे मुक्ति पानेके लिए अधीरसा हो रहा था। यह ऐसी स्थिति है जिस स्थितिमें पड़कर मनुष्य बहुधा वे काम कर बैठता है जिनको करनेसे साधारणतया उसकी आत्मा पीछे हटती है। इसके साथ ही उसके दो एक सहकारी उसे आवश्यकतासे अधिक प्रोत्साहन दे रहे थे।

इतवारके दिन रामचरण जागेश्वरके घर पहुंचा और उसे एकान्तमें बुलाकर बोला—काहे चलते हो? जागेश्वर—हाँ चलते हैं, चलो।

दोनों चले। रास्तेमें रामचरणने पूछा—काहे, महराजिनसे तो नहीं बतायो?

जागेश्वर—नहीं बताया। वह तो जुएके नामसे चिढ़ती है। कहती थी कि सूखे चने मिलें सो अच्छा है; पर जुएका पैसा अच्छा नहीं।

रामचरण—ओहका का जान परै। ऊकातो मजेमाँ घरमाँ बैठी रहत है ना? मिलवा सारेमें तूही धंधत हौ। तौहरे ऊपर जौन बीतत है वह तौहार महराजिन का जानैं? जागेश्वरप्रसादने मनमें सोचा—कहता तो ठीक है। मिलकी नौकरीसे हमें जो कष्ट होता है उसका अनुमान हमारी पत्नी नहीं लगा सकती; यही कारण है कि वह इतनी अधीर तथा व्याकुल नहीं है जितना कि मैं हूँ।

जागेश्वरप्रसाद बोले—हाँ, यह तो तुम ठीक कहते हो।

रामचरण—हम बेठीक तो कबहूँ कहतै नहीं हन। अबकी हमहूँ खेलब और तौहूँ खेलौ। अपन-अपन तकदीर अजमाओ। दाँव लागि गा तो मालौ-माल होइ जइबे-न भइया, मालो-माल?

जागेश्वर—पर यह एक खराबी है। यदि जीत गये तो रुपये घरमें क्या कहकर देंगे? यदि यह कहेंगे कि जुएमें जीते हैं तब तो ठीक न होगा।

रामचरण—तू तो महाराज बहुतै सीध हौ। जब रुपैया हाथ मां धरि हौ तब महराजिन चुप्पै धै लहैं। ऊ वखत न पूछि हैं कि कहाँसे लाये हो। ना भइया? रुपया ऐसिनै चीज है।

जागेश्वरने सोचा—यह भी ठीक है। जब सामने रुपये पहुँचेंगे तब कोई कुछ न पूछेगा।

इसी प्रकारकी बातें सोचता हुआ जागेश्वरप्रसाद रामचरणके साथ गया और दस रुपये किस्त पर ले आया।

दीपमालिका भाग्यचक्रकी भांति आ धमकी। जागेश्वर भी सब संकोच छोड़ कर दो रात तथा एक दिन बराबर जुआ खेला। पास दस ही रुपये थे। अत एव, पहले तो वह छोटे जुएमें अपने सहकारियों के साथ खेलता रहा। अन्तमें जब उसने दो सौके लगभग जीत लिए तब वह बड़े जुएमें पहुंचा। इसी प्रकार खेलते खेलते अन्तिम दिन जब वह उठा तब उसके पास ढाई हजारके लगभग रुपये बचे थे। जीत तो वह चार हजारके लगभग गया था परन्तु जुएके धर्मके अनुसार उसने खेलना न छोड़ा। अत-एव, डेढ़ सहस्रके लगभग पुनः हार गया।

रुपये ले कर जागेश्वर घरकी ओर चला। इस समय उसकी प्रसन्नताका पारावार न था। सोचता जाता था— बस अब मिलकी नौकरी छोड़ देंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आनन्दसे कोई व्यापार करेंगे। इसमेंसे कुछ थोड़ा रामचरणको भी दे देंगे। उसी बेचारेने तो हमें उकसा-उकसा कर खेलनेके लिए उद्यत किया। यदि इतना जोर न डालता तो हम न खेलते और न इतना रुपया मिलता। सच पूछो तो उसीकी बदौलत इतने रुपये मिले ऐसी दशामें उसे कुछ न देना कृतघ्नता होगी।

इसी प्रकारकी बातें सोचते-सोचते जागेश्वरप्रसाद घर पहुँचे और जाते ही बड़ी प्रसन्नता तथा अभिमान के साथ रुपये पत्नीके सामने रख दिए।

पत्नी पहले यह समझ नहीं सकी कि क्या मामला है।

उसने पूछा—ये रुपये कैसे हैं ?

जागेश्वर—हमारे हैं और कैसे हैं।

जागेश्वरने सोचा था, कि इतना सुनते ही उसकी पत्नी आनन्दसे फूल जायगी। परन्तु ऐसी कोई बात न हुई। उसकी पत्नीने उसी प्रकार गम्भीरतासे पुनः प्रश्न किया—कहाँ मिले ?

जागेश्वर—सच बताऊँ ?

पत्नी—हाँ, सच बताओ।

जागेश्वर—जुएमें जीते हैं।

पत्नीने विस्मित हो कर कहा-ऐं जुएमें ? आखिर आप न माने, जुआ खेले ही ?

जागेश्वर—न खेलता तो इतना रुपया कहांसे मिलता ? बस, अब कभी न खेलूंगा—भाग्यकी परीक्षा हो गयी।

पत्नीने शुष्कभावसे कहा—अच्छा जैसी आपकी इच्छा। आपने जीते हैं, आप ही इन्हें खर्च करना, मैं तो इसमेंकी एक कौड़ी भी न छुऊंगी।

पत्नीके ये वाक्य सुनकर जागेश्वरका सारा आनन्द लुप्त हो गया। म्लानमुखसे उसने कहा—क्यों, आखिर इनमें कौन ऐब है ?

पत्नी—यह पापका धन मुझे नहीं चाहिए। मुझे आपकी कमाईकी सूखी रोटी इससे कहीं अधिक प्यारी है।

जागेश्वरने मनमें सोचा—बड़ी मूर्खा तथा हठी स्त्री है।

यह पहला अवसर था कि जागेश्वरने अपनी पत्नीको मूर्खा तथा हठी समझा। उसने कुछ क्रोधमें आकर कहा—ऐसा धर्मात्मा बननेसे काम नहीं चलता। बड़े-बड़े लोग खेलते हैं—मैंने खेला तो कौन पाप किया ?

पत्नी—बड़े लोग करें, उनको समाई है। बड़े लोग पाप करते हैं तो पुण्य भी तो करते हैं ? एक-एक महाजन हजारों रुपये दान कर देता है। हम किस बिरते पर पाप करें ?

जागेश्वर—अच्छा खैर, इस वेर जो हुआ सो हुआ, अब आगे ऐसा न होगा।

पत्नी—हो चाहे न हो, पर मैं इस रुपयेको हाथ न लगाऊँगी।

जागेश्वर पत्नीकी यह प्रतिज्ञा सुनकर सन्नाटेमें आ गया। चुपचाप बैठा पत्नीका मुंह ताकता रहा। अन्तमें बोला—तो इसे क्या करूं ?

पत्नी—मैं क्या बताऊँ, जिस वास्ते लाए हो, वह करो !

जागेश्वर दुःखी हो कर बोला—लाया तुम्हारे वास्ते और किसके वास्ते लाऊँगा ?

पत्नी—मेरे वास्ते नहीं लाये। मैंने पहले ही कह दिया था कि मुझे ऐसा धन नहीं चाहिए।

जागेश्वर—मैंने समझा कि तुम यों ही कहती हो।

पत्नी—यह मेरा खोटा भाग्य है कि आपने अभी तक मेरा स्वभाव न जाना। मैं अपने जीको क्या करूं ? मुझे बाल्यकालसे ही इसी प्रकारकी शिक्षा मिली है। मुझे ये बातें कभी अच्छी लग ही नहीं सकतीं। मेरे पिता गरीब हैं, पर उन्होंने आज तक पापका पैसा नहीं कमाया। पूजा पाठ करके जो मिला सदा उसीमें सन्तोष किया। मुझे भी उन्होंने यही शिक्षा दी। इसीलिए मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगतीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये बातें पत्नीने कुछ इस भोलेपन तथा कपट-शून्यताके साथ कहीं कि जागेश्वरके हृदय पर इन बातोंका बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने लज्जासे शिर झुका कर कहा—खैर यह मेरी गलती हुई कि मैंने तुम्हारे भावको नहीं समझा। परन्तु, आखिर ये रुपये क्या हों?

पत्नी—मैं क्या बताऊँ। मिलकी नौकरीमें आपको कष्ट होता है, इस कारण यदि इन रुपयोंसे वह कष्ट दूर हो सके तो इन्हें काममें लाओ।

यह बात कहते-कहते जागेश्वरकी पत्नीके नेत्रों में आँसू भर आए।

जागेश्वरने विकल हो कर कहा—नहीं, नहीं मुझे कष्ट-वष्ट कुछ नहीं होता और जो थोड़ा बहुत कुछ होता भी है वह शामको तुम्हारा सुन्दर मुख देखनेसे दूर हो जाता है। अब ये रुपये तुम्हारे ही हैं—तुम इन्हें जो चाहो सो करो।

पत्नी—मैं क्या करूँ। मैं तो इन्हें हाथ भी नहीं लगाऊँगी।

जागेश्वर—अच्छा हो, जो बताओ सो करूँ—अब तो भूल हो ही गई। इस भूलका कोई प्रायश्चित्त है या नहीं?

पत्नी—यदि प्रायश्चित्त करना चाहते हो तो इसे किसी धर्मके काममें लगा दो।

जागेश्वरप्रसन्न हो कर बोले—अब एक समझकी बात तुमने कही है। कहो तो नगरके अनाथालयको दे दूँ?

पत्नी—हाँ, दे दो।

जागेश्वरप्रसादने चुपचाप रुपये उठाए और सीधे अनाथालयमें पहुँचे। अनाथालयके मैनेजरको रुपये दे कर उन्होंने सब वृत्तान्त कह दिया। मैनेजरको पहिले तो विश्वास न हुआ कि एक गरीब मनुष्य इतना बड़ा काम कर सकता है। अन्तमें जब उनको पूर्ण-रूपसे विश्वास करना पड़ा तब उन्होंने जागेश्वर की और उनकी पत्नीकी बड़ी प्रशंसा की। साथ ही मैनेजरने यह भी कहा कि आपको मिलकी नौकरीमें कष्ट होता है तो आप अनाथालयमें काम कीजिए। आपको हम अभी ४०) रु० मासिक देंगे। इसके पश्चात् जैसे-जैसे अनथालयकी दशा सुधरती जायगी वैसे-वैसे आपका वेतन भी बढ़ता जायगा।

जागेश्वरने इस बातको हर्षपूर्वक स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन स्थानीय समाचार-पत्रोंमें यह सारा समाचार निकला। कुछ लोगोंने जागेश्वरको मूर्ख समझा और कुछने बुद्धिमान्। उसके कुछ मित्र तो अब तक यह कहते हैं, कि जागेश्वरके बराबर पाजी संसारमें कोई नहीं। इतने रुपये हाथमें पाकर गवाँ दिये।

कुछ लोग उसकी प्रशंसा मुक्त कण्ठसे करते हैं। जुआरी लोग शिर हिलाकर गम्भीरता-पूर्वक कहते हैं—कुछ हो यह जुएका ही प्रताप है जो जागेश्वरको ऐसी अच्छी नौकरी मिली। न वह जुएमें इतने रुपये जीतता, न उसे ऐसी नौकरी मिलती, न उसका इतना नाम होता।

परन्तु, जागेश्वरका अन्तःकरण इस बातको स्वीकार करता है कि उसने जुआ खेलकर बड़ी भारी भूल की थी। ऐसे बुरे कामका इतना अच्छा परिणाम हुआ, यह केवल उसकी पत्नीकी सदिच्छा तथा धर्मबुद्धिका फल है।

[पृष्ठ ८४ के तेजी मन्दी का शेष]

ता० २२ दिसम्बरसे एक सप्ताहमें—

रुई २०) ३०), सुवर्ण बिनोला १।।) २), चान्दी एरण्डा मूंगफली ३) ४), अलसी गेहूँ ।-) ।≡) की संख्यामें चढ़ाव उतार होते समय पूरा होगा, यहाँ बाजारका झुकाव कुछ मन्दीकी ओर रहेगा अतः उछालेमें माल बेचते या मन्दी लगाते व्यापार करना ठीक है।

ता० २९ दिसम्बरसे एक सप्ताहमें—

युद्धके भयङ्कर समाचारोंसे बाजारमें अनवस्था, रुख तेजीकी ओर। आई हुई तेजीमें एक बार मन्दी का रियेक्शन आकर अन्तमें पुनः तेजी, रुई १५) २०) चान्दी २) २।।) के लगभग ऊपर नीचे अवश्य होगी।

ता० ४ जनवरीसे एक सप्ताहमें—

यहां टेम्परेरी मन्दी मानते तेजीका तमञ्चा छूटने वाला है सौदा खरीदीका करें भाव मिल जाएँगे। अगले सप्ताहमें अच्छी तेजी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रान्त पथिक

[लेखक—श्री पं० गौतम जी शर्मा शास्त्री]

ओ भ्रान्त पथिक किस धुनमें तू, क्या सोच रहा करना क्या है ?

[१]

जिस पथमें तूने चलनेका, दुस्साहस है मनमें ठाना।
उसमें तो तेरे पद-पदमें, हैं विघ्न बाधनाएँ नाना ॥
उस पथ पर चल दुर्लभ तुझको, वह ध्येय जन्म-भरमें पाना।
कुछ समय पूर्व था तूने जिसको, सुगम कार्य मनमें माना ॥
सोच लिया था धरा धामको, पदाक्रान्त बलसे करना।
था मानो यह भीषण नदको, जीर्णतर तरिसे तरना ॥
अब आँख उठाकर देख तनिक, तू जीना या मरना क्या है ?
ओ भ्रान्त पथिक किस धुनमें तू, क्या सोच रहा करना क्या है ?

[२]

इस लीलाधरकी लीलाको, क्यों उथल पुथल करने जाता।
निज उद्धतताका इतिहासमें, क्यों चित्रण भरने जाता ॥
जलती ज्वालमें बन पतङ्ग, क्यों जीवन-धन हरने जाता।
मृगतृष्णा ले मरुभूमिमें, क्यों नर-कुरङ्ग मरने जाता ॥
क्या इस अनन्त संसृतिमें, कोई आ कर है रहने पाता।
विश्वनियन्ताके नियमोंमें, कोई हस्तक्षेप करने पाता ॥
रे मूढ़, न जान सका कुछ भी, इस जीवनमें करना क्या है ?
ओ भ्रान्त पथिक किस धुनमें तू, क्या सोच रहा करना क्या है ?

[३]

क्या ईश्वरकी इस सृष्टिमें सब जीवन जीवन सम रखता।
उसके धन प्राण हरण कर तू, फिर क्यों जीवन अपना रखता ॥
आतममग्न हो सोच तनिक, क्यों मनमानी डींगें भरता।
दुष्कर्मोंका फल भी बुरा है, क्यों बात न यह जीमें धरता ॥
अब समदर्शी बन छोड़ दुराग्रह, नर क्यों हिंसावादी बनता।
उभय लोक सध जाएँ तेरे, यश गावेगी सारी जनता ॥
इस जीवनका है चरम-लक्ष्य, क्या सोच कि अब करना क्या है ?
ओ भ्रान्त पथिक किस धुनमें तू, क्या सोच रहा करना क्या है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अनुभूत प्रयोग

[लेखक—कविराज श्री विद्याधरजी विद्यालङ्कार आयुर्वेदशास्त्री भिषगाचार्य]

(१) गूंगापन या हकलापन—

हल्दी, बच, काश्मीरी कुठ, पिप्पली, सोंठ, काला जीरा, अजवायन, मुलट्ठी, और सेंधा नमक। इन सबको एक एक तोला ले कर कूट पीस छान कर रक्खें। छोटे बालकको २-३ रत्ती और युवकको एक माशा मात्रा कोसे घीसे दिनमें दो बार चटावें। इसका नाम "कल्याणावलेह" है। इसे धैर्य पूर्वक निरन्तर प्रयोग करानेसे गूंगापन हकलापन आदि जीभ और तँदुएके रोग निश्चय ही दूर हो जाते हैं। हमने इसको जिन-जिन रोगियों पर बरता है उनको सदा ही इससे लाभ हुआ है। यदि इसके साथ प्रातःकाल स्वर्ण-भस्म भी उचित मात्रामें मधुके साथ खिलाई जावे तो इसका गुण शीघ्र प्रकट होता है।

(२) गर्भस्राव पर अचूक योग—

जिस स्त्रीको तीसरे चौथे महीने गर्भस्राव हो जाता हो उसे ब्राह्मीका चूर्ण दो भाग, शुद्ध गेरु एक भाग, दोनोंकी जलसे मटरके दानेके तुल्य गोली बनाकर दो गोली नित्य ताज़े पानीके साथ निगल जानी चाहिए, अथवा ३ माशे सूखी ब्राह्मी या १ तोला ताज़ी ब्राह्मीको २-३ काली मिर्चें डालकर १ पाव पानीमें घोटकर पिलाना चाहिए। इससे निश्चित ही गर्भ-स्राव रुककर सन्तान पूर्णायु उत्पन्न होती है। यह योग हमारा अनेक बारका अनुभूत है।

(३) सब प्रकारका मलेरिया—

यदि मलेरिया ज्वर हो अथवा सब प्रकारका विषम-ज्वर हो तो प्रथम त्रिफला, सनाय आदिका मृदु विरेचन दे कर बादमें सुदर्शन चूर्ण गरम जल या शीतल जलसे खिलावें। इसके अतिरिक्त "मालती" (इस नामकी औषधि अमृत औषधालय पटियालासे मिलती है, जिसका रंग-रूप क्युनीन जैसा सफेद है परन्तु कड़वी नहीं है और न गर्म खुश्क है। इससे कानोंमें साँ-साँ और सिरमें चक्कर आदि कुनीनके समान कुछ भी उपद्रव नहीं होते। यह क्युनीनकी अपेक्षा बहुत सस्ती है) गर्म पानी या अर्क गाजबाँसे खानेसे सब प्रकारका मलेरिया नाश हो जाता है। इसे हम २०-२२ सालसे अनुभव कर रहे हैं।

(४) सूखी तर खाँसी और राजयक्ष्मा पर उत्कृष्ट औषधि—

छोटी कटेलीका पञ्चाङ्ग ५ सेर, ३२ सेर पानीमें डाल रात्रिको भिगो दें, प्रातःकाल १०० बड़ी हरड़ें एक पोटलीमें बांध कर इसे दोला-यन्त्रसे लटका देवें. और अग्नि पर पकावें। जब पकते-पकते जल ८ सेर शेष रह जावे तो उसे उतार कर दो बार भली प्रकार छान लें। फिर इसमें दो साल पुराना गुड़ ५ सेर डाल कर घोल लेवें फिर छन लेवें। फिर पोटलीमेंसे निकाली हुई हरड़ोंको धो कर इसमें डाल देवें और मन्द-मन्द अग्नि पर लोहेकी कड़ाहीमें पकावें, जब गाढ़ा होनेको आये तो उतार लेवें और शीतल होने पर सोंठ, मिर्च, पीपलका समभाग चूर्ण १ पाव और दालचीनी, तेजपात, अलसी, नागकेसर व छोटी इलायचीके बीजोंका समभाग चूर्ण ३ तोला ले कर डालें और शुद्ध शहद १ पावभर डालें। सबको एकत्र मिलाकर किसी चीनी या शीशेके बरतनमें रक्खें।

इसमेंसे १-१ माशा मात्रा दिनमें कई बार चाटे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्श (बवासीर)

[लेखक—कविराज श्री पं० दयानन्दजी शर्मा भिषगाचार्य धन्वन्तरि]

प्राणी चौरासी लाख योनियोंमें उत्पन्न हो कर सबके अनन्तर मनुष्य-योनि प्राप्त करता है। यही एक योनि है जिसमें प्राणी मोक्ष प्राप्त करनेका प्रयत्न कर सकता है। यदि इस योनिमें उत्पन्न हो कर कुछ भी साधन न कर सका तो उसका मनुष्य-योनिमें जन्म लेना व्यर्थ है। मोक्ष प्राप्तिके लिए स्वस्थ रहना अत्यावश्यक है, जो मनुष्य अस्वस्थ हैं वे ईश्वर भजन करनेमें असमर्थ हैं। आजकल भारतवर्षमें अर्शने अपना आधिपत्य स्थापित कर बहुत सारे लोगोंको पीड़ित कर रक्खा है। वे पीड़ित लोग दिन रात किसी कार्य करनेकी अपेक्षा चारपाई पर पड़े हुए त्राहि २ करते रहते हैं। यहां तक कि उन्हें अन्नपान करना कठिन मालूम पड़ता है, कुटुम्बी भी उन्हें मन ही मन कोसा करते हैं।

अर्श (बवासीर) ६ प्रकारका होता है—१ वातसे, २ पित्तसे, ३ कफसे, ४ रक्तसे, ५ सन्निपातसे (सब दोषोंके मेलसे), ६ जन्मसे।

सम्प्राप्ति तथा रूप

वातादि दोष, त्वचा, मांस, मेद तथा मांसाश्रित रक्तको दूषित कर गुदाकी शिराओंको फुला देते हैं; वे फूली हुई शिराएं मस्सों तुल्य दिखाई पड़ती हैं, उन्हें मस्से ही कहा जाता है। उन मस्सोंको अर्श या बवासीर कहते हैं।

कारण

किसी एक रसकी अधिकता, थोड़ा अथवा असमय भोजन करना, अति मदिरापान, अति मैथुन करना, अति शीत और अति उष्णताका सेवन करना, अति व्यायाम, शोकका करना, कठिन वस्तु पर बैठना, घोड़े आदिकी अधिक सवारी करना। अधिक समय तक अतिसार (दस्त) या कोष्ठबद्धता (कब्जीयत) रहना।

लक्षण

वातार्शः—

सूखे लाल और काले वर्णके, बीचमें कुछ मुड़े हुए टेढ़े, कदम्बके पुष्पके तुल्य सुई मुख वाले मस्से होते हैं। रोगी शूल सहित पतला मल (दस्त) का त्याग करता है। कमर पीठ नाभि आदिमें वायु जनित पीड़ा तथा वायुके रोग होते हैं। नख नेत्र दांत आदि काले पड़ जाते हैं।

पित्तार्शः—

नीले चमकदार और पीले वर्णके छोटे छोटे मस्से होते हैं। अर्थात् जलोकाके मुखके सदृश गीले और झरने वाले होते हैं; इसमें रोगी दाहयुक्त रक्त मिला मलका त्याग करता है और मूर्च्छादि पित्त-जनित उपद्रव होते हैं। नख नेत्र दांतादि पीले पड़ जाते हैं।

इससे सब प्रकारकी खाँसी, राजयक्ष्मा दूर हो जाते हैं। हम इसके द्वारा बहुतसे रोगियोंको लाभ पहुँचा चुके हैं।

(५) सूखे बच्चों पर—

गाजबाँ, गुले गाजबाँ, मुलट्ठी, मकोय, असौशाँ, प्रत्येक १-१ माशा और खतमी ३ माशा डाल कर २ छटांक पानीमें भिगो कर पकायें। आधी छटांक बचे तो छान कर मिश्री मिला कर दो बार प्रातः सायं पिलाओ, ३ मासमें बच्चा हृष्ट-पुष्ट हो जाएगा। इसके अतिरिक्त एक प्राचीन अप्रकाशित सुदुर्लभ संस्कृतके आयुर्वेदिक ग्रन्थका 'कुमार कल्याणसुधा' का हम प्रयोग करते हैं। जो सूखे बच्चोंको बहुत जल्दी स्वस्थ और मोटा ताजा कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कफार्शः—

श्वेत, मूलमें मोटे, स्थिर, गोल, चिकने धुंधले और मुनक्काके आकारके होते हैं। इसमें रोगी मांस धोवनके समान मल त्यागता है। शोथ, शीतज्वर आदि कफके उपद्रव होते हैं।

रक्तार्शः—

बड़की कोंपल अथवा मूंगेके रंगके समान लाल मस्से होते हैं। इसके लक्षण पित्तार्शके लक्षणसे मिलते हैं। जब रक्त अधिक निकल जाता है तो मूर्च्छादि उपद्रव हो जाते हैं।

सन्निपातार्शः—

इसमें सब दोषोंके लक्षण पाए जाते हैं।

साध्यासाध्यः—

गुदामें ३ वलियां होती हैं; यदि यह अर्श बाहर की वलीमें होवे तो साध्य, मध्यकी वलीकी कष्टसाध्य और अन्दरकी वलीकी असाध्य होती है।

सन्निपातकी यदि थोड़े लक्षणोंयुक्त होवे तो याप्य (चिकित्सा करते रहने पर शान्त रहे) और पूर्ण लक्षणों युक्त असाध्य होती है। एक वर्षसे अधिककी कष्टसाध्य और जन्मकी असाध्य होती है।

चिकित्साः—

अर्श शमनके चार उपाय हैं। १ औषध, २ क्षार, ३ अग्नि और ४ शस्त्र।

विस्तारके भयसे यहां औषध चिकित्साका ही वर्णन किया जाता है।

(१) नीमकी गिरी, बकायनकी गिरी, हरड़, प्रत्येक ५ तोले और हींग ३ तोले ले कर घीमें भून लेवें, फिर ५ तोले मुनक्का डाल कर झाड़ीके बेरके बराबर गोली बना लेवें। एक एक गोली प्रातः और सायं गौ दूधके साथ खावें। सब प्रकारकी अर्शको लाभ करता है।

(२) सौंठ ३ पल, कालीमिर्च एक पल, पीपल २ पल, चव्य १ पल, तालिशपत्र १ पल, नागकेशर आधा पल, पीपलामूल २ पल, तेजपात १ तोला, इलायची २ तो०, दालचीनी २ तो०, खस २ तो०, इन सब औषधियोंको महीन कर ३० पल गुड़में ६-६ माशेकी गोली बना लेवें। पित्तार्शमें चार गुणा चीनीमें ले कर उसकी चाशनीमें गोली बना लेवें। प्रातः सायं १-१ गोली गर्म दुग्धसे लेवें। यह सब प्रकारकी अर्शके लिए लाभप्रद है।

(३) अभयारिष्टः— हरड़ ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर, वायविडंग ४० तो०, महुवेके फूल ४० तोले इन सबको जौकुट कर ४०९६ तोले जलमें क्वाथ बनावें। जब जल कर चौथाई पानी रह जावे, तब ठंडा होने पर ५ सेर गुड़, गोखरू, निसोथ, धनिया, धायके फूल, इन्द्रायणकी जड़, चव्य, सौंफ, सौंठ, दन्तीमूल, मोचरस प्रत्येक ८-८ तोला डाल कर, मुख मुद्रा कर १ मास तक रहने देना चाहिए। पीछे छान कर १। तो० भोजनके पश्चात् जल मिला कर लेवें, यह अर्शको लाभ करता है। जब अर्शके साथ संग्रहणी, उदररोग, पाण्डु, हृद्रोग, प्लीहा, गुल्म, शोथ होता है, उस समय भी लाभ करता है। वृद्धावस्था तथा पुराने रोगोंमें भी लाभप्रद है।

(४) नागकेशर और मिश्री दोनोंको समान भाग ले कर ६ माशे प्रातः, ६ माशे सायं खानेसे रक्तार्शमें अद्भुत लाभ दिखाती है।

उपद्रव चिकित्सा

(१) आकाशबेल (अमरबेल) की टिकिया बना कर बांधनेसे दाह और चीसको लाभ करता है।

(२) गेंदेके पत्तियोंकी टिकिया दाह और तोद (चीस) को लाभ पहुँचाती है। और रक्तको बंद करती है।

(३) मस्सों पर कुचला घिस कर लेप करनेसे पीड़ामें लाभ करता है।

नोटः—नं० १ व २ मेंसे एक औषधि लेवें और अभयारिष्ट भोजनके अनन्तर दोनों समय लेनेसे कुछ दिनोंके अनन्तर अच्छा लाभ पहुंचाती है।

वर्जनीय (अपथ्य)

मल मूत्रादिके वेगोंको रोकना, स्त्री-सहवास, घोड़ा ऊंट हाथी साइकिल आदिकी सवारी करना, अनुचित तथा विकट भावसे बैठना, तथा अर्शवृद्धिकारक दोषयुक्त आहार अर्शके रोगीके लिए वर्जनीय हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्वेषणा

प्यारे पाठकों ! आप यह तो जानते ही हैं कि भूत-मात्र सुखाभिलाषी हैं। फिर यदि मनुष्य सुखकी इच्छा करे तो क्या आश्चर्य है? यह आश्चर्यका विषय नहीं, किन्तु उसका यह स्वभाव ही है। स्वभावको छोड़ कर वस्तुसत्ता प्रतीत ही नहीं हो सकती। वस्तु-सत्ता एक-मात्र स्वभावके ही आधीन है, यह सर्व-मान्य सिद्धान्त है, अस्तु।

उस सुखकी प्राप्ति तथा उसकी अन्तिम पराकाष्ठा पर्यन्त उन्नति करना ही मनुष्य मात्रका स्वभाव है। क्योंकि मनुष्य-योनि कर्मप्रधान योनि है। अनुकूल कर्म करने पर ही उन्नति हो सकती है। सुखप्राप्ति या उन्नतिका साधन तदनुकूल क्रिया ही है, यह बात ठीक है, किन्तु क्रियामें प्रवृत्ति होनेके लिए उसके इष्ट-साधनता ज्ञानकी आवश्यकता हुआ करती है। इष्ट साधनको ही उपाय कहते हैं। उपायका निर्णय प्रमाणके बिना नहीं हो सकता। फलमें व्यभिचार होनेसे उपाय अनुपाय हो जाता है। अतः प्रमाणित उपाय ही उपाय हो सकता है। कुल जाति देश तथा राष्ट्र आदिकी उन्नतिमें इतिहासका अध्ययन एक प्रमाणित उपाय कहा जा सकता है। कारण इतिहास के अध्ययन पर ही इनकी उन्नति निर्भर है। जिस राष्ट्र या कुल जाति देशका इतिहास जितना सुन्दर होता है वे उतने ही उन्नत कहलाते हैं। समष्टिकी उन्नति होनेसे व्यष्टि अवश्य उन्नत हो सकती है। व्यष्टिकी उन्नतिके लिए समष्टिकी उपेक्षा करना व्यष्टि की भी मृत्युसाधक बन जायगी। श्रीराष्ट्रालोकमें इस विषयमें कितना सुन्दर लिखा है—

स्वमङ्गल समाशंसी यः स्वराष्ट्रमुपेक्षते।
स बुभुक्षानिवृत्त्यर्थं विषमेवात्ति केवलम्॥

[जो पुरुष अपने मङ्गलकी कामनासे प्रेरित हो कर उसके साधनके लिए राष्ट्रके मङ्गलकी ओर ध्यान दिए बिना ही अपना मङ्गल सिद्ध करना चाहता है वह भूख शान्त करनेके लिए विष खा रहा है ऐसा समझना चाहिए। जिस प्रकार विष खानेसे बुभुक्षित पुरुषकी बुभुक्षा शान्तिके पहले ही मृत्यु हो जाती है उसी प्रकार राष्ट्रकी उपेक्षा व्यक्ति की उन्नतिके पहले ही उस व्यक्तिका विनाश कर देती है।]

अतः मनुष्यमात्रका स्वाभाविक प्रधान कर्तव्य है कि अपने इतिहासकी अन्वेषणा करे तथा उसका स्वाध्याय करे। भारतीय प्राचीन महर्षियोंने इतिहास के महत्त्वको जितना महत्त्वपूर्ण स्थान दिया था उतना आज भी यदि भारतीय उसे महत्त्व दें तथा उसका स्वाध्याय करें तो भारत पुनः अपनी पतित दशाको सुधार नहीं सकता ऐसा नहीं कहा जा सकता, अपितु यही कहना पड़ेगा कि भारतीय अपना पुनरुद्धार अपने इतिहासके स्वाध्यायसे ही कर सकते हैं। भारतीय ग्रन्थोंको देख कर यह विवश हो कर कहना पड़ता है कि भारतीयोंने इतिहासका महत्त्व जितना निश्चित किया था, उतना किसी भी देशान्तर ने इतिहासका महत्त्व नहीं जाना था। भारतीयोंने इतिहासको पाँचवाँ वेद कहा है; देखिये छान्दोग्योपनिषद् सनत्कुमार नारद संवाद। भारतीयोंने इतिहास के दैनिक स्वाध्यायको पञ्चमहायज्ञोंमें स्थान दिया है। प्रतिदिनके तर्पणमें भी इसको स्थान दिया है। व्रत उत्सव जयन्तियां तथा श्राद्धादि क्रियाएं भी इतिहास ज्ञानको जीवित रखनेका साधन है। इतिहास का अनध्ययन देश जाति कुल तथा राष्ट्रका विनाश कर देता है। महाभारतादि बड़े-बड़े ग्रन्थोंमें आपको इतिहासका महत्त्व सहस्रों वाक्योंसे मिल सकता है। वहाँ स्थान स्थान पर ऐसा वाक्य मिलेगा —

"हन्त ते कथयिष्यामि इतिहासं पुरातनम्।"

जिनको सुनते ही इतिहासके स्वाध्यायकी ओर स्वाभाविक उत्कण्ठा उत्पन्न हो जाती है। भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षमें किसी समय अठासी-सहस्र (८८०००) ऋषि केवल नेमिषारण्यमें सूतसे इतिहास तथा पुराणोंका श्रवण करते थे और आज उनके स्थानमें अठासी-सौ भी सारे भारतमें नहीं मिलेंगे, यह कितने दुःखकी बात है। जब हम भारतेतर देशवासियोंके "भारतीय तो इतिहासका महत्त्व ही नहीं जानते" ऐसे-ऐसे आक्षेपोंको सुनते हैं, तब हृदय विदीर्ण हो जाता है। परन्तु क्या किया जाय, परतन्त्र राष्ट्रको सब कुछ सहना पड़ता है, क्योंकि वह परतन्त्र है; उसका कोई संरक्षक ही नहीं। कारण वह स्वयं ही साहस हारे बैठा है। अपने आपके बिना संरक्षण दूसरा कौन कर सकता है? जो स्वयं अपने आपके लिए मरना मारना नहीं जानता या नहीं मरता मारता उसके लिए पराधीनता ही पारितोषिक है।

श्री राष्ट्रालोकमें इस विषय पर कितना सुन्दर लिखा है देखिये—

पारतन्त्र्यस्य निगडं दृढी कुर्वन्ति ते नराः।
ये राष्ट्रार्थं न जानन्ति मर्तुमात्मविरोधिनः॥

[अपने आपका वैर करनेवाले राष्ट्रके लिए जो मरना नहीं जानते वे पारतन्त्र्यकी बेड़ियोंको सुदृढ़ करते रहते हैं। वे पुरुष अज्ञानी हैं।]

"उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम्" इत्यादि वाक्योंसे श्री मद्भगवद्गीतामें स्वयं श्रीकृष्ण भगवान्ने यही बात कही है। आज जैसे कई विद्याओंका भारतसे लोप हो गया तथा हो रहा है वैसे हो इतिहासका भी हो गया और हुआ जा रहा है। यदि इसकी ओर सम्यक्तया ध्यान न दिया गया तो भारतके सुधरनेकी आशा करना वृथा है। "इतिहास" शब्दका अर्थ तो इतना ही है कि "ऐसा था" उसको बतानेवाले ग्रन्थों को इसीलिए इतिहास कहा जाता है। स्वतन्त्र भारत का इतिहास पढ़नेसे स्वतन्त्र होनेकी इच्छा होगी तथा परतन्त्रका इतिहास पढ़नेसे मन दुःखी होगा और शिर नीचा करना पड़ेगा, अतः अग्रिम भारतीय इतिहास परतन्त्रताका इतिहास न होने पावे, इसके लिए प्रयत्न करना प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है, अस्तु।

इतिहास यदि अप्रमाण होगा तो अत्यधिक हानि होगी, अतः इतिहासमें किसी भी बातको बिना प्रमाणके कांटेसे तौले नहीं लिखना चाहिए। इतिहास लेखक पर महान् प्रतिभूत्वका भार रहता है, इस बातको समझ कर ही इतिहास ग्रन्थोंका प्रणयन करना श्रेयस्कर हो सकता है। इतिहास लेखक ही इतिहास का संजीवन तथा विनाशन करनेका सामर्थ्य रखता है। इतिहासका भलीभांति सप्रमाण स्वाध्याय तथा अनुशीलन न करते हुए इतिहास लिखनेवाले इतिहासके हत्याकारी हैं, हत्यारोंको दण्ड मिलना चाहिए। इतिहास लेखकको अत्यन्त सावधानी, निस्पृहता, अनेक ग्रन्थोंका अवलोकन, अनेक भाषाओं तथा लिपियोंका ज्ञान आवश्यक है। दो-चार अंग्रेजी पुस्तकें पढ़कर भारतीय इतिहास पर रेखाएं खेंच देना तथा अपने आपको इतिहासज्ञ मनवा लेना इस प्रकार की दूषित मनोवृत्ति आजकल अधिक प्रथित हो रही है। इसका एकमात्र कारण विशुद्ध भारतीय शिक्षा के अभावके अतिरिक्त और क्या हो सकता है? शिक्षा संस्थाओंमें विशुद्ध भारतीय शिक्षाका प्रारम्भ से ही यावत्पर्यन्त व्यवस्थापन नहीं होता तावत्पर्यन्त भारतकी उन्नतिकी आशा करना शशविषाणसे अधिक कुछ नहीं। इतिहास लिखनेवालोंको यह सर्वदा ध्यानमें रखना चाहिए कि यथावृत्त (जैसा हो चुका है वैसा) ही जो लिखा जाय वही इतिहास नामके योग्य है। उसमें अन्यथा करना महान् पाप होगा, उसके लिखनेवाले भी दण्डके योग्य हैं, कारण ऐसे अशुद्ध इतिहास पढ़नेवालोंकी बड़ी हानि होती है। इतिहास अच्छी बातोंका हो, अथवा दुष्ट बातों का, जैसाका तैसा ही कहा लिखा जाना चाहिए, उसमें फेरफार करनेकी आवश्यकता नहीं होती। इतिहास निष्पक्षपात हो कर ही लिखना चाहिए। इतिहास लेखनमें प्रियताको कोई स्थान नहीं, उसमें केवल सत्यान्वेषण तथा सत्य लेखनकी ही आवश्यकता है। इतिहासमें कोई भी बात ही वह नितान्त साधारण ही क्यों न हो, वह सत्य प्रमाणित ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनिषद् और डुईसन साहब

[लेखक—श्री पं० चन्द्रभूषणजी शुक्ल वेदाचार्य]

[विद्वान् लेखक श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुर्जाके योग्य अध्यापक हैं। पाश्चात्त्य लोक भारतीय वर्ण-व्यवस्थाका विनाश करनेके लिए तथा भारतीय लोगोंमें आपसमें विद्वेष उत्पन्न करनेके लिए किन-किन हथकण्डोंसे काम लेते हैं,इस रहस्यका इस लेखके मननसे भली-भांति भण्डाफोड़ हो सकता है। पाठक भली-भांति इस लेखका स्वाध्याय करें —सम्पादक]

हम यहाँ पर डुईसन साहबके उपनिषद् विषयक लेखकी समालोचना 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके सामने उपस्थित करते हैं; जिससे पाठकोंको पाश्चात्त्य विद्वानों के संस्कृत-साहित्य विषयक भ्रमका किञ्चित परिचय होगा। डुईसन साहब उपनिषद् शब्दका अर्थ इस प्रकार करते हैं कि— "यह शब्द उप उपसर्ग सद् धातुसे बनता है, जिसका प्रयोग शिक्षाके लिए गुरुके पास जानेमें होता है। अत एव इसका प्रयोग पहले उस रहस्य सभामें होता था, जिसमें विशेष व्यक्ति ही सम्मिलित होते थे। इस प्रकार उपनिषद् संसद् परिषद्, इनमें अन्तिम दो सभाएँ तो साधारण होती थीं, परन्तु उपनिषद् यह रहस्य सभा थी और शनैः शनैः इस शब्दका अर्थ रहस्य-विद्या हुआ जिसकी चर्चा इस सभामें की जाती थी।" इन महाशयके कथनानुसार यह सभा क्षत्रियोंकी थी जिसका विषय ब्राह्मणोंसे गुप्त रक्खा जाता था। जिनका प्रवेश इस सभामें नहीं होता था। अत एव इस विद्याका नाम उपनिषद् या रहस्य विद्या पड़ा। इसका विरोध कर्म-काण्डसे स्पष्ट है, क्योंकि कर्मकाण्डके लिए आवश्यक वर्णाश्रमादि धर्मोंको यह विद्या व्यर्थ बतलाती है। तात्पर्य यह है कि जब क्षत्रिय लोग ब्राह्मण ग्रन्थोंमें प्रतिपादित यज्ञोंके करनेसे दुःखित हो गये तब उन्होंने इस विद्याका संग्रह किया और सिद्धान्त माना कि सब मनुष्य ब्रह्म स्वरूप हैं, जगत् मिथ्या है। इस सिद्धान्तको पुष्ट करनेके लिए डुईसन महाशय यह युक्ति देते हैं कि उपनिषद् विद्या तथा उसके आचार्यों को ब्राह्मण लोग ईर्ष्याकी दृष्टिसे देखते थे, क्योंकि इससे उनके यज्ञ तथा दक्षिणामें बाधा पड़ती थी। परन्तु यज्ञके बन्धनोंसे बचनेकी सभा न होनेके कारण क्षत्रिय लोग अधिक-सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे। यह भाव बृहदारण्यक उपनिषद्के ३ तथा ४ अध्यायसे जिनमें याज्ञवल्क्यके प्रति ऋषियोंका प्रश्न तथा जनकका आदर है निकल सकता है। इस प्रकार यद्यपि इस सिद्धान्तका अन्वेषण चाहे किसी ब्राह्मणने किया हो परन्तु इस विद्याका प्रचार तथा

लिखनी चाहिए, अन्यथा उसका न लिखना ही अच्छा। इतिहासको कोई कलङ्कित न कर सके, इसके लिए विद्वानोंको निरन्तर सुदृढ़ प्रयत्न करना चाहिए। इतिहासके अध्यापनके लिए इतिहास विषय के आचार्योंको राष्ट्रकी ओरसे नियुक्त करना चाहिए। अपने राष्ट्रका इतिहास आप स्वयं ढूँढें और लिखें, अनन्तर राष्ट्रिय इतिहासाचार्योंसे संशोधित सुसम्पादित कराकर उसे प्रकाशित किया जाय। अराष्ट्रियों के प्रणयन किये हुए इतिहास प्रायः प्रामाणिक नहीं हो सकते। अप्रामाणिक इतिहास राष्ट्रका कल्याण नहीं कर सकता। आजकल प्रायः षड्विकारोंसे वशीभूत पुरुष इतिहास लिखने बैठ जाते हैं, उनके लिखे हुए उस इतिहाससे हानिके अतिरिक्त क्या लाभ हो सकता है? इतिहासका स्वाध्याय करनेके लिए स्थान स्थान पर इतिहास-संशोधक-मण्डल स्थापित करनेकी आवश्यकता है। राष्ट्रके इतिहासको राष्ट्रवादसे विरोध रखनेवाले तथा परराष्ट्रिय कलङ्कित ही करनेका प्रयत्न करते रहते हैं। परराष्ट्रियों की शिक्षासे शिक्षित भी प्रायः यथावत् इतिहास नहीं लिख सकते, अस्तु । —अ० वा० आचार्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरव क्षत्रियोंमें था; यहां तक कि छान्दोग्यके १०-२४ तकके खण्डोंको देखनेसे विदित होता है कि ५ ब्राह्मण विद्यासे सम्पन्न ब्रह्मविद्या सीखनेके लिए उद्दालक ऋषिके पास गए और उसने अपनी विद्या में त्रुटि देख कर केकयके राजा अश्वपतिके पास उन्हें भेज दिया। उसने उनको ब्रह्मविद्याका उपदेश दिया। बृहदारण्यक तथा कौषीतकीमें यह कथा मिलती है। गार्ग्यबालाकि घूमते घूमते काशीके राजा अजातशत्रु के पास गये और कहा कि राजन्! हम तुम्हें ब्रह्मविद्या का उपदेश करेंगे। राजानें यह स्वीकार किया तब इन महात्माने ब्रह्मके विषयमें अनेक व्याख्याएँ कीं। तब राजाने उन व्याख्यानोंमें त्रुटि दिखलाई। तब वह बोले कि राजन्! आप ही हमें ब्रह्मका उपदेश कीजिए। इस पर राजाने कहा यह तो उल्टी बात है कि ब्राह्मणको ब्रह्मका उपदेश क्षत्रिय करे, इस भूमिकाके साथ राजाने ब्रह्मका उपदेश किया। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि गार्ग्यबालाकि जैसे प्रसिद्ध ब्राह्मण विद्वान्को यह विद्या नहीं आती थी और उसको क्षत्रियसे सीखनी पड़ी। छान्दोग्यके प्रथम अध्यायके पढ़नेसे पता चलता है कि प्रवाहण जैवाली नामक राजाने दो ब्राह्मणोंको आकाशका उपदेश दिया। छान्दोग्यके ७वें अध्यायमें युद्धके देवता सनत्कुमारने ब्राह्मण नारदसे कहा कि जो तुमने पढ़ा वह नाममात्र ही है। इसी प्रकार प्रवहण जैवलिने छान्दोग्यमें ५ अध्यायके ३-१० तकके खण्डोंमें और बृहदारण्यकके ५वें अध्यायके द्वितीय खण्डमें गौतमको उपदेश करते हुए यह स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि अभी तक यह विद्या ब्राह्मणोंमें नहीं थी, पहले मैं ही तुमको उपदेश करता हूँ, यह विद्या क्षत्रियोंमें थी इस लिए उनका सम्पूर्ण जगत्में प्रशासन हुआ। उपर्युक्त लेख से यह स्पष्ट सिद्ध हो गया कि इस विद्याको पहले क्षत्रियोंने पुष्ट तथा उन्नत किया, बादमें अन्य विद्याओं की भांति यह विद्या भी ब्राह्मणोंने अपने हाथमें ली होगी। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि पहले उपनिषद्का अभिप्राय एक गुप्त सभासे होगा और धीरे धीरे वह विद्याके नामसे प्रसिद्ध हुई।' डुईसन साहबके लेखानुसार यह विद्या यज्ञोंके प्रति द्वेष भावसे उत्पन्न हुई। अब विचारणीय यह है कि जिसमें शान्ति प्रधान है तथा बिना शुद्धान्तःकरणके समझना अत्यन्त कठिन है वह विद्या विद्वेष बुद्धिको ले कर उत्पन्न हुई। उक्त महाशय इस विषयमें उपर्युक्त ही उत्तर दे सकते हैं कि यज्ञोंके प्रति विद्वेष बुद्धिसे उत्पन्न हुई। परन्तु उपनिषदोंकी उत्पत्तिका कारण यदि यही होता तो उपनिषद् विद्याके प्रचारक यज्ञको घृणाकी दृष्टिसे देखते और उपनिषदोंमें यज्ञकी चर्चा न होती। परन्तु उपनिषदोंके अध्ययनसे प्रतीत होता है कि उपनिषद् विद्याके धुरन्धर विद्वान् तथा जिज्ञासु ब्राह्मण तथा क्षत्रिय दोनों ही थे, जिनको यज्ञोंसे तङ्ग आ कर उपनिषद्का प्रचारक बताया जाता है—उन्होंने बड़े बड़े यज्ञ किये जिनमें देश देशान्तरोंके विद्वान् ब्रह्मवेत्ता लोग यज्ञ सम्पादनको उपस्थित होते थे; यह बृहदारण्यकमें स्पष्ट लिखा है—

"जनको ह वैदहो बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे तत्र ह कुरुपाञ्चालानां ब्राह्मणा अभिसमवेता बभुवुः।"

अर्थात् विदेहके राजा जनकने यज्ञ किया और उसमें उसने ब्राह्मणोंको बहुत दक्षिणा दी। कुरु तथा पाञ्चालके ब्राह्मण उसमें उपस्थित हुए। जनक जैसे ब्रह्मविद्याके जिज्ञासु तथा आचार्यका यज्ञ करना तथा याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मविद्याके विद्वान्का उपस्थित होना सिद्ध करता है कि उपनिषद् विद्याके विद्वान् कर्मकाण्डमें उतनी ही तत्परता रखते थे कि जितनी कर्मकाण्डी लोग। बृहदारण्यकके तृतीय तथा चतुर्थ अध्यायसे यह भाव निकालना कि 'उपनिषदोंका यज्ञ से विद्वेष होनेके कारण उपनिषद् वेत्ताओंसे ब्राह्मणों का विद्वेष और क्षत्रियोंका आदर रहा' अत्यन्त अयुक्त और अनुचित है, ब्राह्मणोंने जो इन अध्यायों में प्रश्न किये हैं उनका कारण विद्वेष नहीं किन्तु स्पर्द्धा थी, जो प्रायः समान विद्या वालोंमें होती है। जनकको यह जाननेकी इच्छा हुई कि इन विद्वानोंमें ब्रह्मविद्याका कौन कुशल विद्वान् है। उस पदके योग्य अपनेको सिद्ध करते हुए याज्ञवल्क्यको देख कर अन्य ब्राह्मणोंको स्पर्द्धा हुई और याज्ञवल्क्यके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रार्थ हुआ। यदि वह ब्राह्मण ब्रह्मविद्याके विद्वान् न होते तो शास्त्रार्थ कैसे करते? अपितु केवल यज्ञकी प्रशंसा और ब्रह्मविद्याकी निन्दा करते। इससे सिद्ध होता है कि यज्ञमें उपस्थित ब्राह्मणोंने अपनी ब्रह्मविद्या विषयक कुशलता दिखलाई और यह भी सिद्ध होता है कि ब्रह्म वेत्ताओंको यज्ञसे कोई द्वेष नहीं था और क्षत्रियोंने यज्ञसे द्वेष रख कर इस विद्याका आविर्भाव नहीं किया था। इस प्रकरणमें जनकका शिष्य बुद्धिसे याज्ञवल्क्यके प्रति आदर तथा समान विद्यावालोंकी स्पर्द्धा होनी स्वभाविक है। इससे उपनिषद् या यज्ञके प्रति ब्राह्मणों या क्षत्रियोंका विद्वेष या प्रेम सिद्ध नहीं होता। इसी प्रकार अश्वपतिकी कथासे यह सिद्ध नहीं होता कि ब्राह्मण क्षत्रियोंसे ही उपनिषद् सीखते थे। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जब पाँचों ब्राह्मण उद्दालक अरुणिके पास गये और उसको अपनी विद्यामें त्रुटि प्रतीत हुई तब उसने उनको अश्वपतिके पास भेजा, जब वे अश्वपतिके पास गये तो उसने उनका सत्कार करके कहा—

"स प्रातः संजिहान उवाच —
न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ॥
नानाहिताग्निर्नाऽविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।

यक्ष्यमाणो वै भगवन्तोऽहमस्मि यावदेकैकस्मा ऋत्विजे धनं दास्यामि तावद्भगवद्भ्यो दास्यामि वसन्तु मे भगवन्तः (छा० अ० ५ खं० ११) हे महात्माओं मेरे राज्यमें न कोई चोर है, न कृपण, न मद्यपी ही है, और न कोई व्यभिचारी पुरुष ही है फिर व्यभिचारिणी स्त्रीकी तो सम्भावना ही कहाँ है? ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो पण्डित तथा अग्निहोत्री न हो, मैं याज्ञिक हूँ; जितना और ऋत्विजोंको धन दूँगा उतना ही आपको भी दूँगा। अश्वपतिके इस वचनसे स्पष्ट है कि राजा यज्ञका विरोधी हो कर उपनिषद्का प्रचारक नहीं था प्रत्युत याज्ञिक था, इसलिए आये हुए ब्राह्मणमें ऋत्विग् बुद्धि हुई। यदि डुईसन साहबके कथनानुसार यज्ञका विरोधी होता हुआ उपनिषद्का प्रचारक होता तो उन ब्राह्मणोंमें प्रतिद्वन्दीकी बुद्धि या शिष्यकी बुद्धि होती। राजा ब्रह्म विद्याका विशेषज्ञ था, परन्तु यह नहीं कि उसके समान ब्राह्मणोंमें कोई विद्वान् न था, या ब्राह्मणोंने सर्वथा यह विद्या क्षत्रियोंसे सीखी। हाँ, उस समय क्षत्रिय भी ब्राह्मणोंके समान विद्वान् होते थे, इसमें सन्देह नहीं। इसका पता जैविलीकी कथासे लगता है कि 'क्षत्रियकुमारोंने अपने सहपाठी ब्राह्मणोंसे अधिक कुशलता प्राप्त की थी। जैविलीने ब्राह्मणोंको आकाश विद्याका उपदेश किया है। यद्यपि जैविली क्षत्रिय था और अपने सहपाठियोंमें निपुण था, तथापि उसने यह स्वीकार किया है कि इस विद्याके मूल आचार्य अति-धन्वा शौनक थे।' डुईसन साहबको 'धन्वा' शब्दसे भ्रम हुआ कि शौनक भी क्षत्रिय थे, परन्तु पुराणोंमें "ऋषयः शौनकादयः" शब्दसे शौनकको ऋषि कहा है। उक्त महाशयने अपने पक्षको पुष्ट करते हुए नारद तथा सनत्कुमारकी कथासे अपने विज्ञानका पूर्ण परिचय दिया है कि सनत्कुमार युद्धके देवता थे। सनत्कुमार तो योगी थे; और उनका सम्बन्ध युद्धसे कुछ भी नहीं था। युद्धके देवता अश्विनीकुमार हैं, उभयत्र कुमार शब्दके होनेसे उक्त महाशयको यह भ्रम हुआ ऐसा प्रतीत होता है। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि जिनकी बुद्धि नतिक सादृश्यमें चकरा गई उनकी समझमें उपनिषदोंका गह्वर विज्ञान कैसे आया होगा? उपर्युक्त लेखसे यह सिद्ध हो गया है कि डुईसन साहबका लेख युक्ति-युक्त नहीं है। दूसरे शब्दोंमें यह सिद्धान्त कि क्षत्रियों द्वारा उपनिषदोंकी उत्पत्ति हुई यथार्थ नहीं है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि इस सिद्धान्तके माननेमें हमें या किसी अन्य ब्राह्मणको लाघव है। पर वास्तवमें यह बात ठीक होती तो इससे बढ़कर भारतके लिए और क्या गौरव होता कि इस देशमें युद्धमें रत योद्धा लोग भी इतने विद्वान् होते थे, कि जिन्होंने ऐसे गम्भीर विज्ञानका आविष्कार किया। हाँ, इतना अवश्य सच है कि राज्य-भारको सम्भालनेमें तत्पर क्षत्रिय लोगोंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारतीय विद्वान् और इतिहास

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०]

भारतीय विद्वानों पर सभी लोग यह आक्षेप करते हैं कि इन्होंने अपने देशका इतिहास नहीं लिखा। है तो यह आक्षेप वस्तुतः सत्य ही परन्तु सूक्ष्म विचारसे देखा जाए तो ज्ञात होगा कि इस आक्षेपमें जितना अतिशय हम करते हैं उतना सारा ठीक नहीं। भारतके विद्वानोंने वस्तुतः अपने देशका उतना इतिहास अवश्य लिखा है जितना लिखनेकी देशको आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त भारतके धर्मग्रन्थों को पढ़नेसे भी हमें इतिहासका बहुत ज्ञान हो सकता है। इतिहासका मुख्य प्रयोजन तो यही है कि हम भूतपूर्व राजाओंका इतिहास पढ़ कर यह सीख लें कि हमारा उत्कर्ष पहले कितना था, हमारे पूर्वजोंमें कौन गुण थे, किस प्रकार उन्होंने उन्नति की थी, उन्होंने किस प्रकार राजनैतिक प्रमाद किये। किन किन राजनैतिक प्रमादोंके कारण भारतवर्षकी यह दशा हो गई जो आज दीख पड़ती है। किन किन उपायोंसे परतन्त्र देशोंने स्वतन्त्रता प्राप्त की, कैसे स्वतन्त्रताकी रक्षा विविध देशोंने की। इतिहास पढ़ कर इन बातोंको समझ कर हमें अपने जीवन और देशकी उन्नतिका लक्ष्य स्थिर करके और उन्नतिकारक गुणोंका आदान तथा अवनतिकारक दोषोंका त्याग करके देशकी उन्नतिके लिए सफल प्रयत्न करना चाहिए। यही बातें मुख्य हैं, जो कि मनुष्य इतिहास से सीख सकता है। यह सभी बातें हम अपने प्राचीन इतिहास रामायण, महाभारत और पुराणों से यथेष्ट मात्रामें सीख सकते हैं। अतः इतिहासका प्रयोजन उनसे ही सिद्ध होता है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि हमको हमारे पूर्वजोंने अपने इतिहास से वञ्चित नहीं रक्खा है। ऐतिहासिक विद्वान् इन ग्रन्थोंके विषयमें यही कहते हैं कि इनमें क्रमबद्ध इतिहास नहीं लिखा गया है। दूसरे इनमें अनेकों बातें ऐसी हैं जो कि संसारमें सम्भव नहीं, जो केवल कवि-कल्पित ही हैं। पुराणोंकी तो बात ही नहीं, राजतरङ्गिणी जैसे क्रमबद्ध इतिहास भी इन दोषोंसे मुक्त नहीं। राजतरङ्गिणीको भी लोग इतिहास की अपेक्षा काव्यमें ही गिनना उचित समझते हैं। कल्हणको वे 'कवि' कहते हैं, उसे 'ऐतिहासिक' नहीं कहते। परन्तु विचारपूर्वक देखा जाए तो काव्यके

ऐसे कई अन्वेषण ब्रह्मविद्यामें किये कि जो अभी ब्राह्मणोंको विदित नहीं थे, यह गौतम और जैविलीके सम्वादसे स्पष्ट प्रतीत होता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि ब्राह्मण सर्वथा क्षत्रियोंसे ही ब्रह्मविद्या पढ़ते थे। अजातशत्रुके इस बचनसे कि (प्रतिलोम वै तत् यद् ब्राह्मणः क्षत्रियमुपेयात् ब्रह्म मे वक्षति) स्पष्ट प्रतीत होता है कि ब्राह्मणके पास जाकर क्षत्रिय यही कहता था कि मुझे ब्रह्मका उपदेश कीजिए, यह सामान्य प्रथा थी। उपनिषद् शास्त्रके अध्ययनसे प्रतीत होता है कि अजातशत्रु आदिकका एक दो ही प्रतिलोम दृष्टान्त है जिसके कारण उपनिषद् शब्दका अर्थ गुप्तसभा जिसको क्षत्रियोंने स्थापित किया था मान लिया जाय, ठीक नहीं और न कहीं संस्कृत साहित्यमें उपनिषद् शब्दका अर्थ सभा उपलब्ध ही होता है। इसका अर्थ जो श्री शंकराचार्यजीने कठोपनिषद्के भाष्यमें किया है वही ठीक है। श्रीमान् शंकराचार्यजी महाराजका अभिप्राय उपनिषद् शब्दसे उस विद्याका है जिसकी प्राप्तिसे संसार वृक्षके बीज नष्ट हो जाते हैं, यह अर्थ षद् धातुके मूल अर्थके आधार पर किया गया है। इस लेखसे पाठक स्वयं समझ लेंगे कि उक्त महाशयका लेख हिन्दू जातिमें कितना विद्वेष उत्पन्न कर सकता है तथा हिन्दू समाजके लिए कितना घातक सिद्ध हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रङ्गमें रंगा हुआ इतिहास शुद्ध इतिहाससे कहीं बढ़ कर मूल्य रखता है। आप जरा विचारिए कि यदि आधुनिक रीतिके अनुसार भारतवर्षके प्रत्येक प्रान्त तथा देशीय राज्यका इतिहास हम लिखने लगें, कविताकी उसमें गन्ध भी न रक्खें और इसी प्रकार से विस्तृत रूपमें समस्त भारतवर्षका इतिहास केवल दश-सहस्र वर्षों तक लिखते जाएँ, तो दश-सहस्र वर्षोंके अनन्तरके विद्यार्थीकी आप कल्पना करें — क्या वह इतने लम्बे-चौड़े नीरस इतिहासको कभी पढ़ेगा ? कभी नहीं। वह तो यही कहेगा कि इतने बड़े नीरस इतिहास-समुद्रको पढ़ना तो अपने सारे जीवनको व्यर्थ नष्ट करना है। दश-सहस्र क्या, मैं तो यह समझता हूँ कि दो-तीन-सहस्र वर्षोंके भी सुविस्तृत इतिहासको कोई नहीं पढ़ेगा। फिर होगा क्या ? तो मेरे विचारमें पांच-पांच छै-छै शताब्दियों के अनन्तर विद्वान् लोग इन पूर्व शताब्दियोंके इतिहासोंके संक्षेप बनाया करेंगे। इन संक्षेपोंमें प्रधान प्रधान व्यक्तियोंका वर्णन होगा और शेष व्यक्तियोंके केवल नाम ही दिये जाएंगे। परन्तु जब समय बहुत बीत जाएगा तो ये संक्षेप भी बहुत विस्तृत प्रतीत होंगे। उस समय कोई भी ऐसे नीरस संक्षेपोंको पढ़नेके लिए उद्यत नहीं होगा। तब विद्वान् लोग इन संक्षेपोंके भी अतिसंक्षेप बना कर प्रधान-प्रधान पुरुषों के इतिहासको काव्योंमें लिखेंगे और शेष व्यक्तियोंके केवल नाम और जीवन काल अथवा शासनकाल को लिखेंगे। काव्यमें लिखनेसे ये इतिहास सरस बन जाएंगे। तब लोगोंको इनके पढ़नेमें रुचि होगी। ये काव्य ग्रन्थ लगभग हमारे पुराण और महाभारत जैसे ही बनेंगे। इनको तो लोग औत्सुक्यसे पढ़ेंगे, और जैसे इतिहासोंको हम इतिहास कहते हैं उनको कोई नहीं पढ़ेगा। उसका फल यह होगा कि ये ग्रन्थ तो प्रथित हो जायेंगे और असली इतिहास अंधकार में पड़ कर धीरे धीरे नष्ट हो ही जाएंगे। केवल राजकीय प्राचीन पुस्तकालयोंमें ही वे मिलेंगे। परन्तु यदि कभी राजविप्लवके कारण किसी अनार्य जाति के हाथ शासन आ जाएगा तो वे पुस्तकालय भी न हो जायेंगे। परन्तु काव्यरूप इतिहास लोकप्रिय होनेके कारण लोगों द्वारा प्रयत्नसे सुरक्षित रक्खे जायेंगे। तब इतिहासकी ठीक वही दशा हो जाएगी जो आजकल है।

वस्तुतः भारतवर्षमें भी यही हुआ है। भारतीय विद्वान् अति प्राचीन समयसे इतिहास लिखते थे। यह बात प्राचीन ग्रन्थोंसे प्रमाणित हो जाती है। यास्क मुनिने ई० पू० द्वादश शताब्दीमें (यास्कका यह समय हमने 'श्रीस्वाध्याय'के ही पूर्व अङ्कमें सिद्ध किया है) अपने निरुक्तमें अनेक स्थानों पर इतिहास और ऐतिहासिकोंके मतको उद्धृत किया है। उदाहरणार्थ—वृत्रके विषयमें "त्वाष्ट्रो असुर इत्यैतिहासिकाः" ऐसा कहा हुआ है। इसी प्रकारसे कुरुवंश के राजा शान्तनु और उसके भाई देवापिका भी इतिहास "अत्रेतिहासमाचक्षते" इस वाक्यसे प्रारम्भ किया है। इसी प्रकार विश्वामित्र, उर्वशी, वसिष्ठ, सुदास आदिके इतिहासोंको भी यास्कमुनिने उद्धृत किया है। उन्होंने तो वेदके विषयमें भी यह कहा है कि "तत्र ब्रह्मेतिहासमिश्रम्"। इससे यह स्पष्ट रूपसे सिद्ध होता है कि ईसासे पहले द्वादश शतकमें भारतवर्षमें इतिहास और ऐतिहासिक बहुत उन्नति पर थे। इससे भी पूर्व ई० पू० ३००० वर्षके लगभग शतपथ ब्राह्मणके समयमें भी इतिहासको एक विद्या माना जाता था (शतपथ ब्राह्मणका यह समय गणितके द्वारा श्रीमान् दीक्षितजीने सिद्ध किया है) अतः उस समय भी इतिहास बहुत उन्नति पर था। इससे यह सिद्ध हुआ कि भारतीय विद्वानोंने आदि कालसे इतिहास लिखे थे। परन्तु सहस्रों वर्षोंके बीत जाने पर वे इतिहास अन्धकारकी भयङ्कर गुफामें पड़ कर अज्ञात जैसे हो गये। लोगोंने उनको पढ़ना छोड़ दिया। इसी कारण विद्वानोंने फिर इतिहासको काव्यके रङ्गमें रङ्ग कर महाभारत रामायणादिके रूपमें तथा राजतरङ्गिणी जैसे काव्योंके रूपमें लिखा। फल यह हुआ कि रसिकोंने सरस इतिहासकी और धार्मिकोंने धार्मिक इतिहासकी प्रयत्नसे रक्षा की। इसे कालके वश होने नहीं दिया। इसी कारण कल्हणने ऐतिहा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकके कर्मकी प्रशंसा नहीं की। उसने तो "तस्मै नमः कविकर्मणे" तथा 'भ्रातः सत्कविकर्म किं स्तुतिशतैरन्धं जगत् त्वां विना" ऐसे ऐसे वाक्यों द्वारा कविके ही कर्मकी स्तुति की है। उस समय प्राचीन इतिहास केवल राजकीय पुस्तकालयोंमें ही रह गये। परन्तु ई० द्वादश शतकमें भारतवर्षके दुर्भाग्य के कारण तथा भारतीयोंकी अनीतिके कारण भारतवर्षमें एक ऐसी जाति घुस आई जिसका व्रत ही यह था कि दूसरोंकी सभ्यताको नष्ट करके अपनी असभ्यताका स्थापन करना जिन्होंने मिसर और फारस की सभ्यताको सर्वथा नष्ट किया था और जिन्होंने भारतकी सभ्यताको नष्ट करनेके सहस्रों उपाय किये, परन्तु इस सुदृढ़ सभ्यताको नष्ट न कर सके। भारतीयोंकी अनीतिके ही कारण इसी जातिका राज्य भारतवर्षमें स्थापित हो गया और वह राज्य अनेक शताब्दियों तक रहा। इन शताब्दियोंमें कुछ इने-गिने दो चार राजाओंको छोड़ कर प्रायः सभी राजाओंने यही प्रयत्न किया कि भारतीय सभ्यताको नष्ट किया जाए। सभ्यताका एक प्रधान अङ्ग साहित्य होता है इस कारण इन्होंने ऐसा प्रयत्न किया कि जो भी संस्कृत या किसी दूसरी आर्यभाषामें या आर्य लिपिमें लिखी हुई पुस्तक खोज करने पर इनको मिली उसको इन्होंने जला डाला। अनेकों पुस्तकालय क्षण भरमें भस्मसात् हो गये। इनको अपने धर्मग्रन्थके विषयमें यह मिथ्या श्रद्धा थी कि "यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्"। जब ये लोग अलेग्जांड्रिया (मिसर) की लाइब्रेरीमें पहुँचे, तो उस लाइब्रेरीके संरक्षक विद्वानोंने इनसे प्रार्थना की कि इन पुस्तकोंमें ज्ञान है, अतः इनको नष्ट न किया जाए। तो इस का भी उत्तर उन्होंने यही दिया था कि इन पुस्तकोंमें जो कुछ ज्ञानकी बातें कही हैं वे सब हमारे धर्मग्रन्थमें वर्तमान हैं। जब एक ग्रन्थसे ही काम चल सकता है तो इतने बड़े पुस्तकालयकी क्या आवश्यकता। यदि इन असंख्य पुस्तकोंमें कोई बात ऐसी कही हुई है जो कि हमारे कुरानमें नहीं मिल सकती, तो वह बात सच नहीं है। क्योंकि सत्य बातें सभी हमारे कुरानमें हैं। जो इसमें नहीं हैं वे कभी सत्य नहीं हो सकती हैं। इस कारण ऐसी असत्य बातोंका प्रतिपादन करने वाला यह पुस्तक-भाण्डार शीघ्र ही नष्ट हो जाना चाहिए।' बस यह कह कर सारे पुस्तकालयको अग्निके अर्पण कर दिया गया। इसी सिद्धान्तसे इन्होंने भारतवर्षके साहित्यको बहुत नष्ट किया। इस कारण भारतवर्षके साहित्यका एक प्रतिशत भी कठिनतासे ही बच सका होगा। यदि भारतवर्षका साहित्य इस प्रकारसे नष्ट न हुआ होता तो इस समय कोई भी यह नहीं कह सकता कि प्राचीन भारतीयोंने इतिहास लिखनेकी ओर ध्यान नहीं दिया। अनेकों इतिहास नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये। शासन शक्तिका विरोध प्रजा कितना कर सकती है? शासन-शक्तिने हमारे साहित्यको नष्ट किया तो प्रजा ने प्रयत्न द्वारा अपने कुछ प्रियतम पुस्तकोंको छिपा रक्खा। यही कारण है कि सामवेदकी १००० शाखाओं मेंसे इस समय केवल एक शाखापूर्ण मिलती है। यजुर्वेदकी १०० शाखाओंमेंसे भी केवल ४ शाखाएं उपलब्ध हुई हैं। यही दशा समस्त शास्त्रोंकी है। अनेकों ग्रन्थोंके अनुवाद इस समय भी चीन और तिब्बतमें मिलते हैं; परन्तु उनका मूल संस्कृत कहीं नहीं मिलता। इतिहास भी जो मुसलमानोंसे पहले यहाँ मिलते थे उनमेंसे बहुत नष्ट हो गये हैं। संस्कृत साहित्यमें कल्हण ही ऐतिहासिकोंमें सबसे प्रसिद्ध है। वह अपनी राजतरङ्गिणीमें लिखता है (१) सुव्रत की सुव्रतभारती (२) क्षेमेन्द्रकी नृपावली (३) तथा 'नीलमतम्' के अतिरिक्त ग्यारह इतिहासोंके ग्रन्थ मैंने देखे हैं जिनके आधार पर मैं इस ग्रन्थको लिख रहा हूं। इन ग्यारह ऐतिहासिकोंमेंसे दो के नाम भी दिये हैं (१) पूर्वमिहिर (अथवा पद्ममिहिर) (२) श्रीच्छविल्लाकर। इनके अतिरिक्त एक और प्राचीन ग्रन्थका उल्लेख उसने किया है जिसको वह स्वयं भी प्राप्त नहीं कर सका। वह इतिहास है हेलाराज की पार्थिवावलिः। यह इतिहास अति प्राचीन तथा अतिविस्तृत था। इस प्रकारसे कल्हणके समयमें भी हेलाराजके ग्रन्थको छोड़कर १४ चौदह ऐतिहासिक ग्रन्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान थे जिनमें केवल काश्मीर देशका इतिहास था। इन ग्रन्थोंमेंसे केवल एक ग्रन्थ 'नीलमतम्' धार्मिक ग्रन्थ होनेके कारण बचा है। शेष सभी नष्ट किये गये हैं। इसी प्रकारसे प्रत्येक प्रान्तके इतिहास पर क्रूर अन्याय हुआ है। यदि सुव्रतभारती और नृपावलीका भी ग्रहण ग्यारह ग्रन्थोंमें ही किया जाय तो भी कल्हणके समयमें हेलाराजके ग्रन्थके अतिरिक्त काश्मीरके इतिहासके १२ बारह ग्रन्थ विद्यमान थे। इनके अतिरिक्त कल्हण ही लिखता है कि शङ्कुक कवि ने 'भुवनाभ्युदय' नामक ग्रन्थमें एक युद्धका वर्णन किया है। यह ग्रन्थ भी आजकल नहीं मिलता। इस समय भी भारतवर्षमें इतिहासके संस्कृत और प्राकृत के जो ग्रन्थ मिलते हैं वे ये हैं :—

कवि	पुस्तक
१ वाक्पतिराज	गौड़वहो (महाराष्ट्री प्राकृत)
२ पद्मगुप्त अथवा परिमाल	नवसाहसाङ्कचरित
३ बिल्हण	विक्रमाङ्कदेवचरित, कर्णसुन्दरी
४ कल्हण	राजतरङ्गिणी
५ जौनराज (जोन)	राजतरङ्गिणी परिशिष्ट नं० १ पृथ्वीराज विजय टीका।
६ श्रीवर	राजतरङ्गिणी परिशिष्ट नं० २ (अर्थात् जैनराज तरङ्गिणी)।
७ प्राज्यभट्ट व शुक	राजतरङ्गिणी परिशिष्ट नं० ३ (राजावली पताका)।
८ जल्हण	सोमपाल विलास
९ हेमचन्द्र	कुमारपाल चरित।
१० अज्ञात नाम काश्मीरी कवि,	पृथ्वीराज विजय
११ सोमेश्वरदत्त	कीर्तिकौमुदी, सुरथोत्सव।
१२ अरिसिंह	सुकृतसंकीर्तन।
१३ सर्वानन्द	फगड्ड चरित।
१४ सन्ध्याकरनन्दिन्	रामपाल चरित।
१५ शम्भु	राजेन्द्र कर्णपूर।
१६ श्रीहर्ष	नवसाहसाङ्क चरित।
१७ हरिश्चन्द्र	धर्मशर्माभ्युदय।
१८ चरित्र सुन्दरगणिन्	महीपाल चरित।
१९ शिव स्वामी	कप्फणाभ्युदय।

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकों शिलालेख, दानपत्र आदि मिलते हैं। बौद्धोंके अवदान ग्रन्थों और जातकों तथा "त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरितम्" "बुद्धचरितम्" "यशोधराचरितम्" "नेमिनिर्वाण" आदि ग्रन्थोंसे भी इतिहासके विषयमें बहुत ज्ञान होता है। पुराण रामायण महाभारत आदि तो प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं ही। इनमेंसे यदि हम धार्मिक, औपदेशिक तथा काव्य सम्बन्धी विषयोंको पृथक् करें तो शेष शुद्ध इतिहास रह जाता है। अति प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थों और वेदमन्त्रोंसे भी हमें इतिहासका बहुत ज्ञान प्राप्त हो सकता है (इतिहास प्रदर्शनसे वेदकी कोई क्षति नहीं होती है, इस बातको फिर कभी किसी लेखमें लिखेंगे)। सारांश यह कि यदि कोई चाहे तो प्राचीन संस्कृत साहित्यमें से खोज करने पर भारतवर्षके अति प्राचीन इतिहास को भी निकाल सकता है। अर्वाचीन इतिहास तो पर्याप्त मात्रामें मिलता है। अतः यह कहना ठीक नहीं कि भारतवर्षका प्राचीन इतिहास मिलता ही नहीं है। इतिहास क्षेत्रमें भी भारतवर्षके विद्वानोंने पर्याप्त काम किया है। यद्यपि वह अधिकांश नष्ट हो गया है, तो भी जितने इतिहासके पढ़ने वालोंको आवश्यकता है उससे कहीं अधिक ही इतिहास मिलेगा, थोड़ा नहीं। दक्षिणकी द्रविड़ भाषाओंके साहित्यकी खोज अभी अधिक नहीं की गई है। यदि यह काम भी अधिक मात्रामें किया जाय तो सम्भव है समस्त भारतवर्ष का क्रमबद्ध सत्य इतिहास प्रकट हो जायेगा। परन्तु भारतवर्षका सत्य इतिहास तब तक पूरा प्रकट नहीं हो सकता और प्रकट हो कर भी उसका प्रचार नहीं हो सकता जब तक भारतवर्ष पारतन्त्र्यसे कुचला जाता रहे। क्योंकि किसी राष्ट्रके सत्य और उज्ज्वल इतिहासका प्रचार राष्ट्रियोंका काम होता है, विदेशियोंका नहीं। और राष्ट्रिय तब तक कुछ नहीं कर सकते जब तक राष्ट्रका शासन उनके हाथमें न आ जावे। अतः इस विषयमें इस समय केवल भावी शुभकी आशासे ही मनको शान्ति देनी पड़ती है। परन्तु ऐसी व्यवस्थामें भी ऐतिहासिक विद्वानोंको चुप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
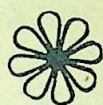
ग्रन्थागार

[लेखक—श्री पं० भूपेन्द्रनाथजी वन्द्योपाध्याय ए० ए०]

वर्तमान समयमें भारतवर्ष और अन्य देशोंमें ग्रन्थागारोंका आधिक्य दृष्टिगोचर होता है। बड़ेसे बड़े नगरोंसे ले कर छोटे-छोटे गांवों तकमें एक-न-एक ग्रन्थागार अवश्य है। सरकारी ग्रन्थागारोंके अतिरिक्त, म्युनिसिपैल्टियों और डस्ट्रिक्ट बोर्डोंके ग्रन्थागार और जनसाधारणके ग्रन्थागार भी होते हैं।

प्राचीन समयमें जब मुद्रण-यन्त्रका प्रचार नहीं था, पुस्तकें सब हाथसे ही लिखी जाती थीं, उस समय भिन्न-भिन्न देशोंमें किस प्रकारके ग्रन्थागार थे, उनका धारावाहिक इतिहास जाननेका कौतूहल सभीको हाता है। उस कौतूहलको चरितार्थ करना ही इस लेखका उद्देश है।

सभ्यताके आदिसे ही ज्ञान और विद्यासे सभीको प्रेम रहा है। लेखन-कलाका ज्ञान सृष्टिके आरम्भसे ही लोगोंको था अथवा नहीं, यह कहना बहुत ही कठिन है। परन्तु भारतवर्षमें वैदिककालसे ही ऋषि लोग लिखना जानते थे। इससे पाश्चात्त्य पण्डित सहमत नहीं हैं। परन्तु महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाने अपनी "प्राचीन लिपिमाला" पुस्तकमें इसको प्रमाणित कर दिया है।

पाश्चात्त्य पंडितोंका मत है कि बहुत प्राचीन समयमें मनुष्योंको अक्षर ज्ञान नहीं था। वे अपनी चिन्ताओं और भावनाओंको चित्रों तथा अन्य विविध प्रकारकी रेखाओंसे दर्शाया करते थे। यही अङ्कित चिह्न उस समयकी भाषा थी। जिन वस्तुओं पर ये चित्र बनाये जाते थे वही वस्तुएँ उस समयकी पुस्तकें थीं। ऐसी भाषा-मयी पुस्तकोंकी स्थिति अति प्राचीन समयसे है।

पण्डितोंने यह बात स्वीकार की है कि उपरोक्त प्रकारकी पुस्तकोंका ग्रन्थागार बहुत प्राचीन समयमें किसी देशमें था। पत्थरों पर जीव जन्तु, वृक्ष-लतादि अंकित रहते थे। जिससे लोग अपने मनो-भाव प्रकाशित करते थे। ये पत्थर नियमानुसार किसी किसी स्थानमें एकत्रित किये जाते थे और वह स्थान पुस्तकालय कहलाता था। इसके पश्चात् भूर्जपत्र और ताड़पत्र लिखनेके काममें लाये जाते थे।

इस बातका भी प्रमाण मिलता है कि बहुत प्राचीन समयमें देशके राजा ग्रन्थागारोंकी रक्षा तथा प्रबन्धके लिए पर्याप्त धन देते थे। पुस्तकागार पुरोहितों (Priests) की देख-भालमें रहता था जो लोगोंके घरों पर जाकर उनको पुस्तक पढ़नेके लिए प्रोत्साहित करते थे।

सन् १८५० ई० में 'लेयार्ड' (Leyard) जिस समय 'निनेभा' (Ninevah) में खनन कर

नहीं रहना चाहिए। उन्हें पाश्चात्त्य प्रभावसे स्वतन्त्र हो जाना चाहिए। अपनी बुद्धिको स्वतन्त्र बनाकर फिर उन्होंने भारतीय साहित्यमें गवेषणा करनी चाहिए। परन्तु गवेषणा करते समय पाश्चात्त्य समालोचनाओंको बुद्धिमें तिल मात्र भी स्थान नहीं देना चाहिए। इस प्रकारसे गवेषणा करके समस्त भारतीय ऐतिहासिकोंको एक दो सम्मेलनोंमें एक दूसरेके अन्वेषित तत्त्वोंको विचारना चाहिए। पूर्ण विचारके अनन्तर भारतवर्षके वास्तविक इतिहासका निर्माण करके उसके प्रचारके लिए प्रयत्न करना चाहिए। सम्भव है कि भारतवर्षके वास्तविक इतिहासके प्रचारका प्रभाव भारतवर्षके निवासियों पर ऐसा पड़े कि वे सभी कटिबद्ध हो कर यथोचित तथा नीतिके अनुकूल किसी विधि द्वारा भारतवर्षको स्वतन्त्र करनेमें समर्थ हो जाएँ। शिवम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था उस समय मिट्टीके नीचे एक बड़ा भारी आगार मिला। उसमें लगभग दस सहस्र पत्थरके टुकड़े थे जिन पर नाना प्रकारके चित्र बने हुए थे और ये टुकड़े एक नियमसे रक्खे हुए थे। विद्वानों-का मत है कि यह असीरियाके शासक असुरबानी-पालका ग्रन्थागार था। 'बैबीलोन' में असीरियाके ग्रन्थागारसे भी प्राचीन एक ग्रन्थागार था। पंडितोंने यह भी पता लगाया है कि छः सहस्र वर्ष पूर्व अर्थात् 'पिरामिड' बननेके पहले मिश्र (Egypt) देशमें पत्थर-पुस्तकोंका एक ग्रन्थागार था। मिश्र देशमें न केवल मन्दिरोंमें अपितु श्मशानोंमें भी ग्रन्थागार बनाये जाते थे। इस बातका भी पता लगा है कि मिश्रमें खृष्ट पूर्वार्द्ध १४वीं शतीसे 'असीम्यान डियास' (Osymandyas) के राज्य-कालमें एक बहुत बड़ा ग्रन्थागार था। इन पुस्तकोंकी लेखन शैलीका पता अभी तक नहीं चला है। साधा-रणतया मत यह है कि भूमध्यसागरके उत्तरी प्रदेशोंमें पहले पहल लिपिकी आविष्कृति हुई। यह कहा जाता है कि सर्व प्रथम लिखनेकी भाषा 'चालडियन' (Chaldean) है।

पुराने ग्रीस (Greece) देशमें बहुत बड़े-बड़े पुस्त-कागार थे। इस देशके प्रथम पुस्तकागारका प्रतिष्ठाता 'पिसिस्ट्रेटस' (Pisistratus) था। प्लैटो (Plato), अरिस्टोटल (Aristotle, और यूकलिड (Euclid) इन लोगोंके अपने (निजी) ग्रन्थागार थे। रोम देश में भी अच्छे ग्रन्थागार थे। रोम देशका राजा 'आगस्टस' (Augustus) साधारण पुस्तकागार (Public Library) का जन्मदाता कहा जाता है। कुस्तुन्तुनिया (Constantinople) के उन्नति कालमें कुछ अच्छे पुस्तकागार खोले गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथागारों में एक-एक लाखसे भी अधिक पुस्तकें थीं। रोम राज्यके पतनके पश्चात् वहांके धर्म-याजकों (Popes) ने अच्छे २ ग्रन्थागार खोले थे। प्राचीन समयमें मठों और मन्दिरों (Monasteries and Churches) में पुस्तकोंका संग्रह रहता था। रोम राज्यके पतनके पश्चात् जिस समय ग्रंथागार) धर्मयाजकोंके हाथमें थे, पुस्तकें साधारण मनुष्योंको पढ़नेके लिए उधार दी जातीं थीं। उसी समयसे यह प्रथा आज तक चली आ रही है।

प्राचीन समयमें 'एलेक्जैन्ड्रिया'(Alexandria) के ग्रन्थागार बहुत प्रसिद्ध थे। वहां एक ग्रंथागार में ४६०,००० पुस्तकें थीं। टोलेनी (Ptolany) जो कि सिकन्दर (Alexander) के सात शरीर रक्षकोंमें से था। उसने उस समय जब कि पुस्तकें भुर्जपत्रों पर लिखी जाती थीं, एक बहुत बड़े पुस्तकागारकी स्थापना की थी।

मिश्र, ग्रीस, रोम इत्यादि देशों ही में प्राचीन समयमें पुस्तकालयोंका कुछ २ इतिहास मिलता है। इनके अतिरिक्त पश्चिमके अन्यान्य देशोंके पुस्तकालय बहुत प्राचीन नहीं हैं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (Cambridge University) का ग्रंथागार १५वीं शतीमें स्थापित हुआ था। अमरीका देशमें ५०-६० वर्ष पूर्व लगभग ३०० ग्रंथागार थे।

पुराने समयमें पुरोहित, पादरी और मठाधीश क्या भारत क्या अन्य देशोंमें ग्रंथागारिकका काम करते थे। प्रत्येक मन्दिर, मठ तथा गिरजेमें पुस्तकोंका संग्रह रहता था। पुरोहितोंका काम केवल पुस्तकोंकी देख-भाल करना ही नहीं होता था वरन् उनको पढ़ना तथा लोगोंको पढ़ाना और पढ़नेकी रुचि उत्पन्न करना भी होता था।

चीन महादेशमें पुस्तकोंका बहुत आदर था। इसका प्रधान कारण केवल यही नहीं था कि लोगोंको पढ़नेसे प्रेम था, वरन् वहाँके लोग पुस्तक संग्रह करना अपना धर्म समझते थे। इसलिए वहांके अपढ़ लोगोंके घरोंमें भी पुस्तकोंका बड़ा संग्रह रहता था। चीनके लोग साहित्य तथा काव्यानुरागी होते थे। प्राचीन समयमें चीनमें साधारण पुस्तका-गार तो सम्भवतः नहीं थे, परन्तु राजाओं और प्रतिष्ठित लोगोंके अपने ग्रन्थागार थे। इतिहाससे यह पता चलता है कि चीनका सर्वप्राचीन पुस्तकालय राजकीयवंश चाऊ (Impereal Chau Dynasty) का था जिसकी राजधानी होनान (Honan) प्रान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लोयांग (Loyang) में थी। एक समय ऐसा था कि चीनी लोग मन्दिरों और गुफाओंमें पुस्तकें रखते थे और उनको शत्रुओंसे बचानेके लिए गुफाओं को पत्थरोंसे ढके रखते थे। चीनियोंको संस्कृत और प्राकृत साहित्यसे बहुत प्रेम था। हान राज्य में लोयरा (loyara) बिहारमें इन भाषाओंकी शिक्षा दी जाती थी। इस समय चीन देशमें जो संस्कृत और प्राकृत भाषाओंकी पुस्तकें हैं वे सम्भवतः हान राज्यकालमें भारतसे ले गये होंगे। इसका प्रमाण है कि संस्कृत भाषाके अनुवादसे ही चीनी भाषाकी उन्नति हुई थी। इतिहाससे यह भी ज्ञात होता है कि 'धर्म-फल' नामक एक भारतीय कुछ पुस्तकें ले कर चीन देशको गया था। भारतीय भाषाओंके अनुवाद का केन्द्र स्थान दक्षिण चीनकी राजधानी 'कियेन रे' (Kiyen Ray) थी। लगभग १४०० भारतीय पुस्तकोंका अनुवाद चीनी भाषामें हुआ था। अनुवादकोंमें एक चीनी भी था जिसका नाम "चा चियेन" था। उसने अवदानशतक, मातंगीसूत्र, सुखवती अथवा आर्यातन्त्र पुस्तकोंका सम्पादन किया था। दूसरा अनुवादक कुमारजीव था जो भारतसे गया था।

अति प्राचीन पुस्तकोंमें इसका निदर्शन नहीं है कि प्राचीन भारतमें पुस्तकागार थे या नहीं। परन्तु पुस्तकोंकी वर्गीकरण पद्धति और विद्याका विभाग इत्यादि जैसा कि आजकल ग्रन्थागार-विज्ञानमें है, उस प्रकारका हमारे बहुतसे प्राचीन ग्रन्थोंमें पाया जाता है। इससे यह सुविदित है कि प्राचीन भारतमें ग्रन्थागार अवश्य थे। भारत जैसे देशमें जहाँ वेदादि ग्रन्थोंकी रचना हुई, जो विद्या, सभ्यता और संस्कृतिका प्राचीनतम केन्द्र रहा है, वहाँ पुस्तकागारोंका न होना विश्वसनीय नहीं है। जो कुछ प्रमाण मिले हैं और प्राचीन पुस्तकोंमें ग्रन्थागारोंका जो इतिवृत्त है उससे प्रमाणित होता है कि भारतमें पुस्तकागारोंका अभाव नहीं था।

श्रुतिमें विद्या दो भागोंमें विभक्त है:—परा और अपरा (द्वे विद्ये वेदितव्ये परा चैवाऽपरा च) कणाद तीन वर्ग बतलाते हैं, यथा—धर्म अर्थ और काम। कालिदासने कुमारसम्भवमें तीनोंको पृथ्वीमें रहनेका उपाय बतलाया है। इसके अनन्तर एक चौथा वर्ग मोक्ष भी बतलाया गया है। हमारे प्राचीन साहित्यों में चतुर्वर्गोंका उल्लेख है। यह एक प्रकारका वर्गीकरण है जिसके आधार पर पुस्तकोंका वर्गीकरण होता है।

दूसरे प्रकारका वर्गीकरण स्मृति और नीतिशास्त्रों में पाया जाता है। पहलेमें १४ वर्गोंका उल्लेख है और दूसरेमें ३२ का। अर्थशास्त्रमें ४ वर्ग (भाग) बतलाये गये हैं और पशुपताचार्यमें पांच। साधारणतया पुस्तकोंके विषयोंका वर्गीकरण चार भागों (वर्गों) का ही है। वात्सायन तथा दूसरे ऋषियोंने कलाके ६४ भाग बतलाये हैं। कुल मिला कर ५३८ कला हैं। ग्रन्थोंके पारायण करनेसे और भी विविध प्रकारके वर्गीकरण ज्ञात होते हैं। नालन्दा, विक्रमशिला, तक्षशिला, उदन्तपुरी आदि विश्वविद्यालयोंके ग्रन्थागारोंकी पुस्तकें और मन्दिरों और पीठोंकी पुस्तकें वर्गीकृत रूपसे ही रक्खी जाती थीं। पुराने पण्डितोंकी पुस्तकें संग्रह-नियमके ही अनुसार रक्खी हुई पाई जाती हैं।

प्राचीन समयमें भारतवर्षमें कई विश्वविद्यालय थे, उनके अपने अलग अलग पुस्तकागार भी थे। नालन्दा-विश्वविद्यालयका बहुत बड़ा ग्रन्थागार था, जिसमें विवध विषयोंकी पुस्तकें थीं। चीन देशके पण्डित वर्षों नालन्दामें रह कर अध्ययन करते थे। यहां रह कर वे बौद्ध ग्रन्थोंका अध्ययन करते थे। ईत्सिंगने नालन्दामें रह कर ४०० संस्कृत ग्रन्थोंकी जिसमें लगभग ५००,००० श्लोक थे, नकल करवाई थी। यहाँका ग्रन्थागार धर्मगच्छके नामसे प्रसिद्ध था। यह ग्रन्थागार तीन बड़े बड़े प्रासादोंमें विभक्त था, एकका नाम 'रत्नसागर', दूसरेका नाम 'महोदधि' और तीसरेका नाम 'रत्नरञ्जक' था। दूसरा प्रासाद नौ भौम (मंजिला) था। धर्मपालका शिष्य शीलभद्र इस ग्रन्थागारका अध्यक्ष था। ३०० खृष्टाब्दमें 'हुएनस्वांग' यहाँ प्राचीन भारतीय साहित्य पढ़नेके लिये कुछ समय तक रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वलभी विहार— इस विहारमें एक बड़ा ग्रन्थागार था, जिसकी प्रतिष्ठात्री राजकुमारी दद्दा थी। यह राजा धारासेन प्रथमकी मौसीकी लड़की थी। गुहसेन (५५६) इस ग्रन्थागारकी पुस्तकोंके लिए रुपया देते थे। दक्षिण भारतके Inscriptions No. 604, 667, 671, 695 जिनकी तारीख खृष्टाब्द १२१६ पाई जाती है उसमें लिखा है कि यहाँके शिक्षकोंके वेतन और छात्रोंके व्ययके लिए समुचित प्रबन्ध होता था। अन्त Inscription में यहां पाया गया है कि टिन्नावली जिलेके सरस्वती-भवनके लिए एक बड़ा चन्दा दिया गया है।

प्राचीन समयमें मुद्रणयन्त्रालयोंके न होनेके कारण यह आवश्यक था कि राजे महाराजे और धनी लोग पुस्तकोंकी प्रतिलिपि करवानेके लिए पर्याप्त धन दें। इसी कारण हमारे शास्त्रोंमें पुस्तकदानका महाफल लिखा है। विश्वचराचरका भाग्य बुद्धि और विद्या पर ही निर्धारित है। इस लिए नन्दीपुराणमें लिखा है कि धर्मात्मा मनुष्यको पुस्तकदान देनेका व्रत ग्रहण करना चाहिए। पुराणोंमें भिन्न-भिन्न पुराणोंके दान देनेका अलग अलग फल लिखा है। उनमें यह भी बतलाया गया है कि किस महीनेमें कौनसा पुराण दान देना उपयुक्त है। शास्त्रों, पुराणों आदि धर्मग्रन्थोंके इन्हीं उपदेशोंके कारण हमारे देशमें बड़े बड़े ग्रन्थागार हिन्दुओं तथा बौद्धों के थे। 'देवपाल' ने नालन्दा विश्वविद्यालयको पांच गांव दानमें दिये थे। इसके फलस्वरूप 'रत्नसागर' ग्रन्थागारका निर्माण हुआ था। बंगालके प्रसिद्ध व्यापारी अविधाकरने नवीं शताब्दीमें पश्चिमी भारत के कौवेरी विहारके पुस्तकालयकी पुस्तकोंको मोल लेनेके लिए बहुत-सा धन दिया था।

खृष्टपूर्वाब्द ६वीं शताब्दीमें तक्षशिला-विश्वविद्यालयमें एक बड़ा ग्रन्थागार था। वैयाकरण पाणिनी और चन्द्रगुप्तके कूटराजनीतिज्ञ मंत्री चाणक्य दोनों यहां पढ़ते थे।

इतिहाससे यह ज्ञात होता है कि मुसलमानी राज्यके प्रारम्भसे भारतके बहुतसे ग्रन्थागार नष्ट हो गए। ८०० खृष्टाब्दमें 'बख्तियार खिलजी' ने राजा लोकपालका एक सुन्दर ग्रन्थागार जला दिया था। जिसमें ब्राह्मणों और बौद्धोंके अच्छे अच्छे ग्रन्थ थे। मुसलमानोंने 'लोकपाल' के पुत्र 'धर्मपाल' द्वारा प्रतिष्ठित एक और ग्रन्थागारको भस्मीभूत किया था।

प्राचीन समयमें एक साधुने वाराणसीमें एक बहुत बड़ा ग्रन्थागार स्थापित किया था। बंगालके सेन राजाओंके समय एक मिथिला, दूसरा नवद्वीपमें दो बड़े ग्रन्थागार थे। नवद्वीपके ग्रन्थागारकी पुस्तकों का उपयोग रघुनाथ, रघुनन्दन और श्रीचैतन्यदेवने किया था। राजा बल्लालसेनका एक अपना ग्रन्थागार था। बंगालके जगदल विहारमें एक ग्रन्थागार था जो कि जला दिया गया था।

नैपाल राज्यमें नेवार राजा लोगोंका अच्छा पुस्तक संग्रह था जिनको गोरखोंने जला दिया था। आज तक नैपालके राजकीय ग्रन्थागारमें बहुत प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकोंका संग्रह है। भारतीय इतिहाससे पता चलता है कि इस देशके समस्त हिन्दू राजे विद्यानुरागी थे और अपने राज्यमें पुस्तकों का संग्रह करते थे। इनमें गुजरात, ट्रावनकोर और राजपूताना विशेष उल्लेखनीय हैं। देशी राज्योंमें अभी तक हस्तलिखित पुस्तकोंका बड़ा संग्रह है; इस से ज्ञात होता है कि प्राचीन कालसे ही इनको पुस्तकों के संग्रह करनेकी रुचि है। यद्यपि विजेता मुसलमान शासकोंको देश जीतनेके लिए कुछ ग्रन्थागारोंको जलाना पड़ा था, इससे यह नहीं समझना चाहिए कि उनको विद्यासे प्रेम नहीं था। प्रायः सभी मुसलमान बादशाहोंके अपने ग्रन्थागार थे, जिनमें न केवल अरबी और फारसी भाषा ही की पुस्तकें थीं वरन् संस्कृत और अन्यान्य भाषाओंकी पुस्तकें भी रक्खी जाती थीं। दिल्लीका शाही ग्रन्थागार, हुमायूं बादशाह और गुलबदन बेगमके ग्रन्थागार उल्लेख करने योग्य हैं। नादिरशाह द्वारा यह ग्रन्थागार भी जलवा दिये गये थे।

यह वही देश है जहाँ पर एक रचनाके प्रत्येक अक्षरके लिए राजा लोग एक एक लाख रुपया देते थे। जहांके कवि कहते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अटूट विश्वास

[लेखक—विद्यारत्न श्री पं० देवीदत्तजी शर्मा ज्यौतिषी टकसालिये]

सत्ययुग त्रेता द्वापर और कलियुगमें भी ऐसे महानुभाव भक्त हो चुके हैं, जो अपना कल्याण करते हुए हमारे लिए भी आदर्श उदाहरण छोड़ गये हैं। जिनका हम लोग स्मरण करते करते आनन्दमें मग्न हो कर प्रेमाश्रुओंसे भक्त और भगवान्के चरणारविन्दोंको धोते हुए, अपने दुष्कर्मोंको भी धो डालनेका प्रयत्न करते हैं, अस्तु। जिस महानुभावके अटूट विश्वासकी मैं अपनी नूतन और छोटी सी लेखनीसे महिमा वर्णन करने जा रहा हूँ, वे शिमला प्रान्तमें अर्की राज्यके निवासी थे। अर्की राज्यके विशेषकर लोग वोहरे (वैश्य) हैं। वे प्रायः सब श्रीशालिग्रामजी के शुभ विग्रहके पूजक हैं। यह घटना उस समयकी है, जबकि भारतमें अंग्रेजी शासन वृद्धिको प्राप्त हो रहा था। शिमला प्रान्तके सब राज्य (रियासतें) स्वतन्त्र (रूलिङ्ग चीफ) हैं। अफीम आदि यहाँ सब कृषक लोग लगाते हैं। पहिले समयमें अफीम खाने की परिपाटी भी बहुत थी, और इनके घरोंमें अफीम की पेड़ियाँ बनाकर मिट्टीके बर्तन यानी चाट्टीमें रक्खी रहती थीं, अस्तु।

शरद् ऋतु थी, उक्त वैश्य महोदयने श्रीशालिग्राम जीके भोगके लिए पिन्नियें (नैवेद्य) बनाया हुआ था, और चाट्टी हीमें रक्खा हुआ था। नित्य नियमानुसार ब्राह्म-मुहूर्तमें उठ कर शय्या पर ही इष्टदेव हरि-स्मरणादि कर शौचादिसे निवृत्त हो, स्नान सन्ध्यादि कृत्य सम्पन्न कर अपने इष्टदेव श्रीशालिग्रामजीके श्री विग्रहका विधिवत्पूजन कर, मिट्टीकी चाट्टीमेंसे पिन्नी निकाल कर भगवान्को भोग लगाया। भोग लगाकर प्रेमसे नमस्कार की और प्रार्थना करके विष्णु-सहस्रनाम, श्रीमद्भगवद्गीता, गजेन्द्र-मोक्ष गायत्रीका जाप कर अर्घेमें पुष्प जल अक्षतादि ले कर कर्मसाक्षी श्रीसूर्यनारायणजीको अर्घ दे कर जब चरणामृत लिया और भोगके लिए हाथ बढ़ाया, तो आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा, जब देखा कि पिन्नी (नैवेद्य) के स्थानमें भूल वा भ्रमसे अफीमकी चाट्टीमें हाथ पड़ गया, और तीन या ३॥ साढ़े तीन छटांक अफीमकी पेड़ीका भगवान्को भोग लग गया।

हा! यह मुझसे क्या हो गया, कितना अनर्थ और अपराध हो गया, कि अपने ही हाथों अपने इष्टदेव परमेश्वरको विष अफीमका भोग लगा दिया। हा! दैव! इस अपराधके लिए कौनसा दण्ड होगा? इत्यादि बहुत कुछ पश्चात्ताप कर साथ ही विचार हुआ कि भोग अब मुझे भी खाना चाहिए, जब मेरे इष्टने ही विषका भोग कर लिया तो मुझे भी इनका प्रसाद पाना चाहिए। फिर साथ ही विचार हुआ कि अफीमकी पेड़ी ३ या ३॥ छटाँककी है, फिर क्या करूँ, किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो कर अपनी स्त्रीको जो कि बड़ी विदुषी व साध्वी थी बुलाया और कहा कि—"देखो प्रिये! मुझसे आज कितना अपराध होगया है, मेरी आत्मा शान्त नहीं होती, दुःख समुद्रमें डूबा जा रहा हूँ, यदि कोई इस अगाध दुःखसे निकालनेका उपाय तुम्हारी समझमें आवे तो जल्दी बतलाओ। देखो आज भूलसे श्रीभगवानको पिन्नी (नैवेद्य) की अपेक्षा अफीमका भोग लग गया है, अब मैं इस

"साहित्य-संगीत-कला-विहीनः,
साक्षात् पशुः पुच्छ-विषाण-हीनः।"

यह वही देश है जहाँ— "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" की शिक्षा दी जाती है। जिस देशमें विद्याका इतना आदर सम्मान था वहाँके लिए यह कहना कि पुस्तकालय नहीं थे — यह विश्वसनीय नहीं प्रतीत होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-सङ्कटमें धँसा जा रहा हूँ, कि यदि इसे खालूँ तो तीन या साढ़े तीन छटाँक अफीम है, यदि नहीं खाता हूँ, तो मैं भगवान्‌का भोग लगा चुका, इनका अनादर होता है, अब बताओ कि मैं कैसे करू ?

स्त्री बड़ी पतिव्रता सदाचारिणी साध्वी व विदुषी थी। यह सुन कर अत्यन्त दुखी हो कर बोली कि 'नाथ ! बात तो ऐसी ही है, जिससे मुझे भी महान् दुःख हो रहा है, तब भी मेरी तुच्छ बुद्धिमें एक उपाय आया है कि इस गांवके प्रायः सभी लोग अफीमका सेवन करते हैं, इस लिए आप थोड़ी-थोड़ी सबको बाँट आवें; थोड़ी सी मुझको दें, थोड़ी आप खा लें, इससे प्रसादका अपमान भी नहीं होगा और आपका भी कुछ न बिगड़ेगा, प्रसाद वितीर्ण हो जाएगा।' यह सुनकर वैश्यने कहा कि 'प्रिये! तुमने बहुत अच्छी युक्ति बताई है इससे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ। परन्तु तुम यह बतलाओ कि जब मैं पिन्नीका भोग लगाया करता था, तब भी क्या मैं गांवमें बांटता था ? यदि आज विषका भोग लग गया, तो गांवमें बाँट आऊँ, यह अनुचित है। मैं ऐसा कदापि नहीं करूँगा।' यह कह कर वैश्यने हाथ जोड़ कर श्रीशालिग्रामजीके श्रीविग्रहके आगे प्रार्थना की कि 'देव ! आज मुझसे बहुत भयङ्कर पाप हुआ, परन्तु भगवन् ! अज्ञानवश हुआ, सो प्रभो ! जब आपने ग्रहण कर लिया तो अब यह आपका उच्छिष्ट प्रसाद है, जिसको पाना मेरा धर्म है, आपने तो विषका भोग लगाया परन्तु मैं तो आपका उच्छिष्ट परम पवित्र प्रसाद ग्रहण कर रहा हूँ, जिसके प्रभावसे आधि व्याधिका नाश हो कर अन्तमें परम-पद प्राप्त होता है।' इस प्रकार बहुत विनम्र भावसे भगवान्‌के आगे प्रार्थना कर जो भी तीन या साढ़े तीन छटाँक भगवान्‌का उच्छिष्ट भोग अफीम थी, सब उस वैश्यने खा ली। सदाकी भांति ऊपरसे दूध पी लिया। इस घटनासे सारे ग्राम में हाहाकार मच गया, कि ऐसा हुआ, ऐसा हुआ, वैश्यने अफीम खाली। परन्तु भगवान्‌की लीला अपार है—

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥"

के अनुसार वैश्यको उस विष रूपी भोग खानेके पश्चात् जब डकार आई तो पिन्नीकी डकार आई, मरना व अनिष्ट तो कैसा। यह है एक सच्ची घटना और अपने इष्टदेव पर अटूट विश्वासका प्रभाव—

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

जन्मकुण्डलीके अनुभूत योग

(१) जन्मकुण्डलीमें सूर्य शुक्र कहीं भी इकट्ठे पड़े हों तो स्त्री रोगिणी होगी तथा वह मनुष्य सौन्दर्योपासक, गवेषक, कल्पना-प्रिय होगा।

(२) जन्मकुण्डलीमें बुध शनि कहीं भी इकट्ठे पड़े हों तो सन्तान सुख नहीं के बराबर होगा।

(३) जन्मकुण्डलीमें छठे घरमें उच्चका पापग्रह महा अशुभ होता है।

(४) जन्मकुण्डलीमें शुक्र छठे घरमें हो तो मौसी व्यभिचारिणी होगी।

(५) मं० बु० इकट्ठे पड़े हों तो दुष्ट बुद्धि होगा।

(६) बृहस्पति राहुका योग रोजगार नहीं करने देता यानी व्यापार निष्फल रहता है।

(७) सिंहका राहु लग्नमें तीक्ष्ण बुद्धि होनेका द्योतक है।

(८) पंचम घरमें उच्चका गुरु सन्तान हानि करता है।

(९) कुम्भका शनि पंचममें ७ या ५ पुत्र देता है। शुक्र ५ या ७ कन्या देता है।

(१०) लग्नमें बृहस्पति रहनेसे जातक साँवले रंगका होता है।

प्रेषक— राजाराम जैन, ज्योतिर्विद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धांजलिः

[कवयिता—साहित्याचार्य श्री पं० छत्रधर शर्मा जी दैवज्ञभूषण]

[स्व० श्री पं० मीठालालजी व्यासने ज्योतिश्शास्त्रकी जो महान् सेवा की है वह इतिहासमें सदा स्मरण रहेगी। इन पंक्तियोंके लेखकको ब्यावरमें दो बार आपसे विचार-विनिमय करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप अत्यन्त सरल मानस सौम्य-प्रकृतिके विद्वान् महानुभाव थे। आपकी संक्षिप्त आदर्श जीवनी हम आगामी अङ्कमें प्रकाशित करेंगे। —सं०]

योऽसौ ज्यौतिषशास्त्रबोधनिपुणो गर्गस्य संस्मारकः
प्रायः सत्यभविष्य-भाषणविधौ ध्यानी वसिष्ठोपमः।
मंत्रादेशपरोऽथ कौशिक इव प्रख्यातिमाप्तः पराम्
हा! हा! सोऽद्य विहाय नो दिवमितः श्रीमिष्टलालः सुधीः ॥१॥

अत्यन्त शोकका विषय है कि विद्वानोंमें श्रेष्ठ श्री मीठालालजी महाराज हम लोगोंको छोड़ कर आज (ज्ये० कृ० ६) स्वर्गको सिधार गए, जिन्होंने भारतीय प्राचीन ज्यौतिष-शास्त्रके तलस्पर्शी ज्ञानके हेतु साक्षात् गर्ग ऋषिके समान, यथार्थ भविष्य-कथनमें योगिराज वसिष्ठके सदृश, मंत्रशास्त्रके आदेशमें कौशिकके तुल्य प्रसिद्धिको पाया ॥ १ ॥

यो व्यासोपपदो विदामपि सतां मान्यो गरीयान् गुरुः
सन्दर्भान् बहुधा च यो लिखितवान् वृष्टिप्रबोधादिकान्।
छात्राणां हितवृद्धिसंयतमनाः कारुण्यपूर्णाशयः
स्वर्यातः स सुधीरिमं कलयतां श्रद्धांजलिं मंजुलम् ॥२॥

जिनका व्यास उपपद था और जो विद्वन्मण्डली एवं सभ्य भावुक पुरुषोंके श्रद्धेय गुरु थे, जिन्होंने वृष्टिप्रबोध (भारतका प्राचीन वायुशास्त्र) आदि अनेक उपयोगी ग्रन्थोंका निर्माण व सम्पादन किया, और जो अपने विद्यार्थियोंकी हितवाञ्छनामें सर्वदा दत्तचित्त एवं करुणरस-परिपूर्ण थे, ऐसे स्वर्गीय श्रीगुरुचरणोंमें विनयपूर्ण श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत हो ॥ २ ॥

उपकरणचणस्य छात्रवृन्दारकस्य
गुरुवर! महिमा ते किं मया वर्णनीयः।
इह किमु कथयेऽहं राजपुत्रप्रदेशे
करुणरसमहाऽब्धिस्त्वादृशस्त्वं हि विद्वान् ॥३॥

हे गुरुप्रवर! अपने शिष्यवर्गके उपकारविधिमें अनवरत तत्पर आपकी महिमाका वर्णन मुझ जैसे अल्पज्ञसे कैसे किया जाए, क्योंकि इस राजपूताना प्रान्तमें करुणरसके महासागर विद्वानोंमें आप जैसे आप ही थे, अर्थात् आपके समान करुणरस परिपूर्ण विद्वान् राजपूताना (मरुभूमि) में कोई दूसरा प्रतीत नहीं होता ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वदाश्रयास्तत्परमाश्च मादृशाः
छात्राः कमिष्यन्ति शरण्यमन्यम् ।
इत्याकुलं मे हृदयं पुनस्त्वां-
दिदृक्षते त्वं पुनराव्रजेह ॥४॥

आपके सहारे जीवनयात्रा चलानेवाले, नये नये विज्ञान व सद्विद्या सीखनेवाले, आपकी कृपासे लब्धप्रतिष्ठ मुझ जैसे विद्यार्थी अब आपके सिवाय दूसरे किस सहारे (रक्षक, शिक्षास्थान) को पाएँगे ? इस चिन्तासे पर्याकुल मेरा हृदय यह वाञ्छा रखता है कि आप फिरसे एक बार यहाँ पदार्पण करें और हमको दर्शन दें, आपके दर्शनोंकी इच्छा उत्कट हो रही है ॥ ४ ॥

सा ते बलिष्ठा तनुरुत्तमाऽपि
महामृगेन्द्रेण समा मुखश्रीः ।
भुजावहेर्भोगसमौ पदाब्जे
सुमंजुले नो हृदयान्न यान्ति ॥५॥

आपकी वह बलिष्ठ सुन्दर शरीरयष्टि, बलशाली सिंहके समान तेजोमय मुखश्री, सर्पके शरीरके तुल्य भुजदण्ड और मनोहर चरणकमल हमारे हृदयसे बाहर जाना नहीं चाहते ॥ ५ ॥

किं सर्वतोभद्रमिदं स्वकीयं
देवान् दिवं शिक्षयितुं गतोऽसि ।
आस्तां गुरुत्वं त्रिदशेष्वलं ते
कृपा तु रक्ष्यैव नु मादृशेऽपि ॥६॥

अहो ! क्या आप अपना सब प्रकार कल्याणमय उपदेश व "सर्वतोभद्रचक्र" नामक पुस्तकका पाठ देवताओंको देनेके लिए स्वर्गको सिधारे हैं ? यहाँकी भांति आप अमरगणमें भी गुरुपदवीको प्राप्त होवें, पर मुझ जैसे बालक (प्रधानशिष्य) पर सदा कृपा ही रक्खें ॥ ६ ॥

हरिस्तवात्मानममोघशान्तिं-
संप्रापयत्वद्य शिवः शिवत्वम् ।
त्वदीयपादाम्बुजयोश्चकास्तां—
श्रद्धांजलिश्छत्रधरोपक्लृप्तः ॥७॥

भगवान् विष्णु आपकी आत्माको सफल शान्ति और भगवान् शिव शिवत्व (पूर्णमोक्ष) को प्राप्त करावें। यह छत्रधर शर्मा निर्मित "श्रद्धाञ्जलि" भावपूर्ण अन्तिम विनय आपके चरणकमलोंमें सदैव शोभित हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री १०५ मान् बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्रीमद्राजाधिराज श्रीदुर्गासिंह C. I. E. महोदयानां

जन्मोत्सवेऽभिनन्दनपत्रमिदम्

श्रीमान् भूपशिरोमणिर्नयुतो विख्यातकीर्तिर्वशी—
धर्मात्मा शरदिन्दुसुन्दरवपुर्यज्वाऽम्बरीषोपमः ।
भृत्यामात्यसुहृज्जनैरनुदिनं संसेव्यमानः सुधी—
दुर्गासिंह महानृपः शरणदो जीव्यात्समानां शतम् ॥१॥

गोभूहिरण्याम्बरवृत्तिदाता विज्ञोऽर्थिनां कल्पतरुर्वरेण्यः ।
यज्वा वशी धर्मरतो दयालुर्भूयाच्चिरायुर्नृपतिः शरण्यः ॥२॥
जयति जगति देवः श्रीबघाटाधिपो हि
प्रथितगुणगणाढ्यो दीनबन्धुः शरण्यः ।
खलबलदलनार्हो दीर्घजीवी शताब्दं
भवतु शरदि नूनं चन्द्रतुल्यो जनानाम् ॥३॥
नगाधिराजैककृताधिवासः केदारनाथो बदरीश्वरश्च ।
महौजसं श्रीलबघाटपालं पायाच्छताब्दं नरवृन्दपालम् ॥४॥

प्रार्थयिता—भवानीदत्तः शर्मा व्याकरणाचार्य्यः

❀ कौमुदी-महोत्सव ❀

राका-शशाङ्क-शरदङ्क-मृगाङ्कमेत्य
स्वाध्यायमातनुत मा कुरुत प्रमादम् ।
ज्योत्स्नोत्सवोऽस्य रचयेत् कमपि प्रकाशं
श्रीराष्ट्रजीवनपथं जनजागराय ॥

सोलहों कलाओंसे परिपूर्ण राका (पूर्णमासी) के चन्द्रमाके समान इस 'शरदङ्क' रूपी चन्द्रमाको प्राप्त कर स्वाध्याय करिए, तथा इसका विस्तार करिए, इसमें कहीं प्रमाद न करना। इस शरदङ्करूपी चन्द्रमा का यह कौमुदीमहोत्सव उस अनिर्वचनीय अत्यन्त प्रकाशमान राष्ट्रको जगानेके मार्गका लोगोंको उद्बुध करनेके लिए निर्माण करेगा।

—अ० बा० आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिर्विदोंसे कुछ प्रश्न

[लेखक—गोस्वामी श्री पं० विश्वम्भरदयालु जी शर्मा शास्त्री ज्योतिषी]

[लेखक ज्योतिष कर्मकाण्ड धर्मशास्त्रादि कई विषयोंके वयोवृद्ध पारंगत विद्वान् हैं। आपने ये ५ प्रश्न प्रकाशनार्थ भेजे हैं, इन्हें हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। ज्योतिर्विज्ञानके विशेषज्ञ विद्वान् इन प्रश्नोंके समुचित सप्रमाण शास्त्रीय युक्तियुक्त उत्तर लिख कर हमारे पास भेजें, वे उत्तर भी 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित होंगे। जिन विद्वान् महानुभावोंके उत्तर विद्वान् लेखक (प्रश्नकर्त्ता) वा हमारे उत्तरोंके साथ मिलेंगे अथवा सर्वश्रेष्ठ समझे जावेंगे, वे लेखक संस्था की ओरसे पुरस्कृत (सम्मानित) भी किये जाएँगे। —सम्पादक]

सं० १९६५ वि० के श्रावण मासमें एक मासके लिए मैं काशी गया था, वहाँ कई प्राचीन विद्वानोंके दर्शन किये, श्री म० म० पं० सुधाकरजी द्विवेदीके दर्शनोंका भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय मैंने उनसे ५ प्रश्न किये थे और उत्तर देनेके लिए अपना पता भी लिखवा आया था, परन्तु थोड़े समय के अनन्तर ही उनका (श्री० सुधाकरजी महाराजका) स्वर्गवास हो जानेसे उन प्रश्नोंका उत्तर न मिल सका। आज अपने वे ही प्रश्न 'श्रीस्वाध्याय' के विद्वान् पाठकोंके सम्मुख उपस्थित कर उत्तर प्राप्त होनेकी आशा करता हूँ। इसी पत्रमें इन प्रश्नोंका युक्तियुक्त शास्त्रीय उत्तर प्रकाशित होनेसे सर्व साधारण ज्योतिर्विदों और पाठकोंकी ज्ञानवृद्धि और मनो-विनोदके साथ साथ जिन शङ्काकर्त्ताओंकी ज्योतिशशास्त्र पर अश्रद्धा हो रही है उनका आक्षेप भी दूर होगा। प्रश्न निम्नाङ्कित हैं—

१—ग्रहोंके उच्च नीचादि किस सिद्धान्तके अनुसार किस आधार पर निश्चित किये गये हैं? जातक ग्रन्थोंमें "अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीराः झषवणिजौ च दिवाकरादि तुङ्गाः" के अनुसार सूर्य मेष, चन्द्रमा वृषभ, मङ्गल मकर इत्यादि क्रमसे उच्चराशियाँ मानी हैं। यहाँ तो मेषराशिके १० अंश पर सूर्य परमोच्च माना गया है और ग्रहलाघवमें "सूर्यमन्दोच्चमष्टाद्रयोऽशाः भवेत्" लिख कर सूर्य मन्दोच्च मिथुनके १८ अंश पर माना है, इसका क्या कारण?

२—ज्योतिषीगण जन्मपत्रीमें कुण्डलीके अनुसार फल कहते हैं "यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्यतस्यास्ति वृद्धिः पापैरेवं तस्य भावस्य हानिः...." पुनः "स्थान हानि करो जीवः स्थान-वृद्धिः करः शनिः" यह गुणदोष किस आधार पर गुरु शनैश्चरको प्राप्त हुआ? व्युत्पत्तिके साथ समाधान होना चाहिए।

३—विंशोत्तरी महादशामें आ० चं० भौ० रा० जी० श० बु० के० शु० यह दशा क्रम किस आधार पर रक्खा गया है? मङ्गलके आगे बुध होना चाहिए परन्तु बुधके स्थानमें राहु क्यों और किस आधारसे लिया गया? तथा गणनारम्भ नक्षत्र कृत्तिका ही क्यों माना गया?

४—सभी आस्तिक श्रद्धालु जन ज्योतिषका कार्य करने वालोंसे यात्रा मुहूर्त पूछते हैं, उनको पञ्चाङ्ग देख कर सम्मुख दक्षिण चन्द्रमाका मुहूर्त बताया जाता है। पूर्वादि दिशाओंमें सम्मुख दक्षिण चन्द्रमा देखा जाता है। मेष सिंह धनुः का चन्द्रमा पूर्वमें सम्मुख और उत्तर यात्राके लिए दक्षिण होता है। इसी प्रकार कर्क वृश्चिक मीनके चन्द्रमाको उत्तरके लिए सम्मुख बता कर किसीको मुहूर्त बताने पर यदि कोई यह पूछ बैठे कि चन्द्रमा तो पूर्वमें ही उदय होता है, उत्तरमें कोई दूसरा चन्द्रमा उदय होता है क्या? या यही चन्द्रमा चतुर्दिक्में भ्रमण करता है? इसका सप्रमाण समाधान होना चाहिए।

५—दिन प्रमाणानुसार सूर्यकी न्यूनाधिक गति वैशाख ज्येष्ठमें ५७।३४ तक और पौष माघमें ६१।२६ तक हो जाती है। अहोरात्र पूरे ६० घटीका होता है तब सूर्यगतिमें ३।४ कलाका यह अन्तर क्यों होता है? इन प्रश्नोंका सप्रमाण शास्त्रीय उत्तर लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ ! महलोंमें रहने वालों !

[श्री पं० हरिश्चन्द्र जी जोशी 'मञ्जुल']

ओ ! महलोंमें रहने वालों !

क्या तुमको उस दीन कृषकका कभी ध्यान भी आता है।
लहू पसीना कर जो निज जीवनसे तुम्हें जिलाता है॥
वह केवल सूखे टुकड़ों पर ही जीवन करता उत्सर्ग !
फिर भी तुम उसके अन्तरमें निर्दयताकी ज्वाला बालो॥
ओ ! महलोंमें रहने वालो ! ॥ १ ॥

शिशिर-निशामें नभके नीचे कितने ही कृषकोंके लाल।
तड़प-तड़प कर तज देते हैं जीवन जीवनके जञ्जाल॥
ओ ! धन-मदिराके मतवालों ! सोचो कुछ,तो होश सम्भालो।
वे भूखे मर जांय ! मरें ! तुम दूध पिला कर कुत्ते पालो॥
ओ महलोंमें रहने वालो ! ॥ २ ॥

क्या दीनोंको देख तड़पते नयन जल नहीं जाते हैं।
करुण-रुदन चीत्कार श्रवणसे हृदय हिल नहीं पाते हैं॥
तुम सोओ सुखकी नींदें वे सिसक सिसक काटें रातें।
उन्हें मिले भरपेट न खाना तुम मदिराके प्याले ढालो॥
ओ ! महलोंमें रहने वालो ! ॥ ३ ॥

तड़प उठोगे तुम भी देखो इस धनकी ही ज्वालासे।
यम कोदण्ड टङ्कोरें लेगा तुम सबकी मधुशालासे॥
बिजली बनकर कड़क उठेगी उसी विपञ्चीकी झङ्कार।
जिसको कभी कहा करते थे साकी ! मोहन यन्त्र उठालो॥
ओ ! महलोंमें रहने वालो ! ॥ ४ ॥

नूपुरकी झङ्कार झँकोरें बनकर नभमें छा जायेगी।
विलासिताके गहरे नदमें मनकी आशा बह जायेगी॥
हँसलो ! हँसलो ! जी भर हँसलो बस अन्तिम बार हँसालो।
जो जीमें आता है करलो मनकी साध मिटा डालो॥
ओ ! महलोंमें रहने वालो ! ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[जिन पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियाँ प्राप्त होंगी उन्हींकी समालोचना 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित हो सकेगी। एक प्रतिका केवल संक्षिप्त परिचय मात्र (नाम मूल्यादि) प्राप्ति स्वीकार रूपमें प्रकाशित होगा। निम्नाङ्कित पुस्तकोंकी एक-एक प्रति हमें प्राप्त हुई, सधन्यवाद स्वीकृत हैं। —सम्पादक]

'दुर्गाभ्युदय नाटकम्'

पृष्ठ ८०, मूल्य ।।।), लेखक और प्रकाशक—सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्री पं० छज्जूराम जी शास्त्री विद्यासागर प्रधानाध्यापक साङ्गवेदविद्यालय देहली।

'वेदान्तसार' (सारबोधिनी टीका)

पृष्ठ ५६, मूल्य ।=), टीकाकार—सर्वतन्त्रस्वतन्त्र वि० सा० श्री पं० छज्जूराम जी शास्त्री, प्रकाशक—भार्गव पुस्तकालय गायघाट बनारस।

'यह असन्तोष क्यों ?'

पृष्ठ ३०६, मूल्य १।।), लेखक और प्रकाशक—श्री पं० रामचन्द्रजी शर्मा बी०ए० रिटायर्ड हैडमास्टर, रामनिवास, अम्बाला शहर।

'द्वापरकी राज्य-क्रान्ति'

पृष्ठ ८८, मूल्य ।।=), लेखक—श्री पं० किशोरीदास जी वाजपेयी शास्त्री, हिमालय एजेन्सी कनखल यू०पी०।

'लेखन कला'

लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त ही हैं।

'वर्षाज्ञान'

पृष्ठ ३०, मू० ≡), सङ्कलनकर्ता—श्री पं० नरोत्तम जी व्यास, प्रकाशक—मरुधर प्रकाशन मन्दिर जोधपुर।

'भक्त सुदामा'

पृष्ठ ५०, मूल्य ।।), लेखक—श्री पं० यज्ञदत्त शर्मा एम० ए०, प्रकाशक—साहित्य-सरोवर सहारनपुर।

'भक्त नरसी'

पृष्ठ २८, मूल्य =) लेखक—श्री 'मुकुट' प्रकाशक—साधना कुटीर सहारनपुर यू० पी०।

'राहु मन्त्रभाष्य'

पृष्ठ १४, मूल्य लिखा नहीं। लेखक और प्रकाशक—राजकुमार गुरु श्री पं० तारादत्त जी राजज्योतिषी, जुब्बल (शिमला)

विवाह मुहूर्त संवत् २०००

[लेखक—श्री पं० गोविन्दजी मिश्र]

मार्गशीर्ष कृष्णा १० सोमवार ता० २२ नवम्बर उ० फा० भे रेखा ७, ऽश० ।।।।ऽचौ०ऽ२३।।, ल० ५
मार्गशीर्ष कृ० ११ मंगलवार ता० २३ नवम्बर हस्त भे रे० ८, ।।।।।ऽऽ२४।।, ल० ५
मार्गशीर्ष शुक्ला २ सोमे ता० २६ नवम्बर मूल भे रे० ७, ।।।।ऽश०ऽनृ०पं०ऽ।।, ल० ५
मार्गशीर्ष शुक्ला १५ शनिवार ता० ११ दिसम्बर रोहिणी भे रे० ७, ।।।ऽमं०।।ऽऽ१४।।, दिवालग्न ११
मार्गशीर्ष शुक्ला १५ शनिवार ता० ११ दिसम्बर मृग. भे रे० ७, ।।।ऽमं०।।ऽऽ१४।।, ल० ६
पौष कृष्णा १ रविवार ता० १२ दिसम्बर मृग. भे रे० ७, ।ऽ।ऽश।ऽसू०।।।।, दि० ल० ६-११ सम
नोट:—इस वर्ष सिंहस्थ बृहस्पति विचारणीय नहीं है, देखिये पृष्ठ ५८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभार-प्रदर्शन

वर्तमान विश्वव्यापिनी विषम-परिस्थितिमें पर्वतके एकान्त कोनेमें पत्रके लिए आधुनिक सभ्यताकी समस्त सुविधाओं (मुद्रणयन्त्र-प्रेस-कागज प्रचारक्षेत्र आदि आदि) से दूर रह कर विजयादशमीके इस शुभावसर पर तृतीय-वर्षका यह प्रथमाङ्क इस रूपमें विज्ञपाठकोंको भेंट करते हुए हमें महान् आनन्द हो रहा है। जहाँ वर्तमान समयमें पत्रोंकी तो बात ही क्या है मनुष्य-मात्रका जीवन संशयास्पद होता जा रहा है, वहाँ 'श्रीस्वाध्याय' का निरन्तर प्रकाशित होते रहना और उत्तरोत्तर उन्नति करना हमें स्वयं आश्चर्यमें डालनेवाला है। ऐसी स्थितिमें यह निश्चित है कि 'श्रीस्वाध्याय' पर किसी महान् विभूति वा अदृष्ट असीम-शक्तिका वरद हाथ है। जिस महान् शक्तिकी प्रेरणासे 'श्रीस्वाध्याय' ने जन्म लिया है वही इसे विशुद्ध सुवर्णकी भांति अग्निपरीक्षासे निकाल कर यशस्वी बना रही है। प्रत्यक्षमें जिन महापुरुषका कृपापात्र बननेका हमें सौभाग्य प्राप्त है वे हैं 'श्रीस्वाध्याय' के जन्मदाता और श्रीस्वाध्यायसदन संस्थाके संस्थापक सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य श्री १०८ मान् पूज्यपाद अमृतवाग्भवजी महाराज। आप ही के शिव-सङ्कल्पका यह फल है कि आज 'श्रीस्वाध्याय' इस रूपमें पाठकोंके सामने प्रस्तुत है। अतः सर्वप्रथम हम महामाया श्रीजगदम्बा और उक्त आचार्यचरणोंके चरणोंमें नतमस्तक आभारी हैं। इसके अनन्तर हम अपने महामान्य संरक्षक बघाट महीमहेन्द्र धर्म-मार्तण्ड श्री १०५ मान् राजा साहब दुर्गासिंहजी बहादुर C. E. I. सोलन-नरेश महोदय और भरतपुरके राव राजा श्री १०५ मान् कैप्टन गिरिधारीशरणसिंहजी तथा सहायक महानुभावोंके अत्यन्त आभारी हैं, आप महानुभावोंकी उदार आर्थिक सहायतासे ही 'श्रीस्वाध्याय' को आज यह गौरव प्राप्त हो सका है।

इस तृतीय वर्षके आरम्भसे अखण्ड सौभाग्यवती श्री १०५ मती राणीसाहिबा वृन्दावनवालीजी (भरतपुर) ने 'श्रीस्वाध्याय' का सहायकत्व स्वीकार कर महान् सुकार्य किया है, अतः उन्हें विशेष धन्यवाद हैं।

पत्रकी उन्नति विद्वान् लेखकों और ग्राहकों पर ही अवलम्बित है, अतः हम अपने उन मान्य विद्वान् लेखकों और प्रेमी ग्राहकोंके भी हृदयसे आभारी हैं — जिन्होंने अपनी मौलिक रचनाएँ भेज कर तथा ग्राहक बन कर सहयोग दिया है।

श्रीयुत पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री, श्री० वासुदेवशरणजी अग्रवाल, श्री० पं० हनुमान् शर्माजी, श्री० वि० भू० पं० दीनानाथजी शास्त्री, श्री० तारादत्तजी, श्री० भगवान्दासजी केला, श्री० पं० मोहन शर्माजी, श्री० अवनीन्द्रकुमारजी विद्यालङ्कार, श्री० भूपेन्द्रनाथजी वन्द्योपाध्याय, श्री १०८ मुनि श्री वीरविजयजी महाराज, श्री० पं० भवानीदत्तजी व्याकरणाचार्य, श्री० पं० चन्द्रभूषणजी वेदाचार्य आदि जिन सहृदय विद्वानोंने अपने मौलिक लेख भेज कर इस अङ्कको अलंकृत किया है उनके हम हृदयसे आभारी हैं।

श्री पं० शक्तिप्रसादजी शुक्ल, श्री पं० गोविन्दजी मिश्र, श्री पं० बैजनाथजी उपाध्याय, श्री पं० देवकीनन्दनजी, श्री पं० जटाशंकरजी, श्री पं० कन्हैयालाल राधारमणजी शास्त्री, श्री पं० शिवशरणजी, श्री० बा० रामरत्नजी, श्री कुँवर सुरेन्द्रदेवजी, श्री बा० हंसराजजी, श्री ला० शिवप्रसाद बांकेलालजी, श्री ला० जगन्नाथजी अग्रवाल तथा अन्य कई मित्रोंने 'श्रीस्वाध्याय' के प्रचारमें पूर्ण सहयोग दिया अतः इन मित्रोंके भी हम आभारी हैं।

दिल्लीमें आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (गाडो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया मार्केट) के अध्यक्ष वैद्यवर कविराज श्री पं० मोहनलालजी शास्त्री भिषगाचार्य और 'वीर अर्जुन' के सम्पादक श्री पं० रामगोपालजी विद्यालङ्कार तथा श्री अवनीन्द्रकुमारजी विद्यालङ्कारने आरम्भसे ही "श्रीस्वाध्याय' के लिए जो हार्दिक सहयोग दिया है उसे हम कदापि नहीं भुला सकते। इन्हें धन्यवाद दे कर हम इन सुहृदोंके विशुद्ध प्रेमका मूल्याङ्कन करना उचित नहीं समझते।

भारतके गण्य मान्य धुरन्धर विद्वानों और प्रसिद्ध पत्रकारोंने 'श्रीस्वाध्याय' की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। हमारे पास आये हुए अनेकों सम्मति-पत्र (जिसका कुछ भाग 'श्रीस्वाध्याय' में भी निरन्तर प्रकाशित हो रहा है) इसका अप्रत्यक्ष प्रमाण है। कई सहयोगी पत्रकार अपना बहुमूल्य प्रकाशन (दैनिक साप्ताहिक मासिक पत्र) परिवर्तन-में भेज कर हमें सहयोग दे रहे हैं, उन सब विद्वानों और सहयोगियोंके हम हृदयसे आभारी हैं।

जहाँ हम विद्वान् और श्रीमानोंका सहयोग चाहते हैं वहाँ हमें सर्वसाधारण जनता (सामान्य ग्राहकों) के सहयोगकी भी अत्यधिक आवश्यकता है, अतः इस अवसर पर हम अपने प्रेमी पाठकोंसे साग्रह अनुरोध करेंगे कि वे अधिकसे अधिक ग्राहक बनानेका प्रयत्न करें। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही अधिक ठोस सेवा हम कर सकेंगे। सन्त कविकी—

बहुत निबल मिलि बल करैं, करैं जो चाहे सोय।
तिनकनकी रसरी करी, 'करी' निबन्धन होय॥

इस सूक्तिके अनुसार छोटेसे छोटे व्यक्तिका संगठित सहयोग या प्रत्येक ग्राहकका वार्षिक मूल्य 'श्रीस्वाध्याय' के लिए बलदायक सिद्ध हो कर राष्ट्र-कल्याणका मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

विनीत—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सम्पादक)

सहयोगियोंका स्वागत

'श्रीस्वाध्याय' के परिवर्तनमें निम्नाङ्कित दैनिक साप्ताहिक अर्धसाप्ताहिक पाक्षिक मासिक और त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूपसे आ रही हैं, अतः इन सब सहयोगियोंका हम स्वागत करके इनके सञ्चालकों एवं सम्पादकोंको हार्दिक धन्यवाद देते हैं। आशा है अन्य सहयोगी भी इसी प्रकार अपना अपना प्रकाशन परिवर्तनमें भेज कर श्रीस्वाध्यायसदन संस्थाको उन्नत करनेमें सहयोग देंगे। 'साधना' 'सुधा' 'नवज्योति' 'जीवन' 'साहित्य-सन्देश' आदि जिन कई सहयोगियोंका प्रकाशन वर्तमान विषम परिस्थितिके कारण अनिश्चित कालके लिए स्थगित हो गया है उन्हें भी हमारी ओरसे 'श्रीस्वाध्याय' नियमित रूपेण भेजा जा रहा है।

दैनिक—

१. 'हिन्दुस्तान', २. 'विश्व-बन्धु', ३. 'वीर अर्जुन'।

अर्धसाप्ताहिक—

४. 'केसरी'।

साप्ताहिक—

५. 'आज', ६. 'कर्मवीर', ७. 'स्वराज्य', ८. 'सिद्धान्त', ९. 'सन्मार्ग', १०. 'लोकवाणी', ११. 'मीराँ' १२. 'श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार', १३. 'अङ्कुश', १४. 'आर्य-मार्तण्ड'।

पाक्षिक—

१५. 'मानवाश्रम', १६. 'मधुकर', १७. 'भारतीय-समाचार'।

मासिक—

१८. 'कल्याण', १९. 'विक्रम', २०. 'वीणा', २१. 'चण्डी', २२. 'भारतीय-धर्म', २३. 'सन्मार्ग', २४. 'जीवन साहित्य', २५. 'संस्कृत-रत्नाकर', २६. 'धारा', २७. 'सतयुग', २८. 'हिन्दूगृहस्थ', २९. 'गौतम', ३०. 'गौतमसखा', ३१. 'उदय', ३२. 'ग्रामीण'।

त्रैमासिक—

३३. 'विश्वभारती पत्रिका', ३४. 'त्रैमासिक गुजराती', ३५. 'सूर्योदय', ३६. 'सम्मेलन पत्रिका'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहकोंसे आवश्यक निवेदन

गताङ्ककी सूचनाके अनुसार कई प्रेमी ग्राहकोंने भाद्रपद शुक्ल १५ ता० १४ सितम्बरसे पूर्व ही अपना तृतीय वर्षका मूल्य २।-) भेज दिया था। परन्तु जिन कुछ ग्राहकोंने ता० १४ सितम्बरके अनन्तर भी २।-) ही भेजे हैं, उनसे निवेदन है कि वे नियमानुसार ।।≡) और भेजनेकी कृपा करें। क्योंकि मूल्यमें वह सुविधा केवल १४ सितम्बर तक ही थी। जिन ग्राहकोंने अपना तृतीय वर्षका मूल्य अभी तक नहीं भेजा है वे शीघ्र ही ३) रु० भेज देंगे तो उन्हें यह अङ्क प्राप्त हो सकेगा, अन्यथा विलम्ब करने पर द्वितीय वर्षके प्रथमाङ्ककी भांति इस अङ्कसे भी उन्हें वञ्चित रहना पड़ेगा।

बहुतसे ग्राहक वार्षिक मूल्य भेजते समय मनी-आर्डरके कूपन पर अपना नाम पता और ग्राहक संख्या नहीं लिखते और कई उर्दूमें अस्पष्ट अक्षरोंमें लिखते हैं, इससे हमें बड़ी कठिनाई होती और अङ्क भेजनेमें भी विलम्ब हो जाता है। अतः पुराने ग्राहकोंको अपनी ग्राहक संख्या (जो 'श्रीस्वाध्याय' के रैपर—पतेके कागज—पर लिखी रहती है) और नये ग्राहकोंको अपना पूरा पता कूपन पर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

संस्थाकी ओरसे जो पुस्तकें प्रकाशित हैं या होती हैं वे ग्राहकोंको एक ही बार भेजी जाती हैं। प्रतिवर्ष वे ही पुस्तकें दुबारा भेजनेका नियम नहीं है। अब इस तृतीयवर्षमें जिन नये ग्राहकोंके वार्षिक मूल्यके साथ उपहार पुस्तकोंका मार्ग व्यय ≡) अधिक प्राप्त होगा उन्हींको तीनों उपहार पुस्तकें भेजी जा सकेंगी। कागजकी भीषणतम महर्घता और दुष्प्राप्यताके कारण द्वितीयवर्षमें संस्थाकी ओरसे केवल एक ही पुस्तक (सं० २००० वि० के दैनिक ग्रह) प्रकाशित हुई थी, उसकी सब प्रतियाँ द्वितीयवर्षके ग्राहकोंमें वितीर्ण हो चुकी हैं। अब इस तृतीयवर्षमें 'श्रीराष्ट्रालोक' राष्ट्रभाषानुवाद सहित प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है। यह ग्रन्थ तृतीयवर्षके सभी ग्रहकोंको मार्गव्यय आने पर बिना-मूल्य भेजा जा सकेगा।

अबकी बार यह 'विशेषाङ्क' प्रत्येक ग्राहकके नाम पोस्ट-आफिसका प्रमाणपत्र Postal Certificate ले कर निश्चित तिथिसे एक दिन पूर्व ता० ७ अक्टूबरको दिल्लीसे ही भेजा जा रहा है। जिन ग्राहकोंके ≡) अधिक आये थे उन्हें रजिस्ट्री द्वारा भी साथ ही भेजा जा रहा है। पिछली बार कई ग्राहकोंको अङ्क न पहुँचनेकी शिकायत आनेके कारण उनको दुबारा भेजना पड़ा था। किन्तु कागज और छपाईके इस भीषणतम दुष्कालमें दुबारा पत्र भेजना प्रत्येक पत्र सञ्चालकके लिए असह्य होता है। कुछ ग्रहक ऐसा भी करते हैं कि किसी कारण वश अङ्क उनके पास न रहा या कोई मित्र उठा कर ले गया तो वे पत्र न पहुंचनेकी शिकायत लिख कर कार्यालयसे दूसरी प्रति मँगवानेका प्रयत्न करते हैं। ऐसा करना सर्वथा नीति विरुद्ध और पत्रके लिए हानिकारक है। जिन ग्राहकोंको आश्विन शु० १३ तक यह अङ्क न मिले उन्हें तत्काल अपने स्थानीय पोस्ट आफिसमें पड़ताल करनी चाहिए।

निवेदक— व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम और द्वितीय वर्षके गतांक

'श्रीस्वाध्याय' के प्रथम और द्वितीय वर्षके गत आठों अङ्कोंकी भारतके गण्य मान्य धुरन्धर विद्वानों एवं सुप्रसिद्ध समाचारपत्रोंने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इनमें सभी लेख सारगर्भित मौलिक और ठोस सामग्री लिए हुए हैं, साथ ही प्रत्येक अङ्ककी भविष्यवाणियां ६५ प्रतिशत ठीक मिली हैं। इस सम्बन्धमें कुछ प्रसिद्ध पत्रों और विशिष्ट विद्वानोंकी विस्तृत सम्मतियोंमेंसे कतिपय सम्मतियोंका कुछ भाग गताङ्कोंमें प्रकाशित किया जा चुका और अब भी कुछ विशेष २ नई सम्मतियाँ प्रत्येक अङ्कमें (दो पृष्ठोंमें) प्रकाशित की जाती हैं। इतने पर भी कई सहृदय विद्वानोंकी सम्मतियाँ रह ही जाती हैं। यदि उन सबको अक्षरशः प्रकाशित की जावे तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। इसीसे आप अनुमान लगा सकते हैं कि ये अङ्क कितने ठोस और उपादेय होंगे। प्रथम वर्षके चारों अङ्कोंकी प्रतियाँ अब बहुत थोड़ी शेष हैं, अतः इसका (प्रथम वर्षकी फाइलका) मूल्य ४।।) रु० निर्धारित किया गया है।

नवीन ग्राहकोंको विशेष लाभ

'श्रीस्वाध्याय' के स्थाई ग्राहक वर्षारम्भसे ही बनाये जाते हैं, अर्थात् जिस वर्षमें जो ग्राहक हो उसको आश्विनके प्रथमाङ्कसे आषाढ़ तकके चारों अङ्क लेने आवश्यक हैं। अब हमारे पास द्वितीय वर्षके प्रथमाङ्क(शरदङ्क) की फाइलमें केवल २५-३० प्रतियाँ शेष हैं, और इस अङ्ककी मांग बहुत अधिक है अतः अब इसका मूल्य ३) रु० निर्धारित किया गया है। अर्थात् द्वितीय वर्षकी पूरी फाईल (चारों अङ्कों) का मूल्य ६) रु० और प्रथमाङ्कके बिना प्रत्येक अङ्कका मूल्य १) रु० है। अत्र इस तृतीय वर्षमें जो नये ग्राहक होंगे उनको (यदि वे चाहेंगे तो) प्रथम वर्षकी फाईल ४) रु० में और द्वितीय वर्षके तीनों अङ्क २।।) रु० में भेजे जा सकेंगे। तीनों उपहार पुस्तकोंके लिए मार्ग व्यय (डाकखर्च) के ≡) तीन आने अधिक आने चाहिएँ। वी० पी० भेजनेका नियम नहीं है अतः प्रत्येक ग्राहक को अपना मूल्य मनीआर्डर द्वारा ही भेजना चाहिए।

कई ग्राहक वर्षके बीचके किसी अङ्कसे (पौष, चैत्र या आषाढ़से) ही ग्राहक बनानेके लिए लिख कर हमें वाध्य करते हैं, किन्तु हमारा नियम वर्षारम्भसे (आश्विन माससे) ही वर्षभरके लिए स्थाई ग्राहक बनानेका है। जो सज्जन आश्विनके पहले या पीछेके अङ्क लेना चाहें उनको मार्गव्यय (डाकखर्च) सहित १ᐨ) प्रति अङ्कके हिसाबसे पहले मनीआर्डर द्वारा भेजना चाहिए। लिफाफेमें टिकट भेजना उचित नहीं है। 'श्रीराष्ट्रालोक' अब समाप्त है, द्वितीय संस्करण छपनें पर सूचना दी जायगी।

आवश्यक सूचना

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको भी नहीं भेजा जाता है, अतः कोई सज्जन नमूनेके लिए वाध्य न करें। यदि एक प्रति (नमूनार्थ) मंगवानी हो तो उसके लिए १ᐨ) भेजना आवश्यक है। जिन सज्जनोंके जवाबीपत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको संस्थाकी ओरसे उत्तर दिया जायगा। पुराने ग्राहकोंको रुपया भेजते समय कूपन पर अपना ग्राहक नम्बर लिखना आवश्यक है। 'श्रीस्वाध्याय' का प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ल दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुंचे तो पहले अपने स्थानीय पोस्ट आफिस (डाकघर) में पूछताछ करके पोस्टमास्टरके उत्तरके साथ १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए।

पत्र-व्यवहारका पता— व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीदुर्गाभवन

यह जानकर हमारे भारतीय सम्पूर्ण नर-नारियों को परम हर्ष होगा कि "श्रीदुर्गा-भवन" की स्थापना हो गई है। इसमें श्रीदुर्गाभगवतीके सम्बन्धमें जितना भी वाङ्मय होगा उस सबका संग्रह किया जायगा। अच्छे अच्छे योग्य विद्वानोंसे अन्वेषण कराया जायगा, तथा क्रम-बद्ध सुचारु रूपसे उसका विवरण भी प्रकाशित होगा। इस समय दुर्गासप्तशतीकी सात आठ टीकाएँ तथा छः सात प्रकारकी भिन्न भिन्न रूपोंमें मुद्रित पुस्तकें इसमें संग्रहीत हो चुकी हैं। अतः "श्रीस्वाध्याय" के पाठकों एवं अन्य सज्जनोंसे भी प्रार्थना है कि जिन-जिन लोगोंको सप्तशतीके सम्बन्धमें जो भी कुछ विशेष ज्ञान हो, वह लेखबद्ध कर नीचे लिखे पते पर भेजनेकी कृपा करें। जितनी प्रकारकी पुस्तकें, टीकाएं, भाष्य, अनुवाद, निबन्ध आदि जो भी कुछ हों एक-एक प्रति भेज कर अनुगृहीत करें। यह संस्था लोकोपकारक है इस कारण विशेषतः अमूल्य ही भेज कर इस शुभ कार्यमें सहयोग प्रदान करें। जो महानुभाव मूल्य लेकर भेजना चाहें, वे अपनी पुस्तकोंके विवरण तथा मूल्यकी पृथक् सूची बनाकर हमारे पास भेजें।

श्रीस्वाध्यायसदन

श्रीस्वाध्यायसदन एक ऐसी संस्था होने जा रही है जो भारतमें एक सर्वोच्च अन्वेषकका कार्य करेगी। अपने लोकोपकारी कार्योंसे राष्ट्र तथा धर्मकी भली-भांति सेवा करती हुई उनकी उन्नतिका प्रयत्न करेगी। इसमें संस्कृत तथा हिन्दीके सब विषयोंके ग्रन्थ संगृहीत होंगे और वाङ्मयका अन्वेषण, अनुशीलन तथा उसका स्वाध्याय होगा। इसके सक्रिय प्रचारका भी प्रयत्न किया जायगा। इस संस्थाके द्वारा अच्छे-अच्छे विद्वान् तथा कार्यकर्ता पुरस्कृत होंगे।

सर्व प्रथम इस संस्थाने "श्रीस्वाध्याय" नामक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया है, जिस के तृतीयवर्षका प्रथमाङ्क "विशेषाङ्क" के रूपमें आपके हाथोंमें ही है। इसे शीघ्र ही मासिक करनेका आयोजन किया जा रहा है। अतः राष्ट्र, धर्म, जाति तथा स्वातन्त्र्यसे प्रेम रखने वाले सभी भारतीय सज्जन तन-मन-धनसे इस संस्थाको उन्नत एवं अखिल भारतमें आदर्श बनानेके लिए हाथ बटानेमें सङ्कोच न करते हुए सबका हित करेंगे।

पत्र व्यवहारका पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायसदनका ज्योतिष-विभाग

इस विभागमें ज्योतिष सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार सन्तोष-जनक रीतिसे किये जाते हैं। जन्मपत्र वर्षफलमें आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीरका सुख दुःख, भाग्योदयादिका पूरा पूरा विचार शास्त्रप्रमाणानुसार लिखा जाता है। प्राचीन तथा नवीन दोनों पक्षसे गणित होता है। दोनों पद्धतियोंका पारिश्रमिक (फीस) भिन्न २ है। जन्मपत्रकी फीस ११) रु० से १०००) रुपये तक। वर्षफल ५) से १००) रु० तक। एक भावका सूक्ष्म विचार (यथार्थ निर्णय) के ११) रु०। आयुर्विचार (अंशायुर्गणित, मारकेश विचार मृत्यु-समय-स्थान-राग-मोहादि निर्णय सहित) राजा महाराजा एवं सेठ साहूकारोंसे १००) रु०, सर्वसाधारणसे २५) रु०। टेवा बनानेकी फीस २) रु०। भारतसे बाहर अन्य देशोंमें उत्पन्न हुए बालकोंके शुद्ध इष्ट और केवल लग्न कुण्डली बनानेकी फीस ५) रु०। विवादास्पद प्रश्न पर शास्त्रानुसार व्यवस्था बतलानेकी फीस ५) रु०, शुद्ध विवाह मुहूर्त्त और ग्रहमेलापक (कुण्डली मिलान) की २) रु०, सामान्य प्रश्न १) रु०।

प्रत्येक कार्यकी आधी फीस पेशगी मनीआर्डर द्वारा पत्रके साथ ही भेजना आवश्यक है। बिना पारिश्रमिक (एडवांस) प्राप्त हुए कार्य-आरम्भ नहीं किया जाएगा। उत्तर प्राप्त करनेके लिए जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना आवश्यक है। पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, [ज्योतिष विभाग] सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथोंको पूर्ण करने वाला श्रीमहामायाका स्तोत्र-रत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्ररत्न संसारमें अद्वितीय है।

पूज्य० सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थरत्न

श्रीपरशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। द्वितीय संस्करण छप कर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्र को स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं? उस पर किसका अधिकार होता है? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान होजाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। मूल प्रथम संस्करण समाप्त है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण शीघ्र प्रकाशित होगा।

श्रीसप्तपदीहृदय

भारतीय आर्यविवाह-संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है यह तो पाठकों को विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान्ने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्य को खोल कर राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या, आदर्श दाम्पत्य जीवनका तत्त्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है। पञ्चस्तवी के बिना शेष तीनों पुस्तकें राष्ट्रभाषानुवाद सहित हैं।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थ-रत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगतमें हलचलसी मच गई, और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्णरूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं? और हमें क्या करना चाहिये? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित हो कर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर हो कर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होने वाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्य सागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसारभरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण-विज्ञानके आधार पर सम्पूर्ण मानव-कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीन, सुललित, स्वभाव-शुद्ध तथा प्रकृति-सिद्ध हो सकती है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। न पढ़ने वाले आजन्म पछताएंगे। कई सौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित पुस्तकें मार्गव्यय प्राप्त होने पर "श्रीस्वाध्याय" के ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

पता—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहलीमें छप कर, श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके संरक्षक—

क्षत्रियकुल—कमल—दिवाकर बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्त्तण्ड—
राजा साहब श्री १०५ मान्. दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E. सोलन।

प्रतिदिनमुदीयमानो रंजितदशदिग्वधूवदनचन्द्रः।
दुर्गासिंहविवस्वान् जयतुतरां श्रीकरोल्लासी॥

आपका ४३ वाँ शुभजन्म-महोत्सव अभी गत ३० आश्विन सौर, ता० १५ सितम्बर को समारोहपूर्वक सुसम्पन्न हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड—

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंह जी बहादुर C. I. E. सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीनदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी.पी.

सहायक—श्री १०५ मती माजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।
श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावनवाली जी (भरतपुर)।
श्री १०५ मान् राजाधिराज हरिसिंह जी जनरल मिनिस्टर, उदयपुर (मेवाड़)।
रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी, नरसिंहगढ़।
श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार. एट-ला. जज हाईकोर्ट उदयपुर।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।
श्रीमान् पं० हरिशंकरजी शास्त्री ज्योतिषरत्न, खिड़कियां सी० पी०।
श्रीमान् पं० शिवचरणलालजी शर्मा नई दिल्ली।
श्रीमान् सेठ यमुनादासजी, अध्यक्ष फर्म बेरामल परशुराम बम्बई और शिकारपुर।
श्रीमान् सेठ वेणीप्रसादजी जयपुरिया, दिल्ली।
श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता, उदयपुर (मेवाड़)।
श्रीमान् सरदार कुंवर रणदीपसिंह जी साहब नाहन (सिरमौर)।
श्रीमान् कुंवर शिवसिंह जी बी० ए० एल-एल० बी० सेशनजज सोलन।
श्रीमान् सरदार जगजीतसिंह जी दिल्लों बी० ए० एल० एल बी०, नाभा।
श्रीमान् कुंवर ईश्वरीसिंहजी अध्यक्ष धर्मसभा उदयपुर (मेवाड़)।
श्री पं० देवकीनन्दन जी कथावाचक, यादव कीर्तन मण्डल, अम्बाला।
श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढ़ती, खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो० र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इह-लौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय'का मुख्य उद्देश्य है।

सञ्चालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय'के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ३।।) और एक प्रतिका १) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट-अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय'के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नव-वर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहे तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे पूरा वार्षिक मूल्य ३।।) रु० न लेकर वर्षसमाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मास का मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगानेसे उक्त मूल्यमें तीन आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गताङ्क (पंचम-वर्षका ग्रीष्माङ्क) अब स्टाकमें बिल्कुल नहीं है अतः उस अङ्कके लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम पूरा पता और ग्राहक नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जा-वेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुँचे तो १५ दिनके अंदर हमें सूचना देनी चाहिये। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन, (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहकोंसे आवश्यक निवेदन

गताङ्ककी सूचनाके अनुसार कई प्रेमी ग्राहकोंने अपना वार्षिक मूल्य ३॥) मनीआर्डर से भेज दिया है। परन्तु कई ग्राहकोंने अपना छटे वर्षका मूल्य अभी तक नहीं भेजा, वे यदि शीघ्र ही ३॥) भेज देंगे तो उन्हें यह अङ्क प्राप्त हो सकेगा, अन्यथा विलम्ब करने पर विगत चतुर्थ और पञ्चम वर्षोंके नववर्षाङ्कोंकी भांति इस अङ्कसे भी उन्हें वञ्चित रहना पड़ेगा, क्योंकि बहुत थोड़ी प्रतियां छपी हैं।

इस नववर्षांकके सम्बन्धमें

यह लिखते हुए हमें अत्यन्त सङ्कोच हो रहा है कि प्रस्तुत 'नववर्षाङ्क' हम जिस सजधजके साथ प्रायः २०० पृष्ठोंमें प्रकाशित कर पाठकोंके कर कमलोंमें सादर भेंट करना चाहते थे, कई कारणोंसे हमारी वह कामना पूर्ण न हो सकी। ऐसा न कर सकनेमें प्रमुख कारण भारत सरकारके न्यूजप्रिण्ट–कण्ट्रोलर साहब का वह आज्ञा पत्र है (जो नीचे दिया जा रहा है) जिसमें उन्होंने विशेषाङ्क के लिए अधिक कागज बिल्कुल स्वीकार ही नहीं किया और साथ ही स्वीकृत कोटेके अतिरिक्त मंहगे सस्ते मूल्य पर बाजारसे किसी प्रकार दूसरा कोई भी कागज लगाने पर प्रतिबन्ध लगा कर हमारी योजना को निष्फल बना दिया फिर भी जितने ग्राहकोंका पहले मूल्य आ चुका था उतनी ही परिमित (बहुत थोड़ी) प्रतियां छाप कर यह अङ्क १२० पृष्ठ से अधिक ही देना चाहते थे परन्तु सब आवश्यक कार्य छोड़कर २० दिन पहले दिल्ली पहुँचने पर भी इस बार प्रेसमें छपाईकी व्यवस्था न हो सकी। दो प्रेसोंमें थोड़ा २ कार्य बांटकर यह अङ्क इस रूप में भी बड़ी कठिनाईसे हम समय पर पाठकों तक पहुंचा पाये हैं। कई विद्वान् लेखकों और सम्पादन समितिके सम्मान्य सदस्योंके मौलिक लेख इस अङ्कमें न छप सकनेका हमें हार्दिक दुःख है। आशा है प्रेमी पाठक और विद्वान् लेखक महानुभाव परिस्थितिवश उक्त असमर्थताके लिए क्षमा करेंगे। यदि भगवान्की कृपा रही तो इस वर्षमें आगामी चैत्रमास का वसन्ताङ्क हम बहुत सुन्दर विशेषाङ्कके रूपमें भेंट कर सकेंगे। तब तक बहुत सम्भव है कि कागज कण्ट्रोलकी वर्तमान विषम–समस्या भी दूर हो जायगी, जो इस समय निम्न आज्ञाके रूपमें उपस्थित होकर प्रमुख रूपमें बाधक बनी है।

The Proprietor "the Shree Swadhyaya" Solan.

Sir,

With refrence to your letter No 9012 dated the 5th August, 1946, I am directed to say that the Govt. of india regret that they are unable to accede to your request for an extra ration of newsprint for the publication of a special number on the occasion of Dusera festival. They have, however, no objection to your bringingout the siad number provided that the following conditons are strictly observed:—

(I) that the monthly ration of News print allotted in respect of the "Shree Swadhyaya' is not exceeded during the month in which the proposed number is brought out; and

(II) that no paper their than newsprint is used in the production of the number in question.

2. A certificate of fulfilment of these conditions together with a copy of the Special number should be furnished to this department after its publication.

I have the honour to be, Sir,
Your most obedient servent,
SD. Hans Raj
The assistant Secretary to the Goverment of India.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्रीस्वाध्याय' भारतीय विद्वानोंकी दृष्टिमें—

युक्त प्रान्तके भू० पू० शिक्षासचिव एवं यू० पी० गवर्नमेंटके एडवाइजर श्री ० डा० सर पन्नालालजी सी० एस० आई०, सी० आई० ई० आई० सी० एस० महोदय लिखते हैं:—

I have been very pleased to see several issues of the Hindi magazine Shri Swadhyaya. It conttains artcles of a high order of Scholarship-but all written in a style to attract general interest. It will be of much help in spreading information about old culture and inculcating a taste for Hindi Literature amongst its readers. Congratulate the learned Editor Pt. Hardev Sharma Trivedi.

24 July 1946. SD/—PANNA LALL
csi. cie. ics.

'श्रीस्वाध्याय' हिन्दी पत्रके कई अंक देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। इसमें उच्चकोटिके विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं, परन्तु उनकी शैली जन-साधारणके लिये सुबोध और आकर्षक रहती है। यह प्राचीन संस्कृति और विज्ञानके प्रसारमें अपने पाठकोंमें हिन्दी साहित्यके प्रति रुचि उत्पन्न करनेमें विशेष सहायक होगा। इसके विद्वान् सम्पादक पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदीको बधाई।

— ह० पन्नालाल
सी. एस. आइ., सी. आई. ई., आइ. सी. एस.

❀ ❀ ❀

'चांद' 'भविष्य' 'कर्मयोगी' आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओंके सफल संचालक और सम्पादक, हिन्दी साहित्य एवं राष्ट्रियताके प्रमुख पुजारी श्री रामरखसिंहजी सहगल प्रयागसे लिखते हैं:—

'श्रीस्वाध्याय' खूब सुन्दर निकल रहा है। रचनाओंका चुनाव सर्वथा प्रशंसनीय है। फिर एक पिछड़े हुए पहाड़ी प्रदेशसे ऐसे उच्चकोटिका पत्र प्रकाशित करनेमें आपको जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता होगा, मैं सहज ही उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता हूं। मैं आपके साहसकी प्रशंसा करता हूं और पत्रकी सफलता चाहता हूं।'

❀ ❀ ❀

'जयाजीप्रताप' के यशस्वी सम्पादक श्री० शम्भुनाथजी सक्सेना लश्कर (ग्वालियर) से लिखते हैं—

'ज्योतिष पर इतनी प्रामाणिक तथा ठोस सामग्रीसे युक्त भारतीय भाषामें कोई दूसरी पत्रिका नहीं निकल रही है। विषयोंका चयन सुन्दर है। सम्पादकका परिश्रम और विद्वत्ता स्पष्ट है। शान्तिकालमें सन् ३७ में जर्मनीके नूरेम्बर्ग नगरसे ज्योतिर्विज्ञान पर एक जनरल प्रकाशित होता था। उसकी दो तीन प्रतियोंको हमें देखनेका अवसर प्राप्त हुआ था। 'श्रीस्वाध्याय'की तुलना हमारी दृष्टिमें उस पत्रिकासे कम नहीं है। क्या ही अच्छा हो इसका विकास और विस्तार भी वैसा ही हो। हमारी शुभ कामनाएं और सहयोग पत्र के साथ है।

❀ ❀ ❀

श्री १०५ मान् धर्मालङ्कार रावबहादुर महाराज श्री प्रभुनाथसिंहजी (नरसिंहगढ़) लिखते हैं:—

"........................ 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित करनेका आपका प्रयास स्तुत्य है। इसी प्रकारके पत्रोंकी हमारे भारतवर्षको आवश्यकता है जिससे वह अपने खोए गौरवको पुनः प्राप्त कर सके। पत्र बहुत उंचे दर्जेका है, जिसकी प्रशंसा सहस्रमुखोंसे करने पर भी अल्प है।..............."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[शरदंक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति [राष्ट्रालोक]

वर्ष ६	सोलन, आश्विन शु० १० शनिवार सं० २००३ वि०	संख्या १

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

स्वाध्याय-महिमा

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

स्वाराध्यानां दिशति सरलं मार्गमाराधनायाः
स्वाराज्यस्य प्रथयति पथि प्रस्थितानां प्रतिष्ठाम्।
स्वापं तापं शमयति च यो राष्ट्रियाणां समं स
स्वाध्यायोऽयं भवतु भवतां भूतये भूतलेऽस्मिन्॥ १॥
राष्ट्रं रायं रचयति रणे रंहसो रक्षणानां
प्रज्ञानाय प्रभवति पुनः प्रापितः सम्प्रदायात्॥
संसारेऽस्मिन्सपदि सकलाः सम्पदः सम्प्रसूते
स स्वाध्यायो जयतु जगतां जागरूको जयाय॥ २॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठे वर्षमें पदार्पण

संसारके सभी प्राणी अपनेको सुखी देखना चाहते हैं। यद्यपि आजके युगमें सुखकी मन मानी व्याख्या होने लगी है; परन्तु वास्तवमें सुखी उसीको कहा जा सकता है, जिसने अपने कर्तव्य-कर्मों द्वारा उभयलोकमें सुखी रहनेका साधन एकत्र किया है। जब प्राणिमात्र उस सच्चिदानन्द भगवान्का ही अंश है तो फिर उसमें भी सत्,चित् और आनन्द अर्थात् शक्ति ज्ञान और आनन्दकी सत्ता तथा उसके उत्तरोत्तर विकासकी इच्छा स्वाभाविक ही है। इस प्रकार इन तीनोंकी उपासना द्वारा इनको हम अपनेमें जितना भी अधिक विकसित कर सकेंगे उतना ही अपने अंशीके निकट पहुंचेंगे और अन्तमें तत्स्वरूप होकर स्थायी आनन्दकी प्राप्ति कर सकेंगे।

विकास-वादके इस युगमें अपनेको सुखी तथा उन्नतिशील देखनेके लिए मनुष्यने अनेकों साधनोंको ढूंढ़ निकाला है। इन्हीं साधनोंमेंसे आजके संसारमें अपना एक प्रमुख तथा महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाला साधन विविध पत्र पत्रिकाओंका प्रकाशन भी है। पत्र और पत्रिकाओंका प्रकाशन किसी मुख्य उद्देश्यको सामने रख कर ही किया जाता है। कहना न होगा कि प्रायः सबका ही उद्देश्य मानवमें शक्ति ज्ञान तथा आनन्दका अधिकाधिक संचार कर उसको सर्वसाधन-सम्पन्न पहले मानव फिर देवोपम मानव बनानेका ही है। परन्तु आज कितनी पत्र पत्रिकाएं अपने इस उद्देश्यकी पूर्ति करती हैं यह हमारे विज्ञ पाठकों से छिपा न होगा। आज अनेकों पत्र अपने जीवनका एक मात्र उपास्य अर्थको ही मानकर हमारे समक्ष विविध मनोरञ्जनकी सामग्रियाँ उपस्थित कर हमें लक्ष्यभ्रष्ट बनानेका प्रयत्न कर रहे हैं। तब तो आश्चर्यकी कोई सीमा नहीं रहती, जब हम देखते हैं कि अधिकांश पत्र अपने उच्चतम आदर्शोंको भुला कर प्रणयगीत, प्रेम कहानियाँ तथा बुरेसे बुरे फिल्मोंके गन्दे विज्ञापन लेकर हमारे नवयुवकोंके सामने आते हैं और उनके अन्तःकरणमें कुवासनाओंका बीज बोकर अपने कर्तव्यकी इतिश्री कर डालते हैं। इससे बढ़कर इन पत्र एवं पत्रिकाओंका नैतिक पतन और क्या होगा कि ये कुछ चांदीके टुकड़ोंके लोभमें आकर अर्थके पुजारी विज्ञापन दाताओंके कांग्रेसकी राय, महात्माजीका चमत्कार, सात दिनमें जवानी, काम विलासवटी, गर्भनिरोधक औषधि तथा सूईफुन्सी आदि के गन्दे विज्ञापन देकर जनताको पथभ्रष्ट करनेसे नहीं चूकते हैं। इस प्रकार अर्थकी घुड़ दौड़में एक दूसरेसे बाजी मार ले जानेकी होड़में इन पत्रोंने (कुछको छोड़ कर) जनसाधारणका बहुत अहित किया है। अस्तु, पत्रोंके तत्कालीन वर्तमान स्वरूप और भविष्य को देख कर एक ऐसे पत्रकी आवश्यकता समझी गई, जो अर्थका दास न बन कर, विज्ञापनदाताओंके माया जालसे दूर रह कर, जनताका सच्चा हितैषी, धार्मिक, सांस्कृतिक आध्यात्मिक तथा आर्थिक सन्देश वाहक हो। इस पवित्र उद्देश्यको सामने रख कर ही आज से ५ वर्ष पूर्व सर्वतन्त्रस्वतन्त्र तपोधन श्री १०८ मान् महामहिम पूज्यपाद अमृतवाग्भव आचार्यजी महाराजने साधारण धरातलसे ऊपर शिमलाकी सुन्दर पहाड़ी सोलन नगरीमें इस पत्रको जन्म दिया।

आज हमें हर्ष हो रहा है कि 'श्रीस्वाध्याय' अपनी शैशवावस्थाके पांच वर्षोंको व्यतीत कर छठे वर्षमें पदार्पण कर आपकी सेवामें उपस्थित होने जा रहा है। अनेकों कठिनाइयोंके होते हुए भी 'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर आपकी जो सेवा करता जा रहा है उसका प्रमुख श्रेय उस महाप्रभुकी अनन्त कृपा तथा इसके जन्मदाता पूज्यपाद श्रीआचार्यजी महाराज के शुभ आशोर्वाद और शिवसङ्कल्पको ही है; जो 'श्रीस्वाध्याय'से कुछ दिनोंसे साक्षात्सम्बन्ध न रखकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे इसी अवस्थामें अनाथ-सा बनाकर भी समय-समय पर अपना मङ्गलमय पावन सन्देश भेजनेकी कृपा करते रहते हैं। 'श्रीस्वाध्याय' अपने माननीय संरक्षकों और सहायकोंका परम कृतज्ञ है, जिनकी उदार सहायतासे वह अपने स्वरूप और उद्देश्यकी अब तक रक्षा कर सका है और भविष्यमें भी करता रहेगा। विशेषतया हम अपने माननीय संरक्षक विद्याव्यसनी धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मान् बघाट महीमहेन्द्र महोदय के चिर ऋणी हैं जिन्होंने निरन्तर सर्वविध सहायता प्रदान कर हमें प्रोत्साहित करते रहने की कृपा की है। इसी प्रकार संरक्षकद्वय श्री १०५ मान राव राजा कैप्टन गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर एवं श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीदार साहब उपरोड़ा स्टेट तथा परम साध्वी श्री १०५ मती मांजी महारानीसाहिबा सिरमौरीजीका भी 'श्रीस्वाध्याय' चिरऋणी है, जिनकी उदार सहायता एवं सत्प्रोत्साहनसे उसने यह कठिन समय पार किया है। हमें आशा ही नहीं, विश्वास है कि 'श्रीस्वाध्याय' इन महानुभावोंका सर्वदा ही कृपापात्र रह कर अपने जीवनकी विविध कठिनाइयोंको अनायास पार कर पाठकोंकी अधिकाधिक सेवा कर सकेगा।

'श्रीस्वाध्याय' के अधिकांश हितैषी पाठकों और ग्राहकोंने जो इसे मासिक स्वरूप प्रदान करने की शुभसम्मतियां भेजी हैं उनके लिए हम आभारी हैं। कई बार इसके प्रेमी सज्जनोंकी सत्प्रेरणासे हमने भी शुभ सङ्कल्प किया, परन्तु अब तक ऐसा न कर सकनेमें जो कठिनाइयां हैं उनमें सर्वप्रथम है आर्थिक कष्ट और फिर इसकी जन्मभूमि सोलनमें प्रकाशनके साधन प्रेसका अभाव। इसकी दूसरी कठिनाईका भी प्रथममें ही अन्तर्भाव हो सकता है। और यदि इसकी आर्थिक समस्या सुलझ जाय तो यह अपने ही साधनोंसे सम्पन्न होकर आपकी सेवा कर सकता है। अतः 'श्रीस्वाध्याय' आपकी ही शुभ कामनाओंकी पूर्त्तिके लिए आज अपने प्रेमी पाठकों और कृपालु ग्राहकों के सम्मुख झोली लिए खड़ा है। यदि आपने अपनी उदार सहायता, अपने दानवीर इष्टमित्रोंकी सहायतासे अथवा अधिकाधिक ग्राहक संख्या बढ़ाकर इसकी रिक्त झोली भरनेकी कृपा की, तो यह आपकी मङ्गल-कामनाकी पूर्त्तिके साथ ही जनता-जनार्दनकी यथेष्ट सेवा कर सकेगा।

अन्तमें श्रीस्वाध्यायके षष्ठवर्षमें पदार्पण करने की इस शुभवेलामें हम अपने समस्त सहयोगियों संरक्षकों, सहायकों, प्रेमी पाठकों एवं लेखकोंसे आशा करते हैं कि वे पहलेसे भी अधिक तन, मन, धनसे 'श्रीस्वाध्याय'को सहयोग तथा उत्साह प्रदान कर जाति, समाज और राष्ट्रकी अधिकसे अधिक सेवा करनेका हमें सुअवसर देंगे। विशेषतया ऐसे शुभअवसर पर जबकि देशमें अपनी राष्ट्रीय सरकार स्थापित हो चुकी है—यह राष्ट्रको समुन्नत बनानेमें विशेष सफल सिद्ध हो सकेगा।

विनीत—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

(सम्पादक)

———

❀ आवाहन ❀

प्रभो!

हम न जाने कबसे आपको पुकार रहे हैं, परन्तु उसका कुछ भी परिणाम न होते देख निराश-से होते जा रहे हैं। हम जानते हैं कि आप अनन्य भावसे की गई अपने भक्तकी पुकार पर अपनेको रोक नहीं सकते। ऐसा हो भी तो क्यों न, आप तो स्वयं करुणासागर और भक्तवत्सल हैं, आपके करुणा-वरुणालयके एक बूंद मात्रसे भी जब पामर सांसारिक जीव अपनेको सबसे अधिक दयालु होनेका दम भरता है, तो फिर आपके लिए हम कहें ही क्या! पर यह तो बतावें कि इतना होते हुए भी आप निष्ठुर क्यों हो गए हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा यह निष्ठुरता केवल हमारे लिए ही है ?

भगवन् !

हमें तो यह विश्वास था कि हम आपको प्रमादवश कभी भले ही भूल जांय। पर आप हमें कभी न भूलकर हमारी प्रत्येक अवस्थामें सुधि लेंगे ही, फिर अब ऐसा क्यों हो रहा है ? हम आपको निरन्तर स्मरण करते हैं फिर भी आपने अब तक अपने दर्शनोंसे कृतार्थ करनेकी कृपा नहीं की। ऐसा तो हो नहीं सकता कि आप इन बातों को नहीं जानते हों, अथवा अपने भक्तोंकी अवस्थासे अपरिचित हों, क्योंकि आप तो सर्वान्तर्यामी हैं, त्रिकालदर्शी हैं। हम यह भी जानते हैं कि आप सर्वदा अपने जनोंकी कल्याण कामना करते हैं, नहीं-नहीं, हम भूलते हैं आप तो प्राणिमात्रकी मङ्गलकामना करते हैं, फिर हमें ही भूल जावें यह कैसे सम्भव है। बस, हमारे कर्मों का ही दोष है, अथवा भाग्य ही खोटे हैं जिससे आपके दर्शनोंकी उत्कट अभिलाषा होने पर भी आपके दर्शनोंके सौभाग्यसे सर्वथा वञ्चित हैं।

सर्वान्तर्यामिन् !

अब हमारी अधिक परीक्षा मत लो। शरणागत भक्तोंकी परीक्षा कैसी ? अब हमारी ऐसी अवस्था नहीं रही कि हम परीक्षा देकर परिणामकी प्रतीक्षा कर सकें। हमारा यह जर्जर शरीर दिनों-दिन क्षीण होता जा रहा है, अवश्य ही काल इस की प्रतीक्षा कर रहा है। इसी लिए हमारी अधीरता और बढ़ती जा रही है कि अब इन अभागे नेत्रोंसे आपके दर्शन हो सकेंगे कि नहीं। इस निराश मनके लिए बस आपके इन्हीं वचनों पर विश्वास है कि "अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।" यही आशा लिए आपका निरन्तर चिन्तन किए जा रहे हैं, फल तो आपके ही हाथों है। विश्वास है अब हमारी प्रार्थना अनसुनी न होगी।

भक्तवत्सल !

हमने अपना सर्वस्व आपको समर्पण कर दिया है, फिर आपको छोड़कर हमारा दूसरा है ही कौन ? संसार हमको चाहे कुछ भी कहे, हमें उस की कुछ भी चिन्ता नहीं। चिन्ता भी क्यों होने लगे ? सांसारिक प्रपञ्चोंमें रहने वाले दुष्ट-जन जब अपने स्वभावको नहीं छोड़ते, तो फिर हम ही उनकी उपेक्षा कर उनसे तटस्थ रहने और उनके लिए सद्बुद्धिकी कामना करनेके स्वभावको क्यों छोड़ें ? प्रभो ! दुर्जनोंके विषयमें आपकी यह युक्ति हमें नहीं भूलती—

अकल्याणी वाणी मतिरतिचला वृत्तिरसती,
विगीतप्रायैव प्रकृति कुटिलत्वं परिचितिः।
निसर्गोच्चातुर्यं निरुपममहो साधुहनने,
चरित्रं दुष्टानां किमु-किमु न लोकं व्यथयति ॥

अर्थात् दुर्जन यदि और किसी प्रकारसे किसी का कुछ अहित करनेमें असमर्थ होता है तो वाणीसे ही सही, भली-बुरी बातें कह जी-भर कोसनेमें नहीं चूकता। बुद्धि उसकी अति चपल होती है, अतः वह आज यदि किसी कारण स्वजन है तो कल ही महान् शत्रु भी बन सकता है। उसकी हार्दिक वृत्ति कुलटा स्त्रियोंकी भांति एक को छोड़ दूसरेमें जाने वाली और कहीं भी न टिकने वाली होती है। दूसरेकी निन्दा में ही व्यस्त रहना तथा स्वभावसे ही दूसरों की बुराई करते रहना ही उसका संक्षिप्त परिचय है। और तब तो आश्चर्यकी कोई सीमा नहीं रहती जब हम देखते हैं कि अन्यान्य कार्यों में उनकी प्रतिभा भले ही कुछ काम न करे, पर किसी साधु व्यक्तिको सताने अथवा मिटानेमें स्वभावसे भी अत्यधिक चातुर्य दिखला जाते हैं। इस प्रकार दुष्टोंका चरित्र संसारको क्या-क्या कष्ट नहीं देता है ?

पर भगवन् ! हमें इसकी कोई चिन्ता नहीं। हम तो अब आपके दर्शनोंका आशा-दीप जलाए अपने जीवनकी अन्तिम घड़ियां गिन रहे हैं। और अब इच्छा है कि अपने संसारको छोड़ आपके प्रिय निवास किसी तीर्थमें ही अपने जीवनके अन्तिम क्षण बिताएं। क्या अब भी दर्शन देंगे ?

—आपका कोई अपना ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रिय सरकारका स्वागत और उससे निवेदन

—:oo:—

हम जिस सुअवसर की चिरकालसे बहुत ही धैर्य के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे, उसे पाकर आज हर्षसे फूले नहीं समा रहे हैं। हमारा चिरअभिलषित यह सुअवसर था हमारे देशमें हमारी राष्ट्रिय सरकार की स्थापनाकी पावन शुभवेला। वह आई, परन्तु परिमित कालके लिए और अपने लिए अधिकसे अधिक त्याग और बलिदान लेकर आयी। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसको स्थिरताका स्वरूप देना बहुत कुछ हमारी योग्यता, त्याग और बलिदानपर ही निर्भर है। यह हमारा परीक्षाकाल है, जिससे खरे निकल कर सफलता प्राप्त करना भारतमें बसने वाले प्रत्येक वर्ग के सहयोग पर अवलम्बित है। हम ऐसे शुभ अवसर पर अपनी भारतीय राष्ट्रिय सरकार, उसके प्रधान श्री पं०जवाहरलालजी नेहरू तथा अन्यान्य सदस्यों का स्वागत और अभिनन्दन करते हैं। तथा ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि वह इनको ऐसी शक्ति प्रदान करे जिससे यह इस अग्निपरीक्षासे स्वर्णकी भांति अधिकाधिक चमक दमक, गौरव एवं मानके साथ निकल कर स्थायी रूपसे सिंहासनारूढ होवे।

किसी भी आत्मीय–व्यक्तिको पाकर एक दुःखी आकुल व्यक्तिका व्यथित हृदय टूक–टूक हो जाता है, उसकी आपदाएँ शतगुनी होकर उसे और भी अधीर बना मौनभङ्ग करनेके लिए विवश करती हैं। उसकी हृत्तन्त्री सहसा झंकृत हो उठती है और उसका मन अन्तस्तलको उसके सम्मुख रख देनेके लिए एक बार मचल उठता है। वह ऐसी उतावली इस लिए नहीं करता कि वह जो कुछ भी कह देगा बिना किसी विचार या संशोधनके ही मान लिया जाएगा ; प्रत्युत इसलिए करता है कि उसकी करुण–कहानी सुनने वाला उसे कोई आत्मीय मिल गया है, अन्यथा वह कहता ही किससे, जहाँ न कोई अपना है और न सुननेका अवकाश ही रखता है। अस्तु, चिरकालसे हम सोचते आये थे कि किसी समय जब हमारी राष्ट्रिय सरकार होगी, तो अब तककी सारी उलझी जटिल समस्याओंको सुनकर उसे सुलझानेकी चेष्टा करेगी। यद्यपि सभीको एक साथ सुनना और उनका समाधान करना एक कठिन कार्य है, फिर भी आज हमारे सामने कुछ ऐसी प्रमुख समस्याएँ हैं जिनपर शीघ्रसे शीघ्र ध्यान देना न केवल किसी भारतीय विशेष वर्गके लिए अपितु भारतीय मानव मात्रके हित के लिए आवश्यक तथा अनुपेक्षणीय है।

आज सबसे बड़ी समस्या है हमारे सामने हमारी वर्तमान और भावी सन्ततिकी शिक्षा दीक्षाके साथ उसके चरित्र-निर्माणकी। किसी भी राष्ट्रका उत्थान और पतन उसकी आगे आनेवाली पीढ़ी पर ही निर्भर होता है। आजका बालक ही कल नवयुवक बनकर राष्ट्रकी बागडोर अपने हाथोंमें लेकर राष्ट्र-निर्माता या युगनिर्माता बनता है। अतः राष्ट्रकी सम्पत्ति बालकोंकी चरित्ररक्षा और जीवन-निर्माणपर दृष्टि रखना प्रत्येक राष्ट्रिय–व्यक्तिका एक परमावश्यक कर्तव्य हो जाता है। आज इस विशाल कृषि-प्रधान देशके गाँवोंमें रहने वाली अशिक्षित और मूक जनताकी बालमण्डलीके विषयमें अधिक क्या कहा जा सकता है, जो पृथ्वी पर पाँव रखते ही अपनी उदर ज्वालाकी लपटोंको शान्त करनेमें ही अपने जीवनकी इतिश्री कर डालती है, परन्तु फिर भी यह ज्वालामुखी भड़कता ही जाता है, कहीं कोई शान्तिकी रूपरेखा नहीं दीखती। जो इस ज्वालामें किसी भांति मुट्ठी भर अन्न छोड़ कर शांतिका श्वांस लेनेमें समर्थ हैं उनके पास शिक्षाका कोई ऐसा उच्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधन नहीं है जिससे अपना या अपने बालकोंका हित कर सकें। गाँवोंमें ऐसे अनेक दीन-हीन परन्तु प्रतिभा-सम्पन्न बालक दीखते हैं जिनकी समुचित शिक्षा या हस्त-कला-कौशलका प्रबन्ध होता, तो वे कभी राष्ट्रके लिए अमूल्य रत्न प्रमाणित होते। इस प्रकार जहाँ साधन हीन गाँवोंमें असंख्य बालक दीन परिवारमें जन्म लेनेके कारण शारीरिक और बौद्धिक विकाससे वञ्चित रह कर राष्ट्रकी क्षीणताके कारण हो रहे हैं; वहीं नगरोंमें हमारी शिक्षाके सारे साधन बालकोंके चरित्र एवं जीवन निर्माणके लिए व्यर्थ प्रमाणित हो रहे हैं। आज कोमल-मति नागरिक बालक बालिकाओंके सामने राम, लक्ष्मण, राणाप्रताप वीर शिवाजी, तथा सीता अनुसूया, पार्वती, रानी दुर्गावती एवं लक्ष्मी बाईका आदर्श नहीं रह गया है, उनके सामने आदर्श है सिनेमाके अभिनेता और अभिनेत्रियोंका। अब बालक बालिकाओंके लिए सिनेमाके अतिरिक्त मनोरञ्जनका कोई और साधन ही नहीं रह गया है।

आजका शिक्षित नवयुवक अपनी जीवन सहचरी जीवनसे बहुत दूर रहने वाली नख शिख हाव भावसे भरी किसी सिनेमा अभिनेत्री या तत्सदृश बालाको; तथा नवयुवती विलासिता और शृंगारके अवतार दूसरे मदन किसी सिनेमा अभिनेता या तत्सदृश युवकको ही अपना जीवन-संगी बनानेका सुनहरास्वप्न देखा करता है। एक बार आप इन नवयुवक और नव-युवतियोंके शयन-मंदिरमें चले जाइये तो देखेंगे कि उसमें चारों ओर अर्धनग्न वेश्याओं और मनचले कलाको भी कलङ्कित करने वाले सिनेमा कलाकारोंके चित्र लटक रहे हैं। आज देशमें इन चित्रपटोंकी देन उस वासनामय प्रेमकी इतनी बाढ़ आ गई है कि भारतके अन्य नगरोंकी तो बात ही न पूछें, इस बीसवीं शताब्दीमें भी पिछड़ी हुई शिमलाकी पहा-ड़ियाँ, जिन्हें हम ऋषिभूमि या तपोभूमि कह कर गर्व से अपना सिर ऊँचा करते थे, उसकी एक छोटीसी नगरी सोलनकी पहाड़ियोंमें भी खच्चर हाँकता हुआ एक आठ-दश वर्षका पहाड़ी बच्चा भी झूम-झूम कर गा उठता है "अँखिया मिलाके चले मत जाना।" इस प्रेमकी बाढ़में डूबती उतराती हुई पहाड़ी कोमलमति बालिका भी माँके साथ सूर्यके अस्ताचलको जाते ही हाथमें लालटेन या बत्ती लिए ऊँची नीची पहाड़ी पर बसे गाँवोंसे दूर नगरके सिनेमाघर पहुंच जाती है और इसके कुसंस्कारको लेकर पर्वतों और वनोंमें डंगरोंको चराती हुई गा उठती है "रुमझुम बरसे बादरवा-मस्त हवाएँ आईं। पिया घर आजा" आदि।

अधिकांश नागरिक बालक और बालिकाओं का स्कूल और कालेजसे लौटने पर जलपान कर किसी पुस्तकालय या वाचनालयमें न जा कर सड़कों और पार्कोंमें आवारा घूमना, रातको देर तक घर आना, सिनेमा देखना, रेडियोके अश्लील गाने सुनना आदि दैनिक कर्तव्य कार्य हो गया है। लाहौरकी अनार-कली, दिल्लीका कनाट-प्लेस, शिमलेकी मालरोड तथा सोलनकी दोहरी दीवाल पर जिनको सायंकाल घूमनेका एक दो बार सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ होगा, वे समझ सकते हैं कि आज फैशनने कितनी उन्नति कर ली है और कभी का अध्यात्मवादी जगद्गुरु यह राष्ट्र आज किस प्रकार भोगवादकी चिकनी सीढ़ी पर फिसलता चला जा रहा है।

कहना न होगा कि अन्य स्वतन्त्र राष्ट्रोंमें जहाँ सिनेमा और रेडियो द्वारा वहाँके निवासियोंको अनेक जीवनोपयोगी बातोंकी शिक्षा मिला करती है और शिक्षाके अनेकानेक साधनोंमें इनका प्रमुख स्थान है, वहाँ इस अभागे देशमें आज सिनेमाके गन्दे चित्रपटों और इसके तथा रेडियोके अश्लील गानोंसे घर-घर आदर्श दम्पतीके स्थानमें लैला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजनू और शीरीं फरहादकी सुन्दर जोड़ी तैयार हो रही है। यह निश्चय है कि यदि राष्ट्रिय सरकार ने रेडियो और सिनेमा जगत्के इन घृणित स्वार्थ-मय कृत्यों पर यथाशीघ्र ध्यान न दिया तो यह राष्ट्र वीर और वीराङ्गनाओंका राष्ट्र न होकर दुश्चरित्र नपुंसकोंका राष्ट्र हो जाएगा।

दूसरी समस्या हमारे सामने है हमारी वर्त्तमान शिक्षा पद्धति की; जिसका हमारे जीवनके साथ कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया है। आज भी वैदेशिक शिक्षण नीतिके आधार पर अनेकों जीवनोपयोगी कलाओंसे दूर रखकर स्कूल और कालेजों में साहित्यिक आवारे तैयार किए जा रहे हैं, जो कुछ ही दिनोंमें एक डिग्री लेकर बड़े गर्वसे जीवन क्षेत्रमें उतरते और अन्तमें दास बनकर किसी प्रकार भी रोटीकी समस्यासे ही अवकाश न पाकर एक दिन संसारसे आँखें मीच चल बसते हैं। इस प्रकार कभी का अमूल्य भारतीय मानव जीवन आज कौड़ियों का भी मूल्य नहीं रखता। आज स्कूलोंमें सुन्दर पाठ्य विषय अलङ्कार तथा नायक-नायिकाओंका भेद रह गया है, तो अतिरिक्त समयमें सबसे अधिक मनोरञ्जक स्याध्याय की सामग्री है—उपन्यास, प्रणय-गीत तथा प्रेम कहानियाँ।

इस प्रकार कभी युग और समाजमें क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाले आजके बहुतेरे कवि, लेखक और पत्र पत्रिकाएं हमारे नवयुवक और नवयुवतियों के हाथमें गन्दासे गन्दा साहित्य देते हुए भी सङ्कोच नहीं करते। इसीका दुष्परिणाम है कि आज अपनेको अबला और सुकुमार कहने वाली नारी चण्डी, दुर्गा तथा लक्ष्मीके आदर्शको भुलाकर बौद्धिक विलासिताके कारण अपनेको शृङ्गारकी पुत्तलिका समझ रही है, तो स्वभावसे ही परुष पुरुष आज विषयोंका क्रीतदास बन कर निरन्तर अपनेको सजाने और सुन्दर बनाए रखनेकी ही धुनमें व्यस्त है। अब तो यह रोग इतना बढ़ गया है कि विद्यार्थियोंकी पाठ्य पुस्तकोंके साथ ही शीशा, कंघा, लक्स तथा गोडरेजकी टिकिया एवं तेल और फुलेल की शीशीने अपना प्रमुख स्थान बना लिया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सुन्दरता एक अच्छी वस्तु है। परन्तु वह प्रकृतिकी देन होती है। उसे प्राकृतिक असुन्दर व्यक्तिमें नये सिरेसे पैदा नहीं किया जा सकता। देशकी निर्धनताके कारण आज विद्यार्थियोंको अच्छा खाना पीना नहीं मिलता है, अतः उनके मुख पर स्वाभाविक आभा या तेज नहीं है, पर तेल साबुन और सुन्दर कटे हुए बालोंसे उसे लानेका वे विफल प्रयास करते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आजका विद्यार्थी राह चलते भी पाकिटमें शीशा, कंघी रखता, बालोंमें आड़ी तिरछी सड़कें निकालता और उन्हें सँवारता दिखाई देता है। एक बार इसी प्रकारके शौकीन एक विद्यार्थीसे हमने पूछा कि "तूने क्यों इन बालोंको ऐसे कटाया है? और सड़कें निकाली हैं? क्या सुन्दर लगनेके लिए?" उसने धीरे से कहा-'हाँ'। फिर हमने पूछा-"किसकी दृष्टि में? पुरुष की अथवा स्त्री की?" लड़का चतुर था। कुछ उत्तर न देकर चुप रहा। उसकी मुख-मुद्रा गम्भीर हो गई। क्योंकि प्रश्न इतना टेढ़ा था कि यदि पुरुषकी दृष्टिमें कहता है तो नपुंसक और शोहदा ठहरता है और यदि स्त्रीकी दृष्टिमें कहता है तो गुण्डा तथा दुश्चरित्र। फिर उत्तर तो कुछ न कुछ देना ही था, उसने कहा कि-"दूसरे लोग भी ऐसा करते हैं इसलिए मैं भी करता हूं।" यह है आज हमारे बालकोंकी दशा। अतः इनसभी बातोंको सामने रखते हुए उनकी इस कुप्रवृत्तिको नष्ट करनेके लिए शिक्षामें क्रान्तिकारी परिवर्तन, हस्तकला-कौशल की शिक्षा की उपयोगिता और आवश्यक सैनिक शारीरिक शिक्षाकी उपादेयता एवं सत्साहित्य निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आवश्यकता पर हमारी राष्ट्रिय सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए तथा उसे उन सभी प्रकार के साधनोंको सहर्ष अपनाना चाहिए जिससे इस पतनोन्मुख राष्ट्रको सन्मार्ग पर लाया जा सके।

राष्ट्रके स्वरूप और उसकी उन्नतिके साधनोंके विषयमें राष्ट्रालोकमें पूज्यपाद श्री १०८ अमृतवाग्भव जी महाराजने बहुत कुछ लिखा है। उसमेंसे कुछ श्लोक नीचे उद्धृत किए जाते हैं।

विधातव्याः प्रयत्नेन रणनीतिविशारदाः।
संरचितब्रह्मचर्या यावन्तो राष्ट्रबालकाः ॥
शक्तित्रयवतः शान्तान् विनीतान् समदर्शिनः।
अपि स्वरक्तदानेन निजराष्ट्रस्य पोषकान् ॥
राष्ट्रभाषाधर्म्यभाषाकुशलान् दूरदर्शिनः।
राष्ट्रकल्याणमिच्छन्तो रचेयू राष्ट्रबालकान् ॥
राष्ट्रभाषाधर्म्यभाषा पुस्तकालय योजना।
ग्रामे-ग्रामे विधातव्या राष्ट्रियैः राष्ट्रवर्धकैः ॥
कृपाणा जलहारिण्यो गोपाला अपि यत्नतः।
राष्ट्रज्ञानेषु निपुणाः कार्या राष्ट्रहितैषिभिः ॥

अर्थात् ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें राष्ट्रके समस्त बालक पूर्ण ब्रह्मचर्यव्रतकी रक्षा कर सकें। तथा युद्धविद्या और नीतिविद्यामें प्रत्येक सम्भव प्रयत्नों द्वारा उनको कुशल बनाया जा सके। विद्या, बल तथा धन इन त्रिविध शक्तियोंसे सम्पन्न, शान्त, विनीत, समदर्शी तथा राष्ट्रके हितके लिए रुधिरकी भी बलि चढ़ानेके लिए समुत्सुक बनाना चाहिए। राष्ट्रहितैषियोंका यह कर्तव्य है कि राष्ट्रके बालकोंको दूरदर्शी तथा राष्ट्र भाषा और धार्मिक ग्रन्थोंकी भाषामें निपुण बनावें। राष्ट्रकी उन्नतिके इच्छुक राष्ट्रिय व्यक्तियोंको चाहिए कि प्रत्येक गाँव में राष्ट्रभाषा और धर्मसम्बन्धी भाषाकी शिक्षण संस्थाके साथ पुस्तकालय स्थापित करें। तथा ऐसा प्रयत्न करें कि राष्ट्रका प्रत्येक व्यक्ति हलवाहक किसान जल लाने वाली स्त्री एवं वनोंमें पशुचराने वाले गोपाल तक राष्ट्रके स्वरूपको समझने और उसको समुन्नत बनानेका ज्ञान प्राप्त कर सकें।

अन्तमें हम अपनी राष्ट्रिय सरकारको पुनः पुनः बधाई देते हैं और उससे आशा ही नहीं विश्वास रखते हैं कि वह यथा समय शीघ्र ही अन्य आवश्यक कार्योंको करनेके साथ ही इधर भी ध्यान देगी।

विजयिनी-विजया

[कविसम्राट् श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध']

उषा क्यों बहु अनुरञ्जित हुई,
पहन कर अभिनन्दनका साज।
प्रकृतिके भव्य-भालका बिन्दु—
बना क्यों बाल-विभाकर आज॥१॥

किस लिए पारदमय हो गया,
विमल नभतलका नील-निचोल।
बिहँस कर देख रही है किसे,
दिग्वधू अपना घूँघट खोल ॥२॥

खिल गये किसका वदन विलोक,
सरोंमें विलसे बहु अरविन्द।
बरसता है क्यों सुमन-समूह,
प्रफुल्लित नाना पादपवृन्द ॥३॥

रत्न-मय तारक मिष क्यों हुआ,
विधुमुखी रजनी शिरका ताज।
बिछ गई छिति पर चादर धुली,
किस लिए कलित कौमुदी व्याज ॥४॥

वितरता फिरता है क्यों मोद,
मन्द चल सुरभित-सरस-समीर।
मोहता है क्यों बज सब ओर,
किसी मंजुल पगका मंजीर ॥५॥

हँस रहे हैं सज्जित ध्वज लिये,
आगमनसे किसके आवास।
विपुल विकसित है जनता बनी,
किस विजयिनीका देख विकास ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता और चण्डी

[लेखक—श्री देवीनारायण जी शास्त्राचार्य, एडवोकेट]

भारतवर्ष सदासे धर्मप्रधान देश रहा है। भारतवासियोंने 'परमाणु बम' से भी भयंकर अस्त्र-शस्त्र बनानेका ज्ञान प्राप्त किया था, परन्तु उनका प्रयोग नहीं किया। प्राचीन ऋषि-मुनि आध्यात्मिक उन्नति में लगे रहे। समस्त जगत्के कल्याणके लिए वेद, उपनिषद्, गीता पुराण आदिका विकास हुआ।

आजकल इस घोर कलिकालमें हिन्दूजातिकी जीवनरक्षा दो ग्रन्थों द्वारा हो रही है। एक श्रीमद्भगवद्गीता, दूसरा श्रीदुर्गासप्तशती। गीता महाभारत का एक अङ्ग है और चण्डी मार्कण्डेयपुराणका एक अंश। दोनों ही अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ हैं। गीतामें सात सौ श्लोक हैं और चण्डीमें भी सात सौ मन्त्र हैं।

श्री चण्डीका महात्म्य भारतमें बहुत है। आसामसे अफगानिस्तान, काशी, पंजाब, बङ्गाल, कलिङ्ग, महाराष्ट्र, गुजरात, बम्बई, मद्रास आदि भारतके नगरों व ग्रामोंमें प्रतिदिन चण्डीके लाखों पाठ होते हैं। मुमूर्षु हिन्दूसमाज इस शाक्तग्रन्थ को हिन्दू जातिका प्राणरक्षक समझकर इसको दोनों हाथोंसे पकड़, छातीसे लगाए हुए है। कामाक्षा कालीघाट, विन्ध्याचल, काशी, अवन्ती, वैद्यनाथ, बम्बई, ज्वालामुखी आदि स्थानोंके भगवतीके मन्दिरोंमें वसन्त तथा शरद्के नवरात्रमें तो एक अलौकिक आध्यात्मिक छटा दिखाई पड़ती है। सहस्रों भक्तजनोंकी शोभा दर्शनीय होती है। स्थान-स्थान पर पाठ, जप, होम आदि होता रहता है। इन स्थानोंमें हिन्दूजातिकी महाशक्तिका जीवित प्रकाश दिखाई पड़ता है। अमीर गरीब, राजा महा-राजा सब अपनी मनोरथसिद्धिके लिए जगदम्बा का आश्रय लेते हैं और सबकी मनोवाञ्छाकी पूर्ति होती है। गीता और चण्डीका महात्म्य अनुभवगम्य है, शब्दों द्वारा प्रकाशित नहीं हो सकता।

श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थका प्रचार पहले केवल साधु सन्यासियों और विद्वानोंमें था। गृहस्थ लोग कहते थे कि "गीता मत पढ़ो, इसके पढ़ने वाले घर छोड़कर भाग जाते हैं, गृहस्थीको चौपट कर देते हैं।" एक वयोवृद्ध गृहस्थने मुझसे कहा—"गीताका पाठ मरनेके समय सुनाया जाता है। इससे प्राण जल्दी निकल जाता है। प्राणीको बहुत घर्रा आदि का कष्ट नहीं होता।" इस प्रकार गीताका सार्वजनिक प्रचार बन्द रहा। लोकमान्य तिलक, अरविन्द घोष, स्वा० विवेकानन्द, रामतीर्थ व विद्यानन्दजी, महात्मा गान्धी, श्री जयदयालजी गोयनका आदि महापुरुषों को इस बातका श्रेय है कि इन्होंने गीताका सार्वजनीन प्रचार किया। भारतके बाहर भी इसका मान स्थान-स्थान पर होने लगा।

गीताका प्रचार संन्यासियोंके लिये समझा जाता था, परन्तु दुर्गासप्तशतीका प्रचार गृहस्थोंमें अत्यन्त प्राचीन समयसे चला आया है। चण्डी हिन्दुओंका प्राणरक्षक तथा कष्टहरण ग्रन्थ है। इसका प्रत्यक्ष तथा तात्कालिक फल दिखाई पड़ता है। इसकी साधनासे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सुलभतासे प्राप्त होते हैं। गीतामें जैसे ज्ञानकाण्डकी महत्ता है उसी प्रकार चण्डीमें उपासना तथा कर्मकाण्डकी विशेषता है। चण्डीमें एक साथ ज्ञान, कर्म, और भक्ति (साधन) मार्गका विषय सरल उदाहरणोंके साथ दिखाया गया है। गीतामें भी ज्ञान, भक्ति तथा कर्मका तत्त्व प्रदर्शित है। परन्तु वह इतने उच्च स्थानमें, इतने उच्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरसे सिद्धान्तस्वरूपमें गाई गई है कि उसका समझना साधारण जनताका काम नहीं है। उसको आचार्योंके भाष्य तथा लोकमान्य तिलकके गीता-रहस्य आदिसे विद्वान् ही समझ सकते हैं।

गीता और चण्डी—में इतनी समानता है कि दोनोंके अध्ययनसे एक विलक्षण प्रकाश प्रकट होता है। इस समन्वयका कुछ दिग्दर्शन नीचे दिया जाता है।

गीता और चण्डीके उपाख्यानका आरम्भ और उपसंहार बिल्कुल समान है।

चण्डीमें राजा सुरथ अपने अमात्य और कर्मचारियोंके कुचक्रसे राज्य-भ्रष्ट हो जंगलमें वैराग्यभावसे चला गया। बिल्कुल उदासीन घूमते-घूमते अकेले गहन वनमें मेधस मुनिके आश्रममें पहुँचा। उसी स्थान पर उसका परिचय समाधि नामक एक वैश्यके साथ हुआ। वह वैश्य अपने पुत्र स्त्री आदि घरवालोंसे दुखी होकर जंगलमें पहुँचा था। राजा और वैश्य अपने अपने दुःखकी कहानियोंसे परिचित हुए। दोनों मेधस ऋषिके आश्रममें शान्तिके लिए गये।

मेधस ऋषिने उन दोनोंका दुःख दूर करनेके लिये जो उपदेश दिये थे, वही चण्डीग्रन्थका वर्णित विषय है। उन सब बातोंको सुनकर दोनोंने उदासीनता व वैराग्यका त्याग किया और कटिबद्ध होकर कर्मक्षेत्रमें आ गये। तीन बर्ष तक बराबर कठोर साधनाके बाद दोनोंने देवीसे अपना-अपना अभीष्ट वर पाया। भगवतीकी उपासना जिस भावसे की जायगी, वैसा ही पुण्यमय फल मिलेगा। राजा सुरथने देवीके वरप्रभावसे अपना छीना हुआ राज्य प्राप्त किया एवं शत्रुओंका नाश कर निर्विघ्नभावसे उसका उपभोग किया, और यहां तक शक्ति बढ़ी कि शरीरान्तके बाद पुनः जन्मलाभ करके संसारमें सावर्णि नामक मनुरूपसे प्रसिद्ध हो गये। समाधिस्थ समाधि वैश्यने भी भगवतीकी कृपा व उपासनासे आत्मज्ञान (ब्रह्मविद्या) प्राप्त किया।

श्रीमद्भगवद्गीताका भी प्रादुर्भाव वैसे ही हुआ है जैसे चण्डीका। कौरवोंने पाण्डवोंका राज्य हरण कर लिया, उनको जंगलमें निकाल दिया। दुर्योधन सुईके बराबर भी जमीन पाण्डवोंको देनेके लिए तैयार नहीं हुआ, युद्धकी तैयारी हो गई। महारथी अर्जुन ही ऐसा योद्धा था जो कौरवोंको परास्त कर सकता था। ठीक युद्धस्थलमें उसे वैराग्य उत्पन्न हुआ, बेवक्तकी शहनाई बजने लगी—

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण ! युयुत्सं समुपस्थितम्।
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ॥
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ॥
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।
अहो बत महत्पापं कर्त्तुं व्यवसिता वयम् ॥
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः।
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ॥
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥

अर्थात् 'हे कृष्ण ! युद्धकी इच्छा वाले इस खड़े हुए स्वजनसमुदायको देखकर मेरे अंग शिथिल हुए जाते हैं और मुख भी सूखा जाता है, मेरे शरीर में कम्प तथा रोमाञ्च हो रहा है। हाथसे गाण्डीव धनुष गिर रहा है और त्वचा भी बहुत जलती है तथा मेरा मन भ्रमित सा हो रहा है। इस लिए मैं खड़ा रहनेको भी समर्थ नहीं हूँ।

अहो ! शोक है कि हम लोग बुद्धिमान् होकर भी महान् पाप करनेको तैयार हुए हैं ! जो कि राज्य और सुखके लिए अपने कुलको मारनेके लिए उद्यत हुए हैं।

यदि मुझ शस्त्ररहित, न सामना करनेवालेको शस्त्रधारी धृतराष्ट्रके पुत्र रणमें मारें तो वह मारना भी मेरे लिए अति कल्याणकारक होगा।

इस प्रकार सुरथ राजाकी भांति अर्जुनने वैराग्य प्रकट किया, अपने धनुषको त्याग कर त्यागी बनना चाहा, परन्तु भगवान् कृष्णने अर्जुनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्ति, योग, ज्ञान तथा कर्मका बड़ा सुन्दर चित्र दिखाया, संसारका विराट् रूप भी, जैसा महामाया ने सुरथ राजा और समाधि वैश्यको दिखलाया था, भगवान्ने अर्जुनको दिखलाया।

फलतः अर्जुनको इस बातका ज्ञान हुआ कि योग, भक्ति, जप, तप, संन्यास साधन आदि सब का फल है कार्यक्षेत्रमें लगे रहना। रणक्षेत्रसे भागना मनुष्यका कर्तव्य नहीं है। इस प्रकार सर्वथा युद्ध से विरत अर्जुनका पुनः कर्तव्यबोध प्राप्तकर युद्ध क्षेत्रमें उतरना भगवान्की इच्छा शक्तिका परिचायक है। गीतामें कहा है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

शरीररूप यन्त्रमें आरूढ हुए संपूर्ण प्राणियोंको अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी मयासे अनेक कर्मोंके अनुसार भ्रमाता हुआ सब भूत प्राणियोंके हृदयमें स्थित है। जो कुछ इस संसारमें हो रहा है वह सब भगवान्की इच्छासे हो रहा है। महाभारत, रामायण, देवासुरसंग्राम, विश्वव्यापी आधुनिक युद्ध उसी महामायाकी इच्छासे हुए हैं और भविष्यमें भी ऐसे ही कार्य्य होंगे।

ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गांश्छावचञ्चुषु।
कणमोक्षादृतान् मोहात् पीड्यमानानपि क्षुधा॥
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति।
लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि॥
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः।
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा॥
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः।
महामाया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत्॥
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

अर्थात् देखिये, ज्ञान रहते हुए भी पक्षीगण स्वयं क्षुधातुर होने पर भी मोहवश बड़े स्नेहसे अन्नादिके कण अपने बच्चोंके चञ्चुमें दे देते हैं। हे मनुष्यश्रेष्ठ! क्या तुम देखते नहीं हो कि मनुष्यगण अन्तिम समय में प्रत्युपकार करवानेके लोभसे पुत्रादिकोंके प्रति सर्वदा स्नेहयुक्त हुआ करते हैं। तथापि जगत्के पालन करने वाले भगवान्की मायाके प्रभावसे ही प्राणिमात्र ममताके फन्देमें फंसकर मोहके गड्ढेमें गिरते हैं। इस में कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि भगवान् विष्णुकी योगनिद्रारूपी महामायाके प्रभावसे ही जगत् ऐसा मोहित हो रहा है।

वह देवी भगवती महामाया अनेक ज्ञानियोंके चित्तको भी हठात् (जबर्दस्ती) आकर्षण कर मोहमें डाल देती है।

गीतामें भगवान्की स्तुति और चण्डीमें भगवती की स्तुति उच्च कोटिकी है। भारतमाताकी रक्षा तथा इस समयकी घोर विपत्तिसे बचना इन्हीं दोनों ग्रन्थोंके पाठसे हो सकता है। कमसे कम इन स्तुतियों का पाठ तो नित्य अवश्य करना चाहिए।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति।
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः॥

हे अन्तर्यामी! आपके नाम और प्रभावके कीर्तन से जगत् बहुत सुखी होता है। और अनुरागको भी प्राप्त होता है। राक्षस भयभीत होकर दूर भागते हैं और सिद्धगण आपको नमस्कार करते हैं।

देवि! प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी पाहि चराचरस्य॥

हे देवि! शरणागतका दुःख विनाश करने वाली आप प्रसन्न हों। हे माता! आप सारे जगत् पर प्रसन्न हों, हे विश्वेश्वरि! आप चराचर जगत् की अधीश्वरी हो, आप प्रसन्न हों तथा जगत्की रक्षा करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्ववन्द्य श्री म० गांधीजी

अभी गत ता० २ अक्तूबरको आपकी ७९ वीं वर्षगांठ भारतके कोने-कोनेमें सोत्साह मनाई गई है।

सरदार वल्लभभाई पटेल
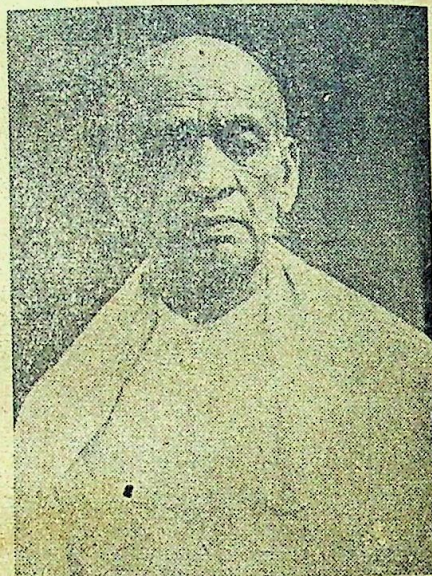
राष्ट्रिय सरकारके गृह व सूचना विभागके मन्त्री

डा० श्री राजेन्द्रप्रसादजी (खाद्य व कृषि मन्त्री)

श्री राजगोपालाचार्य

उद्योग व रसद मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति

[ले०—श्री पं० पुरुषोत्तमजी शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य शुद्धाद्वैतालङ्कार, प्रधान संस्कृताध्यापक]

यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके !
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥

देवी सप्तशती अ० १ श्लो० ८२ ।

ब्रह्माजीने भगवती योगनिद्राकी स्तुति करते हुए उपर्युक्त श्लोकमें शक्तिकी स्तुतिमें अपनी अशक्ति बताई है। उनका कथन है कि हे सर्वरूपिणि! जगत्में जो कोई जहां कहीं, सद् या असद् वस्तु है, उस सबकी आप शक्ति हैं। भला, आप ही बताइए, क्या मैं आपकी स्तुति कर सकता हूँ?

इस छोटेसे श्लोकमें शक्तिके विषयमें अनेक बातें लिखी हैं, जिन्हें हम बराबर पढ़ते रहने पर भी न तो यथार्थमें जान पाते हैं और न प्रयोगमें ही लाते हैं।

सर्वप्रथम तो इस श्लोकमें प्रयुक्त हुए सम्बोधन 'अखिलात्मिके' अथवा 'सर्वरूपिणि' पर ही ध्यान दीजिए। इस एक ही पदमें शक्तिके विषयमें कितनी महत्त्वपूर्ण बात बताई गई है।

इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक वस्तुका स्वरूप-लाभ और स्वरूपधारण बिना शक्तिके नहीं हो सकता। जो भी कोई वस्तु किसी रूपमें दिखाई देती है अथवा वर्तमान है, वह शक्तिके ही कारण है। उदाहरणके लिए किसी भी वस्तु या व्यक्तिको ले लीजिए, उसमें जब तक उस रूपमें रहनेकी शक्ति होगी, तभी तक वह उस नाम, पद, प्रतिष्ठा आदिकी प्राप्तिकी अधिकारिणी रह सकती है, जहां वह शक्ति उसमेंसे हटी और वह स्वरूपसे च्युत हो जायगी। थोड़ी देरके लिए मान लो कि एक व्यक्ति जज अथवा न्यायाधीश है, वह अपने पद और प्रतिष्ठाको तभी तक प्राप्त किये रह सकता है, जब तक उसमें न्यायकारिताकी शक्ति विद्यमान है। यदि उसकी सदसद्विवेककी बुद्धि रूपी शक्ति नष्ट हो जाय, तो वह अपने स्वरूपसे च्युत हो जायगा। ऐसी दशामें जैसे काठका हाथी, हाथी कहलाता है वैसे वह जज भले ही कहा जाय, पर वास्तवमें वह कुछ नहीं होगा। यही दशा अन्य सभी वस्तुओं तथा व्यक्तियोंकी है। आप थोड़ासा भी सूक्ष्म विचार करेंगे तो दर्पणकी भांति यह बात आपको प्रत्यक्ष दीख पड़ेगी। अतएव शक्तिको सर्वात्मिका बताया गया है। ये जो आपको भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व, विशिष्टत्व और साधारणत्व देख पड़ते हैं सब उसीके रूप हैं। अग्निमें जब तक दाहिका शक्ति रहती है, तभी तक वह अग्नि है। जहां उसमेंसे वह शक्ति गई, वहीं वह अपने स्वरूपसे च्युत हो जायगी। उसे राख आदि अन्य किसी नामसे आप पुकारें, पर अब वह अग्नि नहीं है—इसमें तनिक भी संदेह नहीं। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रत्येक व्यक्तिको यदि अपनी स्वरूप-रक्षा करनी है, तो उसे शक्ति-संपादन अवश्य ही करना चाहिए, अन्यथा वह हजार प्रयत्न करने पर भी अपने स्वरूपसे च्युत हो ही जायगा।

दूसरी बात इस श्लोकसे यह सिद्ध है कि चाहे कहीं कोई कैसी भी वस्तु क्यों न हो, उसमें अवश्य ही कोई-न-कोई शक्ति रहती है। बिना शक्तिके कोई वस्तु है ही नहीं। यह दूसरी बात है कि हम उस वस्तुकी शक्तिको जानते हैं या नहीं, किन्तु यह कभी न समझो कि इसमें कुछ शक्ति नहीं है। उदाहरणके लिए छोटे-से छोटे कीटाणुओंसे लेकर महान्-से-महान् गजराज को ले लीजिए। उन सबमें किसी न किसी प्रकार की शक्ति अवश्य रहती है। इतना ही नहीं, किन्तु कभी कभी तो हम देखते हैं कि छोटी-छोटी वस्तुओं में जैसी शक्ति रहती है, वैसी बड़े-बड़े पदार्थों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पाई जाती । जो बातें कीटाणु कर सकते हैं, वे बड़े-से बड़े प्राणीके द्वारा नहीं हो सकती। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि सबमें मूलशक्तिकी अंशभूत एक-एक पृथक् शक्ति काम करती रहती है अतएव हम किसी शक्तिकी उपेक्षा नहीं कर सकते । इस विषयमें कविवर रहीमने कैसा सुन्दर लिखा है ! वे कहते हैं:—

रहिमन देखि बड़ेनको लघु न दीजिए डारि ।
जहां काम आवे सुई कहा करे तरवारि ॥

तीसरी बात इस श्लोकमें यह बताई गई है कि शक्तिका स्वरूप अवर्णनीय है। वह सबके अन्दर कार्य करती है, अतः उसकी इयत्ता (इतनी ही है यह बात) नहीं बताई जा सकती। सब जगत्के उत्पादक ब्रह्माके मुखसे यह कहलवा कर तो भगवान् वेदव्यासने इस बातका महत्त्व और भी बढ़ा दिया है। जिसका तात्पर्य यह है कि वस्तु-शक्तिको ब्रह्मा भी नहीं जानते। आपने यदि एक वस्तुको हजार बार खोजा है, तब भी और खोजते चले जाइए, न जाने अभी उसमें क्या क्या शक्तियां अज्ञात रूपमें पड़ी हुई हैं। अतः अपनी खोजको कभी समाप्त न समझो। लाखों व्यक्तियों ने उसके अनेक अंशोंका परिज्ञान प्राप्त किया, तब भी न जाने अभी क्या-क्या. बातें छिपी हुई हैं। जब पैदा करने वाले ब्रह्मा भी उसे नहीं जानते, तो आप हम तो हैं ही क्या ? कबीरने इस विषयमें क्या ही सुन्दर कहा है—

जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठि ।
हौं बौरी ढूंढ़न गई रही किनारे बैठि ॥

अच्छा, अब यह देखना है कि-यह शक्ति क्या पदार्थ है, यह वस्तुसे भिन्न रहती है अथवा अभिन्न और इसका सम्पादन किस प्रकार किया जा सकता है।

'शक्ति' शब्द का अर्थ है सामर्थ्य या ताकत। पहले यह लिखा जा चुका है कि शक्ति वस्तु के अन्दर रहने वाला वह धर्म है जिससे प्रत्येक वस्तु स्वरूपलाभ तथा स्वरूपरक्षा करती है। शास्त्रों में इस बातको बड़े उत्तम रूपसे समझाया गया है कि इस शक्तिका शक्तिमान् (वस्तु या व्यक्ति) के साथ तादात्म्य सम्बन्ध है। तादात्म्य सम्बन्धका अर्थ होता है भेद-सहिष्णु अभेद। अर्थात् जो पदार्थ किसी अन्य पदार्थ से भिन्न भी प्रतीत हो और अभिन्न भी, उसका उस पदार्थके साथ तादात्म्य सम्बन्ध माना जाता है। इसका उदाहरण है दीपक और उसका प्रकाश। प्रकाश दीपकसे भिन्न भी है और अभिन्न भी। भिन्न तो वह इसलिए है कि दीपक को प्रकाश अथवा प्रकाशको दीपक नहीं कहा जा सकता; कारण, दीपककी लौ पर यदि हम हाथ रखें तो हाथ जल जायगा, पर प्रकाश में ऐसी कोई बात नहीं। पर उसे सर्वथा भिन्न भी नहीं कह सकते। कारण, यदि दीपक से प्रकाश सर्वथा भिन्न होता तो दीपक हटाने पर प्रकाश नहीं हटता। कहीं न कहीं हम उसे दीपक-आदि प्रकाशमान् पदार्थों के अतिरिक्त भी प्राप्त कर सकते। पर प्रकाशमान् पदार्थों से पृथक् प्रकाशको हमने कभी नहीं देखा, अतः उसे दीपक-आदिसे अभिन्न ही मानना पड़ेगा। इस प्रकार दीपक और प्रकाशका सम्बन्ध होता है— तादात्म्य अथवा भेदसहिष्णु अभेद। यही सम्बन्ध शक्ति और शक्तिमान का है। शक्ति शक्तिमान् के स्वरूप की रक्षा करती हुई भी उससे पृथक् नहीं है।

जिस प्रकार नाना रूपमें परिदृश्यमान विश्वका एक उद्गम स्थान है जिसे हम ईश्वर अथवा परब्रह्म कहते हैं। वैसे ही इन अनन्त शक्तियोंका मूल एक शक्ति है, जिसे व्यवहार में कार्यभेदसे प्रकृति, माया, शक्ति, जगदम्बा आदि अनेक नामों से निरूपण करते हैं। यह शक्ति उपर्युक्त रीतिसे उस विश्वेश्वरके साथ तादात्म्य सम्बन्ध-रखती है और उसके सभी काम इसकी सहकारितासे होते हैं।

शास्त्रों में स्थान-स्थान पर शक्तिका वर्णन है, अतः इस विषयमें विशेष लिखना व्यर्थ है। तथापि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णुपुराणके निम्नलिखित श्लोकोंके पढ़नेसे उपर्युक्त सभी बातें स्पष्ट हो जाती हैं।

शक्तयः सर्वभावानामचिन्त्या अपृथक् स्थिताः ।
स्वरूपे नैव दृश्यन्ते दृश्यन्ते कार्यतस्तु ताः ॥
सूक्ष्मावस्था हि सा तेषां सर्वभावानुगामिनी ।
इदन्तया विधातुं सा न निषेद्धुं च शक्यते ॥
सर्वैरनुयोज्या हि शक्तयो भावगोचराः ।
एवं भगवतस्तस्य परस्य ब्रह्मणो मुनेः ॥
सर्वभावानुगा शक्तिर्ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः ।
भावाभावानुगा तस्य सर्वकार्यकरी विभोः ॥

अर्थात् सभी पदार्थोंमें (अनेक) शक्तियां होती हैं, जो कि पदार्थसे पृथक् नहीं रहती और अचिन्त्य हैं। वे किसी वस्तुके स्वरूपमें दिखाई नहीं देतीं, किन्तु कार्यद्वारा दृष्टिगोचर होती हैं। वस्तुतः शक्ति एक प्रकारसे पदार्थों की सूक्ष्मावस्था है जो सभी पदार्थोंका अनुगमन करती हैं—संसारका कोई पदार्थ उससे मुक्त नहीं है। इस शक्ति को न तो कोई प्रत्यक्ष रूपसे (देखिये यह शक्ति पदार्थ है यों) बता ही सकता है और न उसका कोई निषेध ही किया जा सकता है। ये पदार्थोंमें विद्यमान शक्तियां तर्कका विषय नहीं हैं (किन्तु खोजका विषय है।)

जैसे ये पदार्थोंकी शक्तियां हैं ठीक वैसे ही उस भगवान परब्रह्मकी भी एक शक्ति है, जो पदार्थों के पीछे लगी हुई है और जैसे चन्द्रमासे चांदनीका सम्बन्ध है, वैसे ही इसका भगवानसे सम्बन्ध है। यह ईश्वरकी शक्ति भाव और अभाव सबके साथ लगी हुई है और ईश्वरके सब कार्यों को पूरा करती है—उसके सभी कार्य इसके द्वारा होते हैं।

यही क्यों? भगवान् स्वयं भी अवतार लेते हैं तो इसीके आधार पर। गीतामें भगवानने लिखा है:—

प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया।

मैं अपनी प्रकृतिमें अधिष्ठित होकर अपनी मायाके द्वारा प्रकट होता हूँ।' अतएव तो हम जब कभी भगवत्स्वरूपोंका वर्णन करते हैं, पहले उनकी शक्तिका वर्णन करते हैं और फिर उनका; जैसे, लक्ष्मीनारायण, राधाकृष्ण, सीताराम इत्यादि।

यह तो है शक्तिका तात्त्विक वर्णन। पर यहां सृष्टिमें उसका क्या स्वरूप है और उसका संपादन तथा उपयोग कैसे किया जा सकता है, ये बातें विशेष रूपसे समझ लेनेकी हैं।

श्रुतियोंमें लिखा है कि—जब सृष्टि उत्पन्न की तब ईश्वरकी इच्छा हुई कि 'बहुस्यां प्रजायेय'—अर्थात मैं अनेक और एक दूसरेसे पृथक स्वरूपोंमें होऊं। बात भी बिलकुल ठीक है। हम देखते हैं, कि संसारमें सभी पदार्थोंमें एकता होते हुए भी विभिन्नता है। यदि एकता न होती तो एक व्यक्ति पर किया गया प्रयोग अन्य व्यक्तियोंके लिए सर्वथा अनुपयोगी होता और इस प्रकार सभी आविष्कार व्यर्थ हो जाते और विभिन्नता न होती तो संसारमें न रुचि-भेद होता न मतिभेद। ठीक यही बात शक्तिके विषयमें भी है। वह मूल रूपमें एक होने पर भी भिन्न भिन्न वस्तुओंमें भिन्न भिन्न रूपमें प्रकट हुई है। जो शक्ति अग्निमें है वह जलमें नहीं, जो जलमें है वह अग्निमें नहीं।

किन्तु पुराणोंमें विराट् पुरुषका वर्णन करते हुए इस बातको भलीभांति समझा दिया है कि ये सब शक्तियां अनुकूल रूपमें एकत्रित होकर ही व्यवहारोपयोगी हो सकती हैं। विशृङ्खलित रूपमें नहीं, क्योंकि ईश्वरने सभीको शक्ति देते हुए भी उसे आंशिक रूपमें ही रखा है, पूर्णरूपमें नहीं। अतएव हम देखते हैं कि यद्यपि स्त्री और पुरुषमें अपने समान अन्य व्यक्तिको उत्पन्न करनेकी शक्ति है। पर सम्मिलित रूपमें ही। वे दोनों मिल कर ही ऐसा करते हैं। प्रयत्न पराकाष्ठा होने पर भी न केवल स्त्री किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति को जन्म दे सकती है, न केवल पुरुष ही। यही क्यों, जो शक्ति किसी वस्तुमें रहती है वह भी अन्य सहयोगी वस्तुके बिना अपना कार्य पूरा नहीं कर सकती। एक मृत्तिकाका परमाणु यदि अन्य परमाणुओंको अपने साथ नहीं मिलावे तो घड़ा और मटकी तो न बना सके सो ठीक ही है, ढेला भी न बना सके। कितना भी चतुर कुम्हार बिना उपकरणके बरतन बनाने बैठे तो क्या बना सकता है? क्या कोई भी लेखक दावात कलम स्याही या पेन्सिल आदि उपकरणों के बिना चाहे कितना ही बुद्धिमान् क्यों न हो कुछ लिख सकता है? इससे यह सिद्ध है कि शक्तिको व्यवहारोपयोगी रूप देने के लिए यह आवश्यक है कि कुछ वस्तुएं सम्मिलित रूपमें प्रयुक्त हों।

इतना ही क्यों? आप अपने शरीरको ही देखिये, कान, नाक, आंख आदि सब इन्द्रियोंकी और इसी प्रकार अन्य सब अवयवों की शक्तियां पृथक्-पृथक् हैं। कानका काम कान ही से हो सकता है, अन्य किसी इन्द्रियसे नहीं। तथापि वे सब सम्मिलित और संयुक्त होकर ही पुरुषको पुरुष बना सकती हैं एक-एक अलग रह कर नहीं।

यही बात व्यक्तियोंकी भी है। एक व्यक्ति, कोई कितना ही बलवान् क्यों न हो, किसी कार्य को आंशिक रूपमें ही संपादन कर सकता है, पूर्णतया नहीं; अतः शक्ति-संपादनका उपाय है अपनी पृथक्-पृथक् शक्तियोंका सहयोग द्वारा संगठित होकर प्रयोग करना। बिना इसके कभी कोई कार्य नहीं हो सकता, अतएव तो लेखके आरम्भमें लिखे श्लोकमें शक्तिके विषयमें लिखा है "तस्य सर्वस्य या शक्तिः", जिसका तात्पर्य यह है कि शक्ति और वास्तविक शक्ति जिसकी हम वन्दना और अर्चना करते हैं वह सबकी है, एक की नहीं। अपनी एक पुरानी कहावत है कि—

'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता'। संस्कृतका एक पद्य भी इस बातको बताता है:—

संहतिः श्रेयसी पुंसां स्वकुलैरल्पकैरपि।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥

अर्थात् अपने छोटेसे छोटे कुलोंके साथ भी संगठित होना उत्तम है। (जिन्हें हम कुछ नहीं गिनते वे) तिनके ही रस्सी बुनते हैं, और सब उनसे मत्त हाथी बांधे जाते हैं।'

इसका सार यह है कि जो शक्ति विभक्त पड़ी है, वही संगठित होते ही न जाने क्या-क्या कर सकती है। अतएव 'दुर्गा सप्तशती' में भी शक्तिका निवास एक व्यक्ति या एक स्थानमें नहीं बताया। योगनिद्रा हीके लिए लिखा है:—

नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः।
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः॥

अर्थात् वह भगवान्‌की शक्ति नेत्र, मुख, नासिका बाहु हृदय और वक्षस्थलसे निकलकर ब्रह्माजीके दृष्टिगोचर हुई। इसका अभिप्राय यही है कि शक्ति कहीं भी केवल एक ही स्थान पर नहीं रहती। वह पृथक्-पृथक् स्थानों पर विभक्त होकर सुषुप्त रहती है, पर सबका सहयोग होते ही कार्य करने लगती है।

यही नहीं, मध्यमचरित्रमें तो उसे सब देवताओं के अंशोंसे ही आविर्भूत बताया गया है एवं उन सबकी संगठित शक्ति ने ही महिष जैसे महासुर को परास्त किया यह वर्णन है; और उत्तम चरित्रमें तो प्रधान शक्तिका अन्य शक्तियोंके सहयोगसे कार्य करना स्पष्ट ही वर्णित है। अतः यह सिद्ध है कि शक्ति संपादनका एकमात्र उपाय है संगठन और सहयोग। बिना इन दोनोंके शक्ति-संपादन नहीं हो सकती।

अतएव अन्तमें हम भगवती महाशक्तिसे प्रार्थना करते हैं, कि वह अपने परमप्रिय बालक भारतीयोंको संगठन और सहयोग प्रदान करके शक्ति संपन्न बनावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीविजया-दशमी

[लेखक—प्रोफेसर श्री लौटूसिंहजी गौतम एम. ए. एल. टी. काव्यतीर्थ एम. आर. ए. एस.]

[इस लेखके विद्वान् लेखक उदयप्रताप क्षत्रिय कालेज बनारसके प्रोफेसर और श्रीभारतधर्म-महामण्डल (काशी) के महामन्त्री हैं। आप एक अध्ययनशील विद्वान होने के साथ ही प्राचीन संस्कृतिके अनन्य उपासक एवं आदर्श-चरित्र व्यक्ति हैं। आपकी सादगी, संस्कृतिप्रेम, उच्च चरित्र तथा विद्यानुरागिता अंग्रेजीके विद्यार्थियोंके लिए विशेष अनुकरणीय है। आशा है 'विजयादशमी' पर आपका यह लेख 'श्रीस्वाध्याय' के मननशील पाठक विशेष रुचिके साथ पढ़ेंगे
—सम्पादक]
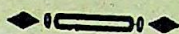
मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी विजयादशमी आई ही चाहती है और इसका स्मरण मात्र हमारी नसोंमें बिजलीकी स्फूर्ति पैदा करता है। विजय-पराजयका चक्र चलता रहता है जब तक संसारका प्रपञ्च चल रहा है। विजय-पराजयका द्वन्द्व चलता रहेगा, देवासुर-संग्राम, सुरासुर-संग्राम होता रहेगा, किन्तु भगवान् "राम"की विजय निराली विजय है और रामचन्द्रजीकी विजय मानवताकी विजय है, सत्य, न्याय, स्वतन्त्रताकी विजय है, आर्य सभ्यताकी अनार्य सभ्यता पर विजय है। अतएव यह विजय निराली विजय है और इस विजयका पर्व हिन्दूमात्र मनाते आये हैं इस वर्ष भी मनायेंगे किन्तु, जबसे हम हिन्दू पराधीन पददलित हुए तबसे आज तक एक हजार वर्षों तक हमारा "राम विजय"का उत्सव प्राणहीन और निस्तेज-सा रहा है। भगवान् रामकी सन्तान दासताकी बेड़ीसे जकड़ी हुई आत्मग्लानिसे क्षुब्ध आत्मविस्मृतिमें पड़ी सड़ रही है। उसका विजयोत्सव उसीके अनुकूल हो रहा है किन्तु उसकी आत्मा अभी सचेष्ट है और यदि ये पर्व ठीक ठीक मनाये जायें तो भारत और संसार दोनोंका ही कल्याण हो सकता है। अस्तु।

हम मनाते हैं विजयादशमीका उत्सव, किन्तु उसका रहस्य हमारी समझमें नहीं आता। इस कारण हमारे उत्सवोंसे विशेष लाभ नहीं। हो पाता समय आया है, जब हम इसका रहस्य समझें। पाश्चात्य विद्वानोंने हमारे पर्वोंका अर्थ अपने दृष्टि-कोणसे किया था। उनका विचार था कि विजयादशमीका अर्थ है आर्य लोगोंका दक्षिणके अनार्य लोगोंको जीत कर उनके देश पर अपना झंडा फहराना आदि आदि। पश्चिमी लोगोंमें पशु-बलकी पूजा होती आई है, होती है और कदाचित होती ही रहेगी, अतः उनकी विचार धारामें धर्मबल या आध्यात्मिक शक्तिका कुछ अर्थ नहीं होता; हमारे भारत या एशिया महाद्वीपमें धर्मबल या आध्यात्मिक बलका ही प्राधान्य है। यह बात दूसरी है कि इस समय एशिया परतन्त्रताकी बेड़ियोंसे जकड़ा है। एशियाका सूर्य जापान भी अपनी कुकृतियोंके कारण अस्त सा हो रहा है, किन्तु यह तो समयकी गति है; "कालो हि दुरतिक्रमः" कुछ समय पहले यूरोप महाद्वीप एशियाका दास था, अब भी धर्म और दर्शनमें तो शिष्य ही है।

उपर्युक्त अर्थ भगवान् श्रीरामके मानवी जीवनके अनुकूल नहीं है। भगवान् रामका भूमि पर अवतरण एक उद्देश्यसे हुआ था। वह था महर्षि वाल्मीकिके शब्दोंमें 'रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता। रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता" अर्थात् जीव लोक तथा धर्मकी रक्षा, धर्मका पालन, मर्यादाका स्थापन, बस, इतना ही उनके जीवन का लक्ष्य था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक भगवान् श्रीराम इस जगती तल पर थे तब तक प्रत्येक चण उनका जीवन धर्म के लिए सुरचित था। लंकाका राजा रावण मदान्ध, महाबलशाली लोकको सताने वाला अधार्मिक था। पंडित तो था किन्तु उसका पांडित्य लोकके लिए नहीं, अपने सुख विलासके लिए था। वह धर्मका शत्रु और मानवताको कुचलने वाला था। उसके शिष्य आज भी योरोपमें ताण्डवनृत्य कर रहे हैं। कविकुलचूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास जीने रावणी राज्यको यों चित्रित किया है:—

जप जोग विरागा तप मख भागा श्रवन सुनै दससीसा।
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धरम सुनिय नहिं काना।
तेहि बहु विधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना॥

जब सारा दक्षिणी भारत रावणके भयसे पीपलके पत्तेकी नांई कांप रहा था, मानवता कुचली जाकर चीख रही थी, देवता डरकर कंदराओंमें छिप रहे थे, धर्मका गला घोंटा जा रहा था, सत्य और न्यायकी हत्या हो रही थी, पशुबलके अखण्ड साम्राज्यमें दानवी-लीलाका कुचक्र चल रहा था, वसुन्धरा पापके बोझसे रसातलको जा रही थी; उस समय जीव लोक और धर्मके रक्षक भगवान् श्रीरामका अवतरण होता है। अयोध्यासे केवल अपने भाई लक्ष्मणके साथ दक्षिणमें जाकर श्रीराम धर्म विजय करते हैं। एक नहीं सैकड़ों हजारों निशाचरोंको अपने धर्मबल से जीतते हैं, धर्मबलका भी संगठन करना पड़ता है। अतएव छोटे बड़े सबको मिलाकर रावणी राज्यका अन्त करते हैं। इन पंक्तियोंके लेखकके मनमें श्रीराम-विजयका वही रहस्य है अर्थात् श्रीरामकी रावण पर विजय धर्मका अधर्म पर, सत्यकी असत्य पर, आर्यकी अनार्य पर और मानवताकी दानवता पर विजय है। भगवान् श्रीरामको रथहीन देखकर जब विभीषणको भ्रम हुआ था कि—

"रावण रथी विरथ रघुबीरा, देखि विभीषण भयउ अधीरा।

तब भगवान् रामने जिस धर्ममय रथका वर्णन किया है वह उपदेश संसारके साहित्यमें बेजोड़ है। गोस्वामी जीने स्वयं अनन्त-कोटि-ब्रह्मांड नायक मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् रामके मुखसे कहलाया है:—

"सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल विवेक दम परहित घोरे।
क्षमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईश भजन सारथी सुजाना।
विरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचण्डा।
वर विज्ञान कठिन कोदण्डा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना।
शम यम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा।
यहि सम विजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीतन कहें न कतहुँ रिपु ताके॥
महा अजय संसार रिपु, जीत सकै सो वीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर॥
सुनि प्रभुवचन विभीषण, हरषि गहे पदकंज।
एहि मिस मोहि उपदेसहु, राम कृपा सुख पुंज॥

इसी धर्ममय-रथ पर चढ़ कर धर्मकी रक्षा हो सकती है। यही हमारे रामविजयका रहस्य है। A.A. Macdonele:— ने भी लिखा है।

It the Ramayana has commonly been regarded as an allegory representing the first attempt of the Aryans to conquer the *South* or to spread their civilization over the Deccan and Ceylon. In no part of the epic, however, is Rama described as establishing Aryan dominion in the South or even as intending to do so.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् साधारणतया यह समझा गया है कि रामायणमें रूपक द्वारा दक्षिण पर विजय दिखाई गई है अथवा दक्षिण और लङ्कामें आर्य सभ्यता का प्रसार किया गया है, किन्तु रामायणके किसी भागमें भी रामने आर्यराज्यकी न तो स्थापनाकी और न इसकी इच्छा की।

ये शब्द एक पाश्चात्त्य विद्वान्‌के हैं जिसमें रामके प्रति पक्षपातकी किञ्चिन्मात्र आशङ्का नहीं है। A. A. Macdoanell को भी यही मानना पड़ा है। भगवान् रामकी विजयमें देशोंके हड़पनेकी लिप्सा नहीं है। भगवान् राम आर्य संस्कृतिके प्रतीक हैं और अखिल जगत्‌की मानवताके रक्षक हैं। उनमें वह क्षात्र तेज है, वह नैसर्गिक करुणा है, वह वीरता है जिनसे सारा संसार सुखी रहता है। अतएव महर्षि वाल्मीकिने रामराज्यका सर्वोत्तम सजीव चित्र यों खींचा है:—

हृष्ट: प्रमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः।
निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्षभयवर्जितः॥
न पुत्रमरणं केचिद्द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्।
नार्यश्चाविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः॥
नचाग्निजं भयं किञ्चिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः।
न वातजं भयं किंचिन्नापि ज्वरकृतं तथा॥
न चापि क्षुद्भयं तत्र न तस्करभयं तथा।
नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च॥
नित्यं प्रमुदिताः सर्वे यथा कृतयुगे तथा।
अश्वमेधशतैरिष्ट्वा तथा बहुसुवर्णकैः॥

इसलिए आधुनिक जगत्‌के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष महात्मा गांधीने रामराज्य और स्वराज्यको समानवाची शब्द माना है। भगवान् राम जैसी विजय द्वारा ही भारत या संसारको सच्ची सफलता मिल सकती है। अतः विजयादशमीके अवसर पर हम उस रामविजयका वास्तविक रहस्य समझें और उसके अनुकूल कार्यक्षेत्रमें उतर कर अपने कर्तव्य का सम्पादन करें। आज का समय बड़ा ही भयानक है। सारे संसारमें पशुबलका बोलबाला है। संसारके महायुद्धका जो अभी अभी अन्त हुआ है वह देवासुर संग्राम न था, एक ओर थे हिटलर मुसोलिनी और तोजो तो दूसरी ओर थे रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिन। इन देशोंकी मूक जनता अपने नेताओंका अनुगमन और अनुसरण करती थी, किन्तु थी निर्दोष। इस संग्राममें जिस पक्षकी विजय हुई है वह पक्ष आपसमें ही विजित राष्ट्रों के स्वत्वोंका अधिकाधिक हरण करनेके लिए लड़ रहा है। रूसकी बढ़तीहुई शक्ति अमरीका और ब्रिटेन के नेताओंको असह्य है। लड़ते लड़ाते हैं थोड़ेसे रावणी नेता, जलती मरती है बिचारी मूक जनता, अतएव भारतको तो उस रावणी राज्यको मिटाना है। थोड़ा सा सुधार होना भारतका लक्ष्य नहीं है। भारतको तो 'सर्वभूत-हिते रतः' होकर मानवता की विजयमें अपनी विजय समझनी चाहिए। आज जापान और जर्मनीमें जो हो रहा है उसकी प्रतिहिंसा से तीसरे महायुद्धका होना अनिवार्य हो जायगा और परमाणु-बमके आविष्कारक राष्ट्र आपसमें लड़कर मधुकैटभ राक्षसकी नाईं नष्ट हो जायेंगे, उनकी सभ्यता और संस्कृति इतिहासके पृष्ठों तक ही सीमित रहेगी। हमें ज्ञात है कि यूरोप की राष्ट्रीयतामें वह विषैला गैस भरा है जिसे घृणा, दम्भ कुत्सित स्वार्थ और अहम्मन्यता कहते हैं।

अभी अभी जीते हुए जनरलोंने जिस पशु बलको दबाकर सत्य, न्याय, स्वतन्त्रताके लिए युद्ध होनेकी बातकी थी वे ही उसका समर्थन कर रहे हैं। आज सारे संसारमें मानवता कराह रही है। कहां है शांति? कहां है सुख? यूरोप में दुर्भिक्षकी बात सुनी गई है। हमारा देश दुर्भाग्यसे पारस्परिक कलहका शिकार हो रहा है। हमारे ही भाई आपस में लड़ लड़कर विदेशी शासनको दृढ़ कर रहे हैं। जापान अपनी त्रुटियोंसे गिरा। इसका अनुचित लाभ पाश्चात्त्य देश उठाना चाहते हैं। यह सब होते हुए भी हम भले ही पराधीनावस्थामें क्यों न हों हमारा विश्वास है कि 'धर्म-विजय' ही वास्तविक विजय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। ऐसे समयमें हम लोगोंको भगवान रामकी विजयका आदर्श सामने रखना है। जगदम्बा जनकनन्दिनीके हरण करने पर भगवान् रामने कहा था—'हे लक्ष्मण! लोकहितके काममें लगे हुए क्षमाशील और दयाका व्यवहार करने वाले मुझको मालूम होता है कि ये देवता मुझको निर्बल समझने लगे हैं, मैं आकाशके भ्रमण करने वाले राक्षसोंका रास्ता बन्द कर दूंगा, पर्वतों के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।' आदि।

भगवान् रामकी इस दृढ़ प्रतिज्ञासे सुदृढ़ होकर अपने भाइयोंका सहयोग प्राप्त कर देशकी सारी जनताका संगठन कर रावणी राज्यका अन्त कर देने के लिए हमको उठकर 'सच्ची विजय' प्राप्त करनी होगी। श्री विजयादशमी उत्सवको उचित रूपसे मनाना होगा। यदि भारतने और एशियाने इस 'विजय' को हृदयङ्गम किया और हमने सच्ची 'विजयादशमी' मनानेका दृढ़ निश्चय किया तो संसारकी कोई शक्ति हमें राम जैसी विजय प्राप्त करनेमें बाधा न दे सकेगी। हम स्वतन्त्र होंगे, एशिया स्वतन्त्र होगा और मानवता भी मुक्त होगी।

आशा ही क्या विश्वास है कि तरुण भारत इस विजयादशमीके अवसर पर भगवान् श्रीरामका स्मरण कर सच्ची विजय प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हो जायगा।

सत्यकी कसौटी

'वास्तवमें सत्य और असत्यकी कसोटी क्या है, मुसलमानोंके लिए इसकी कसौटी यह है — मुसलमानोंको यह देखना चाहिए, कि हमारे बतलाये हुए मार्ग पर चलनेसे उनका भविष्य सुरक्षित रह सकता है या नहीं। मैं अपने पिछले ३० वर्षों के अनुभवके आधार पर आपको बताना चाहता हूँ, कि विभिन्न मुस्लिम संस्थाओंके उपायोंसे मुसलमानों का कष्ट दूर नहीं होगा। थोड़ेसे नारों और गिने गिनाये जोशीले वाक्यों द्वारा सामयिक कठिन परिस्थितिसे मुसलमानोंको बचाया नहीं जा सकता। सत्य तो यह कि हमारा मार्ग (कांग्रेस का) ही ठीक है। यह दूसरी बात है कि कुछ समय तक अपने सामने सब्ज बाग देखकर मुसलमान धोखेमें आ जावें किन्तु यह निश्चित है कि भ्रमके इस रेगिस्तानमें मृग-मरीचिकाके पीछे चलकर वे भटकते ही रहेंगे और कभी ईप्सित नखलिस्तान तक न पहुँच पावेंगे।'

—मौ० अबुलकलाम आजाद

धर्मका सर्वोच्च रूप

सत्यके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, और सत्य की उपलब्धि तथा अनुभवका एकमात्र उपाय प्रेम अथवा अहिंसा है। सत्यका ज्ञान और प्रेमका आचरण आत्मशुद्धिके बिना असम्भव है। शुद्ध अन्तःकरण वालेको ही ईश्वरका साक्षात्कार हो सकता है। वही ईश्वर और मनुष्यसे प्रेम कर सकता है। सहनशीलतायुक्त प्रेम आध्यात्मिकता का एक चमत्कार है। इसमें यद्यपि दूसरोंके अन्याय हमें अपने कन्धों पर झेलने पड़ते हैं, तथापि उससे एक ऐसे आनन्दका अनुभव होता है जो शुद्ध स्वार्थमय सुखकी अपेक्षा भी अधिक वास्तविक तथा गहरा होता है। ऐसे अवसरों पर ही ज्ञात होता है कि संसारमें इस ज्ञानसे बढ़कर मधुर अन्य कुछ नहीं, कि हम किसी दूसरेको क्षण भर भी सुख दे सकें। इस भावनासे बढ़कर मूल्यवान् अन्य कुछ नहीं, कि हमने किसी दूसरेके दुःखमें हाथ बंटाया। अहङ्कार रहित अभिमानशून्य, भलाई करने के अभिमान से भी शून्य, पूर्ण दयालुता ही धर्मका सर्वोच्च रूप है।

—सर एस० राधाकृष्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावलीके पांच प्रमुख पर्व

[लेखक । विद्याभूषण कुलमार्तण्ड श्री पण्डित योगीन्द्र कृष्ण दौर्गादत्तिशास्त्री साहित्यरत्न]
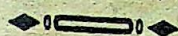
दीपावली और दीपमाला पर्यायवाची शब्द हैं। दीपावलीका अपभ्रंश शब्द 'दिवाली' है। यद्यपि दीपावली लक्ष्मीपूजाके अवसरपर ही की जाती है तथापि दीवालीके त्योहारोंमें धनतेरस से लेकर यम द्वितीया पर्यन्त पांचों दिन सम्मिलित किये जाते हैं, अत एव हम इन पांचों दिनोंके विषयमें यहां 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंको संक्षेप में कुछ बतायेंगे।

भारतवर्षमें त्योहारोंकी व्यवस्था चातुर्वर्ण्यके अनुसार की गई है, अतएव श्रावणी ब्राह्मणोंका, विजयादशमी क्षत्रियोंका, दिवाली वैश्योंका और होली शूद्रोंका राष्ट्रीय पर्व माना गया है। इनमेंसे प्रत्येक पर्वको प्रत्येक वर्ण सानन्द मनाता है।

१. धन–त्रयोदशी

दिवालीका प्रथम दिवस कार्तिक कृष्णा त्रयोदशीसे ही प्रारम्भ हो जाता है। इसी दिवसको धनतेरस भी कहते हैं। इस दिनपर नवीन पात्र खरीदनेका बड़ा माहात्म्य माना गया है। अत एव निर्धनसे निर्धन और धनीसे धनी अपने वित्तानुसार भोजनपात्र, पाकपात्र अथवा जलपात्र क्रय करते (खरीदते) हैं। गृहस्थाश्रममें बालकोंके हाथोंसे अथवा भृत्योंके या स्वामीके हाथोंसे कभी न कभी किसी पात्रका छूटना अथवा फूटना स्वाभाविक है। ऐसे पात्र सब एक प्रकोष्ठके कोनेमें अथवा किसी सन्दूकमें रख दिये जाते हैं। आजके दिन सबके सब बाहर निकालकर उन्हें बाजार ले जाते हैं, और उनके स्थान पर उनके बदलेमें नवीन पात्र ले आते हैं। यह आवश्यक नहीं कि पुराने हों तो वही बदले जावें और नवीन न आवें। नवीन भाजन आजके दिन पर अवश्यमेव आयेंगे, चाहे बदलनेके लिए पुराने हों अथवा नहीं। इस प्रकार साल भरमें एक ऐसा दिन नियत कर दिया गया है जिससे गृहस्थाश्रम के उपयोगी पौत्र प्रतिवर्ष एकत्रित होते रहते हैं और अनुपयोगी पात्र कालान्तर तक यों ही नहीं पड़े रहते, प्रत्युत उनके स्थानपर अन्य पात्र आ जाते हैं। इस प्रकार गृहस्थाश्रमके लिए मुख्य वस्तु (बर्तन) जोड़नेका कैसा अच्छा सुअवसर बनाया गया है। आजके क्रय (खरीदे) किए हुए पात्र लक्ष्मीपूजाके अवसर पर पूजाके कार्यमें लाए जाते हैं। और पूजाके अवसरसे लेकर पुनः उनका उपयोग होने लगता है।

सायंकालको पितरोंकी प्रसन्नताके निमित्त यमदीप दान किया जाता है। यह यमदीप घरके बाहर द्वार देश पर गन्धाक्षत–पुष्पोंसे पूजकर रख दिया जाता है। इससे पितरोंकी सन्तुष्टि, अपमृत्युका निवारण और यमराजकी प्रसन्नता होती है। दीप प्रदानके निम्नलिखित मन्त्र हैं—

कार्तिकस्यासिते पक्षे, त्रयोदश्यान्तु पावके।
यमदीप बहिर्दाध्यात् अपमृत्युर्विनश्यति ॥
मृत्युना पाशहस्तेन कालेन भार्या सह।
त्रयोदशीदीपदानात् सूर्यजः प्रथितामिति ॥

पद्मपुराण

२. नरक—चतुर्दशी

इसके अनन्तर दूसरा दिन नरक–चतुर्दशी का है। इसका माहात्म्य प्रसिद्ध है कि इस दिन स्नान करनेसे मनुष्य नरकमें नहीं जाता है। इस दिन चन्द्रोदय होने पर प्रातःकाल स्नान करना चाहिए। अपामार्ग, तुम्बी, चक्रमर्द और बाह्वल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा हलकी मिट्टीसे स्नान करना लिखा है। अपामार्ग और चक्रमर्दसे शिर धोना भी बताया गया है। इस प्रकार स्नान करने वाला मनुष्य नरक द्वार का दर्शन नहीं करता। आयुर्वेद-शास्त्रने अपामार्गको रोगनाशक बताया है। उसके नामसे ही यह अर्थ निकलता है, "अपमृज्यते व्याधिरनेनेत्यपामार्गः" ॥ चक्रमर्द दाद और खुजलीको दूर करता है। इसप्रकार औषधियोंके साथ स्नान करनेसे मनुष्य रोगोंसे दूर रहता है। स्नानके अनन्तर यमराजके चतुर्दश नामोंका उच्चारण कर उसके लिए तर्पण करना चाहिए, तर्पणानन्तर नरकके लिए भी दीपक प्रदान करना उचित है। पुनः देवपूजन तथा गोब्राह्मणार्चन भी करना लिखा है। पुनः सायंकालको दीपावली करनी भी नितान्त आवश्यक है। पाठकोंको ध्यान देना चाहिए कि सारे कार्तिक मास पर्यन्त तारोंकी छायामें स्नान, देवता और गो-ब्राह्मण-पूजन तथा प्रातः सायं दीपक प्रदान करना मनुष्यमात्रका कर्तव्य है। जो समस्त मास पर्यन्त न कर सकें उनको उक्त पांच दिनोंमें उपर्युक्त स्नान दानादि कार्य अवश्य ही करना शास्त्र-विहित है।

इस दिनके विषयमें यह भी प्रसिद्ध है कि नरक चतुर्दशीको भगवान् कृष्णने नरकासुरको मारा था, अत एव श्री भगवानके इस विजयोत्सव पर यह उत्सव मनाया जाता है। नरकासुर का दूसरा नाम भौमासुर था, वराहावतार धारण कर जिस समय पृथ्वीको ऊपर लाए थे उसी समय यह असुर भगवती वसुमतीसे समुत्पन्न हुआ था। इसके प्रमाणमें निम्नलिखित श्लोक हैं:—।

यदाहमुद्धृता नाथ त्वया शूकरमूर्तिना ।
त्वत्स्पर्शसम्भवः पुत्रस्तदाऽयं मेऽभ्यजायत ॥

यह नरकासुर कामरूप (आसाम) देशका राजा हो गया था। किन्तु यह बड़ा उद्दण्ड और अधर्मी था। भूमण्डल भरमें जिस स्त्री अथवा कन्याको सुरूपा समझता उसे अपने यहां ले आता और उसके सतीत्वको भ्रष्ट करता था। जब इसके पापोंका घड़ा भरा और भगवान् श्रीकृष्णको इसके विषयमें विदित हुआ तो उन्होंने इस पर चढ़ाई कर शीघ्र इसे मार डाला और इसके अन्तःपुरमें स्थित षोडश सहस्र रमणियोंको इसके बन्धनसे मुक्त कर दिया। सुना जाता है कि इन रमणीरत्नोंको भगवान् श्रीकृष्णने अपने यहां ले जाकर शरण दी थी। जिस प्रकार भगवान् श्रीकृष्णने नरकासुरके ऊपर विजय प्राप्त की थी उसी प्रकार मनुष्योंको भी नरकों (दुखों) के ऊपर विजय प्राप्त करनी चाहिए। यदि मनुष्य शास्त्रोक्त विधिसे इस पुण्य मासमें तथा अन्य मासोंमें तीर्थों पर जाकर स्नान करते हैं तो वे अवश्य नरकों (दुखों) के ऊपर विजयी होते हैं। भगवान्ने नरकासुरको मारा था अतएव उनको नरकान्तक कहते हैं। नरकान्तकके दोनों अर्थ हैं, नरकासुरका अथवा (दुखों का) अन्त करने वाला। अतएव कविवर श्रीहर्षने अपने नैषधीयचरितके इक्कीसवें सर्गमें भगवान्की स्तुतिमें निम्नलिखित पद्य लिखा है—

लीलयाऽपि तव नाम जना ये
गृह्णते नरकनाशकरस्य ।
तेभ्य एव नरकैरुचिता भी
स्तेतु बिभ्यतु कथं नरकेभ्यः ॥

अर्थात् हे भगवन्, नरकके नाश करने वाले आपके नामको यदि मनुष्य लीलासे भी ग्रहण करते हैं तो आपके नाम लेने वाले मनुष्योंसे नरकों भय का उचित है, अतएव वे डरते हैं और आपके नाम लेने वाले मनुष्य नरकोंसे कदापि नहीं डरते, अर्थात् उन्हें कभी नरकका भय नहीं होता। कविके कथनका सारांश यह है कि नरकान्तक भगवान्के नाम लेने वालेसे नरक स्वयं डरते हैं और भगवन्नामोच्चारण करने वाले जनों को कभी भी नरककी भीति नहीं होती है।

३. दीपावली, लक्ष्मीपूजन

तीसरा दिन कार्तिक अमावास्याका है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन दिवाली, दीपावली, और दीपमाला आदि नामोंसे प्रसिद्ध है। स्मरण रहे कि कार्तिक मास में प्रतिपद्से लेकर पूर्णमासी पर्यन्त अर्थात् पूरे महीने तक तारोंकी छायामें स्नान करनेका तथा दीपदान करनेका माहात्म्य है। अतएव इस दिन भी स्नान संध्या पूजासे निवृत्त होकर मनुष्योंको यथाविभव पितृश्राद्ध करना नितान्त आवश्यक है। प्रत्येक मासकी अमावस्याको पितृश्राद्ध करना परमावश्यक है, इसका कारण यह है कि अमावस्यामें जब रवि और चन्द्र एक राशिमें स्थित होते हैं उस समय हमारे अपराह्न समयमें सूर्य चन्द्रमाके ठीक सिर पर होता है। उस समय चन्द्रलोकमें निवास करने वाले पितरोंका भोजन समय अर्थात् मध्याह्न काल होता है। अतः अमावस्याके दिन अपराह्ण समयमें जो प्रतिमास श्राद्ध करते हैं वह श्राद्ध पितरोंको रुचिकर होता है। अतएव स्मृतिकारोंने भी लिखा है कि—'श्राद्धत्रीणि पवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलः' कुतुप काल हमारे अपराह्ण समयका नाम है। श्राद्ध क्रियाको समाप्तकर पुनः लक्ष्मीपूजनके स्थानको सजाना चाहिए। इस स्थानको सुसज्जित करनेके अनन्तर सकुटुम्ब उपस्थित होकर लक्ष्मीदेवी को जगाना चाहिए। पाठकोंको ध्यान रहे कि हरिशयनी एकादशीके दिन भगवान् सोते हैं और हरिबोधिनी एकादशीको भगवान अपनी निद्राको त्याग देते हैं। हमारी प्राचीन संस्कृति और सभ्यताके अनुसार पत्नी पतिके जागनेसे पूर्व ही शय्याको त्यागकर उठ खड़ी होती है अतएव श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी भगवानसे पूर्व आजके दिन जाग जाती है। भगवानके सोने पर कमलादेवी कमलोदरमें जाकर सुखपूर्वक सो जाती हैं—

लक्ष्मदैत्यभयान्मुक्ता सुखसुप्ताम्बुजोदरे ॥
(सनत्कुमार-वचन)

विष्णुपुराणान्तर्गत कथाके अनुसार देव और दानवोंने अद्यतन दिनमें ही समुद्र मंथन कर चतुर्दश रत्नोंकी प्राप्ति की थी। उन रत्नोंमेंसे भगवती लक्ष्मी भी एक सर्वोत्तम रत्न है। अतएव उसका प्रबोधन किया जाता है। इस विषयमें निम्नलिखित शास्त्र वचन प्रमाण है—

अप्रबुद्धे हरौ पूर्वं स्त्रीभिर्लक्ष्मीं प्रबोधयेत् ।
प्रबोधसमयं लक्ष्मी बोधयित्वा तु सुस्त्रिया ॥
पुमान् वै वासरं यावत् लक्ष्मीस्तं नैव मुञ्चति ।
त्वं ज्योतिः श्री रविश्चन्द्रो विद्युत्सौवर्णतारकः ॥
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपज्योतिः स्थिता तु या ।
या लक्ष्मीर्दिवसे पुण्ये दीपावल्याश्च भूतले ॥
गवां गोष्ठे तु कार्तिक्यां सा लक्ष्मीर्वरदा मम ॥

इस प्रकार लक्ष्मीका उद्बोधन कर चतुःषष्ट्युपचार षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचारसे यथाविभव पूजा करे। तथा दीपक बालकर दीपावली करे। दीपमालिकाके लिए घृत तथा तैलके दीपक ही उत्तम हैं। आज कल बड़े आदमियोंके यहां बिजली और मोमबत्तियोंसे प्रकाश किया जाता है। किन्तु लक्ष्मी देवीके निमित्त चर्बीकी बनी हुई मोमबत्ती जलाना नितान्त निषिद्ध है।

दीपावली शरद् ऋतुमें आती है और यह ऋतु वर्षा ऋतुके बीतने पर होती है। वर्षा ऋतुमें घरोंकी दुर्दशा हो जाती है। पुराने घर टपकने लगते हैं। नये गृह प्रासादोंका भी रंग उड़ जाता है और उनकी दशा प्रतिदिन बिगड़ती जाती हैं। दिवाली उत्सव के कारण इन घरोंकी प्रतिवर्ष छिपाई पोताई हो जाती है। और भवनोंकी अवस्था पुनः ज्योंकी त्यों बनी रहती है। वर्षासे भवनोंकी लकड़ी खराब हो जाती है। दिवालीमें घरोंकी लकड़ी पर रंग रोगन हो जानेसे पुनः लकड़ी भी नई प्रतीत होती है। और इससे लकड़ी पर पानी अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। मच्छर और कीटाणुओंके नाशके लिए दीपकोंका प्रकाश है। जिन अंधेरे घरोंके कोनोंमें मच्छर भरे रहते हैं वे दीपकके प्रकाशसे ही भागते हैं। अतएव घरोंको लीप पोतकर दीपावलीसे उनको प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक जान पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपक अपने स्थानके अतिरिक्त देवालय, गोष्ठ (गौओंका स्थान), श्मशान, तालाबके किनारे, घुड़शाला और हस्तिशाला आदि अन्य स्थानोंमें भी बालने चाहियें, नहीं तो यहांके कीटाणु और मच्छर आदि किस प्रकार नष्ट होंगे ? अतएव शास्त्रमें लिखा है—

दीपदानं कृतं येन कार्तिके केशवाग्रतः ।
कृष्णपक्षे विशेषेण पुनः पञ्च दिनानि च ॥
गृहेषु सर्वगोष्ठेषु सर्वेष्वायतनेषु च ।
देवालयेषु देवानां श्मशानेषु सरस्सु च ॥
घृतादिना शुभार्थाय यावत् पञ्च दिनानि च ।
पापिनः पितरो ये च लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥
तेऽपि यान्ति परां मुक्तिं दीपदानस्य पुण्यतः ।
ततः प्रदोषसमये दीपान् दद्यात् मनोहरान् ॥
ब्रह्म—विष्णु—शिवादीनां भवनेषु विशेषतः ।
कूपागारेषु चैत्येषु सभासु च नदीषु च ॥
मन्दरासु विविक्तासु हस्तिशालासु चैव हि ॥

इस दिनके विषयमें यह भी सुना जाता है कि प्रतापशाली सुगृहीतनामधेय धर्मात्मा राजाधिराज वीर विक्रमादित्य इस दिन उज्जयिनीके अटल सिंहासन पर अभिषिक्त हुये थे, अतएव उनके स्मारक स्वरूप भी यह दिवस मनाया जाता है। जो कुछ भी हो यह भी महालक्ष्मी जी के जन्म प्रकट होनेसे उपासनाका मुख्य दिवस है।

पाठकोंको इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि भवनकी स्वच्छताके साथ हृदयकी स्वच्छता भी नितान्त वाञ्छनीय है। मानस मन्दिरको ज्ञान ज्योतिसे जगमगा देना भी जगतमें जगदीशको पानेका उत्तम मार्ग है। इसी विषय पर हम अपने पाठकोंके लिये एक छोटी सी कविता दिवाली पर लिखते हैं— संगती सुचारि धौत कीरती कली से पोत पाप कालिमा निकाली है। हरी भक्ति हरित रंग इन्द्रियों के द्वार रंग शोभा निराली है। बोध की जु वाति कै सनेह को सनेह दे जु ज्ञान दिपवालि है। स्वकीय हीय भौन में मनुष्य लो जहान में यथार्थ दिवाली है॥

४. अन्नकूट, गोवर्धनपूजा

चतुर्थ दिवस कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का है। इस दिन को गोवर्धन, अन्नकूट और बालिराज नामोंसे पुकारते हैं। इस दिन ही भगवान श्रीकृष्णचन्द्रने इन्द्रयाग के स्थान पर गोवर्धन पर्वतकी पूजाका प्रारम्भ किया था, जिसके फलस्वरूप देवराज इन्द्रदेव ने असन्तुष्ट होकर अनवच्छिन्न मूसलाधार जल वर्षाया था और भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने गोप और गोपिकाओंको बचानेके लिए अपनी कनिष्ठिका पर गोवर्धन पर्वतको उठा कर इन्द्रका मानमर्दन किया। उसी दिन कृष्ण भगवान्‌का लोहा मानकर देवराज इन्द्रदेवने भगवान् श्रीकृष्णको गोविन्दकी उपाधि दान की थी,

अहमिन्द्रो हि देवानां त्वं गवामिन्द्रतां गतः ।
गोविन्द इति लोके त्वां गास्यन्ति भुवि मानवाः ॥

उनके ही स्मरण में गोवर्धन और गौओं का पूजन होता है। इनकी पूजाके निमित्त आजके दिन भगवान् कृष्णचन्द्रने पके हुए अन्नके कूट (ढेर) लगा दिये अतएव इस दिनका नाम अन्नकूट भी पड़ा। अब भी सम्पन्न लोग पक्वान्नके ढेर लगाकर गोवर्धन पूजा करते हैं और ब्राह्मणोंको जिमाते हैं। काशीके अन्नपूर्णा जीके मन्दिरमें अन्नकूटका दृश्य दर्शनीय होता है। गोवर्धनकी पूजाका मन्त्र निम्न लिखित है—

गोवर्धन धराधार गोकुलत्राणकारक !
विष्णो बाहुबलोच्छ्राय गवां कोटिप्रदो भव ॥

गोपूजन निम्न लिखित मन्त्र से होता है—

या लक्ष्मीर्लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता ।
घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु ॥
गावो मे चाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

आजके दिन स्नान करनेसे पूर्व तैलाभ्यङ्ग करना नितान्त आवश्यक है। बिना तैलाभ्यङ्ग किए स्नान करने वाला रौरव नरकको जाता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वत्सरादौ वसन्तादौ बलिराजदिने तथा ।
तैलाभ्यङ्गमकुर्वाणो रौरवं नरकं व्रजेत् ॥

दिनमें गोवर्धन पूजन का उत्सव कर रात्रि के अवसर पर भूमिमें पांच प्रकारके रङ्गोंसे दान-केन्द्र बलिराजकी मूर्ति बनाकर उसके समीप ही उसकी भार्या विन्ध्यवासिनीकी भी "सर्वाभरण भूषिता" मूर्ति बनानी चाहिए । तदनंतर अपने कुटुम्बीजन और बान्धवोंके साथ बैठ कर गन्धाक्षत पुष्प तथा कमल कुमुद उपहारों से और पायस आदि नानाविध पक्वान्न समर्पण कर पूजा करनी लिखी है। मन्त्र नीचे दिया जाता है—

बलिराज नमस्तुभ्यं विरोचनसुत प्रभो !
भविष्येन्द्र सुरारते पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥

इस प्रकार पूजा करके कीर्त्तन और भजनों द्वारा रात्रिमें जागरण किया जाता है। पूजाके अन्तमें यथाशक्ति दान देना और पूजाकालमें हृदय खोलकर दीपावलीसे प्रकाश करना शास्त्रोक्त विधान है। इस दीपावली प्रकाश को ही कौमुदी महोत्सव कहते हैं। बलिराजकी पूजाका विधान भगवानने स्वयं उसके पास पाताल भेजते समय किया है और प्रतिज्ञा की है कि सब देवता वहां अपने अंश में उसके साथ निवास करेंगे और प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को उसकी पूजा होगी तबसे ही यह महोत्सव प्रारम्भ हुआ है। इस महोत्सवके न करने से भगवानने स्वयं प्रत्यवाय बताया है—

रात्रौ ये न करिष्यन्ति तव पूजां बलेर्नराः ।
तेषामश्रौत्रियो धर्मस्सर्वस्त्वामुपतिष्ठतु ॥

इस उत्सवके विषयमें लिखा है कि इस दिन जो मनुष्य जिस भावसे रहता है वह वर्षपर्यन्त उसी प्रकारसे रहता है। यदि आज प्रसन्न है तो वर्षपर्यन्त प्रसन्न रहेगा और यदि आज दुखी है तो वह दुखी ही रहेगा। इसलिये मनुष्योंको प्रसन्न होकर इस उत्सवको मनाना चाहिए। यतः 'वैष्णवी दानवी चेयं तिथि प्रोक्ता च कार्तिके,' इस वचन के अनुसार यह तिथि दोनों प्रकार की है, अतः इसमें प्रातःकाल गोवर्धन पूजा के साथ विष्णु पूजा तथा रात्रिमें बलिराज पूजा जागरण और दीपावली की जाती है। इसी उत्सवको कौमुदी उत्सव भी कहते हैं जैसा कि पहले लिख आए हैं।

इस उत्सवमें द्यूत-क्रीड़ाकी निन्दित प्रथा घुस गई है। इसका कारण यह है कि प्रधानतया यह उत्सव वैश्योंका है और उनका कार्य व्यापार करने का है। कौमुदी महोत्सव में बैठ कर केवल पासे फेंकने का नियम बताया गया है और दिखाया गया है कि जिसके पासे पहले जीतके पड़ेंगे उसकी वर्षपर्यन्त प्रत्येक व्यापारमें जीत होगी अर्थात् लाभ होगा। जिसके पासे हार के पड़ेंगे उसे उस वर्षमें किसी बड़े कार्यमें हाथ न डालना चाहिये, क्योंकि यह वर्ष उसके लिए शुभ नहीं है। अत एव लिखा है कि—

प्रथमं विजयो यस्य तस्य संवत्सरे जयो ॥

विधान तो इतना ही है, किन्तु कारणान्तार होनेके कारण यह महती हानिका कारण बन गया है। सैंकड़ों घर इससे नष्ट होगये हैं और होते जा रहे हैं।

५. यमद्वितिया या, भ्रातृद्वितीया

पञ्चम दिवस कार्तिक शुक्ल द्वितीयाका है, यह दिवस यमद्वितीया, भ्रातृद्वितीया अथवा भय्यादोज इन नामोंसे प्रसिद्ध है। इस दिन यमुनाजीमें स्नान और यमपूजन अवश्य करना चाहिए लिखा भी है—

कार्तिके द्वितीयायां पूर्वाह्णे यममर्चयेत् ।
भानुजायां नरः स्नात्वा यमलोकं न पश्यति ॥

इस दिन यमुनाने अपने घरमें आए हुए यमराजको सत्कारपूर्वक भोजन कराया अतएव मनुष्योंको इस दिन अपनी भगिनीके हाथका बना हुआ भोजन करना चाहिए और उसे नाना प्रकार के दान "दान वित्त समान"के अनुसार देने चाहिएं। कहा भी है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहेऽर्चितः।
तस्मान्निजग्र हे विप्र न भोक्तव्यं ततो बुधैः॥
स्नेहेन भगिनीहस्ताद् भोक्तव्यं पुष्टिवर्धनम्।
दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विधानतः॥

पुत्र और पुत्रीका समान अधिकार होने पर भी पुत्रीके विवाहानन्तर वह श्वसुरालकी ही समझी जाती है और उसका अधिकार पतिकी सम्पत्ति पर हो जाता है। जब तक माता पिता जीवित रहते हैं तब तक तो वे अपनी पुत्रीको बुलाते रहते हैं किन्तु उनके अनन्तर सब घरोंमें उसका पूर्ववत् प्रेम और अधिकार तथा आना जाना नहीं रहता। ऐसा न हो कि फिर वह अपने भ्रातृ-प्रेमसे अथवा पितृगृहके प्रेमसे वञ्चित रह जाय अतएव यह विधान कर दिया गया है। इस धार्मिक बन्धनमें बंधकर वर्षभरमें एक बार भ्राता भगिनीकी सुधि अवश्य लेता है और अपनी विभव-शक्तिके अनुकूल उसका सत्कार करता है। यदि भ्राता भगिनीके यहां जानेमें असमर्थ है तो उसे अपने घरमें बुलाता है अथवा किसीके द्वारा उसके लिए दक्षिणा भेजता है, यही इस दिनकी महत्ताका रहस्य है।

यैर्भगिन्यः सुवासिन्यो वस्त्रदानादि तोषिताः
न तेषां वत्सरं यावत् कलहो न रिपोर्भयम्॥

हमारा कर्तव्य

'भारतवर्ष आज उसी प्रकारकी आपत्तियोंमें ग्रस्त है जिस प्रकार कि महाभारतके समयमें द्रौपदी थी, इसपर हमें भली प्रकार विचार करना चाहिए, चाहे हम किसी भी उत्सवको मना रहे हों। अपने गाने में आपने 'करो या मरो' का राग भी गाया है। यह सिद्धान्त, निरन्तर चलते हुए, बिना विश्रामके प्यारी मातृभूमिको बन्धन-मुक्त करनेके लिए आपकी भावना तथा उत्साहको प्रेरणा देगा। नवयुवकोंका यह प्राकृतिक कर्तव्य है, कि वे स्वतन्त्रताकी लड़ाई लड़ते रहें। किन्तु इसके साथ ही बड़े बूढ़ोंको भी आरामसे न बैठना चाहिए।'

—महात्मा गांधी

मानवताका मोल ?

कबसे निर्जन पथमें यों तुम,
ढूंढ रहीं किसको अनमोल ?
क्या न किसीने लिया अभी तक,
तुमसे मानवताका मोल ?

मैं तो एक अकिंचन कवि हूँ,
मेरे भी हैं भाव अमोल!
लाओ, इनके परिवर्तनमें,
ले लूं, मानवताका मोल !!

श्री० रमानन्द सारस्वत साहित्यरत्न।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखा-रहस्य

ले० श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत। [विद्याभूषण, विद्यावागीश, विद्यानिधि।]

सनातनधर्मानुसार हिन्दु जातिके सिरमें शिखा रखना यों तो अदृष्टमूलक है, उसमें दृष्ट प्रयोजनों के प्रतिपादनकी आवश्यकता नहीं, तथापि आजकलके अविश्वस्त जन शिखाके ऐहिक बाह्य प्रयोजनोंको भी पूछा करते हैं। अतः उनकी शंका पूर्तिके लिये प्राचीन अर्वाचीन विद्वानोंके अनुसार यथाशक्ति प्रयत्न किया जाता है।

शिखा हिन्दु जातिका उपयोगी बाह्य चिह्न है। आजकल हिन्दु लोग अपने समस्त चिह्नोंको छोड़ते चले जारहे हैं, कैसे जाना जाए कि यह हिन्दू है? मस्तकमें तिलक नहीं लगाया जाता, यज्ञोपवीत नहीं पहिरा जाता, धोतीमें लांग (पुच्छग्रन्थि) नहीं लगाई जाती। अवशिष्ट चिह्न शिखाको भी छोड़ा जा रहा है, यह हिन्दु है या मुसलमान, यह कैसे जाना जाय? तब तो हिन्दु मुसलमान भेदके लिये अश्लीलताका अनुकरण करना पड़ेगा, जैसेकि मुलतानमें एक ग्रामीण हिन्दु ने किया था।

मुलतानमें ग्रामका एक हिन्दु प्याऊमें पानी पीने आया। कोई हिन्दु चिह्न न होनेसे जल पिलाने वालेने पूछा कि "तू हिन्दु है, या मुसलमान?' उसने उत्तर दिया 'हिंदु'। तब जल वाले ने कहा कि कैसे जाना जाए, तुम्हारी तो लांग (शाटिकाकच्छ) भी नहीं। ग्रामीणने अपनी धोती खोल दी, और अपनी इन्द्रिय निकाल कर दिखला दी कि—'यही हिन्दुत्वका चिह्न है।' जलवालेने बहुत डांटा। तब वह कहने लगा कि 'भाई, क्रोध न करो, आजकल हिन्दुत्वका चिह्न यही है। हिन्दुओंने चोटी काट दी, जनेऊ सदाके लिये धोबीको देदिया, लांग बन्द कर दी। हिन्दु वेष छोड़ दिया। अब वे चिह्न तो गये। इसमें तो हिन्दू मुसलमान बराबर। अब शेष भेद यही है। जिसकी 'सुन्नत' न हुई हो, वह हिन्दु और 'सुन्नत' वाला मुसलमान। आजकल 'नान'मोहमडन ही हिन्दु है।' उस समय लोगोंकी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। कहने वालेका प्रभाव पड़ा।

इसी प्रकार १९४५ की होलीमें एक नगरमें एक पुरुषने रंग डालते हुए हिन्दुओंको कहा—'देखो, मैं मुसलमान हूँ, मुझ पर रंग न पड़े।' उसने अपना चोटी जनेऊ न होना भी दिखला दिया, पर होलीमें मस्त लोगोंने उसकी पतलून खोल ली। देखा कि उसकी सुन्नत नहीं है। उसे उन्होंने रंगसे खूब सराबोर कर दिया। वास्तवमें वह हिन्दु था।

वस्तुतः इस चिह्नको हटवाने वाले लार्ड मैकाले के शिष्य पाश्चात्यशिक्षा-दीक्षित लोग हैं। लार्ड मैकालेने अंग्रेजी भाषाका जब प्रचार प्रारम्भ किया तो उसके पिताको भावी हानि प्रतीत हुई कि यह लोग शिक्षित होकर हमसे अपने अधिकार मांगेंगे। तब उसने पिताको लिखा डरिये मत, अंग्रेजीकी शिक्षा इस प्रकारकी जनश्रेणीको उत्पन्न करेगी, जो रंग रूप तथा रक्तमें कदाचित भारतीय रहें भी, तथापि रुचि आचार-विचार, दिल-दिमाग से पूरी अंग्रेज होगी। लार्ड मैकालेकी दूरदर्शिता उसके सोच विचारसे भी बढ़ गई। अब तो चिह्नादि त्याग कर यह जनश्रेणी रूप रंगमें भी भारतीय नहीं दीखती, मेमों वा मुसलमानियोंको लेती हुई रक्तसे भी वैदेशिक बनती चली जारही हैं। कइयोंके शिखा छोड़ देनेसे हिन्दु मुसलमानोंकी लड़ाईमें कई हिन्दु हिन्दुओंके ही द्वारा मारे गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कइयोंका विचार है कि हम शिखा न होनेसे हिन्दु मुसलिम लड़ाईमें निडर होकर घूमेंगे। हा खेद ! जिस शिखाकी रक्षाके लिये महाराणा प्रताप, महाराज शिवाजी आदिने प्राणोंकी बाजी लगा दी थी, गुरु गोविन्दसिंहके लड़कोंने तथा हकीकतरायने अपनी आहुति देनेमें भी विलम्ब न किया, उसी शिखाको वर्तमान समयमें बिना ही अत्याचारके स्वयं ही काटा जा रहा है ! वाह अंग्रेजी राज्य ! हम तेरी मुक्तकण्ठसे स्तुति करेंगे । यदि आज औरङ्गजेब होता, तो वह हिन्दुओं की चोटी काटने के लिये किये गये अपने अत्याचारों की स्वयं ही निन्दा करता, और कहता कि मैं अत्याचार करने पर भी हिन्दुओं की चोटी न कटवा सका, पर तू (अंग्रेजी राज्य) ने तो बिना ही अत्याचार तथा बिना ही उसकी रुकावटके प्रचारके हिन्दुओंसे शिखा छुड़वा दी।

आजकल के हिन्दु नहीं जानते कि इस शिखा के ही कारण हिन्दु जाति आजभी जी रही है, परतन्त्रताको प्राप्त होती हुई भी सांस ले रही है। शिखाविहीन जातियें क्रमसे लुप्त हो गईं, शेष लुप्त हो जाएंगी। जो 'फैशन'के दास बन कर शिखाएं कटवा रहे हैं, उन्हें पश्चात्ताप करना पड़ेगा। शिखाके ही कारण एक छत्र की छाया में समस्त हिन्दू जातिकी एकता हो सकती है।

शास्त्रोंमें सोलह संस्कार कहे हैं, उनमें आठवां संस्कार चूड़ाकर्म है। इस संस्कारमें बालकका शिर मुंडवा कर शिखा (चूड़ा) रखनी पड़ती है। यह संस्कार भी महत्वपूर्ण गिना जाता है। यह संस्कार हिन्दुत्वका प्रथम सोपान है। श्रीमनु ने कहा है—

'चूडाकर्म' द्विजातीनां 'सर्वेषामेव' धर्मतः।
प्रथमेऽब्दे 'तृतीये' वा 'कर्तव्यं' श्रुतिचोदनात् ॥ २३।५

इसमें वेदके कहनेसे शिखास्थापन कहा गया गया है। वेदके दो भाग हैं— मन्त्रभाग तथा ब्राह्मणभाग। इस विषय में 'श्रीस्वाध्याय' के चतुर्थ पञ्चम वर्षों के अङ्कोंमें 'वेदस्वरूपनिरूपण' यह लेख देखना चाहिये। उनमें मन्त्रभागका प्रमाण देखिये—

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।
(शुक्लयजुः १७।४८)

'विशिखा' का भाव है—
'विशिष्टादीर्घा गोक्षुरपरिमाणा शिखा चूड़ा येषां तादृशाः कुमारा इव'।

दूसरा मन्त्र है—
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम। केशा न शीर्षन् यशसे, श्रियै शिखा न्द्रिस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि'।
(यजुः १६।६२)

यहां पर 'श्री' के लिये शिखा-धारण कहा है और शिखा के बालों को सिंह के लोम से उपमा दी है। अब ब्राह्मणभाग का प्रमाण देखिये—

अथापि ब्राह्मणम्— रिक्तो वा एषोऽन पिहितो यन्मुण्डः, तस्य एतद् अपिधानं यत् शिखा इति, (आपस्तम्बधर्मसूत्र १।१०।८)

यहां पर शिखारहित को शून्य अर्थात् श्रीहीन कहा है।

इस प्रकार अन्य शास्त्रकारों ने भी शिखा आवश्यक मानी है, और उसके कटवानेमें प्रायश्चित्त कहा है। देखिये—

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च।
विशिखो व्युपवीतश्च यत् करोति न तत् कृतम्
कात्यायनस्मृति (१।४)

यहां पर शिखाहीन के कर्म को अप्रशस्त कहा गया है।

लघुहारीत में कहा है—
शिखा छिन्दन्ति येकेचिद् वैराग्याद् वैरतोऽपि वा।
पुनः संस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः॥ (१८)
मोहाच्छिन्दन्ति ये केचिद् द्विजातीनां शिखा नराः।
चरेयुस्ते दुरात्मानः प्राजापत्यं विशुद्धये॥ (१९)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां शिखा काटने पर प्रायश्चित्त कहा है। इतना याद अवश्य रखना चाहिये कि—द्विजोंके लिये शिखा कर्मका साधन है, पर शूद्रोंके लिये चिह्नमात्र है। उक्त प्रायश्चित्त हारीत स्मृति (२०) में भी कहा गया है। संस्कारभास्करमें खल्वाट अवस्थामें शिखाके न होने पर कुशाकी शिखा बनाने की आज्ञा देकर शिखाकी अनिवार्यता बताई गई है।

यजुर्वेदीय तैत्तिरीयोपनिषत्के शिक्षाध्याय नामक प्रथम वल्लीके छठे अनुवाकका प्रथम कण्डिकामें कहा है—

अन्तरेण तालुके य एष स्तन इव अवलम्बते, सा इन्द्रयोनिः, यत्र असौ केशांतो विवर्तते व्यपोह्य शीर्षकपाले॥

अर्थात् तालुके मध्यमें स्तनकी तरह जो केशराजि दीखती है, यहां केशोंका मूल है। वहां सिरके कपालका भेदन करके 'इन्द्रयोनि' है। इन्द्र अर्थात् परमात्माकी प्राप्तिका भाग सुषुम्णा नाडी है। योगी लोग सुषुम्णा नाडीको प्रबुद्ध करके उससे आत्मसाक्षात्कार करते हैं। यह नाड़ी अपने मूलस्थानसे होती हुई ललाटके मध्यमें विचरती है। योगी लोग जिसे सुषुम्णाका मूलस्थान कहते हैं, वैद्य उसे 'मस्तुलिङ्ग' कहते हैं। 'मस्तुलिङ्गके साथ वाले अग्रभागको योगविद्याविशारद 'ब्रह्मरन्ध्र' कहते हैं, और वैद्य उसे 'मस्तिष्क' नामसे।

वैद्योंका यह अभिप्राय है कि—सारे शरीरमें प्रधान अङ्ग है सिर। सब शरीरमें व्याप्त नाड़ियों का सिरसे सम्बन्ध है। मनुष्य जीवनका केन्द्र भी सिर ही है। सिरमें दो शक्तियां रहती हैं, एक ज्ञानशक्ति, दूसरी कर्मशक्ति। इन दोनों शक्तियों की परम्परा नाड़ियों द्वारा सारे शरीरमें फैलती है। इस लिये शरीरमें भी ज्ञान और कर्म यह दो विभाग हैं। इन दोनों विभागोंका मूलस्थान वही सुषुम्णाका मूलस्थान मस्तुलिङ्ग तथा मस्तिष्क है। मस्तुलिङ्ग कर्मशक्तिका भण्डार है और मस्तिष्क ज्ञान शक्तिका। मस्तिष्कके साथ ज्ञानेन्द्रियों आंख, हाथ, पावों, गुद, इन्द्रिय, इन कर्मेन्द्रियोंका मस्तुलिङ्गसे सम्बन्ध होता है। मस्तिष्क तथा मस्तुलिङ्ग कान, नाक, जीभ, त्वचाका सम्बन्ध है, और वाणी, का जितना अधिक सामर्थ्य वा स्वास्थ्य होगा, ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रियोंमें भी उतनी प्रबलता होगी। उन दोनोंके अस्वास्थ्यसे इन इन्द्रियोंमें भी त्रुटि हो जाती है।

प्रकृतिकी विलक्षण महिमासे दोनों ही स्थलोंकी प्रकृति भिन्न २ हैं। मस्तिष्क ठण्डक चाहता है और मस्तुलिङ्ग गर्मी। मस्तिष्ककी ठण्डकके लिये क्षौर बनवाई जाती है, तेल, साबुन, जलवायु आदिका सेवन करना पड़ता है। शिरोवेदनामें तालुके बाल कटानेसे वेदना शान्त हो जाया करती है। अब शेष मस्तुलिङ्गका प्रश्न है कि—उसमें कितनी गर्मी अपेक्षित है। गर्मीकी न्यूनाधिकतासे नाडियोंमें प्रकोप हो सकता है, उससे कई हानि सम्भव हैं। अतः उसमें चाहिये मध्यम गर्मी। वह गर्मी कपड़े आदिसे नहीं हो सकती, क्योंकि उनके गुण भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः उनसे पूर्ण लाभ सम्भव नहीं।

यह बात भी निश्चित है कि—जो वस्तु जिससे उत्पन्न होती है, वही उसकी वास्तविक सहायक होती है। जैसेकि—घड़ा मट्टीसे बनता है, मट्टी उसका उपादान कारण है। उस घड़ेकी प्रत्येक अवयवकी पूर्ति भी मट्टीसे हो सकती है, जल अग्निसे नहीं। 'मस्तुलिङ्ग' भी शिरका एक भाग है, उसकी रक्षा भी शिरसे उत्पन्न पदार्थसे ही हो सकती है, टोपी हैटसे नहीं। तब शिरोजात पदार्थ हैं बाल। तो वहां गोखुरके परिमाण वाले केश ही मध्यम गर्मी कर सकते हैं, अन्य बाल नहीं। यह पहले ही कहा जा चुका है कि—मस्तिष्क शैत्य चाहता है और मस्तुलिङ्ग उष्णता। तो मस्तिष्ककी शीतलताके लिए वहांके केश चाहियें थोड़े, पर मस्तुलिङ्गकी उष्णताके लिये वहां घनीभूत केशोंकी आवश्यकता है। इस लिये मस्तुलिङ्गमें सदा ही गहरे बाल रहें, और अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशोंसे उनकी विशेषता, अधिकता, वा भिन्नता, वा उच्चता रहे, इस लिये उनका विशेष नाम भी रक्खा गया है 'शिखा'। उसका सम्बन्ध कर्मप्रवर्तक होनेसे धर्मके साथ स्वीकृत किया गया है। इधर सन्ध्या आदिके अवसर पर परमात्माकी कृपा शिखा द्वारा ही हमारे अन्दर पहुँचती है, तभी नंगे सिर होकर सन्ध्याका नियम है। इसी लिये तैत्तिरीयोपनिषत्ने उस स्थानका नाम 'इंद्रयोनि' रक्खा है-यह पहले कहा जा चुका है।

यह विषय कृत्रिम नहीं है, किन्तु सच्चा तथा प्राकृतिक है, आप मस्तुलिङ्गमें बाल कटाने वाले पुरुषोंको देखें, वहां पर गोलाकार मण्डल दीखता है। एक भागमें केशोंकी इस प्रकारकी रचना दीखती है, जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि—यह कपालग्रन्थि है। ग्रन्थिस्थल मर्मस्थल भी कहा जाता है। मर्मस्थलको रक्षा आवश्यक हुआ करती है, अन्य मर्मस्थलोंकी अपेक्षा इस मर्मस्थलको सम्राट् समझना चाहिये। इसकी रक्षा सावधानतासे हो, इसका उपाय है शिखा रखना।

वर्तमान वैज्ञानिकोंको अनुसन्धानके बाद अब पता चला है कि—सिरके पिछले भागमें उन नस नाड़ियोंका केन्द्र है, जो आंखोंमें प्राप्त होती हैं। उनकी रक्षा वहां घनीभूत बालोंसे होती है। वर्तमान वैज्ञानिकोंने यह बात अभी समझी है, परन्तु हमारे पूर्वज तो प्राचीन कालसे शिखा स्थापनका नियम बना गये हैं। शल्यविद्याकी सभी अङ्गरेजी पुस्तकोंमें डाक्टरोंने सिरके उस भागमें—जहाँ शिखा रक्खी जाती है-एक मर्मस्थल माना है, जिसे अंग्रेजीमें Pineal Gland कहते हैं। इससे अतिरिक्त शिखा वाले स्थलसे नीचे एक ग्रन्थि है, जिसे 'पिचुइटी' कहा जाता है, जो शरीरकी पुष्टि तथा वृद्धिमें बहुत सहायता करती है। प्रकृतिने सिरमें जो बाल वहां पैदा किये हैं, उनका तात्पर्य शरीरकी भीतरी कोमल वस्तुओंका संरक्षण है, उनको कटवाना ठीक नहीं। कपालशास्त्रके अनुसार भी उक्त स्थलमें आत्मोन्नतिका केन्द्र है। एक कपालशास्त्रीने सिद्ध किया है कि—उस केन्द्रमें केशराजि रखनेसे आत्मोन्नतिकी रक्षा होती है।

आयुर्वेद के अनुसार मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, सन्धि इन पांच के ८८ साधारण मर्म होते हैं, और १९ विशिष्ट मर्म। इनमें ११ मांस के, ४१ शिरा के, २७ स्नायु के, ८ अस्थि के, २० सन्धिके मर्म होते हैं। कुल १०७। देखिये सुश्रुतसंहिता शारीर स्थान (८।४)। इन १९ विशिष्ट मर्मोंमें एकका नाम 'अधिप' है, जहां केशोंका आवर्त होता है। उसके नीचे नाड़ियों की सन्धि होती है। थोड़े आघातसे भी यहांके मर्मस्थलोंमें हानिकी संभावना हो सकती है, प्रत्युत कभी तो मृत्युकी भी सम्भावना होती है।

सुश्रुतसंहिता में कहा है—

मस्तकाभ्यन्तरत उपरिष्टात् शिरासन्धिसन्निपातो रोमावर्तोऽधिपतिः तत्रापि सद्य एव [मरणम्] (शारीरस्थान ६।२०)
'आन्तरो मस्तकस्योर्ध्वं शिरासन्धिसमागमः। रोमावर्तोऽधिपो नाम मर्म सद्यो हरत्यसून्' (अष्टाङ्गहृदय—शारीरस्थान)

अर्थ स्पष्ट है।

प्राचीन कालमें ब्रह्मचर्याश्रममें ब्रह्मचारी इस स्थलमें केश जूटको रख कर अधिक विद्युत्को उत्पन्न करते थे। शिखास्थापनसे आयुकी वृद्धि होती है। इस शिखाका परिमाण गोखुर कहा गया है, जिससे सर्दीमें शीतसे, गर्मीमें उष्णतासे, वर्षामें जलवर्षणके आघातसे रक्षा हो। स्वा० दयानन्द जी ने गर्म प्रदेशमें शिखा कटवाने के लिये कहा है—इस पर अन्य लेखमें विचार किया जावेगा। वस्तुतः शिखाका रखवाना आवश्यक है। हां, सन्यासियोंके लिये तो शिखाका त्याग अपवाद है। इसी लिये ताण्ड्य महाब्राह्मणमें कहा है—

शिखा अनुप्रवपन्ते पाप्मानमेव तदपघ्नते
लघीयाँ १०७ सः स्वर्गलोकमयाम्—
(४।९०।२४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वा० दयानन्द जी ने भी यह स्वीकार किया है। 'प्राजापत्येष्टि– (जिसमें यज्ञोपवीत और शिखाका त्याग किया जाता है) कर' (मनु ६।३८) संस्कार विधि (२६२ पृष्ठ)। 'सर्ववेदसम्–गृहाश्रमस्थ पदार्थ यज्ञोपवीत और शिखा आदिको धारण करता है, उनको छोड़' (अथर्व० ६।५।१७) 'सर्ववेदसम्—शिखा सूत्र यज्ञोपवीत आदि पूर्वाश्रम चिन्होंका त्याग करना है, यह सबसे बड़ा यज्ञ है' तैत्ति०। (संस्कारविधि संन्यास प्र० २७६ पृष्ठ)।

सामान्यतया संन्यासविधान ७५ वर्ष के बाद होता है। अब आयु की वृद्धि हो जाने से शरीर की पूर्णता हो जाने के कारण 'अधिप' मर्मस्थल की त्वचा कठोर हो जाती है, शिखाजन्य लाभ भी ७५ वर्ष तक प्राप्त होकर सारे शरीर में व्याप्त हो जाते हैं। तब शिखा छोड़ने पर भी कोई हानि नहीं होती। तब कर्मकाण्ड तथा उपासनाकाण्डके समाप्त हो जानेसे तत्सम्बद्ध शिखासूत्रका त्याग ठीक भी है। 'विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्' (१।४) यह कात्यायनका वचन कर्मोपासना काण्डपरक है, ज्ञानकाण्डपरक नहीं।

तीन आश्रमों तक शिखा रखने, फिर संन्यासमें उसका त्याग करनेमें यद्यपि पहले उपपत्तियें दी जा चुकी हैं, तथापि एक अन्य उपपत्ति भी दी जाती है। पाठक अवधान से देखें—

सारी सृष्टिका मूल अग्नि ही है। अग्निका स्वरूप उसकी शिखासे व्यक्त होता है। अग्निको संस्कृत में 'शिखी' कहा जाता है। अग्नि यदि शिखा रहित हो तो उसमें हवन निषिद्ध माना गया है। जब अग्नि 'शिखी' हो तो किसी की शक्ति नहीं, उसका स्पर्श कर सके। उसके उस स्वरूप (शिखित्व) के नष्ट होने पर तो भस्म भी उसको आच्छन्न कर दिया करती है। आज हम भी जो पददलित हो रहे हैं, उसमें भी कारण यह है कि हमने भी अपना स्वरूप (शिखित्व) हटा दिया है। हम सब अग्नि से उत्पन्न हैं। अग्नि के उपासक हैं। अग्नि से ही हम—

'तन्वं मे पाहि, आयुर्मे देहि, वर्चो मे देहि, अग्ने !
यन्मे तन्व ऊनं तन्म आपृण (पारस्कर गृ० २।४
'मयि मेधां प्रजां मयि अग्निस्तेजो दधातु।
(आश्वलायन गृ० १।२१।४)
यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य
मेधयाऽग्ने ! मेधाविनं कुरु स्वाहा (शुक्लयजुः ३२·१४)

इत्यादि प्रार्थना करते हैं। हमारे गोत्र पुरुष भी हमारा अग्निके साथ प्राचीन सम्बन्ध बताते हैं। जमदग्नि गोत्र जमद्–अग्नि (ज्वलिताग्नि) को प्रतिपादित करता है (निरुक्त ७।२४।८)। अङ्गिरा गोत्र अग्निके अङ्गारेको बताता है। इस प्रकार अत्रि भृगु आदियों की भी निरुक्त (३।१७।१) के अनुसार अग्निसे उत्पत्ति कही गई है। ब्राह्मणोंमें तो अग्निका विशिष्ट निवास माना गया है। देखो गोपथ ब्राह्मण (१।२।२०)। तभी निषादोंके खानेके समय विनता ने, गरुडको ब्राह्मणके खानेके लिये निषेध कर दिया कि — ब्राह्मणके खानेसे तेरे गले में दाह होगा, (देखो महाभारत आदिपर्व १६ अध्याय)।

जो जिसकी उपासना करता हैं, अन्तमें वह उसके स्वरूपको प्राप्त होता है। उपासक भी ऐसा चाहता है। तभी वह अपने उपास्यके स्वरूप की प्राप्तिके लिये उपास्यके ही चिह्न धारण करता है। जैसे गणेशके भक्त सिन्दूर आदि, शैव भस्म वा रुद्राक्षमाला, वैष्णव लोग गोपी चन्दन तुलसी-माला आदिको धारण करते हैं। इसलिये शुक्लयजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मणमें कहा है।

'देवो भूत्वा देवानेति' (१४।६।१०।४

इसी प्रकार हम लोग भी अग्निके उपासक होनेसे उसका चिह्न 'शिखा' धारण करते हैं, और करना भी चाहिये। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ आदि तीन आश्रमोंमें अग्निकी उपासना कही गई है। अग्निकी उपासनासे ही लोग प्रत्यवायभाक् माने गये हैं। संन्यासाश्रममें अग्नि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का त्याग कहा है, इसलिये अग्निके चिह्न शिखाका भी त्याग कहा है। अग्निसेवन (यज्ञ) के अधिकार यह (यज्ञोपवीत) का भी त्याग कहा गया है। इस प्रकारकी स्थितिमें उसका अग्निमय संसारसे भी कोई सम्बन्ध नहीं रहता, तभी तो मृत्युके समय भी संन्यासीको अग्निसे नहीं जलाया जाता।

इससे स्पष्ट है कि तीन आश्रम तक शिखाका त्याग ठीक नहीं। शिखाके श्रद्धालु हमारे प्राचीन ऋषि मुनि केवल जलवायु आदिका उपयोग करते हुए तेजस्वी थे। तेजस्वी होनेसे ही शाप देनेमें भी समर्थ हुए।

इस शरीर रूप दुर्गमें सात प्रासाद (महल) हैं, सातवेंमें सम्राट ज्योतिःस्वरूप परब्रह्मका निवास है। जैसे दुर्गके राज निवासस्थल पर उसकी विशेषता बतानेके लिये पताका आरोपित की जाती है, वैसे ब्रह्मरन्ध्र प्रदेश पर भी शिखा रूप पताका का रखना आवश्यक है।

इस प्रकार शिखासे अदृष्टमें जैसा धर्मलाभ हैं, वैसे ही वह हिन्दुत्वका चिह्न भी है, और उससे शारीरिक लाभ भी है, क्योंकि शरीरके सब मर्मस्थानोंका सम्राट शिखा वाले स्थानमें है। उसमें सर्दी गर्मी शीघ्र प्राप्त हो सकती है। अधिक सर्दी गर्मी प्राप्त होने पर भीतरके स्नायु मांस रुधिर पर प्रभाव पड़ जानेसे हानिकी सम्भावना रहती है। वहां साधारण लगा हुआ आघात भी हानि करता है। वहां पर केश-राजि उस हानिसे रक्षा करती है।

एक प्रश्न यह होता है कि- ईसाई मुसलमान शिखा नहीं रखते, उन्हें हानि क्यों नहीं होती? वहां पर जानना चाहिये कि सूक्ष्मरूपसे हानि होती अवश्य है, पर उसके अनुभव न होनेसे उनको पता नहीं लगता। इससे उसकी आवश्यकता वा अयुक्तता सिद्ध नहीं होती। आयुर्वेदने शरीरस्वास्थ्य के जो नियम कहे हैं, उसका उल्लघन करनेसे आपाततः हानि होती हुई नहीं प्रतीत होती। परन्तु सूक्ष्मतया वह होती अवश्य है। इस प्रकार उत्तरोत्तर उन नियमोंका उल्लंघन करने पर वह हानि भीतर सञ्चित हो जाती है। क्रमशः शारीरिक शक्तिकी दुर्बलता होने पर ज्वर आदि रूपसे प्रकट हो जाती है, पर हम उसका कारण नहीं जान पाते, वैसे हां यहां पर भी समझना चाहिये। हमारे प्राचीन लोग जहां लाभ देखते थे, उसको अवश्य नियत कर दिया करते थे, प्रत्युत उसमें अर्थवाद जोड़ने में भी न सकुचाते थे। पूर्वकालमें यज्ञोंमें गुडूची (गिलोय) का उपयोग होता था। परन्तु कसैले होनेसे बच्चे उसे नहीं पीना चाहते थे, तब बड़े उन्हें कहते थे।

शिखा ते वर्द्धते वत्स! गुडूचीं श्रद्धया पिब।

अर्थात् यदि तुम गुडूचीको पी लोगे तो तुम्हारी शिखा बड़ी हो जावेगी। जैसे आज कलके सभ्योंको पता लगे कि अमुक औषधिके खानेसे दाढ़ी मूंछे तथा चोटी फिर पैदा न होगी, तब वे उस दवाके कड़वी होने पर भी उसका प्रयोग बड़े जोरसे करेंगे, इससे स्पष्ट है कि तब शिखाको लाभदायक समझा जाता था।

जबकि सब साम्प्रदायिकों में कई चिह्न नियत होते हैं, उनका विशिष्ट प्रयोजन न होने पर भी वे उनसे नहीं छोड़े जाते, तो इस शिखा को ही क्यों छोड़ दिया जाय? स्वा० दयानन्द जी ने भी सत्यार्थप्रकाशमें कहा है विद्याका चिह्न यज्ञोपवीत और शिखाको छोड़कर मुसलमान ईसाइयोंके सदृश बन बैठना व्यर्थ है, (ग्यारहवांसमुल्लास २४४ पृष्ठ)।

जो लोग 'हैट' धारण करनेमें तो सिरमें भार नहीं समझते, परन्तु शिखास्थापनमें भार समझते हैं, वे लार्ड मैकालेके मानसिक दास हैं। सब जातियोंमें शीत उष्णके सहारनेमें हिन्दु जाति ही प्रसिद्ध है उसमें कारण शिखास्थापन ही है। बड़े बाल होने पर भी शिखा उनसे उन्नत होनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय-ज्यौतिष-प्रणाली

[लेखक—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्र जी शर्मा ओझा केतकी पञ्चाङ्गकर्ता]

वैदिक अश्विन्यारम्भस्थान

वेदोंमें कहीं २ राशियोंके उल्लेख प्राप्त होते हैं, परन्तु नक्षत्रोंके प्रमाण वेदोंमें ओत प्रोत-भरे हुए हैं, वैदिक कालमें नक्षत्र विभाग-पद्धति प्रचलित थी, यह 'मघाद्यं' 'श्रविष्ठार्द्धं' आदि वैदिक वाक्योंसे सिद्ध होता है। इस प्रकार वैदिक अश्विन्यारम्भ कहां हुआ यह वैदिक मन्त्रोंसे ही जानना चाहिये और वैदिक मन्त्रोंसे ही सिद्ध हुए अश्विन्यारम्भको मानना ही आर्योंका कर्तव्य है। वैदिक कालमें नक्षत्रपद्धति विशेषतया प्रचारमें थी और आर्योंके यज्ञ यागादि धार्मिक विधियोंके मुहूर्त्त नक्षत्र पद्धतिसे ही देखे जाते थे, अतः निरयन गणना वैदिक और परम्परागत अनादिकालसे चली आती होनी चाहिए, नक्षत्रपद्धति पर आकाशीय स्थिति वेदोंमें कही गयी है। वेदमें अति प्राचीन समयमें कृत्तिकादि गणना और धनिष्ठादि गणना ऐसी दो गणना मानी गई हैं, इसमें दो नक्षत्रोंसे गणना क्यों कही गई, पहले तो इसका विचार करेंगे। तैत्तिरीय ब्राह्मणमें इस प्रकारका प्रमाण मिलता है—'मुखं वा एतन्नक्षत्राणां यत् कृत्तिकाः। देवगृह वै नक्षत्राणि। कृत्तिका प्रथमं। विशाखे उत्तमं। तानि देव नक्षत्राणि। अनुराधा प्रथमं अपभरणीरुत्तमम्। तानि यमनक्षत्राणि'। इस प्रकार इस मन्त्रमें कृत्तिका को प्रथम माना है। इसी प्रकार 'वसवो वा अकामन्त अग्रंदेवतानां परियामेति। ततो वै ते अग्रं देवतानां पर्यायन्।' (तै० ब्रा० ३।१।४—८) इस मन्त्रमें धनिष्ठा (वसवः) नक्षत्र प्रथम कहा है. एक ही समय जबकि दो पद्धति कही गई है तो इन दोनोंका कारण भी भिन्न २ होना चाहिए और वह भिन्न २ कारण महर्षि गर्गाचार्यने इस प्रकार कहा है 'सकल कर्मसु कृत्तिकाः प्रथम माचक्षते श्रविष्ठा तु संख्यायाः (प्रथम माचक्षते)' इसमें कृत्तिकाको कर्मप्रधान मानकर धनिष्ठाको गणितमें प्रधानता दी है। अर्थात् धार्मिक क्रियाओंमें कृत्तिकादि गणना और गणित ज्योतिष में धनिष्ठादि गणना प्रचारमें थी यह सिद्ध होता है। यह दोनों गणना आगे भी बहुत काल तक प्रचारमें रही। महाभारतमें भी 'धनिष्ठादिस्तदाकालो ब्रह्मणा परिकल्पितः' अर्थात् धनिष्ठादिगणना परंपरागत मानी जा रही थी और वह वेदसे प्रमाणित है। धनिष्ठादि गणना थी यह सिद्ध होने पर धनिष्ठा विभाग प्रारम्भ आकाशस्थ प्रदेशमें कहां था? इसका निश्चय हो जाने पर अश्विन्यारम्भका भी निर्णय स्वयं हो सकता है, वैदिक इष्टि प्रकरण में—

अष्टौ वा वसवः सौम्यासः चतस्रो देवीरजरा श्रविष्ठाः ॥
ते यज्ञंपान्तु रजसः परस्तात् सम्वत्सरीणं अमृतं स्वस्ति ॥

तभी उसका शिखा नाम सार्थक है। इधरसे यह जातीय चिह्न विशेष है, इसीकी छत्रच्छायामें सारी हिन्दु जातिकी एकता हो सकती है। इसके छोड़नेसे ही हिन्दुजाति में भेद (फूट) बढ़ती चली जा रही है। आशा है— भारतीयताके प्रेमी नवयुवकगणका इधर अवश्य ही ध्यान पड़ेगा। जबसे शिखात्याग करके हम भी अन्य जातियोंके समान होने लगे, तभी 'पाकिस्तान' का हौआ भी हमें दबाने आ पहुंचा। जब सभी हिन्दुगण पहलेकी भान्ति शिखा-श्रद्धालु बन जाएं, तब कोई भी अन्य शक्ति उन्हें अपने पदसे च्युत करने में समर्थ न हो सकेगी, यह सर्वथा निश्चित बात है, परीक्षा कर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञं नः पान्तु वसवः पुरस्तात् ॥
दक्षिणतोऽभियन्तु श्रविष्ठाः पुण्यं नक्षत्रं अभिसं विशाम ॥
(तै० ब्रा० कां० ३ प्र० २ अनु० ६)

इन दोनों मन्त्रोंका तात्पर्य यह है कि अष्टवसु देवता पूर्वकी ओरसे हमारे यज्ञका रक्षण करें और हम इन अष्ट वसुओंसे संरक्षित पूर्व दिशाकी ओर में पवित्र ऐसे धनिष्ठा नक्षत्रमें प्रवेश करें। यहां जो धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेशका लिखा है उसका तात्पर्यार्थ इस प्रकार है—वैदिककालमें आर्योंका मुख्य धर्म यज्ञ करनेका था और यज्ञ करनेके लिए योग्यकालकी आवश्यकता थी, याने उत्तरायण बसंत आदि काल प्रशस्त माने जाते थे और आज भी मानते हैं, इसीलिए ऊपर वर्णित कृत्तिकादि गणना में कृत्तिकासे लेकर विशाखा तकके नक्षत्रोंको देव नक्षत्र कहे हैं, अर्थात् यह नक्षत्र उस समय उत्तर गोलमें थे। अनुराधासे भरणी नक्षत्र तक यम नक्षत्र कहे हैं। अतः वह नक्षत्र गोलार्द्धमें थे यह सिद्ध होता है। अर्थात् वसंतसम्पात वैदिक कालमें कृत्तिका पर था और उदगयन धनिष्ठा पर था इसीलिए वैदिक मन्त्रोंमें वसंतसंपात स्थित युक्त नक्षत्रसे (देव नक्षत्रोंमें) कर्म क्रियायें और उदगयन स्थित नक्षत्रसे गणित क्रिया मानी जा रही थीं, यह खगोल शास्त्र दृष्टिसे सिद्ध होता है। ऊपर जो धनिष्ठामें प्रवेशका लिखा है— वह इस प्रकार है—अयन स्थानकी गति पूर्वकी ओर से पश्चिमकी ओरको हुआ करती है और नक्षत्र गणना पश्चिमकी ओरसे पूर्वकी ओरको होती है। इस खगोलसिद्ध शास्त्रसे उदगयन-स्थानका प्रवेश धनिष्ठामें जो लिखा है वह धनिष्ठाके अन्त भागसे प्रवेश होना स्वयं सिद्ध है, अर्थात् वैदिक कालमें उदगयन स्थान धनिष्ठाके अन्तमें था यह सिद्ध होता है। सूर्यनारायण उत्तरायण होते ही यज्ञ यागादि धार्मिक कार्योंका प्रारम्भ हुआ करता था और आज भी होता है, उपरोक्त वचन 'पुण्यं नक्षत्रं अभिसं-विशाम' इस पर सायणाचार्य भाष्य करते हुए लिखते हैं कि—'वयमपि पुण्यं नक्षत्रं अभिसंविशाम अभि मुख्येन सम्यक् प्रविशाम भजामेत्यर्थः' अर्थात् इस मन्त्रके उच्चारणसे धनिष्ठा नक्षत्रमें प्रवेशका फल प्राप्त होता है ऐसा सायणाचार्यका स्पष्ट मत है। इस मन्त्रमें जो 'यज्ञ' है वह सम्वत्सर सत्रमें नूतन सम्वत्सरीय यज्ञ है, इस पर भट्ट भास्करने इस प्रकार भाष्य किया है 'सम्वत्सरीणं' सम्वत्सर भाविनं अमृतं अमृतत्वं अविघ्नेन यथा भवति तथा यज्ञंपान्तु' इस परसे यह यज्ञ नूतन सम्वत्सरीय है यह सिद्ध है। नूतन सम्वत्सरारम्भमें सूर्यनारायणकी स्थिति उत्तारायण होना आवश्यक है, इसलिए वैदिक कालमें यह यज्ञ रवि उत्तारायण होते ही प्रारम्भ होते थे, और उत्तारायण यही सम्वत्सरका मुख माना जाता था और वह मुख धनिष्ठा के अन्त पर था यह ऊपर सिद्ध कर आये हैं। भट्टभास्करने दूसरे मन्त्र 'दक्षिणतोऽभियन्तु श्रविष्ठाः' इस पर भाष्य करते हुए लिखा है कि 'धनिष्ठाः पुनः पितृ संभवास्ततस्ता मघा नक्षत्रं दक्षिण दिशि अभियन्तु' अर्थात् उत्तरायण श्रविष्ठापर (धनिष्ठा पर) और दक्षिणायन मघा पर होता था। अर्थात् बसन्त सम्पात कृत्तिका पर, दक्षिणायन मघापर और उत्तारायण धनिष्ठापर था यह सिद्ध हुआ। वसन्तसम्पात कृत्तिकापर कहा होनेसे वह कृत्तिकाके योग तारे पर होना चाहिए और यही मत स्व० लो० तिलक महोदयने अपने ओरायन ग्रन्थमें प्रतिपादित किया हैं। वसन्त सम्पातसे पूर्वकी ओर को ६० अंश पर दक्षिणायन और पश्चिमकी ओर ६० अंश पर उत्तारायण स्थान होता है।

कृत्तिकाके तारेसे पूर्वकी ओरको ६० अंश पर ठीक मघाका तारा हैं (आज वेधतुल्य अन्तर ८ अंश ५१ कला है, इसमें ६ कला अन्तर कालान्तर जन्य फर्क होना स्वाभाविक हैं) अतः दक्षिणायन मघाके तारेपर था और यही भट्टभास्कर ने भी कहा है इस स्थिति परसे ब्राह्मण संहिता (वैदिक) कालमें वसन्तसम्पात कृत्तिका तारेपर और दक्षिणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यन मघा तारे पर तथा उत्तरायण धनिष्ठाके अन्त पर था, उदाहरण—

वसन्तसम्पातसे पश्चिमकी ओर— अं० क०
को धनिष्ठान्त तक अन्तर ९० ०
धनिष्ठान्तसे धनिष्ठारंभ तक १ नक्षत्र +१३—२०

कृत्तिका तारेसे धनिष्ठारम्भ (पश्चिम में) १०३—२०
कृत्तिकासे पश्चिमकी ओरको धनिष्ठा तारा १०३
इससे धनिष्ठारम्भ स्थान स्वल्पान्तरसे धनिष्ठाके योग तारापर था यह सिद्ध होता है।

वैदिक कालके अनन्तर 'मैत्र्युपनिषत्' कालके समय की स्थितिके वचन मैत्र्युपनिषत् में इस प्रकार है 'मघाद्यं' 'श्रविष्ठार्धं' अर्थात् दक्षिणायन मघाके आद्यमें और उत्तरायण धनिष्ठाके अर्धमें होता था। अर्थात् वैदिककालके अनन्तर मैत्र्युपनिषत्‌के समय अयन-चलन अर्ध नक्षत्र अर्थात् दो चरण पीछे हट गया था, इस स्थिति पर से भी उपर्युक्त उदाहरणसे देखा जाय तो धनिष्ठा नक्षत्रका प्रारम्भ स्थान धनिष्ठाके दृश्य योगतारा पर ही आता है।

उपनिषत् कालके पश्चाद् 'वेदाङ्ग ज्योतिष' काल यह गणित ज्योतिष' ग्रन्थका उद्‌गम काल है, इसमें भी अयन स्थिति निम्नलिखित २ श्लोकोंमें वर्णित की है।

> स्वराक्रमेते सोमार्कौ यदा साकं स वासवौ।
> स्यात्तदादियुगंमाघस्तप शुक्लोऽयनंह्युदक्॥ वे. ज्यो. ६
> प्रपद्येते श्रविष्ठादौ सूर्याचन्द्रमसावुदक्।
> सार्पार्धेदक्षिणार्कस्तु माघश्रावणयोः सदा॥ वे. ज्यो० ७

इन दो श्लोकोंमें जिस समय रवि चन्द्र और धनिष्ठा एकत्र (क्रान्तिवृत्तीय समसूत्र युति) होते हैं उस समय आदियुग (पञ्च सम्वत्सरात्मक १ युग और उसमें आदियुग) माघ मासारंभ, तपस ऋतु (शिशिरारंभ) शुक्लपक्ष और सूर्य नारायण उत्तरायण को होते हैं, यह स्थिति रवि चन्द्र धनिष्ठा के आद्यमें आने पर उत्तरायण होता है और आश्लेषाके अर्धमें रवि आनेसे दक्षिणायन होता है, यह उत्तरायण माघमें और दक्षिणायन श्रावणमें हुआ करता है ऐसा स्पष्ट कहा है। अतः वेदाङ्ग ज्योतिषकालमें उत्तरायण धनिष्ठाके आद्यमें और दक्षिणायन आश्लेषाके अर्ध में होने लगा। वैदिक कृत्तिका कालसे यह अयनस्थिति १ नक्षत्र (१३अं० २० कला) और उपनिषत् कालसे अर्ध नक्षत्र (६ अं० ४० कला) पीछे हट गई थी यह स्पष्ट है। उपरोक्त मन्त्र ६ में रवि चन्द्र और धनिष्ठा (सवासवौ) एकत्र आने पर उत्तरायण होता है ऐसा कहा है, इसमें 'सवासवौ' इसका अर्थ धनिष्ठाके साथमें अर्थात् धनिष्ठाके तारेके साथमें ऐसा ही अर्थ होगा, क्योंकि युति तारेके साथ ही होगी नक्षत्रके विभाग की युति नहीं कही जा सकती। अर्थात् रवि चन्द्र और धनिष्ठा तारा इनकी युति होने पर ही उत्तरायण होगा और वह स्थान कहां है तो वह दूसरे श्लोकमें 'श्रविष्ठादौ' इस वाक्यसे धनिष्ठाके आदिमें है ऐसा स्पष्ट कहा है, अर्थात् जबकि दो स्थानमें कहा हैं तो पहले श्लोकमें धनिष्ठा तारेके साथमें और दूसरे श्लोकमें वह स्थान धनिष्ठातारेके आद्यमें है ऐसा स्पष्टीकरण किया है। इस अर्थको गर्गाचार्यके निम्नलिखित श्लोकोंसे पुष्टि मिलती है, यथा—

> "कालज्ञानं महत्पुण्यं कालश्चादित्य उच्यते"
> "स च माघस्य शुक्लादौ सोम वासवयोः सह"
> "सहोदयंश्रविष्ठाभिः प्रस्थायान्हामुदङ्-मुखः"

माघ शुक्ल प्रतिपदाके प्रारम्भमें सूर्य चन्द्र धनिष्ठाके साथमें उदयको प्राप्त होकर उत्तरकी ओरको प्रारम्भ होता है अर्थात् उत्तरायण होता है। इस श्लोकमें सोमवासवयोः सह" यह वाक्य युति दर्शक है तथा श्रविष्ठाभिः यह भी तारकात्मक युति दर्शक है, अर्थात् युति तारेसे होती है न कि नक्षत्र विभागसे। क्योंकि विभागात्मक नक्षत्र युक्त रवि या चन्द्र नक्षत्रोंके साथ युतिको प्राप्त नहीं हो तो युति तभी होगी जब तारेसे युति करेंगे, सारांश वेदाङ्गज्योतिषके समय उत्तरायण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान धनिष्ठाके तारे पर था और वह स्थान धनिष्ठाके "श्रविष्ठाद्यौ" आद्यमें था यह सिद्ध हुआ। अब धनिष्ठाका योगतारा कौन सा है यह देखना चाहिये, इस खगोलमें क्रान्तिवृत्तके दोनों ओर को नक्षत्रोंके पुंज तो होते ही हैं और इसलिये नक्षत्रोंको प्रधानता मिली हैं—वेदोंमें नक्षत्र प्रयुक्त बहुतसी कथायें भी लिखी गई हैं और कई नक्षत्रों के अद्भुत वर्णन भी लिखे हुए हैं, उसीमें धनिष्ठाका वर्णन "चतस्रो देवीरजरा श्रविष्ठाः" इस प्रकार आया है। अर्थात् धनिष्ठाके ४ तारे कहे हैं, धनिष्ठाका संपूर्ण मन्त्र ऊपर दे आये हैं, धनिष्ठाके ४ तारोंमें योगतारा कौनसा इसका निर्णय होना चाहिए, क्योंकि तारोंमें योग तारा एक ही हुआ करता है, जिसके लिये सूर्यसिद्धान्तमें इस प्रकार कहा है—

> पश्चिमोत्तर ताराया द्वितीया पश्चिमे स्थिता।
> हस्तस्य योग ताराशौ श्रविष्ठायाश्च पश्चिमा॥
>
> सू० सि० अ० ८ श्लो० १७

इस श्लोकमें हस्त और धनिष्ठा नक्षत्रोंकी तारका पश्चिमकी ओरकी उत्तरा तारा योग तारा जाननी, जिसमें हस्तकी पश्चिमकी ओरकी उत्तरा तारा ३ होनेसे "द्वितीया पश्चिमे स्थिता" पश्चिमके ओरकी दूसरी उत्तरा तारा योग तारा जाननी ऐसा स्पष्ट कहा है। परन्तु धनिष्ठाकी तारा उत्तरको दो ही होनेसे उसमें "श्रविष्ठायाश्च पश्चिमा" अर्थात् उत्तर दिशाकी ओरके तारोंमें पश्चिमकी ओरमें जो तारा है वह योग तारा जानना। अब धनिष्ठा के पुञ्जमें उत्तरकी ओरको जो दो तारे हैं वह इंगलिश केटलागमें पूर्वके ओरकी ज्यामा और पश्चिम के ओरकी आल्फा है, अतः उपरोक्त प्रमाणसे 'आल्फा' यह तारा धनिष्ठाका योग तारा सूर्यसिद्धान्तके मतसे निश्चित होता है। म० म० पं० सुधाकरजी द्विवेदी इतिहासकार शं० बा० दीक्षित जो तथा लो० तिलक आदि विद्वानोंने इसी तारे को धनिष्ठाका योग तारा माना है—

निष्कर्ष

वैदिक कालमें वसन्तसम्पात कृत्तिकाके योग तारे पर था और उत्तरायण धनिष्ठाके अन्तमें तथा दक्षिणायन मघा तारे पर होता था, इस स्थिति परसे धनिष्ठा विभागारंभ धनिष्ठाकी योग तारा आल्फा इस पर आता है यह सिद्ध है।

मैत्र्युपनिषत् कालमें अयनचलन वैदिक काल से अर्धनक्षत्र पीछे हट चुका था और उस स्थिति परसे धनिष्ठार्द्धमें उत्तरायण और मघारम्भमें दक्षिणायन होता था, इस स्थितिपरसे भी धनिष्ठारम्भ धनिष्ठाके योग तारे पर आता है।

वेदाङ्ग-ज्योतिष कालमें – धनिष्ठाके आद्यमें सूर्य चन्द्र और धनिष्ठा तारा यह माघ शुक्ल प्रतिपदारम्भमें एकत्र होकर सूर्य उत्तरायण होता है, तथा माघारम्भ शिशिरारम्भ और आदि युगका प्रारम्भ होता था यह सिद्ध है धनिष्ठाकी योग तारा आल्फा है यह सूर्य सिद्धान्तके आधारसे सिद्ध किया है और भारतीय विद्वानोंने इसी तारेको योग तारा माना है, अर्थात धनिष्ठारम्भमें आल्फा हैं यह सिद्ध है।

इस स्थिति परसे पौष्णान्त (अश्विन्यारम्भ) कहां आता है यह देखेंगे, उदाहरण—

	अं० क०
धनिष्ठाके आद्यसे रेवत्यन्त तक ५ नक्षत्र	६६—४०
दृश्यधनिष्ठासे पश्चिममें चित्रातक अंतर	११३—३३
धनिष्ठा प्रयुक्त पौष्णान्तसे चित्रान्तर	१८०—१३
आद्य सूर्यसिद्धान्तोक्त चित्रायोग	१८०
द्वितीय सूर्यसिद्धान्तोक्त चित्रा योग	१८०
केतकी सम्मत चित्रा योग.......	१८०

अतः वैदिक परम्परागत पौष्णान्त (अश्विन्यारम्भ) स्थान चित्राके सम्मुख आता है, यह ऊपर सिद्ध किया है और वही वेद सम्मत परम्परागत स्थिर अश्विन्यारम्भ है यह पाठकोंको ज्ञात होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्गोक्त अश्विन्यारम्भ

	अं०	क०
दृश्यधनिष्ठासे दृश्यचित्रा तक अंतर	२४६	३०
धनिष्ठासे पौष्णान्त तक अन्तर	६६	४०
गर्गोक्त पौष्णान्तसे चित्रा तक अन्तर	१७६	५०
आद्य सूर्यसिद्धान्तोक्त चित्रा भोग....	१८०	
केतकी सम्मत चित्रा भोग....	१८०	

उपरोक्त वेद वेदाङ्गके प्रमाणों द्वारा चित्रा सम्मुख अश्विन्यारम्भ सिद्ध किया है। उपरोक्त प्रमाणोंको पुष्टिकारक और वेदाङ्गज्योतिषसे जिस का साम्य है वह पितामह सिद्धान्त है और उसमें नक्षत्र गणना धनिष्ठादि मानी गई है (भा० ज्यो० इ० १५६)

शक कालके बाद आदि युगका आरम्भ पितामहसिद्धान्तके अनुसार शक २ माघ शुक्ल प्रतिपदारम्भमें सूर्योदयके समय होता है, ऐसा वराह मिहिरने अपने पञ्चसिद्धान्तिका अं० १२ में निम्नलिखित श्लोकोंमें दिया है

(१) रवि शशिनोः पञ्चयुगं वर्षाणि पितामहोपदिष्टानि।
अधिमासस्त्रिंशद्भिर्मासैरवमस्त्रि षष्ठ्यान्हाम्॥

(२) न्यूनं शकेन्द्र कालं पञ्चभिरुद्धृत्य शेष वर्षाणाम्।
द्युगणं माघ सिताद्यं कुर्यात् द्यु गणं तदन्ह्यु दयात्॥

धनिष्ठा तारा सूर्य और चन्द्र इन तीनोंकी युति होना यह वेदाङ्ग ज्योतिषोक्त आदि युगके लक्षण हैं। आदि युगारम्भ माघ शुक्ल १ को होनेसे वराहका कहा हुआ शक २ यह माघादि गणनासे है, यदि यह शक हम चैत्रादि लेवें तो वह शक १ आयगा। या ज्योतिषाचार्य केतकरजीने सूर्यसिद्धान्तके अनुसार इंग्रेजी-"कानोलाजि" परसे गणित करके देखा। तो वह शक १ में माघ शुक्ल प्रतिपदाका आरम्भ सूर्योदयके अनन्तर ३२ पलसे होता है, उस समय रवि चन्द्र और धनिष्ठा तारा इनके योग (वेदाङ्ग ज्योतिषोक्त तारा आल्फा है यह ऊपर सिद्ध किया है) सायन इस प्रकार आते हैं। रवि २८६-२४ चन्द्र २८६-२४ आल्फा तारा २८६-१८ इस परसे वेदाङ्गज्योतिषोक्त आदि युगके लक्षण और वह पितामह सिद्धान्तसे साम्य और रवि चन्द्र तारा इनकी साम्य युति आदि परसे वेदाङ्गज्योतिषोक्त ऊपरके निर्णय को पुष्टि मिलती है अर्थात् वेदाङ्ग ज्योतिषोक्त धनिष्ठादि गणनासे अश्विन्यारम्भ स्थान चित्रा सम्मुख आता है यह ऊपर सिद्ध किया है और इन्हीं कारणोंसे चित्रा पक्ष अर्थात् केतकी पक्ष यह वैदिक परम्परागत शास्त्र संरक्षक है और इन्हीं द्वारा निर्माण किया हुआ पाञ्चाङ्ग शास्त्र शुद्ध कहा जा सकता है।

राशिस्वामियोंकी विशिष्ट उपपत्ति

[लेखक—राजकुमारगुरु ज्योतिषालङ्कार श्री० पं० तारादत्त जी राजज्यौतिषी]

इस लेखमें सरल और सर्वोपयोगी राशि स्वामियोंकी उपपत्ति लिख रहा हूं। इस उपपत्तिसे पूर्व लिखित उपपत्तिकी दृढ़ता भी होगी। इसे पूर्व लिखित उपपत्तिका ही अधिक स्थूल रूपान्तर समझना चाहिए।

सेनापतिके योग्य होने पर देह रक्षा और उसके अयोग्य होने पर मृत्यु-भय होता है। इसलिये नैसर्गिक देह स्थान मेष और नैसर्गिक अष्टम स्थान वृश्चिकका स्वामी मङ्गल सिद्ध हुआ।

अष्टम स्थान रण स्थान भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विषमदुर्गनदीतरणाय शस्त्रगतदष्ट-मृतांश्च रण क्रियाम्' (प्रश्न-शिरोमणि अ० १ श्लो० ६)

सेनापतिको रण स्थानमें रहना आवश्यक होता है। वृश्चिक नैसर्गिक कुण्डलीमें अष्टम होनेसे नैसर्गिक रण स्थान है। दशम-स्थान राज्य स्थान है। चतुर्थ-स्थान गृह स्थान और भूमि स्थान है। इसलिये दशम स्थानसे चतुर्थ स्थान राज गृहस्थान और राजभूमि स्थान है। राजगृह और भूमिमें भी सेनापति रहता है। इसलिये मेष नैसर्गिक राजगृह स्थान और नैसर्गिक भूमि स्थान है। इस प्रकार मेष और वृश्चिकसे मङ्गलका धर्मसादृश्य सिद्ध हुआ। अतएव 'सानुकूल्यं धर्म सादृश्यात्' इस ज्योतिष मीमांसा-दर्शनके सूत्रसे मेष वृश्चिक राशियोंसे मङ्गलकी अनुकूलता सिद्ध हुई। अत एव मेष-वृश्चिक मङ्गलके स्वगृह सिद्ध हुए।

बृहज्जातककी भट्टोत्पल कृत टीकामें मेषका वर्णन इस प्रकार लिखा है:—

'आद्यः स्मृतो मेष समान मूर्तिः कालस्य मूर्धा गदितः पुराणैः। सोऽजाविका सचर कन्दराद्रिस्तेनाग्निधात्वाकर रत्न भूमिः॥' (अ० १ श्लो० ४)

इस पद्यसे मेषका मेष छागके चरनेके स्थानका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

बृहज्जातकके दशान्तर्दशाध्यायमें मङ्गलका फल इस प्रकार है:—

'भौमस्यारि विमर्द-भूप-सहज-क्षित्याविकाजर्धनम्' (बृहज्जातक अ० ८ श्लो० १४)

इस पद्यसे मङ्गलका भी मेष- छागका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। यवनेश्वरके पद्यके अनुसार मेषका पर्वत भूमिका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

कुजा हि मन्दध्वजवत्सुरेशा भवन्ति शैले विपिने वसन्तः।

(जातक पारिजात अ० २ श्लो० १३)

इस पद्यके अनुसार मङ्गलका भी पर्वत वारिश स्पष्ट है। मङ्गल सेनापति ग्रह है। इसलिये उसका वन पर्वत आदि स्थानोंका अधिष्ठातृत्व युक्तिसे भी सिद्ध है। यवनेश्वरके पद्यके अनुसार मेष राशिका चौर भूमिका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

'भौमश्चौरश्चण्डः' इस लघुजातकके पद्यके अनुसार मङ्गलका भी चोरोंका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। बृहत्पाराशरी-होराके कारक सूत्रमें भी मङ्गलको चोरोंका अधिष्ठाता माना है।

यवनेश्वरके पद्यके अनुसार मेषका अग्नि-भूमि और "धात्वग्नि प्रहरण साहसैः कुजांशे" (बृहज्जातक अ० १० श्लो० २) धातु-भूमिका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

इस पद्यके अनुसार मङ्गलका धातु-अग्निका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

मेष क्षत्रिय पुरुष चतुष्पद पित्त प्रकृति क्रूर और चल है। मङ्गल भी क्षत्रिय पुरुष चतुष्पद पित्त प्रकृति और चल स्वभाव वाला है। इसलिये (आनुकूल्यं धर्म सादृश्यात्) इस सूत्रके अनुसार मेषसे मङ्गलकी अनुकूलता सिद्ध हुई। अतएव मेष मङ्गलका स्वगृह सिद्ध हुआ।

वृश्चिकका स्वरूप सी टीकामें इसी प्रकार है:— श्वभ्रेऽष्टमो वृश्चिक विग्रहस्तु प्रोक्तः प्रभोर्मेढ्र गुद प्रदेशे। गुहा विल श्वभ्रविषाश्मगुप्ति वल्मीक कीटा जगरा हि भूमिः॥

इस पद्यके अनुसार वृश्चिकका बिच्छू कीट सर्प आदि दशन करने वालोंका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। दशनसे क्षत होता है। मङ्गल भी क्षत कारक है।

"लये कुजे क्षत तनुः" (बृहज्जातक अ० २० श्लो० १४) 'तृष्णा सृक् क्षत भङ्ग पित्त जनित।' बृहज्जातक अ० ८ श्लो० १४) इन पद्योंके अनुसार मङ्गलका क्षत कारकत्व स्पष्ट है। यवनेश्वरके पद्यसे वृश्चिक राशिका गुहा, विल गढ़े आदि छिपे हुए स्थानोंका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। सेनापतिको भी युद्ध चातुर्यके लिये कृत्रिम या स्वाभाविक भूबिवरोंमें रहना आवश्यक होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृश्चिक लग्नमें उत्पन्न मनुष्यको बृहज्जातकमें क्रूरचेष्ट और छन्नपाप लिखा है:—

'क्रूर चेष्टो झष-कुलिश-खगाङ्कश्छन्न-पापोऽलिजातः ॥' (अ० १७ श्लो० ८) मङ्गल दुराचारियोंका अधिष्ठाता है।

हिंस्रो ह्रस्वस्तरुणः पिङ्गाक्षः पैत्तिको दुराधर्षः ॥' (लघुजातक)

यवनेश्वरके पद्यके अनुसार वृश्चिक राशिका विषस्थानका अधिष्ठातृत्व है। विषसे रक्त विकार होता है। मङ्गल भी रक्त विकार पैदा करने वाला ग्रह है।

इस प्रकार मङ्गलका वृश्चिकसे धर्मसादृश्य होनेसे पूर्व सूत्रसे वृश्चिकका अधिपति मङ्गल सिद्ध हुआ।

शुक्र कामका अधिष्ठाता है, कामी जनको स्त्री और धनकी आवश्यकता होती है। इसलिये शुक्र नैसर्गिक कुण्डलीमें धन स्थान वृष और स्त्री स्थान तुलाका स्वामी सिद्ध हुआ। 'धन भावं विजानीयाद् दारा कारक मेव च' इस बृहत्पाराशरी होरा वाक्यके अनुसार नैसर्गिक धन स्थान वृष स्त्री स्थान भी सिद्ध है। उसका स्वामी स्त्री कारक शुक्र सिद्ध हुआ। प्रधान स्त्री स्थान सप्तम स्थान ही है। शुक्र भी प्रधान रूपसे स्त्री कारक है। इसलिये वृषकी अपेक्षा शुक्रसे तुलाका अधिक संबन्ध प्रतीत होता है।

वृष राशिका स्वरूपः—

'वृषा कृतिस्तु प्रथितो द्वितीयः
सवक्त्रकण्ठायतनं विधातुः।
वनाद्रि सानुद्विपगोकुलानां
कृषीबलानामधिवास भूमिः॥'

इस पद्यके अनुसार वृष राशिका मुखका अधिष्ठातृत्व है। शुक्र जल तत्त्वात्मक है। जलतत्त्व रसगुण वाला है। रस ग्राहक इन्द्रिय जिह्वा है। जिह्वाका स्थान मुख है। इसलिए वृष राशि जिह्वाका अधिष्ठाता शुक्रकी अपनी राशि सिद्ध हुई।

शौक्र्यां गीतरतिप्रमोदसुरभिद्रव्यान्नपानाम्बर—
स्त्रीरत्नद्युतिमन्मथोपकरणज्ञानेष्टमित्रागमाः।
कौशल्यं क्रयविक्रये कृषिनिधिप्राप्ति धनस्यागमः॥

इस पद्यसे शुक्रकी शुभ दशामें कृषिकी प्राप्ति स्पष्ट है। यवनेश्वरके पद्यके अनुसार वृष राशि कृषि करने वालोंका अधिष्ठाता है।

वृष राशि वैश्यराशि है। इसलिये इसका क्रय विक्रयका अधिष्ठातृत्व है। दशाध्यायके पद्यके अनुसार शुक्रका भी क्रय विक्रय कार्यका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

वृष राषिका मुखका अधिष्ठातृत्व है। अन्न-पान का ग्रहण मुखसे होता है। लिखित दशाध्यायके पद्यके अनुसार शुक्रका अन्न-पानका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

मुखसे गीत गाये जाते हैं। इसलिये मुखके अधिष्ठातृत्वसे वृष राशिका गीतोंका आधिपत्य स्पष्ट है। दशाध्यायके पद्यके अनुसार शुक्रका भी गीतोंका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

यवनेश्वरके पद्यके अनुसार वृष राशिका गो जातिका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

'काव्यांशे मणि रजतादि गो महिष्यैः।' (बृहज्जातक अ० १० श्लो० ३)

इस पद्यके अनुसार शुक्रका भी गोजातिका अधिष्ठातृत्व स्पष्टहै।

तुला राशिका वर्णन

'वीथ्यां तुला पण्यधरो मनुष्यः
स्थितः स नाभौ कटवस्तिदेशे।
शुल्कार्थवीथ्यापणपत्तनाध्व—
सार्थाधिवासोन्नतसस्यभूमिः॥

इस यवनेश्वरके पद्यके अनुसार तुला राशिका क्रय-विक्रयका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है दशाध्यायके पद्यके अनुसार शुक्रका भी क्रयविक्रयका भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। सप्तम कारक होनेसे युक्ति से भी शुक्रका क्रय-विक्रयका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

यवनेश्वरके पद्य के अनुसार तुलाराशिका अन्नका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। दशाध्यायके पद्यके अनुसार शुक्रका भी अन्नका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है।

इस प्रकार शुक्रका वृष तुलाराशिका आधिपत्य स्वभावकी समतासे सिद्ध हुआ।

वृष राशि स्त्री राशि है। शुक्र स्त्री ग्रह है। वृष राशि शुभ राशि है। शुक्र शुभग्रह है। तुला राशिका फल शुभ है। "देव ब्राह्मण साधु पूजनरतः स्त्रीनिर्जितः" इत्यादि। 'स्त्रीनिर्जितः' इस उक्तिसे तुलाराशिका विशेष रूपसे स्त्री संबन्ध प्रतीत होता। इस प्रकार भी साम्य है।

मङ्गल आग्नेय ग्रह है। मेष राशि उसकी आत्म राशि है। स्वगृहसे सप्तममें राशिबल हीन होता है। इसलिये तुलाराशिमें मङ्गल का स्वगृह बल हीन होता है। अग्नि उष्ण स्वभाव है, जल शीत स्वभाव है। इसलिये तुला राशिमें जल तत्त्वात्मक ताराग्रह बली होता है। अतएव जल तत्त्वात्मक ताराग्रह शुक्रकी स्वगृह राशि आग्नेय ताराग्रह मङ्गलकी स्वगृह राशि मेषसे सप्तम तुला राशि है। इसी प्रकार वृश्चिकराशिसे सप्तम वृष राशि भी उसकी स्वगृह राशि है। विपरीतक्रमसे इसी प्रकार शुक्रकी राशियोंसे मङ्गलकी राशियां सिद्ध होती हैं।

मङ्गल मेष राशिका स्वामी है। इसलिये मङ्गलकी शुभदशामें मेष और छागसे धन लाभ होता है। इस प्रकार विपरीत क्रमसे दशाफल आदिकी उपपत्ति भी निकलती है।

इस लेखमें मङ्गल-शुक्रके स्वभावका राशि स्वभावके साथ जितना साम्य निरूपित किया है उसे उतना ही नहीं समझना चाहिए। यह निरूपण उदाहरण रूपमें है। (क्रमशः)

आग्नेयपुराणमें वृक्षायुर्वेद

[लेखक—श्री पं० रामबहादुर जी त्रिपाठी शास्त्री साहित्याचार्य]

इस संसारमें मानवमात्रका लक्ष्य त्रिवर्गकी प्राप्ति के साथ अन्तमें मोक्षको प्राप्त करना ही है। इस प्रकार मानव जीवनको सुखी बनानेकी ओर जितना ध्यान हमारे पूर्वज महर्षियोंने दिया था उतना संसार की दूसरी जातिने नहीं। सर्वप्रथम महर्षियोंके निर्मल अन्तःकरणमें वेदोंका प्रादुर्भाव, फिर उनके अंगभूत शिक्षा, कल्प, निरुक्तादि षडङ्गोंका निर्माण इस बातका प्रमाण है कि वे निरन्तर प्राणिमात्रको सुखी देखनेके लिए ज्ञानामृतके अनुसन्धानमें व्यस्त रहा करते थे। उनकी इसी प्रवृत्तिने मीमांसा, न्याय धर्मशास्त्र और पुराण आदि विद्याओंको जन्म दिया। इस प्रकार "अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्याय विस्तरः। पुराणं धर्मशास्त्रञ्च विद्या ह्येताश्चतुर्दश॥" अर्थात् चारों वेद उनके षड्-अङ्ग शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, ज्योतिष तथा छन्द, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण इन चतुर्दश विद्याओं द्वारा मानव जीवनको सफल बनानेका सब सम्भव प्रयत्न किया गया। परन्तु जब इतनेको भी पर्याप्त न समझ कर हमारी आवश्यकताएं बढ़ती गईं तो फलस्वरूप ६४ कलाओंका विकास हुआ। पुराण हमारी चतुर्दश विद्याओंमें अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यद्यपि वेदोंमें जीवन तत्त्व सम्बन्धी सभी बातें पाई जाती हैं परन्तु वे इतने गूढ़ हैं कि सर्वसाधारणकी समझमें उनका रहस्य नहीं आ सकता अतः इतिहास और पुराणोंके द्वारा वैदिक तथ्य की पूर्ण विवेचना की गई। जैसा कि कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रतरिष्यति' 'इतिहास पुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्' अर्थात् वेद शास्त्र के तत्त्वोंको अच्छी तरह न समझने वाले व्यक्तिसे डरता है कि यह मेरे अर्थका अनर्थ कर डालेगा। इसलिए सर्वसाधारणकी समझमें उसका रहस्य भली भांति आ सके, इस विचारसे ही इतिहास और पुराणों द्वारा उसकी विस्तृत व्याख्या की गयी है। यही कारण है कि 'ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणपञ्चमम्' 'पुराणंवेदसम्मितम्' आदिके द्वारा पुराणोंको पञ्चम वेद कह कर वेद स्वरूप ही बतलाया गया है।

आज पुराणोंके विषयमें लोगोंकी कितनी गलत धारणा है यह देशकालाभिज्ञ किसी व्यक्तिसे छिपा नहीं है। हमने अपनी संस्कृति और उसके प्राणप्रिय धार्मिक ग्रन्थोंका अध्ययन इस प्रकार भुला दिया है कि उनके विषयमें जिस किसीसे कुछ भी बिना सिर पैरकी बातें सुनकर उन पर विश्वास करने लगते हैं। और तब तो आश्चर्य और खेदकी कोई सीमा नहीं रह जाती है जब अपने ही हिन्दू नामधारी व्यक्तियोंद्वारा अज्ञानताके कारण उनपर बुरी तरह छींटे उड़ाये जाते और मिथ्या आरोप लगा कर भोली भाली जनतामें बुद्धिभेद पैदा किया जाता है। आज अधिकांश व्यक्ति पुराणोंको कपोल-कल्पित कहानियोंका संग्रह गल्प समझने लगे हैं; परन्तु उनको यह विदित होना चाहिए कि पुराणोंमें जीवन से सम्बन्ध रखने वाली ऐसी कोई बात नहीं है जो न पायी जावे। उदाहरण स्वरूप आग्नेय पुराणमें ऐसी सभी बातोंका वर्णन पाया जाता है जिनका हमारे जीवनके साथ गहरा सम्बन्ध है। आग्नेय पुराणमें कर्मकाण्डियोंके लिए उपयोगी धर्मशास्त्र, सभी देवताओंकी पूजा और प्रतिष्ठा विधि, अशौच निर्णय, प्रायश्चित्त, व्रत, दान, वर्णाश्रमधर्म, लक्ष-कोटि होम, नवग्रहहोम, और नानाविध व्यवहार, शिल्पशास्त्रसे रुचि रखने वाले व्यक्तियोंके लिए आवश्यक जीर्णोद्धार, शिल्पशास्त्र, गृहशिल्प, देवालयादिशिल्प, राजा और मन्त्रियोंके लिए उपयोगी राजधर्म, राज्याभिषेक, राजनीति, युद्धरचना, धनुर्वेद और नानाविध अस्त्र, पुराण तथा इतिहास प्रेमी व्यक्तियोंके लिए सृष्टिक्रम, वेदवेदाङ्गविभाग, सूर्य चन्द्र वंश, महाभारत तथा रामायण का सार, ईश्वरावतार तथा ऐतिहासिक पुरुषोंका जीवन चरित्र, ज्योतिषशास्त्रके जिज्ञासुओंके लिए—ज्योतिषशास्त्र, सामुद्रिक तथा स्त्री पुरुष लक्षणादि, मन्त्रशास्त्रके गूढ़ रहस्यको जानने वाले व्यक्तियोंके लिए मन्त्रशास्त्र, त्वरिता विद्या, षट् प्रयोग, मृतसञ्जीवनी प्रयोग, मन्त्र रूप औषधि, अघोरादि अस्त्र और स्तम्भनादि मन्त्र, रसिक साहित्यिक गायक व्यक्तियों के लिए अत्यन्त उपयोगी गन्धर्ववेद, भरतशास्त्र, काव्य भेद, नाटक भेद, अलङ्कार भेद, तथा नवरस निरूपण, वैयाकरणों के लिए कौमार व्याकरण, कोश तथा शब्द और धातु रूपावली तथा वैद्योंके लिए जानने योग्य वैद्यक शास्त्र, सिद्ध औषधियां, मन्त्ररूप औषध, सर्पलक्षण, सर्पदंशचिकित्सा, वृक्षायुर्वेद, गवायुर्वेद, गजाश्वचिकित्सा, रसादिलक्षण तथा रत्नपरीक्षा आदि अनेकों परमोपयोगी विषयोंका वर्णन विशदरूपसे पाया जाता है। इससे आप सहजमें ही समझ सकते हैं कि पुराणोंका हमारे जीवनके साथ कितना सम्बन्ध है! और हम उसके विषयमें विशेष बातें न जानकर किस प्रकार अन्धकारमें पड़े हुए हैं! इस प्रकार हम अपने अमूल्य शास्त्रीय रत्नोंको भूलाकर दिनों दिन अपनेको दीन, कायर तथा सर्वथा निर्बल समझने लगे हैं। उदाहरण रूपमें आपके समक्ष यहां 'आग्नेयपुराण' में वर्णित वृक्षायुर्वेदका विषय रक्खा जाता है, आप इससे पौराणिक वृक्ष विज्ञान भली भांति समझ सकते हैं

धन्वन्तरिरुवाच—

वृक्षायुर्वेदमाख्यास्ये प्लक्षश्चोत्तरतः शुभः।
प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्र आप्येऽश्वत्थः क्रमेण तु॥
दक्षिणां दिशमुत्पन्नाः समीपे कण्टकद्रुमाः।
उद्यानं गृहवासे स्यात्तिलान्वाप्यथ पुष्पितान्॥
गृह्णीयाद्रोपयेद्वृक्षान्द्विजं चन्द्रं प्रपूज्य च।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुवाणि पञ्च वायव्यं हस्तं प्राजेशवैष्णवम् ॥
नक्षत्राणि तथा मूलं शस्यन्ते द्रुमरोपणे ।
प्रवेशयेन्नदीवाहान्पुष्करिण्यां तु कारयेत् ॥
हस्तो मघा तथा मैत्रमाद्यं पुष्यं सवासवम् ।
जलाशयसमारम्भे वारुणं चोत्तरात्रयम् ॥
सम्पूज्य वरुणं विष्णुं पर्जन्यं तत्समाचरेत् ।
अरिष्टाशोकपुन्नागशिरीषाः सप्रियङ्गवः ॥
अशोककदलीजम्बूस्तथा बकुलदाडिमाः ।
सायं प्रातस्तु घर्मर्त्तौ शीतकाले दिनान्तरे ॥
वर्षारात्रौ भुवः शोषे सेक्तव्या रोपिता द्रुमाः ।
उत्तमा विंशतिर्हस्ता मध्यमाः षोडशान्तराः ॥
स्थानात्स्थानान्तरं कार्यं वृक्षाणां द्वादशावरम् ।
विफलाः स्युर्घना वृक्षाः शस्त्रेणादौ हि शोधनम् ॥
विडङ्गघृतपङ्काक्तान्सेचयेच्छीतवारिणा ।
फलनाशे कुलत्थैश्च माषैर्मुद्गैर्यवैस्तिलैः ॥
घृतशीतपयःसेकः फलपुष्पाय सर्वदा ।
आविकाजशकृच्चूर्णं यवचूर्णं तिलानि च ॥
गोमांसमुदकं चैव सप्तरात्रं निधापयेत् ।
उत्सेकः सर्ववृक्षाणां फलपुष्पादि वृद्धिदः ॥
मत्स्याम्भसा तु सेकेन वृद्धिर्भवति शाखिनः ।
विडङ्गतण्डुलोपेतं मात्स्यं मांसं हि दोहदम् ॥
सर्वेषामविशेषेण वृक्षाणां रोगमर्दनम् ॥

'अर्थात् धन्वन्तरि ने कहा— कि मैं अब वृक्षायुर्वेदके विषयमें कहूंगा— उद्यानमें प्लक्षका वृक्ष उत्तरमें, वट वृक्ष पूर्वमें, आम्र दक्षिणमें तथा पीपलका वृक्ष पश्चिममें क्रमसे लगाना शुभ होता है। उद्यानके समीप दक्षिण दिशामें उत्पन्न कांटो वाले वृक्ष शुभ होते हैं। घर में वाटिका अवश्य होनी चाहिए। ब्राह्मण और चन्द्रमाकी पूजा करके ही वृक्षोंको लगाना अच्छा होता है। वृक्षारोपणमें पांच ध्रुवसंज्ञक स्वाती, हस्त, रोहिणी श्रवण और मूल नक्षत्र उत्तम होते हैं। उद्यानमें नहर अथवा बावड़ी होनी चाहिए। जलाशयके आरम्भके लिए, हस्त, मघा, अनुराधा, अश्विनी, पुष्य, धनिष्ठा उत्तराषाढ उत्तराफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र अच्छे होते हैं। वरुण और विष्णुकी पूजा करके जलका उपयोग करना चाहिये। अरिष्टाशोक पुन्नाग शिरीष, प्रियंगु, अशोक, कदली, जामुन, वकुल और दाडिम आदि वृक्षोंको ग्रीष्म ऋतुमें सायंकाल और प्रातःकाल तथा शीतऋतु में दोपहर में सींचना चाहिये यदि वर्षा ऋतुमें वृक्ष लगाये गए हों तो पृथ्वीके शुष्क हो जाने पर रात्रिमें सींचना चहिए। बीस बीस हाथकी दूरी पर वृक्षोंका लगाना उत्तम और सोलह हाथकी दूरी पर लगाना मध्यम समझा जाता है वृक्षोंको लगानेसे पहले बारह बार तक एक स्थान से निकाल कर दूसरे स्थान पर लगाकर फिर अन्त में निश्चित स्थान पर स्थायी रूपसे लगाना चाहिये। घने वृक्षोंमें फल नहीं आते अतः उनकी छोटी पतली शाखें किसी हथियार से काट देनी चहिए। वृक्षोंमें उत्तम फल लानेके लिए विडङ्ग और घृतसे सेके करना चाहिए और सेकके अनन्तर ठण्डे जलसे सींचना चाहिए। वृक्षोंमें फल न लगनेकी अवस्था में कुलथी, माष, मूँग, यव और तिलके पानीसे सींचना चाहिए। फल तथा पुष्प की वृद्धिके लिए घी औरठण्डे जलसे सींचना हितकर होता है। भेड़ बकरी की मेंगनी, यव और तिलका चूर्ण, गोमांस और जल फल पुष्प की वृद्धि के लिए सात रात तक जड़ोंमें डालना चहिए। इस प्रकार फल फूल की वृद्धि के लिए सभी वृक्षोंके लिए सेक हितकर होता है। मछलीके पानीके सेकसे वृक्षोंकी वृद्धि होती है विडङ्ग और चावलसे युक्त मछलीका मांस वृक्षोंके मूलमें डालनेसे उनके लिए दोहद अर्थात् फल पुष्प लाने वाला होता है तथा सामान्यतया सभी वृक्षोंके रोग को नष्ट करने वाला होता है।

इस प्रकार पुराणोंमें अनेकों ऐसी बातें है जिनका अनुसन्धान कर सर्वसाधारण में प्रचार किया जाय तो जाति, देश और समाज का बहुत कुछ कल्याण हो सकता है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू समाजकी वर्त्तमान समस्याएं और संस्कृत समाज।

[लेखक—श्री पं० वासुदेव जी द्विवेदी वेदशास्त्री साहित्याचार्य]
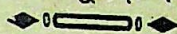
आज हिन्दुसमाज के सामने कितनी समस्यायें उपस्थित हैं यह किसी भी देशकालज्ञ व्यक्ति से छिपा नहीं हैं। जहां तक इतिहासके अध्ययनसे पता चलता है हिन्दुओंके लिए ऐसा विकट समय कभी नहीं आया था जैसा कि आज हम देख रहे हैं। सम्प्रति हमारे सामने एक नहीं अनेक ऐसी जटिल समस्यायें उपस्थित हैं जिनकी उपेक्षा करनेसे हम देश-धर्म और समाजको जीवित नहीं रख सकते। उदाहरण-स्वरूप

१—पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षाके दूषित प्रभावसे धर्म प्रधान भारत भूमिमें अधार्मिक वातावरणका फैलाना,

२—धर्मके नाम पर प्रधानतः मठ-मन्दिर-तीर्थ आदि धार्मिक स्थानोंमें अधर्म अत्याचार दम्भ और पाखण्ड आदि दुष्कर्मोंका होते रहना,

३—असंख्य हिन्दू नर-नारी तथा बालक-बालिकाओं का ईसाई-मुसलमान बनाया जाना,

४—बाल विवाह वृद्ध विवाह और कन्याविक्रयके कारण हिन्दू नर-नारियोंको दुर्बलता, ह्रास और शिशुओंका अकाल-मरण,

५—धर्म आडम्बर और प्रदर्शनके नाम पर अपव्यय होनेके कारण समाजकी आर्थिक हानि,

६—अज्ञान वश मूर्ख गुरु पुरोहितों तथा साधु सन्तों का समाजमें सम्मान,

७—सुर्ती, बीड़ी, सिगरेट, गांजा, चरस, चाह आदि दुर्व्यसनोंका प्रचार,

८—आर्यों की पवित्र भूमि भारतको खण्ड-खण्ड करनेकी लीगी योजना,

९—अरबी फारसी शब्दोंसे लदी हुई हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा बनानेका आग्रह,

१०—संस्कृतभाषा तथा संस्कृतनिष्ठ हिन्दीकी उपेक्षा,

११—ज्ञान अज्ञान अथवा दूसरोंके प्रलोभन प्रतारण, बलात्कार आदिके कारण पतित स्त्री पुरुषोंका शास्त्रानुसार प्रायश्चित्त न कर देनेसे विवश होकर उनका दूसरे ही धर्म समाज और जातिमें पड़े रहना,

१२—धर्म, औषधि, शिक्षा, और जीविकाके आड़में नगरों, गावों, पहाड़ों और सागर तटोंके निवासी हिन्दुओंको हड़पनेके लिये विधर्मियोंका कुचक्र,

१३—कोटि-कोटि अछूत नर-नारियोंकी उपेक्षा और उनकी दयनीय दशा,

१४—बाल विधवाओं की वृद्धि तथा उनका अनेक कारणोंसे जात्यन्तर स्वीकार,

१५—संस्कार, व्रत, उत्सव, त्यौहार आदिका यथाविधि न किया जाना,

१६—ऊंच नीच और छूत-अछूत के अतिरञ्जित एवं अमर्यादित भावोंसे हिन्दु समाजका संघशक्तिशून्य और छिन्न-भिन्न बने रहना,

१७—कृषि प्रधान भारतभूमिके एक मात्र धन गोवंश का भयकर ह्रास,

१८—भारतके कुछ तथा कथित कम्यूनिष्ट नवयुवकों द्वारा भारतमें रूसी सिद्धान्तका प्रचार,

१९—अधिकांश ग्रामीण हिन्दू जनताका अपने धर्म इतिहास तथा वर्तमान समस्याओंके ज्ञानसे वञ्चित रहना और अपने हानि-लाभोंको न समझना तथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०—इन सब अनर्थोंकी मूलभूत परतन्त्रतामें भारत का सदियों से पड़े रहना।

मुख्यतः ये सब ऐसे प्रश्न हैं जो हिन्दुत्वके प्रेमियोंको व्याकुल बनाऐ हुए हैं। वास्तवमें इन समस्याओं पर विचार नकर तटस्थ बने रहना किसी भी हिन्दूके लिए सबसे बड़ा पाप कहा जा सकता है। देश भाषा और जातिकी इन दुर्दशाओंको देख कर जिसके हृदयमें वेदना नहीं होती और जो इसके प्रतीकारके लिए यथा शक्ति प्रयत्न नहीं करना चाहता उस पाषाण-हृदय व्यक्तिको इस भूमि पर रहने और यहांके अन्न-जल खाने-पीनेका कोई अधिकार नहीं, प्रसन्नताकी बात है कि हिन्दु जातिकी इन वर्तमान समस्याओं एवं संकटोंको दूर करनेके लिए आर्यसमाज हिन्दु सभा, हिन्दुधर्म सेवा सघ, सनातन धर्म प्रतिनिधिसभा तथा सनातनधर्म सभा आदि संस्थाएं लेख एवं व्याख्यान आदि द्वारा सतत परिश्रम कर रही हैं और अनेक क्षेत्रोंमें कुछ अंश तक सफलता भी प्राप्त कर चुकी हैं कुछ हिन्दुत्वके हितैषी व्यक्तियोंके वैयक्तिक उद्योगसे भी जनता में जागृति उत्पन्न होनेमें बड़ी सहायता मिली है। इसके अतिरिक्त स्कूल कालेजोंके कुछ अध्यापकों और विद्यार्थियोंके ध्यान देने और कुछ रचनात्मक कार्योंमें भाग लेनेसे भी इन समस्याओंके सुलझनेकी बहुत आशा है।

परन्तु दुःखके साथ कहना पड़ता है कि इस कार्य में जितना अधिक भाग संस्कृत समाजको लेना चाहिए था वह उतना ही इस विषयमें पीछे है। ब्राह्मण होने, संस्कृत पढ़ने तथा हिन्दू जनताकी सहायतासे चलने वाली पाठशालाओंमें पढ़ने-पढ़ाने के कारण पंडितों एवं विद्यार्थियों का यह कर्तव्य था कि वे गंभीर समस्याओं पर मिलकर विचार करते, इनके दूर करनेका उपाय सोचते और यथाशक्ति उन उपायों द्वारा वर्तमान-स्थितिको सुधारनेका प्रयत्न करते और कुछ नहीं तो समय समय पर पंडित और विद्यार्थी मिलकर अधिक दूर नहीं तो पाठशालाके आस पास ही, व्याख्यान, कथा, प्रवचन और उपदेशों द्वारा चिरनिद्रित अज्ञानान्ध हिन्दु जनताको जगाकर उसे अपने देश, जाति, समाज, धर्म, भाषा आदि की वर्तमान अवस्थासे परिचित कराते, उसके अज्ञानको दूर करते, उसकी कुरीतियोको समझाते और उन्हें मिटानेके लिए आग्रह करते। नहीं सर्वदा तो पक्षमें एक दिन भी यह कार्य किया जाता। पाठशालाओंका छोटेसे छोटा विद्यार्थी भी समाजको इन सब बातों को समझता और उन्हें दूर करनेकी भावना रखता परन्तु यहांकी वर्तमान स्थिति तो इस आशाके सर्वथा प्रतिकूल ही है। सामयिक समाचार पत्रों तथा पुस्तकोंके न पढ़नेके कारण अधिकांश पण्डितों एवं विद्यार्थियोंको इन सभी समस्याओंका ज्ञान नहीं रहता उन्हें यह मालूम ही नहीं है कि वर्तमानमें हमारे समाजमें कितनी बुराइयां आ गई हैं और वे कैसे दूर की जा सकती हैं। विधर्मियोंके कुचक्रोंसे तो वे और भी परिचित नहीं हैं। साथ ही सजातीय विजातीय विद्वानों द्वारा सनातनधर्म और भारतीय संस्कृति पर किये गये आक्षेपोंका युक्ति युक्त उत्तर देकर उनके समर्थन तथा संरक्षणकाभी कार्य प्रायः हम संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने वाले पंडित विद्यार्थियों का ही है। पर इस विषयमें भी उनका ज्ञान और प्रयत्न नहींके बराबर है। हिन्दु धर्म और सभ्यता पर कैसे-कैसे भयंकर और आश्चर्यजनक आक्षेप हो रहे हैं और इस विषय पर देशी-विदेशी विद्वानों द्वारा कैसी २ पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित की जा रही हैं उसका उन्हें कुछ पता ही नहीं इस तरह ज्ञान-कर्म-हीन होकर हमारा पण्डित विद्यार्थी समाज वर्तमान समयके लिए पूरा निकम्मा हो गया है। पाठशालाओं में भ्रमण करते समय हम इस बातके लिए उत्कण्ठित रहते हैं कि कहींके अध्यापक या छात्र इन वर्तमान समस्याओं की चर्चा करते और इस दिशामें कुछ कार्य करनेकी रुचि प्रगट करते, पर इस विषयमें मुझे सर्वत्र निराश ही होना पड़ता है। यद्यपि इसके कुछ अपवाद भी हैं। कुछ ऐसे भी पण्डितों और छात्रोंके देखनेका मुझे अवसर मिला है जिनकी देश सेवाके विचारों और कार्यों का मुझे गर्व है पर वे अत्यन्त अल्प हैं, सौ में कठिनतासे एक या दो हैं। अवशिष्ट समूचे समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्थिति वही है जो ऊपर लिखी गई है।

इस सम्बन्धमें माननीय पण्डितों एवं विद्यार्थियोंसे सविनय निवेदन है कि आपमें अब तक सामाजिक बातोंसे पुष्करपलाशवत् निर्लेप बने रहनेकी जो प्रवृत्ति थी उसे दूर करने, अपने देश, जाति, धर्म, भाषा और सभ्यता सम्बन्धी वर्तमान अभिज्ञता प्राप्त करने तथा शक्त्यनुसार उनकी रक्षा करनेका कष्ट स्वीकार करें। यही हमारा श्रुति स्मृति पुराण प्रतिपादित सनातनधर्म है। सभी धर्मशास्त्र एक स्वरसे ब्राह्मणोंके लिए देश और धर्म की रक्षा आवश्यक कर्म बतलाते हैं। महर्षि अत्रि तो यहां तक लिखते हैं कि तीनों लोक, तीनों वेद चारों आश्रम और तीनों अग्नि इन सबकी रक्षाके लिए ब्राह्मणोंकी सृष्टिकी गई है।

त्रयोलोकास्त्रयोवेदा आश्रमाश्च त्रयोऽग्नयः।
एतेषां रक्षणार्थाय संसृष्टा ब्राह्मणाः पुरा॥

इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में एक जगह ब्राह्मणों को दान क्यों देना चाहिए, उन्हें यज्ञमें क्यों बुलाना चाहिए, उनकी पूजा क्यों करनी चाहिए तथा अपराध करने पर भी उन्हें शारीरिक दण्ड क्यों नहीं देना चाहिये, इन प्रश्नोंका समाधान यही दिया गया है कि ब्राह्मण वेदाध्ययन और प्रवचन द्वारा व्यक्तिगत उन्नति करते हुए समाजकी सेवा करता है अतः समाजको भी उक्त प्रकारसे ब्राह्मणों की सेवा करनी चाहिए। वहां के शब्द निम्नलिखित हैं—

"प्रिये स्वाध्यायप्रवचने भवतः युक्तमना भवति, अपराधीनोऽहरहरर्थान् संसाधयते, सुखं स्वपिति, परमचिकित्सक आत्मनो भवति। इन्द्रियसंयमश्च, एकारामता च प्रज्ञावृद्धिः यशोलोकपङ्क्तिः। प्रजा वर्द्धमाना चतुरोधर्मान् ब्राह्मणानामभिनिष्पादयति। ब्राह्मण्यं प्रतिरूपचर्यं यशोलोकपंक्तिम्। लोकः पच्यमानश्चतुर्भिर्धर्मैर्ब्राह्मणं भुनक्ति अर्चया च दानेन च अज्येयतया च अवध्यतया च'।

(कां० ११. अ० ५ ब्रा० ७ क० १)

इस प्रकार दो-चार नहीं सैंकड़ों श्लोक इस बात को कह रहे हैं कि ब्राह्मणोंका धर्म लोकरक्षा है, उन्हें लोकरक्षक बनना चाहिए। यह केवल शास्त्रों में लिख मात्र दिया गया हो ऐसी बात नहीं है, अपि तु हमारे पूर्वजोंने इसे करके दिखा भी दिया है, जिनके उदाहरणोंसे हमारा साहित्य भरा पड़ा है। ऐसी स्थितिमें आप स्वयं ही समझ सकते हैं कि लोकसेवाका कार्य हमारे लिए कितना आवश्यक है। परन्तु ऐसे श्रुति-स्मृति प्रतिपादित, पूर्वजों द्वारा आचरित, आवश्यक उत्तरदायित्वपूर्ण और उभयलोक साधक कर्तव्यकी आप कितनी उपेक्षा कर रहे हैं यह स्वयं विचार कर सकते हैं। इसी कर्तव्यपरित्यागका यह परिणाम है कि आज सारा समाज आपको उपेक्षा और घृणाकी दृष्टिसे देखता है। जैसे आप दूसरे पर धर्म छोड़ देनेके कारण रुष्ट होते हैं और निन्दा करते हैं वैसे ही हमारा हिन्दु समाज भी आपके ऊपर धर्म छोड़ देनेके कारण रुष्ट है और आपकी निन्दा कर रहा है,

अस्तु, अबतक जो उपेक्षा हुई सो हुई अबसे भी आप अपने कर्तव्य पालन पर ध्यान देनेकी कृपा करें। आप अपनी पाठशालामें समाचारपत्रों तथा इन समस्याओं पर लिखी गई पुस्तकोंको मंगावें, उनका अध्ययन तथा मनन करें, पाठशाला में ही एक पाक्षिक परिषद् स्थापित करके उसमें उक्त विषयों पर बोलनेका अभ्यास करें। जब अच्छी तरह अभ्यास हो जाय तो कमसे कम पक्षमें एकदिन पाठशालाके आस-पासके गांवोंमें जाकर हिन्दु जनताको एकत्र कर उन्हें उक्त विषयों पर उपदेश देनेका कार्य आरम्भ करदें। आप यह कभी न सोचें कि जब कोई हमें बुलावेगा, सेवा-सुश्रूषा करेगा और बार-बार अनुरोध करेगा तो इस कार्यके लिए उठेंगे। आप अपने पूर्वजोंके पदचिह्नोंका अनुसरण कीजिए और अपनी ओरसे इस क्षेत्रमें आगे आइये। आप ईसाई प्रचारकोंकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यप्रणाली पर ध्यान दें। वे प्रचारक सात समुद्र पारकर यहां आते हैं, विविध विघ्न बाधाओंको सहते हैं और पर्वतों जंगलों तथा समुद्रतीरवर्ती प्रदेशोंमें जाकर वहांके निवासियोंमें अपने सिद्धान्त का प्रचार करते हैं। इस कार्यमें उन्हें अनेकानेक असुविधाओंका अनुभव करना पड़ता है जगह जगह अपमान सहन करना पड़ता है और बार बार विफल होना पड़ता है। फिर भी वे उसी लगन और परिश्रमसे काम करते हैं। उनकी इस उद्योग-परता और परिश्रमका यह परिणाम है कि अब तक वे करोड़ों हिन्दुओंको ईसाई बनानेमें सफल हो सके हैं और होते जा रहे हैं। इसी प्रकार आप भी मानापमानका विचार न कर अपनी ओरसे इस कार्यको आरम्भ कर दें। इस समय हमारा देश, हमारी जाति, हमारा धर्म और हमारी भाषा पर भयंकर आक्रमण हो रहे हैं। ऐसे अवसर पर उनकी रक्षाके लिए आप संस्कृत पढ़ने पढ़ाने वाले अध्यापकों एवं विद्यार्थियोंका इस युद्धक्षेत्रमें उतरना इस युगकी महान् सेवा और कर्तव्य है। जहां भगवान मनु—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इस उक्तिके अनुसार पृथिवीके समस्त मानव समाजको चरित्र शिक्षा देनेकी आज्ञा दे रहे हैं वहां आप अपने निकटवर्ती नर-नारी समूहको भी तो चरित्र शिक्षा देनेका कष्ट करें। आज हमारे ग्रामोंमें न जाने कितने लोग ऐसे हैं जो अपने पूर्वजोंका इतिहास नहीं जानते। रामायण और महाभारतकी कथा नहीं जानते। उनको अपने इतिहाससे परिचित कराइये और रामायण एवं महाभारतकी कथा सुनाइये। इससे न केवल हिन्दु समाजका लाभ ही होगा प्रत्युत आप भी यशस्वी होगें और आपकी पाठशाला पर सबकी कृपा दृष्टि रहेगी तथा उसके सञ्चालनमें सब जनता आपकी सहायता करेगी। "परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ" इस भगवद् वाक्यके अनुसार जब आप हिन्दु समाजकी सेवा करेंगे तो वह भी आप की सेवा करनेसे न चूकेगा और इस प्रकार दोनों का श्रेय होगा।

आशा है आप उक्त पंक्तियों पर ध्यान देनेकी कृपा करेंगे। इस कार्यके आरम्भमें यदि आप हम से भी कुछ सम्मति एवं सहयोग चाहेंगे तो मैं भी इस कार्यमें आपका सहर्ष पथ-प्रदर्शन करूंगा। पत्र व्यवहारका पता प्रा० भवानीछापर. पो० भिगारी. जिला गोरखपुर।

आवश्यकता
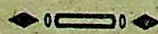
१—रुद्रयामल तन्त्र (संस्कृत)
२—शिव पुराण द्वादश संहितात्मक (जिसमें धर्म-संहिता भी हो)।
३—डामरेश्वर तन्त्र।
४—अहिर्बुध्न्य संहिता
५—अगस्त्य संहिता।
६—'कल्याण'का शिवाङ्क और शक्ति-अङ्क

उक्त पुस्तकें किसी सज्जनके पास हों तो वे सम्पादक 'श्री स्वाध्याय' सोलनको सूचित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके संरक्षक—

रावराजा कैप्टन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी, भरतपुर।

गङ्गस्वरूपो भास्वान् गुरुकविबुधसेवकः पुरुषसोमः।
गिरिधारीशरणसिंहो जयतुतरां रावराजोऽसौ॥

आपका ३४ वां शुभजन्मोत्सव अभी गत भाद्रपद शुक्ला १४ मंगलवार ता० १० सितम्बर १९४६ को सुसम्पन्न हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मका सच्चा स्वरूप

[लेखक—श्री पं० दयानन्द जी जोशी]
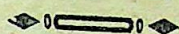
समयकी गति भी बड़ी विचित्र है। जो देश धर्म-प्राण था वही समयकी गतिके कारण आज कुछ से कुछ हो गया। जिन व्यक्तियोंका प्रत्येक कार्य धर्मसे ओत-प्रोत था, उन्हींकी सन्तानें आज धर्मका नाम सुनते ही मुंह बनाकर खिल्ली (हंसी) उड़ानेमें नहीं सकुचातीं। धर्मका नाम उनके मस्तिष्क (दिमाग) की रगोंमें पागलपनका संचार करनेमें बिजली या जादूका-सा काम करता है। वे उसको मूर्ख (Foolish) कहकर घृणा करते हैं, जो किसी भी अकर्तव्यको अधर्म या पाप कह बैठते हैं। इसका कारण है उनको बचपनसे धर्मकी शिक्षाका न मिलना।

प्राचीनकालमें द्विज (ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य) मात्र अपने बालकोंका शास्त्रोक्त समय पर विधि अनुसार यज्ञोपवीत संस्कार करवाकर अपने कुल गुरु ऋषि महाराजके आश्रम पर भेज दिया करते थे, या गुरुजीके आश्रम पर ही उन बालकोंका उपनयन संस्कार होता था, और वे (गृहस्थाश्रममें ही) दत्तचित्तसे गुरु-सेवा करते हुए वेद, वेदाङ्ग, शास्त्र पुराण, इतिहास आदि सभी पारलौकिक और ऐहलौकिक विद्याओंका अध्ययन करते हुए अपने वास्तविक धर्म (मानव कर्तव्य) को भली प्रकार जानकर गृहस्थाश्रममें प्रवेश किया करते थे। परन्तु आजके समयमें बालकको केवल अंग्रेजी पढ़ाकर साहब बनानेमें ही उनके पिता माता अपना गौरव समझते हैं। इस प्रकार दोष पूर्ण ढंगसे प्राप्त इस कलुषित शिक्षाको पाकर वे साहब बनकर अपने उन्हीं पिता माताको जिन्होंने उनको अपनी मनोनीत उच्च शिक्षा दिलानेमें सहस्रों रुपये पानीकी भांति बहा दिये थे बूढ़ा बेवकूफ (old fool) कहकर उनकी हंसी उड़ाते हैं। कोई २ तो उनको अपने पिता माता कहनेमें भी शर्माते हैं। कितने अच्छे और नम्र शब्दों द्वारा आजकलके सभ्य कहे जाने वाले साहब अपने पूज्य पिता माताका सत्कार करते हैं। यह है समयकी गति, यह है अपने अविचार पूर्वक किए हुए कर्मका पुरस्कार।

विचारको तिलाञ्जलि देकर अपनी संस्कृतिकी अवहेलना करनेका दुष्परिणाम तो ऐसा होता ही है। अपने धर्म (मानव कर्तव्य) से अनभिज्ञ व्यक्तिका ऐसा कोई भी कार्य आश्चर्यजनक नहीं कहा जा सकता।

दूसरी ओर देखनेसे धर्मके नाम पर धर्मकी ओटमें अधर्म (पाप अकर्तव्य कर्म) करने वाले ढोंगियोंकी भी इस कालमें कमी नहीं, धर्मके नाम पर अपने अपने मतका प्रचार करते समय वे धर्मके ठेकेदार अन्य मतोंकी किस प्रकार निन्दा करते हैं यह किसीसे भी छिपा नहीं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति भोले भाले लोगोंके समक्ष, अपने ही मत (सम्प्रदाय) की कीर्ति का गुणगान करता हुआ, उसकी धुलीपुती (Painted & Polisced) कुछ सिद्धान्तोंको बता २ कर, अन्य मतकी मनमानी सौ गुनी बुराइयोंको दिखा कर उनको बहकाकर अपने पक्षमें लेनेमें ही, अपनी सम्प्रदायकी संख्या बढ़ानेमें ही अपनी विद्वत्ता और (बहादुरी) समझते हैं।

सभी मतमतान्तरोंके आचार्यों द्वारा बतलाये हुए नियमों पर भली प्रकार सोचने विचारनेके बाद यह निर्विवाद मानना ही पड़ता है कि वास्तवमें धर्म (मानव कर्तव्य) में तो कहीं कोई भेद-भाव है ही नहीं, वे तो सभी सम्प्रदायोंमें शुद्ध और स्पष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं उनमें तो कहीं भी और किसीके लिए भी निन्दा स्तुतिका कोई कारण दृष्टिगोचर होता ही नहीं, फिर ये धर्मके नाम पर निन्दा स्तुति करने वाले ठेकेदार हैं कौन ? विचारनेसे पता लगता है कि ये लोग हैं दुकानदार, जो धर्मकी दुकानदारी करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना ही अपना कर्म समझते हैं, ये तो धर्मके एजेण्ट बनकर अपने धर्म रूपी मालको औरोंके मालसे अच्छा चोखा बढ़िया और स्वर्ग व मुक्तिका सीधा मार्ग बता २ कर अपनी दूकानदारीका मिथ्या-प्रचार (Propaganda) करने वाले प्रचारक हैं। ये बेचारे स्वयं ही नहीं जानते कि धर्म वास्तवमें है क्या ? गूढ़तर विचार करनेके बाद समझमें आता है कि अंशुमाली प्रकाशदाता सूर्य देवसे लेकर पत्थर, मिट्टी तक सभी इस धर्ममें बंधे हुए हैं। प्रत्येक मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े मकोड़े बनस्पति आदि सभी इसमें बंधे हुए अपने २ कर्तव्यका पालन करने को बाध्य हैं।

सूर्यका धर्म (कर्तव्य) है प्रकाश देना, जल बर्षा कर अन्न तृणादि उत्पन्न करना आदि। प्रकाश सब सूर्यका ही है, चन्द्र तारे सूर्यके प्रकाशसे ही प्रकाशित हैं, दीपक चाहै तेलका, गेसका हो या बिजलीका हो, सभी सूर्यसे ही प्रकाश लेकर उसकी अनुपस्थितिमें प्रकाश देते हैं। अग्निका धर्म जलाना, गर्मी देना आदि, पानीका धर्म गलाना और तरी पहुंचाना है, वायुका धर्म सुखाना है, आकाशका कर्तव्य शब्दोंको ग्रहण कर उसको सबमें बांटना आदि और पृथ्वीका धर्म धारण कर किसी वस्तुको उत्पन्न करना है।

पशुओंका भी पृथक् २ कर्तव्य है। यथा सिंहका धर्म अपने ही पौरुषसे आखेट मारकर अपनी उदर पूर्ति करना और दूसरेके मारेको छूना नहीं।

पक्षियोंमें कबूतरका धर्म निरामिष भोजनकी प्राप्तिके लिए उड़कर अन्नके दाने आदि सात्विक पदार्थोंका चुगना और इनके न मिलने पर कंकड़ मिट्टी खाकर पेट भर लेना पर मांस या कीड़े मकोड़े कदापि न खाना, इत्यादि इसी प्रकार सभीका अपना २ धर्म है; जिस पर यदि संक्षेपमें भी लिखा जाय तो कई ग्रन्थ बन जायें, यहां तो केवल मनुष्य धर्म पर ही विचार करना है।

मनुष्यके अतिरिक्त देवताओंसे लेकर पशु पक्षी आदि चेतन और जड़ सभी अपने २ धर्म (कर्तव्य) में प्रकृति (Nature) से ही बंधे हुए हैं, उससे न्यूनाधिक वे कुछ भी नहीं कर सकते। वे तो उतना ही कार्य्य कर सकते हैं जितना प्रकृति (Nature कुदरत, ईश्वरीय माया) ने उनके लिए नियत (Fixed) किया है। वे सभी योनियां भोग योनियां हैं, वे कर्म करनेमें स्वतन्त्र नहीं, परन्तु मनुष्य अपने धर्मका पालन करनेमें पूर्ण स्वतन्त्र है और इतना स्वतन्त्र कि वह अपने पुरुषार्थसे पुरुषोत्तम तक बन सकता है। जीवसे ब्रह्म तक हो सकता है। अथक पुरुषार्थ से अपने भाग्य अर्थात् पूर्व जन्मके संचित कर्मोंके पुञ्जको पलट सकता है, हलका कर सकता है।

संसारमें प्रचलित सभी मत या सम्प्रदाय शब्दों या भाषाके हेर फेरमें न्यूनाधिक एकसे ही विचारोंमें गुंथे हुए हैं और उनके मुख्य २ नियमों पर निष्पक्ष विचार करने पर उनमें परस्पर कहीं अमान्यता दिखती ही नहीं, कहीं भिन्नता भी दृष्टि गोचर नहीं होती है।

सृष्टिके आदि मानव मनु हुए हैं, इन्हीं मनु को कोई आदम कहते हैं कोई कुछ कोई कुछ, उन्हीं मनुजीके कथनानुसारः—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

अर्थात्—धैर्य्य, क्षमा, दम (मनका निरोध) शौच (पवित्रता) इन्द्रियनिग्रह, अस्तेय, बुद्धि, विद्या (ईश्वरीय ज्ञान) सत्य, अक्रोध ये दशधर्मके लक्षण हैं।

पहला धर्म धृतिः— अर्थात् धैर्य्य या संतोष है। घोर दुःख की प्राप्तिमें भी न घबराना, न रोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्लाना और शोक किये बिना ही उसे सह लेना धैर्य है। और ऐसी कष्टप्रद दशामें भी प्रसन्न रहना संतोष है। ऐसे समय मनुष्यको विचार करना चाहिये कि "अपने पूर्वके दुष्कर्मोंसे या अपनी इस जन्मकी भूल, उपेक्षा या क्षणिक आनन्दके लिये जान बूझ कर किये हुये अनुचित कर्मोंसे ही दुःख आये हैं, और बिना भोगे उनसे छुटकारा होना भी कठिनतम ही नहीं, अपितु असम्भव ही है। वे किसी भी प्रकार रोके नहीं जा सकते हैं, उनके रोकनेके लिये जितने भी प्रयत्न किये जावेंगे उनमें कपट चाल और झूठका अवलम्बन करना ही पड़ेगा, और इतना अकर्त्तव्य करने पर भी उसके किसी भी प्रकारके दंड रूप फलसे बचनेमें प्रतिक्षण हृदयमें अशान्ति, चिन्ता और कष्ट ही होंगे। आशंकाका भूत भी हरदम सताता ही रहेगा तो, फिर बार-बार भूल पर भूल या कुत्सित उपाय क्यों करें ?, क्यों न उनको धैर्य और प्रसन्नतासे सहलें ?" इस प्रकार निरन्तर विचार करनेसे अवश्य धैर्य और संतोषकी प्राप्ति होगी, शोक और घबराहट न होकर शान्ति मिलेगी।

संतोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्॥

अर्थात्—संतोषरूपी अमृतसे तृप्त शान्त चित्त वालेको जो सुख होता है वह सुख धनके लोभीको जो इधर उधर दौड़ता है कैसे प्राप्त हो सकता है ?

जो सुखमें फूलता नहीं, वह दुःखमें शोक भी नहीं कर सकता। ऐसा अभ्यास करना मानव कर्त्तव्य है। संतोषसे अत्युत्तम सुखकी प्राप्ति होती है।

सर्पा पिवन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति।
कन्दैः फलैर्मुनिवरा गमयन्ति कालं,
सन्तोष-एव पुरुषस्य परं निधानम्॥

अर्थात्—सांप पीते हैं केवल पवनको और दुर्बल नहीं होते, हाथी सूखी घास खा कर बलवान् रहते हैं; श्रेष्ठ मुनि जन कन्द-मूलसे समय बिताते हैं, अतः सन्तोष ही पुरुष का परम धन है।

इस प्रकार सन्तोषमें धैर्य और धैर्यमें ही सन्तोष है।

दूसरा—धर्म्म (कर्त्तव्य) क्षमा। क्षमा कर सकने वाला व्यक्ति बलिष्ट और यश भागी होता है।

सत्यपि सामर्थ्ये ऽपकारसहनं क्षमा।

अर्थात्— सामर्थ्य होते हुए भी अपकार सहलेना क्षमा है।

अपने साथ बुराई करने वाला या अपनी हानि करने वालेसे शारीरिक, लेखनी और वाणी द्वारा दंड देने या बदला लेनेकी पूर्ण शक्ति होते हुए भी बदले या दंडकी मनमें भावना ही न होना वास्तव में क्षमा है। मानव धर्म (कर्त्तव्य) का यथार्थ पालन करने वाला ही ऐसी क्षमाको धारण कर सकता है। क्षमाको निर्बलता समझना भूल है। विचार करिये कि गाली देने वालेको बदलेमें गाली देनेसे अशान्ति होगी या शान्ति ?, इससे द्वेष बढ़ेगा, वैमनस्य उत्पन्न होगा, और सदैव उसीमें मन उद्विग्न बना रहेगा। ईर्षाके बदले प्रेम करनेसे दो लाभ होते हैं, एक तो स्वयं अपना मन शांत रहता है और दूसरे द्वेष करने वालेके मनमें भी परिवर्तन हो जाता है। महान् दुष्टको सच्चे क्षमा करने वाले महात्मा के सम्मुख झुकना पड़ता है, पर याद रहे कि आततायी या हिंसक आक्रमणकारी पशु या मनुष्यसे स्वयं अपनेको या किसी निर्बलको बचाना बुद्धिमान् का कर्त्तव्य है। आवश्यकता पड़ने पर आततायीको जानसे मारनेमें भी नहीं हिचकिचाना चाहिए। ऐसे अवसर पर मार खा लेना या देखते रहना मूर्खता या कायरता है, क्षमा नहीं। परन्तु मनमें कालुष्य न आने पावे।

तीसरा- धर्म है दम। अर्थात्—मनको बुरे काम से रोकना। किसीको कष्ट पहुंचाना, विषय वासनसे किसीका धन, भूमि, स्त्री या कोई भी पदार्थ छीनना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी को धोखा देना आदि। जितने भी बुरे काम जिनको करने समय अपनी अन्तरात्मा मना करें उनसे मनको रोकना ही दम है क्योंकि:—

मनसा चिन्तयन् पापं कर्मणा नाभिरोचयेत्
स प्राप्नोति फलं तस्येत्येवं धर्म्मविदो विदुः।

अर्थात्—मनसे सोचे हुए पाप (बुरे कर्म्म) कार्य रूपमें न किये जायं तो भी वह उसका फल पाता है, यही धर्म है।

यन्मनसा ध्यायति, तद् वाचा वदति, यद् वाचा वदति तत् कर्मणा करोति, यत्कर्मणा करोति, तदभिसंपद्यते॥

अर्थात्—मनुष्य जैसा मनमें चिन्तन करता है वैसी वाणी बोलता है। जैसी वाणी बोलता है, वैसा कर्म करता है। जैसा कर्म करता है, वैसा फल पाता है॥

शुभ और अशुभ भावनायें प्रति मनुष्यके मन में रहती ही हैं परन्तु मनको अशुभ भावनाओंसे हटा कर शुभमें लगाना ही सच्चा दमन है॥

चौथा—धर्म्म है अस्तेय। अर्थात्—चोरी। किसीकी कोई भी वस्तु अन्यायसे लेना ही चोरी है। कम तोलना, अच्छी वस्तु दिखाकर बुरी, उससे घटिया या उतार दे देना, कपट करके किसीकी उड़ा लेना, मांगा हुवा द्रव्य या कोई भी पदार्थ न लौटा कर हड़प जाना, किसी की धरोहर (थाती, अमानत, Deposit) रखी हुई धन राशि या अन्य कोई भी पदार्थ वापिस देनेमें इन्कार करना, विश्वासघात करना, किसीको डरा धमका कर कोई वस्तु प्राप्त करना, अपनेसे निर्बलको मारपीट कर छीन लेना, झूठा प्रतिज्ञापत्र, दानपत्र, या रसीद लिखवाना, कह कर पलट जाना, घूस (रिशवत) लेना आदि सभी अस्तेय हैं।

"न हर्त्तव्यं परधनमिति धर्मः सनातनः"

अर्थात्—पराया धन न हरना (अन्यायसे न लेना) यही सनातन (तीनों कालोंमें सदा एकसा रहने वाला) धर्म है।

पाचवां— कर्त्तव्य कर्म है शौच। अर्थात्—पवित्रता।

शौच पाँच प्रकार का है। मन, क्रिया, कुल, शरीर और वाणीको पवित्र रखना शौच है। यथा:—

मनः शौचं कर्मशौचं कुलशौचं च भारत!
शरीरशौचं वाक्शौचं शौचं पञ्च विधं स्मृतम्॥

केवल शारीरिक पवित्रता (स्नान करना) ही धर्म्म नहीं है। जैसा आजकल कई अविचारी (पुरुष और स्त्रियां) समझे बैठे हैं; क्योंकि शीत ज्वरसे पीड़ित व्यक्तिके लिए स्नान न करना ही तात्कालिक धर्म है। उस समय स्नान करके निमोनिया आदि घातक रोगोंमें फंस कर शरीरको कष्ट में डाल देना धर्म नहीं, परञ्च पाप है। वास्तविक पवित्रा तो मन की होनी चाहिये, किसी का मन तो कलुषित हो और वह नित्य परम पावनी जान्हवी (गंगा) में अनेक बार स्नान करे, तो भी वह यथार्थ पवित्रता नहीं है। मन को सभी दुष्ट विचारों और कलुषित भावनाओंसे रोक कर अपनेमें लीन कर लेना ही सच्ची पवित्रता (शौच) है।

मृदां भारसहस्रैस्तु कोटिकुम्भजलैस्तथा।
कृतशौचोऽविशुद्धात्मा स चाण्डाल इति स्मृतः॥

अर्थात्—हजारों भारी मिट्टी और करोड़ों जल के कलशोंसे शौच करे तो भी दुष्ट चित्त जन चाण्डाल ही है। (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतकी प्राचीन तथा आधुनिक नारियां

[लेखिका—श्रीमती प्रीतमदेवी 'प्रभाकर']
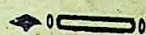
भारतकी नारी भी एक समस्या है, जिसको समझना बहुत कठिन है, यह फूलसे कोमल तथा पत्थरसे कठिन है। इसमें प्रेम तथा त्यागका सुन्दर सम्मिश्रण है, यह वीरताकी पुतली भी है और कायरताकी पराकाष्ठा भी। यह शिक्षा के शिखर और मूर्खताके गढ़ेकी भी सैर कर चुकी है। धैर्य और सहन शीलतामें तो यह बड़े २ ऋषियोंको भी पीछे छोड़ती है। भारतकी प्राचीन देवियोंका स्मरण करके आज भी भारत मांकी छाती गर्वसे फूल उठती है। और समस्त नारी जातिका मस्तक गौरवसे ऊँचा हो जाता है। यह युद्ध में, शिक्षामें, पतिव्रत धर्ममें, तात्पर्य यह है कि सब बातोंमें अद्वितीय रही है, इनके पवित्र जीवन नारी जातिके लिए आदर्श हैं। सीता, सावित्री, इसी मांकी सुपुत्रियां थीं, जिन्होंने पतिव्रत-धर्म पालनके लिए जंगलोंके कष्ट सहे, यमराज तकका सामना किया, और संसारको दिखा दिया, कि एक पतिव्रतानारीमें कितना बल, और धैर्य होता है। विद्याधरी जैसी शिक्षित नारियां इसी भारतकी गौरव रही हैं। जिन्होंने शंकराचार्य जैसे विद्वानोंको शास्त्रार्थमें पराजित कर दिया था और भी कई विदुला, गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा आदि विदुषी धर्मात्मा वीरांगनाओंने भारत मांकी पुण्य कुक्षिको उज्ज्वल किया है। अहल्या बाई, दुर्गा, तथा जवाहरबाई जैसी वीर क्षत्राणियां जब स्वदेश रक्षाके लिए तलवार पकड़ती थीं, तो देखने वालोंको प्रलयकारिणी रणचण्डी दुर्गामाताका गर्व हो जाता था। मध्यकालमें नारियोंकी दशा अवश्य करुणाजनक रही है। कई कारणोंसे बाल विवाह, शिक्षाकी कमी, तथा पर्देकी प्रथाने नारी जीवनको दुःखमय बना दिया, उनकी स्वतन्त्रता छिन गई, और उन्हें पावोंकी जूती समझा जाने लगा। परंतु आधुनिक कालमें फिरसे स्त्री शिक्षाका प्रचार बढ़ रहा है। लड़कियोंको उच्च शिक्षा दिलाई जाने लगी है। पर्दा प्रथा भी यदि सर्वथा नहीं गई है तो कम अवश्य हो गई है। भारतकी नारियोंको फिर स्वतन्त्र वातावरणमें साँस लेनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, परन्तु अबकी और तबकी शिक्षामें आकाश पातालका अन्तर है। प्राचीन कालमें शिक्षा नारी धर्म, गृहस्थ सुख तथा कर्त्तव्य पालनके लिए होती थी। अपने सतीत्व रक्षा हेतु नारियोंको शस्त्र और शास्त्र दोनोंमें दक्ष किया जाता था। किन्तु आजकी शिक्षा पुरुषोंकी समानता करने और धनोपार्जन करनेके लिए दिलाई जाती है। पवित्र भारतीय सभ्यता पश्चिमी विलासिताके रंगमें रंगी जा चुकी है। आजकी शिक्षा पतिव्रत धर्म सिखलाने के लिए न होकर विषयोंकी ओर खीचे लिए जाती है। वेद और उपनिषदोंके स्थान पर प्रेमपूर्ण नाटक तथा उपन्यास पढ़ाये जाते हैं, जिनसे युवक हृदय चंचल हुए बिना नहीं रह सकता। प्राचीन नारियां पतिको देवता तथा ईश्वर समझ कर पूजती थीं, और आजकी नारियां पतिको मित्र रूपसे देखना चाहती हैं। प्राचीन कालमें स्वयंवर की प्रथा थी, लड़की पुरुषकी वीरता, सदाचार आदि गुणों पर मुग्ध होकर अपने सम्बन्धियोंके सम्मुख ही उसे पति रूपमें ग्रहण करती थी, परन्तु आजका स्वयंवर चायपार्टी, सैरगाहों और सिनेमाघरोंकी मुलाकातों पर निर्भर है। जिसमें सम्बन्धियोंकी किंचित् मात्र भी बाधा नहीं होती। इन स्वयंवरों में परख केवल दिखावेके प्रेम, बाहरी तड़क भड़क,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अनुभूत अद्भुत प्रयोग

गाजर का हलवा

गाजर एक स्वादिष्ट तथा अत्यन्त लाभ दायक कन्दमूल है। इसके खानेसे जिगरकी गर्मी दूर होकर नया खून पैदा होता है, वैद्यक शास्त्र तथा डाक्टरी मतानुसार यह आयुको बढ़ाने वाली मानी गई है। परन्तु खेद है कि लोग इसके गुणोंसे परिचित नहीं हैं। यह हर जगह बहुत सस्ती मिलती है इसलिये इसकी इतनी कदर नहीं होती इसको साधारणतया कच्चा, भाजी बनाकर, आचार तथा मुरब्बे बनाकर खाया जाता है। आज यहां हम इसका हलुआ बनानेकी विधि लिखते हैं जो कि कई एक मूल्यवान् पाकों तथा औषधियोंसे भी बढ़कर वस्तु है। इसके सेवनसे शरीरमें नये जीवनका संचार होने लगता है खून बढ़ जानेसे मुख लाल तथा कान्तिवान् हो जाता है। प्रमेह आदि रोगों में भी बहुत लाभदायक है।

हलुआ बनानेकीविधि

१० सेर उत्तम नरम ताजा गाजर लेकर साफ कर लें। बादमें उनको घीया-कश (बारीक २) कर के एक लोहेकी कढ़ाईमें डालकर आगपर पकावें, जब पक जावे तब इसमें २, २॥ सेर खांड और आध सेर अथवा तीन पाव घी मिला दें और थोड़ी देरतक आगपर ही रहने दें, जब पककर तैयार हो जाए तब उतार लें, अधिक बलवान् बनना चाहें तो नीचे लिखी वस्तुएं भी मिला दें।

सालममिश्री, मूसली सुफेद, समुन्दर सोख, सोंठ, कौंचके बीज, गूंद कीकर, दारचीनी प्रत्येक दो २ तोला लेकर इसका चूर्ण बनावें। बादाम गिरी, किशमिश तथा पिस्ता भी प्रत्येक ५—५ तोला मिला दें। मात्रा—२॥ तोलासे ५ तक उपयोग।

इसका सेवन भारतवर्षमें हजारों वर्षोंसे चला आता है और सब लोग इसके नाम तथा कुछ न कुछ इसके गुणोंसे परिचित हैं। साधारणतया गृहस्थोंमें इसे शाक भाजियोंमें सेवन किया जाता है। हिस्टीरिया (मानसिक विकार), बेहोशी तथा अन्तड़ियोंके रोगों (खासकर जब हिस्टेरियाके कारण से हों) में यह अत्यन्त लाभदायक देखी गयी है। काली खांसी, न्यूमोनिया, दमा तथा वायु रोगोंमें भी इसका सेवन करनेके पहले प्रायः घीमें भून लिया जाता है। परन्तु यदि इसे कच्चा ही प्रयोगमें लाया जाय तो कुछ हर्ज नहीं। हैजा (विसूचिका) के भी

रूप-रेखा, सूट बूट, तथा सेण्ट लेवेण्डरकी ही की जाती है। जो भाग्यशाली इस परीक्षामें उत्तीर्ण हो गया, वही वरमालाका अधिकारी होता है। ऐसे विवाह आवेसे अधिक धोखेकी टट्टीके अतिरिक्त कुछ नहीं होते प्रतिदिन समाचार पत्रों में ऐसे विवाहोंके दुष्परिणाम देखनेको मिलते हैं। प्राचीन कालमें नारियोंके स्वरूप उनके चरणों पर लोटते थे। पर वह उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखती थी, ऐसे ही जैसे एक संसार त्यागी योगी सांसारिक प्रलोभनोंको। परन्तु आजकी नारियोंको अपने अधिकारोंके लिए झगड़ना पड़ रहा है, सच है अधिकार मांगेसे नहीं मिला करते, गुणोंसे प्राप्त किये जा सकते हैं। संसार परिवर्तन शील है, परिवर्तन इसका स्वभाव है, जैसे वह नहीं रहा यह भी न रहेगा। हमारी शिक्षा में सुधार होंगे देश स्वतन्त्र होगा और हमारी शिक्षा परसे विदेशी प्रभाव दूर होकर प्राचीन तथा पवित्र भारतीय सभ्यताका विकास होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट करनेमें एक अति उत्तम प्रभावोत्पादक औषधि है। इसका सेवन जिगर तथा मेदेको बलवान् बना देता है। जिससे भूख बढ़ाने तथा पाचनशक्तिको प्रबल करनेमें यह एक अद्वितीय महौषधि है।

—एक अनुभवी

गर्भस्थापक अद्भुत प्रयोग

प्रिय पाठकगण! परोपकारार्थ स्वर्गीय श्री पूज्य पिताजीका यह अनुभूत योग है और मेरा परीक्षित है। गर्भाशय और बन्ध्याके वास्ते अव्यर्थ है।

शुद्ध पीपलकी लाख १॥ मा० असगन्ध २॥ मा०, सफेद दक्षिणी मिर्च ६ रत्ती, शीतलचीनी ६ रत्ती, मिश्री २ तोला इन सबका चूर्ण बना लें।

विधि—ऊपर लिखी समस्त औषधियोंको पृथक् २ कूटकर चूर्ण बनावें। ६ मासे घोलफूली ६ मा० कटेलीका मूल, गायका दूध आध सेर, पानी पाव भर उक्त दोनों चीजोंको दुग्धमें डालकर पका लें, ठण्डा होने पर मिश्री मिले चूर्णकी चुटकी जबान पर डालता जावे और दुध पीता जावे, यह योग प्रातःकाल सेवन करें। इस योगको एक वर्ष सेवन करनेसे गर्भाशयके रोग और बन्ध्यात्वको नष्ट करके गर्भ स्थिर होता है और सुन्दर सुडौल दीर्घ-आयु सन्तान उत्पन्न होती है, यह योग मासिकके दिनोंमें बन्द कर देना चाहिये।

उक्त योगको पुरुष भी सेवन कर सकते है। तैल, खटाई, मिठाई, लुगाई इनसे बचें।

—क्षमादत्त वैद्यराज "अनुभूतयोगमाला"

बवासीरकी एक अद्भुत औषधि

आजकल बवासीर खूनी या बादी जैसा भयानक रोग इतना व्यापक हो गया है कि कदाचित् ही कोई ऐसा भाग्यवान् परिवार होगा जो इस रोगसे सर्वथा बचा हो। इस समय लगभग २५ प्रतिशत स्त्री-पुरुष इस रोगसे ग्रस्त हैं। अनेकों रोगियोंने इस रोगसे छुटकारा पानेके लिये हजारों रुपया व्यय किया, परन्तु परिणाम कुछ नहीं हुआ। प्रति वर्ष हजारों मनुष्य इस रोगसे अपना अमूल्य जीवन नष्ट करते हैं, परन्तु आज तक किसीने इससे मुक्त होने की कोई अचूक औषधि नहीं बताई। मुझे एक महात्माने निम्न लिखित एक अद्भुत औषधि बतलानेकी कृपा की है, जिसका अनेकों रोगियों पर मैंने प्रयोग किया है और सबको पूर्ण लाभ हुआ है। अतः मैं आपसे नम्र निवेदन करता हूँ कि आप इसका अधिकसे अधिक प्रचार करें, जिससे जनताका हित हो सके।

"दो ईंटके टुकड़े लीजिये। और दोनोंको एक हाथकी दूरी पर रख दीजिये। इनके बीच में उपलेकी आग रखिए। आग पर एक तोला लाल ततइयोंका छत्ता रखिये और उस पर एक औंधी चिलम रखें। इस औंधी चिलम पर बवासीरके रोगीको इस प्रकार बिठाइए कि लाल ततइयोंके छत्तेका धुवां उसकी गुदामें लगता रहे। इस प्रकार तीन चार दिन इसका प्रयोग करने पर रोग बिल्कुल ही मूलसे नष्ट हो जाएगा।

(नोट—छत्ता लाल ततइयोंका होना चाहिए, पीले ततइयोंका अथवा मक्खी आदिका नहीं)

—मदनलाल गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम्बू और उसके गुण

[लेखक—श्री पं० लीलाधर जी शर्मा वैद्यशास्त्री]
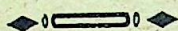
स्वस्थ कहने योग्य आज वास्तव में कितने सहस्र मनुष्य हैं ? यदि मान लें कि हजारों हैं, फिर भी, आयुर्वेदके सिद्धान्तानुकूल हम उनके आदरके योग्य वस्तुओंकी सूची उपस्थित कर दें, यह बड़ा कठिन कार्य है—और अयोग्य भी है, क्योंकि आयुर्वेद कहता है कि आहार विधिके लिये आठ बातें आवश्यक हैं। जैसे आहार योग्य पदार्थोंकीं (१) प्रकृति (भारी हलकापन) (२) पदार्थोंके बनानेकी पद्धति, इससे भी गुणमें परिवर्तन हो जाता है, जैसे चावल पकाकर मांड़ निकालनेसे हल्का न निकालनेसे भारी होता है, (३) संयोग, दो या अनेक पादार्थोंके मिलनेसे अन्य गुणकी उत्पत्ति होती है, जैसे दूध मछलीके साथ खानेसे कुष्ट होता है, उड़दकी दाल लौकीके साथ और मूलीके साथ खानेसे भी कुष्ट होता है (४) राशि (अपने-अपने शरीर की शक्तिके अनुसार आहारका कुल परिमाण दाल भात, रोटी, दूध, घी आदि सब मिलाकर एक सेर परिमाण जसे किसीको उपयुक्त है।) (५) देश (किस देशमें कौन चीज किसके अनुकूल हैं) जैसे पश्चिमके रहने वाले व्यक्तिको बङ्गालमें भात खाने से कब्ज हो जाता है, (६) समय- अमुक ऋतुमें या समयमें मेरे लिये यह वस्तु लाभदायक है, (७) उपयोग नियम जैसे पहिला भोजन पाचन होने पर ही खाना, और(८) आहार करने वाला, ये ८ बातें आवश्यक हैं। इस दशामें प्रत्येक व्यक्तिका स्वभाव, देश, छिपे या प्रकट रोगकी दशा, इत्यादि बातें देखते हुए, किसी वस्तुकी उपादेयता, उसके 'गुण दोष' व्यक्त कर देनेसे ही काम चल जाता है, योग्य व्यक्ति अपने लिये फलाफल सोचकर उसे अपने आहार योग्य पदार्थोंकी सूचीमें रखले। इसी सम्बन्धमें हम रोगी और निरोगी दोनोंके लिये नींबूके गुणोंका वर्णन करते हैं। नींबूकी अनेक जातियां हैं, किन्तु उनके खट्टे और मीठे दो प्रधान भेद हैं—खट्टे नींबू चाहें जंभीरी हों चाहे कागदी हो, गुणमें समान होते हैं। हम यहां कागदीके गुणोंको वर्णन करते हैं। जहां कागदी न हों वहां कोई खट्टा नींबू ले सकते हैं, (१) नीबूके खानेसे पेटके कीड़े मरते हैं, (२) शरीरके बाहर रोमकी जड़में लहसुनका पानी मिला कर मालिश करनेसे उनका नाश होता है। (३) कच्चे और ताजे दूधमें चीनी, आधा नींबू निचोड़कर पीनेसे पेटमेंसे आमके गुच्छे के गुच्छे निकलते हैं। पेटमें जलन होकर दस्त होना, खून आना मैले आंवका आना ऐंठन होना दूर होता है, लहसुनमें नीबू छोड़कर खानेसे गठिया बात दूर होता है (४) भयंकर पेटके दर्दमें आगे लिखा नीम्बू बहुत उपयोगी है (५) नींबूका शर्बत बनाकर पीनेसे दाह शान्त होता है, पाखाना पेशाब साफ लाता है, दिलकी धड़कन मिटती है (६) गरम ऽ= पानीमें दो नीबूओंका रस निचोड़ कर पीनेसे थाईसिसकी हालतमें भी अत्यन्त लाभ होता है (७) नींबूका रस २॥ तोले लेकर तीनसे ६ घण्टेके बाद पीनेसे बात रोगों की पीड़ाका शमन होता है। धमनी (बड़ी रक्त नाड़ी) की चाल कम होती है (८) विश्राम देकर चढ़ने वाले मलेरिया ज्वरमें बढ़े हुए उत्तापको कम करता है। (९) ज्वरकी भयंकर प्यासमें नींबूका शर्बत प्यास एवं ज्वर वेगको कम करता है। हैजा तथा साधारण कालमें आधी छटांकसे १॥ छटांक नींबूका रस गरम पानीके साथ लाभदायक है। (१०) जमालगोटा का जहर या किसी भीं क्षार पदार्थ का जहर नींबूके रससे नष्ट होते हैं। उल्टीका होना, पेट फूलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर होता है। (११) शराब अफीम आदि कोई भी मादक पदार्थका विष हो शीघ्र शान्त होता है। (१२) अण्डकोषकी खुजलीमें नींबूका रस लगानेसे शीघ्र लाभ होता है। (१३) स्निग्ध पदार्थोंके सेवनसे अजीर्ण होने पर ३॥ तोले रस ३ बार गरम पानीमें मिलाकर पीनेसे अजीर्ण शमन होता है। (१४) जिनका पेट चरबीसे बढ़ गया हैं या अन्य शरीरमें भी चरबीकी मात्रा काफी परिमाणमें हों उन्हें चाहिये कि मध्याह्न और रात्रिके भोजनके बाद आधी छटांक नींबूका रस तत्काल भोजनसे उठते ही पीलें उनको २ सप्ताहके बाद ही लाभ होगा। शरीरका भार कम हो जाएगा, किन्तु निर्बलता नहीं आयेगी।

शुक्र दौर्बल्यके रोगी प्रायः खटाई छोड़ देते हैं। यह उनकी भूल है, बिना षट्रस सेवनके कभी शुद्ध वीर्य बन नहीं सकता। अतः समयानुकूल बराबर कभी-कभी नींबूका रस भी सेवन करना चहिये। किन्तु सूजनके रोगींको अम्ल देखना भी नहीं चाहिये। नींबूके स्थानमें पाश्चात्य ढङ्गसे बने साइट्रिक एसिड (नींबूके रस) का प्रयोग ऊपर कहे विषयों पर विशेष लाभकारी न होगा, इससे रस ही लेना चाहिये। शौकीनोंके लिये १।२ नींबूके ऐसे प्रयोग लिखते हैं जो वर्षों नहीं बिगड़ते।

निम्बुक द्राव

नींबूका रस एक सेर, भुना हुआ चौकिया सुहागा ४ तोले, काला नमक दो तोले, सैंधव नमक ३ तोले, भुनी हींग ३ मासे, (न खाने वाले हींग न दें) भुना जीरा १ तोला पीसकर शीशीमें भरकर रख दें। वर्षों नहीं बिगड़ेगा प्रातः सायं या भोजनके बाद कांचके बर्तनमें २ तोले जल मिलाकर ६ माशे या एक तोला पीनेसे यकृत प्लीहा बदहजमी शूल अरुचि अफारा नष्ट होगा।

चटनी

मुनक्का ऽ। पाव भर, नींबूका रस ऽ॥ आधा सेर, जीरा १ तोला, लौंग १ तोला, चीनी ४ तोला, सैंधा नमक २ तोला, इलायची १ तोला, भुनी हींग १॥ माशे। नींबूके रसको पकाकर इतना रखना कि दवा मिलानेपर गाढ़ा रहे। मुनक्का पीस कर देना, बाकी कुटी पिसी दवाइयां पीछेसे मिलाना। हाजमा कम, मुंहमें पानी भर आनेकी शिकायत आदिपर लाभदायक है।

नींबूमें गुण ही नहीं है किन्तु उसमें महादोष भी एक है, नींबूका बीज पेटमें चला जानेसे आंतकी पूछमें गांठी फोड़ा (अपेण्डी साइटिन) हो जाता है। यह अवस्था जीवनके लिये बड़ी बुरी है। पेट चीरना पड़ता है, गांव और साधरण नगरोंमें ऐसे चिकित्सक नहीं होते: अतः शीघ्र ही प्राणान्त हो जाता है, इस लिये नींबूका रस सदा छानकर ही काममें लाना चाहिये।

सदा निरोग रहने पर भी अकारण व्यसन की भांति जो अधिक दिन नींबूका सेवन करते हैं उन्हें नीचे लिखे रोग हो जाते हैं। जैसे दांतमें पानी लगना, आंख मिचमिचाना, सोतेमें आंख बिना कीचड़के चिपक जाती हैं। रक्त दूषित होकर मांसमें जलन होती है, शरीर शिथिल पड़ जाता है, दुर्बल पतले घाववालोंको सूजन हो जाती है, कंठ छाती, हृदय जलने लगता है। इसलिये कल्याण इच्छुकोंको गुण दोषका विवेचन करके समयानुकूल अपनी प्रकृति देख कर नींबूका सेवन कर लाभ उठाना चाहिये।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय ज्योतिःशास्त्र

[लेखक—श्री पं० बलदेव जी मिश्र ज्योतिषाचार्य]

भारतीय ज्योतिः शास्त्रके मुख्यतः तीन विभाग हैं जातक, संहिता और सिद्धान्त। किसी जन्म लिये हुए प्राणीका जन्मसे मरण तक, पूर्व जन्म तथा पर जन्मका, उसकी स्त्री, पिता, माता, पुत्र, मित्र संबन्धी इत्यादि सबका फल कहना जातक विभागका कार्य है। इस जातक विभागके अन्तर्गत ही स्वरशास्त्र, रमलशास्त्र, सामुद्रिक, शकुनशास्त्र तथा मुहूर्त्तादि विषय हैं, ये सब फलित ज्योतिष कहलाते हैं।

संहिता

संहिता विभाग वह है जिसमें प्राकृतिक विषयोंका ज्ञान तथा तत्सम्बन्धी फलादेश है, जैसे किसी उत्पात, भूकम्प, वर्षा इत्यादिका ज्ञान तथा उसका फल कथन, यह विभाग भी फलित ज्योतिषका ही विभाग समझा जाता है। यह विभाग भी बहुत बड़ा है, अनेक प्राचीन ऋषि मुनियोंके इस सम्बन्धमें ग्रन्थ थे, किन्तु आजकल उपलब्ध वराहमिहिरकी बृहत्संहिता तथा वातालसेनका अद्भुतसागर मात्र है।

सिद्धान्त

सिद्धान्त वह विषय है जिसमें आकाशीय ग्रह नक्षत्रादिकी गति इत्यादिका विवेचन है, इसी सिद्धान्त-विभागके अन्तर्गत गणित-विभाग भी है, यह विभाग बहुत बड़ा है और जगन्मान्य है, विदेशोंमें इसी विभागका यश प्रख्यात है।

ज्योतिषके प्रत्येक विभागके प्रथम ग्रन्थकर्त्ता ऋषि मुनि हुए हैं; अतएव इसका प्रत्येक विभाग मान्य तथा विश्वसनीय है। ज्योतिषके फलित विभागका भी आधार गणित ही है; क्योंकि लग्न और ग्रहके सम्बन्धसे ही फलादेश होता है और लग्न तथा ग्रहका ज्ञान गणिताधीन है, अतएव गणित विषय ही ज्यौतिषशास्त्रमें मुख्य है अतः गणित ज्योतिषके ही सम्बन्धमें यहां थोड़ा विवेचन किया जाता है। ज्यौतिषशास्त्र भारतवर्षमें विशेष रूपसे आदर इसलिये पाया है कि यह शास्त्र वेदका अङ्ग है। भारतवर्षमें हिन्दुओंके लिये वेदसे बढ़कर मान्य पूज्य और आदरणीय दूसरी वस्तु नहीं। ज्यौतिषका वेदके अङ्ग, उसमें भी विशेष अङ्ग आंख होनेके कारण विशेष आदर है। ज्योतिषवेदाङ्गकर्त्ता लगधमुनिने आरम्भमें ही लिखा है कि जिस प्रकार मयूरोंकी शिखा, नागोंकी मणि मान्य है उसी प्रकार वेदाङ्ग शास्त्रोंमें ज्यौतिष सर्वश्रेष्ठ हैं। यथा—

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्यौतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्॥

ज्यौतिष शास्त्र यद्यपि प्रत्यक्ष तथा युक्तिशास्त्र है, तथापि वेदाङ्ग होनेके कारण इस शास्त्रके आचार्यगण वेद तथा पुराणोंकी मान्यता रखते हैं, फिर भी कुछ आचार्योंने अपने स्वतन्त्र विचारोंको कहनेमें भी आगा-पीछा नहीं किया है। शास्त्र तथा पुराणोंमें सर्वत्र वर्णित है कि पृथिवी नहीं चलती है, किन्तु स्थिर है। पृथिवीका एक नाम ही 'अचला' है तथापि पुराने आचार्य आर्यभट्टने जो पटनेके रहने वाले थे और जिन्होंने ३९८ शाकेमें २३ वर्षकी अवस्थामें 'लघ्वार्यभट्टीय' नामका ग्रन्थ लिखा, उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि "पृथिवी चलती है। जिस प्रकार नौकामें बैठे हुए लोग स्थिर वृक्ष, प्रासाद आदिको चलता हुआ मालूम करते हैं उसी प्रकार हम लोगोंको स्थिर नक्षत्र पश्चिमको

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर जाते हुए मालूम होते हैं; वस्तुतः पृथिवी ही चलती है। यथा—

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
तद्वत् स्थिराणि भानि समपश्चिमगानि लंकायाम् ॥

परवर्त्ती किसी आचार्यने वेदशास्त्र विरोधी इस मतको स्वीकार नहीं किया, विशेषकर आर्यभट का बहिष्कार ही किया। भास्कराचार्य जिनका जन्म १०३६ शाकेमें है और जिन्होंने ३६ वर्षकी अवस्थामें 'सिद्धान्तशिरोमणि' नामक ग्रन्थ लिखा है, उन्हें यह निश्चय हो गया था कि राहु, चन्द्र-सूर्य के ग्रहणमें कारण नहीं है, अपितु सूर्यके ग्रहणमें चन्द्रमा और चन्द्रग्रहणमें पृथिवीकी छाया छादक है, ऐसा कहनेके लिये उनकी युक्तियां ये हैं "चन्द्रमा का स्पर्श पूर्वमें और सूर्यका स्पर्श पश्चिममें ही क्यों होता है? राहुकृत ग्रहण होनेमें एक ही दिशा में होता। सूर्यका ग्रहण किसी देशमें होता है किसी देशमें नहीं होता, राहुकृत ग्रहण होनेसे सर्वत्र ही होता, परन्तु एक ही कालमें सर्वत्र ग्रहण नहीं होता, देश भेद काल भेदसे ग्रहण होता है, राहु कृत ग्रहण होनेसे सब जगह एक ही कालमें ग्रहण देखनेमें आता' इत्यादि युक्तियोंसे राहु-कृत ग्रहणका खण्डन करके भी शास्त्र पुराण मत की रक्षाकी दृष्टिसे कहा गया है कि राहु ही चन्द्रमामें तथा पृथिवीकी छायामें प्रवेश कर ग्रहण करता है, क्योंकि उसे ब्रह्माका इस प्रकार वरदान हैं—

दिग्देशकालावरणादि भेदैर्नछादको राहुरिति ब्रुवन्ति।
यन्मानिनः केवल दैवविज्ञास्तत्संहिता वेद पुराण बाह्यम् ॥
राहुः कुभामण्डलगः शशाङ्कं शशाङ्कगश्छादयतीनबिम्बम्
तमोमयः शम्भुवरप्रसादादित्यागमानामविरुद्धमेतत् ॥

अत्यन्त उग्र विचार वाले कमलाकर भट्टने जिन्होंने १५८० शाकेमें काशीमें 'सिद्धान्ततत्त्व-विवेक' लिखा है स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि इस युक्ति शास्त्र तथा प्रत्यक्ष शास्त्रमें व्यासकी बात भी नहीं मानी जा सकती, क्योंकि जहां प्रत्यक्ष है वहां वाक् प्रमाण प्रमाण नहीं माना जा सकता। यथा—

"तद्धि व्यासोदितं चापि दुष्टं ज्ञेयं विजानता।"
नान्यन्मुनीन्द्रोक्तमपीह यस्मात्—
प्रत्यक्षसिद्धौ नहि वाक् प्रमाणम् ॥

इतने युक्तिवादी तथा प्रत्यक्षवादी होने पर भी वे सूर्य-सिद्धान्तके मतका अन्धभक्तोंकी भांति समर्थन करते हैं। सूर्यसिद्धान्तकी त्रुटि कमलाकर भट्टको मालूम नहीं हुई हो यह बात नहीं है, उन्होंने मालूम करके भी कहा है कि सूर्यसिद्धान्त तो वेद ही है, इस में युक्ति लगाना ही दोष है, इसलिये सूर्यसिद्धान्त में जैसा लिखा है वही यथार्थ है —

यद् द्राक्फलेऽत्र श्रवणानुपाते कृतेऽपि सौरे परिधेः स्फुटत्वम्।
तद्वासनाविद्भगवान् स एव नारायणो मण्डलगो न चान्यः।
वेद एव रवितन्त्रमथास्य वासनाकरणमल्पधियां हि।
दोष एव न गुणो रविणोक्तं तेन युक्तियुतमेवमथोह्यम् ॥

इन सब विषयोंको कहनेका अभिप्राय यही है कि ज्योतिषियोंको शुद्ध प्रत्यक्ष विचारक होने पर भी दृढ़ संस्कारने प्राचीन शास्त्रके विचारोंको तोड़कर उन्हें बिल्कुल स्वतन्त्र नहीं होने दिया। युक्तिने उन लोगोंकी बुद्धिमें स्वातन्त्र्य दिया किन्तु प्राचीन संस्कारोंने बन्धनसे बाहर नहीं जाने दिया।

उपपत्ति

एक विषय विचारणीय यह है कि आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, वराह, लल्ल, श्रीपति इत्यादि गणकोंने ज्यौतिष सिद्धा-न्त ग्रन्थोंको लिखा किन्तु उनकी उपपत्ति या उस पर कोई व्याख्या नहीं लिखी, इसलिये यह विषय इस समय तक संशयास्पद है कि उन सिद्धान्तोंको उन्होंने समझ बूझकर लिखा अथवा जहां कहींसे जो कुछ उपलब्ध किया उसे अपने श्लोकोंमें बना लिया। किन्तु भास्कराचार्यने इस दोषका उन्मूलन कर दिया, अर्थात् उन्होंने जो सिद्धान्त ग्रन्थ लिखा उस की मिताक्षरा व्याख्या भी की, तथा 'वासना-भाष्य'के नामसे अपने प्रकारोंकी उपपत्ति भी लिखी। भास्कराचार्यके पहले भी प्रायः तीन सौ वर्ष पूर्व चतुर्वेदाचार्य पृथूदक स्वामीने ब्रह्मगुप्तके सिद्धान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त' पर एक टीका लिखी जिसमें उपपत्ति भी की गई है, इससे स्पष्ट है कि वे लोग केवल अपने प्रकारोंको ही नहीं लिखते थे अपितु उनकी उपपत्ति भी जानते थे। दूसरी बात यह है कि यदि उन प्रकारोंको अच्छी तरहसे जानते नहीं तो उसका खण्डन मण्डन ही कैसे करते ? इसलिये वे अवश्य उन विषयोंको जानते थे। भास्कराचार्यके बाद उनके ग्रन्थों पर अनेक टीकाएं लिखी गईं। सिद्धान्ततत्त्वविवेककार कमलाकरके बाद तो और कोई ज्यौतिषसिद्धान्त भारतमें लिखा नहीं गया। हां, टीका टिप्पणियां बहुत हुई हैं। इन टीकाकारों में गुरुवर महामहोपाध्याय दिवंगत श्री पं० सुधाकर द्विवेदी सबसे प्रसिद्ध हैं, एक दो सिद्धान्तकारोंको छोड़कर शेष उपलब्ध सब प्राचीन सिद्धान्तों पर उन्होंने टीकायें लिखी और मुद्रित कराईं। उन्होंने सब मिलाकर ७२ ग्रन्थोंकी रचना की। आधुनिक कालमें ज्यौतिषशास्त्र पर और कोई दूसरा ऐसा प्रभावशाली लेखक नहीं हुआ। उन्होंने प्राचीन ज्यौतिषशास्त्रकी काया ही पलट दी है। महामहोपाध्यायजी केवल प्राचीन सिद्धान्त मर्मज्ञ ही न थे, अपितु युरोपियन नूतन गणित शास्त्रके भी निपुण वेत्ता थे, इसलिये उन्होंने प्राचीन रीतियोंको नये सांचेमें ढाला है। प्राचीन गणकोंके लिखनेकी रीति में शब्दाडम्बर था, प्राचीन गणक आजकलके गणित चिन्होंको नहीं जानते थे, वे प्रकारान्तरसे उन चिन्हों का बोध कराते थे, जैसे योगका + यह चिन्ह उन लोगोंको विदित न था, ऋण चिन्हके लिये ऋण पदार्थके ऊपर एक बिन्दु रखकर ऋणका ज्ञान कराते थे, गुणन चिन्हके स्थानमें 'भा' लिखकर वर्गके स्थानमें 'वर्ग' लिख कर मूलके स्थानमें करणी लिखकर इन सब चिन्होंको प्रकाशित करते थे। म० म० जी ने अपनी टीकाओंमें नवीन संकेतोंसे उपपत्तियां दी हैं इसलिये उनकी की हुई उपपत्तियोंको जानने वाले लोगोंके लिये आजकल भास्कराचार्यका वासना-भाष्य समझना कठिन हो गया है। आजकल म० म० द्विवेदी जी कृत टीका टिप्पणीका यथार्थ रूपसे ज्ञान हो जाना ही ज्यौतिष शास्त्रका यथार्थ ज्ञान है।

म० म० द्विवेदीजी ने अपने दीर्घकालीन अध्यापन समयमें भास्कराचार्यकी सिद्धान्तशिरोमणिकी अच्छी उपपत्ति कर डाली, किन्तु उनके पहले ही म० म० पं० बापूदेव शास्त्रीके द्वारा इस दुरूह ग्रन्थ का संशोधन तथा मुद्रण हो चुका था, इसलिये म० म० द्विवेदी जी ने इस पुस्तकका अपनी उपपत्तियोंके साथ प्रकाशन नहीं करवाया, किन्तु उन की उपपत्तियां उनकी शिष्य परंपरामें सर्वत्र विदित हैं, कुछ स्वार्थी लोग उन्हींके प्रकारोंको अपने नाम से जहां-तहां प्रकाशित कर रहे हैं। अब भी यह उचित है कि सिद्धान्तशिरोमणिका एक ऐसा संस्करण हो जिसमें म० म० द्विवेदी जी की इस ग्रन्थकी सब विशेषतायें छपवा दी जांय, क्योंकि ज्यौतिषमें आजकल यही मुख्य पाठ्य ग्रन्थ तथा सर्वत्र परीक्ष्य ग्रन्थोंमें निर्धारित है।

प्राचीन लेखशैलीका विशेष कारण

पुराने लोग इस प्रकार छन्दोबद्ध अपने ग्रन्थोंको क्यों लिखते थे इसमें भी कारण है, प्रथम कारण तो यही है कि प्राचीन समयमें लोग छन्दोबद्ध ही लिखा करते थे, दूसरी बात यह थी कि छन्दमें लिखनेसे वे नियम, प्रकार, कण्ठस्थ कर लेनेके योग्य होते थे, तृतीय बात यह थी कि थोड़े शब्दों में विशेष अर्थ संगृहीत हो जाता था। चौथी बात यह थी कि बहुतसे प्रकार ऐसी भाषामें लिखे जाते थे कि जिसको उन्हींकी शिष्य परम्परा जान सके। अपनी कठिन विद्याको गोप्य रखना शास्त्र मर्यादा थी, शास्त्रमें यह स्पष्ट आदेश है कि बहुत दिन पाठशाला पर रहने वाले गुणी भक्त शिष्योंको ही यह विद्या देनी चाहिये, चुगलखोर, कृतघ्न, पापी, मूर्ख, दुर्जनको यह शास्त्र कभी नहीं देना चाहिये। जो कोई इस नियमका उल्लंघन करता है वह अपनी आयु और पुण्यका क्षय करता है। यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्ताय शिष्याय चिरोषिताय गुणोपपन्नाय च देयमेतत् ।
भ्रात्रे च मित्राय च सूनवे च सुदुर्लभं छेद्यकगोलतन्त्रम् ॥
प्रतिकञ्चुकक्कुतूक्कृतघ्नविद्विट वपिताधार्मिकमूर्खदुर्जनेभ्यः ।
इह तन्त्ररहस्यमप्रमेयं ददतः स्यात् सुकृतायुषोः प्रणाशः ॥
नैतत् द्वेषिकृतघ्नदुर्जनदुराचाराचिरावासिनाम् ।
स्यादायुः सुकृतद्वयो मुनिकृतां सीमामिमामुज्झतः ॥

इस लिये ऐसी भाषा और इस प्रकारके संकेतसे विषय् लिखे जाते थे जिससे सब को बोध न हो सके। यह रीति इसी देश की नहीं अपितु ग्रीस देशमें भी इसी प्रकारकी रीति थी। इसका आभास प्राचीन इतिहाससे ज्ञात होता है। ग्रीस देशका बड़ा वैज्ञानिक अरस्तु मासेडोनिआका राजा सिकन्दरका गुरु था। शिष्य का गुरुके विषयमें बड़ा आदर था, वह अपने पिता फिलिपसे भी बढ़कर गुरुका आदर करता था। जब वह एशिया महादेश जीतनेकी इच्छासे भारत-वर्षमें आया और पंजाब देश पर विजय प्राप्त की तब उसे खबर मिली कि उसके गुरु महाराजने एक पुस्तक लिखकर अपनी विद्या प्रकाशित कर दी है। इस समाचारसे बहुत दुःखी होकर उसने अपने गुरु को लिखा कि 'जिस ज्ञानके कारण हम लोग अपने को दूसरोंसे बड़ा समझते हैं उस ज्ञानको सब लोगोंमें विदित कराकर हम लोगोंकी विशेषता नष्ट कर दी गई है।' प्रिय शिष्यके इस पत्रका उत्तर गुरु अरस्तूने यह दिया कि-'उन्होंने विशिष्ट ज्ञानको प्रकाशित किया भी है और नहीं भी किया है।' यह कहनेसे उनका अभिप्राय यह था कि पुस्तक प्रकाशित होने पर भी उसके अभिप्रायको उनके शिष्यपरंपरामें जो हैं वे ही समझ सकेंगे, अन्य नहीं समझ सकेंगे। इसी प्रकार पीथागोरासके स्कूल का रेखागणित ज्ञान उन्हीं लोगोंको बतलाया जाता था जो उनके शिष्य परम्परामें थे।

(क्रमशः)

सभी दुखोंका मूल ममता

यस्मिन्यस्मिन्ममत्वेन बुद्धिः पुंसः प्रजायते ।
ततः ततः समादाय दुःखान्येव प्रयच्छति ॥
मार्जारभक्षिते दुःखं यादृशं गृहकुक्कुटे ।
न तादृङ् ममताशून्ये कलविङ्केऽथमूषिके ॥
ममेति मूलं दुःखस्य न ममेति च निवृत्तिः ।

मार्कण्डेयपुराण ३५ अं० । २—४।

अर्थात् संसारकी जिस जिस वस्तुमें मनुष्यकी बुद्धि ममता करती है कि 'यह वस्तु मेरी है' वहां वहां से वह हमें उपहार स्वरूप दुखों को ही भेंट करती है। उदाहरण स्वरूप घर और उसकी वस्तुओं में अत्यधिक ममता होने के कारण ही घर की बिल्ली अथवा मुर्गेके किसी जन्तु द्वारा खा जाने पर जितना और जैसा दुःख होता है, उतना ममता रहित बनैले चूहे अथवा कलविङ्कके खा जाने पर नहीं होता। अतः किसी भी वस्तुमें ममता ही दुःखोंका कारण है। यदि ममता नष्ट हो गई तो दुःखको भी नष्ट हुआ समझना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषवदात्तका अभिलेख

[ले०—जैनाचार्य श्री १०८ विजयेन्द्र सूरि जी महाराज इतिहास-तत्त्व-महोदधि]

——:०*०:——

[इस लेखके लेखक श्री० विजयेन्द्र सूरि इतिहासके एक बहुत बड़े विद्वान् साधु हैं। आपने इतिहास पर गुजरातीमें पांच पुस्तकें भी लिखी हैं-जिनकी भारतीय विद्वानोंके साथ-साथ पाश्चात्त्य विद्वानोंने भी बहुत प्रशंसा की है। आजकल आपने दिल्लीमें चातुर्मास किया हुआ है, इसी बीच आपने हिन्दीमें वैशाली, वीर-विहार-मीमांसा और प्राचीन-भारतवर्ष-समीक्षा नामसे तीन पुस्तकें लिखी हैं। वैशाली पुस्तकमें आपने वैशाली तथा उसके आस-पासके स्थानोंके सम्बन्धमें खोज की है। उसकी प्रशंसा पुरातत्त्व विभागके सभी विद्वानोंने की है। प्रस्तुत लेखमें आपने उषवदात्तके अभिलेखके अर्थ पर विचार किया है तथा गुजरातीकी एक इतिहासकी पुस्तक-'प्राचीन-भारतवर्ष' में इस अभिलेखके जो गलत अर्थ किये हैं उनका निराकरण किया है।

—सम्पादक]

प्राचीन भारतवर्ष भाग ३ पृष्ठ ३६७ पर नासिक गुफाके उपवदात्तका अभिलेख दिया है। यह अभिलेख मूलसे अनूदित नहीं, अपितु ज. बॉम्बे. रॉ. ए. सो. १६२७, पु. ३. भा. २ के अंग्रेजी भाषान्तर से अनूदित किया है। इसलिए इसमें स्वभावतः कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं, आशा है लेखक महोदय इस ओर ध्यान देंगे।

प्रा. भा. में पाठ	मूलपाठ
१ त्रणसो गायोनीं भेंट	त्रिगोशत सहस्रदेन
२ वाणारसी	बार्णासा
३ एक हजार ब्राह्मणने	ब्राह्मणशत साहस्री
४ मुसाफिर खानानी भेंट	चतुशालावसघ-प्रतिश्रयप्रदेन
५ टाप्ति (तापी)	तापी
६ वामतीर्थ	रामतीर्थ
७ पिंडितकानड	पींडीत कावड
८ सरक	चरक
६ पुष्कर	पोत्तर
१० ३००० गायनी भेंट	त्रीणि च गोसहस्राणि-दतानि ग्रामो च
११ संत	चातुदीसस भिखुसघस

इन त्रुटियोंके अतिरिक्त बहुतसे अंश छूट गये हैं। इस लिये मूल अभिलेख यहां उद्धृत कर रहे हैं-

पंक्ति १. "सीद्धम् [॥*] राज्ञः च्हरातस्य क्षत्रपस्य नहपानस्य जामात्रा दीनीकपुत्रेण उषवदातेन त्रिगोशतसहस्रदेन नद्या बार्णासायां सुवर्णदानतीर्थकरेण देवत [ा]भ्यः ब्राह्मणेभ्यश्च षोडश ग्रामदेन अनुवर्षं ब्राह्मणशतसाहस्री-भोजापयित्रा प्रभासे पुण्यतीर्थे ब्राह्मणेभ्यः अष्ट भार्याप्रदेन भरुकछे दशपुरे गोवर्धने शोर्पारगे च चतुशालावसघ-प्रतिश्रयप्रदेन आराम-तडाग-उदपान-करेण इबा-पारादा-दमण तापी-करबेणा- दाहनुका नावा पुण्यतरकरेण एतासां च नदीनां उभतो तीरं सभाप्रपाकरेण पींडीतकावडे गोवर्धने सुवर्णमुखे शोर्पारगे च रामतीर्थे चरक पर्षभ्यः ग्रामे नानंगोले द्वात्रिंशत नालीगेरमूलसहस्रप्रदेन गोवर्धने त्रिरश्मिषु पर्वतेषु धर्मात्मना इदं लेणं कारितं इमा च पोढियो [॥*] भटारकाअञ्जातिया च गतोऽस्थिं वर्षारतुं मालये [हि]* हि रुधं उतमभाद्रं मोचयितुं [।*] तं च मालया प्रनादेनेव अपयाता उतमभद्रकानं च क्षत्रियानं सर्वे परिग्रहा कृता [।*] ततोऽस्मिं गतो पोक्षरानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[।*] तत्र च मया अभिसेको कृतो त्रीणि च गोसहस्रानि दतानि ग्रामो च [॥*] दत च [।] नेन क्षेत्र [ ] ब्राह्मणस बाराहिपुत्रस अश्विभूतिस हथे कीणिता मुलेन काहापण-सहस्रेहि चतुहि ४००० यो सपितुसतक नगर सीमायं उतरापरा [यं] दीसायं [।*] एतो मम लेने वसतानं चातुदीसस भिखुसघस मुखाहारो भविसती [॥*]

इस शिलालेख को Select Inscriptions Bearing on Indian History and Civilization Vol. I में सम्पादक श्री दिनेशचन्द्र सरकारने कुछ व्याख्या सहित निम्न प्रकारसे सुसंस्कृत रूपमें दिया है—

"सिद्धम् ॥ राज्ञः क्षहरातस्य क्षत्रपस्य नहपानस्य जामात्रा दीनीकपुत्रेण ऋषभदत्तेन, त्रिगोशतसहस्रदेन, नद्यां पर्णाशायां सुवर्णदानतीर्थकरेण (= सुवर्णदानस्य सोपानकरणस्य च विधात्रा), देवताभ्यः ब्राह्मणेभ्यः च षोडशग्रामदेन, अनुवर्षं ब्राह्मणशतसाहस्री-भोजयित्रा, प्रभासे पुण्यतीर्थे ब्राह्मणेभ्यः अष्टभार्याप्रदेन, भृगुकच्छे (= भृगु–कच्छे?) दशपुरे गोवर्द्धने शूर्पारके च चतुः शालावसथ-प्रतिश्रयप्रदेन (=तीर्थनिषेविणां कृते चतुःशालागृहाणां विश्रामागाराणां च विधात्रा), आरामतडागोदपानकरेण, इबा-पारादा-दमन-तापी-करवेण्वा-दाहनुकासु नावा (=नौ-योगेन) पुण्यतरकरेण (=पवित्रतरणकर्मकारयित्रा = अशुक्लेन नदीतरण विधात्रा। यद्वा, दाहनुकानावाख्यनदीषु पवित्रतरण कर्मकारयित्रा), एतासां च नदीनाम् उभयतः तीरं सभा-प्रपा-करेण (=विश्रामागारान् जलसभाणि च कृतवता), पिण्डितकावटे गोवर्द्धने सुवर्णमुखे शूर्पारके च रामतीर्थे चरकपर्षद्भ्यः (= चरकाख्यसम्प्रदायानुसारिभ्यः। यद्वा परिव्राजक भिक्षुसङ्घेभ्यः) ग्रामे नानंगोले द्वात्रिंशन्नारिकेलमूलसहस्रप्रदेन (=शिशुनारिकेलतरूणां मूलभूयिष्ठानां द्वात्रिंशत् सहस्राणि दत्तवता। यद्वा द्वात्रिंशच्छत-नारिकेलतरूणां मूल्यं कार्षापणसहस्रं दत्तवता; यद्वा, द्वित्रिशत०), गोवर्द्धने त्रिरश्मिषु पर्वतेषु (=त्रिरश्मिपर्वते) धर्मात्मना (=ऋषभदत्तेन) इदं लयनं कारितम्, इमे च प्रहयः (=निपानानि)। भट्टारकाज्ञप्त्या (=नहपानाज्ञया) च गत आसं वर्षर्तौ मालवैः रुद्धम् औत्तमद्राद्रं (=उत्तमभद्रकाणाम् अधिपतिं) मोचयितुम्। ते च मालवाः प्रणादेन (=ऋषभदत्तसैन्यहुङ्कारेण) इव अपयाताः(=पलायिताः), उत्तमभद्रकानां च क्षत्रियाणां सर्वे[मालवाः] परिग्रहाः (=बन्दिनः) कृताः [ऋषभदत्तेन]। ततः आसं गतः पुष्करान् (=पुष्करतीर्थम्)। तत्र च मया अभिषेकः (=स्नानं) कृतः त्रीणि च गोसहस्राणि दत्तानि, ग्रामः च [दत्तः]। दत्तं च अनेन (=ऋषभदत्तेन) क्षेत्रं ब्राह्मणस्य वाराहीपुत्रस्य अश्विभूतेः हस्तेन क्रीत्वा मूल्येन कार्षापण-सहस्रैः चतुर्भिः ४०००, यत् स्वपितृ स्वत्वकम्(=अश्विभूतिपितृ-स्वत्वकं [क्षेत्रं]) नगरसीम्निउत्तरापरायां (= पश्चिमोत्तरस्यां) दिशायां [वर्तते]। अतः (=एतस्मात्) ममलयने वसतः चातुर्दिशस्य भिक्षुसङ्घस्य मुख्याहारः (=०हाराय=मुख्यान्नाय [एषग्रामः]) भविष्यति।" वही पुस्तक पृ० १६३

इसका हिन्दी भाषान्तर 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' में पृष्ठ ७५६ पर इस प्रकार दिया है—

"सिद्धि हो। राजा क्षहरात क्षत्रप नहपानके जामाता, दीनीकके बेटे, तीन लाख गौओंका दान करने वाले, बार्णासा (नदी) सुवर्ण दान करने वाले और तीर्थ (घाट) बनवाने वाले, देवताओं और ब्राह्मणोंको १६ ग्राम देने वाले, समूचे बरस लाख ब्राह्मणोंको खिलाने वाले, पुण्य तीर्थ प्रभासमें ब्राह्मणोंको आठ भार्यायें देने वाले, भरुकछ दशपुर गोवर्धन और शोर्पारगमें चतुःशाल (चौकोर या चार कमरों वाली) वसध (सरायें) और प्रतिश्रय देने वाले' इबा पारादा दमण तापी करवेण दाहानुका (नदियों)पर नावोंसे पुण्यतर (मुफ्त उतारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रबन्ध) करने वाले, और इन नदियोंके दोनों तीर सभा और प्रपा (प्याऊ) बनवाने वाले पींडीत कावड गोवर्धन सुवर्णमुख (तथा) शोर्पारग के रामतीर्थ पर (की) चरकोंकी परिषदोंको नानंगोल ग्राममें बत्तीस हजार नारियलकी पौद देने वाले धर्मात्मा उषवदात्तने गोवर्धनमें त्रिरश्मि पहाड़ पर यह लेण बनवाई और ये पोढियां (पानी जमा रखनेके निसार)।

लेखके इस पहले अंशमें उषवदात्त का प्रथम पुरुषमें उल्लेख है। पीछे टांके हुए लेखमें वह उत्तमपुरुष में कहता है 'और भट्टारक (स्वामी) की आज्ञा पाकर वर्षाऋतु में मालवों द्वारा घेरे हुए उत्तमभाद्र को छुड़ाने गया हूं वे मालय प्रनाद (मेरे पहुंचने के हल्ले) से ही भाग गये, और उत्तमभद्र क्षत्रियों के परिग्रह (कैदी) किये गये; तब मैं पोक्षरोंको गया हूं और वहां मैंने अभिषेक (स्नान) किया, तीन हजार गौवें तथा गांव दिया।

लेखके अन्तमें फिर यह बढ़ाया है—"और इस ने वाराहिपुत्र अश्विभूति ब्राह्मणके हाथमें चार हजार काहापणोंके मूल्यसे खरीदा खेत दिया कि इससे मेरे लेणमें रहने वाले चातुर्दिश भिक्षुसंघ को भोजन मिलता रहेगा।

इस सम्पूर्ण अभिलेखको संस्कृत और हिन्दी अनुवाद सहित उद्धृत करनेका अभिप्राय यह है कि उसके पूर्वापरके समन्वय और भलीभांति अर्थज्ञान हो जाय। श्री डाक्टर साहब पूर्ण अभिलेख के ज्ञान न होने से कई स्थानों पर भ्रांति के शिकार हो गये हैं। इसलिये प्रा.भा. भाग३ पृष्ठ ३६७ टीका ६३ में आप लिखते हैं—"ब्राह्मण यहां मनुष्य जाति के चार वर्गोंमें से एक वर्ग नहीं है, अपितु जो ब्रह्मचर्य पाले वह बम्भण (मूल शब्द बंभण होगा, परन्तु लिपि पढ़ने वालोंने उसे ब्राह्मण रूपमें लिख दिया)।"

ऊपरके शिलालेखसे यह अत्यधिक स्पष्ट है कि मूल शब्द बंभण नहीं, अपितु ब्राह्मण है। हां, प्राकृत में बंभण शब्द है और संस्कृत में वही ब्राह्मण है और दोनों शब्दोंके भाव और अर्थमें अन्तर नहीं, फिर भी डाक्टर साहब दोनों शब्दोंको भिन्न २ बता कर क्या सिद्ध करना चाहते हैं, यह पता नहीं। ब्रह्मचर्य पाळनारा = अविवाहित जिंदगी गाळनारा जो अर्थ लिखा गया है उसकी ऊपर संगति नहीं बैठती। इस विचारसे ऊपर ब्राह्मणका अर्थ अविवाहित जीवन बिताने वाला साधु है, पर यह ठीक नहीं। क्योंकि उसी अभिलेखमें आगे यह लिखा है कि उषवदात्त ब्राह्मणोंके विवाह का व्यय उठाता था। वस्तुतः यहां पर अभिप्राय वर्णव्यवस्थाके अनुकूल उसके एक वर्ग ब्राह्मणसे ही है, न कि अविवाहित व्यक्तिका। यह प्रथा तो प्राचीन कालसे चली आ रही है कि ब्राह्मणोंका विवाह करा दिया जाय। पद्म पुराण के २४ वें अध्यायमें एक निम्न श्लोक है—

सालङ्कारां द्विजश्रेष्ठ कन्यां यच्छति यो नरः।
स गच्छेद्ब्रह्म सदनं पुनर्ज्जन्म न विद्यते ॥२२

अर्थात् जो व्यक्ति अलङ्कारादिसे युक्त कन्या ब्राह्मणको समर्पित करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

अभिषेकके सम्बन्धमें भी इसी प्रकार शंका उठाई गयी है कि अभिषेक का क्या अभिप्राय है? एक स्थान पर आपने लिखा है इस अभिषेकका अर्थ डा० फ्लीट इस प्रकार कहते हैं कि And there I bathed मैंने वहां एक समय स्नान किया था।

प्रा. भा. भाग ३.पृ. ३६७ टीका ६५.

दूसरे स्थान पर डा० हैप्सनकी शंका को उद्धृत करते हुए आप लिखते हैं—"यह निश्चित नहीं कहा जा सकता कि ऋषभदत्त का इस अभिषेक से कुछ विशेष अभिप्राय था अथवा सामान्य यात्राकी विधिका केवल एक अंश ही था।"

प्रा. भा. भाग ५. पृष्ठ ११८

इन दोनोंका अभिप्राय यह है कि डा० फ्लीट ने तो अभिषेकका अर्थ स्नान किया है परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० रैप्सनकी शंकाके अनुसार यह नहीं ज्ञात होता कि अभिषेकका कुछ विशेष अर्थ है? वा यात्राकी विधिका एक सामान्य अंश है। दूसरी शंका आपने यह की है कि अभिषेक करवाने अथवा करनेमें आज्ञाकी क्या आवश्यकता थी? (देखो प्रा. भा. भाग ५ पृष्ठ ११८)

अभिषेकका सामान्य अर्थ तो ऊपर शिलालेखोंके संस्कृत और हिन्दी अनुवादोंमें दे ही दिया है। कोशादिमें भी वही अर्थ है; यह पाठकों की जानकारीके लिए नीचे दिए देते हैं।

१. शब्दरत्नमहोदधि पृष्ठ १२४

अभिषेक-शांति के लिए विधिपूर्वक सिञ्चन, स्नान, यज्ञाकिकृत्योंके लिए स्नान, आदि.......

२. पाइअसद्दमहण्णवो पृष्ट ८३

अभिषेक (अभिसेअ)–स्नान, स्नान महोत्सव साथ ही अभिषेकके साथ पोक्खरोंका सम्बन्ध है, इसलिए स्नानके अतिरिक्त दूसरा अर्थ सम्भव नहीं प्रतीत होता। यात्राओंमें जब मनुष्य तीर्थों पर जाता है तो स्नान कर ही लेता है। अपने भट्टारक (स्वामी) की आज्ञासे उत्तमभाद्र को छुड़ाने गया है, इसी यात्रा प्रसंगमें वह पोक्खरों पर पहुंच गया है, तो स्नान भी कर लिया है। डाक्टर साहबके सन्तोषके लिए मान भी लिया जाय कि स्नानके लिए उसने अपने स्वामीसे आज्ञा ली थी तो उसमें आपत्तिकी क्या बात है? वृद्धजनों और गुरुजनोंसे पूछ कर तो सब काम किए ही जाते हैं।

पुष्करके सम्बन्धमें डाक्टर साहबने एक और शंका उठाई है। मूलपाठ पोक्खर है वह बहुवचनान्त है, अंग्रेजी अनुवादमें उसे Lakes लिखा गया है, उस अंग्रेजी अनुवाद का गुजराती में श्री डाक्टर साहबने अनुवाद करते हुए एकवचनान्त पुष्कर अर्थ दिया है। इसपर टिप्पणी करते हुए प्रा. भा. भाग ५ पृष्ठ ११८ पर आप लिखते हैं—"और अजमेरके निकट का पुष्कर तालाब मान लिया गया है तो वह तो एक ही संख्यामें है जब कि लेखमें अक्षर तो बहुवचनान्त संख्यामें तालाब हैं ऐसा प्रतीत होता है" अर्थात् अजमेरके पास पुष्कर तालाब है वह तो एक ही है जब कि लेखमें उसे बहु-संख्यामें बताया गया है।

वस्तुतः पुष्कर एक नहीं अपितु तीन हैं। देखो भारत-भ्रमण प्रथमखण्ड पृष्ठ २११ -"पुष्कर वस्तीके निकट सवाकोसके घेरेमें कमल आदि नाना जलउद्भिज्जसे पूर्ण ज्येष्ठ पुष्कर है।.... ज्येष्ठ पुष्करसे करीब २ मील दूर मध्यम पुष्कर और कनिष्ठ पुष्कर है।"

पद्म पुराणके १८वें अध्यायमें लिखा है-"पुष्कर तीर्थमें पर्वतके तीन शृंग हैं, जिनके जल बहनेसे तीन कुण्ड हुए हैं, जो ज्येष्ठपुष्कर, मध्यमपुष्कर और कनिष्ठपुष्कर नामोंसे प्रसिद्ध हैं।"

नरसिंहपुराणके अध्याय ६५श्लोक १३में धर्मक्षेत्रों में पुष्करकी गणना की है और ६६ वें अध्यायमें—"पुष्कराणि तीर्थानि" तीनों पुष्करोंका उल्लेख किया है।

मानसोल्लासके तीर्थाध्यायमें लिखा है—

'पुष्कराणि च पुण्यानि शुक्लतीर्थं सुखप्रदम्।
प्रभास प्रथितं तीर्थं केदारं क्लेशनाशनम् ॥ १३० ॥

विंशति १, अध्याय १८, श्लोक ५.

उपर्युक्त उद्धरणोंमें पुष्करको बहुवचनान्त लिखा गया है। इससे प्रकट है कि पर्याप्त कालसे पुष्कर एक नहीं अपितु तीन माने जा रहे हैं।

मूल अभिलेखमें चरकोंकी परिषदोंका उल्लेख है। श्री डाक्टर साहबने संस्कृत शब्दों को रोमन अक्षरोंमें पढ़नेका अनभ्यास होने के कारण उसे 'सरक' पढ़ा है। इसलिए नानंगोल (बम्बई प्रान्त का आधुनिक नारंगोल जो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि सब्जान रेलवे स्टेशनके निकट है) के चरको उन्हें आपने सरक समझ कर उड़ीसा के सराकों के साथ सम्बद्ध कर दिया है। जिस सराक जाति का आपने प्रा. भा. भाग ३ पृष्ठ ३६७ टिप्पणी ६४ में वर्णन किया है उनका वस्तुतः इन चरकोंके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि उषवदात्तने किसी जातिको कुछ दान किया हो ऐसा समझ में नहीं आता, उसने दान केवल साधुओं और ब्राह्मणोंको ही दिया है। ये चरक कौन थे ?

(१) अभिधान-राजेन्द्र-कोष पृष्ठ ११२५.

"चरक-परिव्राजक विशेषे संघाटिवाहकाः सन्तो भिक्षां चरन्ति ये भुञ्जानाश्चरन्ति। ये धावितभैक्षोपजीविनः। अथवा कच्छोटकादयः।

(1) Select Inscriptions bearing on Indian History and Ciliration Vol. 1., Page 163.—

"Chrak primarily denotes 'a Wanderinya student' in Upanihsads and Brahmanas. More especially it denotes the members of a school of the Black Yajurveda, whose practices are referred to with disapproval. The चरकाचार्य is enumerated among the sacrificial victim of the Purushamedha sacrifice (Vedic Index, I, P. 256)."

ऊपर के इन उद्देश्योंसे स्पष्ट है कि चरक परिव्राजक अथवा भिक्षोपजीवी साधु थे। सराक जाति के लोग गृहस्थ हैं। सराक श्रावक का अपभ्रंश प्रतीत होता है, इसलिए चरकोंके साथ इनका सम्बन्ध सम्भव नहीं प्रतीत होता।

रामतीर्थके स्थान पर डाक्टर साहब ने वामतीर्थ का उल्लेख किया है। मूल में तो पाठ रामतीर्थ है ही, महाभारत में भी उसके तीर्थ होने का उल्लेख मिलता है।

"ततः शूर्पारकं गच्छेज्जामदग्न्यनिषेवितम्।
रामतीर्थे नरः स्नात्वा विन्द्यात् बहुसुवर्णकम् ॥४२

महाभारत पर्व ३, अध्याय ८५

एवं डाक्टर साहबने चातुर्दिश भिक्षुसंघके स्थान पर सन्त शब्द उल्लेख किया है। सम्भवतः आपका ऐसा करनेका प्रयोजन यह प्रतीत होता है कि इस गणनामें जैनसाधुओंका भी समावेश हो जाय। परन्तु इस प्रयत्नको करते हुए आपको ध्यान रखना चाहिये कि जैनसाधु अपने लिये तैयार किये गये आहारको ग्रहण नहीं करते। इसी प्रकार अंग्रेजी अनुवादमें जो All monks सर्वसाधुका प्रयोग किया है, वह भी गलत है।

ऊपर जिन शब्दोंकी विशेष रूपसे हमने चर्चा करके डाक्टरसाहबके मतका प्रतिवाद किया है उनमें वस्तुतः उनका एक उद्देश छिपा हुआ है; वह है कि उषवदात्तको जैन-धर्मी सिद्धकरना। परन्तु डाक्टर साहब ने अपने आधार बहुत ही कमजोर चुने हैं, आशा है इस ओर श्री डाक्टरसाहब विशेष ध्यान देंगे।

स्वर्णसूत्र

बिछौनेसे उठते समय और लेटते समय अचूक मनन करिएगा —

१—नित्य प्रभुभक्ति एवं त्यागवृत्तिको अपनाओ।

२—संसारिक वातावरणसे बचते रहना, मानो सुख-शांति और मोक्ष की ओरके निकट अपना पैर बढ़ाना है। और दिनरात चिन्तामें ही संकल्प-विकल्प करते हुए घुलते रहना मानो घोर नरक के सिपाही (यमराज) को अपनी गिरफ्तारी का निमन्त्रण देना है।

श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरि-शिष्य-मुनि न्याय विजय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यासजीके बैंगन

[ले०—श्री पं० गोविन्द शास्त्री दुगवेकर]

—:oo:—

[प्रस्तुत लेखके लेखक श्रीदुगवेकर जी शास्त्री प्राचीन सिद्धहस्त लेखकोंमेंसे एक हैं। आपने इस विनोद-पूर्ण लेखमें आधुनिक कथावाचकों और उपदेशकोंका सच्चा एवं मार्मिक चित्र खींचा है। ऐसे कथावाचक औरउपदेशक जो केवल कहते हैं स्वयं करते नहीं, उनके उपदेशका कुछ भी प्रभाव जनता पर नहीं पड़ता। अतः उन्हे यह लेखपढ़कर आदर्श चरित्र बनना चाहिए। "श्रीस्वाध्याय" में शास्त्री जीके लेख निरन्तर प्रकाशित होते रहेंगे। —सम्पादक]

संस्कृत भाषामें एक कहावत है, 'परोपदेशे पाण्डित्यम्'। गोस्वामी तुलसीदासजीने इसीका इस प्रकार बड़ा सुन्दर अनुवाद किया है,—

पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
जे आचरहिं ते नर न घनेरे॥

सन्त तुकाराम भी इसी आशयको लेकर लिखते हैं, "जो जैसा लोगोंको उपदेश देता है, वैसा ही आचरण भी करता है, उसके चरणोंकी मैं पूजा करूंगा, उसकी झाड़ूबरदारी करूंगा, दासता करूंगा और क्रीत-किंकर बन कर उसके आगे हाथ जोड़ कर सदा खड़ा रहूँगा,वही वास्तविक देवता है और श्रद्धा भाजन है" परन्तु ऐसे लोग बहुत कम देखने में आते हैं।

देशभक्ति, समाजसेवा, धर्मप्रचार जैसी पवित्र बातोंका आजकल एक धंधा हो गया है। जोशीली भाषामें लोगोंको उपदेश देकर भड़काना और अपना काम बना लेना ही उनका उद्देश्य होता है। कायदे आजम मि०जिन्नासाहब इस्लामके बड़े हिमायती हैं। इसलाम और मुसलमानोंका हित करनेके लिये सदा कटिबद्ध रहतेहैं। आजादीके भी पक्षपाती हैं; परन्तु न कभी नमाज़पढ़ते, न मसजिदमें जाकर सिर झुकाते और न कभी इसका विचार करते हैं कि, हमारे किन दूर दर्शिता पूर्ण आचरणोंसे देश आजाद हो सकता है।अपने भाइयोंको उत्तेजित कर झगड़े-फसाद खड़े कर अपना मतलब साध लेना ही उनका व्यवसाय है। इस प्रकारके जीवोंकी हिन्दुओंमें भी कमी नहीं है परन्तु हिन्दू झब्बू प्रायः निरुपद्रवी रहा करते हैं।

घरकी धर्मशिक्षाके कारण मुझे भी सत्संगकी अभिरुचि हो गयी थी। कथा-कीर्तन सुननेमें बड़ा आनन्द आता था। रामायणमहाभारत तथा अन्य पुराण पढ़ा भी करता था। हमारे गांवमें पण्डित रामसुमेरव्यास जीकी बड़ी प्रसिद्धि और मान था साधारण सत्यनारायणकी कथा बाँचनेमें भी अच्छी विदाई मिलती थी। मैं भी उनका श्रोता बन गया और थोड़े ही दिनमें प्रिय शिष्य हो गया,उनके साथ बाहर भी आने जाने लगा। प्रवासमें भी मैं अपना नित्यकर्म किसी प्रकार कर लिया करता था; परन्तु व्यासजीको कहीं कभी सन्ध्यावन्दन करते नहीं देखा। हां, जहां वे निमन्त्रित होते थे, वहां अवश्य ही बड़ा आडम्बर बना लेते थे। वे अपनेको पहुंचा हुआ सिद्ध समझते थे। एक दिन मैंने पूछा, 'व्यासजी? आप प्रवासमें अपना आह्निक क्यों नहीं करते? उत्तर मिला.

'निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतां को विधिः को निषेधः'

एक दिन सन्ध्या समय हम दोनों काशीके मणिकर्णिका घाटपर सन्ध्यावन्दनसे निवृत्त हो, टहलकर वायु सेवन कररहे थे।देखाकि एक मुर्दा लाया गयाहै और उसको चमेलीके सुन्दर हारोंसे सजाया गया है। एक गजरा मैंने उठाकर व्यासजीके गलेमें पहना दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कहाकि,मेरा इस गजरेपर जी ललचा गया था। मुर्दे पर चढ़ा हुआ गजरा पहना देनेसे व्यासज। मुझे बिगड़कर मारने दौड़े, तो मैंने हाथ जोड़कर कहा,–"महाप्रभु! आप तो त्रिगुणातीत हैं, आपको विधि निषेध ही क्या? बेचारे झेंप गये।

व्यासजीको कुत्ते-बिल्ली का बड़ा शौक था। घर कई कुत्ते और बिल्लियां पाल रक्खीं थीं, कभी-कभी तो कुत्तेके पिल्ले और बिल्लीके बच्चे उनकी थालीमें हीखाने लगते थे। मैंने इस शास्त्रनिषिद्ध बात पर व्यासजीका ध्यान आकृष्ट किया, तो आप बोले,–

विद्याविनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥

एक दिन उनके धोबीकी छोकरी कपड़े धोकर लायी और व्यासजीकी खटियापर बैठगयी। बैठ क्या गयी,लेट गयी थी,थकी थी;परन्तु यह देखकर व्यास जी आपेसे बाहर हो गये। लगे उसे गालियां देने। मैंने नम्रतासे कहा, 'गुरुदेव! आप समदर्शी हैं, विद्वान् ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता, चाण्डाल, सभी आपके लिये एकसे हैं; फिर इस बेचारी रजककुमारीपर क्यों आग बरसा रहे हैं? व्यासजी चुप हो गये!

व्यासजी स्वयं पाकी थे। किसीके हाथका भोजन नहीं करते थे। हमारा प्रवास लम्बा था। एक जंकशन स्टेशन पर उतर गये थे। मध्याह्न हो जानेसे पेटमें भूखकी ज्वालाएँ भभक उठी थीं। रेल आगयी। मैंने खोमचे वालेसे पूड़ी मिठाई खरीद ली। हम दोनों रेल पर सवार हुए। मैंने रुमाल बिछाकर अपनेको परोस लिया और व्यासजी से कहा, आप भी कुछ जलपान कर लीजिये,। भूख उन्हें भी लगी थी। नहीं कैसे कहते? बोले,—'कुछ खाऊंगा अवश्य ही परन्तु रेलमें नहीं; मैंने कहा, 'जहां आपकी इच्छा हो, वहां बैठकर खा लीजिये'। व्यासजीने पूड़ी मिठाई मुझसे लेली और प्लेटफार्म पर बैठकर अहार किया, और पानीपाण्डेसे लेकर पानी पिया। ज्ञात नहीं, वह किस जातिका था। मैंने कहा, 'महाराज? वहां लोग थूकते हैं, कुत्ते विष्टा करते है, इससे तो अच्छा होता कि, आप बेंच पर रेलमें बैठ कर ही खाते अनजाने आदमीका आपने पानी भी पीलिया। व्यासजीने गम्भीरता से उत्तरदिया, —

बेटा, 'पथि शूद्रवदाचरेत्'।

चातुर्मास्यकी कथा हो रही थी। भक्ष्याभक्ष्यका विवरण चल रहा था। चौमासेमें बैंगन खानेका पुराणोंमें बड़ा निषेध किया गया है। कथासे लौटते समय तरकारी–बाजारमें व्यासजीको कलौंजी लायक ताजे बैंगन देख पड़े। झटसे उन्होंने एकसेर खरीद लिये। मैंने कहा, –प्रभो। अभी तो आपने बैंगनके निषेधका विवरण सुनाया था और बैंगन खरीद लिये जा रहे हैं, यह क्या बात है। व्यासजीने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे साथ लेकर पासके एक चबूतरे पर बैठ गये। बोले, 'भैया। मैं कलकत्ते में तुमसे पूछूँ कि काशी किस दिशामें है? तो तुम क्या उत्तर दोगे। मैंने कहा 'पश्चिममें' वे बोले, और यही बात मैं प्रयागमें पूछूँ तो क्या उत्तर दोगे? मैंने कहा,–'पूर्व में' 'बस, यही बात उपदेश की है। विवरणके समय पोथीमें जो बैंगन लिखे थे, वे ये नहीं हैं। वे तो पोथीमें ही बांध दिये गये हैं और इनकी घर चलकर कलौंजी बनेगी। देश, काल, पात्रका सर्वत्र विचार करना पड़ता है। व्यासजीका व्याख्यान सुनकर मुझे हँसी आगयी। उस दिनसे मैंने उनका साथ छोड़ दिया और उन्होंने भी डिबियामेंसे चुटकी भर सूंघनी निकालकर नकुओंमें भर कर शालसे नाक पोंछते घरका रास्ता लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवकसे

[कवयिता—श्री आचार्य नन्दकिशोरजी शास्त्री]

चाहे तो आग लगा देवे।
तू काट छांट जग वन भीतर
चाहे तो बाग लगा देवे
चाहे तो आग लगा देवे ॥

तू उथल पुथलकी प्रतिमूर्ति
क्रान्ति षड्यन्त्रोंकी स्फूर्ति।
तूफानों औ युग-निर्माणों-
की अचल अटल-सी सन्मूर्ति ॥
तू बड़े बड़े नीतिज्ञोंसे-
भिड़ नूतन राष्ट्र जमा देवे। चाहे तो०

तू ने वे सैनिक साथ लिये
जिन्होंने शस्त्र न हाथ लिये।
केवल जननी पद रज कों ही
गौरव से जो निज माथ लिये ॥
कूदें समराङ्गणमें चाहें
तो अरिको धूल चटा देवें। चाहे तो०

तू परिवर्तनका महादेव
डरते तुमसे देवाधिदेव।
तू नव सृष्टि का चतुरानन
जग शरण तुम्हारी पूर्ण देव ॥
तू निष्ठुर शासनका घातक
जो अत्याचार मिटा देवे। चाहे तो०

तू नैतिक उलझनका सुझाव
तुझसे जगका कुछ नहिं दुराव।
तू युग निर्माणोंकी कुञ्जी
तुझमें सब कुछ है नहिं अभाव ॥
तू भूको नभ तक पहुंचा दे
चाहे महचक्र घुमा देवे। चाहे तो०

तू सहयोगोंका सूत्रधार
दैशिक नैयाका कर्ण धार।
तू प्रतिद्वन्द्वीका सिर मरोड़
अपनेपनका करता प्रचार ॥
तू आजादी का दीवाना
पल में स्वातन्त्र्य दिला देवे। चाहे तो०

तू ही शक्तिका महापुञ्ज
तू जग-जीवनका शीत-कुञ्ज।
तू ही परताप, पुजारी है
तू ही दह उठता है स्फुलिङ्ग ॥
तू चिर अरमानोंकी आगी
जो अग जग भस्म बना देवे। चाहे तो०

तू ही युगका है संस्थापक
तू ही युगका है संचालक।
तू ही जगमें आदर्श रूप
तू ही राष्ट्रोंका प्रतिपालक।
तू ही सन्तान 'शिवाज़ी की
जो कई 'अवरङ्ग' मिटा देवे। चाहे तो०

तू आंधी है तूफान मयी
तू फौलादी किरपाण नयी।
तू आजादी का महा मंत्र
तू है गीता विज्ञानमयी ॥
तू है वह अनथक सेनानी
चाहे नव सैन्य बना देवे। चाहे तो०

तू हिमगिरिसे भी टकरा जा
आपत्ति में नहिं चकरा जा।
तू महावीर रणबांका है
निस्संशय रण में अकड़ा जा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू हनुमान् , सा जुल्मीकी
सोनेकी लङ्क जला देवे। चाहे तो०

तू वैरागी का लोह दण्ड
करता जो अरिको खण्ड खण्ड।
रह दूर जगज्जञ्जालोंसे
जो करता रहता तप अखण्ड ॥
तू केवल माला भक्त नहीं
लोहूका फाग खिला देवे। चाहे तो०

तू भूला ध्रुव प्रह्लादोंको
दुखिया जनकी फरियादोंको।
तू भक्ति, ज्ञान, वैराग्य स्रोत
तू भूला क्यों बरबादोंको ॥
तू कर्मयोगका वह प्रवाह
पत्थरसे ईश दिखा देवे। चाहे तो०

तू वीर युवक तू भक्त युवक
तू दक्ष युवक तू शक्त युवक।
तू आजादीका प्रेय युवक
तू दलितोंका आश्रेय युवक ॥
तू हमदर्दी का महासूत्र
जग की उलझन सुलझा देवे। चाहे तो०

तू सचमुच है सबकुछ जवान
तेरी जुबान तीरो कमान।
तू 'अर्जुन' सा है राष्ट्रवीर
ओ युगरक्षक! औ युगविधान ॥
तू पाकिस्तानी नीतिका
चाहे तो नाम मिटा देवे। चाहे तो०

तू सच्चा जननीका सपूत
तू उज्ज्वलतम है महा पूत।
तू 'भीष्म' सरीखा प्रण पालक
तू शान्तिका है अग्रदूत ॥
माँका भू-लुण्ठित किरीट
चाहे सिरपर पहना देवे
चाहे तो आग लगा देवे ॥

महारसायन शक्ति वर्द्धक

सूर्य तापी

शुद्ध-सत शिलाजीत फौलादी-

स्वर्ग भूमि हिमालयके पर्वतोंकी, जिनमें बहुमूल्य रत्न और दिव्यौषधी हैं, शिलाजीतका सत है। यह शास्त्रोक्त 'शिलाजीत' अनुपान भेदसे सम्पूर्ण रोगों पर जादूकी तरह काम करता है। प्रमेह, प्रदर स्वप्नदोष, निर्बलता, धातुविकार मूत्ररोग, खूनकी कमी, स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध, सबका माता की तरह रक्षक है। लौहभस्म मिश्रित १)रु०तो० ५तो० ४।।) रु० १० तो० ६)रु० २० तो०१६)रु० ४०तो० २८)रु० १०० तो० ४० रु०

खटमल गायब—हिन्दके हर घरमें खटमल निद्रा भंग करके नानाप्रकारके रोगोंके सिकार बनाते देख १४ सालके कठिन परिश्रमसे खटमलोंको हिन्दसे बाहर कर देने वाली महौषधीकी ३ दिन धुनी देनेसे उस घरमें कभी खटमल नहीं आता मू० १ तो० २।।) १० तो० २०) रु० एक बार आजमाकर देखिये। चौथाई दाम पेसगी आने पर ही माल भेजा जाता है। विना पेशगी आये किसीको नहीं भेजा जाता।

पता—डाक्टर—बिशाल-वैद्यशास्त्री, नारायण कोटि-गढ़वाल।(यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक तथा ज्यौतिषागम भूगोलका समन्वय

[ले०—ज्योतिर्विद्यामार्तण्ड श्री पं० मदनलालजी शर्मा मिश्र]

अशेषभुवनाधारामम्बामेकामुपास्महे ।
पश्यन्त्यादिस्वरूपेण जगदुद्भासते यतः ॥

वर्तमान समयमें जो धार्मिक विज्ञान उपलब्ध है वह समस्त श्रीव्यास भगवान्‌की कृपाका फल है। धार्मिक विज्ञान ही नहीं, अपितु भौतिक विज्ञान भी जिसको वर्त्तमान समयके वैज्ञानिक अपनाही आविष्कार मानते हैं, यदि यथार्थमें देखा जाय तो समस्त आविष्कारोंका बीज सूक्ष्मरूपसे श्रीव्यासदेवके संकलनमें विद्यमान है। इसी कारण भारतीय धार्मिक जनताकी यह धारणा है कि वर्त्तमान समयके वैदेशिक वैज्ञानिक भारतीय विज्ञानकी पहली सीढ़ी पर भी नहीं पहुंचे हैं, अस्तु।

जब हम यह कहते हैं कि "व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वं" तो विचार, असहिष्णु तुरन्त कह उठते हैं कि तुम्हारे ही ज्योतिषागमसे व्यासका कथन विपरीत है। भूमानादि और ग्रहसंस्थानादि विषय जो प्रत्यक्ष उपलब्ध हैं वह व्यासके संग्रहमें ऊटपटांग लिखे हैं। अतः हम भूमानादिके विषयमें ही कुछ लिखकर पाठकोंके समक्ष अपने विचार प्रकट करेंगे।

श्रीमद्भागवतमें जो भूमानादि वर्णित हैं उनका और अन्य पुराणादिमें जो भूमानादि कहे हैं उनका ज्योतिषागमसे जो विरोध दीखता है उसका सामञ्जस्य करनेका उपक्रम करते हैं—शुक भगवान्‌ने श्रीमद्भागवतको वेदका पक्वफल कह कर यह सिद्ध किया है कि श्रीमद्भागवतमें जो कुछ कहा गया है वह वेदका निष्कर्ष है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है और ज्योतिषागम वेदाङ्ग है, तब अङ्ग और अङ्गीका परस्पर विरोध नहीं हो सकता, इसीलिये विजयध्वजाचार्य ने कहा है कि-

यथा भागवते तूक्तं भौवनं कोषलक्षणम् ।
तथा विरोधतो योज्यं सर्वग्रन्थान्तरस्थितम् ॥

इसी नीत्यनुसार इस लेखमें भूगोल विषयक विवेचन किया जायगा। प्रथम भूगोलके आकार पर विचार करेंगे। ऐसा कहते हैं कि श्रीमद्भागवतमें भूमिका आकार समतल कहा गया है, किन्तु विचार करनेसे निश्चय होता है कि श्री शुकदेवने पृथ्वीको गोल ही लिखा है। यथा—

यस्येदं क्षितिमण्डलं भगवतोऽनन्तमूर्त्तेः सहस्रशिरस एकस्मिन्नेव शीर्षणि ध्रियमाणं सिद्धार्थ इव लक्ष्यते
(भाग. स्कं.५अ. २५)

इस कथनमें "सरसों" की भांति कहकर भूमिका आकार गोल ही सूचित किया है। और भी देखिये-

प्रेक्षयित्वा भुवो गोलम्
(भाग स्कं. ३अ. २३श्लो.४३)

'पृथ्वीके गोलेको देखकर' यहां भी गोल ही कहा है—

सा तत्र ददृशे विश्वं जगत्स्थास्नु च खं दिशः ।
साद्रिद्वीपाब्धि भूगोलं (भाग स्कं० १० अ० ८)

इस स्थान पर भी भूगोल शब्दका ही प्रयोग किया है।

मूर्द्धन्यार्पितमणुवत् सहस्रमूर्ध्नो भूगोलम्
(भाग—स्कं० ५ अ० २५)

जम्बूद्वीपस्य च राजन्नुपद्वीपानष्टौ हैक उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिशन्ति । सगरात्मजैरश्वान्वेषण इमां महीं परितो निखनद्भिरुपकल्पितान् ॥

(भाग—स्कं० ५ अ० १६)

राजाके पूछने पर शुकदेवजीने कहा कि राजन्! कोई मुनि कहते हैं कि यज्ञके घोड़ेको ढूंढ़ते समय सगरके पुत्रोंने पृथ्वीको चारों ओरसे खोदकर आठ द्वीप बनाये हैं। इस स्थान पर भी शुकदेवजी ने "समन्तात्" कहकर पृथ्वीके आकारको गोल ही सूचित किया है, क्योंकि गोलाकार वस्तुका ही चारों ओरसे खोदना बन सकता है। समतलका नीचेका भाग नहीं खुद सकता।

शुकदेवजीने यह भी कहा है कि ग्रह भूगोलके चारों ओर वृत्ताकारमें घूमते हैं। गोल वस्तुके चारों ओर घूमनेका मार्ग ही गोल होता है। इससे भी भूमिको गोल ही कहा है।

भूगोलके किसी केन्द्रसे देखने पर ग्रह तुल्यान्तर से दीख पड़ते हैं, समतल से तुल्यान्तर से नहीं दिखलाई देते।

उपरोक्त इन अवतरणोंसे स्पष्ट है कि श्रीमद्भागवतमें पृथ्वीका आकार ज्योतिषागमके समान गोल ही कथन किया है।

पृथ्वीका परिमाण

अब पृथ्वीके परिमाणके विषयमें विवेचन करेंगे। पुराणागमोंमें पृथ्वी का परिमाण ५० कोटि योजन लिखा है, यह ज्योतिषागमसे नहीं मिलता। ज्यौतिषाचार्योंने जो भूमिका परिमाण अपने अपने समयमें सिद्ध करके लिखा है वह भिन्न भिन्न है। आजकल भूमिका परिमाण जो निश्चय किया है वह वर्त्तमान कालीन मापकी परिभाषासे २५ हजार योजनसे अधिक नहीं है। अब विचारणीय विषय यह है कि व्यासजीका ५०कोटि योजन पृथ्वीका परिमाण लिखना ऊटपटांग (निरर्थक) नहीं है, उसमें कुछ विशेषता अवश्य है। व्यासजी पुराणोंके कथनानुसार ईश्वर के अंशावतार हैं। सामान्यतया भी जिन व्यासजी ने अठारह पुराण और महाभारतादि निबन्ध लिखकर जगत् का इतना उपकार किया है कि उससे उऋण होना सम्भव नहीं है। उन्होंने श्रुतिके गूढाशयोंको सरल रीतिसे लिखकर, विज्ञानका इतना संग्रह किया है कि जितना और कोई न कर सका, इसी कारण "व्यासोच्छिष्टंजगत्सर्वं" यह कथन अक्षरशः सत्य हो गया। मनुष्य अपने मस्तिष्कसे किसी भी बातको पैदा करे, परन्तु व्यासजीके संग्रहमें वह अवश्य मिलेगी। इसी प्रकार पृथ्वीके परिमाणकी विवेचना भी गूढाशयको लिये है।

व्यासजीका एक सिद्धान्त है कि कल्प (ब्रह्माका एक दिन) अर्थात् चार हजार युगोंमें भूगोलकी चहुंमुखी वृद्धि होती है और कालान्तरसे ह्रास भी होता है। वृद्धि और ह्रास जिस पिण्डके होते हैं उसके कारण निम्नलिखित हैं।

उपरोक्त योजनात्मक वृद्धि की विषमता देशभेदसे, समुद्रके जलसे, अति वृष्टिसे और नदियोंके वेगसे होती है।

इन कारणोंसे मृत्तिकाकी अनेक स्थिति हो जाती हैं। उस मृत्तिकाके भाग कभी कभी ऊपर निकल आते हैं, कोई कोई भाग छिप जाते हैं, द्वीपादिके आकार बदल जाते हैं, परन्तु भूमिकी गोलाईमें मृत्तिका और जल कोई परिवर्त्तन नहीं करते। सृष्टिकी आदिमें जो भूगोल था वह अब भी है, परन्तु स्थितिमें बहुत अन्तर है।

व्यासजीकी भूगोल-खगोल-विषयक विवेचना श्रुत्यनुसारिणी है, उसमें जल और मृत्तिकाके कारण विपर्यय नहीं होता। आधुनिक मानादिसे जो कुछ विरोध दिखलाई देता है वह विरोधाभास मात्र है, वास्तविक नहीं है। प्रथम जिस भूमि पर हम बसते हैं उसके व्यासोक्त भूमानका और दूसरे कहे गये भूमानोंका सामञ्जस्य करनेका प्रयत्न करेंगे। शुकोक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमानवाली पृथ्वी और है, अर्थात् पृथ्वी दो हैं ऐसा श्रीमद्भागवतसे ही सिद्ध होता है।

जिस भूगोलका ज्योतिषागममें उपयोग किया गया है उस पर ज्योतिषाचार्योंने छः स्थान निश्चित किये हैं। उन्होंने 'लंका' को भूमध्यमें कल्पना करके उससे पूर्व पृथ्वी के चतुर्थांश पर 'यमकोटि', लंका के ठीक नीचे 'सिद्धपुर', पश्चिममें 'रोमकपत्तन', उत्तरमें 'सुमेरु', और दक्षिणमें 'बड़वानल'। इन छः स्थानों में लंका, यमकोटि, सिद्धपुर और रोमकपत्तनका परस्पर ९० अंशका अन्तर है और सुमेरु इस पृथ्वीका उत्तरीय ध्रुव तथा बड़वानल दक्षिणीय ध्रुव है। यह स्थिति सोपपत्तिक है। यथा—पृथ्वी के जिस स्थानसे उत्तर और दक्षिण ध्रुव क्षितिज (जहाँ आकाश पृथ्वीसे लगा हुआ दिखाई दे) से लगे हुये दिखाई दें, वही भूमि का मध्य है। इसी भूमिके मध्यके ऊपर होकर वृत्ताकार खींची हुई रेखाको विषुव-रेखा कहते हैं। इस रेखा परसे दोनों ध्रुव क्षितिजमें ही दिखाई देंगे, इसी कारण ज्योतिषमें इसी रेखा पर ९० अंशके अन्तरसे चारों पुरी निश्चित की हैं। इन चारों पुरियोंसे दोनों ध्रुवके ठीक नीचे देवताओंका वास है और दक्षिण ध्रुवके नीचे दैत्य रहते हैं। इन स्थानोंका निर्णय मेरु के निर्णयके समय लिखेंगे।

इस भूगोलके चारों ओर आबादी है। जो मनुष्य जहां रहता है वह पृथ्वीको अपने नीचे मानता है और अपने को ऊपर समझता है। ९०अंश पर रहनेवाला मनुष्य भी अपनेको ऊपर और पृथ्वीको नीचे जानता है, परन्तु परस्पर अपने को तिरछा मानते हैं, अपनेसे ठीक नीचे यानी १८० अंश पर रहनेवाला मनुष्य समझता है कि मेरे नीचे वाले मनुष्योंके मस्तक नीचेको हैं और पैर मेरी ओर हैं जैसे जलके किनारे पर खड़े मनुष्यकी छाया उलटी दिखाई देती है। किन्तु इस पृथ्वी पर चारों ओर ऊपर नीचे रहने वाले मनुष्य सब आनन्द से रहते हैं, जैसे हम लोग यहां रहते हैं। इस प्रकार पृथ्वीके चारों ओर आबादी है।

श्रीमद्भागवतके स्कं० ५ में जो खंड और द्वीपादिका वर्णन है वह द्वीपादि इसी भूगोलके चारों ओर है ऐसा मान कर चित्र नम्बर १बनाया गया है जिससे उनकी स्थिति स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है (ये चित्र लेखके अन्तमें आगामी अङ्क में दिये जावेंगे) उनके मानादिका निर्णय उनके वर्णनके समय लिखेंगे भूमिके मानके विषयमें बहुत मतभेद हैं। सूर्यसिद्धान्त का भूव्यास १६०० योजन है। ब्रह्मसिद्धान्तका भूव्यास १५८१ योजन, भास्कराचार्यका भूव्यास १५८१ १/२४ योजन और परिधि ४९६७ योजन है, आर्यभटादिने भूव्यास २०००० योजन मानकर भू-परिधि ६२८३२ योजन सिद्ध की है और आधुनिक समयमें भूव्यास ९८८ योजन वा १००० योजन मानते हैं। उपरोक्त भूव्यासोंमें जो भिन्नता दिखाई देती है वह अङ्गुलमान या योजन मानके परिमाणोंकी भिन्नताके कारण है (इसी भिन्नताको लक्ष्य करके विजयध्वजतीर्थने लिखा है कि—"यथा भागवते तूक्तमित्यादि" जैसे पुलिशाचार्यने ४००० हाथका एक कोस मान कर ८ कोसका एक योजन लिखा है। भास्कराचार्यने ८००० हाथका एक कोस मानकर चार कोसका एक योजन माना, महाभारतमें "किष्कु" आदि मापकी संज्ञासे योजनमान लिखा है। आर्यभटने योजनमान और ही लिखाहै। आजकल दो मीलका एक कोस मानते हैं, परन्तु योजनके मानमें मीलोंकी संख्यामें मतभेद है। कोई कोई पाँच मील का एक योजन मानते हैं, और कोई ८ मीलका एक योजन मानते हैं। उपरि लिखित योजनात्मक मानोंकी भिन्नताके कारण ही भूव्यासादिमें भिन्नता दिखाई देती है। इन्हीं कारणोंसे व्यासजीके कहे हुए भूमिके परिमाणको पूर्वाचार्योंने तत्कालीन मापकी परिभाषासे मिलाकर ५० कोटि सिद्ध किया है।

[क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समालोचना

श्रीविष्णु महायज्ञ (रत्नपुर) स्मारक ग्रन्थ–

सम्पादक–प्यारेलाल गुप्त, विलासपुर। इस पुस्तक में यज्ञविज्ञान–ऐतिहासिक लेख तथा रत्नपुरके विष्णु-महायज्ञका विस्तृत विवेचन आदि विषयों पर बहुत ही अच्छी तरह प्रकाश डाला गया है। धार्मिक साहित्यमे रुचि रखने वाले व्यक्तियोंके लिए यह उपादेय ग्रन्थ है। मूल्य लिखा नहीं।

मुखाकृति रहस्य–

लेखक–सामुद्रिक विशारद श्री पं०ईशनारायण जोशी "साहित्यरत्न" ज्योतिष निकेतन चौक, भोपाल। सामुद्रिक शास्त्र भारतवर्षका एक उच्चतम विज्ञान है। प्रस्तुत पुस्तकमें मुखके प्रत्येक अवयवोंका सामुद्रिक विज्ञान जो समस्त सामुद्रिक शास्त्रमें बिखरा हुआ है उसका एकत्र चयन बहुत ही सुन्दर ढंगसे किया गया है। पुस्तक द्रष्टव्य तथा संग्रहणीय है। मू०॥–) मात्र।

आज का हिन्दू–

लेखक—श्रीमदन गोपाल सिंहल। प्रकाश आदेश कार्यालय मेरठ। प्रस्तुत पुस्तकमें आजके हिन्दूकी वर्तमान अवस्थाका मार्मिक चित्र खींचा गया है। इसे पढ़ कर कोई भी सच्चा हिन्दू अपनी अवस्था पर आँसू बहाए बिना नहीं रह सकता। यदि इसे पढ़ कर हिन्दू समाजमें कुछ भी जागृति हुई और अपने प्राचीन आदर्श एवं संस्कृतिके प्रति अनुराग पैदा हुआ तो लेखकका प्रयास सफल होगा। मू० ।।)मात्र

पूजा भास्कर–

लेखक—पं० विशालमणि शर्मा उपाध्याय–विशाल कार्यालय नारायण कोटी पो० गुप्तकाशी (गढ़वाल) इस पुस्तकमें प्रायः सभी देवताओंकी पूजा विधि बहुत ही सुन्दर ढंगसे लिखी गयी हैं। कर्मकाण्डसे रुचि रखने वाले पण्डितोंके लिए यह पुस्तक बहुत ही उपादेय एवं संग्रहणीय है। मूल्य २) मात्र।

मुक्त-पृष्ठ

परमाराध्य श्री १०८ आचार्य चरण!

पूज्यपादका बहुमूल्य सन्देश हमें प्राप्त होता रहता है, यह भी हमारा सौभाग्य ही है। जहाँ आप के मङ्गलमय दर्शनों तथा अमूल्य उपदेशामृतके पान करनेका हमें सर्वदा ही सुअवसर मिला करता था, वहाँ वर्षों उससे वञ्चित रहना अवश्य ही हमारे जन्मान्तरके अशुभ कर्मोंका ही फल है। और हम कह ही क्या सकते हैं। परन्तु इतना तो अवश्य ही जानना चाहेंगे कि क्या आप कभी किसी प्रकार दर्शन देनेकी कृपा करेंगे? जब आपकी अहैतुकी कृपा और महती करुणाका स्मरण होता है तो कुछ आशा सी बँध जाती है, परन्तु वर्त्तमान पुनः हमें निराश और निरुत्साहित सा कर देता है।

हम यथासाध्य निर्देशानुसार कर्तव्य पालन करते रहते हैं, परन्तु हम किस परिस्थितिमें हैं,हमारे अन्त जंगत्में क्या हो रहा है, इसको आप तक कैसे पहुंचाएं? कुछ समझमें नहीं आता। आपके स्थानीय अन्यतम दो भक्तोंकी अवस्था तो अब रोगके कारण बहुत ही जीर्ण शीर्ण हो चली है,सम्भवतः वे कुछ ही दिनोंके अतिथि रह गये हैं। अतः वे सांसारिक बन्धनोंसे मुक्त होकर किसी तीर्थमें क्षेत्रन्यास लेना चाहते हैं। उनकी उत्कट अभिलाषा और करबद्ध प्रार्थना है कि श्रीचरण कहीं अपना मंगलमय दर्शन देनेकी कृपाकर कृतार्थ करें तो महती दया होगी।

—आपका अपना ही एक ....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगन्माता श्रीदुर्गा

या देवी सर्व भूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

चराचर जगत्में सर्वत्र जो देवी माताके रूपमें संस्थित हैं उन्हें हम बारम्बार प्रणाम करते हैं, क्यों कि हम जो कुछ चाहते हैं वह वही दे सकती हैं, चराचर जगत्की वह माता हैं और सर्वत्र हैं। कोई भी ऐसा स्थान नहीं; कोई भी ऐसी बात नहीं जो उनसे रिक्त हो। वह माता हैं—इसका तात्पर्य ही यह है कि वही प्रत्येक पद और पदार्थ उत्पन्न करती हैं। और फिर वे इतनी दयामयी हैं कि उन्होने अपना मातृ-भाव, पितृभाव और सर्वस्व सबको समान रूपसे बांट दिया है। यही कारण है कि उनकी सन्तानें उन्हें भूल कर अपने आपको ही माता पिता और कर्त्ता समझ कर चाहे जो करती है। फिर भी माता आकर यह नहीं कहती कि तुम ऐसा क्यों करते हो ? यह उनकी दया है कि बच्चोंको जो चाहें करने देती हैं और यदि वे कहीं गिर कर रोने लगते हैं, तो स्वयं पीछे छिपी रह कर उन्हें उठा लेनेको भी तैय्यार रहती हैं। बच्चोंका रोना ही तो बल है, उस बलसे जब वे माताको पुकारते हैं, तब माता उन्हें उठा लेती हैं। दुर्गसे, दैत्यसे, महासंकटसे बचा लेती हैं। इसी लिए उन्हें दुर्गा कहते भी हैं—

दुर्गे दैत्ये महाविघ्ने भवबन्धे कुकर्मणि ।
शोके दुःखे च नरके च यमदण्डे च जन्मनि ।
महाभये ऽतिरोगे चापि 'आ' शब्दो हन्तृवाचकः ॥

दुर्ग (संकट) दैत्य, महाविघ्न, भवबन्ध, कुकर्म, शोक, दुःख, नरक, यमदण्ड, जन्म, महाभय, दुस्साध्य असाध्य रोग, इन सब को (एतान् हन्त्येव या देवी सा दुर्गा परिकीर्तिता) जो देवी मारती हैं उन्हें दुर्गा कहते हैं। माताके इस दयामय स्वभावको जानकर माताके सच्चे लाल, माताकी याद करनेके लिए, भय, रोग, शोक, संकटादिकी प्रतीक्षा नहीं करते, नित्य ही 'जय दुर्गे' 'जय जगदम्ब' कहकर उनका सतत स्मरण करते हैं। ऐसी दयामयी माता जो छिपे छिपे सदा हमारे पीछे रहती हैं। हमें बचाने और उबारनेके लिए नरक तकमें आती हैं। हम कैसे कृतघ्न हैं कि जो उन्हें अपने मन, बुद्धि और प्राणोंसे सदा भुलाए रहते हैं। क्या करें, हमें उनका कोई बोध नहीं, हमें यह ज्ञान ही नहीं कि किसी माताने हमें गर्भधारण करके जना था और हमारी वह माता सदा हमारे साथ रहती है। वह सर्वव्यापक होते हुए भी अगोचर रहती है, इस लिए हम उन्हें देख नहीं पाते। इसमें हमारा क्या दोष ? परमपिता श्रीशंकर रुद्ररूप धारण करके कहते हैं—"रे कृतघ्न ! जिसका स्तनपान करके तू इतना बड़ा हुआ, जिसकी गोदमें बैठ करके तू फूला फला और प्रतिक्षण महाभयसे बचता जाता है, उसको भुलाता है और फिर कहता है कि इसमें मेरा दोष क्या ? अपना दोष क्या तू तब जानेगा जब तेरे मस्तक पर करालवदना कालीके प्रलयङ्कर कृपाणका प्रहार होगा ? पर उसमें भी माता हमारी छिपी ही होंगी, ऐसी ही अलौकिक उनकी दया है। हमारे सब कष्टोंमें, हमें उन से उबारनेके लिए हमारी माता हमारे पीछे रहती है। हम रोते हैं तब उनका हृदय रोता है और वे हमें उठा लेती हैं। पर वे दर्शन क्यों नहीं देती ? इस लिए नहीं देती कि हम दर्शन करना नहीं चाहते, चाहते हैं कि वह हमारा सब काम पूरा करे पर हमारे सामने न आये। हमारे सामने स्त्री रहे, बाल बच्चे रहें, मित्रमण्डल रहे, चाटुकारी करने वाले लोग रहें पर, बीचमें माता आकर दखल न दे, रसोई घरमें बैठ कर चुपचाप हमारे लिए रसोई बनाया करे। हमारी ऐसी इच्छा जान कर माता कभी सामने नहीं आती। चाहती है कि हम उस सर्वमयी दयामयीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आकर परम सुख लाभ करें, पर वह हमारे खेलनेमें बाधक बनना नहीं चाहती। जगदम्बाके उस अथाह करुणा-सागरकी थाह कौन पा सकता है।

एक बार नन्दजीने श्रीकृष्णसे पूछा था कि उस सर्वमयी माताको इस जगत्में किस रूपमें कैसे देखें? तब श्रीकृष्णने नन्दजीको निमित करके सब संसारियोंके लिए माताका एक विभूति योग बताया है। श्रीभगवान् कहते हैं कि "दया, निद्रा, क्षुधा, तृप्ति तृष्णा, श्रद्धा, क्षमा, धृति, तुष्टि, पुष्टि, शांति, लज्जा" इन सबकी वह अधिदेवता है। अर्थात् इन सबके भीतर भगवतीका ध्यान करनेका प्रयत्न करो। अग्नि में उन्हें दाहिका शक्तिके रूपमें देखो। सूर्य्यमें प्रभा शक्तिके रूपमें, पूर्णचन्द्रमें शोभाके रूपमें ब्राह्मणोंमें ब्रह्मण्य शक्तिके रूपमें, तपस्वियोंमें तपस्याके रूपमें, गृहस्थोंमें गृहदेवताके रूपमें, मुक्तोंमें मुक्तिके रूपमें, और संसारियोंमें मायाके रूपमें देखो। भगवद्भक्तोंकी भक्ति-शक्ति, राजाओंकी नीतिशक्ति, वैश्योंकी लक्ष्मी शक्ति, संसार-सिन्धुमें दुस्तर तारिणीशक्ति, सन्तोंमें सुमति और मेधा-शक्ति, श्रुति-शास्त्र वक्ताओंकी व्याख्या शक्ति, दानियोंकी दान शक्ति, क्षत्रियोंकी क्षात्र शक्ति, सती स्त्रियोंकी पति भक्ति, और श्रीशिव की शिवा शक्तिके रूपमें उन्हीं भगवतीको देखो" इत्यादि। तात्पर्य यह है कि सर्वत्र सब पदों और पदार्थोंमें जो बीजभूत शक्ति है वही अखिल चराचर जगत्की माता हैं। संसारमें जो कुछ "विभूतिमत् श्रीमत् और ऊर्जितमेव" हैं अर्थात् जहाँ मनुष्यका चित्त जाकर अटक जाता है, वहां भगवतीका ही रूप है, पर जानने वाले ही वहाँ भगवतीको देखते हैं। हमारे जैसे अज्ञानी करुणामयीके करुणाकरों और करुण मुखारविन्दको न देख कर, नत मस्तक न होकर केवल अधोमुख होते हैं। सच है करुणामयीकी करुणा के बिना उनके पास कौन जा सकता है? करुणामयी के पास जानेकी इच्छा भी तो उन्हींकी करुणा-किरण हैं। धन्य है भारतवर्ष देश जहाँ घर-घर जगदम्बाकी पूजा होती है और धन्य हैं वे नगर जिनके सहस्रों नर नारी जो इस शारदीय नवरात्रमें माताकी करुणामयी पुकार सुन कर, उनके दर्शनोंके लिए दौड़ते घूमते रहते हैं, या घरमें घटस्थापन करते हैं। ऐसे मातृभक्तोंकी चरणरेणु भी इस मस्तकपर लगे तो धन्य हो।

श्री पं० जवाहरलालजीकी जन्मकुण्डली

स० १९४६ शकः १८११ मार्गशीर्ष कृष्णा ६ गुरुवार ता० १५ नवम्बर सन् १८८९ ई० को सूर्योदयात् इष्ट घट्यादि ४१। ३८ वृश्चिक संक्रान्ति कर्क लग्नमें श्रीमान् पं० जवाहरलालजी नेहरूका जन्म हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
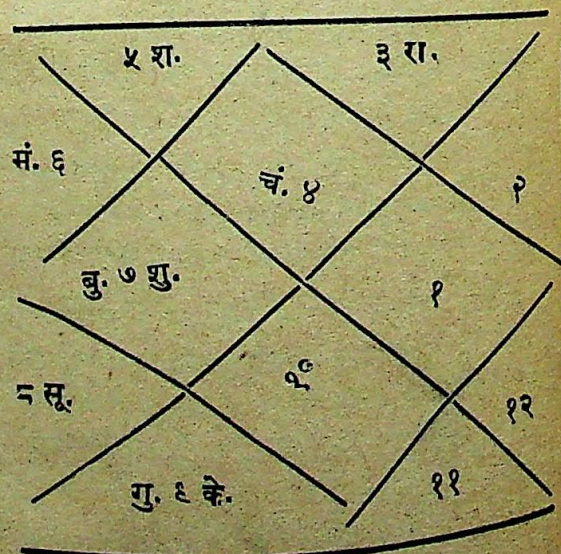
भारतकी राष्ट्रिय सरकारके प्रथम प्रधानमन्त्री

श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू

आगामी ता० १५ नवम्बर १९४६ को आपकी ५८ वीं वर्षगांठ (जन्मदिन) समस्त भारतमें सोत्साह मनाई जायेगी। जन्मदिवसोपलक्ष्यके इस शुभ अवसर पर 'श्रीस्वाध्याय' परिवारकी ओरसे हम आपका अभिनन्दन तथा ईश्वरसे मङ्गल-कामना करते हैं कि वह आपको सर्वथा शक्ति-सम्पन्न एवं चिरायु करे और भारतको पूर्ण स्वतन्त्र करनेके आपके व्रतको शीघ्रातिशीघ्र पूरा करे।

आपकी जन्मकुण्डली सामने पृष्ठ ७८ पर दी गई है। भारतीय ज्योतिर्विज्ञानाचार्य इस कुण्डली पर अपने अनुभवपूर्ण विशेष विचार व्यक्त करनेकी कृपा करेंगे तो उन्हें 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित किया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्वअवसर || श्रियै नमः || अवश्य लाभ लें

सोना चांदीमें भयानक घटा बढ़ी

चांदी १२५) या २२५), सोना १२०) या ६५)

पाठकगण ! हमारी तर्फसे कार्तिक मार्गशीर्ष और पौष की रिपोर्ट प्रकाशित हो चुकी हैं। इस समयमें सोना चांदीमें भयंकर घटा-बढ़ी होगी। ग्रहयोग देखते बाजारमें झड़पी जनरल इकतर्फा लाईन चलेगी। और अच्छे २ व्यापारियोंकी व नक्काल ज्योतिषियोंको भी हर वक्तके अनुसार चक्कर खाना पड़ेगा। आप इस घटा बढ़ी को पहलेसे जानकर लाभ लेना चाहते हैं तो हमारी रिपोर्टके ग्राहक बनें। हमने गत मईकी रिपोर्टके लिये भी चैलेंज दिया था और अब हम जून जुलाई और श्रावणकी रिपोर्टका भी स्पष्ट चैलेंज देते हैं कि हमारे इन तीनों मासके ऊंचे नीचे भाव व जनरल आइडिया और ले बेचकी तारीखें कितनी सही उतरी हैं। आप मिलान करें। हमारी इन रिपोर्टोंको जो झूठ साबित करेंगे उन्हें १००) इनाम। इसी तरह हमने 'वैंकटेश्वर' 'उजाला' आदि पत्रोंमें भी दिया है। जूनकी रिपोर्टमें चांदीमें भारी मंदी, चांदी बेचो ३१-५-४६ को (भाव १८८ था) खरीदो ३-६-४६ को (भाव हुवे १८१) ता० ५-६-४६ को बेचा (१७८) और खरीदो १० जून को डबल (भाव हुवे १७४) और १२-६-४६ को बेचो (भाव १७६) चांदी बेचो १-७-१८ जून को (भाव थे १७८) और खरीदो ता० २३-६-४६ को भाव हुवे (१७३) खरीदो चांदी ता० २४-६-४६ को बेचो २६-६-४६ तक (मगर रुख पलटनेसे हमने तार दिया सबोंको चांदी खरीदो २६-६-४६ को) भाव २६-६-४६ को १७० और ता० २६-६-४६ को १७३) जुलाईकी रिपोर्टमें बेचो चांदी माथे ता० १७४६ को भाव थे १७१)—खरीदो चांदी ६-७-४६ को (भाव हुवे १६१) ता० ६-७-४६ को खरीदो और ३-४ टके बढ़ते ही फौरन बेचो (भाव १६१ से १६४ रहे) ता० १०-७-४६ को चांदी बेचो और खरीदो १७-७-४६ को (भाव हुवे १५८ से १५०) हमने श्रवणकी रिपोर्टमें चांदीमें १७-७-४६ से बाजरमें भारी तेजी, छूट से खरीदो लिखा था, भाव नीचेमें १४८ से ५१ तक और ऊंचेमें १३–१४ अगस्त तक १७२–७५, सो ठीक बाजार १५१ से ता० ११-८-४६ को बम्बई १७५ बाजार हुआ। इस तरह हमारी गत रिपोर्ट मिली है। जिससे जगह २ कार्यालयकी प्रशंसा हो रही है। और सैंकड़ों व्यापारियोंने लाभ लिया है। आप भी यदि लाभ लेना चाहते हैं तो शीघ्र आर्डर भेजें।

नोट— १ वस्तु की १ माह की रिपोर्टकी फीस ६१) तीन महा का १५०) फीसमें कमी बेशीके लिये लिखना व्यर्थ है। और वी० पी नहीं भेजी जावेगी। फीस मनीआडर—बीमा या तार मनीआडरसे मिलने पर रिपोर्ट रजिस्ट्रीसे भेजेंगे।

पता

ज्योतिषरत्न पं० हरिशंकर शास्त्री दैवज्ञ भूषण.

मु० पो० खिड़कीयां जि० होशंगाबाद (सी० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय युद्धका दोष किसका ?

[लेखिका—हर हाईनेस राजमाता श्री १०५ मती महारानी शिवकुमारी देवीजी डी० बी० ई० नरसिंहगढ़ राज्याधीश्वरी महोदया]

[प्रस्तुत लेखकी लेखिका राजमाता श्री १०५ मती महारानी साहिबा नरसिंहगढ़ राज्य-परिवारकी एक परम विदुषी महिला हैं। नरसिंह गढ़ का सारा राज-परिवार ही विद्या-व्यसनी तथा सुशिक्षित है। यही कारण है कि यह राज्य एक प्रगतिशील राज्य है। प्रस्तुत लेखमें महाभारतके युद्ध पर श्रीमती महारानी साहिबाने अपना गवेषणा पूर्ण स्वतन्त्र विचार व्यक्त किया है। यदि कोई विद्वान् पुनः इस विषय पर कुछ अपना विचार लिखकर भेजेंगे तो उसको भी 'श्रीस्वाध्याय' में स्थान दिया जाएगा। —सम्पादक]

वयोवृद्ध, विद्वान् साहित्यिक श्री पं० अम्बिका-प्रसाद वाजपेयीजीने दिसम्बर १६४४ की 'सरस्वती' में महाभारत पर अपने विचार प्रकट किये हैं। उसमें महाभारतके युद्धका सब अपराध द्रोणाचार्य और भीष्म पितामहके सिरपर मढ़ दिया है। यही नहीं, किन्तु भीष्म जैसे महान् तेजस्वी, त्यागी और इच्छा मृत्यु वीरको नपुंसक तक कह डाला है। ये विचार मुझे नहीं जँचे। इस कारण दो शब्द लिखने का साहस कर रही हूँ।

प्राचीन इतिहासोंमें राज-कन्याओंके हरण करनेके जैसे उल्लेख हैं, काशिराजकी कन्याओंका वैसा हरण नहीं हुआ है। भीष्मने अपने भाइयोंके लिए काशिराजसे कन्याओंकी माँग की थी; परंतु स्वयंवरकी आड़ लेकर काशिराजने इनकार कर दिया। उस समय कुरुवंश सब राजवंशोंमें श्रेष्ठ माना जाता था। भीष्मने यह अपमान समझा और अपने पुरुषार्थसे आवश्यकतासे अधिक काशीराजकी तीनों कुमारियोंका हरण कर लिया।

विचारकी बात यह है कि, अत्यन्त प्रतिष्ठित और महान् प्रभावशाली कुरुवंशसे सम्बन्ध करनेमें काशिराज क्यों हिचके ? यह तो सभी जानते थे कि शांतनुके गङ्गासे भीष्म हुए और धीवरकी कन्या सत्यवतीसे उनके दो भाई। ऐसी अवस्थामें धीवर की कन्याके पुत्रोंसे कौन कुलीन नरेश सम्बन्ध करनेको प्रस्तुत होता ? अपना बड़प्पन रखनेके लिए भीष्मको हरणका मार्ग अवलम्बन करना पड़ा।

विचित्रवीर्य और चित्रांगदकी निःसन्तान अवस्थामें ही मृत्यु हो गई, तब कुरु वंशकी रक्षाका प्रश्न उपस्थित हुआ और नियोगके लिए वेद-व्यास चुने गए। उनसे जन्मान्ध धृतराष्ट्र, पाण्डु-रोग-ग्रस्त पाण्डु और दासीपुत्र विदुरकी उत्पत्ति हुई। भीष्म ने गंधारके राजकुमार शकुनीको किसी तरह अपनी ओर मिलाकर गांधारीसे धृतराष्ट्रका विवाह कर दिया। कुन्तिभोजकी दत्तक पुत्री कुन्तीने पाण्डुको स्वयंवरमें वरण किया। परन्तु यह सम्बन्ध भीष्म को कुरु वंशके योग्य नहीं जँचा। उन्होंने मद्रराज पर अपना प्रभाव डाला और उनकी बहन माद्रीसे पाण्डुका दूसरा विवाह हो गया।

पाण्डु राज छोड़कर दोनों स्त्रियोंको साथ लेकर वानप्रस्थी हो गया। अब तक धृतराष्ट्र या पांडुके कोई सन्तान नहीं थी। पाण्डुने अपनेको सन्तति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न करने योग्य न समझ कर नियोगके द्वारा वंश रक्षा करना निश्चित किया। तदनुसार कुन्तीके विभिन्न तीन दिव्य पुरुषोंसे युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन ये तीन पुत्र और माद्रीके चौथे पुरुषसे नकुल और सहदेव जुड़ुआ पुत्र उत्पन्न हुए।

इधर गान्धारीका असामयिक गर्भपात होगया वैज्ञानिक रीतिसे उसी गर्भ पिंडुसे सौ पुत्र, एक पुत्री उत्पन्न की गई। धृतराष्ट्रकी वीर्य जात यह औरस सन्तति थी। कौरवों और पांडवोंकी उत्पत्तिमें यही महान् अन्तर है।

अब प्रश्न यह है कि वंश रक्षाके लिए वेद-व्यासको क्यों बुलाया गया? शास्त्रोंमें कुल पुरोहित या अपने ही वंशके किसी उत्तम पुरुष अथवा छोटे देवरसे नियोगके द्वारा सन्तान उत्पन्न करने की अनुज्ञा है, परन्तु यहां ऐसा नहीं किया गया। क्योंकि सत्यवतीका झुकाव वेद व्यासकी ओर ही था। पराशरसे वेद व्यासकी उत्पत्ति हुई थी, यह सभी जानते हैं।

यह भी निश्चित ही है कि वंशरक्षाका प्रश्न मनुष्यकी मृत्युके बाद ही उठता है और नियोग भी एक ही सन्तानं तक सीमित रहता है। परन्तु पांडु अपनी जीवित अवस्थामें ही पत्नियोंसे नियोगके द्वारा सन्तति उत्पन्न कराते हैं। ऐसा आचरण कोई साधारण व्यक्ति भी नहीं करता। एक उच्च कुलके राजाका यह आचरण कहां तक मान्य हो सकता है, इसका विचार स्वयं पाठक ही करें—और वह भी चार पुरुषों द्वारा चार सन्तानें।

पाण्डुकी मृत्यु होने पर उसके साथ माद्री सती हो गयी और कुन्ती अपने पांचों पुत्रोंको लेकर धृतराष्ट्रके पास चली आयी। वह राजमहलोंमें आदरके साथ नहीं रखी गयी, विदुरके पास रही। पांडवोंको किसी प्रकार राज्यका हिस्सा मिला, परन्तु उनको मार डालनेका षडयन्त्र चलता ही रहा। लाक्षागृहदाह, विषप्रयोग आदिकी बातें प्रसिद्ध ही हैं। यह नहीं हो सकता कि राज्यके दाहिने हाथ भीष्मसे ये बातें छिपी हों, परन्तु विरोध कर वे हट नहीं गये। यही नहीं, किंतु अंतिम अवस्था में पांडवोंको धर्मोपदेश सुनाते समय द्रौपदीके ताना मारनेपर इन्होंने दुर्योधनके अन्नकी दुहाई दी। यह एक राजनीतिक चाल ही थी।

दुर्योधन राज्यका पूर्ण अधिकारी था, क्योंकि पांडुके हट जानेपर गद्दीका वारस धृतराष्ट्र ही रह गया था और उसके राज्य पदपर प्रतिष्ठित होनेपर दुर्योधन उत्पन्न हुआ था। धृतराष्ट्रको औरस पुत्र होते हुए नियोगसे उत्पन्न पांडवोंको राज्य क्यों कर मिलता? नियोग तो वंश रक्षाका एक उपाय मात्र है। जब औरस सन्तति विद्यमान हो, तब नियोगकी सन्ततिको राज्य पानेका कोई अधिकार नहीं रह जाता। शक्तिशाली द्रुपद के बीच बचावसे पांडवोंको आधा राज मिला, यही बहुत था। भीष्म काशिराज पर दबाव डाल कर उसकी कन्याएं हर लाये और उन निरपराध कुमारियोंके शुभ-जीवनका कोई रास्ता भी नहीं निकाल सके। इसी विषयको लेकर वे परशुरामसे लड़े और परशुराम को भी प्रतिज्ञा करनी पड़ी कि किसी क्षत्रिय को मैं अपनी शस्त्रविद्या नहीं सिखाऊंगा। परिणाम यह हुआ कि, काशिराजसे कौरवोंकी शत्रुता हो गई, राजकुमारियों कहींकी न रहीं और क्षत्रिय वर्ग अपनी पैतृक शस्त्र-विद्यासे हाथ धो बैठा।

भीष्मने पांडवोंको पांडुकी सन्तति भले ही मान लिया हो, बलपूर्वक वे अन्य राजाओंसे नहीं मना सकते थे। इसीसे गन्धार राज्यसे उन्हें क्रूर नीति बरतनी पड़ी, मद्रराज को उत्कोच देनी पड़ी और काशीराज पर जबर्दस्ती करनी पड़ी। कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषोंके नियोगसे सन्तानका उत्पादन और एक स्त्रीका पांच पतियोंसे विवाह जनताको नहीं जँचा। घोर विरोध हुआ और विरोधका बीज बोया गया। भीष्मकी उपेक्षाका ही यह फल है कि, युद्धमें कौरवोंकी ओरसे उन्हें सम्मिलित होना पड़ा।

उस समय द्रुपद एक महान् सामर्थ्यवान् नरपति माने जाते थे। उनसे झगड़ा बढ़ाना कौरवोंने अच्छा नहीं समझा। उन्होंने पांडवोंको राज्यका आधा हिस्सा तो दे दिया, किन्तु वे पांडवोंको मिटानेके प्रच्छन्न प्रयत्न करते रहे। अंतमें जुए के बहानेसे कौरवोंने पांडवोंका घोर अपमान किया और उनका राज्य छीन कर उन्हें देशनिकाला दे दिया। यह नहीं कि इन बातोंका भीष्मको कुछ भी पता न हो। उन्होंने इसका कहीं विरोध नहीं किया। उनके सामने केवल धर्मका ही प्रश्न नहीं था, राजनीतिका भी प्रश्न था। विदुरको षड़यन्त्र का ठीक समय पर पता लग गया था और उन्होंने पांडवोंको वारणावत प्रस्थान करते समय म्लेच्छ भाषा द्वारा युधिष्ठिरको सावधान भी कर दिया था।

अनेक विपत्तियां सह लेने पर पांडवोंने आरम्भमें कोई मांग नहीं की थी और न धृतराष्ट्र या उसके पुत्रोंके विरुद्ध कोई चालें ही चलीं थीं। फिर भी कौरवोंने उनके नाशका उपाय रचा, इसका कारण क्या है? इसका उत्तर यह है कि, साम्राज्यके स्तम्भोंके सामने इस विचित्र नियोग के द्वारा उत्पन्न सन्ततिने एक विषम समस्या उत्पन्न कर दी थी। जब धृतराष्ट्रके गान्धार जैसे उच्च वंशकी राजकन्यासे और सौ पुत्र उत्पन्न हो गये थे, तब नियोग जात सन्तानको राज्यका अधिकार प्राप्त हो ही नहीं सकता। संयोग वश पांडव धर्मात्मा थे और धृतराष्ट्रके पुत्र अयोग्य थे। इस परिस्थिति से भीष्म किंकर्तव्य विमूढ हो गये थे और उन्हें यह कह कर चुप रह जाना पड़ा कि,—'यतोधर्मस्ततः कृष्णःयतः कृष्णस्ततो जयः'।

पहले धीवर कन्यासे विवाह, तीन बारका नियोग, फिर चार व्यक्तियों से नियोग और फिर एक पत्नीके पाँच पतिके होनेके अच्छे शस्त्र पाँडवोंके विरोधियोंके हाथमें आ गए थे। धृतराष्ट्र भी इन्हीं कारणोंसे पांडवोंका विरोधी बन गया होगा। पांडव कोई अलग राज्य अपने बाहुबलसे स्थापित करते, तो बात और थी; परन्तु जब वे अपने पैतृक राज्यका छोटेसे छोटा अंश माँगने लगे तब दुर्योधन चौंक उठा और उसने सोचा कि, थोड़ी तियायत करते ही जनता पाण्डवोंकी पक्षपाती हो जायगी और अपना कोई मूल्य नहीं रहेगा। सामर्थ्यवान् पाण्डवोंने भी देखा कि, यदि वे पैतृक अधिकार प्राप्त नहीं करते तो समाज की दृष्टिसे गिर जायेंगे। पाण्डवोंकी वकालत प्रथम द्रुपदके पुरोहितने की और जब काम नहीं बना, तब हस्तिनापुरमें जाकर वासुदेवने दौत्य कार्य कर अन्तिम चेतावनी दे दी।

उपर्युक्त कारणसे कौरवोंने द्रुपद, विराट, काशिराज आदि बलशाली राजाओंको अपना शत्रु बना ही लिया था, जो यादव समाजसे दूर रक्खे गये थे, वे भी वंशकी शुद्धताके घमण्डियोंके विरुद्ध हो गये। उस समयके महान् धर्मात्मा, कानूनके सर्वोपरि सूक्ष्मदर्शी, देश-रक्षक-नेता वासुदेवने बुलन्द आवाजसे पाण्डवोंका पक्ष समर्थन किया। इस अवस्थामें भीष्मको शरशय्या का अवलम्बन किये बिना कोई गति ही नहीं बच रही।

मेरा निजी मत तो यह है कि, महाभारतके युद्धका दोष न तो द्रोणाचार्यका है और न भीष्म का। वह दोष पांडुका है। उसने नियोगसे सन्तति उत्पन्न करायी और वह भी कुल पुरोहित या वंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के किसी पुरुषके द्वारा नहीं, किन्तु एकान्त बनमें करायी, जहाँ कोई साक्षी नहीं, यह बहुत ही अनुचित किया। यदि वह यह नहीं करता तो इतनी विषम समस्या ही उपस्थित न होती और महाभारत के युद्धके द्वारा इस देशकी अपार धन-जन हानि न होती।

सोलन-समाचार

श्रीतारिणी-संस्कृत-महाविद्यालयका वार्षिकोत्सव

राजकीय श्रीतारिणी-संस्कृत-महाविद्यालयका वार्षिकोत्सव धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मान् बघाट-मही-महेन्द्र महाराजा साहबकी अध्यक्षता में ७ सितम्बर शनिवारको ससमारोह मनाया गया। विद्यालयके छात्रोंने भाषण प्रतियोगिता, व्यायाम तथा संगीत में भाग लिया। संस्कृत वाङ्मय विश्वकोष कार्यालय के कार्यकर्ता श्रीमान् पं० रामबहादुर त्रिपाठी शास्त्री ने विद्यालयका अब तकका वार्षिक विवरण सुनाया, जिसे सुनकर विद्यालयकी क्रमशः प्रगतिसे जनता को प्रसन्नता हुई। माननीय श्रीमान् महाराजा साहब के कर कमलों द्वारा सभी छात्रोंको वस्त्र, पुस्तकें तथा अन्य लिखने पढ़नेका सामान पुरस्कारमें दिया गया। संस्कृत भाषणमें शास्त्रीके विद्यार्थी रघुवरदत्तजीको, व्यायाम और संस्कृत भाषणमें गीतारामजीको, हिंदी-भाषण प्रतियोगितामें मित्रानन्द तथा ओमप्रकाशको तथा संगीत में हीरानन्दको वस्त्र और पुस्तकोंके अतिरिक्त एक एक रजतपदक भी प्रदान किया गया। श्रीमित्रानन्द तथा श्रीओमप्रकाशको क्रमशः श्रीमान् राय बहादुर साहब तथा श्रीमान सेठ शिवदयालजीने भी उनके भाषणसे प्रसन्न होकर अपनी ओरसे पांच-पांच रुपयेका पुरस्कार दिया। अन्तमें श्रीमान् महाराजा साहबने विद्यालयके प्रिंसिपल महामहोपाध्याय श्रीमन् पं० मथुराप्रसाद जी दीक्षित महोदय तथा अध्यापकोंको धन्यवाद देते हुए संस्कृत विद्याके महत्व पर महत्वपूर्ण भाषण दिया। और छात्रोंको बतलाया कि यदि आपकी शिक्षाका आप के चरित्रनिर्माण पर कुछ प्रभाव न पड़ा तो वह व्यर्थ होगी। आप पढ़ लिखकर विद्वान् तो हो सकते हैं, परन्तु यदि चरित्र पालनकी ओर आपने ध्यान नहीं दिया तो आप मनुष्य नहीं बन सकते। अतः आप पहले मनुष्य, फिर विद्वान् बननेका प्रयत्न करें। तत्पश्चात् सभाका कार्य विसर्जित हुआ। वार्षिकोत्सव हर दृष्टिसे पूर्ण रूपेण सफल रहा।

पुस्तकालय उद्घाटन—

शिमला पर्वत श्रेणीकी सोलन जैसी नगरीमें जहाँ प्रतिवर्ष सहस्रों धनी मानी तथा शिक्षित व्यक्ति जलवायु-सेवनके लिए आते हैं, वहाँ एक सार्वजनिक पुस्तकालयका होना अत्यावश्यक था। हर्षकी बात है कि श्रीमान् प्रधान मन्त्री महोदय के छोटे भाई श्री मेजर ए० के० हजारी साहबके सदुद्योगसे तथा प्रतिष्ठित नागरिकोंके सहयोगसे गत १३ सितम्बर सन् १९४६ को बहुत ही समारोह के साथ श्री १०५ महाराजा साहबके शुभ नाम पर माननीय श्रीमान् महाराजा साहबके ही कर कमलों द्वारा श्रीदुर्गा सार्वजनिक पुस्तकालय तथा वाचनालयका उद्घाटन हुआ है। इसकी प्रबन्धकारिणी समितिके सभापति हमारे माननीय प्रधान मन्त्री रा० ब० श्री पं० कर्त्ताकृष्णजी कौल महोदय तथा मन्त्री तहसीलदार श्री गीतारामजी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिर्विज्ञान परिशिष्टाङ्कः—

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

अन्तःकालीन राष्ट्रिय सरकारका भविष्य

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग']

गत सितम्बर मासकी २ तारीखको मध्याह्न ११ बजे तुलालग्नमें भारतकी राजधानी दिल्लीमें प्रथमबार राष्ट्रिय-सरकारकी स्थापना होनेसे एक बार समस्त भारत हर्षातिरेकसे उल्लसित हो उठा है। ६१ वर्ष पूर्व भारतीय महापुरुषोंने बम्बईमें सं० १९४२ पौष कृष्ण ७ ता० २८ दिसम्बरको मीनलग्नमें कॉंग्रेसके रूपमें जिस स्वातन्त्र्य—वृक्षका बीजारोपण किया था वह पल्लवित पुष्पित हो कर अब फल देने योग्य बन सका है। प्रायः २५ वर्षसे इस वृक्षको भारतीय राष्ट्रिय जनता अपने रक्तसे सींचती चली आ रही है। इसके सुमधुर फल प्राप्त करनेके लिए भारतने घोरतम त्याग तपस्या और बलिदान किया है। तप और बलिदान कभी निष्फल नहीं जाता। समय अनुकूल आने पर उसका फल अवश्य मिलता है। भगवान् कालपुरुष या समय ही राष्ट्र, जाति समाज और व्यक्तिको सबल निर्बल तथा राजासे रंक और रंकसे राजा बनाया करते हैं, इसीलिए कहा गया है कि—'कालः करोति पुरुषं दातारं याचितारं च' 'समय एव करोति बलाबलम्' इत्यादि। कालकी महिमा बड़ी विचित्र है, इसकी महिमाका ज्ञान ज्योतिर्विज्ञानके द्वारा ही हो सकता है। अन्यथा कौन कह सकता था कि जिन नेताओंको राजद्रोही मानकर बन्दीगृहकी विषम-यातनाएं दी जातीं थीं, उन्हींको ससम्मान शासनारूढ़ करके गौरवका अनुभव किया जायेगा। वर्तमान-कालीन भारतके एक-मात्र राजनैतिक कर्णधार विश्ववन्द्य श्री महात्मा गांधीजी की जन्म-कुण्डलीमें केन्द्र-त्रिकोणेश योगकारक शनिके राज्यस्थान (कर्कराशि) में आने पर एवं श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरूको दशमेश पञ्चमेश प्रबल राजयोगकारक मंगलकी महादशाके प्रारम्भ होने तथा कांग्रेसको योगकारक ग्रह-पंक्ति बनने एवं भारतकी राशि मकर पर अपने स्वामीकी दृष्टि पड़ने आदि सब अनुकूल योगोंके मिलने पर ही राष्ट्रिय सरकार बननेका सौभाग्य भारतको प्राप्त हुआ है। जैसा कि गतवर्ष हमने अपने 'श्री विश्वविजय पञ्चाङ्ग' और चैत्र मासके 'साहित्याङ्क' में लिखा था कि—"शनिके कर्कमें जाने पर राष्ट्रिय सरकारके स्थापित होनेका पूर्ण योग है।...जनमतके सामने बृटिश साम्राज्य को झुकना पड़ेगा।""पूर्वीय विभागमें उत्पात दुर्भिक्ष रोगोपद्रव रक्तपात आदिसे प्रजामें क्लेश होगा। राष्ट्रियताके शुत्रुओंकी शक्ति क्षीण होगी और राष्ट्र हितचिन्तकों एवं राष्ट्रिय महासभा (कांग्रेस) की प्रतिष्ठा सर्वत्र बढ़ेगी।······वैशाखसे आगेका समय संसार और भारतकी राजनीतिमें क्रांतिकारक सिद्ध होगा। इसी अवधिमें साम्प्रदायिक झगड़े भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होंगे। आषाढ़से आगे आर्य-अनार्य प्रकृति-प्रधान ग्रहों व। भारतकी राशि पर पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध होनेसे भारतकी आर्य-अनार्य जनता वा राष्ट्रिय-अराष्ट्रिय-दलोंमें संघर्ष मतभेद वा द्वन्द्वयुद्ध हो जाना सम्भव है। मीनसे कर्क राशि तकके प्रान्तों और बड़े-बड़े नगरोंमें उत्पात अशांति एवं आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव अधिक होंगे।......कर्कका शनि श्री महात्मा गांधीजीकी जन्मकुण्डलीमें दशम आ रहा है और पञ्चेश गुरु पर इसकी दृष्टि रहेगी, यह योग भारतीय गत्यवरोधको सुलझानेमें महात्माजीको पर्याप्त सहायता देने वाला है।...... भारत और अन्तर्राष्ट्रिय जगत्में श्री नेहरूजीका यश खूब बढेगा। आपके ग्रहोंसे भारतके लिए अन्तिम परिणाम श्रेयस्कर सिद्ध होगा,...... कोई नया राष्ट्रिय कार्य प्रारम्भ होगा और आपके द्वारा बृटिश साम्राज्यसे मुक्ति पानेके सन्तोष-जनक प्रयत्न होंगे।..........."इत्यादि।

ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर एक वर्ष पूर्व लिखी गई उक्त सब घटनाएँ पाठकोंके सामने हस्तामलकवत् स्पष्ट हो चुकी हैं। मेष वृषभ मिथुन राशिवाले प्रधान नगर अहमदाबाद इलाहाबाद बम्बई कलकत्ता आदि नगरों का भयंकर हत्याकाण्ड और उत्पात इस युगकी अभूतपूर्व रोमाञ्चकर घटनाएँ हैं। अभी भी उक्त नगरोंमें पूर्णरूपसे शान्ति स्थापित नहीं हो पाई है। ऐसे संक्रांति-कालमें मानवताका रौंदा जाना वा जन धनका भीषण विनाश स्वाभाविक ही है। किन्तु अब यह संक्रांतिकाल अधिक समय तक नहीं रहेगा। आगे भारत का भविष्य उज्ज्वल है।

राष्ट्रिय सरकारका भविष्य

ता० २ सितम्बर १९४६ को प्रातः ११बजे अन्तःकालीन राष्ट्रिय सरकारकी स्थापना तुला लग्न में हुई है। लग्नमें गुरु शुक्रकी स्थिति, दशम शनि और ११ वें बुध सूर्य इस सरकारकी आरम्भिक सब विघ्न बाधाओंको पार करके अन्तमें यशस्वी बनाने वाले हैं। आरम्भके दो वर्ष तक गुरुकी दशा रहेगी—यह गुरु तृतीयेश षष्ठेश हो कर अष्टमेश शत्रुग्रह शुक्रके साथ लग्नमें पड़ा है—यह इन दो वर्षोंमें इस सरकारके सामने अनेक नई-नई उलझनें उत्पन्न करेगा। गुप्त शत्रुओंकी ओरसे बाधायें उपस्थित होंगी, अतः इस सरकार को अपने प्रच्छन्न शत्रुओंसे विशेष सावधान रहना चाहिए। धनेश सप्तमेश मंगल बारहवें घरमें शनि से दृष्ट है, यह आर्थिक संकट उपस्थित करता है। मंगल राष्ट्र-सम्पत्ति, राजस्व (रेवेन्यू) टेक्स, बैंक-व्यापार, स्टाक-एक्सचेञ्ज, मुद्रास्फीति आदिका कारक होनेसे उक्त विषयोंसे सम्बन्धित समस्याएँ बहुत जटिल होंगी। लग्नेश और भारतकी राशि बलवान् होनेके कारण भारतमें अब गृहयुद्ध से हानि नहीं होगी। परन्तु, ऊपर (गत साहित्याङ्कमें से) मीनसे कर्क राशि पर्यन्तके प्रांत और नगरों का उल्लेख हम कर चुके हैं उनमें यत्र-तत्र साम्प्रदायिक झगड़े और पारस्परिक धार्मिक जातीय उत्तेजना से अनार्य गुण्डों द्वारा कुछ अशांति अवश्य होगी। नये विधान बनानेमें भी कई उलझनें उत्पन्न होंगी। कार्तिकसे आगे इन आरम्भिक दो वर्षों में इस अंतःकालीन सरकारको कठिन अग्नि-परीक्षामेंसे निकलना होगा। बृटिश उच्चाधिकारियों, मित्रों एवं सहयोगियोंसे वैमनस्य तथा मतभेदके प्रसङ्ग आकर संघर्ष जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाना सम्भव है। आगे दो वर्ष बाद आनेवाली केन्द्र त्रिकोणेश राज्यस्थ शनिकी महा दशा १९ वर्ष की इस सरकार के लिए महान् राजयोग कारक सिद्ध होगी। इस अवधि में भारत पूर्णरूपमें स्वतंत्र होगा और वर्तमान अस्थायी सरकार स्थायी रूप ग्रहण करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मि० जिन्ना की जन्म कुण्डलीमें शनि राहुका योग है अतः वे धैर्य और दूरदर्शितासे कोई कार्य नहीं करेंगे। कार्तिक से आगेका समय उनके सार्वजनिक जीवन एवं स्वास्थ्यके लिए उत्तम नहीं है।

श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू—

वर्तमान राष्ट्रिय सरकारके कर्णधार या प्रधान मन्त्री श्री नेहरूजी हैं, अतः आपकी जन्मकुण्डली पर भी विचार करना आवश्यक है। श्री नेहरूजीकी जन्म कुण्डली इसी अङ्कमें पहले चित्रके साथ दी गई है।

आपकी कुण्डली में पंचमहापुरुष योग है औरराज्यस्थानको मंगल बुध गुरु शुक्र पूर्ण दृष्टिसे देख रहे हैं। तीनग्रह स्वक्षेत्री और राहु उच्चका है ये सब जहां प्रबल राजयोग कारक हैं "त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री' वहाँ महामेधावी, नीतिनिपुण, परिश्रमी कष्टसहिष्णु, निडर, साहसी, सरलमानस, स्पष्टवादी एवं लोकप्रिय जननायक बनाने वाले भी यही हैं। दशमेश पञ्चमेश मंगल पराक्रमस्थ हो कर राज्य को पूर्ण दृष्टिसे देखनेके कारण यह मंगल पंडित जीकी कुण्डलीमें महान् राजयोगकारक बन गया है, इसकी महादशा ७ वर्षके लिए गत फाल्गुन मास से ही प्रारम्भ हुई है, यह आपके जीवनमें सर्वाधिक उत्तम दशा है। ता० १६ नवम्बर १९४६ से आपको ५८वाँ वर्ष प्रवेश हो रहा है, वह भी राष्ट्रसेवा और राज्यपक्षके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अतः हमें विश्वास है कि आपके सत्प्रयत्नों द्वारा भारतका राजनैतिक महत्व संसारमें बहुत बढ़ेगा। परन्तु इस समय कर्कका शनि गोचरमें जन्मलग्न और राशि पर आया हुआ है अतः पण्डितजी को अपने स्वास्थ्य एवं गुप्तशत्रुओंकी ओरसे विशेष सतर्क रहना चाहिए। किसी विश्वस्त व्यक्तिके द्वारा विश्वासघातका दुःसाहस होना भी सम्भव है, अतः महत्वपूर्ण कार्योंमें व्यक्तिगत विश्वास करने से पूर्व पूर्णरूपेण परीक्षा कर लेना अत्यन्त आवश्यक होगा। परिश्रम अधिक करने के कारण वर्षके उत्तरार्धमें कुछ उदर-विकार, वायुविकार, मलावरोध, सन्धिपीड़ा आदिसे शैथिल्य एवं स्वास्थ्यमें निर्बलताका अनुभव होगा। अन्य सब प्रकारसे पराक्रम यश साहस राज्यव्यवस्था राष्ट्र-निर्माण आदिके लिए श्रीनेहरूजीका यह आगामी ५८वाँ वर्ष बहुत महत्वशाली है।

भारत और अन्तर्राष्ट्रीय जगत्

कार्तिकसे पौष तक प्रजामें रोग महामारी आदि का भय व्याप्त होगा। यत्रतत्र लड़ाई झगड़े आदिसे भी प्रजामें अशान्ति होगी। मार्गशीर्ष पौषमें कहीं अत्यधिक शीत ओले और हिम पातसे तथा कहीं अतिवृष्टि तूफान आदिसे संसारमें बहुत हानि होगी। समुद्री तूफान आवें, शस्त्रास्त्रागारों और खानोंमें विस्फोट, होंगे। नाविक एवं श्रमिकवर्गमें असन्तोष, बन्दीगृह(जेलखानों) के नियमों में सुधार होगा। भारतीय राजनीतिमें अभूतपूर्व उन्नति होगी। मार्गशीर्षसे अनार्यजातियों में असन्तोष बढ़ेगा।

१८ नवम्बरसे शुक्र दक्षिण क्रांति विक्षेपमें रह कर सूर्यसे योग करेगा अतः अनार्य म्लेच्छ जातियोंको राज्यका संरक्षण मिलेगा। ता० २१ नवम्बरसे उत्तर विक्षेपमें चलता हुआ शनि कर्क राशि के उत्तरार्ध में वक्री हो रहा है, यह संसारके धनाढय देशोंमें आर्थिक संकट उत्पन्न करेगा। अमेरिकामें आर्थिक राजनैतिक समस्या विषम होगी। श्रमिकवर्गमें असन्तोष बढनेसे कारखानोंमें हड़ताल की स्थिति उत्पन्न होगी। सात्विक एवं तामसिक प्रजामें भी संघर्ष होगा। नवम्बरका अंतिम सप्ताह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दिसम्बर मास प्रेसिडेण्ट ट्रूमेनके लिए अधिक अशान्ति कारक रहेगा। इसी अवधिमें यूरोप स्पेन जर्मनी मध्यपूर्वीय एशिया अरबराष्ट्र और तुर्कीमें हिमपात्र वायु और समुद्री तूफान गृहयुद्ध भूकम्पादि आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रवोंसे बहुत हानिहोगी। पश्चिमोत्तरीय भारत और सीमाप्रान्तमें भी उक्त उत्पात होना सम्भव है। अखिल भारतीय नेताओं एवं प्रजाके प्रतिनिधियोंका संगठन और एक स्थानमें सम्मेलन होगा। अन्य राष्ट्रोंसे भारतके सम्बन्ध सुदृढ होंगे स्थानाभावके कारण अधिक विचार यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं। सविस्तर आगामीवर्षका भविष्य हमारे 'श्रीविश्वविजय-पंचांग'में देखिये।

अन्तःकालीन सरकार और राष्ट्र-भविष्य

(ले०-श्री प्रो० वी० सी० महता, एम० आर ए० एस)

सैकड़ों वर्षोंकी तपस्या, त्याग और माननीय नेताओंके अथक परिश्रमके अनन्तर आज भारत-वासियोंको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि वह अपने आपको स्वतन्त्र देशके निवासियोंके रूपमें देखे। यद्यपि पूर्ण स्वतंत्रता हम इसे नहीं मानते, फिर भी अन्तःकालीन सरकारकी स्थापना पूर्ण स्वतन्त्रताके अन्तिम मार्गकी वह सीढ़ी है जिससे उसे बहुत जल्दी प्राप्त किया जा सकता है। आज भारत ही नहीं अपितु सारे संसारकी आंखें अन्तःकालीन सरकार और राष्ट्रिय भाविष्य पर लगी हुई है, अतः हम आपके समक्ष ज्योतिषके आधार पर भविष्यका दिग्दर्शन करते हैं:—
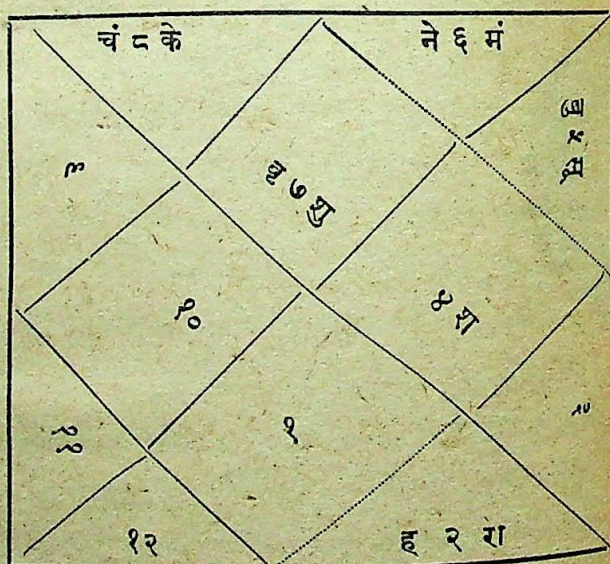
संवत् २००३ भाद्रपद शुक्ला सप्तमी चन्द्रवार तारीख २ सितम्बर १९४६ दिन को स्टे० टाइम ठीक ११ बजे दिल्लीके राज्य-भवनमें अन्तःकालीन सरकारके हाथमें भरतीय शासनका अधिकार सम-र्पित किया गया, उस समयके दिल्लीके स्वोदयोमान के अनुसार लग्नकुण्डली यहाँ दी जाती है। इष्ट १२।१६ सूर्य ४।१५ लग्न ६।२०। ३८।११ है।

मूंडेन ज्योतिष के आधार पर

लग्न अर्थात् प्रथम स्थान कुण्डलीमें बहुत महत्व का है, क्योंकि इसी से देशकी सर्वसाधारण जनता (जनरल पब्लिक) सरकार चलाने वाले कर्णधार, अधिकारियों की मनोवृत्ति, बल तथा कार्य कुशलता का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। इस कुण्डलीमें सबसे अधिक बलवान् व श्रेष्ठ योग लग्न में ही हुआ है। लग्न में शुक्र और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहस्पति दोनों शुभ ग्रह बैठे हैं परन्तु दोनोंका Conjunction अर्थात् युति अन्तःकालीन सरकार के स्थापित होनेके ठीक ७ घण्टे बाद हुई है, अतः इन दो ग्रहोंका युतिकाल पूर्ण नहीं होगा तबतक हमारे नेताओंको बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। तथा जनतामें भी कुछ अशान्ति रहेगी।

शुक्र राक्षसोंका गुरु है और बृहस्पति देवताओं का, इस समय इन दोनों ग्रहोंका युद्ध चल रहा है, अतः हिन्दु-मुस्लिम मतभेद रहेगा अर्थात् लीग और कांग्रेसमें समझौता नहीं होगा और स्थान-स्थान पर हिन्दु-मुस्लिम दंगे होंगे। सात घण्टे का समय उक्त ग्रहों को पास करनेमें प्रायः २॥ महीने लगेंगे अतः हमारा अनुमान है कि २॥ महीने बाद अन्तःकालीन सरकारका कार्य सुचारु रूपसे चलने लग जायगा। लीगके कुछ नेता भी सम्मिलित हो जायेंगे और सब प्रकारसे देशमें शान्ति स्थापित हो जायगी।

ता० २६ नवम्बर को बृहस्पति शुभ ग्रह लग्न के समान-अंशसे युति करता है अतः ता० २६ नवम्बरसे अन्तःकालीन सरकारको बहुत सफलता मिलने लगेगी। देशकी खाद्य व वस्त्रकी स्थिति अधिकाधिक सुधरने लगेगी तथा जनसाधारणके उपयोगकी चीजोंके भाव भी पर्याप्त नीचे हो जायेंगे, उस समय लग्नकी स्थिति बलवान हो जावेगी। इस सरकारकी स्थापनाके समय तुला लग्न का आना बहुत श्रेष्ठ है, क्योंकि हमारे राष्ट्र के सर्वेसर्वा पूज्य बापूजी का भी जन्म-लग्न तुला है और उनके उत्तराधिकारी युवक-हृदयसम्राट अन्तः-कालीन सरकार के प्रधानमंत्री श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरूका भी सूर्य लग्न तुला है तथा उनकी जन्मकुण्डलीमें तुलाराशि दशम-राज्य स्थानमें पड़ी है, अतः इन दो महान् विभूतियोंका इसमें विशेष हाथ रहेगा और इनके कारण ही इस सरकार को सच्ची सफलता मिलेगी।

ग्रहयोग देखते Constitutiarl Assembly में लीग सम्मिलत हो जायगी क्योंकि उस वक्त तक दोनों ग्रहोंका Conprotion अंतःकालीन सरकार की स्थापना समय की कुण्डली में हो जायगा।

धन स्थानमें— चन्द्रमा और केतु स्थित है और इस भवन का स्वामी मंगल १२वें स्थान में है। १२वां स्थान व्यय व अड़चनों का है, चन्द्रमा और केतु का Conj. अच्छा नहीं माना जाता अतः इस सरकारको, आर्थिक कठिनाईयोंका थोड़ा सामना करना पड़ेगा। व्यय भी विशेष होगा। और जन साधारणकी आर्थिक स्थितिको सुधारने के लिए इन्हें कुछ नये टैक्स भी लगाने पड़ेंगे। जिनका प्रभाव निर्धन जन साधारण पर न होकर धनवान् और सम्पन्न व्यक्तियों पर पड़ेगा। २२ जनवरी सन १९४७ के बाद इनको आर्थिक सफलता मिलेगी क्योंकि उस समय Transit का बृहस्पति धन स्थान में पहुंच जावेगा. कुछ धनवान् व्यक्ति इस सरकारका गुप्त विरोध करेंगे क्योंकि मंगलका १२वें स्थानमें स्थित होना धनवान् गुप्तशत्रु उत्पन्न करना है।

तीसरा स्थान—का स्वामी बृहस्पति लग्नमें स्थित है। तीसरा स्थान रेल, तार, कम्यूनिकस पोस्टल सरविसें, जन साधारणकी आयात निरयात इत्यादिका सूचक है, इसका द्योतक ग्रह बृहस्पति लग्नमें स्थित है अतः इन डिपार्टमेण्टोंमें पर्याप्त उन्नति या वृद्धि की जायगी। जनताकी प्रत्येक सुविधाका ध्यान रखा जावेगा तथा नाना प्रकार की सहुलियतें मिलेंगी। २६ नवम्बर को इसका Exect Conj. रेडिकल लग्नसे हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः उस समय तक बहुत सुधार हो जायगा।

चतुर्थ स्थान– इस स्थानसे भुमि, खेती व होम डिपार्टमेंट सम्बन्धी सब बातें देखी जाती हैं। इस स्थानका स्वामी शनि दशवें स्थानमें स्थित है, जो कुण्डलीमें सबसे उत्तम स्थान माना जाता है तथा तुला लग्नमें शनि बहुत ही कारक व श्रेष्ठ ग्रह है, क्योंकि यह केन्द्र त्रिकोणेश होने से सर्वदोष रहित तुला लग्नमें माना गया है। इस ग्रहकी House पोजिशन बहुत ही उत्तम है अतः इस अन्तः-कालीन सरकारको अवश्य सफलता मिलेगी।

खेती बाड़ी व भूमिके मामलोंमें सुधार होगा, भारतवर्ष व Government के अन्तर्गत Corruption रिश्वत खोरी इत्यादिको समूल नष्ट करनेके लिए नाना प्रकारके नये विभाग व योजनाएँ बनेंगीं तथा सर्वसाधारण जनता परके अन्याय ब्लेक मारकीट इत्यादि निश्चित रूपसे नष्ट कर दिए जावेंगे। चतुर्थ स्थानका स्वामी अपने स्थानको पूर्ण रूपसे देखता है अतः गृह-विभाग (होम डिपार्टमेण्ट) को इस अन्तःकालीन सरकारके समयमें विशेष सफलता प्राप्त होगी।

पंचम स्थान--विद्या विज्ञान आविष्कारका सूचक है, इस स्थानका स्वामी शनि दशमें स्थानमें स्थित है अतः इस ओर भी विशेष उन्नति होगी। नाना प्रकारके कल कारखाने खुलेंगे तथा विद्या व विज्ञानकी उन्नतिके लिए पर्याप्त व्यय होगा। इस सरकारके समयमें ऐसे नए आविष्कार होंगें जिससे जन-साधारणको बहुत लाभ एवं सुविधायें होंगी। नाटक सिनेमा व सामाजिक उन्नति भी होगी। शनि का स्थान बल बहुत उत्तम है।

छठा स्थान :— इस स्थानसे अन्तःकालीन सरकार की शत्रु-बाधाएँ व जन-साधारण-की शारिरिक स्थितिका सम्बन्ध है, यह स्थान बिगड़ा हुआ है। मंगल और नेपचून ग्रह की दृष्टि इसपर पड़ रही है अतः यह बात भी निश्चित है कि इस सरकारको नाना प्रकारके खुले व छुपे शत्रुओंका सामना करना पड़ेगा, तथा इसको मानसिक अशान्ति बहुत रहेगी, एक-न-एक दल इसके विरुद्ध प्रायः रहेगा। परन्तु वृहस्पतिका लग्न में स्थित होना यह बतलाता है कि इस सरकारको वे लोग किसी प्रकार की विशेष हानि नहीं पहुंचा सकेंगें। कभी २ तो इस सरकारको धनवान् व गरीब मजदूर वर्ग दोनोंके विरोधका सामना करना पड़ेगा। मुसलमान लोगभी समय २ पर विरुद्ध होंगे, परन्तु इस सरकार के पावन उद्देश्य को वे कोई ठेस नहीं पहुंचा सकेंगे और यह सरकार अनेकों बाधाओंके होते हुए भी धीरे २ अपने वास्तविक मार्ग पर अग्रसर होगी। जन साधारणके स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव होगा तथा ऐसी योजना की जावेगी जिससे जन-साधारणमें बल और शक्ति का प्रादुर्भाव हो, स्थान २ पर व्यायाम शालाएँ व दल आदि सरकार द्वारा संचालित किये जावेंगे। तथा जन साधारणमें स्फूर्ति व बल बढ़े ऐसे साहित्य का प्रकाशन भी सरकार-द्वारा होगा।

सप्तम थान– अत्यन्त महत्वका स्थान है। इस स्थानसे सारा अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध देखा जाता है। इस स्थानसे दूसरे देशोंकी हमारे देशसे सहानुभूति व वैमनस्य तथा अन्य राज्योंका राजनैतिक सम्बन्ध देखा जाता है।

इस स्थानका स्वामी मंगल १२ वें स्थानमें स्थित है, यह स्थान मंगलके लिए ठीक नहीं है, इस लिए प्रारम्भमें अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध कुछ देशोंसे अच्छा नहीं रहेगा। तथा उस ओरसे बहुत मानसिक अशांति व कई प्रकारके संदेहोंका डर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा, परन्तु बृहस्पति शुक्र और शनि इस स्थान को पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं अतः धीरे २ अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध बहुत अच्छे हो जायेंगें, दो बड़े देशोंसे अत्यन्त घनिष्ठता हो जायगी व उनके साथ व्यापारिक सम्बन्ध भी बहुत घनिष्ठ हो जायेंगे। बृहस्पति और शुक्रकी इस स्थान पर दृष्टि स्पष्ट बतलाती है कि हमारी इस सरकारकी नीति लड़ाई झगड़े की कभी नहीं रहेगी और सदा तटस्थ रहनेकी व विश्व शान्तिकी नीति अपनाई जावेगी। भारत को सदा लड़ाईकी आगसे बचाया जावेगा और हमारा ऐसा अनुमान है कि अब भारतवर्ष लड़ाईकी ओर नहीं बढ़ेगा। इस समय तो इसकी आन्तरिक स्थिति सुधारने की ओर ही इस सरकार का विशेष ध्यान रहेगा और उन्हीं देशोंसे विशेष सम्बन्ध स्थापित करेगा—जिनसे भारतीय जन साधारणको इस सम्बन्धसे कुछ लाभ हो। तथा आवश्यक वस्तुएं वहांसे प्राप्त हो सकें। बृहस्पति-शुक्र की दृष्टि यह भी स्पष्ट बतलाती है कि अंतर्राष्ट्रिय सम्बन्ध इस सरकार से सदा गौरव पूर्ण रहेगा और भारत के गौरव का यह सरकार सदा ध्यान रखेगी; क्योंकि लग्नमें स्थित दोनों ग्रह अत्यन्त गौरवशाली हैं। मंगल उग्र हैं अतः समय २ पर समयानुसार हमारे अन्तर्राष्ट्रीय अधिकारी उग्र भी हो जायेंगे परन्तु वह उग्रता भारतका गौरव रखनेके लिए ही होगी।

अष्टम स्थान—प्रजाके मरण, व दुख दर्द, तेल, रंग पेट्रोल फोटोग्राफी मेडिकल आविष्कार तथा इस अंतःकालीन सरकारकी आयु इत्यादिका है। इस स्थानमें राहु और हर्शल स्थित है तथा चन्द्रमा केतु दूसरे स्थानमें बैठकर इसको देखते हैं। राहु का मित्र क्षेत्री होना तो शुभ है, परन्तु अष्टम स्थान में बैठना अशुभ है; चन्द्रमा और केतुका योग होना भी अशुभ हैं; अतः इस सरकारके आरम्भमें मरण संख्या बढ़ेगी। तेल, रंग पेट्रोल आदि २का भी बाहुल्य होगा। पर समय २ पर इस सरकारको समाप्त करनेकी घृणित चेष्टाएं की जावेंगी। एकाध मौका तो ऐसा भी आयेगा कि जिससे जनताको यह आशंका हो जावेगी कि अब इस अन्तःकालीन सरकारकी समाप्ति हुआ चाहती है, परंतु अष्टम स्थानका स्वामी लग्नमें बृहस्पति युक्त स्वगृही बैठा है अतः यह सरकार अपना कार्य पूरा किए बिना कभी समाप्त नहीं होगी और इसकी समाप्ति पूर्ण स्वतंत्रता ही होगी। अनेकों बाधाओंके होते हुए भी इसको सफलता मिलेगी।

नवम स्थान—समुद्री-व्यापार विदेशी-व्यापार तथा जन साधारणकी धार्मिक वृत्ति व अंतःकालीन सरकारके भाग्य आदिका सूचक है। यह स्थान इस कुण्डलीमें सब प्रकारसे सुधरा हुआ है। इस स्थानका स्वामी सूर्यके साथ लाभ स्थानमें स्थित है, तथा बृहस्पति जैसे सौम्य ग्रहकी इस स्थान पर पूर्ण दृष्टि है, अतः अंतःकालीन सरकारका भाग्य निश्चित रूपमें उत्तम है, तथा इसके हाथसे भारत का अवश्य उद्धार होगा। भाग्येश का लाभ स्थान में जाना भाग्यकी प्रबलता बतलाता है, अतः इस सरकारकी उन्नति ही होगी और भारतका भाग्योदय भी होगा। वैदेशिक व्यापार व व्यापारिक सम्बन्ध भी अच्छे होंगे। जिससे जन साधारणको दैनिक जीवन में पर्याप्त सुविधा होगी। सस्ती-भाड़ा व Currency System भी लेवल पर आजायेगा। कुछ लोग धार्मिक जीवनको राजनैतिक जीवनमें घुसेड़नेका प्रयत्न करेंगे। पर वे निष्फल होंगे। भारतके व्यापारिक क्षेत्रमें भी इस सरकार द्वारा विशेष उन्नति होगी।

दशम स्थान—अत्यन्त महत्वका है। अन्तःकालीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारकी स्थिति, नीति, व्यवस्था, इसमें परिवर्तन, इसके प्रधान उपप्रधानकी स्थिति सरकारकी राज्य-व्यवस्था तथा संचालन व उन्नति इत्यदि सारी बातों का सूचक यह स्थान है। इस स्थानसे प्रजाकी राज्य भक्ति तथा इस सरकारके प्रति भावनाएँ आदि देखी जाती हैं।

इस स्थान में शनि १० अंश का स्थित है और इस स्थानका स्वामी चन्द्रमा अपनी नीच राशिमें द्वितीय स्थान में १ अंश का बैठा है जो चलितमें लग्न स्थानमें आगया है, लग्न में बृहस्पति और शुक्रका सम्बन्ध इस चंद्रसे होगया है अतः इस चंद्रमाको पूर्ण बल इन दो ग्रहों से मिला है।

दशमेश का चलित में स्थान परिवर्तन अन्तःकालीन सरकार के सदस्यों Personal में थोड़ा परिवर्तन करवाता है, अतः हमें जँचता है कि चालू सदस्योंमेंसे दो-तीन बदल जायेंगे और उनकी जगह दूसरे आवेंगे। इसके बाद अन्तःकालीन सरकार में कोई खास परिवर्तन नहीं होगा। यह परिवर्तन २५ नवम्बरके पहले पहले सम्भव है, उसके बाद इस सरकारका विशेष ठोस कार्य प्रारम्भ हो जायगा और दिनों-दिन इसकी प्रगति बढ़ेगी। स्थिरता बनाये रखनेके लिये शनि दशम स्थानमें पूर्ण बलवान् होकर बैठा है। चन्द्रमा और केतुका संयोग इस अन्तःकालीन सरकारके प्रमुखकी मानसिक अशान्तिका द्योतक है, परन्तु जब बृहस्पतिका ट्रॉजिट इस रेडिकल मून पर हो जाएगा तो उनकी सारी चिन्ताओंके बादल दूर हट जावेगें और सब ओरसे प्रसन्नता व सफलता मिलेगी। २० जनवरी १९४७ से बृहस्पतिका ट्रांजिट इस चन्द्रमा पर प्रारम्भ होजाता है, वहाँसे ही इस सरकारकी सफलता बहुत वेगसे प्रारम्भ होगी तथा सब प्रकारकी व्यवस्था करनेमें यह सरकार सफल होगी; उस समयसे विश्व-शांति स्थापित करनेमें भी हमारी वर्तमान सरकारका प्रयत्न प्रारम्भ होगा।

एकादश स्थान—अन्तःकालीन सरकारके मित्रों और सहायकों का है, इस स्थानसे पारलियामेण्टका सम्बन्ध तथा ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी इस सरकारपर की नीतिका दिग्दर्शन किया जा सकता है। तथा प्रजा व देशके लिये सब प्रकारके लाभ व जन साधारणके उपयोगी वस्तुओंका सुलभतासे उपलब्ध होना आदि का द्योतक है। यह स्थान सूर्य और बुध के कारण बहुत ही बलवान् हो गया है। सूर्य लाभ स्थानका स्वामी होकर अपने ही स्थान में बैठा है, यह बतलाता है कि इसके मित्रोंकी कमी न रहेगी। अन्तर्राष्ट्रीय बड़े बड़े देशोंकी नैतिक सहानुभूति व घनिष्ठता पूर्ण रूपसे रहेगी। पारलियामेण्टमें भी इस सरकारके बहुत सहायक रहेंगे तथा ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भी इसकी प्रतिष्ठा करेगी। ब्रिटिश गवर्नमेण्टका सम्बन्ध इसके साथ बहुत गौरवपूर्ण रहेगा। बुध भाग्येश होकर इसके साथ बैठा है अतः वर्तमान पारलियामेन्ट पूर्ण रूपसे इसके साथ रहेगी। हो सकता है कुछ सदस्य इसके विरुद्ध रहें, पर कभी इसका वे कुछ बिगाड़ नहीं कर सकते। सूर्य स्थान व राशि दोनों से बलवान् है अतः सदा इसको प्रकृति साथ देगी और प्राकृतिक सहायता किसी-न-किसी रूपमें इस सरकारको बराबर मिलेगी। सूर्यका लाभ स्थानमें स्वगृही होकर बैठना यह बतलाता है कि जन-साधारणकी आवश्यक वस्तुओंका सब प्रकारसे बाहुल्य होगा तथा गत ५-७ वर्षोंमें जो भारतवासियोंने कष्ट देखा वह धीरे-धीरे दूर हो जायेगा। प्रजाकी सदा इसके प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धा रहेगी। नवम्बर में होने वाले अ०भारत वर्षीय कांग्रेस अधिवेशनको पूर्ण सफलता मिलेगी।

बारहवाँ स्थान— कुण्डलीका अन्तिम स्थान है और अशुभ स्थान भी। इसका सम्बन्ध विशेषतया व्यय,बाधाएँ, उत्पात,लड़ाई झगड़े,तथा गुप्त शत्रुओं से हैं। इस स्थान पर मंगल स्थित है, यह गुप्तशत्रु अधिक रूपमें उत्पन्न करता है, परन्तु अन्तमें स्वयं यह उनको समाप्त भी करदेता है। मंगल का १२ वें स्थान में बैठना विशेष रूपसे खर्चे का द्योतक है, अतः इस सरकार को नाना प्रकार के आर्थिक खर्चों को बढ़ाना पड़ेगा, परन्तु इसका उपयोग जन साधारण पर ही होगा। अनेक बाधाओंके होते हुए भी बृहस्पति और शुक्रके लग्नमें होनेसे और शनिकी मंगल पर पूर्ण दृष्टिसे सब प्रकारके उत्पात व झगड़ोंको यह सरकार दबा लेगी तथा शांति स्थापित करने में सफल होगी।

इस प्रकारसे जनरल भविष्य इस अंतःकालीन सरकारका ज्योतिषके आधार पर प्रतीत होता है। दशा पद्धतिके अनुसार लग्न प्रवेशके समय बृहस्पति की दशा चालू है, अंतःकालीन सरकार की स्थापना के समयकी कुण्डलीमें बृहस्पति लग्नमें स्थित है तथा लग्नेश शुक्रके साथ युति कर रहा है, अतः यह दशा बहुत अच्छी व उज्ज्वल भविष्य द्योतक है। इस दशामें अभी अंतर मंगलका चालू है और बाद में राहुका, इस प्रकार प्रायः ३ बर्ष और २०दिन की यह बृहस्पतिकी दशा शेष है, और बादमें शनि की दशा प्रवेश होती है। शनि इस कुण्डलीमें सबसे अधिक महत्वशाली व कारक है। अतः बृहस्पतिकी दशाके ३ वर्ष और २० दिन तक तो इस अन्तःकालीन सरकारके रूपमें ही राज्यशासन बढ़ेगा और जब शनिकी दशा प्रवेश हो जायगी तब भारतको इसी अन्तःकालीन सरकार के द्वारा पूर्ण स्वतन्त्रता मिल जायगी।

शनि केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी होकर दशम स्थानमें पूर्ण बलवान् होकर स्थित है, अतः पूर्ण राजयोग कारक है। और इसीलिए इसकी दशा पूर्ण स्वतन्त्रता दिलाने वाली हैं। यह दशा १६ वर्ष की होती है, अतः इसकी १६ वर्षकी दशामें भारत सब प्रकार उन्नतिके शिखर पर पहुंच जायगा। इसकी आर्थिक, वैज्ञानिक, व्यापारिक व राजनैतिक स्थिति संसारके किसी भी देशसे कम नहीं रहेगी।

आत्म-चिन्तन

[श्री० पं० दयानन्द जी जोशी]

शुद्ध हूँ मैं बुद्ध हूँ मैं अजर-अमर-अविनाशी हूँ।
सबका साक्षी द्रष्टा हूँ मैं सबका स्वयं प्रकाशी हूँ॥
बन्धनसे हूँ दूर निरन्तर व्यापक सर्व प्रवासी हूँ।
अलख-निरञ्जन अगम-अगोचर रहता सदा उदासी हूँ॥
कर्त्ता हूँ मैं धर्त्ता हूँ मैं पालक और विनाशी हूँ।
सबमें हूँ और सबसे न्यारा सत् चित् आनँद राशि हूँ॥
भाव यही रख प्रतिक्षण मनमें ही घट-घट वासी हूं।
सच्चा ज्ञान यही है भाई! स्वानंद घन अभ्यासी हूँ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिषके अनुभूत योग

[लेखक—श्री एस. गुप्ता]

'श्रीस्वाध्याय'के प्रेमी पाठकोंके लाभार्थ यहां अक्तूबर और नवम्बर मासके सम्बन्धमें अपने विचार नीचे प्रकट कर रहा हूं। यह विचार ज्योतिषके प्राचीन और दुर्लभ ग्रन्थोंके आधार पर और कई वर्षोंके अनुभव पर निर्भर हैं, अतः आशा है कि पाठक विशेष लाभ उठा सकेंगे।

अक्टूबर १६४६

ता० १ अक्तूबर १६४६ को ग्रह स्थिति इस प्रकार है। सूर्य-कन्यामें, बुध कन्यामें, मंगल तुलामें, गुरु और शुक्र तुलामें, केतु वृश्चिकमें, राहु वृषमें और शनि कर्क राशिमें। इसीदिन बुध सम गतिसे पश्चिममें उदय होगा, पहले कुछ तेज, बादमें काली मिर्च और रुई में १॥)-२) मनकी मंदीका योग है, जरीला बम्बई में १५) का मंदा आ सकता है। इसी दिन बृहस्पतिका शीघ्रातिशीघ्र गतिमें हो जाना इस मंदीको रोकने का कार्य करेगा।

ता० ३ को बुधका तुलाराशिमें प्रवेश होगा, इसका साधारण फल इस प्रकार है:—

यदा च तुलाराशिस्थो निशाकरसुतः स्थितः।
मेघस्य वर्षणं तत्र मेदिनी कलहान्विता॥

अर्थात् जब तुला राशि पर बुध स्थित होवे तब मेघ बहुत बरसें और पृथ्वी पर लड़ाई हो। अतः इन दिनोंमें बादलोंकी अधिकता रहेगी और कई एक स्थानोंसे लड़ाईके समाचार सुनने में आवेंगे। इसी दिन शुक्रका वृश्चिक राशिमें प्रवेश होगा। यह शुभ है, शुक्रका अगली राशिमें संक्रमण जनवरीके अन्तमें होगा, अतः यह समय सुकाल और सुख व सम्पति का है।

वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्य समर्घता।
लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुखं स्वस्थं प्रवर्तते॥

अर्थात् सब धान्य सस्ते हों। सब जगह सुख हो और देशमें शान्ति हो। साथ ही इस दिन शुक्र का मंद गति हो जाना भी इसकी पुष्टि करता है। हर प्रकारके अनाजका भाव मंदा हो।

ता० ७ को बुध स्वाति नक्षत्रमें प्रवेश करेगा। रुई, कपास और गेहूंके भावमें मंदेका प्रभाव पड़े।

ता० ८ को शुक्र अनुराधा नक्षत्रमें प्रवेश करेगा। भावमें मंदीका प्रभाव पड़ेगा।

ता० १० को सूर्य चित्रा नक्षत्रमें प्रवेश करे, अगले १३ दिनोंमें चमड़ा, गेहूँ, सूत और रुईके भाव में तेजीका प्रभाव पड़े, अर्थात् मंदा आशासे कम हो। इसी दिन बृहस्पति स्वातिके दूसरे चरण में प्रवेश करेगा। पूर्व एशियाके स्थानोंके राज्याधिकारमें विशेष परिवर्तन होना पाया जाता है।

ता० १३ को मंगल विशाखामें प्रवेश करेगा। अगले अठारह दिनोंमें कपास, गेहूं, जौके भावमें तेजीका प्रभाव पड़े।

ता० १५ को बुध मंद गति हो जाएगा, वस्तुओं के भाव स्थिर हो जावेंगे। घटा-बढ़ी मामूली होगी।

ता० १७ बुध विशाखामें प्रवेश करेगा। रुईके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावमें मंदीका प्रभाव पड़ेगा, अनाजका कहीं सुभिक्ष और कहीं दुर्भिक्ष हो। इसी दिन बृहस्पति अतिचारावस्थामें पश्चिममें अस्त होगा। रुईके भावमें २), २॥) मन की तेजी का अनुभूत योग है।

ता० २६को बुध मन्दगतिसे वक्री रुईमें जबर मन्दी होना पाया जाता है।

ता० २७को बुध अनुराधामें प्रवेश करेगा। सर्वप्रकारके धान्य मंदे हो, प्रजा सुखी हो।

ता० २८ को सूर्य स्वाति नक्षत्रमें प्रवेश करेगा, सण, गुड़, शक्कर और रुईके भावमें तेजीका प्रभाव डालेगा, अथात् मंदे को किसी सीमा तक रोकेगा। इसी दिन मंगल वृश्चिक राशिमें प्रवेश करेगा। प्राय: सब वस्तुओंके भावमें तेजी हो। राजाओंमें परस्पर द्वेष बढ़े। प्रमाण इस प्रकार है—

यदा वृश्चिकराशिस्थो जायते च महीसुतः।
महर्घं सर्व द्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्।

नवम्बर

ता० १ नवम्बरको मंगलका अनुराधा नक्षत्रमें प्रवेश होगा। किसानों की खुशी का समय है। २० नवम्बर तक वस्तुओंके भावमे मंदेका प्रभाव पड़े।

ता० ६ को सूर्य विशाखामें प्रवेश करेगा, सोना चांदी, सूत, चावल, रस, पदार्थ (गुड़, शक्कर, खांड) और लकड़ीका भाव तेज होगा। इसी दिन केतु ज्येष्ठाके पहले चरण में प्रवेश हुआ, आगे मामला मंदी का जानें।

ता० १२ को बुध मंद गत्या वक्री होगा। चलती सस्ताईमें मामला मंहगाईका आया है। गुड़ व शक्करका भाव तेज हो। अनाजका भाव कुछ मंदा हो। इसी दिन शुक्र मंद गतिसे पश्चिममें अस्त होगा। रुई, चांदीके भावमें जबर पलटा। मामला तेजीका पाया जाता है।

ता० १५, बुध मंद गत्या पश्चिममें अस्त। रुई में १०, १५ की घटा बढ़ी हो। पहले तेजी बाद में मंदा।

ता० १६ को शुक्र वक्र गतिसे विशाखामें प्रवेश करेगा, बड़ी मंदीका द्योतक है, विशेषतया अनाजमें।

सूर्य १६ नवम्बर शनिवारको प्रातःकाल वृश्चिक में संक्रमण करेगा। अत: मार्गशीर्ष मासमें वस्तुओं का भाव तेज हो जावेगा।

यदाऽर्कों वृश्चिके याति तदाऽन्नस्य महर्घता।
ऊर्णिकं सर्व द्रव्याणि स्वल्पार्घं च प्रदीयते॥

अर्थात्—सब प्रकारके अन्न मंहगे हो। ऊन की वस्तुएं तथा सोना चांदी आदि द्रव्य भी कुछ मंहगे हों।

ता० १६ को सूर्य का अनुराधा नक्षत्रमें प्रवेश होगा। गेहूँ मक्की, मूंग, मोठका भाव मँहगा हो।

ता० २० मंगल ज्येष्ठामें प्रवेश करेगा, चांदीका भाव चमकेगा, सावधान। इसी दिन शुक्र बक्रगतिसे तुलामें प्रवेश करे। रुईके भावमें अच्छी मंदीका प्रभाव डालेगा।

ता० २१ बुध वक्री मंदतम गतिमें हो जावेगा। रुई मंदी जाय, और चीजें तेज।

ता० २३ को बुध मंद गतिसे विशाखामें प्रवेश करेगा। रुईकी मंदीको पुष्ट करता है।

ता० २४को शुक्र मंद गतिसे पूर्वमें उदय। रुई के भावमें पलटा, मामला तेजीका पाया जाता है।

ता० २५ को वृहस्पति विशाखाके पहले चरण में मंदीका द्योतक है। सावधान।

ता० २७ को बुध शीघ्र गतिसे पूर्व में उदय होगा। रुई कालीमिचके भावमें अच्छी तेजीका योग बन गया है।

ता० ३० को बुध समगतिसे मार्गी। अनाज के मंदेका यह योग समाप्त हुआ।

सूचना—मोटे मोटे सभी आवश्यक योग ऊपर साधारणतया दे दिये गये हैं। ग्रहोंका बलाबल तथा सूक्ष्म गणित विचाराधीन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजी मन्दीके अनुभूत योग

—:**:—

[लेखकः—ज्योतिर्विद् श्रीराजारामजी जैन, हस्तरेखा अङ्गपरीक्षा विशेषज्ञ]
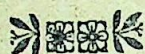
ता० ५ अक्टोबरको बुध पश्चिम दिशामें उदय हुआ, चांदी सोना पर तथा रुई पर अच्छी मन्दी लाता है, इस बार भी लावेगा।

१० अक्टोबरको चित्रा नक्षत्रमें सूर्य प्रवेश करेगा, दीपक जलते रुईमें तेजी की रंगत जानिए।

११ अक्टोबर दोपहर बाद शुक्रवार रेवती नक्षत्र रुई तेजी करता है।

१७ अक्टोबर गुरुवार पुष्य रुई तेजी करता है। तुला राशि गत सूर्य संक्रमण ३ बजे बाद मन्दी लावेगा, इसी दिन गुरु ग्रह पश्चिममें लोप हुआ रुउ पर विशेष तेजी किया करता है, किन्तु तारीख १८ को तिथि क्षयमें शुक्रदेव वक्री हुए जो विशेष मन्दी चाहते हैं। ऐसे अवसर पर व्यापारिक रुख लेते व्यापार करना हितकर होगा। गुर्वस्त पश्चिमे चांदी सोनाके भावको गिराता है, शुक्र उसके प्रतिकूल तेजीका द्योतक है। व्यापारियोंको ऐसे अवसर पर चांदी सोना रुईका व्यापार बहुत सोच समझकर करना चाहिये। अन्यथा ना समझीमें भारी हानि हो जाना सम्भव है।

२२ अक्टोबर धन तेरसमें वृश्चिकके बुधः तेजी को लावेगा, परन्तु साधारण ही जानिए।

२७ अक्टोबर को वृश्चिक राशि में मंगल पहुंचा जो चांदी सोना पर विशेष तेजी लाता है। अगले दिन २८ अक्टोबर दोपहर बाद अस्त हुआ जो बढे हुए भावों को अचानक गिरा देगा।

३ नवम्बरको बुध वक्री हुआ जो रुई चाँदीको तेज करेगा। ६ नवम्बरको बुध पश्चिम दिशामें लोप हुआ जो चांदी के भावों में विशेष तेजी करता है। रुई पर मन्दी लाया करता है और अवश्य लावेगा।

९ नवम्बरको शनिवार व्यतीपात दिन के २ बजे तक रुई तेज कर देगा।

११ नवम्बरको सोमवार मृगशिर नक्षत्र रुई तेज करेगा तथा ११ नवम्बरको ही बक्रगतिमें चलने वाला शुक्र सूर्यनारायण की किरणें मन्द पड़ते समय पश्चिम दिशा में लोप हुआ यह रुई के सौदागरों को तेजी का खास एलान है। ११ नवम्बरको दो तरफा घटाबढ़ी खूब चलते हुए तेजीका ही ट्रेंड बन जावेगा।

१४ नवम्बरको गुरु पूर्वमें उदय हुआ जो रुई के बढ़े हुए भावों को नीचा गिरावेगा। १५ नवम्बर को शुक्रवारमें आश्लेषा नक्षत्र उसका समर्थक है। पर १६ नवम्बरको शनिवारी अष्टमीमें शनिदेव बक्री होने की तैयारी करेंगे, इस लिए व्यापारी समाज में तेजीकी जबरदस्त लहर उठेगी।

२२ नवम्बरको शुक्रदेव पूर्व दिशामें उदय हुए जो शनिदेवके मित्र होनेके नाते उनकी स्कीम का भरसक समर्थन करते हुए रुई बाजारकी काफी ऊंचाई में ले जावेंगे।

२६ नवम्बरको रुई बाजारमें मंदीका वातावरण बुधदेव मार्गी होनेके कारण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ दिसम्बरको शुक्रदेव मार्गी हुए जो चांदी में विशेष मन्दा रुई में विशेष तेजी लावेंगे।

मई सन् ४५ में मार्गी शुक्रने हिटलरके मरने की खबर से चांदी सोना पर भारी मन्दा किया था। अब इस बार देखिए कौन सी खबर पर चांदी सोना मंदा होवे। व्यापारियोंको ऐसी खबरोंको विशेष रूपसे समझते रहना चाहिए।

७ दिसम्बरको धनुराशि गत मंगल रुई की तेजीका कारण बनाता है। यह खबर व्यापारी ८ दिसम्बर को जान सकेंगें।

६ दिसम्बर सोमवार मृगशिर नक्षत्र रुई तेज होना बताता है।

१३ दिसम्बर शुक्रवार आश्लेषा मंदी का रिऐक्शन आवेगा।

२३ दिसम्बर कुधिया अमावस सोमवारी, मूल संयुक्त प्रायः हर वस्तुमें भारी मन्दा समझें।

२७ दिसम्बर धनुमें बुध रुई मन्दी। २६ दिसम्बर रविवार व्यतीपात सोमवार को रुई मन्दी होगी।

१ जनवरी बुध अश्विनी दोपहर बाद तेजी जानिए। रविवार रोहिणी नक्षत्र ८ दिसम्बर को ग्रहण हुआ, व्यापारिक वस्तुओंमें प्रथम मन्दी करके ३ मासमें प्रायः हर वस्तुकी विशेष तेजी करेगा।

आसौज शुदि ६ से पौष शुदि ६ तक प्रायः हर एक अनाज मंदा होगा, मार्गशीर्ष मासमें शुभ ग्रहोंकी शुभराशि में चतुर्ग्रही धान्य विशेष मंदा तथा विशेष वर्षा होगी।

यह रिपोर्ट चण्डू-पञ्चांगके आधार पर व्यापारियोंके सामने उपस्थित की जा रही है, ये अपने अनुभव किए हुए योग हैं। आशा है पाठक लाभ उठायेंगे।

चान्दी सोनेकी तेजी मन्दीके अचूक चान्स

[ले० श्री डा० ईश्वरीदयालुजी ज्योतिषी आयुर्वेदाचार्य]

अक्टूबरके जनरल चान्स

ता० ३ को बेचो ६ को खरीदो ७) की मन्दी।
ता० १० को बेचो १५ को खरीदो ६) की मन्दी।
ता० १६ को खरीदो २१ को बेचो ४) की तेजी।
ता० २१ को खरीदो २५ को बेचो ५) की तेजी।
ता० २५ को बेचो ३१ को खरीदो १०) की मन्दी।

नवम्बरके अचूक चान्स

ता० १ को बेचो ५ को खरीदो ५) की मन्दी।
ता० ६ को खरीदो १६ को बेचो ५) की तेजी।
ता० १६ को बेचो २३ को खरीदो ८) की मन्दी।
ता० २३ को खरीदो ३० को बेचो ५।।) की तेजी।

दिसम्बरके जनरल चान्स

ता० १ को बेचो ८ को खरीदो ४) की मन्दी।
ता० ६ को खरीदो १४ को बेचो ३।।=) तेजी।
ता० १६ को बेचो २३ को खरीदो ६।।) की मन्दी।
ता० २३ को बेचो ३१ को खरीदो ५) की मन्दी।

नोट—१२ घण्टेके अन्दर यदि बाजार सीधा अनुकूल न आवे तो सौदा उलट दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रह योग और वाणिज्य व्यवसाय

ता० ६ अक्तूबरको बुध गुरु युतिसे प्रजामें अशान्ति, व्यापारमें क्रान्ति, रुईमें १०) १५) चांदीमें ५) १०) और सोनेमें ५) १७) की मंदी आनेका योग है। आगे बीचमें कभी-कभी तेजीकी झलक दिखाई देगी पर वह तेजी टिकाऊ न होकर फिर ता० १६ अक्टूबर तक बाजार नीचा जायेगा। ता० १७ से २१ अक्टूबर तक रुई सोना चान्दी हल्दी मजीठ ईख तोरिया कपास वस्त्रका भाव तेज, बाद फिर मंदा, धान्य गुड़ खांड तिल तैल अलसी हलदी कपूर सुगन्धित पदार्थ नारियल चावल जौ सरसों आदि पदार्थ ता० २० अक्तूबर तक मंदे रहेंगे और २१।२२ को भावों में कुछ तेजी आ कर फिर मंदे होनेके योग हैं। अमावस्या ता० २४ अक्तूबरको तुलामें ५ ग्रह एकत्र होंगे। अतः व्यापारकी स्थितमें परिवर्तन होगा, अर्थात् मंदी वस्तुएं तेज और तेज वस्तुएं मंदी होंगी। ता० २६ अक्टूबरको शुक्र सूर्यसे द्विर्द्वादश योग करेगा अतः गर्भवती स्त्रियोंको पीड़ा तथा शृंगार विलास की सामग्रीका मूल्य बढ़ेगा। ता० १ नवम्बरसे सूर्य शनिके केन्द्रान्तरसे आगे बढ़ाने लगेगा यह सूत्र पिप्पली उड़द लोहा स्टील आदिके भावोंमें तेजी करेगा। ता० ६ नवम्बर का० शु० १५ को चर राशिमें चन्द्रगुरुका प्रतियोग सुभिक्ष एवं प्रजामें सुख शान्ति कारक है। इस मासमें शुक्र वृश्चिक राशिमें मंगलके साथ वक्री होगा, यह प्रजामें दुराचारकी वृद्धि और रुई सोना चांदीके भावमें तेजी तथा दूध घृतके भावमें कुछ मंदी करेगा।

ता० ११ नवम्बर को शुक्रास्त, १२ को गुरुका उदय होनेसे आर्य जनताकी उन्नति, अनार्योंमें असन्तोष, ता० २४ नवम्बरको पूर्वमें शुक्रोदय और मंगल गुरुका द्विर्द्वादशयोग धान्यभावोंमें कुछ मंदी तथा सोना और पित्तलमें भी मंदी करेगा। ता० २८ नवम्बरको बुधोदय होनेसे वस्त्र व्यापारके उद्योगकी उन्नति एवं मूलपदार्थ तथा खाद्यवस्तुओंका भाव तेज होगा।

ता० ३ दिसम्बरको सूर्य नेपच्यूनका तृतीयैकादश योग स्टीमर कम्पनी के शेयरों में मंदी लाने वाला है। ता० ४ दिसम्बर सूर्य राहुके समसप्तक योग पर चन्द्रमा की मित्र दृष्टि होनेसे शीत अधिक पड़े और खांड मद्य, मधुर रसादि पदार्थके भावोंमें कुछ मन्दी आनेका योग है। ता० ६ दिसम्बर को दक्षिण क्रांतिवृत्तके उत्तर-विक्षेपमें शुक्र मार्गी होकर पूर्वाकाशमें आगे बढ़नेसे शृंगार विलासकी वस्तुओंमें तेजी तथा रस पदार्थोंके भावमें मन्दी आवेगी। ता० १५ दिसम्बरको रुईके भावमें तेजी ता० १६ दिसम्बरको शुक्र हर्शलके षडष्टक योग से हीरा तथा बिजलीके सामानके भावोंमें तेजी। ता० २० दिसम्बरको बुध ज्येष्ठा नक्षत्रमें आनेसे चावल चणाके भावोंमें तेजी। ता० २३ दिसम्बर को सोमवती अमावस और मूला नक्षत्र होनेसे भड्डलीके बचनानुसार शीतकालीन धान्यकी वृद्धि करनेवाला यह योग है, अतः धान्य तथा रस कसके भावोंमें आगे मंदी होगी और राजा प्रजामें सुख शांति रहेगी।

ता० २३ को मित्र राशिमें सूर्य चन्द्र मंगलका योग होनेसे शस्त्रास्त्रोंका उत्पादन न्यून होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धातुओंके बढ़े हुए भावोंमें मंदी आवेगी। राजा सेनापति और जमींदार वर्गमें असन्तोष बढ़ेगा। भारतकी क्षत्रिय जातिका गौरव बढ़ेगा। ता० २६ दिसम्बर को बुध, हर्षलके प्रतियोगमेंसे निकलकर धनुराशिमें जा रहा है और २८ को अतिचारी बन रहा है अतः रेलवेमें असुविधाएँ आने तथा अकस्मात् अपघात होनेका योग है।

२८ दिसम्बर को स्थिर राशिमें बुध अतिचारी होगा, अतः व्यापारिक बाजारोंमें स्थिरता आवे और सत्त रूढ़ पक्ष तथा प्रजापक्षमें मतभेद उत्पन्न करेगा। ता० ३१ दिसम्बर को मंगल नेपच्यूनका केन्द्रयोग और साथ ही राहुसे षडष्टक योग भी होने से खनिज वस्तुओंमें अच्छी तेजीका उछाला आयेगा। तिलहन के भावोंमें भी तेजी होगी। ता० २ जनवरीको रविनेपच्यूनका केन्द्रयोग स्टीमर कम्पनीके शेयरोंमें तेजीकारक माना जाता है।

व्यापारिक तेजी-मंदी और ज्योतिष

[लेखकः-श्री प्रोफेसर बी० सी० महता M. R. A. S.]

अक्टूबर मास—ता० २७ सितम्बरसे २० अक्टूबर तक चांदी सोना रुईमें घटाबढ़ीके साथ तेजीके योग हैं। चांदी सोनेमें ता० ३से ६ अक्टूबर तक मंदीके रियक्शन की आशा है और ता० ७ से फिर तेजीकी ओर बाजार हो जावेगा सो ता० ११ तक अच्छी तेजी की आशा है। बाद ५-६ रोज फिर बाजार थोड़ा ढीला पड़ जायेगा और ता० १८ से पुनः तेजी आरम्भ हो जावेगी। ता० २६ तक बाजार काफी गर्म हो जावेगा।

नवम्बर मास—नवम्बरमें ता० ६ तक दुतरफी घटाबढ़ी चलेगी और ता० ७ से बाजार चांदी सोना भड़क जावेगा। ता० २१ तक जनरल तेजी रहेगी, अतः मन्दीके रियक्शनमें खरीद कर तेजीमें बेचनेकी पालिसी रखनी चाहिए। रुई भी घटाबढ़ीके साथ बढ़ेगी। रुईकी विशेष तेजीका योग ता० १६ से शुरु होता है। अन्तिम (चौथा) सप्ताह अच्छी तेजीका दिखाई देता है। इस मासमें शेयरोंमें विशेष घटबढ़ होगी। तेजीमें रहने वाला माल कमावेगा। मन्दीके रिएक्शन भी आते रहेंगे, परन्तु बाजार रिएक्शनके साथ बढ़ेगा।

दिसम्बर मास—यह मास बहुत महत्त्व का है, खासकर रुईके व्यापारियोंको विशेष सावधान रहना चाहिए। इस मासमें बृहस्पति शुक्र दोनों ग्रह रुईकी होरोस्कोपसे त्रिकोण योग बना रहे हैं। जो अच्छी तेजीका योग है। पूरा योग ता० ३० दिसम्बरको बनेगा और इसका असर बराबर दूसरे सप्ताहसे ही शुरू होजायगा।

ता० १ से ३ तेजी। ता० ४ से मन्दी। ता० ६ ७-८ तेजी। फिर १२-१३-१४-१५-१६ में मन्दी। ता० १६-२०-२१-२२ तेजी। २५-२६-२७-२८-२६-३०-३१ चांदी सोना और रुईके लिए मन्दीकी तारीखें हैं।

ता० ६ दिसम्बरसे चांदी सोनेकी लाइन तेजीकी रखनी चाहिए। परन्तु बीचमें रीएक्शन मन्दीके आने की सम्भावना है, अतः उपरोक्त तारीखोंका पूरा ध्यान रखना चाहिए, विशेष विवरण आप हमारे आफिससे पूछ सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक व्यापार विमर्श (तेजी मंदी)

रुई चांदी सोना आदिकी अर्धसप्ताहिक तेजी मंदी

(लेखक—श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा 'दैवज्ञ')

सौर आश्विन मास

ता० ७ अक्तूबर दिनके ४ बजेसे अन्तरिक्षमें बाणोंकी यह रस्साकसी जबर सस्ताईकी सूचना देती है। बड़ी मंदीका श्रीगणेश आया है। सचेत हो जाइये।

ता० १० अक्तूबर रात्रि ११ बजेसे—इस अवसर महोंने नक्षत्र व राशियाँ बदलनेमें पुखता दौड़-धूम मचाई है। फल-भावमें भी बहुत फेरफार होना पाया जाता है। खास तेजी तो है नहीं परन्तु मंदीकी बाढ़में कमी होना, यह भी तेजीवालोंको तसल्ली का नुस्खा है। इस दावमें मानलो रुईमें १०) १५) टके बढ़े। इसी तरह अन्य वस्तुमें थोड़ी गरमाई।

ता० १४ अक्तूबर दिन ६ बजेसे उतरती संक्रांतिके अंतमें गुरुदेवका लोप होना और यह मामला व्यतिपातमें होना प्रत्येक वस्तुके भावमें उत्पात सूचक है। इस मोके मोटे २ व्यापारियोंको महालक्ष्मी छोड़ जावे। जहां लक्ष्मीका हेर-फेर होता है वहां भावमें बड़ी उलटा-पलटी चलती है।

सौर कार्तिक मास

[ता० १७ अक्तूबरसे १५ नवम्बर तक]

४५ मुहूर्त्ती संक्रान्ति, इसी अवसर गुरुदेव का पश्चिम दिशामें लोप। दशमी तिथीशुक्लयोग-का टूटना। अमावस्या गुरुवार चित्रा नक्षत्रमें महालक्ष्मीका पूजन होना। द्वितीया शनिवारमें ४५ मुहूर्त्त से उत्तरशृंग चन्द्रोदय। अविमंद गतिमें शुक्रका वक्र होना। मंगलका राशि संचार। देवोत्थापनी एकादशीको भौमका पश्चिम दिशामें अस्त होना। कार्तिकी पूर्णिमा शनिवार, भरणी व्यतिपात का संगम। कृष्णा द्वितीया क्षयतिथीमें गुरु पूर्वमें उदय हुआ, शुक्र पश्चिममें अस्त, बुधका वक्र होना, उतरती संक्रान्तिमें बुधका अदृश्य होना इत्यादि योगोंके फलसे समय सन्तोषप्रद मालूम देगा। राजनैतिक एवं प्रजावर्गकी कई समस्याएं हल होंगी। वस्तुके भावमें काफी हेर-फेर होते नितान्तमें बड़ी मंदीका पैगाम रहे। व्यवसायः—निकटतमके मासिक ड्यूडेटका नजराणा लगाइये। अथवा मंदी लगानेमें न चूकिए। क्योंकि रुईमें ४०) ५०) व हेसियन कालीमिचेमें ३०) ४०) सोना, चांदी, अलसी कपासियामें ८) १०) टके। अरंडा, मूंगफलीमें १५) २०) रुपये अनाजमें १) १।) टका घटना प्रतीत होता है।

अर्धसप्ताहिक विचार—

ता० १७ अक्तूबर सायं० ५ बजेसे-गुरुग्रह अति शीघ्रगतिसे पश्चिममें अस्त हुआ। कृष्णाष्टमीको पुष्य। दशमी क्षय। फल-सामग्री सस्ताईकी है। बाण अपनी ताणमें थोड़ी तेजी बता रहा है। प्रत्येक सौदागरको चार दिनमें छः भाव सुनाई देंगे। व्यवसाय मंदी तरीके जैसा होना चाहिए वैसे करे।

नोट—दीपावली पूजनमें नये बही चौपड़े, रजिस्टर, बसना, लानेको सप्तमी गुरुवार पुनर्वसु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्षत्रका दिन, और अष्टमी शुक्रवार पुष्य नक्षत्रका दिन श्रेष्ठ है। दोनों दिनके शुभ मुहूर्त में जिस व्यापारीकी जिस दिन इच्छा हो नवा बसना बसाले।

ता० २१ अक्तूबर प्रातः ४ बजे से—पहले बने बनाओंके सिवाय विशेष कोई बात है नहीं। फल-त्योहार की तैयारी होगी। साधारण हेर-फेरमें समय निकले।

ता० २४ अक्तूबर १० बजे से-पूर्णातिथी गुरुवार सिद्धि योगमें महालक्ष्मी पूजनका दिन बहुत वर्षोंसे आया है। स्वातीका सूर्य, वृश्चिकमें बुध। द्वितीया शनि को ४५ मुहूर्त में चन्द्रदर्शन, शुक्र वक्र, तिथी बढ़ी। शतरंजीय समस्यामें कई एक दाव पेंच पाये जाते हैं। दीपावलीके दिन सौदागरोंमें सोदे सूत बाबत बड़े २ शहरोंमें धूम मचेगी।

ता० २७ अक्तूबर सायं ६ बजेसे भावमें चढ़ाव उतार खूब चलेगा। समयका चांस सँभालिए। ज्यादेतर बेचकर बैठे रहिए। घटनेपर तुरत नफा सुधारियेगा। समय बहुत सावधानीका है।

ता० ३१ अक्टूबर प्रातः ४ बजेसे शनिवारी अष्टमीके साथ बुध शुक्रकी नवांश युतिसे खासकर, चांदीके भावमें मोटा पलटा होना पाया जाता है। शिल्वरके साथ२ सफेद वस्तुके भाव गिर जायंगे। समय मंदीका चल रहा है। सावधानी इसीमें है कि माल देना मंजूर कर लीजिए। तेजीवाले अपना सोदा सुलट लेवें।

ता० ३ नवम्बर दिनको २ बजेसे-चार माससे देव उठनेके साथही साढ़ेतीन मासके लिए मंगल सो गया। इस बड़े संयोगके आगे दूसरे योग ठहर नहीं सकते। फल भावोंमें भारी भेद पड़ना पाया जाता है। शेयरके सौदागरोंकी तेजी उतरते ख्याल से हो जायें। बड़े कारणमें भावमें भी बड़ा फेरफार होना निश्चय पाया जाता है। इस मौके समझदार सौदागर चेत जाये! नजराणा लगाओ। चांस को संभालो और सुधारो।

ता० ६ नवम्बर प्रातः ६ बजेसे इस समय योग तेजी और मंदी दोनों तरफ के बनें हैं। अतएव प्रत्येक वस्तुके भावमें वधघट चलेगी। मंदीके प्रोग्रामवाला बेचकर नफा सुधारे। तेजीका व्यापारी वस्तु खरीदकर मुनाफा करें।

ता० ६ नवम्बर रात ११ बजेसे पूर्णा शनिसे बने मृत्युयोगमें व्यतिपातका पड़ना। तिथि क्षयमें गुरु पूर्वमें उदय हुआ। शुक्र पश्चिममें अस्त होने के साथ ही बुध वक्र हुआ। फल-समय भावमें जबर परिवर्तनदायक है। शतरंजमें रस्ता साफ है, परन्तु संयोगोंमें रिपोर्ट अनेक घटनात्मक जानिए। जब जब ऐसा मौका आता है रुई की रेटमें ३०) ४०) हेसियन कालीमिर्चमें २०) ३०) मुंगफली, अरंडामें १५) २०) चांदी, कपासियामें १०) और अलसी, सोनामें ५) ७) अनाजमें १।) २) की उलटा-पलटी होना पाया जाता है, अतः यदि पहले नजराणा न लगाया हो तो अब और इस मौके वायदे मार्केटमें चालू ब्यजेटकी तेजी मंदी लगा लीजिए और प्रत्येक चढ़ाव उतारमें अपना २ चान्स सुधारिये।

ता० १३ नवम्बर प्रातः ८ बजेसे पूर्व बने संयोगोंके अलावा बुधग्रह पश्चिममें अस्त हुआ फल बहुत बड़े २ मिलेंगे। वस्तुको ऊंचे भावमें बेचिए। मोटापनका अर्थ यहाँ मंदीका सूचक है। चान्सको संभालना चतुर व्यापारी का कर्त्तव्य है।

सौर मार्गशीर्ष मास

[ता० १६ नवम्बरसे १४ दिसम्बर तक]

इस मासमें वृश्चिकके सूर्यमें मार्गशीर्ष पूर्णिमा को ग्रहण पड़ेगा और यह पर्व रविवारमें पड़नेसे आगामी वर्ष धान्योत्पत्तिके लिए मध्यम है अतः यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ान्य संग्रह करना चाहिये। राजाओंमें लड़ाई टंटे छड़ें। दुर्भिक्षका भय। घी तेल आदि रसप्रद वस्तु-ा भाव बढ़े। सूत कपास प्रभृति वस्तुको संग्रह रना चाहिये क्योंकि इनका भाव बढ़ेगा।'

शनिवार अष्टमी तिथो-मध्यान्होन्तर ३० मुहूर्तके ाथ सविता नारायण मित्रघर वृश्चिकमें प्रवेश हुए। ुक्र वक्रगतावस्थामें वृश्चिकसे तुलामें आना, शनि-क हुआ। शुक्ल पक्षारम्भमें पूर्व दिशामें शुक ्यका उदय होना। द्वितीया सोमको उत्तर शृंगमें द्र दर्शन। वक्रावस्थामें बुध वृश्चिकसे तुलामें आया। ्र्णा तिथि वृद्धिमें बुध मार्गी हुआ। शुक्ल द्वादशी-ा क्षय। पूर्णिमा रवि रोहिणीमें चंद्रग्रहण पड़ना। ्क मार्गी आदि २ योगोंसे इस मासमें ग्र ों के ्षर्ष बहुतायतसे हुए हैं, ताके हरेक वस्तुके भावोंमें ड़ी घटावढ़ी चलेगी, व्यापारी मंडलमें काफी चहल-हल मालूम देगी। जैसे कि रुईके भावमें रु० ५) का ्यक्शन आयें तो दूसरी वस्तुका अंदाज लगा लें। ्वसाय—चांदी रुई आदि वस्तुके सौदे नजराणा ्गाकर कीजिये। थोड़ी पूंजी लगाकर अधिक धन ्मानेका यही मौका आया है।

अर्घ साप्ताहिक विचार

ता० १७ नवम्बर दिन ३ बजेसे—शनि अष्टमीके ्र योगमें संक्रांति लगी। असर तेजी चालू भावमें रमाई वापरेगी। वस्तु खरीद उछालेमें बेच नफा ्ारें।

ता० १६ नवम्बर रात ११ बजेसे—ग्रहोंने नक्षत्र ्ले। शुक्राचार्यका उल्टा चालमें राशि बदलना। ्ग्रह शनिका वक्र होना। फल-वस्तुके भावमें बड़ा ्रिवर्तन होना पाया जाता है।

वेधमें अंतरिक्षके अंतर पटमें अनेक दाव पेंच ्र पड़े हैं, जिस सौदागरको जैसा दाव चाहिये एक ्र अवश्य जरूर मिलेगा। उदाहरणार्थ—चांदीमें १०) का चांस हैं। ऐसे ही सोना, रुई आदि कूंत कर लें। व्यवसाय—हिम्मत पड़े तो खुला धंधा करें वरना, मासिक या साप्ताहिक तेजा मंदी लगा प्रत्येक उतार चढ़ावमें आया पोइंट सुधारें।

ता० २६ नवम्बर प्रातः ५ बजेसे—गणितसे काटनकी कीमतमें २०) हैसियन, कालीमिर्च, अरंडा, मूंगफलीमें १०) १५) टके घटे ऐसा लगता है। अलसी, अनाज, सोना, चांदीमें काफी मंदी वापरे। जबकि संकेत सस्ताईका लिख आये हैं ताकि वस्तु बेचिए या मंदी लगा लें। किसी सौदागर को वहम हो तो नजराणा लगा सौदा करें चांस गँवाएं नही।

ता० ३० नवम्बर सायं ७ बजे से पहले आई हुई मंदीमें यहां बाजार में थोड़ी गरमाई मालूम देगी। वस्तु खरीदने का प्रयास रखते उछाले नफा सुधारें।

ता० ३ दिसम्बर प्रातः ४ बजे से—

सूर्य केतुकी युतिमें रेवती व्यतिपातका आना। किसी न किसी वस्तुके भावमें उत्पात होना जानिए। इस मौके पापी ग्रहोंकी पार्टीका जोर है, इस गुटबंदी का असर सटोरियोंपे पड़ेगा। और मार्केटमें बेचा बेचीकी बोछार चलेगी। बक्तका चांस है। सलाह सस्ताईका सुर बजा रहीहै अतएव मंदी लगाइये या बेचिये। समय संभालने लायक है।

ता० ६ दिसम्बर प्रातः७ बजेसे शतरंजीय चालमें अच्छी बध घट का संकेत पाया जाता है। आँकड़ेका ब्योरा निर्णयमें नहीं है। समयपर जैसा टोन समझमें बैठे वैसा करिये।

ता० ६ दिसम्बर दिनके ३ बजेसे सारे योग सफेद वस्तुकी तेजीके हैं। ग्रहण पड़ने पर जैसे आकाशमें धुंधलापन आ जाता है ऐसे ही यहां भावोंमें भी अंधाधुंधी चलना पाया जाता है। नजराणा लगाओ, ऊंचेमें बेचो नीचेमें खरीदो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० १२ दिसम्बर दिन रात्रि ६ बजे से आंकड़ेमें इस समय, रुई, हेसियन, कालीमिर्चमें रु० १०) १२) घटना पाया जाता है। अरंडा, मूँगफलीमें ५) ७) [illegible]ासिया, चांदीमें २) ३) अलसी, सोना, अनाजमें १) २) घटेगा।

यहां सस्ताईका संकेत किया परन्तु अशुभ संयोग तेजी भी ला सकता है। ऐसी दुविधामें या तो बैठे रहना चाहिए। अथवा तो नजराणा लगाके सौदा करें और आया चांस सुधारनेमें रहें।

सौर पोष मास

[ता० १५ दिसम्बरसे १३ जनवरी तक]

इस मास में रविवार अष्टमीकी मध्यरात्री समयमें सूर्यने धनु-राशिको ४५ मुहूर्तमें संक्रमण किया। इस योगसे भारतवर्षीय देशोंमें चौड़, कर्णाटक, गौड़, देवगिरी, मलाया, तथा मालव देशोंमें कई प्रकारके उपद्रव तथा जनताको कष्ट। वस्तुओंमें कपास सूत, कपड़ा, तिल, तैल घी सोनाके भावमें महंगाई आये। और उपरोक्त देशोंसे बाहरके स्थानोंमें सुकाल सुभिक्ष और प्रजामें सन्तोष रहे। परन्तु सुकालीन देशोंमें भी रुईके भावमें तो महंगाई ही रहेगी। सोमवती अमावस्याके साथ मूल नक्षत्र गण्ड योगका समागम। चान्द्रमास मंगलवार [illegible]ागा। द्वितीया बुधको ४५ मुहूर्तमें चन्द्रदर्शन। [illegible]-बुधका राशि परिवर्तन। पंचकोंमें रविवारा [illegible]निपात। बुध पूर्वमें अस्त हुआ। मंगलवारी [illegible]माको केतुने नक्षत्र बदला। कृष्णपक्षी प्रारम्भ [illegible] टूटना आदि योगोंसे वस्तुओंके भाव सामान्य घट चलते मार्केट टिका रहेगा। नजराणा खाने वालोंके लिए यह मास ठीक है। जिस सौदागरको जैसी लाईन खेलना हो ठीक वही भाव मिलेंगे लेकिन मामूली तादादमें मिलेंगे।

अर्ध साप्ताहिक विचार

ता० १६ दिसम्बर प्रातः ४ बजेसे भावमें महंगाईके समाचार सुनेंगे। चलती मंदीमें टेकनीकल तेजी आई है। रुई आदि बढ़ने में ५) टकें। घटने में १० टके जानिये, प्रत्येक उछालेमें माल बेचियेगा। और घटी हुई कीमतमें नफासे सौदा सुलटाते जाइये।

ता० १६ दिसम्बर सायं ७ बजेसे बाणोंमें झपा-झपी चली है अतः हेसियन, कालीमिर्च, रुईमें ८) १०) टकें घटना पाया जाता है। समयानुसार सौदा सूत कर लीजियेगा।

ता० २३ दिनके २ बजेसे—सोमवती अमावस्या मूलमें सस्ताई ओछी, बध-घटमें असर मन्दी का चले। उछालेमें माल बेचिए और मुनाफा सुधारते जाइये।

ता० २५ दिसम्बर रात १० बजेसे—यहाँ महज मन्दीकी इत्तला आई है। समझदार, सौदागर, इस मन्दी का स्वागत करें। तेजी मन्दी खाने वालोंको यहां नजराणा पच सकता है, मंशा हो तो खाजाइये।

ता० २६ दिसम्बर प्रातः ४ बजेसे—यहां तेजी का तमंचा छूटने वाला है। सामान्यतया अच्छी फेरफारी हो। ओछी घटबढ़ अनुसार अपना काम चलाएँ।

ता० १ जनवरी १९४७ दिनके १० बजेसे—बहुत मामूली तरहसे फेरफारमें समय निकले। समयपे जैसे साधन मिल सके वैसा सौदा करें।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदी और रुईकी अनुभूत रिपोर्ट

(ले० ज्यो० भू० पं० श्री गिरिधारीलालजी शर्मा दैवज्ञ)

(१) प्रथम सप्ताह ता० ५से ११ अक्टूबर तक

रुई चांदी तेज जिसमें रुई की अपेक्षा चाँदी पर जोर है। ता० ५-७ को रुई मन्दी, चांदी तेज। ता ८-९-१० रुई सामान्य, चाँदी अवश्य तेज ता० ११-१२ घटा वढ़ी।

(२) दूसरा सप्ताह ता० १४से २० अक्टूबर तक

रुई चांदी दोनों ही ३ दिन पहले तेजी होके पीछे निश्चय मंदे रहेंगे। इसमेंभी ता० १५-१६-१७ रुई की विशेष तेजी। चाँदी सामान्य तेज ता० १८-१९ निश्चय मंदी है।

(३) तीसरा सप्ताह २१ से २७ अक्टूबर तक

नित्यप्रति घटबढ़ रहेगी। १) २) बढ़ने पर बेचो। १) १॥) घटने पर खरीदो या दो तरफा लगाओ। ता० २२ को रुई तेजी चांदी मंदी ता० २३ को रुई मंदी। यहां उत्पात बहुत होंगे अतः बहुत ध्यानसे कार्य करना इन रिपोर्टों पर ही नहीं रहना, बाजार भी देखते रहना।

(४) चौथा सप्ताह ता० २८से ३ नवम्बर तक

तेजी मंदी दोनों होंगी और ये अधिक रूपमें होंगी साधारण नहीं है। रुई मंदी, चांदी मंदी होके तेजी। ता० २८ मंदी २९ तेजी।

(५)पांचवां सप्ताह ता० ४से १० नवम्बर तक

साधारण घटबढ़ होती रहेगी रुई कुछ तेज और चाँदी साधारण मंदी रहेगी। ता० ४ तेजी पूर्ण रूपसे एक धारी होगी। ता० [५ घटबढ़से मंदी,ता०६-७ सामान्य। ता० ८-९ तेजी घटबढ़से।

(६) छठा सप्ताह ता० ११ से १७ नवम्बर तक

यहां बहुत सावधानीसे काम लेना। घटे वहां भी बेचो, बढ़े वहां भी बेचो, मंदी का ध्यान रक्खे। ता० ११-१२ मंदी चांदीकी अपेक्षा रुई पर ज्यादा जोर है। ता० १३-१४ तेजी। ता० १५-१६ एकसे दूसरी विपरीत और घटबढ़ अच्छी है।

(७) सातवाँ सप्ताह ता० १८सें२४ नवम्बर तक

रुईमें अच्छी घटा-बढ़ी होगी और सुवर्ण चांदी में कुछ मंदी होगी। ता० १९ से गेहूँ चावल तमाखू ६० दिनके भीतर बहुत तेज होंगे। और आयरन शेयर इन ६० दिनों में १००-१५० टका बढ़ेगा। यह निःसन्देह है। ता० २३ को हर एक वस्तु तेजी।

(८)आठवां सप्ताह ता० २५से १ दिसम्बर तक

रुई मंदी होके तेज होगी। चाँदी ता० २६ को घटे वहीं खरीद लेना तो २।) ३) रु० एक पेटी में मिल जायेगा और यहाँ पर उत्पात बहुत होंगे; कहीं बाजार ही बन्द न हो जाए ऐसा ही योग है। किसी विशेष दुर्घटना का योग है। ता० २६-२८ को रुई अवश्य तेज। ता० २९-३०-१ को चांदी अवश्य तेज।

(९) नौवां सप्ताह ता० २से ८ दिसम्बर तक

सुवर्ण चांदीमें ता० ५ से अच्छी तेजी। रुईमें घट बढ़ होके तेजी। ता० ३-५-७ को रुई अवश्य तेज। ता० २-४-५-६ चांदी तेज।

नोट—ता० २४ नवम्बर से ८ दिसम्बर तक रुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जनरल ध्यान मंदा है।

(१०) दशवां सप्ताह ता० ९ से १५ दिसम्बर तक

रुई चांदीमें घटे भावसे खरीदना लाभजनक है। यहां भी उत्पात योग हैं सो घटा बढ़ी बे धारण की रहेगी। ता० ९—११—१३ रुईमें अवश्य मंदी बनके तेजी होगी। विशेष बल मंदी का है। ता० ९—१२—१३ को चांदी तेज।

(११) ग्यारहवां सप्ताह ता० १६ से २२ दिसम्बर तक

रुईमें पहले तेजी होगी, ३ दिन पीछे कुछ मंदी होगी। ता० १७—२०—२१ रुई में तेजी। ता० १६ १८—२१—२२ चांदी तेज। ता० २० की घटाबढ़ी छक्का छुटा देगी, दोतरफा लगावे।

(१२) बारहवां सप्ताह ता० २३ से ता० १ जनवरी तक—

रुई चांदीमें घटबढ़ होके असर तेजी का रुईमें कम पड़ेगा, और चांदीमें अधिक होगा। रुई में ता० २४ को तेजी होगी वहां बेच देना। ता० २८ तक अवश्य लाभ रहेगा। ता० २६ को चांदी खरीद लेना, अंग्रेजोंके नवीन सम्वत् ता० १ तक अवश्य लाभ रहेगा। आगे करने वाला ईश्वर है। ता० २३ को रुई चांदी मंदी। ता० २८—३० चांदी तेज। ता० ३१ को रुई अवश्य तेज। ता० २९—३० को रुई में ८) की मंदी होगी ध्यान देना, करने वाला भगवान् है।

———

भारतके सुप्रसिद्ध ज्योतिषी और पञ्चाङ्गकार 'श्रीस्वाध्याय' के यशस्वी सम्पादक, ज्योतिषमार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न पण्डितभूषण श्री हरदेवजी शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य द्वारा सम्पादित——सं० २००४ वि० का

'श्रीविश्वविजय--पंचांग'

यह पंचांग नवीन शुद्ध गणनानुसार बड़े परिश्रमसे निर्माण किया गया है। वर्षफल, भविष्यवाणी, पाक्षिक फलादेश, दैनिक स्पष्ट ग्रह, दैनिक लग्नसारणी, प्रतिदिनकी ग्रहयुति, शुभाशुभयोग, मुहूर्त आदि अनेक आवश्यक महत्वपूर्ण विषय दिये गए हैं। उत्तर भारतमें इस प्रकारका सर्वाङ्गशुद्ध केतकी द्वारा सूक्ष्म गणित और फलितसे परिपूर्ण यह पहला ही पंचांग है। सं० २००३ के पंचांग की भारत और विदेश सम्बन्धी अधिकारपूर्ण चमत्कारी भविष्यवाणी और पाक्षिक फलादेश एवं प्रत्येक वस्तुकी तेजी मन्दी आजतक शतप्रतिशत यथार्थ उतरती गई और उतर रही हैं। भारतके बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानों व्यापारियों और पत्र-पत्रिकाओंने मुक्तकण्ठसे इस पंचांगकी प्रशंसा की है। यह पंचांग वर्तमान वर्ष के पंचांगसे भी कहीं अधिक ठोस महत्वपूर्ण सुन्दर सामग्रीसे सुसज्जित होकर इस दीपमाला ता० २४ अक्तूबर १९४६ तक प्रकाशित हो जायेगा, अतः आप अपनी प्रति शीघ्र मंगवा लीजिए। एक प्रतिका मूल्य डाकखर्च सहित ॥।=) मनीआर्डर द्वारा नीचे लिखे लाहौर के पते पर ही भेजें ताकि छपते ही ग्राहकों को पहुंचाया जा सके। पचांग और अन्य सब प्रकार की हिन्दी-संस्कृत पुस्तकोंके लिए नीचेके पते पर आर्डर भेजिए।

मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास, संस्कृतपुस्तकालय, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।
(पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्री विश्वविजय-पञ्चाङ्ग' से]

आश्विन शुक्ल १० शनिवार ता० ५ अक्तूबर विजयादशमी, दशहरा, राजचिन्ह पूजा सरस्वती विसर्जन
,, ११ सोमवार ता० ७ ,, पापांकुशा एकादशी व्रत
,, १२ मंगलवार ता० ८ ,, भौमप्रदोष व्रत
,, १५ गुरुवार ता० १० ,, सत्यव्रत, शरद्पूर्णिमा, कोजागरी कार्तिक स्नानारम्भ आकाश दीपदान
कार्तिक कृष्ण ३ रविवार ता० १३ ,, श्रीगणेश ४ करक (करवा) चौथ व्रत चन्द्रोदय स्टैण्डर्ड टाईम रात्रि ७।५६
,, ७ गुरुवार ता० १७ ,, अहोई ८ तुलासंक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल १७।२६ तक
,, ११ रविवार ता० २० ,, रमा एकादशी व्रत
,, १२ सोमवार ता० २१ ,, गोवत्सा द्वादशी
,, १३ मंगलवार ता० २२ ,, भौमप्रदोष व्रत धन १३ धन्वन्तरि जयन्ती
,, १४ बुधवार ता० २३ ,, रूप १४ नरकहरा १४ श्रीहनुमज्जयन्ती
,, ३० गुरुवार ता० २४ ,, दीपमालिका श्रीमहालक्ष्मीपूजन
कार्तिक शुक्ल १ शुक्रवार ता० २५ ,, अन्नकूट गोवर्द्धन पूजा वर्षिकाकर्षण (रस्सा कशी) श्रीस्वामी रामतीर्थ जयन्ती
,, २ शनिवार ता० २६ ,, चन्द्रदर्शन यम २ भाई दूज, दवात कलम पूजन
,, ८ शनिवार ता० २ नवम्बर गोपाष्टमी
,, ९ रविवार ता० ३ ,, परिक्रमा ९ अक्षया ९ (सुवर्णगर्भ कूष्माण्डदान)
,, ११ मंगलवार ता० ५ ,, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत भीष्मपञ्चकारम्भ, देवोत्थापनी, चतुर्मास समाप्ति, बकरीद
,, १३ गुरुवार ता० ७ ,, प्रदोष व्रत बैकुण्ठ १४
,, १४ शुक्रवार ता० ८ ,, सत्य व्रत
,, १५ शनिवार ता० ९ ,, टुकरी १५ भीष्मपञ्चक समाप्ति, गंगास्नान, पुष्कर यात्रा श्री नानकदेव जयन्ती
मार्गशीर्ष कृष्ण ४ मंगलवार ता० १२ ,, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टै० टा० ८।२६
,, ६ गुरुवार ता० १४ ,, गुरुपुष्य योग
,, ७ शुक्रवार ता० १५ ,, श्री पं० जवाहरलाल नेहरू जन्मदिन ५८ वाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ शनिवार	ता० १६	नवम्बर	वृश्चिक संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल १७।४४ तक
,, ६ रविवार	ता० १७	,,	स्व० श्री ला. लाजपतराय निधन तिथि
,, ११ मंगलवार	ता० १६	,,	उत्पन्ना एकादशी व्रत
,, १२ बुधवार	ता० २०	,,	मल्ल द्वादशी
,, १३ गुरुवार	ता० २१	,,	प्रदोषव्रत
,, ३० शनिवार	ता० २३	,,	शनैश्चरी अमावस
मार्गशीर्ष शुक्ल २ सोमवार	ता० २५	,,	चन्द्रदर्शन
,, ६ शनिवार	ता० ३०	,,	चम्पा ६ स्कन्द ६ ललिता ६
,, ११ गुरुवार	ता० ५	दिसम्बर	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीताजयन्ती, ताजिया
,, १२ शुक्रवार	ता० ६	,,	प्रदोष व्रत
,, १५ रविवार	ता० ८	,,	सत्यव्रत, श्रीदत्तजयन्ती, खग्रास चन्द्रग्रहण
पौष कृष्ण २ मंगलवार	ता० १०	,,	जन्मोत्सव श्र० सौ० श्री १०५ मती महाराणी साहिबा बघाट राज्य
,, ३ बुधवार	ता० ११	,,	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।१६
,, ८ रविवार	ता० १५	,,	धनुःसंक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल दूसरे दिन, महामना श्री मालवीयजी महाराज का ८६ वां जन्मोत्सव।
,, ११ गुरुवार	ता० १६	,,	सफला एकादशी व्रत
,, १२ शुक्रवार	ता० २०	,,	प्रदोष व्रत
,, ३० सोमवार	ता० २३	,,	सोमवती अमावस
पौष शुक्ल २ बुधवार	ता० २५	,,	चन्द्रदर्शन
,, ११ शुक्रवार	ता० ३	जनवरी	पुत्रदा एकादशी व्रत

———

प्रभो !

आनँद सिन्धु छिपे हो कहाँ, हम दासनहूकी प्रभो ! सुधि लीजिये।
नाथ ! दया करिये अब तो, शरणागत जान सुदर्शन दीजिये॥
भूलहिं चूक क्षमा करिये, वरआत्म-स्वरूप हमें लख रीझिये।
व्यापक ब्रह्म परात्पर हो, निज आनँद सों परिपूरन कीजिए॥

—आपका अपना आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार-भविष्य-प्रकाश

चांदी सोना रुई के जनरल चान्स और दैनिक तेजी मन्दी

[लेखकः—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य]

[श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य 'श्रीस्वाध्याय' के सुपरिचित विद्वान् लेखकोंमेंसे हैं आपके लेखों द्वारा पाठक निरन्तर लाभ उठाते रहे हैं। इस बार ज्वराकान्त होनेके कारण 'श्रीस्वाध्याय' के 'नववर्षाङ्क'के लिए वे 'त्रैमासिक-भविष्य-प्रकाश' तो नहीं भेज सके हैं, परन्तु उन्होंने अक्टूबर मास का व्यापार भविष्य नामक अपनी विशेष रिपोर्ट (जिसका मूल्य २५।-) है और भविष्य-प्रकाश-कार्यालय मुरार सी० आई० से प्रकाशित होती है) हमारे पास अभी प्रकाशनार्थ भेजकर 'श्रीस्वाध्याय' के प्रमी व्यापारीवर्ग ग्राहकोंको विशेष उपकृत किया, एतदर्थ हम पण्डितजीके आभारी हैं। आगामी नवम्बर मासकी पण्डितजीकी रिपोर्ट उक्त मूल्य और पतेसे प्राप्त हो सकेगी। यह अंक ग्राहकोंके हाथोमें ९ अक्टूबर तक पहुंचेगा, अतः १० अक्टूबर से आगेकी रिपोर्ट हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

अक्टूबर में सोना, चांदी, रुईके भावोंमें राजनैतिक हलचलोंसे भारी तेजीं मन्दी इकतरफा चलेगी। व्यापारी सावधान, अक्टूबरमें चाँदी १७५) से १६७) बेचानमें रहो, नीचेमें १४७) से १५५) तक खरीदो, बीच बीचमें दैनिक घटाबढ़ीसे मुनाफा लेते रहो। सोना १००) से ९०) तक बेचो, नीचे ८४) से ७९) तक खरीदों। रुई जरीला ४६३) से ४४७) तक बेचो, नीचेमें ४१३) से ४२१) तक खरीदो, बीच २ में ४) ६) की घटाबढ़ीमें दैनिक लाभ लेते रहो। गुवार पर हमारी धारणा ७।-) से ६।-) तक है। ऊँचेमें बेचो १ मासमें लाभ लो। स्पेशल रुख ता० ८ को चांदी १७२) से सोना १००) से रुई ४४७) से ऊंचे भाव देखो तो रुख तेजीका पलट दो। यदि यह भाव न होवे तो ऊंचेमें बेचो, निश्चय मन्दी के योग सभझो। चांदी १०) सोनेमें ५) रुईमें १५) टके की मन्दी आएगी। जनरल रुख ता० १ से ८ तक तेजी, ता० ८ से १४ तक मन्दी। ता० १४ से २१ तक तेजी। ता० २१ से २७ तक मन्दी। ता० २७ से ३१ तक तेजी की धारणा समझो। अक्टूबर में गली लगानेकी ता० १-३-५-१४-१३-१५-१७-२२-२५-२७-२६-३१ है। सावधान, अक्टूबरमें जनरल चांस महयोग और दैनिक लाइनोंमें १२ बजेसे २ तक देखो, बराबर लाइनें मिलती जावे तो सौदा खड़ा रखो, इत्तफाक हो तो संभल जाओ, उलट दो बाजार का सामना करना ठीक नहीं है।

अक्टूबरमें चाँदीके जनरल चांस

ता० ८ को बेचो। ता० १४ तक मन्दी ७)
ता० १४ को खरीदो। ता० २१ तक तेजी ३।।)
ता० २१ को बेंचो। ता० २७ तक मन्दी ६)
ता० २७ को खरीदो। ता० ३१ तक तेजी ३)

सोनेके जनरल चांस

ता० ८ को बेचो। ता० १५ तक मन्दी ७)
ता० १५ को खरीदो। ता० २१ तक तेजी ५)
ता० २१ को बेचो। ता० २६ तक मन्दी ६)
ता० २६ को खरीदो। ता० ३१ तक तेजी ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुईके जनरल चांसः—

ता० ८ को बेचो । ता० १५ तक मंदी ७)
ता० १५ को खरीदो । ता० २२ तक तेजी १५)
ता० २३ को बेचो । ता० ३१ तक मन्दी ६)

नोट—अक्टूबरमें मई ४१७) से ४६५) की धारणा पर व्यापार करोः—

नोट—चाँदी, सोना रुई तीनोंकी जनरल तारीखोंमें तेजी मन्दी टके वार दी गई है, उसका अन्दाजा उसके पहिलेकी गत तारीखके रात्रिके बन्द भावों पर लगावें, हर तारीखमें खरीदका टाइम १२ से २ तक; बेचानका टाईम ४ से १० बजे तकका समझें। खरीदने बेचने पर २४ घण्टेमें बाजार माफिक न आवे तो सौदा उलट दो।

अलमनाक द्वारा अक्टूबरको तेजी मंदी

ता० ६ को बुध गुरु युतिसे भारी मन्दी चलेगी, ता० ८ को ४ बजे से ता० ६ के १ बजे तक डबल बेचो। ता० १२ तक मन्दीकी चाल है। नोटः—ता० ११ को बाजार विपरीत चले तो संभालो, ठीक चले तो सौदा ता० १४ तक भी रहना लाभकारक होगा। ता० १४ को चं. ह. युति २॥ दिन की तेजीं लावेगी, बराबर ता० १४ को १२ से १॥ बजे तक चाँ.ी, सोना रुई खरीदो ता० १८ तक तेजी की चाल है, ता० १८ को गुरुका अस्त चं० शनि युति एक तूफानी मन्दीका कारण बनाते हैं। ता० १८ को ४ बजे डबल बेचो, ता० २१ तक मन्दी की चाल होगी उस समयमें राजनैतिक पाबन्दी चांदी, सोना, रुई पर होनेके योग हैं। चांदीमें १५) सोनेमें १०) रुईमें ३०) टके की मोटी मन्दी होगी। सावधान। ता० २२ को १० बजे रात्रि तक बाजार देखो तेजी रहे तो व्यापार संभालो, मन्दी रहे तो इस चाँससे मालामाल होनेके आसार समझो।

नोट—ता० २२ को तेजी रही तो ता० २५ तक तेजी समझ लेना। ता० २५ को खुलते बाजार खरीदो, ता० २६ तक तेजीकी चाल है, बराबर दैनिक पर रोजाना सुबह खरीदो, श्यामको लाभ उठाओ। ता० २६ को ४॥ बजे बेचो, ता० ३१ तक मन्दीकी चाल है; दोतरफा घटाबढ़ी होगी, नीचेमें खरीदो ऊँचेमें बेचो लाभ सामने होगा।

नोट—अक्टूबरमें जनरल चांस व रुख अलमनाक दैनिक तीनोंको मिलाकर बाजार—की रायके साथ काम करो, एक राय मिलने पर बड़ा व्यापार करो, अलग २ राय हो तो थोड़ा काम करो, बीचमें संभालते रहो, इतने पर भी आप घाटा उठा जाँय तों हम जुम्मेवार नहीं हैं, सर्वोपरि ईश्वर ही है।

दैनिक तेजी मंदी चांदी

ता० बार दैनिक तेजी मंदी अक्तूबर
१० गु० मंदी ४) तेजी मंदी लगाओ।
११ शु. तेजी २) बाजार खुलते खरीदो।
१२ श. तेजी १॥) मदी १) बेचो ५ बजे।
१३ इ. मंदी १।) रुख स्टेडी मंदी।
१४ सो. मंदी १।।।) तेजी १) खरीदो १० रात्रि।
१५ मं. तेजी २) की तारसे मिलावें।
१६ बु. तेजी १॥) मंदी १) दोतरफा।
१७ गु. मंदी २) तेजी ।।।) खरीदो २॥ बजे।
१८ शु. तेजी १।।।) इक तरफा चलेगी।
१६ श. तेजी २) मंदी ॥) नफा लो ४ बजे।
२० इ. तेजी ।।) सामान्य बाजार रुख।
२१ सो. तेजो १।) मंदी २) बेचो ७ बजे रात।
२२ मं. मंदी १।।।) काम कम करो।
२३ बु. मंदी १।) तेजी १) दुतरफा नफालो।
२४ गु. तेजी २) बाजार खुलते खरीदो।
२५ शु. तेजी २) बेचो ४॥ बजे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श. मंदी १।।।) रुख स्टेडी मंदी।
इ. मंदी १) खरीदो रात १० बजे।
सो. तेजी २) बाजार देख नफा लो।
मं. तेजी १।।।≈) बेचो ५।। बजे।
बु. मंदी २≈) दो बजे का तार देखो।
गु. मंदी १।।।) विपरीत हो रुख पलटो।

दैनिक तेजी मंदी सोना

वार दैनिक तेजी मंदी अक्तूबर।
गु. मंदी ३) तेजी मंदी लगाओ।
शु. तेजी १।।) बाजार खुलते खरीदो।
श. तेजी १) नफा लो और बेचो।
इ. मंदी ।।।) प्राईवेट रुख नरम।
सो. मंदी १।।) खरीदो ७ बजे तक।
मं. तेजी १।।) तारसे मिलाओ।
बु. तेजी १) मंदी १।।) बेचो ४।। बजे।
गु. मंदी १।।) खरीदो २ से ३ तक।
शु. तेजी १) इकतरफा तेजी।
श. तेजी १।।) नफा लो छोड़ो नहीं।
इ. तेजी मंदी बराबर।
सो. तेजी १) मंदी १।।) बेचो ५ बजे।
मं. मंदी २।) मंदी लगाओ।
बु. मंदी १) तेजी १।।) खरीदो २ बजे।
गु. तेजी १।) दोतरफा बाजार देखो।
शु. तेजी १।।) नफा लो, बेचो ४।। बजे।
श. मंदी २) रुख मंदी।
इ. मंदी ।।) खरीद का मौका है।
सो. तेजी १।।) खुलते बाजार खरीदो
मं. तेजी २) नफा लो बेचो ५ बजे।
बु. मंदी १।।) मंदी लगाना श्रेष्ठ।
गु. मंदी २) खरीदो ४ बजे बराबर करलो।

दैनिक तेजी मंदी रुई

ता० वार दैनिक तेजी मंदी अक्तूबर।
१० गु. मंदी ३) खरीदो रात १० बजे।
११ शु. तेजी ४) तार से मिलाओ।
१२ श. तेजी ३।।) नफा लो और बेचो।
१३ इ. मंदी १।।) रुख तेजी।
१४ सो. मंदी २।।) तेजी ३) खरीदो २ बजे।
१५ मं. तेजी ४) बाजार खुलते खरीदो।
१६ बु. तेजी ३) बेचो ५ बजे।
१७ गु. मंदी ४) मंदी लगावें।
१८ शु. मंदी २) तेजी २।।) खरीदो २ बजे।
१९ श. तेजी ५) तेजी पर तेजी।
२० इ. १।।) नफा लेते रहो।
२१ सो. तेजी ४) विपरीत हो रुख पलटो।
२२ मं. तेजी ३।।) बेचो ४।। बजे।
२३ बु. मंदी ३ मंदी लगाओ।
२४ गु. मंदी ५) घटे भाव खरीदो ५) बजे।
२५ शु. तेजी २।।) बाजार खुलते खरीदो।
२६ श. तेजी २) बेचो १०बजे रात्री।
२७ इ. सम.।
२८ सो. मंदी ३) तेजी २) खरीदो ५ बजे।
२९ मं. तेजी २।।) तार से मिलाओ।
३० बु. तेजी ३।।) बेचो ४।। बजे।
३१ गु. मंदी ४) रात के १० बजे बराबर।

ग्रहयोग द्वारा अक्टूबरकी तेजी मन्दी—

१० गु. दोतरफा हलचल लेकर बैठना नहीं।
११ शु. बाजारकी चालको डेली रुखसे मिलाओ।
१२ श. बड़े सटोरिये अच्छी तेजीमें बैठे हैं।
१३ इ. फोन वालोंकी चाल मंदीकी होगी।
१४ सो. नीचे भावोंमें १ बजे तक खरीदो।
१५ मं. कलकी खरीदका ४ बजे नफा लो और बेचो।
१६ बु. हिमालय पर चढ़े हुए भाव गिरना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गु. जबरदस्त मंदी नजराना लगाओ।
शु. दो बजे तक तारोंसे तेजी आ जायगी।
श. तेजी चार बजे तक बादको मंदी रहेगी।
इ. तेजी ताकत खतम हो रही है बेचना ठीक है।
सो. छै बजेतक मंदी, रातको तेजी रहेगी।
मं. खुलते बाजार चांदी सोना रुई खरीदो।
बु. ४ बजे तक बाजार स्टेडी रुख तेजीमें रहेगा।
गु. घटे भाव खरीदेगा वही नफा उठायेगा

२५ शु. तेजीकी ताकत चिम्मनमोती कम नहींहोनेदे।
२६ श. सिलवरकिंगको दूसरी पार्टी मात देगी।
२७ इ. प्राईवेटमें अच्छा रियेक्शन मंदीका होगा।
२८ सो. दो बजे तक मंदी खतम डबल खरीदो।
२९ मं. आजके योग २) ३) टकेकी तेजी बता रहे हैं
३० बु. ढाई बजे बाद मंदी रहेगी बेचो।
३१ गु. ज्यादा घट बढ़, तेजी मन्दीलगाओ।

खग्रास चन्द्रग्रहण

मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा रविवार ता० ८ [दिस]म्बर १९४९ को खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। यह [सम्पू]र्ण भारतमें पूर्णग्रस्त एकसा दिखाई देगा। [ए]शिया चीन जापान आस्ट्रेलिया, पूर्वीय प्रदेशोंके [द्वी]प समूहों महासागरों और अफगानिस्तान [ईरा]न ईराक तुर्की एशिया आदिमें भी दिखाई [देगा]।

भारतमें स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार इस ग्रहण [के स्प]र्शादिकाल निम्न है–

स्टेण्डर्ड टाइम	घण्टा	मिनट
स्पर्श (ग्रहणारम्भ)	६	४१
सम्मीलन	१०	५०
मध्य	११	१६
उन्मीलन	११	४८
मोक्ष (ग्रहण समाप्ति)	१२	५८
सर्वग्रहण (पर्वकाल)	३	१७

यह स्पर्शादिका समय किसी एक स्थान का नहीं [अ]पितु स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार सम्पूर्ण भारत- [में] ऊपर लिखे समय पर ही स्पर्शमोक्ष होता दिखाई देगा। घड़ियोंका रेडियोटाइम या [तार] आफिससे ठीक मिला हुआ रहना परमा- [वश्यक] है।

बेध वा सूतक

इस ग्रहणका बेध (सूतक) धर्मप्राण जनता के लिए मध्याह्नोत्तर स्टे० टा० घं० १२ मि० ४१ से और बाल वृद्ध रोगियोंके लिए सायंकाल स्टे० टा० ६।४१ से प्रारम्भ होगा।

राशियोंको शुभाशुभ

यह ग्रहण रोहिणी मृगशीर्ष नक्षत्र तथा वृषभ मिथुन तुला कुम्भ राशिवाले मनुष्य और राष्ट्रों के लिए कष्टप्रद है, अतः उक्त नक्षत्र राशिवाले व्यक्ति ग्रहणका दर्शन न करें। कल्याणार्थ दान जप-पाठ-हवन आदि करें। ग्रहण स्पर्शके समय स्नान करके भगवच्चिन्तनमें लग जाना चाहिए और मध्यमें देवार्चन तथा हवन एवं उन्मीलन केअनन्तर दान तथा मोक्षके बाद पुनः शुद्ध स्नान करना चाहिए।

संसार पर प्रभाव

ग्रहण मध्यकालके समय सिंहलग्नसे चन्द्रमा दशम (खमध्य) स्थानमें है और दशमेश शुक्र अष्टमेश शत्रुग्रह गुरुसे युति कर रहा है, अतः यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरीयभाग तथा पूर्वीय भूभाग पर कहीं अवर्षण तो कहीं अतिवृष्टि या हिमपातसे दुर्भिक्ष, राजनैतिक कष्ट, साम्प्रदायिक क्लेशादिसे प्रजाको पीड़ित करेगा। सीमाप्रान्त सिन्ध पंजाब बंगाल राजपूताना उड़ीसा मद्रास नैपाल चीन ग्रीस जापान फ्रान्स तुर्की ईरान इराक यूरोप रूसके पश्चिमीभाग और राज्याधिकारी जमीनदार कृषक एवं पशुओं पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। चीन तुर्की जापान ईरान और यूनानकी राजनैतिक सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितयाँ अधिक विषम होंगी। पारस्परिक संघर्ष और उत्पातसे जन-धन सम्पत्ति की विशेष हानि होगी। देशके किसी अग्रणी ख्यातिप्राप्त महापुरुषकी मृत्यु होना सम्भव है। इस ग्रहण के प्रभावसे लोहा स्टॉक और शेयरोंके भाव तेज होंगे। धान्य (अनाज) के भाव समान रहें। वस्त्रमें कुछ मंदी हो, घृत तैल हल्दी केशर खण्ड गेहूँ और उड़दके भाव भी तेज रहें। सोना चांदीमें मंदी आवे। खग्रास ग्रहण के फलका प्रभाव प्रायः ६ मास तक होता है।

[हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

आभार-प्रदर्शन

महा महिमामयी श्रीजगदम्बाकी असीम अनुकम्पासे 'श्रीस्वाध्याय' ने अपने ५ वर्षके शैशवकालको पार कर छठे वर्षमें पदार्पण किया है। इस प्रकार शैशवावस्थाके सभी अरिष्टोंको पार कर जिस लाड़-प्यारके पालनके साथ आज उसे अपनी कुमारावस्थामें आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उसका सारा श्रेय उसके संस्थापक श्री १०८ महाचार्य चरणोंकी कृपा तथा सहृदय सहयोगियोंको ही हैं, जिनकी परमोदार सहायता और मङ्गलकामना पर ही उसका सब कुछ निर्भर रहा है। 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक धर्ममार्त्तण्ड बघाटमहीमहेन्द्र श्री १०५ मान् महाराज दुर्गासिंहजी बहादुर सोलन नरेश महोदय और श्री १०५ मान् रावराजा गिरिधारी शरणसिंह जी महोदय भरतपुरके हम अत्यन्त आभारी हैं, जिनकी छत्रछायामें यह ज्ञानप्रदीप सुरक्षित रहकर पवित्र भारतभूमिको आलोकित कर रहा है। इस पत्रके अन्यतम संरक्षक विद्याव्यसनी श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीन्दार साहब उपरोड़ा स्टेट सी० पी० के निकट हम किन शब्दोंमें अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करें, जिन्होंने गतवर्षसे इस शुभकार्यमें सहयोग प्रदान कर हमें प्रोत्साहित करनेकी कृपा की है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारतीय संस्कृतिके उपासक श्री१०५ मान् राजाधिराज हरिसिंहजी जनरलमिनिस्टर उदयपुर, शिकारपुर-सिन्धके सुप्रसिद्ध दानवीर श्रीमान् सेठ यमुनादासजी, नई दिल्लीके सुप्रसिद्ध टेलर-मास्टर श्रीमान् पण्डित शिवचरणलालजी शर्मा, दिल्लीके ख्यातनामा दानवीर श्रीमान् सेठ बेनीप्रसादजी जयपुरिया महोदय तथा खिड़कियाँ के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी श्री पं० हरिशंकर जी शास्त्री ने जो इस वर्षसे सहर्ष श्रीस्वाध्यायका सहायकत्व स्वीकार कर महान् सुकार्य किया है। इसके लिए हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं तथा आशा करते हैं कि आप महानुभावोंका यह पवित्र सहयोग 'श्रीस्वाध्याय' के उत्थानका कारण होगा।

परम साध्वी भगवद्भक्ति-परायणा वयोवृद्धा श्री१०५ मती माँजी महाराणी साहिबा सिरमौरी जी, श्री १०५ मती सौ० राणीसाहिबा वृन्दावनवाली जी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायबहादुर धर्मालंकार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी, श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार-एट-ला, श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता, श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंहजी साहब, श्रीमान् कुँवर शिवसिंह जी बी० ए० एल-एल० बी०, श्रीमान् सरदार जगजीतसिंह जी ढिल्लों, श्री पं० देवकीनन्दनजी कथावाचक तथा श्रीमान् ला० बाँकेलाल राजकुमार आढ़ती आदि सहायक-वर्गके क्रियात्मक सहयोगके हम चिरकृतज्ञ हैं। 'श्रीस्वाध्याय'की उन्नति बहुत कुछ अपने प्राचीन तथा अर्वाचीन सहायकों पर ही निर्भर है, अतः जिन महानुभावोंने किसी भी कारणवश अपनी गतवर्ष की सहायता अभी तक नहीं भेजी है उनसे विनीत निवेदन है कि अब शीघ्र भेजने की कृपा करें; जिससे 'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर सेवापथ पर अग्रसर होता रहे।

"श्रीस्वाध्याय" इन पांच वर्षोंमें जनतामें अपना जो कुछ भी स्थान बना सका है उसकी इस लोकप्रियताका श्रेय हमारे विद्वान लेखकों को ही है, अतः हम अपने उन मान्य विद्वान् लेखकोंके विशेष आभारी हैं जिन्होंने अपनी मौलिक रचनाएँ भेजकर निरन्तर सहयोग प्रदान किया है।

इस अङ्कके सम्पादन कार्यमें हमारे परमस्नेही बन्धुवर साहित्याचार्य श्री पं० रामबहादुरजी शास्त्री त्रिपाठी महोदयने पर्याप्त सहयोग दिया। आपका 'श्रीस्वाध्याय' से आत्मीय सम्बन्ध है, अतः इस कार्य के लिए उन्हें हम विशेष धन्यवाद देकर आत्मीयता से पृथक् करना नहीं चाहते। इसी प्रकार हमारे परम-हितैषी आदरणीय श्री पं० दयानन्दजी जोशी महोदय भी 'श्रीस्वाध्याय' से आत्मीयता रखते हुए इसकी उन्नतिकी निरन्तर कामना करते हैं और दिल्लीके ग्राहकों की सुविधाके लिए उन्हें (दिल्लीके ग्राहकों को) पत्र अपने यहांसेही देनेका भार भी आपने सम्हाला हुआ है। साथ ही छपाई और डिस्पेचिंगके समय भी आप पर्याप्त सहायता देते हैं, इसके लिए आपको विशेष धन्यवाद देना भी आत्मीयतासे पृथक् करना ही होगा अतः उक्त दोनों सज्जनोंके लिए कृतज्ञता प्रकट कर हम अपनी मनस्तुष्टि करते हैं।

श्री पं० वासुदेव सदाशिवजी खानखोजे, वि० भू० श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत, वि० भू० श्री पं० मोहन शर्मा जी विशारद, श्री डा० श्रीनाथ जी तिक्कू, श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री, श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्यो०, ज्यो० भू० श्री पं० गिरिधारी लालजी दैवज्ञ, श्री पं० विहारीलाल जी दैवज्ञ, श्री प्रो० बी० सी० मेहता, श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्य, साहित्याचार्य श्री पं० वासुदेवजी शास्त्री द्विवेदी, श्री पं० गोविन्द जी मिश्र, श्री पं० कन्हैयालाल राधारमणजी शास्त्री, श्री पं० जगदीश चन्द्रजी शर्मा, श्रीराजकुमार मोतीसिंहजी, श्री कुँ० सुरेन्द्रदेवजी, श्री बा० हंसराज जी आदि जिन-जिन सहृदय सज्जनोंने आरम्भसे ही लेख सामग्री भेजकर एवं ग्राहक बनाकर श्रीस्वाध्यायको जो अपूर्व सहयोग प्रदान किया तदर्थ हम उक्त सज्जनोंके और स्थानाभावके कारण जिन कई सज्जनों के शुभ नाम यहाँ नहीं आ सके उन सबके भी अत्यन्त आभारी हैं। 'श्रीस्वाध्याय' की उन्नतिके लिए जहाँ हम धनी मानी व्यक्तियों तथा विद्वान् लेखकोंकी सहायताकी अपेक्षा रखते हैं वहाँ हमें जनता जनार्दनकी कृपा और सहयोगकी भी विशेष आवश्यकता है। कोई भी पत्र तबतक अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता जबतक उसे साधारण जनसमाज (ग्राहकों) का पूर्ण सहयोग प्राप्त न हो। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि "श्रीस्वाध्याय" दिनों-दिन अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है, परन्तु अभी भी इसके ग्राहकोंकी संख्या इतनी सन्तोषजनक नहीं हो पाई है जिनके भरोसे यह आपकी यथेष्ट स्थायी सेवा करनेमें समर्थ हो सके। अतः हमारा अपने ग्राहकों तथा प्रिय पाठकों एवं सहयोगियोंसे सानुरोध निवेदन है कि वे अपने इष्ट मित्रोंको ग्राहक बनाकर इस ज्ञानज्योतिको अपना स्नेह प्रदान करते हुए सर्वदा प्रज्ज्वलित रखें, जिससे यह भारतीय राष्ट्रको अपने आलोकसे आलोकित करता हुआ पथ-प्रदर्शक बन सके।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत

'श्रीराष्ट्रालोक'

का

राष्ट्रभाषानुवाद

यह ग्रन्थ भारत ही नहीं समस्त विश्वके राष्ट्रिय साहित्यमें कितना उच्च स्थान रखता है यह बतानेकी आवश्यकता न होगी। इसके मूल (श्लोक) मात्र प्रथम संस्करणकी भारतके राष्ट्रिय नेताओं और पत्र पत्रिकाओंने मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। सनातनधर्म-कालेज लाहौरके प्रिन्सिपल महामहोपाध्याय श्रद्धेय श्री पं० परमेश्वरानन्द जी जैसे कई प्रमुख विद्वानोंने इस ग्रन्थको प्रत्येक पाठशाला स्कूल एवं कालेजकी पाठयपुस्तकों में सर्वप्रथम स्थान पाने योग्य बताया है। परन्तु मूल प्रथम संस्करण समाप्त हो जाने और दूसरा संस्करण न छपनेसे ग्राहक निराश हो रहे थे। उन सबको यह जानकर परम प्रसन्नता होगी कि 'श्रीराष्ट्रालोक' राष्ट्रभाषानुवाद सहित अब शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। छपाई और कागजकी स्वीकृतिके लिए भारतसरकार के सम्बन्धित अधिकारियोंके पास प्रार्थना पत्र भेज दिया गया है, वहाँसे स्वीकृति प्राप्त होते ही छपाई प्रारम्भ हो जायेगी और आशा है कि शीघ्र ही यह ग्रन्थ, विज्ञ पाठकोंके हाथोंमें पहुंचेगा।

यह ग्रन्थ क्या है राष्ट्रिय साहित्यकी एक अमूल्य निधि है। इसका संस्कृत राष्ट्र-सञ्जीवन-भाष्य स्वयं ग्रन्थ-निर्माता (आचार्यचरणों) ने कई सौ पृष्ठोंमें लिख रक्खा है। वह विशाल ग्रन्थ तो कभी समय और साधनकें सुलभ होनेपर ही छप सकेगा। अभी हम मूल श्लोकोंके साथ राष्ट्रभाषा हिन्दीमें केवल भावपूर्ण शब्दानुवाद मात्र ही प्रकाशित करेंगे। इस ग्रन्थके अध्ययन से नस-नसमें राष्ट्र-प्रेम व उत्साह भर जायेगा। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्त्तव्य, राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं ? उसपर किसका अधिकार होता है ? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका ज्ञान सम्यक् तया इस ग्रन्थसे हो सकता है। 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकोंको यह ग्रन्थ आधे मूल्यमें दिया जावेगा। मूल्यादिकी सूचना आगामी अङ्कमें दी जावेगी।

विज्ञापन दाताओंके लिए अपूर्व अवसर

अब इस छठे वर्षसे 'श्रीस्वाध्याय'में सर्वथा विश्वसनीय प्रामाणिक संस्थाओं और आदर्शवादी व्यवसायियोंके विज्ञापन लेनेका भी निश्चय किया गया है। अतः विज्ञापनदाता अभीसे अपना विज्ञापन भेजकर आगामी अङ्कके लिए स्थान सुरक्षित करा लें। विज्ञापन शुल्क (दर) आदिके लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्याय-सदन, सोलन (शिमला

८१ से लेकर ११४ पृष्ठ तक धारा प्रेस में छपा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिये परम कल्याणकारी व सन्मार्ग-प्रदर्शक यही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिस प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल-सी मच और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गई। इस ग्रन्थको ...नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, ...र बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता ...अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या ...ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? ...क्या है? और हमें क्या करना चाहिये? दर्शन ...कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? ...की उपपत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ ...से भली-भांति परिचित हो कर आत्म-साक्षात्कार ...ना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। ...के सभी सन्देह दूर हो कर अद्भुत आनन्द प्राप्त ...(मू० २) रु० मात्र।

'श्रीस्वाध्याय' के संस्थापक उक्त आचार्यचरणों ...निर्मित 'श्रीपरशुरामस्तोत्र' और 'श्रीसप्तपदीहृदय' ...भाषानुवाद सहित तथा आप ही के द्वारा सम्पादित ...त्रमासिकी 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकोंको मार्ग ...के लिये दो आनेके टिकट प्राप्त होने पर भेजी जाती हैं।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १॥) रु०, २—हेमन्ताङ्क २॥) रु०,
३—वसन्ताङ्क १॥) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०,
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मू० ६) रु०।

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु०, २—हेमन्ताङ्क २) रु०,
३—वसन्ताङ्क १॥) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०,
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ८) रु०।

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५॥) रु०, २—हेमन्ताङ्क २) रु०,
३—वसन्ताङ्क १॥।) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क १॥।) रु०,
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मू० १०) रु०।

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य, २—हेमन्ताङ्क ३) रु०,
३—वसन्ताङ्क ३) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क २) रु०,

पंचम वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५) रु०, २—हेमन्ताङ्क १) रु०,
३—साहित्याङ्क २) रु०, ४—ग्रीष्मांक अप्राप्य
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०।

मिलनेका पता—
व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

विज्ञ वाचकोंसे निवेदन

इस अङ्ककी छपाईकी पूरी व्यवस्था अर्जुन प्रेसमें न हो सकी, अतः आधेसे अधिक मेटर बाहर दूसरे प्रेसोंमें ...ना पड़ा, इस दौड़ धूप और असुविधाके कारण छपते समय मशीन प्रूफकी अशुद्धियां मैं स्वयं न मिला सका और ...प्रूफोंमें लगाई हुई कई अशुद्धियां प्रेसके पुरुषजनोंने ठीक नहीं कीं, अतः कुछ स्थानोंमें अक्षर मात्राकी अशुद्धियां ...गई हैं, इसका मुझे हार्दिक खेद है। अन्तमें पूरे एक पृष्ठका शुद्धिपत्र बनाया था, परन्तु दशहरा और रविवार दो ...ा प्रेसोंमें अवकाश हो जानेसे वह भी न छप सका। विज्ञ पाठकोंसे निवेदन है कि वे उक्त विवशताको समझकर ...रही हुई ऐसी अक्षर मात्राकी अशुद्धियोंको स्वयं ठीक कर पढ़नेकी कृपा करें। छपाईका कार्य येनकेन-प्रकारेण ...हो जाने पर भी उक्त दो दिनोंके अवकाशके कारण तत्काल यह टाइटल पेज न छप सका और न बाइण्डिङ्ग ही हो ...अतः यह अङ्क ग्राहकों तक पहुंचानेमें जो चार पांच दिनका विलम्ब हुआ उसके लिए भी मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

— हरदेव शर्मा त्रिवेदी

दिल्लीमें 'श्रीस्वाध्याय' मिलनेका पता—
श्री पं० दयानन्दजी जोशी, समोसागली, फर्राशखाना, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए--

राष्ट्रके उद्गार

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है।... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है........।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।........मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं........।

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ....इस पत्र और इसके सञ्चालक मण्डलसे राष्ट्रीयकार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी.......।

कविसम्राट् श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पञ्चमवर्षका प्रथमाङ्क बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्ध कर हैं। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय हैं।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......."

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।.......यह एक उच्च कोटिका सांस्कृतिक पत्र हैं। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"...वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता हैं।......"

श्री डा० रामकुमार वर्माजी--"......'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......."

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"......'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्द्धक और उपादेय है।......प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......'

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'......'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।......आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्त्तिकी है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—"...'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय। यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूं। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहलीमें छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीः

मासिक

श्रीस्वाध्याय

शरद्-अङ्क

वर्ष ७
सं० २००४

संख्या १
आश्विन

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

इस अंक का मूल्य १) रु०

वार्षिक मूल्य ३॥)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

माननीय उदार संरक्षक सहायक तथा ग्राहकों से आवश्यक निवेदन—

हमें प्रसन्नता है कि आप महानुभावों की उदार सहायता से ही 'श्रीस्वाध्याय' ने अपने शैशव काल में भी विगत ६ वर्षों में समाज तथा देश की अधिकाधिक सेवा की है। इसके भावी जीवन की प्रगति भी आपके बहुमूल्य सहयोग पर ही निर्भर है। अतः जिन सम्मान्य संरक्षक सहायक महानुभावों ने कारणवशात् अब तक गत वर्षों तथा वर्तमान वर्ष की सहायता नहीं भेजी है, वे कृपया अब शीघ्र भेज देवें। जिससे 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी अंकों को नियत समय पर अधिक से अधिक सुन्दर रूप में निकाल कर हम राष्ट्र की समुचित सेवा कर सकें।

जिन पुराने और नये ग्राहकों ने इस सातवें वर्ष का मूल्य अभी तक नहीं भेजा है वे शीघ्र भेज दें, अन्यथा विलम्ब करने पर यह अंक उन्हें न मिल सकेगा। कागज की कमी के कारण यह अंक बहुत थोड़ा छपा है, अतः वी० पी० से किसी को भी नहीं भेजा जा सकेगा। विनीत—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी (व्यवस्थापक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स०ध०प्र० सभा पंजाब।

धर्मसात्त एड राजा साहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी०आई०ई०,सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी, भरतपुर।

श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीनदार साहब, उपरोड़ा स्टेट, सी० पी०।

श्रीमती सौ० शान्तिदेवी धर्मपत्नी श्रीमान् सेठ चरणदासजी, लाहर।

सहायक—श्री १०५ मती स्व० माँजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावनवाली जी (भरतपुर)।

श्री १०५ मान् राजाधिराज हरीसिंहजी जनरल मिनिस्टर उदयपुर (मेवाड़)।

रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी, नरसिंहगढ़।

श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंह जी बार. एट-ला. जज हाईकोर्ट उदयपुर।

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुज जी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।

श्रीमान् पं० हरिशंकरजी शास्त्री ज्योतिष रत्न, खिड़कियां सी० पी०।

श्रीमान् पं० शिवचरणलालजी शर्मा, नई दिल्ली।

श्रीमान् सेठ यमुनादासजी, अध्यक्ष फर्म बेरामल परशुराम, बम्बई और शिकारपुर।

श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता, उदयपुर (मेवाड़)।

श्रीमान् सरदार कुंवर रणदीपसिंह जी साहब, नाहन (सिरमौर)।

श्रीमान् कुंवर शिवसिंह जी बी० ए०, एल-एल० बी०, सेशनजज सोलन।

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंह जी ढिल्लों बी० ए० एल-एल० बी० नाभा।

श्रीमान् पं० देवकीनन्दन जी कथावाचक, यादव कीर्तन मंडल, अम्बाला।

श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढ़ती खर्ड (पंजाब)।

श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढ़ती, खर्ड (पंजाब)।

श्रीमान् पं० पद्मसिंह जी ठेकेदार भरतपुर।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो० र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्याय-सदन, सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसार को हित की ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालक गणों के नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपये से अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००)तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

श्रीस्वाध्याय के नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मुल्य ३।।) और एक प्रति का १) रु० है।

(२) जिन सज्जनों के लेख श्रीस्वाध्याय-सदन की ओर से प्रार्थना-पूर्वक मँगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन पंजाब के पते से भेजने चाहियें।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरों में कागज के एक ओर ही लिखी होनी चाहिये।

(५) किसी लेख के प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकों के नियम----

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भ के प्रथमाङ्क से (आश्विन मास विजयादशमी से) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी ही भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समय से ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में उनसे पूरा वार्षिक मूल्य ३।।) रु० न लेकर वर्ष समाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अंकों का मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अंकों या नौ मास का मूल्य ३) रु० और एक अंक का मूल्य १) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिये। वी० पी० मँगाने से उक्त मूल्य में तीन आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भ से स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवाने में ही ग्राहकों को विशेष लाभ है। गत पंचमवर्ष का 'ग्रीष्मांक' और विगत चतुर्थ वर्ष का 'नववर्षाङ्क' अब स्टाक में बिल्कुल नहीं है अतः इन अङ्कों के लिये अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनिआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक नंबर स्पष्ट अक्षरों में लिखना चाहिये। केवल 'नववर्षाङ्क' (यदि वह अंक विशेषांक होगा तो) का मूल्य २) है।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनों के जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकिट आवेंगे उन्हीं को तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला दशमी को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानी से भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहक के पास न पहुँचे तो १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिये, बाद की शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्री स्वाध्यायसदन, सोलन ((शिमला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय के

सातवें वर्ष का 'नव-वर्षांक'

जगज्जननी जगदम्बा की महती कृपा से 'श्रीस्वाध्याय' अपने छः वर्ष पूरे कर इस 'शरदङ्क' के साथ ही सातवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अपने विद्वान् लेखकों, कलाकारों, अनुभवशील ज्योतिषियों और प्रेमी पाठकों के सहयोग से हमें आजतक जो महती सफलता और ख्याति मिली है उसके लिये हम सबके कृतज्ञ और चिर ऋणी हैं। हमें आशा एवं विश्वास है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हमको सबका सम्मिलित सहयोग प्राप्त होगा और हम प्रतिदिन उन्नति की ओर बढ़ते हुए अपने राष्ट्र-उत्थान के कार्य में सफल होंगे।

व्यापार-अङ्क—

हमने गताङ्क में यह सूचना प्रकाशित की थी कि आगामी नव-वर्षाङ्क व्यापार-अंक होगा, परन्तु अगस्त और सितम्बर में देश की परिस्थितियां अत्यन्त विषम एवं उग्र हो गईं। चारों ओर विशेषतः पंजाब और दिल्ली में भयंकरता का भयंकर ताण्डव हो रहा था, सभी कार्य प्रायः बन्द हो गये थे, डाक की समुचित व्यवस्था तो आज तक नहीं हो पाई। अतः व्यापार-अंक की जैसी सामग्री हम पाठकों को देना चाहते थे वह नहीं जुट सकी। इसलिये यह आवश्यक समझा गया कि वर्ष का यह प्रथम अंक तो साधारण ही रखा जाय और वर्ष के मध्य का कोई अंक 'विशेषांक' कर दिया जाय। इसीलिये इस समय 'व्यापारांक' नहीं प्रकाशित हो सका। आशा है पाठक देश की परिस्थितियों और हमारी असुविधाओं का ध्यान रखेंगे।

इस—अङ्क—में—भी—विलम्ब

प्रस्तुत अंक विजयादशमी पर पाठकों को मिलना चाहिये था, परन्तु इस अंक के भी प्रकाशित न होने में वे सभी बाधायें काम कर रहीं थीं जो 'व्यापारांक' में थीं। फिर भी प्रस्तुत अंक पाठकों को समर्पित करते हुए जहां हमें कुछ संकोच हो रहा है वहां संतोष भी है कि अनेक असुविधाओं एवं साधनों के अभाव में भी इस संकट कालमें हमसे पाठकों की कुछ सेवा बन पड़ी है। अतः हमें आशा एवं विश्वास है कि पाठक महानुभाव इस विलम्ब की ओर भी ध्यान न देते हुए 'श्रीस्वाध्याय' को सहयोग देंगे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे कृपालु ग्राहक जिनमें अधिकांश व्यापारी-वर्ग है उन्हें 'श्रीस्वाध्याय' का यह अंक निश्चित समय पर न मिलने से व्यापार सम्बन्धी अनेकों असुविधायें हुई होंगी, परन्तु आशा ही नहीं विश्वास है कि वे देश के वर्तमान संकटकाल में हमारी इस असमर्थता के लिये क्षमा करेंगे। आगामी हेमन्ताङ्क (पौष शुक्ला १० वाले अंक) की छपाई के लिये बहुत कुछ आशा है कि हम सोलन में ही प्रबन्ध कर लेंगे। यदि दैवात् ऐसा न भी कर सके तो दिल्ली के लिये यात्रा की सुविधा होते ही वहां पहुँच कर आगामी अंक एक सप्ताह पूर्व ही पाठकों की सेवा में पहुँचा देंगे। श्रीजगदम्बा की कृपा से यदि देशकाल की स्थिति ठीक रही तो हमें आशा है कि आगामी चैत्र मास का 'वसन्तांक' विशेषांक के रूप में निकालकर हम प्रेमी पाठकों की सेवा कर सकेंगे।

कार्तिक शु० १
सं० २००४ वि०
श्रीस्वाध्यायसदन

विनीत—
व्यवस्थापक
'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान की बलिवेदी पर

'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकों तथा सहयोगी मित्रों को यह स्मरण ही होगा कि हमें गतवर्ष शीतकाल में 'श्रीविश्वविजय' पंचांग की छपाई के लिए श्रीमान् सेठ चरणदास् जी के आग्रह पर आवश्यक पुस्तकों तथा पर्याप्त सामान सहित सपरिवार लाहौर जाना पड़ा था। वहीं से हम एक विवाह में सम्मिलित होने के लिए मेवाड़ चले गये और वहां से वापिस लाहौर न आ सके। इसी बीच उक्त सेठ महोदय लाहौर के भीषण दंगे से भयभीत हो आत्मरक्षार्थ सपरिवार लाखों की सम्पत्ति छोड़ कर हरिद्वार चले गये। इसके अनन्तर कई बार आवश्यक पुस्तकों और सामान के लिए लिखने पर भी वे यही कहते रहे कि—"धैर्य रक्खें, पूर्ण शान्ति होने पर लाहौर चलेंगे।" पर होनहार कुछ और ही थी। १५ अगस्त के स्वतन्त्रता दिवस के पहले ही लाहौर और पश्चिमी पंजाब में आततायी गुण्डे मुसलमानों ने अपनी पाकिस्तान सरकार के संकेत पर वह भयंकर नरमेध लूटपाट तथा प्रलयंकर अग्निकाण्ड मचा दिया जिससे लाखों हिन्दू अनाथ गृह-हीन तथा निराश्रित हो गये। इस प्रकार जहां पाकिस्तानकी बलिवेदी पर लाखोंने अपने प्राण तथा संपत्ति की भेंट चढ़ाई वहां पंजाब में रहने के नाते स्नेही सेठ साहब की सम्पत्ति के साथ हमारा भी बहुत सा बहुमूल्य सामान भेंट चढ़ा। हमें अन्यान्य वस्तुओं के नष्ट होने की विशेष चिन्ता नहीं है, परन्तु कई अप्राप्य पुस्तकों के साथ बहुमूल्य संग्रहीत हस्त-लिखित पुस्तकें, सारिणियां स्मृतिपत्र, अनेक इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डलियां तथा कई अप्रकाशित लेख आदि विनष्ट होने का अत्यन्त खेद है। आशा है कि हमारे वे प्रिय मित्र तथा विद्वान् लेखक अपनी जन्मकुण्डलियों तथा अप्रकाशित लेखों के लिये हमारी इस असमर्थता पर क्षमा करेंगे।

जो पुस्तकें प्राप्य हैं उन्हें तो हम मंगवा ही लेंगे, परन्तु कुछ निम्न लिखित ऐसी पुस्तकें हैं जो अब नितरां अप्राप्य हैं। उनके अभाव में कार्यालय के कार्य में अनेक असुविधायें हो रहीं हैं, अतः अपने प्रिय अनुरागी पाठकों तथा सहृदय ज्योतिर्विद मित्रों से यह निवेदन है कि नीचे लिखी पुस्तकों में से जो भी उनके पास हों, उन्हें उपहार-स्वरूप अथवा उचित मूल्य लेकर कार्यालय में रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा भेज कर हमें अनुगृहीत करें।

अभीष्ट अप्राप्य पुस्तकें—

१—भारत का वायु-शास्त्र (वृष्टि प्रबोध) (श्री पं० मीठा लाल जी व्यास कृत)
२—भावा फल-विचार " "
३—संक्रान्तिफल-प्रकाश " "
४ - दशाफल दर्पण (श्री पं० महादेव जी कृत रतलाम)
५—वर्ष-पद्धति " "
६ - रणवीर ज्योतिर्महानिबन्ध

निवेदक—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी
श्री स्वाध्याय सदन, सोलन, (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥ —अ० वा० आचार्य।

वर्ष ७ | नववर्षाङ्क | संख्या १
सोलन, अश्विन शु० १० शुक्रवार सं० २००४ वि०

स्वाध्याय-महिमा

[श्री १०८ आचार्य अमृत वाग्भवजी महाराज]

जिघांसानार्याणां समुदयति चित्तेष्विति मतं,
समास्थाय भ्रान्त्या ननु कतिपये मूढ़मतयः।
अहिंसां भाषन्ते सुरजनहितां पद्धतिमिमा—
मितः मं स्वाध्यायं सदवगमनाय स्पृहयत ॥

❀ ❀ ❀

है हनन-कर्म की इच्छा होती मन में—
केवल अनार्य के, मूढ़ मूढ़तापन में—
जो बैठे हैं समझ भ्रान्ति से कहते हैं—
सुरजन के सब सुहित अहिंसा में रहते हैं।
यदि चाहते हैं श्रीमान् अहिंसा के सद्ज्ञान को,
पढ़िये 'श्रीस्वाध्याय'को स्थिर करके निज ध्यान को॥

विनीतानां वन्द्या प्रसभमविनीतैरपटुभि—
र्गृहीता दुष्टानामहह ! पतिता सा पदतले।
रुदन्ती शोचन्ती प्रतिदिनमहिंसाऽत्र भवती
सहायं स्वाध्यायं सपदि बुधसंगेन वृणुताम् ॥

❀ ❀ ❀

हा ! वह विनम्र-जन-वन्द्य अहिंसा रानी,
आज मूर्ख-सेवित हो सहती है मनमानी।
हो दीन पड़ी है आज दुष्ट-पद नीचे,
सहती अत्याचार हाय निज लोचन मीचे।
हे नवभारतकी देवि ! नवबल 'श्रीस्वाध्याय'से—
पाकर छूटो दुःख से बुधजन के साहाय्य से ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सातवें वर्ष में प्रवेश

विकासवाद के इस युग में पत्र पत्रिकाओं का कितना ऊँचा स्थान है इसे प्रायः प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति भलीभांति जानता है। इनका हमारे जीवन के साथ इतना गहरा सम्बन्ध है कि इनके बिना संसार की आज कोई भी जाति देश या समाज अपने को जीवित नहीं रख सकता। किसी भी देश की सभ्यता और शिक्षा का प्रतीक वहाँ से प्रकाशित होनेवाली पत्र पत्रिकाओं का स्वरूप और संख्या ही मानी जाने लगी है। आज तक की परतन्त्रता से हमारे देश में जो घोर अविद्या का साम्राज्य फैला है, उससे पत्र-पत्रिकाओं को पनपने और साधन-सम्पन्न होने में अनेकों बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अंग्रेजी राज्य में तो कभी कभी इनके मुख पर ताला लगा कर जन-सेवा की स्वतन्त्रता का अधिकार भी छीन लिया जाता रहा है। सौभाग्य से अनेकों बलिदानों और त्याग के पश्चात् प्राप्त स्वतन्त्रता में पत्र पत्रिकायें भी सुख का श्वास लेने लगीं हैं। कहना न होगा कि अनेकों प्रतिबन्धों के होते हुए भी इन पत्र पत्रिकाओं ने हमारे स्वातन्त्र्य युद्ध में पथ-प्रदर्शन के कार्य द्वारा पूर्ण सहयोग प्रदान कर अपने पवित्र कर्तव्य का अधिकाधिक पालन किया है। देश और समाजका स्तर विविध सामाजिक एवं आध्यात्मिक साहित्यों द्वारा ही उन्नत होता है, अतः अब स्वतन्त्र भारत में जहाँ अन्यान्य उन्नतिके साधनों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है वहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी की पत्र पत्रिकाओं को भी आज तक सभी कठिनाइयों को दूर कर उनका मार्ग प्रशस्त करना परमावश्यक है।

दैनिक समाचार पत्रों की अपेक्षा मासिक तथा त्रैमासिक पत्र पत्रिकाओं का साहित्य स्थायी होने के कारण समाज में एक प्रमुख स्थान तथा गौरव रखता है। यद्यपि 'श्रीस्वाध्याय' अभी अनेकों असुविधाओं के कारण मासिक नहीं हो पाया है, तथापि अपने त्रैमासिक स्वरूप में ही उसने देश और समाजकी जो कुछ सेवा की है उससे यदि हमारे प्रेमी पाठकों, उदार संरक्षक सहायकों, विद्वान् लेखकों एवं सहृदय सहयोगियों की कुछ भी मनस्तुष्टि हुई है तो हम उसके प्रकाशन के श्रमको सफल समझेंगे। साधारण धरातल से ऊपर गर्व से अपना शिर उन्नत रखनेवाली इन शिमला की पहाड़ियों में शिक्षाका अत्यधिक अभाव होने के कारण 'श्री स्वाध्याय' के विस्तारके लिए विस्तृत पार्श्वभूमि न होने तथा इसकी जन्मभूमि सोलन में अभी तक कोई अच्छा प्रेस न होनेसे इसके विकास में बहुत ही बाधायें पड़ी हैं, परन्तु जहाँ अनेकों पत्र पत्रिकाएँ तथा उनके प्रचुर साधन हैं वहाँ अपने अस्तित्वको न बढ़ाकर साधन-हीन इस पर्वतीय प्रदेश की जनता की सेवा के उद्देश से सोलन को ही जन्म भूमि बनाने का 'श्री स्वाध्याय' को स्वाभिमान है।

'श्रीस्वाध्याय' का मुद्रण दिल्ली में होनेसे वहाँ आने जाने तथा लगभग महीने भर वहीं ठहर कर प्रत्येक अंकके निकालने एवं प्रेसकी वर्तमान असुविधाएं आदि अनेकों कठिनाइयों को पार करते हुए आज हमें हर्ष हो रहा है कि 'श्रीस्वाध्याय' अपनी कुमारावस्था के ६ वर्षों को व्यतीत कर सातवें वर्ष में पदार्पण करता हुआ आपकी सेवा में उपस्थित हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तक 'श्रीस्वाध्याय' जो आपकी निरन्तर सेवा करता रहा है, उसका प्रमुख श्रेय जगदम्बा की अनन्त कृपा तथा 'श्रीस्वाध्याय' के जन्मदाता पूज्यपाद श्री १०८ आचार्यचरण अमृतवाग्भवजी महाराज को ही है, जिनके शिवसंकल्प तथा शुभाशीर्वादोंने उक्त विघ्नबाधाओं का सामना करने के लिए इसे बल तथा साहस प्रदान किया है। हर्ष की बात हैं कि समय-समय पर प्राप्त श्री आचार्य-चरणों के पावन—संदेशों से सदैव इसे सत्प्रेरणा एवं स्फूर्ति मिला करती है। इस प्रकार सदा से ही उनकी पूर्ण कृपा ही 'श्रीस्वाध्याय' की प्रगतिमें सहायक एवं पथ-प्रदर्शक बनी रही है।

'श्रीस्वाध्याय' अपने उन सभी माननीय संरक्षकों और सहायकों का परम कृतज्ञ है जिनकी उदार सहायता से अब तक वह अपने स्वरूप और पवित्र उद्देश्य की रक्षा कर सका है और भविष्यमें भी करता रहेगा। विशेषतया हम अपने सम्माननीय संरक्षक विद्यानुरागी धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मान् बघाटमही महेन्द्र महोदय के चिर ऋणी हैं जिन्होंने निरन्तर हमें सर्वविध सहायता प्रदान कर प्रोत्साहित करते रहने की महती कृपा की है। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि 'श्रीस्वाध्याय' अपने कृपालु संरक्षकों सहायकों तथा प्रेमी पाठकोंका सर्वदा की ही भांति कृपापात्र रहकर अपने भावी जीवन की सभी कठिनाइयों को पार करता हुआ देश एवं समाज की सेवा द्वारा अपने कर्तव्यका पालन कर सकेगा। जिन कृपालु मनीषी विद्वान् लेखकों की लेखनी से निःसृत लेखामृत का पानकर 'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर अपनी कलेवर वृद्धि करता रहा है, उन महानुभावों के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करना हम अपना प्रमुख कर्तव्य समझते हैं।

अन्त में 'श्रीस्वाध्याय' के सप्तमवर्ष में प्रवेश करने की इस पावन शुभ-वेला में हम अपने समस्त सहयोगियों संरक्षकों सहायकों ग्राहको एवं विद्वान् लेखकों से आशा करते हैं कि वे भविष्य में सब प्रकार से 'श्रीस्वाध्याय' को अपना बहुमूल्य समय और सहयोग प्रदान करते हुए स्वतन्त्रभारत के इस वर्तमान संकट-कालमें हमें अधिक से अधिक जनता-जनार्दन की सेवाका सुअवसर देंगे। —संपादक।

हिन्दू अपनी आँखें खोलें

(पृष्ठ ७ का शेष)

पाकिस्तान में भेज कर हिन्दू हिन्दी और हिन्दुस्तान का कल्याण करेंगे।

हिन्दुओं! हमारी धमनियों तथा नाड़ियों में आज भी उन आर्यों का रक्त प्रवाहित हो रहा है जिन्होंने रणक्षेत्र में कभी पीठ नहीं दिखाई थी, अपने बुद्धिबल तथा पराक्रम से शत्रुओं को आत्मसात् कर गये थे। हम उन्हीं की सन्तान हो आज अपने स्वरूप को भूल बैठे हैं। हमने वर्षों अपने स्वातन्त्र्य युद्ध में अधिक से अधिक त्याग और बलिदान द्वारा परतन्त्रता की बेड़ियां तोड़ कर जिस स्वतन्त्रता को प्राप्त किया है क्या आज उसकी रक्षा का हमारा पवित्र कर्तव्य नहीं है। यदि हमें अपने प्राचीन आदर्शों को अक्षुण्ण रखना है, विश्व में अपनी संस्कृति और अपने को जीवित रखना है, अपनी बहू बेटियों की लज्जा के साथ मातृभूमि की रक्षा कर उसकी मान मर्यादा बचानी है, तो अब देश का वर्तमान संकटकाल हमें चुनौती दे रहा है कि हिन्दू जनता अपनी आंखें खोले और सब प्रकार सन्नद्ध होकर राष्ट्र द्रोहियों का सारा प्रयत्न विफल बना दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार—

हिन्दू अपनी आंखें खोलें

जिस शुभ दिवस को देखने के लिए देश के सहस्रों नवयुवकों, सुकुमार बालकों तथा वीरांगनाओं ने अपना रक्त-दान किया, सर्वस्व त्याग किया, बलिदान किया, चिर प्रतीक्षा के पश्चात् वह १५ अगस्त स्वतन्त्रता का पावन सन्देश लेकर आया। देश के कोने-कोने में प्रत्येक छोटे-बड़े नगरों, कस्बों तथा गाँवों में जन-जन में हर्ष की लहरें दौड़ पड़ीं। सारे भारत ने राष्ट्रिय तिरंगे भंडों तथा तोरण-पताकाओं से सुसज्जित हो अन्य स्वतन्त्र देशों के सम्मुख गर्व से अपना शिर ऊँचा किया। सर्वत्र विशाल सभायें हुईं, भाषण हुए, नवराष्ट्र के उदय के साथ ही भविष्य की अनेक सुखद कल्पनाएँ की गईं। रेडियो ने अपनी मधुरतम ध्वनियों से हमें हमारे नेतृ-वृन्द का सन्देश सुनाया। हमने इस दिवस के शुभागमन की प्रसन्नता में अपने आन्तरिक उल्लास को व्यक्त करने में कोई कोर कसर नहीं रक्खी। परन्तु तभी पड़ोस में ही पश्चिमी पंजाब में जो कुछ हुआ उससे अपनी आँखें मींच कर ही यह सब कुछ हो रहा था। सच पूछें तो यह दिवस हर्ष मनाने का नहीं था, बल्कि इस शुभ घड़ीमें भी अपने अनैक्य और साम्प्रदायिक उन्माद पर आँसू बहाने का था। विश्व के किसी भी राष्ट्र में सम्भव है ऐसी बेला न आई होगी, जहाँ एक ओर तो स्वतन्त्रता के हर्षातिरेक से प्राणिमात्र झूम उठा हो और दूसरी ओर उसके दूसरे अंग में उसके ही पड़ोसी भाई रक्त की होलियां खेल रहे हों, अनेकों दानव-वृत्ति मानवों ने माताओं की गोद से बच्चों को खींचा, उनको पैर पकड़कर चीर दिया, पिता भाई और पति के देखते-देखते बहू-बेटियों पर बलात्कार किया, दिन दहाड़े लूट हुई और अनेकों गगनचुम्बी विशाल अट्टालिकायें भस्मसात् कर दी गईं। यह सब हुआ और आज भी हो रहा है उस आदर्शवादी सभ्य कहे जाने-वाले भारत में जहाँ से अपने चरित्र और उच्च संस्कृति की शिक्षा पाने के लिए कभी विश्व के अन्यान्य राष्ट्र उद्ग्रीव हो उसका मुख देखा करते थे। कहना न होगा कि आज की घटनाओं ने अन्तर्राष्ट्रिय जगत् में भारत के मान को घटाया है, देश को बुरी तरह बदनाम किया है। विश्व के जो राष्ट्र अब तक भारत को सम्मान और गौरव की दृष्टि से देखते हुए उसे अपना नेता मानने को उत्सुक थे, उनको उसके वर्तमान पैशाचिक कृत्य देख कर भारतीय संस्कृति के प्रति सन्देह होने लगा है। यह निश्चित है कि यदि देश ने अपना ढंग नहीं बदला तो आज घोर तपस्या के बाद 'प्राप्त हमारी स्वतन्त्रता खतरे में होगी।

आज यह सब क्यों हो रहा है? इसे पाठक भलीभांति जानते हैं, अथवा यह कहिये कि बहुतोंको अपने ही गोरख-धन्धों से अवकाश नहीं है, कि वे कभी इस पर भी कुछ सोचें विचारें। हाँ, वे सोचते हैं, परन्तु तब, जब उनके ऊपर भी उक्त आपदा आ पड़ी हो। हमें ऐसा न कर कलकत्ता, नोआखाली तथा पंजाब की घटनाओं को अपनी घटनायें समझनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिएँ और ऐसे कारणों को ढूंढ निकालना चाहिये जिनसे ऐसी अवाञ्छनीय घटनाएँ घटा करती हैं।

सर्व-प्रथम कारण तो यह है कि हिन्दू जनता के पास अपने बहुसंख्यक होने के अभिमानके साथ कोई ऐसा शक्तिशाली संगठन नहीं है जो राष्ट्रद्रोहियों को उनके दुष्कृत्यों का फल दे सके जिससे उनको पुनः आँख उठाने का दुस्साहस न हो। हिन्दू महासभा ने इस दिशा की ओर अपना पग उठाया था, पर राजनीति के पचड़ों में पड़ कर कांग्रेस की बढ़ती हुई शक्ति के सामने उसने दिनोंदिन अपनी शक्ति को क्षीण कर दिया। हिन्दूमहासभा के पास कांग्रेस के साथ प्रतियोगिता में योग्य दूरदर्शी नेतृ-वृन्द का अभाव ही उसके शक्ति ह्रास का प्रधानकारण था और आजभी है। मुकर्जीके विधान-परिषद् एवं मंत्रि-मण्डल में चले जाने पर उसका रहा सहा नेतृत्व भी समाप्त हो जाने से वही कारण बना हुआ है परन्तु अब भी यदि हिन्दू-महासभा एसेम्बली भवन की कुर्सियों पर बैठने का मोह त्याग कर केवल विशुद्ध रचनात्मक कार्य करे जैसा कि 'राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ' शान्ति पूर्वक कर रहा है तो उसके पास योग्य कार्यकर्ताओं का अभाव न रहेगा। वह केवल कांग्रेसकी निन्दा कर न तो शक्तिशालिनी बन सकती है और न उससे देश एवं समाज की कोई सेवा ही हो सकती है। आज आवश्यकता तो इस बात की है कि कोई भी ऐसा हिन्दू-संगठन हो जिसका नाम आप चाहे जो कुछ भी रख लें, देश के कोने-कोने में शस्त्रास्त्र-शिक्षणालय खोले जिनमें प्राचीन अस्त्र की ही नहीं अपितु वर्तमान सरकार की अनुमति से आधुनिक शस्त्रास्त्रों के प्रयोग की भी शिक्षा दी जाय। देश के इस संकट के समय में बालकों तथा नवयुवकों को अब स्कूल और कालिजों में भेज कर केवल किताबी कीड़ा बनाना उतना आवश्यक नहीं है, जितना उन्हें हिन्दुत्व की भावना से ओत-प्रोत कर अपने बाहु बल से आत्मरक्षा के योग्य नागरिक बनाना आवश्यक है।

दूसरा कारण है हमारी संकुचित सांप्रदायिक नीति तथा अशिक्षा। इतिहास के अभिज्ञों से यह छिपा नहीं है कि हमारे अनैक्य के कारण मुट्ठी भर संगठित मुसल्मानों ने ही हम पर तलवार के बल पर शासन जमा लिया। फिर तलवार तथा अनेक आर्थिक एवं राजनैतिक प्रलोभनों से इस्लाम-धर्म का प्रचार आरम्भ किया,जिससे धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ती गई। किसी हिन्दू द्वारा साधारण सामाजिक बन्धन के तोड़े जाने पर भी इस अदूरदर्शी हिन्दू-समाजने क्षमा तो दूर, कुछ उदार शास्त्रीय वचनों द्वारा प्रायश्चित्त करना भी अनुचित समझा, उसे सर्वथा पतित बता कर समाज से निकाल दिया। इसका अनुचित लाभ यवनोंने उठाना प्रारम्भ किया और उनको प्रसन्नतासे इस्लाम-धर्ममें ले लिया। इस प्रकार अनेकानेक हिन्दू अपनी चलाचल सम्पत्ति सहित मुसल्मान हो गये। इन नये मुसल्मान मुल्लाओं ने जो हिन्दुओं और हिन्दू-धर्म के निर्बल मर्मस्थानों से भलीभांति परिचित थे, इस अनुदार हिन्दू समाज से चिढ़ कर इसे गहरी चोट पहुँचाई और इस्लाम-धर्म के प्रचार में कुछ उठा न रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि आज भारत में अरब से आये थोड़े से मुसल्मानों की संख्या दस करोड़ तक पहुंच चुकी है। इसमें हमारी अशिक्षा भी बहुत कुछ कारण रही है, जिससे हमारी बहू-बेटियां तक मुसल्मान फकीरों के कुछ हाथ की सफाई के खेलों को उनका चमत्कार मान कर पीर पैगम्बरों की पूजा तथा मनौती मान उनकी ओर आकृष्ट होती हैं और थोड़ा अवसर पाते ही उन गुण्डे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकीरों द्वारा बहका कर उड़ा ली जाती हैं। इस विषय की अधिकाधिक जानकारी के लिए इस अंक के अन्तिम पृष्ठों से ही हम 'भारत में इस्लामीकरण के षड्यन्त्र' नामक लेख क्रमशः दे रहे हैं।

तीसरा कारण है कांग्रेस की अल्प-संख्यक के नाते मुसलमानोंके साथ अब तक बरती जानेवाली नीति। कांग्रेस ने सदा ही हिन्दू-हितों की उपेक्षा करके भी मुसलमानों को अधिक से अधिक सुविधायें प्रदान की हैं। ऊँची सरकारी नौकरियाँ तथा पुलिस एवं फौज में भी उन्हें जन-संख्या के अनुपात से अधिकाधिक स्थान देने से हमारी प्रान्तीय कांग्रेसी सरकारों ने कोई हिचक नहीं की है। उदाहरण के लिये युक्तप्रांत की पुलिस (जिसमें १४ प्रतिशत मुसलमानों को ६६ प्रतिशत स्थान मिला है) पर्याप्त है। यहाँ तक कि पर्व और त्योहारों पर भी चीनी कपड़ा और गेहूँ जैसी आवश्यक, पर छोटी वस्तुओं के वितरण पर भी हिन्दुओं के साथ अन्याय और मुसलमानों के साथ पक्षपात किया गया है। कांग्रेस ने यह सब कुछ किया और इसके लिये हिन्दुओं के निकट बदनाम भी होती रही, पर वह मुसलमानों को सन्तुष्ट न कर सकी। वह ज्यों-ज्यों झुकती गई उनकी मांगें बढ़ती गई। कांग्रेस की इस नम्रता और उदारता का विपरीत अर्थ निर्बलता लगाया गया और अन्त में वर्षों कांग्रेस के विरुद्ध लीग के घृणास्पद एवं घातक प्रचारों के फलस्वरूप पाकिस्तान के नाम पर कलकत्ता नोआखाली तथा पंजाब के व्यापक हत्याकाण्ड, लूट-पाट और अग्निकाण्ड के दृश्य देखे गये। इन घटनाओं ने कांग्रेस को पाकिस्तान स्वीकार करने के लिये बाध्य कर दिया और उसे शान्ति का कोई दूसरा उपाय न देख आँखें मीचकर जनता द्वारा विरोध करने पर भी अपनी भारत माता का अंगच्छेद करना पड़ा, परन्तु फिर भी शान्ति न मिली गत दो तीन महीनों में पाकिस्तानी सरकार ने अल्पसंख्यकों की रक्षा की शाब्दिक दुहाई देते हुए भी वहाँ जो हिन्दू और सिक्खों का अपनी सेना तथा गुण्डों द्वारा व्यापक वध एवं लूट खसोट कराई है उसके परिणाम स्वरूप लाखों सिक्ख और मुसलमान गृह-हीन निराश्रित तथा अनाथ हो शरणार्थी बन नारकीय जीवन बिता रहे हैं। इन सारी बातों के लिये उत्तरदायी कांग्रेस की दब्बूपन की नीति और उससे बढ़ती हुई मुसलिम लीग तथा उसके प्रधान जिन्ना की भोलेभाले मुसलमानों में राष्ट्र-द्वय का घातक नीति का प्रचार ही है।

आज भारतीय संघ की जनता बड़ी उत्सुकता के साथ अपने नेताओं से यह पूछने लगी है कि अब जबकि मुसलमानों ने किसी भी शर्त पर हमसे सन्तुष्ट न होकर अपना अलग पाकिस्तान बना लिया तो वे फिर वहां क्यों नहीं जाते हैं? वस्तुतः ऐसी दशा में जबकि पाकिस्तान सरकार हिन्दू और सिक्खों का सामूहिक वध कर पाकिस्तान को उनसे पाक-साफ कर अपना यथार्थनामा मुस्लिम पाकिस्तान स्थापित कर रही है, तो फिर भारत से मुसलमानों का चलेजाने का प्रश्न अनुचित नहीं कहा जा सकता। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री पं॰ नेहरू जी ने कहा है कि—"हमारे होते भारत कभी हिन्दू राज्य नहीं हो सकता। बिना साम्प्रदायिक मतभेद के भारत उन सबका लोकतन्त्रात्मक राज्य होगा जो इसके प्रति बफादार होकर रहना चाहेंगे।" अतः आज बहुत से भारतीय मुसलमान भारत में पड़ी अपनी चलाचल सम्पत्ति का मोह छोड़ निराश्रित अनाथ बन पाकिस्तान में न जाकर भारत में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सरकार के प्रति वफादारी की शपथ ले रहना चाहते हैं। यह ठीक है और ऐसा होना भी चाहिये, परन्तु जो मुसलमान भारत में शताब्दियों रहने के बाद भी उसको पितृ-पूण्य भूमि न मान कर आज भी अरब को ही अपनी पितृ-पूण्य-भूमि बतलाते हैं, हिन्दुओं को वधाई काफिर समझते और भारत पर तलवार की शक्ति से अपना परम्परागत शासन करने का अधिकार समझते हैं, उनकी भारत के प्रति शाब्दिक वफादारी का विश्वास कैसे किया जा सकता है। इसकी कसौटी तो उनके कार्य ही हो सकते हैं। युक्त प्रान्त बिहार बंगाल और मध्यप्रान्त के मुसलमानों की मस्जिदों तथा घरों की तलाशी में मिली लाठियां और छुरे तक ही नहीं, स्टेनगनें, मशीनगनें, रिवाल्वर, बन्दूकें, बारूद, कारतूस और तोपें आदि युद्ध-सामग्री तथा ट्रांसमीटर जैसे यंत्र उनकी भारत के प्रति वफादारी का रहस्योद्घाटन भली भांति कर रहे हैं। इस प्रकार जब प्रत्येक मुसलमान का घर (कुछ एक को छोड़कर) और पूजा स्थान मस्जिद एवं कब्रिस्तान तक पूर्ण शस्त्रागार बना हुआ है, तब उन पर विश्वास करने का कोई कारण शेष नहीं रह जाता। भारत के उच्च पदाधिकारी मुसलमान तथा खलीकुज्जमा जैसे मुस्लिम नेता भी भारत के प्रति ली गई वफादारी की शपथ को तोड़ कर यदि पाकिस्तान जा सकते हैं तो जनसाधारण से विश्वासघात न करने की आशा रखना दुराशा मात्र है। तब तो आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रह जाती जब हम सुनते हैं कि श्री नेताजी के दाहिने हाथ आजाद-हिन्द-फौज के प्रमुख पदाधिकारी हबीबुर्रहमान जैसे राष्ट्रिय कहे जाने वाले व्यक्ति भी अपनी राष्ट्रियताको तिलांजलि देकर पाकिस्तान की ओर से काश्मीर पर आक्रमण करने वाले आततायी गुण्डों का साथ दे रहे हैं। जब जिन्ना साहब पाकिस्तान में एक भी हिन्दू इस लिए रखना नहीं चाहते कि वह पंचमसाङ्ग का कार्य करेगा, तो क्या भारत के करोड़ों मुसलमानों से हमें वही भय नहीं है ? इत्यादि अनेकों बातें हैं जिनसे सहजरूपेण यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि कौन व्यक्ति सचमुच वफादार है और कौन गैरवफादार। फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि जिन मुसल्मानों ने भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध में हिन्दुओं के कन्धेसे कन्धा मिलाकर कार्य किया है, जेल यातनाएँ भुगती हैं और अपनी सम्पत्ति विनष्ट की है, उनसे भारत के प्रति विश्वासघात करने की आशा नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त नगर और कस्बों के दूषित वातावरण से दूर गांवों में बसा हिन्दुओं के साथ भाई चारे का सम्बन्ध रखने वाला कृषक और श्रमिक मुस्लिम वर्ग है जिस पर अविश्वास का कोई कारण नहीं दीखता। परन्तु नगर और कस्बों में रहने वाले लीगी मुसलमानों तथा इस्लाम के प्रचारक धूर्त फकीरों, और मुल्लाँ मौलवियों पर उनके अब तक के राष्ट्र द्रोही कार्यों से विश्वास का कोई चिन्ह अवशेष नहीं रह गया है। साथ ही हम उन मुस्लिम पत्रों और पत्रकारों को भी नहीं भूल सकते जिन्होंने अहर्निश कांग्रेस और हिन्दुओं के विरुद्ध विष-वमन किया है। ऐसी दशा में क्या कांग्रेस और अपने नेतृवृन्द से हम यह आशा कर सकते हैं कि वे अब तक की अपनी निर्बलता सूचक झुकते रहने की नीति को त्यागकर ऐसे मुसलमानोंको जिन्होंने निरन्तर हमारे स्वातन्त्र्य युद्ध में बाधा डाली है उनको उनकी सम्पत्ति से बने

(शेष पृष्ठ ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में इस्लामीकरण के षड्यन्त्र

[अन्तिम पृष्ठ ८० से आगे का शेष]

छः मास तक उन्होंने मुझसे भाषण नहीं किया। वह यह समझ बैठे, कि उस अवलिया के विषय में मेरे मत भयङ्कर नास्तिकता के दर्शक हैं, पर जब उन्होंने यह सुना, कि मैं इस नीतिकता को अपना एक भूषण समझता हूँ, तब तो उनके क्रोधमें अत्यधिक वृद्धि हुई। मेरे उस मित्र के एक परिचित, जो उस अवलिया के भक्त थे, तो मुझे मारने के ही लिए लकड़ी लेकर दौड़े आ गए। उस अवलिया के प्रसाद के रूप में बाँटी जाने वाली उच्छिष्ट काफी जब मैंने फेंक दी, तब उस भक्त समूह का क्रोध-सागर अपनी सीमा पार कर मुझे निगल जाने लगा। जब पुरुष-वर्ग की यह कथा, तब स्त्री-वर्ग को कहा ही क्या जाये ? प्रति शुक्रवार को पीर का दर्शन कर वहाँ से भभूत लानेवाली स्त्रियाँ तथा कच्छ छोड़कर नमाज पढ़ने वाले प्रतिष्ठित हिन्दू पूना में भी हैं, यह मैं जानता हूँ। पूना तथा अन्य नगरों में आज भी कई फकीर हिन्दुओं के द्रव्य तथा भोले भाव पर अपने प्रपंच का विस्तार कर रहे हैं।

इन फकीरों की चैन, चरितार्थ तथा हिन्दू लड़कियोंको भगाना, इत्यादि सर्व कौशल इन भगतगणों से प्राप्त द्रव्य पर ही चला करता है। विशेषता यह है, कि मुसलमान फकीरों के द्वारा हिन्दू अबलाओं का अपहरण करने के लिए हिन्दुओं का ही द्रव्य उपयोग में लाया जाता है। मुसलमान फकीर बड़ी कुशलता से भोली हिन्दू-ललनाओं को ठगकर कमाये हुए द्रव्यका उपयोग इस्लामके प्रसार की ओर करता है। इन फकीरोंके शिष्योंमें अधिकतर संख्या गुण्डों की हुआ करती है। यदि वैसे ही मौका आ जाय तो फकीर अपने उद्दिष्ट की सिद्धि के लिये इन गुण्डों के द्वारा लट्ठसे लेकर छुरे तक सब उपायों का अवलम्ब करवाते हैं।

पीर तथा ताबूत

इसी फकीरवर्ग की प्रेरणा से पीरों का तथा ताबूतों का महत्व बढ़ चुका है। कई हिन्दू बड़ी श्रद्धा से पीरों की तथा ताबूतों की उपासना करते हुए देखे गये हैं। हिन्दवी स्वराज्य शत्रु अफजलखां की कब्र महाराष्ट्र में प्रतापगढ़ के निकट है। जिन लोगों को ऐसे हिन्दू देखने हों, जो सन्तान के लिये इस कब्र की मनौती कर पतन की चरमसीमा तक पहुँचे हैं, वे एकबार अफजलखां के उर्स के समय प्रतापगढ़ के निकट हो जायें। मुहर्रम के दिनों में सतारे में "जंगी" नामक ताबूत के सामने कौन और कितनी संख्या में परसादी बाँटा करते हैं, यह देख कर हिन्दुओं के अधःपात का अनुमान लग सकता है। हिन्दू-समाज ! एक बार पीछे मुड़कर यह तो देख, कि मुहर्रम में बाघ बन कर ताबूतों के सामने जो उछलकूद की धूम मचाया करते हैं, उनमें से हिन्दू कितने होते हैं ! तब हिन्दुओं के ध्यान में आ जायेगा, कि ताबूत और पीरों की उपासना में हम लोग बहुत दूर तक पहुँच चुके हैं। (क्रमशः)

दिल्ली में 'श्रीस्वाध्याय' मिलने का पता—

श्री पं० दयानन्द जी जोशी, समोसा गली, फर्राशखाना, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना मूल्य बढ़ाओ !

[ले०—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

समाज सन्मान और प्रेम चाहता है घृणा और निरादर नहीं, सामाजिक होने के नाते व्यक्ति भी वही चाहता है जो समाज चाहता है। इसलिये स्वभावतः प्रश्न उठता है कि सन्मान और प्रेम किस प्रकार, कैसे और कहां से प्राप्त हों ?

प्रत्येक व्यक्ति आत्म-सम्मान का तथा वह जिससे प्रेम करता है उसके प्रेम का भूखा है। इस भूख को मिटाने के लिये भरसक प्रयत्न करने पर भी तृप्ति नहीं होती। कारण यह कि आज का मानव आत्म-सम्मान के स्थान पर मान चाहता है और इसी लिये वह प्रेम से वंचित रह जाता है, क्योंकि सम्मान की इच्छा जीवन को हलका और विचारों का मूल्य कम कर देती है और आत्म-सम्मान की अभिलाषा जीवन को उच्च करती तथा विचारों का मूल्य बढ़ाती है। सम्मान का इच्छुक स्वार्थी होता है और आत्म-सम्मान का अभिलाषी समस्त संसार का शुभचिन्तक होता है। आत्मसम्मान के अभिलाषी के हृदय में—

आत्मनः प्रतिकूलानि न परेषां समाचरेत्,
'जो व्यवहार स्वयं को प्रतिकूल जंचे, उसे दूसरों से न करो' की भावना जागरूक रहती है।

प्रत्येक व्यक्ति को और प्रत्येक समाज को आत्म-सम्मान की रक्षा के लिये—प्रेम और आनन्द की प्राप्ति के लिये अपना, अपने विचारों और अपने जीवन का मूल्य बढ़ाना चाहिये।

मूल्य बढ़ाने का अर्थ है-उन्नति के मार्ग की एक-एक इञ्च भूमि के लिये दूसरों का आश्रय छोड़ अपने बल का आश्रय ले कर्म करने की योग्यता प्राप्त करना, यदि किसी प्रकार संयोगवशात् किसी समय अपनी शक्ति से कार्य पूर्ण न हो तो भी बिना निराश हुए उन्नति के ध्येय की ओर बढ़ते जाना, अपनी शक्ति का क्षय न होने देकर आशा विश्वास और दृढ़ता के साथ परम प्रभु का आश्रय लेना।

बहुत से व्यक्ति प्रायः हृष्ट-पुष्ट और सामर्थ्यवान् होते हुए भी प्रभु की दिव्यदेन—पौरुष को ठुकरा कर दूसरों का सहारा खोजते हैं। ऐसे व्यक्ति अपना मूल्य घटा लेते हैं। निकम्मे और निरुत्साही व्यक्तियों से प्रभु अप्रसन्न रहते हैं, उन्हें दुःख और निराशा की कारा में कष्ट भोगने पड़ते हैं।

प्रार्थना उसी समय सफल होती है जब व्यक्ति पूरे बल से अपना कार्य आप करता है, अपने कार्य के लिये ईश्वर की सहायता नहीं चाहता, वरन् अपने कार्य आप करने की योग्यता प्राप्त करता है। भोजन बनाने की शक्ति होते हुए भी बने बनाये भोजन के लिये प्रभु से प्रार्थना करना, अथवा चलने की शक्ति रहते हुए भी प्रभु से मोटर मांगना, प्रभु का निरादर है, प्रार्थना नहीं, भार लादना है, प्रभु की देनको ठुकराकर अपना मूल्य कम करना है।

यद्यपि अपने बल से काम करने में विरोधी परिस्थितियां रुकावटें डाल सकती हैं, थका सकती हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि विरोधी परिस्थितियां, थकावटें, उलझनें और दुःखों के समुदाय ही मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कान्ति और उत्साह बढ़ाकर मनुष्य को आगे बढ़ा उसका मूल्य बना देते हैं और अनुकूल परिस्थितियां, सुख एवं चैन की घड़ियां और असमस्यामय जीवन ही मनुष्य में अकर्मण्यता और आलस्य लाकर उसका मूल्य घटा देते हैं।

इसलिये प्रत्येक दुखको देव की दिव्य देन समझ कर उसका सदुपयोग करना चाहिये। सदुपयोग ही अपना मूल्य बढ़ाने की कुञ्जी है।

अपना मूल्य बढ़ाने के लिये संसार की ओर से अपना मुंह फेर लो, परन्तु संसार के लिये अपने को आवश्यक बनाकर। आवश्यकता संसार को आपके सामने लायगी। उस सामने आये हुए समाज का आदर करो! यही आदर आपका मूल्य बढ़ायेगा।

इस प्रकार जो समाज, जो व्यक्ति अपना मूल्य बढ़ाता है, वह संसार से सन्मान पाता है। इसलिये अपना मूल्य बढ़ाओ! इतना कि आपके बिना संसार रह न सके जो आपके बिना रह न सकेगा वह आपसे प्रेम करेगा, आपका आदर करेगा। इसलिये आत्म-सम्मान और प्रेम-प्राप्ति का साधन है अपना मूल्य बढ़ाना। अपना मूल्य बढ़ाओ!

आर्थिक-प्रश्न तभी हल होगा

जब कृषि में सब कृषक आधुनिक यन्त्रों का उपयोग करेंगे
ऊसर को भी उपजाऊ कर अपने सफल प्रयोग करेंगे!!
मिल जुल कर सब नर-नारीगण भारत के प्रत्येक क्षेत्र में—
अधिकाधिक अन्नोत्पादन का सतत अथक उद्योग करेंगे॥
'शस्य श्यामला' वसुधा का जब पूरित श्यामल अंचल होगा॥
आर्थिक प्रश्न तभी हल होगा!

होजायेगा भवन-भवन में जब चर्खा अनिवार्य चलाना।
क्या बालक, क्या वृद्ध, युवा—जब अपना आप बुनेंगे बाना॥
कलों और यन्त्रों समान जब करघों को सम्मान मिलेगा,
पूंजीपति प्रारम्भ करेंगे जब इसमें पूंजियां लगाना॥
क्रय-विक्रय-प्रबन्ध में जब निज शासन का भी संबल होगा॥
आर्थिक प्रश्न तभी हल होगा।

पशु-वध पर प्रतिबन्ध लगेगा, जब दृढ़ता से भारत भर में।
गौशालायें स्थापित होंगी-ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में॥
दूध, दही, घृत, मक्खन का जब होगा दान-प्रदान परस्पर,
गौ-वत्सों का लालन-पालन, गौ-पूजन होगा घर-घर में॥
कृषकों, श्रमिकों, का भविष्य जब सुन्दर और समुज्वल होगा॥
आर्थिक प्रश्न तभी हल होगा।

—ललित गोस्वामी 'विकल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगान्त के चिन्ह

ले०—श्री पं० सूर्यनारायण जी व्यास ज्योतिषाचार्य

इस प्रगतिशील-युग के अनेक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों का यह मत है कि पृथ्वी की आयु क्षीण होती जा रही है, उसकी चुम्बक-शक्ति में कमी हो रही है और उसके आन्तरिक तत्वों में जो संतुलन अपेक्षित है वह धीरे धीरे घटता जा रहा है। इसी प्रकार ग्रहों की गतिविधियों का सूक्ष्मता से निरीक्षण करनेवाले यह धारणा बनाते जा रहे हैं कि सौर परिवार में बहुत परिवर्तन के चिह्न दृष्टि में आ रहे हैं। सूर्य के तेजोह्रास का उल्लेख तो कई बार हो चुका है। सूर्य-मंडल पर छाने-वाले लाखों मील के रजोवलय (वातावरण) ने पश्चिम-प्रदेश के वातावरण को दूषित-निष्क्रिय बनाकर उसकी एकाधिक बार सूचना भी दे दी है। सूर्य के क्रमिक तेजो-ह्रास के फलस्वरूप मानव ही नहीं, समस्त प्राणी-मात्र का स्वास्थ्य-संतुलन बिगड़ गया है क्योंकि उसी की उष्णता के आवश्यक ताप-मान पर ही तो दूसरे ग्रह-नक्षत्रों का आकर्षण है। यदि सूर्य इसी प्रकार ह्रासकी ओर प्रगतिमान् रहा तो आकाश में खचित नक्षत्र-गण किसी भी दिन नष्ट-भ्रष्ट हो सकते हैं और यह पृथ्वी जिस पर हम रहते हैं, वह भी ताप-मान की क्षीणता के कारण अपनी आकर्षण-शक्ति को सहसा एकदिन खो बैठेगी। जिस तरह यह पृथ्वी अधर में निरवलम्ब अवस्थित है, किसी दिन सहसा न जाने किस लोक में समाप्त हो जायगी। पृथ्वी के कुल ३०० फिट अन्तर भाग ही में तो विभिन्न स्तर हैं, जिनकी गतिविधि, और शोषणादि से, तथा वायविक-पोषण प्राप्त कर वह अपना अस्तित्व लिये हुए है। ३०० फीट नीचे का जो उसका लोह-शरीर है, वही इन स्तरों के आवरण में अपनी चुम्बक शक्ति को प्रच्छन्न किए हुए-प्रलय से बचाये हुए है। वातावरण के इस निरन्तर विकृत होते रहने और सौर ताप-क्रम की आवश्यक मात्रा के अनुपलब्ध होने से कौन जाने किस रोज वह उसी सौर-मण्डल में सहज प्रविष्ट हो जाये जहां से विलग होकर ही वह आज के (ग्रह) रूप में बनी हुई है। यह तो स्पष्ट है कि सूर्य की प्रकाश-वर्षा का विपुलता से दैनिक ह्रास होता जा रहा है और ३० हजार-वर्ष पूर्व जिस प्रकार इस ह्रास-नियमानुरूप भूमि अपने केन्द्र-स्थान से विलग हो गई थी; आश्चर्य नहीं कि पुनः उसे केन्द्रच्युत होने का अवसर उपलब्ध हो। हमारे देश में ही नहीं, समस्त विश्व में जिस प्रकार प्रकृति-कोप हो रहा है, मानव मन के विचार स्नायुवों में जो विषम-विकारजन्य शैथिल्य आगया है, जिस प्रकार विश्व-संघर्ष (सामूहिक अथवा परमित) की स्थिति उत्पन्न होगई है, अन्न-वस्त्र की दशा बिगड़ गई है, वृक्षों वनस्पतियों, धान्यों, लताओं, फल-पुष्पों में सहसा जो सार्वत्रिक ह्रास के चिह्न लक्षित हो रहे हैं; इससे प्रतीत होता है कि बहुत वेग के साथ यह भूमि प्रलय की ओर प्रवृत्ति बढ़ा रही है और हम किसी ऐसे युग से गुजर रहे हैं जो काल-चक्र पर वेग से घूमकर अपने अन्त की ओर बढ़ रहा है। राजकीय, सामाजिक, सामूहिक अथवा पारस्परिक, विषमता इतनी बढ़ती जाती है, इतनी उलझती जाती है कि यह स्पष्ट ही अनिष्ट के निकटवर्ती होने की सूचना देने लगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण और महाभारत में इस तरह की चर्चायें आई हैं, उनके निर्माता ने इस तरह की परिस्थितियों के विषय में अपने पूर्व-निष्कर्ष निकाल कर रखे हैं कि जब युग का अन्त होने को हो तब समाज और प्रकृति के चिन्ह ऐसे बनने लगते हैं। चाहे हम मानें या न मानें, कहीं कहीं तो इतने स्पष्ट और सुन्दर चित्र चित्रित कर रखे हैं कि ऋषि-मुनियों की दूर-दर्शिनी-प्रज्ञा का लोहा मानलेने को विवश होना पड़ता है। पुराणों की रचनाओं के 'काल' के विषय में चाहे आधुनिकता का आरोप किया जाये, परन्तु उनको भी ७–८ सौ साल के पूर्व के तो अवश्य माना ही जाता है। फिर कई पुराण तो उनसे भी प्रथम के निर्मित मान्य हो चुके हैं। भविष्य पुराण की बात छोड़िये, जिसमें मुगलों तक सूचि संकलित कर अप्रमावसर उपस्थित कर दिया गया है, किन्तु जिन पुराणों की पुरातनता भाषा-विज्ञान-शास्त्रियों ने, एवं कथा-गाथा परीक्षकों ने कठिन कसौटी पर कसकर पुरातन-सचाई को स्वीकार कर लिया है, उन्होंने भी जब कुछ महत्व की की सूचनायें अंकित कर रखी हैं तो अविश्वास के लिये अवसर ही नहीं रहता, आश्चर्य विमोह हुए बिना नहीं रहा जाता। वायु, अग्नि, ब्रह्म, विष्णु, पुराणों का पुरातनता में प्रतिष्ठित स्थान है। उक्त सभी पुरातन माने जाने-वाले पुराणों ने कलियुग की स्थिति का वर्णन किया है। हम इन सत्य-त्रेता, द्वापर और कलि के हजारों-लाखों वर्षों की क्रम-गणना को देख-सुनकर उनकी असम्भावना समझ लेते हैं। वस्तुतः इन युगों की मर्यादायें विभिन्न कालों में और विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों में स्वीकृत की हैं। इस रहस्य को समझ लेने पर हजारों वर्षों की असम्भाव्य-कल्पना का भ्रम निवृत्त हो जाता है। जिस समय युगों का 'मान' ही वर्ष-गणना का माध्यम रहा है, उस समय उनकी मर्यादा के समय-समय पर विभिन्न रहते हुए भी 'युग-मान' का उल्लेख हुआ है वह स्वाभाविक है। हम एक-एक सम्वत् की वार्षिककाल-गणना तो केवल विक्रम-सम्वत् के आरम्भ ही से मानने लगे हैं। इस दो हजारसाल की वार्षिक-गणना के अभ्यास से 'युगों' की मर्यादाओं के विषय में यदि हम अनभ्यस्त एवं भ्रमित होजाने लगें तो आश्चर्य का कारण नहीं। पुराणकारोंने जब पुराणों की रचना की है तब वे अपनी युगपद्धति परही निर्भर रहे हैं, अतएव हमें अटपटापन लग सकता है। हां, तो जिन पुराणों ने युगादि-गणना के अनुरूप कलि-प्रभाव का अद्भुत वर्णन किया है; वह आज आश्चर्यजनक समानता रखता है। 'कलि-युग' की बात सुनकर हम स्वैराचरण-प्रवृत्त-मानव उसे उपेक्षा से देखते हैं और अपने व्यवहार-विचार की टीका सुनने-देखने को तैयार नहीं हैं। हम भी यह ठीक नहीं समझते कि कलियुग के विकृत-रूप को पुनः पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर अपनी कम-जोरियों को पुराणों के पृष्ठों से उठा कर फिर दुह-रायें। अनेक पुराणों में इन वृत्तों से, हमारी दुर्दशा-ग्रस्त-स्थिति का वर्तमान-रूप चित्रवत् प्रत्यक्ष हुआ है, पर उससे भी अधिक इस 'युग' के अन्त आने की सूचना जहां प्रत्यक्ष-रूप में प्रस्तुत हुई है वह वास्तव में बहुत ही आश्चर्य-कारक है। 'ब्रह्मपु-राण' में एक अध्याय है, इस अध्याय में 'युगान्त-काल की अवस्था' का निरूपण किया गया है। (ठीक ऐसा ही वर्णन हरिवंश में भी है) उन्होंने बतलाया है कि जिस समय यह स्थिति हमारे देश-समाज और प्रकृतिकी आजाये, तब समझलेना चाहिये कि यह 'युग' समाप्त होने जा रहा है। ब्रह्मपुराण के के इस वर्णन से आरम्भ में सुचित वैज्ञानिकों की उस धारणा को भी पुष्टि मिल जाती है जो प्रलय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होजाने की सम्भावना रख रहे हैं! चाहे उनके विधान के आधारों में विभेद भले ही हो।

ब्रह्म-पुराण की इस गाथा के विषय में अपनी ओर से संक्षिप्त रूप या आलोचना उपस्थित करने की अपेक्षा यही उचित होगा कि ब्रह्मपुराणाङ्क के उस स्थल को ज्यों का त्यों ही उद्धृत कर दें, जो प्रामाणिक है। पाठक देखें कि यह वर्णन कितना (सोलह आना) सत्य है। सैकड़ों वर्ष-पूर्व जिन शब्दों में 'ब्रह्मपुराण' ने जो आज की हमारी विपन्न दशा का नग्नचित्र अङ्कित किया है, वह पुराणकारों के अतीन्द्रिय-ज्ञान और विस्मयोत्पादक-दूरदर्शिता का स्पष्ट परिचायक है। इस चित्र को देखकर हम इसी निर्णय पर आने को विवश होंगे कि अब इस युग (कलि) का अन्त निकट आ रहा है। ब्रह्मपुराण की वह रोचक कथा इस प्रकार है:—

[ठीक इसी प्रकार का 'युगान्त' वर्णन हरिवंश पुराण के भविष्य-खण्ड के तीसरे और चौथे अध्याय में भी हुआ है]

मुनियों ने कहा—'धर्मज्ञ! हम लोग धर्म की लालसा से अब उस कलिकाल के समीप आ पहुंचे हैं, जब कि स्वल्प कर्म के द्वारा हम सुख पूर्वक उत्तम धर्म को प्राप्त कर सकते हैं।

(अनेनैव प्रयत्नेन धर्मः सिध्यति वै कलौ)

(२२६ - ७८ - ८१)

अब जिन निमित्तों (लक्षणों) से धर्म का नाश ह्रास एवं उद्वेग करनेवाले युगान्त-काल की उपस्थिति जानी जाय, उसे बताने की कृपा करें।'

व्यासजी बोले—'ब्राह्मणों! युगान्त-काल में प्रजा की रक्षा न करके केवल 'कर' लेनेवाले राजा होंगे, वे अपनी ही रक्षा में लगे रहेंगे। उस समय प्रायः क्षत्रियेतर राजा होंगे, ब्राह्मण शूद्रों के यहां रहकर निर्वाह करेंगे और शूद्र ब्राह्मणों का आचार-पालन करेंगे। युगान्त-काल आने पर श्रोत्रिय तथा काण्ड-पृष्ठ (अपने कुल का त्याग करके दूसरे कुल में सम्मिलित हुए पुरुष) एक पंक्ति में बैठकर यज्ञ-कर्म से हीन हविष्य भोजन करेंगे, मनुष्य अशिष्ट, स्वार्थ परायण, नीच तथा मद्य मांस के प्रेमी होकर मित्र-पत्नी के साथ व्यभिचार करनेवाले होंगे। चोर राजा की वृत्ति में रहकर काम करेंगे और राजा चोरों का-सा व्यवहार करेंगे। सेवक-गण स्वामी के दिये बिना ही उसके धन का उपभोग करने वाले होंगे। सब को धन की अभिलाषा ज्यादा होगी। साधु सन्तों के बर्ताव का कहीं भी आदर न होगा। पतित मनुष्य के प्रति किसी के मन में घृणा न होगी। पुरुष, नकटे, खुले केशवाले और कुरूप होंगे। स्त्रियां सोलह वर्ष की आयु के पहिले ही बच्चों की मां बन जायेंगी। युगान्त में धन लेकर स्त्रियां दूसरे पुरुषों से समागम करेंगी। सभी द्विज ब्रह्मज्ञानी होकर ब्रह्म की बातें करेंगे। शूद्र तो वक्ता होंगे और ब्राह्मण चांडाल होजायेंगे। शूद्र शठता-पूर्ण बुद्धि से जीविका चलाते हुए मूंड मुंडाकर गेरुए वस्त्र पहिने धर्म का उपदेश करेंगे। युगान्त के समय शिकारी-जीव ज्यादा होंगे। गौओं की संख्या घटेगी, साधुओं के स्वभाव में परिवर्तन होगा। चाण्डाल गांव या नगर के मध्य में बसेंगे। ऊँचे वर्णवाले नगर-मध्यवासी लोग नगर या गांव से बाहर बसेंगे। सारी प्रजा लज्जा को तिलाञ्जलि दे उच्छृङ्खलता-पूर्ण बर्ताव से नष्ट हो जायेगी। दो साल के बछड़े हलों में जोते जायेंगे। और मेघ कहीं वर्षा करेंगे, कहीं नहीं करेंगे। शूरवीर के कुल में उत्पन्न सब लोग पृथ्वी के मालिक होंगे। प्रजावर्ग के सभी मानव निम्नकोटि के होजावेंगे। प्रायः कोई मनुष्य धर्म का आचरण नहीं करेगा। अधिकांश भूमि ऊसर हो जायेगी। सभी मार्ग बदमाशों से घिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेंगे। सभी वर्णों के लोग वाणिज्य-वृत्ति वाले होंगे। पिता के धन को उसके दिये बिना ही लड़के आपस में बांट लेंगे, उसे हड़पने की चेष्टा करेंगे और लोभ आदि कारणों से परस्पर विरोधी बनेंगे। सुकुमारता, रूप, रक्त का नाश हो जाने से नारियाँ बालों से ही सुसज्जित होंगी–

उनमें वीर्य-हीन गृहस्थों की रति होगी। युगांत काल में पत्नी के समान दूसरा कोई अनुराग का पात्र नहीं होगा। पुरुष थोड़े हों और स्त्रियां अधिक यह युगान्त की पहिचान है। संसार में याचक अधिक होंगे और एक दूसरे से याचना करेंगे। किन्तु कोई किसी को कुछ न देगा। सब लोग राजदण्ड, चोरी और अग्निकांड आदि से क्षीण होकर नष्ट होजायेंगे। खेती में फल नहीं लगेंगे तरुण पुरुष वृद्धों की तरह आलसी और अकर्मण्य होंगे। जो शील और सदाचार से भ्रष्ट हैं, वे सुखी होंगे। वर्षा-काल में जोर से आंधी चलेगी और पानी के साथ कंकड़-पत्थरों की वर्षा होगी। (हरिवंश में कहा है कि पानी के लिये नदी के स्रोतों को रोकना पड़ेगा भवि-ख० ३६) युगान्तकाल में परलोक संदेह का विषय बन जायेगा। क्षत्रिय वैश्यों की तरह धन-धान्य के व्यापार से जीविका कमायेंगे। कोई किसी से बन्धु-बांधव का नाता नहीं निभायेगा प्रतिज्ञा और शपथ का पालन नहीं होगा। प्रायः लोग ऋण को चुकाये बिना ही हड़प लेंगे। लोगों का हर्ष निष्फल और क्रोध सफल होगा। दूध के लिये घरों में बकरियां बांधी जायेंगी––

श्वापदप्रचुरत्वञ्च गवां में चैव परिक्षयः––

इस प्रकार जिसका शास्त्र में कहीं विधान नहीं है, ऐसे यज्ञ का अनुष्ठान होगा। मनुष्य अपने को पण्डित समझेंगे और बिना प्रमाण के ही सब कार्य करेंगे। जारज, शराबी, और क्रूर कर्म करने वाले भी ब्रह्मवादी होंगे, अश्वमेध-यज्ञ करेंगे। अभक्ष्य-भक्षण करनेवाले ब्राह्मण धन की तृष्णा से यज्ञ के अनधिकारी से भी यज्ञ करायेंगे। कोई भी अध्ययन न करेगा। तारों की ज्योति मन्द पड़ जायेगी, दशों दिशायें विपरीत होंगी, पुत्र पिता को, बहुयें सास को अपना काम करने भेजेंगे। युगान्त काल में पुरुष और स्त्रियां ऐसा ही जीवन व्यतीत करेंगे, द्विजगण अग्निहोत्र और अग्रासन किये बिना ही भोजन करेंगे। भिक्षा दिये बिना, बलि-वैश्वदेव दिये बिना ही भोजन करलेंगे, स्त्रियां सोये हुए पतियों को धोखा देकर अन्य पुरुषों के साथ चली जायेंगी।" हरिवंश में बतलाया है कि सब कवि बन जायेंगे। (न कश्चिदकविनाम ३४) आगे इससे भी अधिक स्पष्ट बतलाया गया है।––

'मुनियों ने कहा––'महर्षे, इस प्रकार धर्म का नाश होने पर मानव कहाँ जायेंगे, ? वे कौनसा धर्म स्वीकार करेंगे और कैसी चेष्टा करेंगे ? वे किस प्रमाण को मानेंगे ? उनकी कितनी आयु होगी ? और किस सीमा तक पहुंच कर सत्य युग प्राप्त करेंगे ?'

व्यासजी बोले ? 'मुनियों ! तदनन्तर धर्म का नाश होने पर समस्त प्रजा गुण-हीन हो जायेगी। शील का नाश होने से सबकी आयु घट जायेगी। आयु की हानि होने से बल की हानि होगी, बल की हानि से शरीर का रङ्ग बदल जायेगा। फिर शरीर में रोगजन्य पीड़ा होगी, उससे वैराग्य होगा। वैराग्य से आत्म-बोध होगा और आत्म-बोध से धर्म-शीलता आयेगी। इस प्रकार अंतिम सीमा पर पहुंच कर सत्य युग की प्राप्ति होगी। कुछ लोग कोई उद्देश्य लेकर धर्म का आचरण करेंगे। कोई मध्यस्थ रहेंगे, कोई बहुत थोड़ी मात्रा में धर्माचरण करेंगे। कुछ लोग केवल धर्म के प्रति कुछ कुतूहल करेंगे। कुछ लोग प्रत्यक्ष और अनुमान को ही प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानेंगे, दूसरे लोग सबको अप्रमाण ही मानेंगे। कोई नास्तिकता परायण, कोई धर्म को लोप करने वाले और कोई द्विज अपने को पंडित माननेवाले होंगे। युगान्तकाल के मनुष्य वर्तमान पर ही विश्वास करने वाले, शास्त्रज्ञान से रहित दम्भी और अज्ञानी होंगे। इस प्रकार धर्म की डांवाडोल स्थिति में श्रेष्ठ पुरुष दान और शील-रक्षा में तत्पर हो शुभ कर्मों का अनुष्ठान करेंगे। जब जगत् के मनुष्य सर्व-भक्षी हो जायें, स्वयं ही आत्म रक्षा के लिये विवश हो जायें, राजा आदि के द्वारा उनकी रक्षा असम्भव हो जाये और उनमें निर्बलता निर्लज्जता आ जाये तब क्रोध-लोभ आदि की उत्पत्ति का चिह्न समझना चाहिये। मुनिवरों! जब छोटे वर्गों के लोग ब्राह्मणों की सनातन वृत्ति लेने लगें। तब भी विनाश के ही लक्षण समझने चाहियें। युगान्तकाल काल में बड़े-बड़े भयङ्कर युद्ध, बड़ी भारी वर्षा, प्रचण्ड आंधी और जोरों की गर्मी पड़ेगी। लोग खेती काट लेंगे।

[हरिवंश के चौथे अध्याय में अधिक स्पष्ट कहा है कि अन्न और कपड़ों के चोर बढ़ जायेंगे, एक प्रांत से दूसरे प्रांत में स्थान-भ्रष्ट होकर सपरिवार भागते फिरेंगे, मानव भूख से पीड़ित होंगे, शाक-पात पर जीवन बितायेंगे। चूहे-कीड़े मानवों को घसीटेंगे आदि

कपड़े चुरा लेंगे। पानी पीनेका सामान और रोटियां भी चुरा लेंगे। कितने ही चोर ऐसे होंगे जो चोर की सम्पत्ति भी हरण कर लेंगे। हत्यारों की भी हत्या करनेवाले होंगे। चोरों के द्वारा चोरों का नाश हो जाने पर जनता का कल्याण होगा। युगान्त काल में मृत्युलोक के मनुष्यों की आयु अधिक से अधिक तीस साल की होगी। लोग दुर्बल, विषय-सेवन के कारण कृश, तथा बुढ़ापे और शोक से ग्रस्त होंगे। उस समय रोगों के कारण उनकी इन्द्रियां क्षीण होंगी। फिर धीरे-धीरे जीव साधु पुरुषों की सेवा, दान, सत्य एवं प्राणियों की रक्षा में तत्पर होंगे। इससे धर्म के एक चरण की स्थापना होगी।

इस प्रकार ब्रह्म पुराण का यह वर्णन, समाज के प्रस्तुत-स्वरूप का कैसा हू-बहू चित्र उपस्थित करता है। यह अलग से समझाने की अपेक्षा नहीं रखता। वैसे प्रलय और महानाश, एवं भीषण परिवर्तन की सूचना देनेवाली सूक्तियां-भारत, भागवत सूरदास, आदि ने भी लिखी हैं। ज्योतिष के ग्रह-योगों के द्वारा भी इस तरह की सूचनायें मिलती हैं। परन्तु उक्त पुराण का यह विस्तृत-वर्णन तो जैसे सदियों पहिले ही विशाल-दृष्टि महात्मा व्यास जी ने आज की हालत को जैसे देख कर ही लिखा विदित होता है। पुरातन विद्वानों की इस प्रकार भविष्य दृष्टि की क्षमता के समक्ष कायल होना पड़ता है। आज के वैज्ञानिक आकाश और भूस्तर की परिस्थिति का आधुनिक दृष्टि से निरीक्षण कर जिस भयानकता की ओर समय २ पर संकेत करते रहते हैं, उनके निर्णयों का भी पौराणिक-भावी संकेत से सामञ्जस्य बैठ जाता है। शताब्दियों पूर्व की सूचनायें, वर्तमान की कसौटी पर भी समान-तथ्य पर पहुंचें तो आश्चर्य ही करना पड़ेगा। परन्तु ब्रह्म-पुराण की उक्त कथा के स्वरूप को वर्तमान काल में सर्वथा मिलते हुए देखकर यह अनुमान करना अयोग्य न होगा कि जिस परिस्थिति के चिह्न पुराण-कर्ता ने बतलाये हैं; उनका घटन जिस काल में हो उसी के निकट इस विषम (कलि) युग का अन्त हो जाना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि जिस स्थिति से हम गुजर रहे हैं, वह ब्रह्म-पुराण के कथनानुरूप इस युग का अन्त ही है। इसकी समाप्ति के लिये ही हम नये शुभ युग में प्रवेश करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दम तोड़ते हुए साम्राज्यवाद के साथ

भारत की आर्थिक-दासता भी समाप्त हो

[ले०—श्री बालमुकुन्द मिश्र]

भारतवर्ष के नेताओं ने देश के बटवारे की योजना को स्वीकार कर यह तो सिद्ध कर दिया कि भारत नाम का कोई देश अब नहीं रह गया--पाकिस्तान मुसलमानों का और हिन्दुस्तान हिन्दुओं का, पर साथ ही ऐरे-गैरे बचों-खुचों सभों का भी।

भारी भूल भारत के भारी नेताओं से होगई, वह तो अब भारतवासियों को भुगतनी ही पड़ेगी। कम-से-कम अब भारतीय-सङ्घ के लाभ के लिये 'अर्थ' के मामले में दूसरी भूल तो कभी नहीं करनी चाहिये।

अंग्रेजों से छुटकारा पाने के साथ ही भारतीय सङ्घ को विदेशी आर्थिक-दासता से भी मुक्त होना चाहिये चाहे वह आर्थिक-दासता साम्राज्यवादी अंग्रेजी सरकार की हो, पूंजीवादी अमरीकी सरकार की हो किंवा तानाशाही लीगी सरकार की हो। दुनियामें शोर मचा, भारत आजाद है। यह बात सदा सत्य रहे, पर यह सब भारतीयों के उत्सर्ग का फल और शासक की विवशता का परिणाम है। जो कौमें जूझ कर भी परास्त होना नहीं जानतीं वे ही आजादी को भोगा करती हैं और जब वे आलसी और निकम्मी हो जाया करती हैं तो उनके स्थान को गाढ़ा खून और पराक्रमी-गिरोह हथिया लिया करता है। द्वितीय महासमर ने ब्रिटिश साम्राज्यशाही को मार्केट में दिवालिया बना दिया और उसकी कमर तोड़ कर रख दी। आज अंग्रेजी-शान दफन होना चाहती है और अंग्रेजी साम्राज्य के आंचल में छिपे-दबे हुए देश बाहर निकल आये और ब्रिटिश-राज्य के शव को आग दे रहे हैं। समय-समय की बात है। एक लम्बे समय के बाद हिन्दुस्तानियों के हाथों में फिर शक्ति आई है, यदि अवसर मिला तो भारत फिर अपने गौरव को स्थापित करेगा और एक बार पुनः जगद्गुरु के पद पर प्रतिष्ठित होगा।

किधर को मुड़ें—

आज भारत चौराहे के उस मोड़ पर खड़ा हुआ है, जहां से कई तरफों को जाने वाली सड़कें फटती हैं। सड़क का जितना भाग हमने अब तक तय किया है वह उन लोगोंके साथ तय किया है, जिन्होंने हमें इस भ्रम में भरमा दिया था कि उनको बिना साथ लिये हम मंजिल पर पहुंचना तो दूर की बात रही, चल भी नहीं सकते। आज उनको एक रोटी का टुकड़ा फेंका गया है, जिसको खाने के लिये वे चले गये हैं, वे खुश हैं और उछल कूद रहे हैं। परन्तु जल्दी ही उन्हें मालूम हो जायगा कि उनका पाला उनसे पड़ा है जिन्होंने उस कौम के पुरखा बहादुरशाह को चरण छूते-छूते भी रँगून की जेल में सड़ा-सड़ा कर मार दिया था और मराठों राजपूतों, जाटों द्वारा ध्वस्त हुए इस्लामी-राज्य की दीप-ज्योति को फूँक मार कर बुझा दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब देश-द्रोहियों का रूप निखर आया है और देश कृतघ्नों से सतर्क और सावधान है।

वह दगाबाज तो अकेला छोड़ गया है, पर हमें तो सोच-समझ कर चौराहे से आगे को सरकना है अन्यथा किसी न किसी की झपेट में आकर कुचल जायंगे। आज भारत की परीक्षा है कि वह सम्हल सम्हल कर कितने कदमों तक आगे बढ़ सकता है। समस्याओं का रंग-रूप पूर्णतया बदल चुका है। वर्तमान युग में राजनीति, समाज-व्यवस्था और जीवन के अन्य किसीभी क्षेत्र की ओर नजर दौड़ाओ सभी स्थानों पर संपत्ति वा धन का पूरा-पूरा दखल हो चुका है। अर्थ का महत्व अपनी चरमसीमा पार कर चुका है और अब तो भाग्य-निर्माणभी धन के संकेतों पर ही होता है।

यातायात के परिष्कृत नवीनतम प्रसाधनों ने तो भू-भागों को एक-दूसरेके और भी समीप ला दिया है। बदली हुई परिस्थिति में जो जरा भी सुस्तायेगा वह लुढ़ेगा, पिछड़ेगा, मार खायगा और एक दिन मार दिया जायगा। भारत की बदली हुई परिस्थितियों ने एक बार फिर भारतीयों को अवसर दिया है कि वे संसार की दौड़ में भाग लें और मान प्राप्त करें।

यद्यपि भारतवर्ष का आदर्श पैसा-मात्र कभी नहीं रहा है, लेकिन समय की विषमताओं को पार करने के लिये कतिपय नये रङ्ग-ढङ्गों को एक सीमा तक अपनाना ही होगा।

भविष्य अर्थ पर निर्भर है—

पूंजीवाद की वैसे चूलें तो उखड़ चुकी हैं पर अभी उसमें जान है। समाज पर अभी पूंजी का रोब है। पूँजीवाद के एक भारी मानवीय कलङ्क को मिटाने के लिये एक बार जन-सत्ता को शक्ति भर जोर लगाना होगा। जब दुनिया का जीवन अर्थमय ही बन गया है, तब तो पूंजीवाद को मुर्दा बनाने के लिये कुछ पूंजी तो काबू में करनी ही होगी।

भारत की अखण्डता के खण्डित होजाने से देश की सम्पत्ति आज दो-भागों में विभाजित हो चुकी है, फिर भी शेष भारत की जन-शक्ति तथा उत्पादन के प्रचुर साधन देश को अब भी उन्नति के शिखर पर पहुंचा सकने में समर्थ हैं। खाद्यान्न उत्पन्न करने की पर्याप्त शक्ति के अतिरिक्त भारत की भूमि में खनिज-सम्पत्ति का भी प्रचुर भाग दबा पड़ा है। बेकार पड़ी भूमि को ठीक कर यदि भारत का कृषि-कार्य आधुनिक वैज्ञानिक उपादानों की सहायता से शुरू कर दिया जाय तो कुछ ही समय में खेती की उपज चौगुनी तक बढ़ाई जा सकती है। भारत में खानों की वर्तमान संख्या में निश्चित रूप से कुछ-न कुछ वृद्धि की जा सकती है। साथ ही वर्तमान खानों के उत्पादन में वृद्धि और परिष्कार की भी आवश्यकता है।

किन्तु भारत की आर्थिक योजना और उन्नति का आधार तो राष्ट्रीय-अर्थ-नीति पर ही अवलम्बित है। अभी तक तो भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्यवादी अर्थ-नीति का शिकार रहा है, पर दूसरा खतरा और नजर आने लगा है, वह है तानाशाही लीगी सरकार का और अमेरिका आदि प्रदेशों की विदेशी पूंजी का। जिस विदेशी की पूंजी जहां लगी हुई है, उस पूंजीवादी देश की तो यह स्वाभाविक चेष्टा रही ही है कि वह अपनी पूंजी के रक्षार्थ अपनी पूंजी लगे प्रदेश पर अर्थ और राज्यनीति के बल द्वारा प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से नियन्त्रण रखे।

युग-स्थिति के अनुसार भविष्य उसी के हाथ में है जिसके हाथ में आर्थिक चक्र है। एक समय से खोई हुई अपनी साख को पुनः जमाने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक है कि भारतीय-सङ्घ की आर्थिक व्यवस्था और अवस्था विकासोन्मुखी और समुचित हो।

विदेशी पूंजी को जब्त करो!

साम्राज्यवादी सरकार आज आखरी सांसें ले रही है। यह मौका है विदेशी पूंजीपतियों की उन संस्थाओं को जिन्होंने पिछले दिनों भारत का अमानुषिक तरीकों से रक्त चूसा था, दण्ड-स्वरूप जब्त करलें। इससे संघका राष्ट्रीय कोष समृद्ध होगा और जनता का शोषण कम होगा। उन भारतीय पूंजीपतियों की सम्पत्ति का भी राष्ट्रीकरण हो, जिन्होंने विदेशियों से गांठ-सांठ जोड़-तोड़ कर भारतीयों के साथ कभी भी नमकहरामी की थी, ऐसा करने से आस्तीन का सांप मर जायगा और जनता का शोषण रुकेगा।

'लिवर ब्रदर्स' के हाथों में भारत के साबुन-व्यापार का एकाधिकार है। इम्पीरियल कैमिकल कम्पनी के हाथ में भारत का प्रायः सारा रासायनिक व्यवसाय है। विगत वर्षों में दियासलाई पर तट-कर लगते ही स्वीडिश पूंजी से वैस्टर्न इण्डिया कम्पनी ने भारतवर्ष में माचिस के १२ कारखाने खोल डाले थे; विश्वासघात की हद हो गई!

विदेशी व्यापार-संस्थाओं की जब्ती के साथ ही भारत के उन अंधेरगर्दी मचानेवाले देशी पूंजीपतियों को भी सबक मिले, जिन्होंने विदेशी बदमाशों से साझेदारी कर भारत को डाकुओं से लुटवाया, भूखा मरवाया और नंगा करवाया था। देशी पूंजीपतियों की पूंजी का राष्ट्रीकरण कर लेने से यह लाभ होगा कि सरलता से वे अपने पूर्व पापों का प्रायश्चित्त भी करलेंगे और भावी भारत के अच्छे नागरिक बनने में उन्हें कोई कष्ट भी न होगा।

विदेशियों की चालाकियों को सभी अर्थशास्त्री अच्छी तरह जानते हैं कि भारत सरकार से पांच फीसदी लाभ की गारंटी लेकर विदेशी रेल कम्पनियों ने किस बेदर्दी के साथ भारतीयों को लूटा। जूट, ऊन, साबुन, दियासलाई और रबर-टायर आदि का सारा व्यवसाय विदेशी पूंजीपतियों द्वारा ही भारत में हो रहा है। भारत में लगी विदेशी पूँजी का क्या ठिकाना है—एसोसियेटिड चैम्बर आफ कॉमर्स के एक पुराने अनुमान के अनुसार भारत में एक अरब पौण्ड स्टर्लिङ्ग से भी अधिक की विदेशी पूंजी भारत में लगी हुई है और भारत में घुसती चली आ रही है। नई अमरीकी पूँजी का तो अभी बिसात ही क्या! यदि अभी से इस नई पूँजी को भारत में आने से नहीं रोका गया तो ब्रिटेन से आजादी पाने पर भारत को अमरीका का गुलाम होना पड़ेगा।

अत्यावश्यक है कि नूतन पूंजी की आमद को एक दम रोका जाय और भारत में फैली विदेशी पूँजी को समेट कर संघीय-सरकार अपने कब्जे में करे। यदि विदेशी पूंजी के आयात को भारतीय सरकार रोकने में असमर्थ है तो भी संघीय सरकार एक नियम बनाकर यह तो घोषित कर ही सकती है कि आगे से भारत-भू पर किसी भी विदेशी पूंजीपति व्यक्ति वा संस्था को भारतीय संघ के किसी भी उद्योग-धन्धे और व्यवसाय पर नियंत्रण वा स्वामित्व का अधिकार किसीभी अवस्था में प्राप्त न होगा।

इनको तो मिटा ही दो!

ब्रिटिश राज्य का इतिहास बतलाता है कि भारत में अंग्रेजी राज का श्रीगणेश एक अंग्रेजी व्यवसायी कम्पनी से होता है। भारत से आज अंग्रेजी राज्य की हकूमत खत्म होरही है, पर वे उपादान भारत में अभी तक ज्यों-के-त्यों हैं जिनके कारण फिरंगी यहां जमे थे। ढहते हुए अंग्रेजी साम्राज्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद के साथ ही हमें भारत से उन विदेशी अड्डों को उखाड़ फैंकना चाहिये जो किसी समय भी भारत के लिये खतरा साबित हो सकते हैं। उन में प्रमुख महत्व है विदेशों की प्रमुख-प्रमुख व्यवसायी संस्थाओं का।

यह अतिशयोक्ति नहीं है कि अभी तक भारत का प्रायः सारा व्यापार विदेशियों के ही हाथों में रहा है। भारत में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के अनन्तर तो भारतीय-संघ का सारा व्यापार भारतीयों के हाथों में ही आना चाहिये। विदेशी कम्पनियों ने भारत का बहुत शोषण कर लिया, अब सरकारी नियम बनाकर कमसे कम इन संस्थाओं के नाम निशान को तो भारत की भूमि से तत्काल मिटा ही देना चाहिये—

डनकन ब्रदर्सः लिवर ब्रदर्स
मार्टिन ब्रदर्सः वौल्कर्ट ब्रदर्स
शावैलेस कम्पनी, बर्ड कम्पनी
ग्लैण्डर्स, किलबर्न कम्पनी,

एक-एक कम्पनी के आधीन भारत में कई-कई कारखाने चल रहे हैं। इन विदेशी पूंजीपतियों की संस्थाओं के द्वारा होते हुए शोषण की कोई मर्यादा है? सचमुच आप यह सुनकर आश्चर्य में डूब जायेंगे कि 'थूल एण्ड कम्पनी' नामक अकेली एक संस्था भारत में ६० से अधिक छोटी-कुछ मोटी कम्पनियों, का सञ्चालन करती है। और—

गुड ईयर टायर एण्ड रबर कम्पनी लि० (इंडिया)
बाटा ,, ,, ,,
डनलप रबर ,, ,, ,,
कैल टैक्स ,, ,, ,,
स्कोडा ,, ,, ,,
सीमर्स ,, ,, ,,

भारतीयों को चकमा देने की गर्ज से, अपने नाम के साथ 'इंडिय', लिमिटेड' वाक्य को जोड़े हुए २०० से भी ऊपर विदेशी-संस्थायें आज भारत को लूट रही हैं। ये सब-के-सब और एक-सी-एक विदेशी कम्पनियां अपने नाम के साथ 'इंडिया' शब्द को लगाकर अब तक भी भारतीयों को खुले-आम धोखा दे रही हैं, इनका तो नामोनिशान एक दम मिटा देना चाहिये।

साथ में तानाशाहों से बचो!

तानाशाही चाहे अंग्रेज की हो या लीग की, इसके खिलाफ भारतीय सङ्घ की तमाम जनवादी पार्टियों को एक संयुक्त-मोर्चा कायम करना चाहिये। तानाशाही को पराभूत करके ही शांति से बैठा जा सकता है और भारतीय-सङ्घ का भला और सुरक्षा भी इसी में है। तानाशाहों का जन्म ही दूसरों को परेशान करने के लिये हुआ करता है। इनकी समाप्ति के बिना राष्ट्र और जनता को शान्ति कहां? जब तक ये रहेंगे—अपनी शैतानी प्यास को बुझाने के लिये राक्षसी हरकतें करेंगे और जन-द्रोह के कारनामे भी करेंगे और करेंगे।

अंग्रेज की तानाशाही से तो भारत मुक्त हो रहा है, पर भारतीय-सङ्घ के पड़ोसी पाकिस्तान के खूंख्वार तानाशाह जिन्ना की तानाशाही से भारतीय सङ्घ को बचकर और सम्हल कर चलने की अभी आवश्यकता है। यह हमें नहीं भूलना चाहिये कि पाकिस्तान और जिन्ना के पीछे मुफ्तखोरे राजा, नवाबों और उन सब के प्रपितामह अंग्रेजों की शरारत भरी शक्ति की ही करामात है जो अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिये भारत-भूमि को रक्त-स्नान जब चाहे तब करवा देते हैं।

पड़ोसियों से हमें संधि करनी चाहिये, परन्तु भारतीय सङ्घका सन्मा पहले रहे और संधि बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की एक चीज और तानाशाहों से तो हमें हाथ खींच कर व्यवहार और अपना कार्य करना चाहिये। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति अत्यन्त नाजुक है। लचर पाकिस्तान की ब्रिटेन भी सहायता कहां तक करेगा ? और ब्रिटिश साम्राज्यवाद यह हरगिज पसन्द नहीं करेगा कि वहां अमेरिका का किंचित् भी दखल हो। पाकिस्तान को अरब राष्ट्रों से तो किसी प्रकार की सहायता मिलने से रही, क्योंकि वे तो सारे-के-सारे स्वयं ही नंगे, भूखे और अर्ध विकसित राज्य हैं। इस प्रकार से भारतीय-संघ के द्वार को छोड़ कर बाकी सारे द्वार पाकिस्तान के लिये बन्द हैं। भारतीय-संघ को उचित है कि एक लम्बे समय तक वह पाकिस्तान की उपेक्षा करे और अपनी आर्थिक स्थिति को सम्भाले। यदि सँघ ने अपने को काबू करके काम किया तो भूखे और फटे हाल पाकिस्तान के आशिकों की अक्ल भी दुरुस्त होने लगेगी और सम्भव है कि शीघ्र ही किसी दिन झख मार कर भारत के सामने पाकिस्तान को घुटने टेक कर नाक रगड़नी पड़ जाय।

ध्यान रहे, उनकी माली ताकत बेहद कमजोर है जिसकी पूर्ति कई वर्षों के अनवरत परिश्रम के अनन्तर भी वे नहीं कर सकते। यदि भारतीय-संघ ने कम-से-कम अपनी ओर से तनिक सा भी किसी प्रकार का कोई आर्थिक सम्बन्ध पाकिस्तान से न जोड़ा तो उसकी हुकूमते-अल्लाहिया फेल हो सकती है। तानशाहों से तो भारत की मित्रता कभी रही ही नहीं तो तानाशाही लीगी सरकार और भारतीय संघ का सम्बन्ध ही क्या ?

तानाशाहों से भारतीय-संघ के नेताओं को बचना चाहिये। चाहे वह किसी गोरी जाति की तानशाही हो वा काली जाति की–तानाशाही तो तानाशाही ही है।

आर्थिक स्थिति सम्हालो—

भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य के स्थापित होने के बाद से देश की आर्थिक-अवस्था निरन्तर गिरती चली आई है। साम्राज्यवादी गोरी सरकार विदेशी-पूंजी- हित के नाम पर भारतीय विधान में सदा से पूंजीपतियों के हित के लिये अनेकों अन्याय पूर्ण संरक्षणों की व्यवस्था करती रही है। भारत के नव विधान का निर्माण–कार्य भारतीयों के हाथों से सम्पन्न होने के कारण अर्थ–व्यवस्था की तमाम जिम्मेवारियां अब भारतीयों पर ही हैं। अतएव भारतीय संघ के राष्ट्र-नेताओं को भारतका आर्थिक ढांचा ऐसा निर्माण करना चाहिये जिससे देश में कभी भी दुर्भिक्ष के कारण त्राहि-त्राहि न मचे, भूख से एक भी काल कवलित न हो, भारत कभी भी विदेशी खाद्यान्न की प्रतीक्षा न करे और भारत के किसी भी भाग में जरा सा भी अन्न सड़ाकर बर्बाद न किया जाय। विदेशी बस्त्र की आमद बँद की जाय, भारतीय वस्त्र-व्यवसाय को उन्नत किया जाय तहखानों में बँद पडी पेटियों में सड़ रहे कपड़ों को बाहर निकाला जाय और भारत में बसनेवाला कोई भी आदमी वस्त्राभाव से न मरे।

भारत को दुश्मनों के आर्थिक चक्र से बचाने के लिये सभी भारतीय विभिन्न शक्तियों को आज एक होना चाहिये और सरकार को हिन्दुस्तान में बसनेवाले टोडी पूंजीशाहों से भी सावधान रहना चाहिये और उनकी अक्ल दुरुस्त करने का प्रबंध भी होना चाहिये। यदि टोडियों से सतर्क न रहे तो वे मौक़ा पाकर कभी और किसी भी समय भारत की आर्थिक व्यवस्था को तोड़ने का प्रयत्न कर सकते हैं और देश का भविष्य काला कर सकते हैं।

भारत की सरकार को अपनी आर्थिक स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजी से सम्हालनी चाहिये और साम्राज्य वादी बद-माशी के चक्कर से बचना चाहिये। पाकिस्तानी सरकार के षड्यंत्रों को विफल करने की ओर ध्यान देना होगा और अमेरिका के दिये लालचों की उपेक्षा करनी होगी। भारत के नव-निर्माण के लिये यदि धनकी विपुल राशि की सख्त जरूरत महसूस हो तो हमें ब्रिटेन से उस रुपये की मांग करनी चाहिये-जो रुपया द्वितीय समर में अंग्रेज भारत से जबर्दस्ती छीन कर ले गये थे और पौंएड-पावने के रूप में जिसे कागज पर लिख दिया था और अब-देने के नाम सीधे मुंह बात भी नहीं करते।

भारत को पुराने धावों और आजमाये हुए हथकण्डे बाजों से किसी भी प्रकार के कोई समझौते की बात नहीं करनी चाहिये और जिनसे उसे नफरत हो चुकी है उनका कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

*

दीपक से—

अपने घर में आग लगाकर मेरे घरमें भरो उजाला !

तुम दीपक हो बड़े तपस्वी,
जलते रहना काम तुम्हारा,
अन्धकार के दृश्य काव्य में
प्रेम-ज्योति है नाम तुम्हारा।
रवि शशि उडुगण ढाले तुमने जिससे जगमग नभ का प्याला!
अपने घर में आग लगा कर मेरे घर में भरो उजाला।
नयन मूँद कर किरणें ओढ़े
तुम कलियों को चटकाते हो,
पवन तूलिका बन कर मेरे
गीतों में रंग भर जाते हो।
जलते रहने से हो जाता मलिन हृदय भी तो मतवाला।
अपने उर में आग लगाकर मेरे घर में भरो उजाला॥

भस्म जगत् को कर सकते हो,
तुम्हीं अग्नि हो जीवन जग का,
साहस हो तुम व्यथित पथिक का,
टिम-टिम जलता दीपक पथ का,
बार-बार उठ रहा देख कर तुमको जग में गिरने वाला,
अपने घर में आग लगाकर मेरे घर में भरो उजाला।
कला हुलसती चेतनता हो,
चन्द्र-सुधा हो सूर्य-कान्ति हो,
लघु जीवन के महाकाव्य में
महा मृत्यु हो, परम शान्ति हो।
जलते देख तुम्हें बुझ-बुझ कर जी उठता है मरनेवाला।
अपने उर में आग लगाकर मेरे घर में भरो उजाला।

—दासू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति का आवाहन

शत्रु तुम्हारे द्वार पर !

[ले०—श्रीमान् दीवान रुद्रशरण प्रतापसिंह जी उपरोड़ा स्टेट मध्यप्रान्त]

[प्रस्तुत लेख के लेखक एक परम उत्साही हिन्दी-साहित्य प्रेमी महानुभाव हैं। आप 'श्री स्वाध्याय' के संरक्षक भी हैं। आपका यह लेख बहुत ही सामयिक तथा श्री दुर्गा-पूजा एवं दुर्गा सप्तशती का सारभूत है। देश की वर्तमान परिस्थिति में शक्ति के साथ संगठित जनता का आवाहन आपकी क्षात्रधर्मोचित समयिक सूझ है। आशा है आप भविष्य में भी ऐसे लेखों द्वारा देश तथा समाज की सेवा करते रहेंगे।]

—सम्पादक

शक्ति मानव की माता है, शक्ति से ही वह जीवित है और वह शक्ति ही है जिसकी सुखमयी गोद में वह पलता है, बढ़ता है और अपने अधिकारों की रक्षा करने में सफल होता है।

जो मानव मां शक्ति की गोद में नहीं पलता उसे जीने का अधिकार नहीं मिलता। इस जगत् में जीने के वही अधिकारी हैं जो शक्ति की गोद में पलते हैं, शक्ति जिनके रोम-रोम में व्याप्त है, जो शक्ति के हैं और शक्ति जिनकी है।

सम्पूर्ण देवताओं की संगठित, संचित और विजयिनी चेतना ही शक्ति है। शक्ति वह है जो शारीरिक बल को चेतना स्फूर्ति और गति देकर बौद्धिक बलको प्रेरणा दे, जिसके द्वारा केवल शरीर और उसके बलको वृद्धि मिले वह शक्ति नहीं आसुरी बल है। वह देखने में भयंकर हो सकता है, वह क्षणिक विजय भी प्राप्त कर सकता है, पर अन्तमें दैवी शक्ति उसका विनाश कर देती है, क्योंकि उसमें बौद्धिक प्रेरणा नहीं होती। (बुद्धिहीनो विनश्यति)

संसार में जीवित रहने के लिये सम्पत्ति, रक्षा, विनाश और विजय इन चार साधनों की आवश्यकता होती है। इन चारों साधनों की पूर्णता और सफलता शक्ति के बिना सम्भव नहीं, क्योंकि सम्पत्ति तथा रक्षा बुद्धि से और विनाश तथा विजय बुद्धियुक्त बलसे होती है। इसलिये जगन्नियन्ता परमेश्वर की आदि शक्ति मानव के इन चारों साधनों की पूर्णता के लिये स्वयं ही चार भागों में विभक्त हो जाती है—

> एकैव शक्तिः परमेश्वरस्य
> भिन्ना चतुर्धा व्यवहारकाले।
> पुरुषेषु विष्णुः भोगे भवानी;
> समरेच दुर्गा प्रलये च काली।

वह भवानी रूप में मानव की सम्पत्ति और सुख-साधनों को संचित करती है, वह विष्णु बनकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी रक्षा करती है, वह महाकाली बनकर शत्रुओं का विनाश करती है और दुर्गा बनकर विजय का वरदान देती है।

इन चारों शक्तियों का निवास-स्थान है--मानव--(या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।)

जब मानव सम्पत्ति का संचय करने के लिये उद्यत होता है, तब उसकी आन्तरिक शक्ति भवानी रूप धारण कर उसके सन्मुख आती है, जब मानव धन, जन, परिवार, नगर और राष्ट्र के लिये खड़ा होता है, तब उसकी दिव्य शक्ति विष्णु रूपमें-अवतरित होती है, जब वह शत्रुओं के विनाश के लिये रणभूमि में पहुंच कर मां का स्मरण करता है, तब वह महाकाली बनकर दुष्टों का दमन और दलन करती है और जब वह विजय-श्री का स्वागत करना चाहता है तो उसकी शक्ति दुर्गा बनकर उसकी सहायता करती है।

अकर्मण्य निरुत्साही कायर भीरु और परावलम्बी मां-शक्ति के दर्शनों के अधिकारी नहीं होते। उसके दर्शनों के-अधिकारी वही हैं--शक्ति उनके लिये ही अवतरित होती है जो कर्म में तत्पर होकर उत्साह से स्वतंत्र और संगठित होकर उसका आवाहन करते हैं--संघे शक्तिः।

संगठन-हीन शक्ति का आवाहन नहीं कर सकते, संगठन शक्ति के आवाहन का निमंत्रण-पत्र है।

माँ के आने के लिये केवल संगठन भी पर्याप्त नहीं है, आदर और स्वागत के लिये भी तैयार रहना होगा; उसके लिये महान् त्याग भी करना होगा और अपना प्रिय से प्रिय पदार्थ भी उसे समर्पित करना होगा। वह शक्ति तुम्हें और तुम्हारे प्रिय पदार्थों को पाकर पूर्ण एवं प्रसन्न होगी, वह उसी से तुम्हारा कार्य करेगी; जो तुम उसे दोगे। बस इसी अर्पण में सावधान रहना होगा।

असुरों से पराभूत देव संगठित हुए और उन्होंने एकत्रित हो बल एवं साहस पूर्वक मां का आवाहन किया। पल भर में माँ अवतरित हुई और देवों ने अपनी-अपनी प्रिय वस्तु उसे प्रदान की---उसे वस्त्र दिये, आभूषण और आयुध दिये तथा सवारी के लिये सिंह दिया। शक्ति उन्हें पाकर पूर्ण हुई और क्षणभर में शत्रुओं का विनाश कर दिया। शक्ति तभी शक्ति बनती है, जब उसे अपनी प्रिय वस्तु समर्पित कर दी जाय।

शक्ति उन्हीं के लिये युद्ध करती है जो उसका साथ दें, उसकी धीमीसी आवाज पर--उसके छोटे से संकेत पर वहां जा पहुंचे जहां उनकी उसे आवश्यकता हो। शुम्भ-निशुम्भ के साथ युद्ध करने के अवसर पर माँ दुर्गाका संकेत पाते ही वैष्णवी ब्राह्मीमाहेश्वरी ऐन्द्री, कौमारी और नारसिंही आदि शक्तियां युद्ध-स्थल में आ पहुंचीं। इसलिये सङ्गठन-शक्ति के साथ-साथ शक्ति का साथ देने के लिये स्वयं तैयार हो जाओ!

शक्ति की प्रसन्नता से मानव विजयी बनता है। जिससे शक्ति रुष्ट हो जाती है, उससे संसार रुष्ट हो जाता है, जिसके पास शक्ति है, संसार उसकी सहायता करता है, क्योंकि संसार स्वय भी उससे सहायता की आशा रखता है। शक्ति की प्रसन्नता के लिये जप-पूजा--पाठ--हवन--दान--ध्यान इन सब की आवश्यकता हो सकती है, पर सब से अधिक आवश्यकता बलिदान की होती है। शक्ति तब तक प्रसन्न नहीं होती, जब तक वह बलिदान न पाले। बलिदान की पूर्णता पर ही माँ की प्रसन्नता निर्भर है। जिस राष्ट्र में माँ के प्रति बलिदान की भावना जागृत नहीं, वह राष्ट्र जी नहीं सकता। उस राष्ट्र के लोग अन्न के दाने-दाने के लिये तरस उठते हैं (बलिहीने तु दुर्भिक्षम्। भविष्य पु०)। इसलिये यदि जीवित रहने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये माँ को प्रसन्न करना हो तो बलिदान दो, बलिदान की भावना जागृत करो, जन-जन को बलि देना सिखाओ! स्वार्थों का बलिदान ही माँ को प्रसन्न कर सकता है।

भारत में सर्वदा देवों का राज्य रहा है और देवों का ही राज्य रहेगा। भारत देव-भूमि है। भारत-वासी असुरों का आक्रमण सहन नहीं कर सकते। वे सर्वदा असुरों को परास्त करते आये हैं। मारकण्डेय पुराण में राजा सुरथ को कोलाविध्वंसी (शूकर न मारनेवाले) लोगों ने जीत लिया, पर सुरथ ने बलिदान देकर मां शक्ति का आवाहन किया और कोलाविध्वंसियों को परास्त कर अपना समृद्ध देव-राज्य वापिस ले लिया। छत्रपति शिवा ने मां शक्ति के वरदान से ही कोलाविध्वंसियों को जीता, अतः आज भी भारतीयों को संगठित हो बलिदान देकर मां को प्रसन्न करना चाहिये।

नवरात्र आते हैं और प्रत्येक हिंदू-घर में मां शक्ति का पूजन होता है; पर क्या शक्ति के भी दर्शन होते हैं! जितने अधिक नवरात्र बीतते जाते हैं उतने ही अधिक हम शक्ति से दूर होते जाते हैं। आवहन ही विसर्जन हो रहा है और हम जो कुछ हो रहे हैं वह हम सब जानते हैं।

दो शब्दों में—हम निर्बल हो रहे हैं, अत्याचार सह रहे हैं, परतन्त्रता से प्यार करने लगे हैं, भय से भाग रहे हैं और अमर होकर भी मर रहे हैं।

क्या निःशस्त्र भी उपासना का दावा कर सकते हैं? क्या सिंहवाहिनी के सुत भी इतने कायर हो सकते हैं? माँ काली के उपासक भी काल के कवल बन सकते हैं? क्या श्रीदुर्गा के भक्त भी दुःख सह सकते हैं? क्या लक्ष्मी-पुत्र भी दरिद्र हो सकते हैं?

शक्ति के उपासकों! उठो!! रात्रि पश्चिम में पहुंच चुकी है! प्रभात आ गया है। माँ तुम्हारी प्रतीक्षा में है। उठो! घन्टा बजा दो, नगारे बजने दो, मन्दिर के पट खोल दो, माँ के हाथों में खड्ग दो! बलि का खड्ग काट दो! माँ का मधुपात्र भर दो!

माँ! देश तुम्हारे सामने कराह रहा है, जनता चीख रही है, देवत्व खतरे में हैं, असुर मन-माने अत्याचार कर रहे हैं। माँ! अब तो विश्राम का समय बीत चुका है। तुम्हारे विश्राम में आर्यों का आराम लुट रहा है। उठो माँ! सिंह तैयार है, देशवासी तैयार हैं; तुम्हारी आज्ञा की प्रतीक्षा है। माँ! शत्रु तुम्हारे द्वार पर खड़ा-खड़ा गरज रहा है। उठो, माँ! एक बार फिर हम यही सुनना चाहते हैं—

"गर्ज गर्ज क्षणं मूढ़! मधु यावत्पिबाम्यहम्"
माँ! शक्ति! दुर्गे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-भाषा में

साहित्य-निर्माण के लिए महा-मन्दिर की योजना

[ले०—श्रीयुत वासुदेव शरण अग्रवाल]

जहां तक शिक्षा और ज्ञान-साधन का सम्बन्ध है अनेक व्यक्ति अपनी-अपनी मातृ-भाषाओं के द्वारा काफी आगे बढ़ चुके हैं। हो सकता है कि बुद्धि के धरातल को ऊंचा उठाने के लिए भी अपनी मातृ-भाषा का आश्रय पर्याप्त हो, क्योंकि मैं यह स्वीकार करता हूँ कि गुजराती, मराठी, कन्नड़ आदि प्रादेशिक और प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य समृद्ध हैं और उनमें जनता के मस्तिष्क और मन को पोषित करने की भरपूर शक्ति है। जैसे अपनी मातृ-भाषा हिन्दी के लिए मेरे मन में भक्ति है, वैसे जब मैं यह देखता हूँ कि एक गुजराती, मरहठा या कन्नड़ी व्यक्ति अपनी भाषा का अनुरागी है तो मुझे प्रसन्नता होती है। सच यह है कि हिन्दी का किसी भी प्रान्तीय भाषा से विरोध नहीं है। इस विशाल देश में हिन्दी भी तो मूलतः एक प्रान्त की ही भाषा है, चाहे वह प्रान्त क्षेत्र के विस्तार में औरों से कितना ही बड़ा क्यों न हो। जो प्रान्तीय भाषाओं और हिन्दी के बीच में स्पर्धा की आशंका करे उस हिन्दी-भाषा के लिए शोक है।

प्रान्तीय भाषाओं को रौंदकर हिन्दी का कल्याण संभव नहीं। हमारी अभिलाषा है कि प्रत्येक प्रान्तीय भाषा का साहित्य अपने विकास की चरम सीमा तक पहुंचे और प्रत्येक प्रान्तीय वाङ्मय को अपने मार्ग से उन्नति करने की पूरी छूट हो। प्रान्तीय भाषाओं का अवरुन्धन किसीको इष्ट नहीं होना चाहिये। अथर्ववेद का पृथ्वी-सूक्त, जो हमारे राष्ट्र-निर्माण का ढांचा है, उसमें प्रान्तीय भाषाओं के जीवन के उस अधिकारपत्र को सौहार्द भरे शब्दों में स्वीकार करता है। वहां कहा है—

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथ्वी यथौकसम्। (अथर्व १२।१।४५)

मातृभूमि पर बसे हुए जन अनेक प्रकार के (बहुधा) हैं, उनकी भाषायें अनेक हैं और वे नाना धर्मों के माननेवाले हैं। यह अनेकता हमारे राष्ट्र की दैवी सम्पत्ति है। इस विविधताके भीतरसे हमारे मनीषियों ने सहिष्णुता और समन्वयकी जीवन-विधि को बड़े कौशल से ढूंढ निकाला, वही भारतीय विचार और कर्म की दृढ़-भूमि बनी। जब प्रकृति की ओर से ही हमें विविधताका वरदान मिला था तब हमारे राष्ट्रके पथनिर्धारक इस अनेकता से विक्षुब्ध नहीं हुए और न समय-कुसमय विविधिता को कोसने की शिक्षा ही उन्होंने अपने देश-वासियों को दी। भाषा, धर्म, देवता, प्रान्त, भूमियां-सब विविधताओं को उन्होंने सिर माथे पर रक्खा और भौतिक भेदों के भीतर पैठ कर आत्मा एवं मानस के चैतन्य कृत एकत्व को ढूंढ निकाला। मानवीय मस्तिष्ककी यही महत्ता है कि वह प्रकृति की बाधाओं पर विजय प्राप्त करता है। भारतवर्ष के उषःकालीन चिन्तन में ही हम मन की इस भारी विजय को सिद्ध हुई देखते हैं। फलतः हमारी संस्कृति और धर्म के रोम प्रति रोम में समन्वय सहिष्णुता और सहानुभूतिका महा-सूत्र पिरोया हुआ है। उदाहरण के लिए आदिम वन्य जातियों की शाबरी और निषाद भाषायें और संस्कृति भी कई सहस्र वर्षों तक आर्यजीवन-विधि के साथ सख्य भावसे बसती आई है और दोनों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक प्रकार का आदान-प्रदान हुआ है यह सुखद सम्मेलन राष्ट्र के लिए आज भी अनमोल है। इसके द्वारा देश में पारस्परिक सौहार्द और समझौते के भावकी बढ़ती हुई है। इस प्रकार सभी प्रान्तीय भाषाओं की प्रतिष्ठा हमारी नीति होनी चाहिये। केवल इसी तरह हमारे राष्ट्रीय जीवन का बहुरंगी चित्रपट पर्याप्त रूप में सज्जित और सब के लिये आकर्षक बनाया जा सकता है।

किन्तु आज राष्ट्रीय चेतनाके नवयुगमें हमें एक दूसरे दृष्टिकोण से भी विचार करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय मानस की स्फुट अभिव्यक्ति के लिए राष्ट्रीय भाषा रूपी एक साधन अवश्य होना चाहिये। आज तक हमारे सार्वजनिक जीवन की गाड़ी अंग्रेजी के बल पर किसी तरह घिसटती रही, पर इससे जनता के अपने हाथ पैर मारे गए और भाव प्रकाशन के लिये उनके कंठ रुंधे रह गए। इस अवस्था को तुरन्त ही बदल डालना होगा। भारत की हर एक भाषा को अंग्रेजी के कारण अपने आत्मतेज से हाथ धोना पड़ा है। आत्म-तेज की प्राप्ति के लिये सब को एक साथ मिल कर अंग्रेजी भाषा की बेदखली के लिये प्रयत्न करना है। यही राष्ट्रभाषा की उपयोगिता है। हिन्दी के प्रति आप लोगों का जो उत्साह है, उसका व्यावहारिक पहलू यही है। सरकारी शासन के हर एक क्षेत्र में अंग्रेजी के स्थान में हिन्दी को स्थापित करना है। रेल, तार डाक आदि के सार्वजनिक महकमों में जल्दीसे जल्दी राष्ट्रभाषा को अपनाना है। प्रतिवर्ष हजारों रिपोर्टें सरकारी तौरपर अंग्रेजी में छपती हैं। देश की सर्वसाधारण जनता का पैसा उन पर व्यय किया जाता है, पर जनता उनसे लाभ नहीं उठा पाती। जिस दिन यह सब सामग्री राष्ट्रभाषा हिन्दी में छपने लगेगी उसी दिन जनता के पल्ले कुछ पड़ सकेगा। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार का कार्य उसी शुभ दिनको निकट लानेकी तैयारी है। प्रत्येक विभाग में अंग्रेजी को छोड़ कर राष्ट्रभाषा हिन्दी तक पहुंचने के लिए पांच वर्षों की अवधि निश्चित करदेनी चाहिए। उतने समय के भीतर सब सरकारी छापेखाने और महकमे अपने कल पुर्जों को राष्ट्रभाषा के अनुकूल बनालें। यही कालोचित अनुशासन होना चाहिये।

राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी का अभिषेक हुआ है। इसी कारण हिन्दी का उत्तरदायित्व भी बहुत बढ़ गया है। एक ओर यह आवश्यक है कि हिन्दी-साहित्य सच्चे अर्थों में भारतीय संस्कृति का दर्पण बने, दूसरी ओर विश्व के ज्ञान-विज्ञान को हिन्दी के माध्यम से प्रकट करना भी आवश्यक है। हिन्दी में राष्ट्रीय और लोकोपयोगी साहित्य का निर्माण करने के लिए संगठित आयोजन की आवश्यकता है। हमारा वाङ्मय अन्य अर्वाचीन भाषाओं के साहित्य की तुलना में बहुत से अंशों में पिछड़ा हुआ है। उस कमी को पूरा करना होगा। साहित्य-रचना का यह महायज्ञ व्यवस्थित योजना के अनुसार पूरा होना चाहिये। वैसे तो साहित्य की परिधि अनन्त है, राष्ट्र के मानस में कहीं पर भी श्रद्धावान् चिन्तन के कारण साहित्य-सृजन का कार्य किया जा सकता है, पर उस प्रकार के स्वयमुद्भूत और प्रतिभाजनित साहित्य की बात निराली है। हमें तो प्रारम्भ में दस वार्षिकी योजना के अनुसार उस प्रकार का साहित्य राष्ट्रभाषा में तैयार करा देना है जो अनुवादकों और लेखकों के परिश्रम से बन सकता है। प्रसिद्ध है कि मुगल सम्राट् अकबर ने आगरे में सौ चित्रकार रख कर किस्स-ए हम्ज़ानामा के चौदह सौ चित्र तैयार कराये थे और यह काम कुछ-कुछ आज-कल के कारखाने के सामूहिक ढंग पर किया गया था। साहित्य के क्षेत्र में भी हम इस प्रकार के संगठित केन्द्र की स्थापना कर सकते हैं जिसमें सौ या दो सौ साहित्य-सेवी और शास्त्रीय विद्वान निरन्तर अनुवाद और ग्रन्थ-रचना करते रहें। एक बार शुरू होकर यह काम दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर सकता है। जनता और सरकार दोनों का सहयोग इस आवश्यक कार्य में मिलना चाहिए। बम्बई जैसे नगर में भौतिक वस्तुओं के उत्पादन के सैंकड़ों यन्त्रालय लोक की आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे हैं। क्या साहित्य-रचना का एक कार्यालय भी उसी सफलता से यहां नहीं चलाया जा सकता? हम यह भी जानते हैं कि आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योग धन्धों का जड़ मजबूत करने के लिए सरकारी विशेष सहायता कल कारखानों को दी जाती है। हमारे मानसिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए साहित्य से अधिक आवश्यक साधन और क्या हो सकता है? अतएव साहित्य के महामन्दिर को भरपूर सरकारी सहायता पाने का अधिकार है। वस्तुतः सार्वजनिक कोष से ही दस-बीस लाख रुपये के मूलधन से एक केन्द्रिय अनुवाद-मंडल और साहित्य-मंडल का स्थापना होनी चाहिए। एक साथ कई सौ विद्वानों को अनुवाद और ग्रन्थ-रचना के काम में लगा कर हम पिछड़ी हुई दशा को सुधार सकते हैं। अशिक्षित जनता को साक्षर बनने के लिए करोड़ों रुपयों की योजनायें विचाराधीन हैं, घरेलू उद्योग धन्धों के उद्धार के लिए भी मुक्त-हस्त होकर धन खर्च करने की बात हम सोच रहे हैं, रेल के इञ्जन, हवाई जहाज, मोटर गाड़ी देश में ही बनाने के लिए सार्वजनिक कोष का उपयोग हमारे ध्यान में आता है। निस्सन्देह ये कार्य राष्ट्र की उन्नति के साधक हैं, परन्तु क्या साहित्य की रचना उनसे कम महत्वपूर्ण है? बुद्धि की भूख बुझाने के लिए भी हमें तुरन्त ही कुछ करना चाहिये। परदेशी साहित्य और विदेशी भाषा से अपनी जनता का पिण्ड छुड़ाना बहुत ही आवश्यक है। उसके लिए एक दो करोड़ रुपये का नियमित व्यय भी कुछ भारी बात नहीं है।

केन्द्रिय सरकार की सहायता और प्रोत्साहन से राष्ट्रीय साहित्य-परिषद् का संगठन किया जा सकता है। प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय साहित्य परिषदों की स्थापना करके उन्हें केन्द्रिय परिषद् से संबन्धित करके कार्य कराना और भी अच्छा होगा। इससे भी आगे बढ़ कर अनेक स्थानीय साहित्य-परिषदों को भी अनुवाद और रचनात्मक साहित्य का कार्य अपने हाथों में लेना होगा। इस प्रकार के सामूहिक प्रयत्न से ही साहित्य का अधिदेवता प्रसन्न किया जा सकेगा। जिस राष्ट्र का साहित्य महान् है वही राष्ट्र महिमा-भाव को प्राप्त कर सकता है। केन्द्र से महिमा-भाव में आना ही जीवन का लक्षण है। इस समय हमारे राष्ट्र में चारों ओर महान् बनने के उपक्रम हो रहे हैं। प्रत्येक क्षेत्र में जीवन की नई चेतना प्रकट हो रही है। शताब्दियों से जो विचार सोये हुए पड़े थे वे जाग रहे हैं। जिस प्रकार बसन्त का संदेश प्रत्येक लता, वृक्ष और वनस्पति में नये जीवन-रस का संचार कर देता है उसी प्रकार इस समय हमारे राष्ट्रीय मानस में अपने आपको आद्योपान्त जान लेने (आत्म-संस्मृति) के विचार पुनः पल्लवित हो रहे हैं। इस ओजायमान प्रवाह में एक दो या दस-बीस केन्द्रों से क्या, वरन् सैकड़ों हजारों स्थानों से साहित्य के नव विधान के अंकुर फूटेंगे। आकाश संचारी मेघों के जल उन्मुक्त होकर जब बरसते हैं तब जहां कहीं बीज और उर्वरा भूमि की सम्पत्ति होती है, वहीं उत्पादन होने लगता है। साहित्य के क्षेत्र में भी इस प्रकार का देशव्यापी उत्पादन आवश्यक है। साहित्यिकों की भावना और कर्मशक्ति के योग से सर्वत्र नूतन साहित्य की सृष्टि संभव है। साहित्य का निर्माण एक यज्ञीय कार्य है अपने-अपने साधन और शक्ति के अनुसार जो चाहे इस यज्ञ में भाग ले सकता है। साहित्यसेवी इस यज्ञ के पुरोधा हैं, साहित्य-प्रेमी इसके यजमान हैं। कोई भी श्रद्धालु यजमान इच्छानुसार धन का सदुपयोग करके साहित्यिक यज्ञ करा सकता है। एक या एक से अधिक ग्रन्थों के अनुसंधान सम्पादन अनुवाद और प्रकाशन का प्रबन्ध करके हम इस पवित्र कार्य में भाग ले सकते हैं। जो व्यक्ति किसी भी साहित्यिक योजना ज्ञान-केन्द्र या कलापीठ का संवर्धन करता है, वह सच्चे लोक कल्याण के कार्य में प्रवृत्त कहा जा सकता है।

हिन्दी में हम क्या करें

साहित्य के क्षेत्र का सीमा-विस्तार अनन्त है। फिर भी राष्ट्र-भाषा में साहित्य-निर्माण के लिए कुछ निश्चित सुझाव रक्खे जा सकते हैं। हमारी साहित्य-परिषदें निम्नलिखित विभागों के अनुसार साहित्य रचना का कार्य करा सकती हैं—

१—**प्राचीन साहित्य**—इसके अन्तर्गत समस्त संस्कृत-साहित्य की पूरी छानबीन के साथ हिन्दी में अनुवाद और प्रकाशन होना चाहिये। निखिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाली साहित्य, अर्धमागधी जैन साहित्य, अपभ्रंश साहित्य एवं बौद्ध संस्कृत साहित्य भी इसी विभाग के अन्तर्गत आ जाते हैं। संशोधन और इतिहास-समीक्षा की दृष्टि से प्राचीन साहित्य के लिये जो कार्य पिछले सौ वर्षों में अङ्गरेजी भाषा के माध्यम से हुआ है वही कार्य शीघ्र से शीघ्र हिन्दी भाषा में पूर्ण होना चाहिये। तीस कोटि भारतीय जनता का इस साहित्य से सीधा सम्बन्ध है। यह हमारे ज्ञान और संस्कृति की अमूल्य निधि है। पूना के 'भाण्डारकर प्राच्य शोध मन्दिर' ने व्यास की शत-साहस्री संहिता महाभारत का प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित करके भारतीय साहित्य और संस्कृति का बड़ा हित किया है। इस प्रकार के महत्वपूर्ण ग्रंथों को राष्ट्रभाषा के माध्यम से प्रकाशित करना हमारा कर्तव्य है। रामायण, पुराण, वेद-वेदांग, स्मृतियां, निबन्ध, काव्य, इतिहास, कोष, आलोचना आदि अनेक विषयों के संस्कृत-ग्रन्थों का हिन्दी में रूपान्तर हमारे युग के लिये आवश्यक है। प्रत्येक प्रान्तीय भाषा को भी यथाशक्ति इस कार्य में हाथ डालना चाहिये। संस्कृत से अनुवाद का कार्य प्राचीन और नवीन के बीच में सेतुबन्ध की तरह है। संस्कृत के क्षेत्र में भारतीय राष्ट्र ने कई सहस्राब्दियों तक जो निर्माण का कार्य किया है, उससे परिचित होना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उसकी ओर से उदासीन रह कर हम अपनी कुशलता की आशा नहीं कर सकते। इसी विभाग के अन्तर्गत वे ग्रन्थ भी हैं, जो भारतीय साहित्य या धर्म के विषय में विदेशी भाषाओं में सुरक्षित हैं। भारतीय कला का अध्ययन करते समय हम अपने पड़ोसी देशों में सुरक्षित कला का भी अध्ययन करते हैं। वैसी ही कुछ बात साहित्य के लिये भी है। तिब्बतीय धर्मग्रन्थ कंजुर और तंजुर में अनेक भारतीय ग्रन्थों के अनुवाद हैं! चीनी त्रिपिटक में भारतीय धर्म और संस्कृति से सम्बन्ध रखनेवाले लगभग पांच सहस्र ग्रंथ सुरक्षित रह गये हैं, जिन के संस्कृत मूल अब लुप्त हो चुके हैं। उनमें भारतीय इतिहास और भूगोल की अतुलित सामग्री है, अतएव उनका उद्धार करना राष्ट्रीय कर्तव्य है।

इसी प्रकार प्राचीन ईरानी और पहलवी भाषाओं के ग्रन्थों का भी हमारे लिये बहुत बड़ा महत्व है। प्राचीन ईरान की भाषा वैदिक भाषा की सगोती थी। न केवल पारसी धर्म और संस्कृति के ज्ञान के लिये उसका अध्ययन आवश्यक है, वरन् प्रांतीय भाषाओं के निरुक्त शास्त्र के लिये भी हमारे विशेषज्ञों को उसे जानना चाहिये। पहलवी भाषा सासान वंशी फारस की राजभाषा थी। वह अर्वाचीन फारसी की जननी है। प्रांतीय भाषाओं में जो हजारों फारसी शब्द हैं उनका आदिम रूप पहलवी के युग में ही स्थिर हुआ। किसी भी प्रांतीय भाषा की शब्दनिरुक्ति का काम बिना पहलवी के ज्ञान के चल ही नहीं सकता। हिन्दी में तो फारसी के माध्यम से आये हुए पहलवी के शब्द पद-पद पर मिलते हैं। साल, सितारा, नेक, पोच, तार, चरबी बुनियाद, चाकू, शहर, शाह, तराजू जैसे हजारों शब्द जो हिन्दी में घुलमिल गये हैं, पहलवी भाषा की देन हैं। पहलवी का व्याकरण और शब्दशास्त्र स्वयं संस्कृति का ऋणी है। पहलवी का 'हर्व' संस्कृत 'सर्व' से निकला है, जिसका फारसी रूप 'हर' हिन्दी में बिलकुल पच गया है। इसलिये और भी हमारा कर्तव्य हो जाता है कि पहलवी भाषा और उसके साहित्य की ओर हिन्दी के द्वारा हम सविशेष ध्यान दें।

२—विदेशी साहित्य—राष्ट्रीय साहित्य की दिक्सीमा का विस्तार करने के लिये विदेशी भाषाओं में लिखे हुए साहित्य की ओर ध्यान भी देना जरूरी है। विदेशी साहित्य के अन्तर्गत सब से पहले उस साहित्य को लेना चाहिये जिसका भारतीय इतिहास और संस्कृति से सम्बन्ध है। यूनान और रोम के साथ भारत का सम्पर्क हुआ था। उन भाषाओं के पुराने साहित्य में भारतवर्ष सम्बन्धी पर्याप्त सामग्री है। उसको उन भाषाओं के मूल ग्रन्थों से हिन्दी में लाना चाहिये। पुर्तगाली ओलंदाजी, फ्रांसीसी और अङ्गरेजी यात्रियों के सैकड़ों यात्रा-विवरण हमारे राष्ट्रीय जीवन के एक बहुत ही गाढ़े समय (१६ वीं से १८ वीं सदी) का चित्रण करते हैं। उनका हिन्दी रूपान्तर शनैः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शनैः प्रस्तुत करना चाहिये। इसी कोटि का फारसी और अरबी का साहित्य भी अपना एक विशेष स्थान रखता है। मसूदी (१० वीं सदी), इस्तखरी (६५० ई०) इब्नहौकल (६७५ ई०), अल्बिरूनी (६७३-१०४८ ई०) इदरासी (११५४ ई०), इब्न-बतूता (१३५५ ई०) आदि अरब भौगोलिकों ने भारत के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सामग्री छोड़ी है जिसे अरबी से हिन्दी में लाना आवश्यक है। सुल्तानी और मुगल राज्य-काल के कितने ही फारसी इतिहासों से भी हमें राष्ट्रीय भाषा के द्वारा परिचित होने की आवश्यकता है। चीनी यात्रियों के भारत विषयक ग्रन्थों का भी इसी विभाग के अन्तर्गत अनुवाद होना चाहिए।

यह तो हुई प्राचीन विदेशी साहित्य की बात वर्तमान भाषाओं जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच जर्मन आदि में भारत विषयक जो गवेषणात्मक सामग्री या मौलिक ग्रन्थ लिखे गये हैं उन्हें भी राष्ट्र-भाषा में लाना चाहिये।

३ प्रांतीय साहित्य—अपने देश की प्रांतीय भाषायें अधिकांश में संस्कृत-वर्ग की होने के कारण हिन्दी से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं। उन भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद होना आवश्यक है। इस दिशा में थोड़ा काम जहां-.हां हुआ भी है, परन्तु निश्चित योजना के अनुसार बड़े पैमाने पर काम करने की आवश्यकता बनी है। गुजराती, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, काश्मीरी, नेपाली, बंगला, उड़िया, अहोम आदि भाषाओं का निकट सम्पर्क पाकर हिन्दी का गौरव बढ़ेगा। हिन्दी इस समय राष्ट्रभाषा की ऊंची आसन्दी पर बैठी है। समानशील प्रांतीय साहित्यों के बीच हिन्दी साहित्य के उठान का रूपक इस मन्त्र से ज्ञात होता है—

'वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः।'

अर्थात् जैसे उदित होनेवाले नक्षत्रादिकों में सूर्य हैं वैसे ही बराबरी वालों के बीच में मेरा स्थान है।

सामाजिक साहित्य—अर्थ-शास्त्र, राजनीति [illegible] सम्बन्धी साहित्य की हिन्दी को बहुत बड़ी आवश्यकता है। देश में इस समय आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक, ये तीन बड़ी क्रांतियां हो रही हैं। क्रांतिकारी विचार साहित्य में प्रतिबिम्बित होते हैं। अतएव भारतीय समस्याओं पर अपने ढंग से सोचने की शक्ति ही समाज शास्त्रीय साहित्य की नींव बन सकती है। इस क्षेत्र में कोरे अनुवाद से काम नहीं चल सकता। जनता के अनुभव की कसौटी पर जो सत्य कसे गये हैं वे ही समाज के लिये उपयोगी हो सकते हैं। जीवन की हलचल के द्वारा ही राजशास्त्र के प्रयोग प्रत्येक युग में व्यक्ति और समाज के लिये सत्यात्मक बनाये जाते हैं। प्राच्य और पाश्चात्य राज-शास्त्र के कुछ मूलभूत ग्रन्थों के अनुवाद प्रस्तुत करने का काम साहित्य परिषदों के द्वारा हो सकता है। परन्तु मूल साहित्य सृजन के लिये क्रमिक विकास और समय की अपेक्षा होगी।

५—वैज्ञानिक साहित्य—संसार में इस विज्ञान का महिमाशाली साहित्य दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। उसको राष्ट्र-भाषा के कोष में समेटने की आवश्यकता है। इस कार्य में एक सहस्र कार्यकर्ता भी हों तो थोड़े हैं। इस कार्य का अधिकांश तो विश्वविद्यालयों के द्वारा सम्पन्न हो सकेगा। ऊंची से ऊंची कक्षाओं में राष्ट्र-भाषा को शिक्षा का माध्यम स्वीकार करने की नीति कई विश्वविद्यालयों ने सिद्धान्ततः मान ली है। पर इस को व्यवहार में पूरा करने के लिये बलवान् प्रयत्न की आवश्यकता है। विज्ञान के क्षेत्र में पारिभाषिक शब्दावली की समस्या महत्वपूर्ण है। पश्चिमी वैज्ञानिकों ने ग्रीक और लैटिन की सहायता से अपने लिये पारिभाषिक शब्दों की समस्या को हल कर लिया है। उसी प्रकार राष्ट्र-भाषा हिन्दी और समानशील प्रांतीय भाषाओं के लिये वैज्ञानिक शब्दावलि का निर्माण हमें संस्कृत की सहायता से करना होगा। अपनी भाषाओं की मूल भित्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे लिये और कोई श्रेयस्कर अथवा व्यावहारिक मार्ग है ही नहीं। संस्कृत भाषा [illegible] और प्रयत्नों में ग्रीक और लैटिन से भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं अधिक समृद्ध है। कितनी ही बार तो यूनानी शब्दों की व्युत्पत्ति के आधार पर सरलता से ही संस्कृत की पर्यायवाची शब्दावली बना ली जा सकती है। उदाहरण के तौर पर प्राणीशास्त्र और भूगर्भ शास्त्र के निम्नलिखित शब्द कितने चुस्त और निरुक्तदृष्ट्या पाश्चात्य शब्दों के कितने निकट हैं:—

Mesozoic	मध्यजन्तुक
Dinosaur	दानव सरट
Qarternary	तुरीयक काल
Tertiary	तृतीयक काल
Palaeozoic	पुरा जन्तुक
Protozoa	प्रातःजीव
Edentata	अदन्तक प्राणी
Insectivora	कीटाद
Carnivora	क्रव्याद

जो कुछ वैज्ञानिक शब्दावली हमारे पास है वह संस्कृत के आधार पर आजकल बनी है। अतएव किसी भी प्रकार संस्कृत का सहारा छोड़ना इस विषय में असम्भव है। चिकित्साशास्त्र, शरीरविज्ञान, प्राणीशास्त्र, वनस्पति शास्त्र विद्युत शास्त्र की परिभाषायें इसी आधार पर बनाने का सफल प्रयत्न हो भी चुका है। रसायन शास्त्र के लिये लाहौर से डा० रघुवीर के तत्वावधान में सम्पूर्ण शब्दावली का कोष प्रकाशित हुआ है। उससे यह प्रकट होता है कि यूनानी भाषाओं के शब्द-धातु और प्रत्ययों की चाल पर संस्कृत के शब्द धातु प्रत्ययों से किस प्रकार सरलता से शब्द गढ़े जा सकते हैं। प्रान्तीय साहित्य परिषदों को उचित है कि एक साथ मिल कर इस महत्वपूर्ण विषय में शीघ्र सर्व-सम्मत निर्णय करें। इसके साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि चित्र-कला स्थापत्य आदि शास्त्रों के लिए लोक में प्रचलित अनेक पेशेवर लोगों के पास पारिभाषिक शब्दों का अक्षय भण्डार है। ऐसे शब्दों की परम्परा पुराने समय से चली आई है। खोज करने से पता चलता है कि कितने ही पारिभाषिक शब्द दो सहस्र वर्षों से चालू हैं। कुछ की आयु उससे कम हो सकती है प्रत्येक जाति के कारीगर और शिल्पी इनका व्यवहार करते हैं। उनका साहित्य में पुनः प्रचलन अवश्य होना चाहिये। कोई प्रान्तीय भाषा ऐसी नहीं है जिसमें इस प्रकार के शब्दों का भण्डार न हो। अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू, दिल्ली की ओर से मौलवी अब्दुल हक़ साहब ने दो सौ पेशेवर लोगोंकी सूची बनाकर उनसे पारिभाषिक शब्दों का संकलन कराया था जिसे दस भागों में छापनेका उनका विचार है।

इसका प्रथम भाग उक्त संस्था के द्वारा प्रकाशित भी हो चुका है। इस ग्रन्थ से मुझे पहली बार ज्ञात हुआ कि पलंग के पायों के नीचे उन्हें उठाने के लिए जो ठेक रक्खी जाती है उसे 'पड़वाया' कहते हैं। यह शब्द सं० 'प्रतिपादुका' से बना है जो बाण की कादम्बरी में ठीक इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस शब्द की आयु १३०० वर्षों के लगभग अवश्य है। पत्थर में जाली के भांति २ के कटावों के लिए जाल छवांस, अठवाँस आदि शब्द हैं जो सं० षट्पार्श्व अष्टपार्श्व से निकले हैं। डमरू के आकार की कटावदार जाली के लिए डैरू छवांस (सं० डमरू षट्पार्श्व) शब्द हैं इन से निश्चयपूर्वक यह ज्ञात होता है कि पत्थर और लकड़ी में आर-पार जाली के कटाव का काम ठेठ भारतीय शिल्प की देन है। फूल पत्तियों के गहरे कटाव की जो परिपाटी गुप्त काल से शुरू हुई थी वह उत्तरोत्तर बढ़ती गई और अन्ततोगत्वा मध्य-काल की भारतीय शिल्पकला में उसने आर-पार कटी हुई जाली का रूप धारण कर लिया। यह बात जहां भारतीय शिल्प के विकास पे समस्त है वहां लोक में आज तक प्रचलित शब्दों से भी प्रमाणित होती है। हमारा विशेष लक्ष्य इस बात पर है कि वैज्ञानिक शब्दों के निर्माण में लोक की परम्परा का ध्यान रक्खा जाय। जिन अर्थों और वस्तुओं के लिए लोक में चालू शब्द मिल सकते हैं वहां लोक का साथ छोड़ना उचित नहीं है। यही 'मज्जिम पटिपदा' या बीच का रास्ता है।

अन्त में हिन्दी एवं प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य की गोद भरने के लिए एक विशेष महत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात की ओर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। वह है जनपदीय साहित्य का संग्रह और संकलन। इस विषय को लेकर कुछ समय पूर्व हिन्दी जगत में काफी विमत और सम्मत चर्चा चली थी। परन्तु सौभाग्य से जनपदीय साहित्य स्वयं अपने तेज से प्रकाशित है। इसे साहित्य की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए लम्बे-चौड़े तर्कानुसारी प्रमाणों की आवश्यकता नहीं है। जिस समय पहली बार हमारे पूर्व-कृत पूर्वजों ने इस भूमि पर भूम्प्रवेश (लैंड-सेटलमेण्ड) की कल्पना की उसी समय से जनपदीय साहित्य का बीजारोपण हुआ। भूमि, भूमि पर बसनेवाला जन और उस जन की संस्कृति—ये ही जनपद रूपी विष्णु के तीन चरण हैं। इस प्रकार के त्रिविध अध्ययन का ठाठ अपने ज्ञान के प्रथम प्रभात में ही हम अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में पाते हैं। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' इस नित्य और सार्वभौम परिभाषा को हम वहां अपने पूर्ण रूप में विकसित देखते हैं। पृथ्वी की गोद से जिसने जन्म लिया है उसी से हमारा बन्धुत्व का नाता है। पर्वत और अरण्य समतल भूमियां और समुद्र, निरन्तर बहनेवाली जल धारायें और जलपूर्ण स्रोत, नाना प्रकार की वीर्यवती ओषधियां वृक्ष और वनस्पति, पृथ्वी के गर्भ में संचित स्वर्ण और मणि रत्न, शिलायें और भांति-भांति की मृत्तिकाएँ, सुनसान जँगलों में मंगल करनेवाले सिंह, व्याघ्र आदि पशु एवं प्रकाश में गरुड़ की शक्ति से झपटनेवाले नभचर पक्षी ये सब मातृभूमि के पुत्र हैं। मातृभूमि के परिचय में इन सबका परिचय अंतर्हित है। राष्ट्रीय नवोदय के समय इन सबके साथ हमें नूतन परिचय प्राप्त करना चाहिए। शतपथ ब्राह्मण में कहा है कि राजसूय यज्ञ के समय राजा एक सभा करता था जिसे पारिसव आख्यान कहते थे। इसका सत्र कई दिनों तक रहता था और इसके अन्तर्गत नाना विद्याओं और शास्त्रों में पारंगत विद्वान एकत्र होकर राजा को राष्ट्र के सब भूतों से और संस्कृति से परिचित कराते थे। 'भूतानि आचक्ष्व के' आमंत्रण से सभा का कार्य आरम्भ होता था। इस सभा के नवें दिन पक्षी विशेषज्ञ (वायोविद्यक) देश के पक्षियों का राजा को परिचय देते थे। समस्त राष्ट्र की रक्षा के लिए जिस राजा का अभिषेक हुआ उस पर सब का अधिकार है। उसे सबका कुशल-प्रश्न पूछना चाहिए। मूर्धाभिषिक्त राजाओं के युग तो अब चले गये। उनका राजनीतिक ऐश्वर्य (sovereignty) प्रजाओं में अवतीर्ण हुआ है और प्रजाओं के द्वारा नेताओं में प्रकट होता है। प्रजा और नेता ही राष्ट्रीय मंगल के लिए उत्तरदायी हैं। ऐसे समय यह और भी आवश्य है कि पृथ्वी की भूत-सम्पत्ति जन-समृद्धि और ज्ञान-संस्कृति को आद्योपान्त जानने का हम बहुत बड़ा प्रयास करें। इसी के द्वारा हम सच्चा स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा अपने ही देश में हम अजनबी बने रहेंगे। जनपदीय अध्ययन के हजारों पहलू हैं, जहां तक भारतवर्ष विस्तृत है वहां तक इस साहित्य का भी विस्तार है। एक एक प्रान्तीय भाषा और स्थानीय बोली नये नये शब्दों और मुहावरों के लिए कामधेनु सिद्ध होगी। राष्ट्रीय भाषा का स्वरूप जनपदीय अध्ययन के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकता। कम से कम पचास हजार नये शब्दों का जनपदीय साहित्य से स्वागत करने के लिए राष्ट्र-भाषा को अपना तोरण द्वार उन्मुक्त रखना चाहिये। प्रान्तीय भाषाओं में शब्दों की व्युत्पत्ति का काम अभी बहुत पिछड़ा हुआ है, कम से कम हिन्दी के लिए तो यह बात सत्य है। हिन्दी शब्दों की निरुक्ति को भी जनपदीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दावली के संग्रह से नई स्फूर्ति प्राप्त होगी। इसी प्रकार समस्त देश में भौगोलिक नामों की उत्पत्ति की छानबीन करने का कार्य भी जनपदीय अध्ययन का ही एक आवश्यक अङ्ग है। उसके लिए केन्द्र और प्रान्तों में 'स्थान नाम परिषदों' को संगठित करना आवश्यक है।

जनपदीय साहित्य और संस्कृति के देशव्यापी अध्ययन का एक मीठा फल होगा पारस्परिक प्रीति और समझौते का भाव। समस्त वर्गों, सम्प्रदायों और जातियों के मौलिक जीवन की अखण्ड एकता का आधार ग्राम-संस्कृति या जनपदीय संस्कृति है। साहित्य के साथ उस संस्कृति या जीवन-पद्धति का जितना घनिष्ठ सम्बन्ध होगा उतना ही हमारे लिये हितकर होगा। आज के वातावरण में सुशांत और प्रीति-सम्पन्न जीवन-निर्वाह की चारों ओर आवश्यकता है। युद्ध, द्वेष हिंसा ने मनुष्य को निर्दय पशु की भांति एक दूसरे का भक्षक बना डाला है। मनुष्य के पास इस समय समनस्कता के सिवा और सब कुछ है। प्राकृतिक साधनों की भरपूर उन्नति की जा चुकी है, ज्ञान और साहस की भी खूब उन्नति हुई है। जल, थल, वायु विद्युत सभी पर मनुष्य ने विजय पा ली है। पर प्रकृति को जीतने की धुन में मनुष्य अपने को वश करना और समझना भूल गया है। वह और सब से तो जीत गया है, पर अपने आपे से हार गया है। इसका कारण बुद्धि और परिश्रम से पाये हुये हमारे सारे वरदान झूठे हो गये हैं! समस्त वैभव के होते हुये भी हम शांति और सुख से दूर जा पड़े हैं। इसके लिये मनुष्य के मन की चिकित्सा आवश्यक है। वाणी के सत्य आज कर्म के सत्य नहीं बन रहे, मानस सत्य को कर्म का सत्य बनाने का सब से महान् साधन जो मनुष्य के पास है वह सात्विक साहित्य है। साहित्य के द्वारा ही नीति और निर्माणात्मक तत्व शब्दों में मूर्त रूप ग्रहण करते हैं। अन्धकार-ग्रस्त समाज के लिये इस समय शब्द नामक ज्योति की आवश्यकता है। विश्व की सब संस्कृतियां और धर्म के आज कसौटी पर कसी जा रही हैं। जिस संस्कृति की विचार-धारा इस प्रकार का शब्दात्मक प्रकाश दे सकती है, वही संस्कृति विश्ववन्द्य और लोक-नमस्कृत होगी। हमारा विश्वास है कि भारतीय संस्कृति में विश्व कल्याण के निर्माणकारी तत्व निहित हैं क्योंकि इसका मूल आधार चिन्मय के द्वारा अनन्त अनुभूत ऐक्य और समन्वय पर स्थित है। समन्वय के इन सूत्रों को सक्रिय और जीवन-विधि का बल जब प्राप्त होगा तब उनका स्वर बुद्ध के संघोष की भांति जम्बूद्वीप के आर-पार सुनाई देगा और उसकी ध्वनि सकल लोक में विस्तार को प्राप्त होगी।

पूर्व युगोचित परन्तु नूतन युग के लिये उपकारी इन भावों के साथ महती देवता हिन्दी के उदार सारस्वत प्रांगण में आप सब का पुनः एक बार अभिनन्दन। ईश्वर करे सब के सम्मिलित उद्योग से भाषा और संस्कृति का स्वराज्य हमें शीघ्र प्राप्त हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्न के लिये

[ले०—श्री पं० तिलकधर शर्मा]

किसी भी राष्ट्र की स्वतन्त्रता का अर्थ है उसके जन की स्वतन्त्रता। जिस राष्ट्र के जन सुखी हैं-उनके निवास-स्थान उत्तम स्वच्छ और खुले हैं, उन्हें-जीवनोपयोगी आवश्यक सामग्रियां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, सुन्दर वस्त्रों का उपभोग करने में वे स्वच्छन्द हैं और उन्हें पुष्ट अन्न निश्चिन्तता से मिल जाता है, वही राष्ट्र स्वतन्त्र कहा जा सकता है।

यद्यपि हमारा महान् राष्ट्र—भारत चिर परतन्त्रता के अनन्तर स्वतन्त्र हो चुका है, पर उपर्युक्त दृष्टि से अभी हमें उस भारत के दर्शन नहीं हुए जिसके जन सुखी हों। अभी भारतीय जन के निवासस्थान संकीर्ण अस्वच्छ और गन्दे हैं, अभी उसे जीवनोपयोगी प्रत्येक वस्तु का अभाव निरन्तर बना रहता है, अभी वह कपड़ों के लिये तरस रहा है और अभी वह अन्न के लिये पराश्रित है। इसीलिये आवश्यक है कि भारतीय जन उठे और प्राप्त स्वतन्त्रता के स्वरूप को निखारने का प्रयत्न करे।

यद्यपि हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करनी है, फिर भी हमें विशेष सावधानी अन्न के क्षेत्र में करनी होगी, क्योंकि देश का सारा जीवन अन्न पर ही निर्भर होता है। आज देश के सैंकड़ों अधिकारी भावी अन्न-संकटों को दूर करने के उपायों को ढूंढने में ही व्यस्त हैं। परन्तु अन्न का प्रश्न केवल उच्च अधिकारियों का प्रश्न नहीं है, वह हमारा, आपका और सबका प्रश्न है; इसलिये इसका समाधान भी हमें आपको और सबको चाहिये। प्रत्येक भारतीय को सोचना चाहिये कि मैं इस महत्वपूर्ण प्रश्न के समाधान के लिये क्या कर रहा हूँ ?

अन्न का प्रश्न आज केवल निम्न श्रेणी के श्रमिकों और मध्यम श्रेणी के नागरिक व्यक्तियों का ही बन गया है, क्योंकि गांव का किसान तो अपने पास वर्ष भर का अन्न रख लेता है और उच्च श्रेणी के पूंजीपति काले बाजार (ब्लैक मारकीट) में ऊंचे से ऊंचे भावों पर अन्न खरीद लेते हैं। इसलिये मध्यम श्रेणी का नागरिक व्यक्ति और निम्न श्रेणी का श्रमिक ही जिसकी आय परिमित है—इतनी ही है जितनी से वह ४०) मन के भाव का अन्न नहीं खरीद सकता, इस समस्या का शिकार बन जाता है।

यद्यपि इन दोनों श्रेणियों के व्यक्तियों के लिये सरकारी अधिकारियों ने राशन-प्रथा चलाकर अन्न-समस्या सुलझाने का बुद्धिमत्ता पूर्ण प्रयत्न किया है और इससे कठिन अन्नाभाव के समय भी सबको अन्न सुलभ होता रहा है, यहां तक कि मैंने स्वयं देखा है कि पिछले दिनों जब अन्न का चोर बाजार गरम था और अन्न के व्यापारी ३५) मनके भाव गेहूँ बेचकर पूंजीपतियों के पेट भर रहे थे, उस समय भी सबको अन्न समुचित मात्रा में प्राप्त हो रहा था, तथापि यह कहने में हम संकोच नहीं कर सकते कि राशन द्वारा जनता को जो अन्न मिलता रहा है और मिल रहा है वह इतना सड़ा, गला, पुराना और दूषित पदार्थों से मिला हुआ होता है कि जिस के विषैले भयानक और स्वास्थ्य-नाशक प्रभाव से आज रोगियों की इतनी संख्या बढ़ गई है कि प्रत्येक घर का प्रत्येक सदस्य बीमार दीखाई देता है। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका दोष खाद्य-विभाग के अधिकारियों को नहीं दे सकते। यह दोष केवल उस परतन्त्रता का है जिसने हमें चोरी, ठगी और विश्वास-घात सिखाया है। अभी पिछले ही दिनों खाद्य-विभाग के अधिकारियों ने दो आटा पीसने की मिलों को आटे में खड़िया मिट्टी और इमली के बीज पीसकर मिलाते पकड़ा है। इसलिये हम पौष्टिक अन्न के अभाव का प्रथम दोष इन जघन्य-कृत्य आटा-मिलों के मालिकों का कह सकते हैं।

उधर गांवों की स्थिति भी अजीब सी हो रही है, ग्रामीण किसानों से व्यापारी लोग ऊँचे-से-ऊँचे भावों पर अन्न खरीदने के लिये गांवों में जा पहुंचते हैं और लोभी सीधा-सादा किसान भी अपना अन्न उन्हें सौंप देता है। इस प्रकार अन्न के धनिक व्यापारी बहुत सा गल्ला चोर बाजार में पूंजीपतियों के लिये एकत्रित करलेते हैं। जिससे खाद्य-विभाग के अधिकारियों को अन्न के अभाव-संकट की घोषणायें करनी पड़ती हैं और देश की विपुल धनराशि देकर भी अन्य देशों की अन्न के लिये खुशामद करनी पड़ती है।

इस प्रकार वर्तमान अन्न-संकट के दूसरे प्रस्तुतकर्ता हैं किसान और अन्न के व्यापारी। इन दोनों को भी २०० वर्ष की परतन्त्रता ने उच्च सामाजिक जीवनके कर्तव्यों और राष्ट्रके प्रति अपनत्वकीभावनाओं से दूर हटा दिया है। ये दोनों राष्ट्र को अपना राष्ट्र नहीं समझते, राष्ट्रीय जन को अपना बन्धु नहीं समझते, राष्ट्र के हानि लाभ को अपना हानि-लाभ नहीं समझते और देश के विनाश को अपना विनाश नहीं समझते और इसीलिये ये चोर बाजारी के इस जघन्य कृत्य को राष्ट्र के साथ विश्वास-घात नहीं समझते और पाप नहीं समझते। इन दोनों को केवल धन से प्रेम है राष्ट्र से नहीं, ये केवल अपने सुख को ही राष्ट्र का सुख समझते हैं और इसीलिये राष्ट्र की आत्मा--अन्न को चोरों के हाथ सौंपते हैं।

व्यापारी चोर-बाजार तय्यार करते हैं, थोड़े से लाभ के लिये स्वयं चोरी करते हैं और लोगों को चोरी करने के लिये विवश करते हैं। व्यापारी तनिक से लाभ के लिये स्वयं तो राष्ट्र के साथ विश्वासघात करता ही है और क्रमशः अनेक व्यक्तियों को भी इसके लिये तय्यार करता है। वह गाँवों से चोर-बाजार का अन्न लाते हुए रिश्वत देकर चुङ्गी के कर्मचारियों से बेईमानी कराता है, वह चौराहों पर खड़े सिपाहियों को भी रिश्वत देकर कर्तव्य-कार्य से गिराता है और इसके अनन्तर जांच के लिये आये हुए राशन-इन्सपैक्टरों को घूस देकर उन्हें भी धोखा देना सिखाता है। अब राशन-इन्सपैक्टर भी झूठी रिपोर्टें तय्यार करने लगते हैं और अपने आफिसरों के सामने एक झूठ को छिपाने के लिये अनेक झूठ बोलते हैं और इस प्रकार अधिकारी वर्ग भी वास्तविकता न जानने के कारण जनता के हित के मार्ग से दूर हो जाते हैं। इस प्रकार अन्नाभाव के दूसरे कारण-स्वरूप हैं अन्न के लोभी व्यापारी और लोभी किसान।

अब हमें उस स्थान को भी देखना है जहाँ से अन्न की शत-शत धारायें में प्रवाहित हो राष्ट्र को जीवन देती हैं। वहां पर चलती हुई कृषक और पटवारियों की मिली-जुली धाँधली भी आज देश को अन्न-संकट की ओर ले जा रही है। खेतों के लिये प्रतिदिन जो झगड़े होते हैं, वे कुछ लोभी पटवारियों के ही काले कारनामे हैं। झगड़ों में उलझे हुए किसान समुचित कृषि नहीं कर पाते।

पुरातन ऐतिहासिक साहित्य से पता चलता है कि भारत में इतना अन्न उत्पन्न होता था कि कृषकों द्वारा कर-रूप में दिये हुए अन्न के ढेरों से नगरों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहिरी भाग भरा रहता था। निम्न श्रेणी के लोग कभी अन्न खरीदा ही न करते थे, यहां तक कि अन्न बेचा ही न जाता था, बेचनेवालों को कोई खरीदार ही नहीं मिलता था। १६वीं शताब्दि तक १) के अन्न में एक छोटा परिवार एकमास तक निर्वाह कर सकता था। आज उसी भारत में अन्नकी इतनी कमी? क्या भारत के पास जल नहीं रहा? क्या वह वायु नहीं रही, अथवा वह कौनसी वस्तु नहीं रही जिसके कारण आज देश में सर्वत्र अन्न-अन्न हो रहा है?

हां, अन्न उत्पन्न करनेवाले, काली-काली आंखों और ऊँची ककुदवाले, ऊँचे पट्ठों के सुन्दर बैल नहीं रहे, वे उन काले पेटों में समाचुके हैं जो भारत के लिये सदा अभिशाप रहे हैं। सचमुच उन बैलों के बिना आज कृषक का जीवन नीरस और खेती की उपज क्षीण होगई है। आज भारत के पास ३८५० लाख एकड़ कृषि-भूमि है। जिसमें से २५५०००००० काम आती है और शेष १३०००००००० एकड़ भूमि बैलों के बिना अनुपजाऊ पड़ी है।

हमारे देश की २५५० लाख एकड़ भूमि के लिये ५१० लाख बैलों की आवश्यकता है। और शेष १३ करोड़ एकड़ भूमि के लिये २६० लाख बैलों की आवश्यकता है। इस प्रकार ७७० लाख बैल इस समय भारत को चाहियें। अन्तिम पशु-गणना के अनुसार भारत में कुल ५ करोड़ बैल हैं और ५० लाख बैलों का काम ऊँटों और भैंसों से लिया जाता है। इस प्रकार २५० लाख बैलों की कमी के कारण आज देश के सामने महान् अन्न-संकट है।

इधर नवीन शिक्षा-पद्धति ने भारतीय कृषक पुत्रों को कृषि के योग्य नहीं रखा। वे मैट्रिकुलेट बन कर नौकरी के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते। इसी लिये प्रतिदिन परिश्रमी कृषकों का अभाव होता जा रहा है। अतएव हमें इस ओर भी शीघ्र ध्यान देना होगा। भारतीय कृषक-पुत्रों को इस योग्य बनाना होगा कि वे नवीन कृषि उपादानों का प्रयोग कर अनुपजाऊ और बांझ भूमि को सस्य-श्यामला करदें।

१९४१ की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारतमें ६००००००००० टन अनाज की उपज थी और उनके हिसाब से ६४०००००००० टन अन्न भारतीय जनता के लिये चाहिये। इस प्रकार हम ४००००००० टन अन्न की पूर्ति के लिये विदेशों का मुंह ताकते हैं। हमें इसकी पूर्ति के लिये शीघ्र प्रयत्न करना चाहिये।

हमें अपने अन्न के भविष्य की ओर भी देखना है। प्रतिदिन बढ़ती भारत की जन-संख्या को यदि देखा जाय तो हमारे खाद्य का भविष्य अत्यन्त अन्धकारमय है।

१८७२—ई०	२१ करोड़	१८८१—ई०	२५ करोड़
१८९१— ,,	२६ ,,	१९०१— ,,	२५॥ ,,
१९११— ,,	३१॥ ,,	१९२१— ,,	३२ ,,
१९३१— ,,	३५ ,,	१९४१— ,,	३८॥ ,,

उपर्युक्त जन-गणना के अनुसार बढ़ती हुई जन-संख्या को देखते हुए यदि हमने अपनी १३ करोड़ एकड़ अनुपजाऊ भूमि को कृषि के योग्य न बनाया तो हमें आगामी वर्षों में फिर भारी अन्न-संकट का सामना करना पड़ेगा। साथ ही अन्न की समस्या के समाधान के लिये भारत के अमर पुत्रों को अपनी चिर-संयम शीलता की ओर भी ध्यान देना चाहिये।

वन्दे सस्यश्यामलां मातरम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
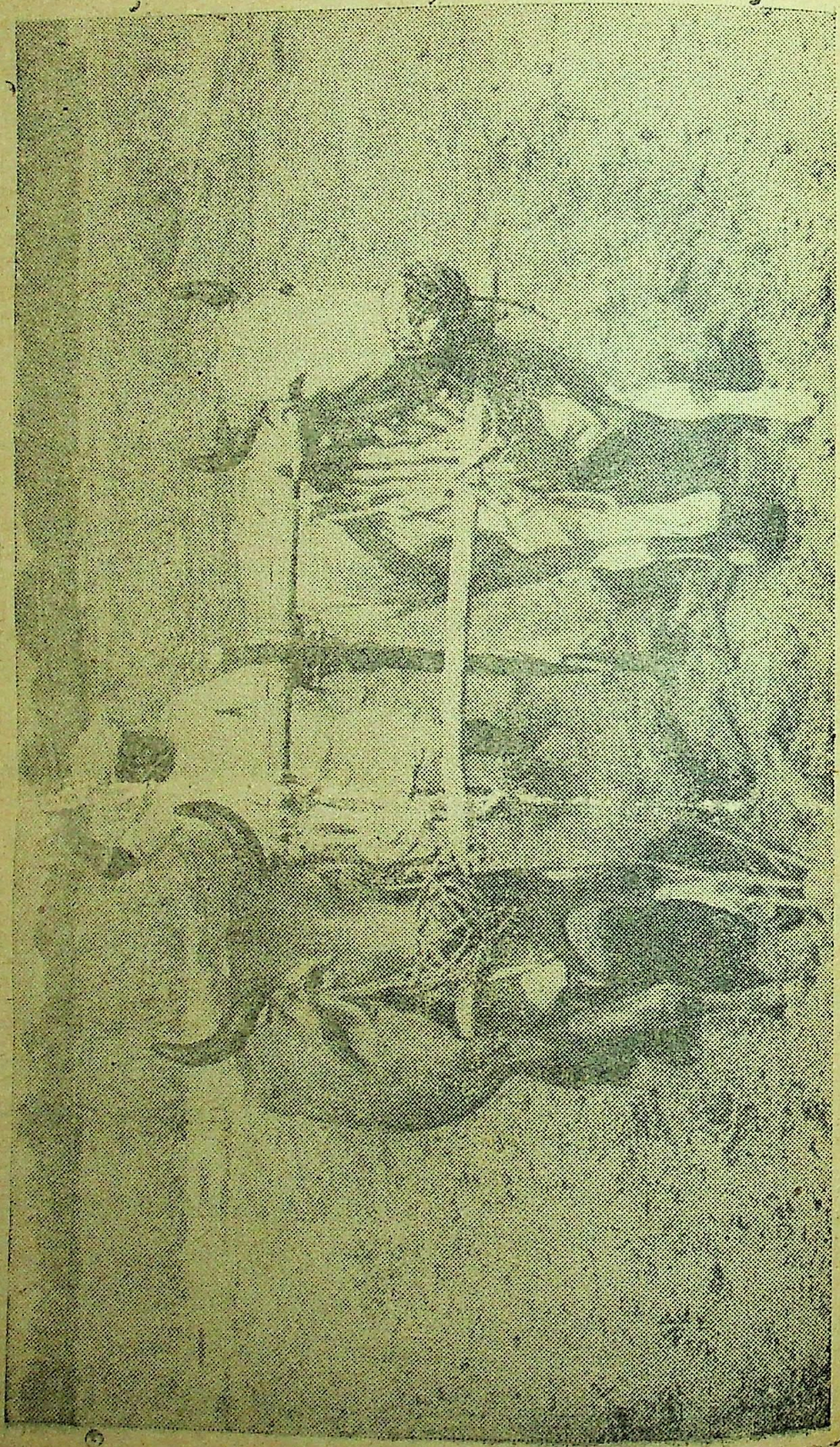
तपता है मध्याह्न, तप रहा पृथ्वी-तल का जब कन-कन ।
अरे तपस्वी ! तब तू तेरे वृष करते नव बीज-वपन ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
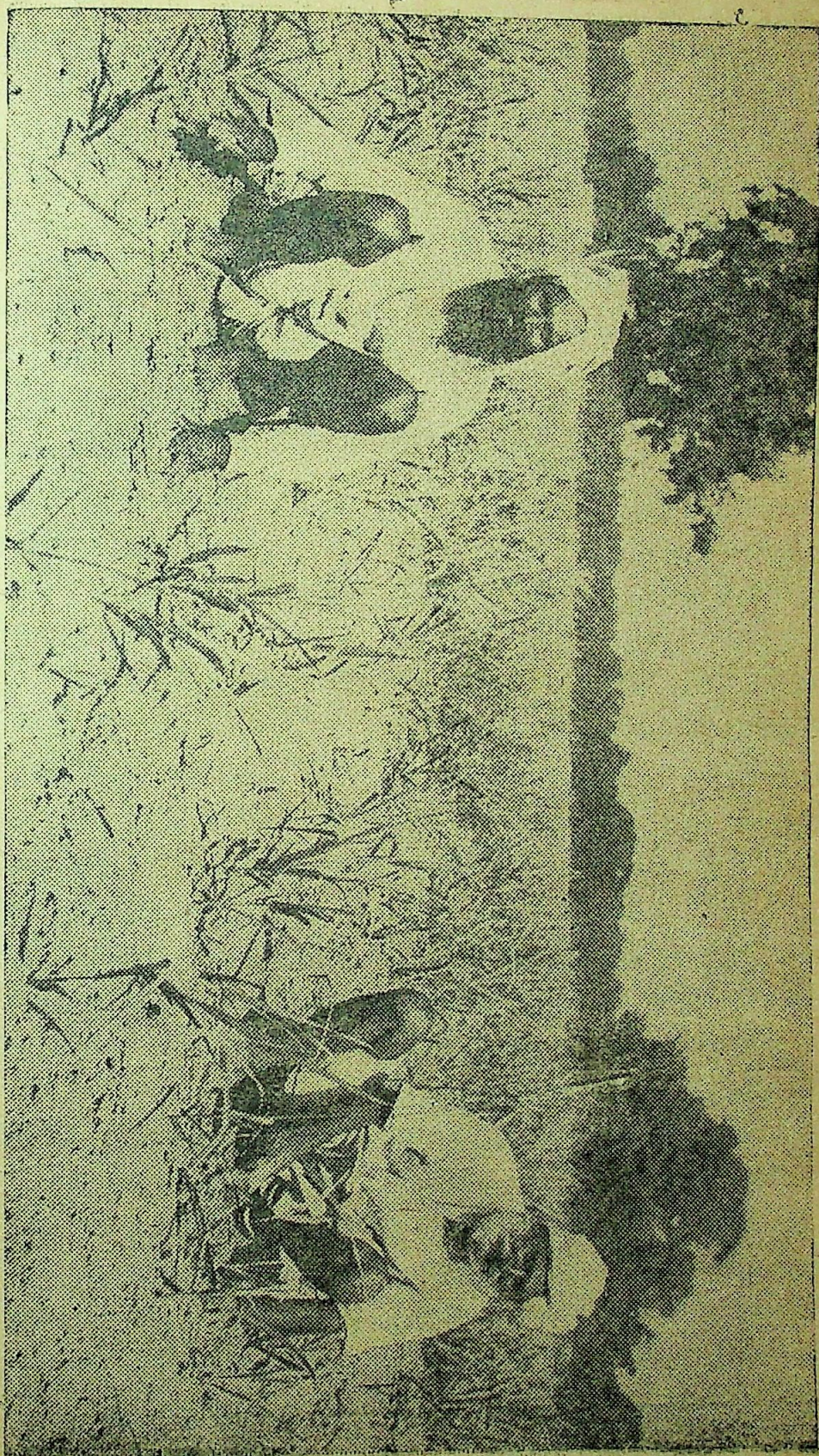
ऋणी रहेगा जन-जन तेरा अरे अन्न-निर्माता !
तेरा ही है कठिन परिश्रम भारत-भाग्य-विधाता ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सट्टा ?

सट्टे के रहस्य

[ले०—श्री विद्यारत्न ब्रजेश ज्योतिष शास्त्री]

इन रहस्यों को समझ लीजिये, इन सुझावों को मान लीजिये। इस लेख द्वारा आपको जो कुछ मिले उसे भूलिये मत। दावा है कि सट्टे में कभी आप हानि न उठायेंगे। इस पत्र के किसी अन्य अङ्क में आपको ऐसे उपाय भी बतलाऊँगा, जिनके द्वारा आप बेखटके लाभ ही लाभ उठाते चले जावें, हानि कभी हो ही नहीं।

पहले इसके कि मैं अपने विषय का विवेचन प्रारम्भ करूं, मैं आपको "सट्टा" शब्द की व्यापकता बतला दूं। सट्टे का अर्थ है आदान-प्रदान—एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु लेना। सट्टे का विशेष उपयुक्त पर्यायवाची शब्द है बदला [Exchange] एक चीज के बदले में दूसरी चीज लेना सट्टा है और मुद्रा को बीच में रख कर लेना-बेचना व्यापार है।

पैसा देकर लीजिये और पैसा लेकर दीजिये—यह प्रत्यक्ष व्यापार है—इसी का नाम क्रय-विक्रय है, जब कि सट्टा केवल कल्पना है। अनाज के बदले में कपड़ा, जबान के बदले में धन, गरज के बदले में रिश्वत, भक्ति के बदले में मुक्ति और दान के बदले में यश का अगर आदान-प्रदान हो तो यह सब सट्टा होगा। जीवन के लिये मृत्यु से संघर्ष और सुख के लिये दुःख का आवाहन भी सट्टा है। सट्टा सर्वव्यापी है, सट्टा साहस है, सट्टा भाग्य की कसौटी है, सट्टा बुद्धि का माप-दण्ड है, सट्टा सर्वथा ग्राह्य है। सट्टे को बुरा बतानेवाले गलती करते हैं। अच्छी से-अच्छी चीज भी दुरुपयोग किये जाने पर बुरी हो सकती है। अतः सट्टे का सदुपयोग किये जाने पर वह कभी बुरा नहीं होसकता।

देश का आर्थिक सन्तुलन सट्टे पर ही निर्भर करता है। कृषक का शोषण सट्टा ही रोकता है। धन का हस्तान्तरण [Rotation] सट्टा ही उचित रीति से करता है। कांग्रेस मिनिस्ट्री ने भी इन तथ्यों को समझा है। उसने सट्टा बन्द करने का विचार परित्यक्त कर दिया है, क्योंकि उसके चाहने एवं मना करने पर भी सट्टा बन्द होना असंभव था।

जब जिन्ना और नेहरू सिद्धान्तवाद की आड़ में देश के भाग्य का सट्टा खेल सकते हैं, तब आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये सट्टा खेलकर आप भी बुरा नहीं करते। खेलिये सट्टा, पर इस तरह से खेलिये कि परिणाम में लाभ रहे।

सट्टा पिघला कर व्यापार के सांचे में ढाल दिया गया है और अब इसे व्यापार के नाम से पुकारा जाना ही ठीक है। आज व्यापारियों का ४० प्रतिशत और ज्योतिषियों का ६० प्रतिशत भाग केवल सट्टे पर ही आधारित है।

सट्टा कई वस्तुओं का होता है:—सोने-चांदी का,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुई का, बारदाने का, जूट पाट हेशियन का, अरहर; अलसी मूँग बाजरे का, शेयर का और कई किस्म का। आप हर अखबार में इन चीजों के सट्टे के भाव और इन पर टिप्पणियाँ पढ़ सकते हैं। आप हर मण्डी में वस्तु विशेष के पाटिये में इनका शोरगुल सुन सकते हैं।

पर यहाँ होता क्या है ? घुसिये न एकाध पाटियें में। आप देखेंगे कि भारी भीड़ जमा है जो अनर्गल शोर मचाये जा रही है और इतनी चिल्लियाँ मची हुई हैं कि कान पक जावें। आप कहेंगे शायद ये लड़ रहे हैं, पर नहीं, यहां सट्टा हो रहा है। ये लोग भाव की पाइयां चिल्ला रहे हैं। जैसे चांदी है १७२≡) तो ये तीन आने, पौने तीन आने और सवा तीन आने ही कहते हुए दिखाई देंगे, रुपयों का जिक्र ही नहीं। आप तो इसमें कुछ भी नहीं समझ पा रहे हैं, पर उनकी सैंकड़ों रु० की लेई-बेची होती जा रही है। 'खग जाने खग ही की भाषा।'

आप रुई पाटिये (Cotton Exchange) में घुसे। भयानक शोर, जोरदार उछल-कूद और हजारों की बातें ! मगर रुई तो यहां फूलबत्ती बनाने के लिये भी नहीं ! तब ये लोग क्या ले रहे हैं ? क्या बेच रहे हैं ? जरूर इनके गोदाम भरे होंगे आप ऐसा ही सोचेंगे ?

पर नहीं, न उनके पास कोई गोदाम है और न ही कहीं बाहर से उनका माल आ रहा है। ये तो महज 'वायदे' का व्यापार कर रहे हैं। वे भविष्य की किसी खास तिथि को नाम देकर उस दिन के लिये आज सौदा कर रहे हैं। आज के और उस वायदे के दिन के भावों में जो अन्तर रहेगा, उसे हानि-लाभ समझ कर ये ले-दे लेंगे। यही इनका व्यापार है। अब चाहे आप इसे जूआ कहें, या सट्टा, या फाटका या वायदे का सौदा। मैं तो इसे व्यापार ही कहूँगा।

चाहे आप माथे-पोते करते हों या तेजी-मन्दी खाते हों अथवा गली नजराने लगाते हों, चाहे तेजी मंदी फोरकास्ट करते हों; आपको यह तो जानना ही चाहिये कि कोई चीज तेज या मंदी क्यों होती है।

जब किसी वस्तु का उत्पादन कम होता है और माँग अधिक होती है, तब वह मँहगी होती है। जब पैसे का मूल्य वस्तु के मूल्य से कम होजाता है, तब हर चीज मँहगी होती है। जब पैसा असुरक्षित घोषित हो जाता है, तब भी चीज मंहगी होती है। सस्ती के लिये इसके उल्टे कारण समझिये।

देश-विदेश के घटना-चक्र, राजनैतिक परिस्थितियाँ, संवाद और विवाद, भविष्य के लिये जनसाधारण का मत, अफवाहें और ऐसी ही अन्य कई बातें होती हैं, जिनका प्रभाव प्रत्येक वस्तु की मार्केट पर पड़ता है। सटोरियों के भेद और ग्रहों की स्थिति की भी इस विषय में उपेक्षा नहीं की जा सकती।

रोजाना पत्र पढ़िये, सटोरियों से मिलिये, ज्योतिषी की रुख मिलाइये और इन सब के सम्मिश्रण को अपना एक स्वतन्त्र मत बना लीजिये। अपना मत अन्यों पर अभिव्यक्त करने की आवश्यकता नहीं। इस विषय में शान्त मस्तिष्क और कल्पनाशील बनकर खूब सोचिये।

यह तो आप जानते ही हैं कि इस व्यवसाय में ४ जोड़े हैं:—१ लेना-बेचना २. तेजी-मंदी ३. हानि-लाभ और ४ भाग्योदय या सर्वनाश।

इसे खेलनेवाले तीन तरह के व्यक्ति होते हैं:— (१) खिलाड़ी (२) तेजी राशिये या तेजड़िये (*Bulls*) और (३) मंदी राशिये या मंदड़िये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Bears)। खिलाड़ी तो बाजार के मुआफिक अपनी रुख बदल लिया करता है, पर तेजी राशियों को सदा तेजी और मंदी राशियों को सदा मंदी ही जँचती रहती है। खिलाड़ी सदा जीतता है, शेष दोनों पिटते हैं।

इकतरफा ध्यान कभी मत बनाइये। हानि में भी मस्तिष्क का संतुलन मत खोइये। जब तक बाजार अच्छी तरह समझ में न आजावे, सौदा हर्गिज मत करिये।

रुई के सौदे में मंदी राशिये जीतते हैं, क्योंकि रुई सदा अनुपात में मंदी के कसको अधिक छोड़ती है। चांदी में सदा तेजी राशियों की ही विजय होती है, अंग्रेजी में चांदी को तो कहते हैं Bullion और तेजी राशियों को Bulls-यह अच्छी तरह समझ लेने की बात है। पर वैसे जनरल उद्योग में तो खिलाड़ी ही जीतता है। जैसे भी हो, आप खिलाड़ी बनने का प्रयत्न करिये।

अब हम आपको अपने वे बहुमूल्य अनुभव भेंट करेंगे, जिन पर काम करके आप सर्वदा लाभ उठाते रह सकते हैं। अब इन्हें स्मरण रखना और व्यवहार में लाना आपका काम होगा।

(१) पूँजी—

चाहे आप उदार हों या मुंजी, अगर व्यापार करना है तो पूंजी की आवश्यकता आप को भी होगी। आप निर्धन हों या लक्षाधीश, पूंजी के बिना तो आप कुछ भी न कर सकेंगे। प्रत्येक व्यापार का आधार पूंजी ही है। पूंजी पहला प्रश्न है।

पूँजी किस प्रकार लगाना—अगर सट्टे से मजा उठाना है तो इस प्रश्न का उत्तर मेरी इन लकीरों तक ही सीमित रहने दीजिये। आपने जितनी पूंजी सट्टे के लिये सुरक्षित रखी है, उस के पांच बराबर विभाग कर लीजिये और एक बार में एक विभाग की सीमा से अधिक का व्यापार हर्गिज मत करिये, चाहे आपको ब्रह्मा ने ही स्वप्न में क्यों न कोई चांस बता दिया हो।

खबरदार! जो भी आसामियां फेल हुईं या जिनने भी अधिक हानि होने से दिवाला घोषित किया, वे ऐसे ही व्यक्ति थे जिन्होंने इस पांचवें भाग की परिधि से अधिक का सौदा किया। एकही दिन में लखपती होजाने की मत सोचिये। फूँक-फूँक कर कदम रखिये।

(२) व्यापार—

बाजार को भली प्रकार समझ बूझ कर सौदा करिये और उसको निपटाने के लिये सतर्क होकर बैठ जाइये। सट्टे द्वारा लाभ उठाने का एकमात्र मन्त्र है सतर्कता।

जो आलसी या ढीले होते हैं और भाग्य को प्रधान मानकर इस ओर बिलकुल ध्यान नहीं देते, वे सदा खोते ही देखे गये हैं। अतः सदैव सावधान रहिये। अफवाहों से अपना आइडिया मत बिगाड़िये। शान्त मस्तिष्क से बाजार का रुख स्टेडी करते रहिये।

अगर बाजार आपके रुख के मुताबिक ही चल रहा है तो व्यापार बढ़ाकर नफा पकाइये, पर यह "बढ़ाना" कैसे? इसका भी एक तरीका है। जैसे १५०) में आपने चाँदी खरीदी और भाव १५२) होगया। आपने १५०) में १०० पाट लिये थे, १५२ में ५० और ले लीजिये, १५४) में २५ और ले लीजिये। बस, इसी तरह बढ़ाइये—हर बार पहले सौदे का आधा बढ़ाते चलिये—बड़ा अच्छा तरीका है। ऐसा ही करेंगे तो लाभ उठावेंगे।

जब लाभ का सौदा चल रहा हो, तब थोड़े लाभ में हर्गिज सौदा मत करिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायदे के व्यवसाय में थोड़े लाभ में कटना जितना बुरा है, उससे भी हजार गुना ज्यादा बुरा थोड़े नुकसान में नहीं कटना है। अगर बाजार आपके रुखके मुताबिक नहीं चल रहा है तो फौरन ही सौदा काट दीजिये। बाजार सुधरने की बाट मत जोहते रहिये।

दूसरी बात यह है कि हानि में कभी पड़तल [Average] मत मिलाइये। यह बहुत खतरनाक और मूर्खतापूर्ण व्यापार है और तीसरी एवं आखिरी बात यह है कि निराश, दुखी और भय-भीत होकर बुद्धि का संतुलन न बिगाड़िये और अपने अन्तरङ्ग मित्र को भी अपनी पूंजी की परिस्थिति की थाह न दीजिये।

एक साहब ने १७२) में चांदी खरीदी। दूसरे ही घंटे में बाजार १७१) होगया! वे बोले--अजी ये तो रुब्बे हैं, इनका क्या है! एक दो रुपये की तेजी-मंदी चलती ही रहती है। पर उस रोज १७१) से गिर कर बाजार १६५) में बन्द हुआ और दूसरे दिन १५६) खुला। महाशय जी ने ५० सिल ले रखी थीं, बुरी तरह घबड़ा गये। पर फिर हिम्मत बढ़ा कर बाजार के साथ जिद करने की ठानी।

चाहे बाजार मंदी का चल रहा था, उन्होंने तो न केवल अपना तेजी का ही सौदा स्थिर रखा बल्कि उसे और बढ़ाया। १५६) के भाव में १०० पाट और पोते कर लिये। बोले--५० तो० १७२) के हैं और १०० अब १५६) के होगये तो अब मेरे पास १५० पाट १६३।) के भावके पोते होगये हैं। मैंने सस्ते की पड़तल मिला ली है। पर भाव १४५) होगया। अब रोलिये माथे पर हाथ देकर। पड़तल मिलाने के लिये सौदा बढ़ाने की बजाय उसी भाव में सौदा काट दिया होता, तब भी किसी हद तक गनीमत थी।

अतः बाजार से जिद कभी मत करो। याद रखो, बहते हुए पानी में अगर बहाव के साथ-साथ तैरोगे तो लक्ष्य तक अत्यन्त शीघ्र पहुंच जाओगे, पर बहाव का सामना करते हुए धारा पर चढ़ने की करोगे तो फौरन ही हाथ-पांव थक जावेंगे। फलतः डूब जाओगे।

(१) बाजार के साथ चलो (२) लाभ में सौदा बढ़ाओ, नुकसान में फ़ौरन कट जाओ। (३) नुकसान में पड़तल कभी मत मिलाओ।

(३) व्यवहार—

देना-लेना बिल्कुल साफ रखिये। उधारी दिमाग बिगाड़ देती है। तीन चीज चुनने में कभी गलती मत करिये-(१) मित्र, ज्योतिषी या व्यापारिक सलाहकार (२) दलाल और (३) समाचार पत्र आपका व्यापार इन्हीं तीनों पर निर्भर करता है।

कुछ व्यक्ति अपने मित्र की सलाह से व्यापार करते हैं। उन्हें यह जांच करलेना चाहिये कि उनके मित्र इकतरफा दिमाग के तो नहीं? वरना समाचार और बाजार की टोन की मन्शा चाहे जो हो, वे अगर तेजी राशिये हैं तो कई प्रकार की दलीलें दे-दे कर कई प्रकार से आपको समझा-बुझा कर आपके दिमाग में घोर तेजी घुसेड़ देंगे और अगर वे मंदी राशिये हैं तो आप को येन केन प्रकारेण मंदी पर ही जमा देंगे। चाहे उनकी शानदार दूकान पर टेलीफोन लगा हो, बार-बार तार आरहे हों, थोड़ी-थोड़ी देर में दलाल आ आकर खबरें दे रहे हों, पर सब व्यर्थ।

अपना सलाहकार चुनने में हर्गिज धोखा मत खाइये। ऐसा व्यक्ति चुनिये जो सामयिक घटनाओं का निष्पक्ष निचोड़ देसके। अगर ऐसा व्यक्ति न मिले तो भगवान् को ही अपना सलाहकार मान कर किसी की मत सुनिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर आप को मित्र से नहीं, ज्योतिषी से सलाह लेनी है तो एक दो विश्वास-पात्र उच्चश्रेणी की संस्थायें चुनिये और पहली रिपोर्ट हर नये ज्योतिषी की सिर्फ मिलाकर ही देखिये। उससे पत्र-व्यवहार कर उसकी विद्वत्ता की थाह ले लीजिये। अन्यथा यह क्षेत्र भी इस समय काफ़ी गंदा होगया है। जिसे देखो, दे रहा है 'अचूक चान्स।'

दलाल ऐसा चुनिये जो चतुर, सतर्क, फुर्तीला और ईमानदार हो और सबसे बड़ा गुण उसमें यह ही हो कि अपना सौदा बिल्कुल न करता हो और अपनी राय अपने व्यापारी पर न लादता हो। चाहे दलाली ज्यादा ही क्यों न लग जाय, दलाल बिल्कुल ऐसा ही चुनिये।

एक समाचार पत्र सटोरिये के लिये बहुत जरूरी साधन है जो उसकी प्रवृत्तियों पर कंट्रोल करता रहे और उसे भविष्य के लिये मार्ग सुझाता रहे। कोई सा भी पत्र पढ़िये, उस में दो दिन के तुलनात्मक और दो मंडियों के एक ही समय के भाव अवश्य हों और उन पर आवश्यक टिप्पणी हो। साथ ही उसमें सच्चे समाचार हों।

अगर आपने इन बातों का ध्यान रखा तो हानि का तो नाम भी भूल जावेंगे। इसी पत्र के अन्य किसी अङ्क में मैं आपको कुछ ऐसे रहस्य बताऊँगा कि जिनके द्वारा धड़ाके से लाभ ही लाभ कमाते जाइये, हानि की कोई आशंका न रहे।

एक मोटा गुर—

वस्तु (Conmodity) कोई भी हो, यह सिद्धांत सब पर बराबर एक सा लागू होता देखा गया है। सोमवार और शुक्रवार की तेज़ी मंदी बिल्कुल नहीं ठहरती। शनिवार की तेज़ी मंदी ४ रोज तक याने मङ्गलवार तक ठहरती है। इतवार और बुधवार की तेजी तो क्षणभंगुर होती है, पर मंदी खूब ठहरती है। इसी प्रकार मंगलवार और गुरुवार की मंदी टिकाऊ नहीं होती और तेजी खूब जमती है।

सट्टे का धन भाग्य से ही मिलता है और आप के भाग्य-विधाता आप स्वयं ही हैं।

दुःख?

भगवान् देने के लिये तय्यार खड़े हैं, केवल सुख, क्योंकि भगवान् के घर में दुःख, दरिद्रता और गरीबी है ही नहीं। परन्तु तुम लेने को तय्यार नहीं। इच्छा होने पर भी बिना भूख के मां बच्चे को दूध नहीं देती। भूख पैदा करो। भगवान अवश्य देंगे।

दुःख दुखी की भूल से होता है, इसलिये अपने दुख का कारण दूसरे को समझना परम भूल है।

दुःख कोई देता नहीं, बल्कि दुखी से स्वयं दूसरों को दुःख होता है, जिस प्रकार अग्नि स्वयं जलकर दूसरों को जलाती है।

दुखी का दुःख उसी समय तक जीवित है कि जब तक अभागा दुखी दुःख को संसार की सहायता से मिटाना चाहता है। संसार से निराश होते ही दुःखहारी हरि दुःख को स्वयं हर लेते हैं।

दुःख जैसी प्रिय वस्तु किसी और को न देनी चाहिये, यदि मिल सके तो [ले अवश्य लेनी चाहिये; क्योंकि जो दूसरों के दुःख से दुःखी होते हैं उनको अपने दुःख से दुखी नहीं होना पड़ता। ....दुःख से डरो मत, जो दुःख से डरता है वह कुछ नहीं कर सकता। आपके निज स्वरूप में अपार आनन्द छिपा है, जो दुःख की कृपा से मिलेगा, सुख की कृपा से नहीं। —एक सन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवज्ञ की दृष्टि में

संसार-चक्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
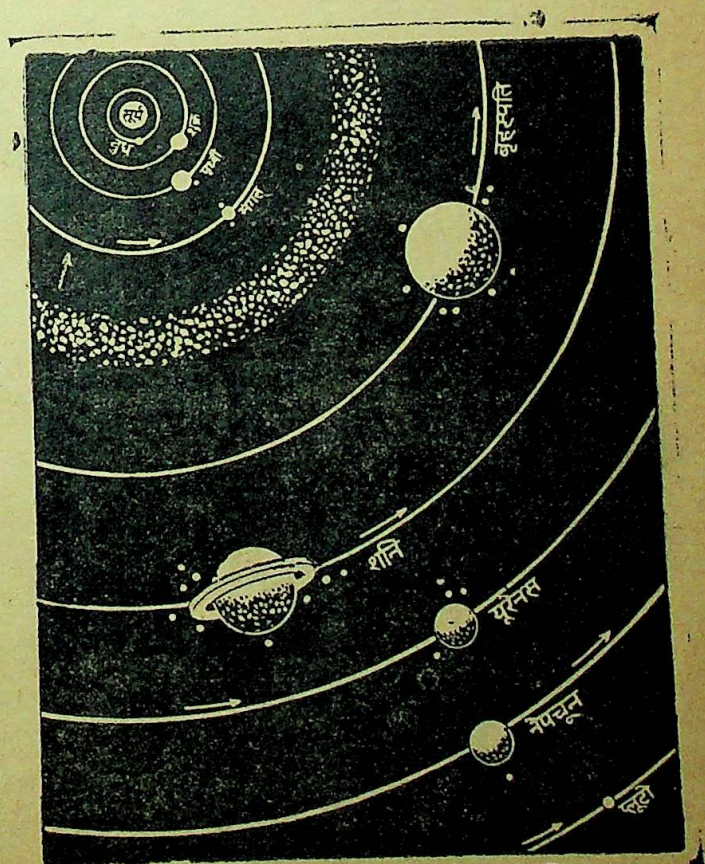
दीपों के धुँधले प्रकाश में !

मानव के सम्भ्रान्त वेश में,
दानवता की चल छायायें !
काली-काली लम्बी-लम्बी
क्रूर पिशाची अभिलाषायें !
बिखर रही हैं विश्व-मञ्च पर,
आंखों में तम सागर भरतीं !
मानो त्रिभुवन के विषाद की
हों गहरी-गहरी रेखायें !
झिलमिल करते छिपे जा रहे
तारे भी श्यामलाकाश में !
दीपों के धुंधले प्रकाश में !

कुहु की इस निस्तब्ध निशा में,
मौन दिशायें, नीरव तारे !
निष्ठुर अम्बर देख रहा है,
जीवन के बुझते अङ्गारे !
त्रेतायुग की दीवाली की
चुटकी लेती हैं जो स्मृतियां !
मोती रसाने बलगते हैं,
आंखों के बादल कजरारे !
दानवता भी जब नतनयना,
मानव के मंजुल विकाश में !
दीपों के धुंधले प्रकाश में !

प्रतिबिम्बित करता सुरत्व को
मानव की आंखों का पानी !
किन्नरियों के अधरों पर थी
नर की गीतों-भरी कहानी !
धरती पर खिलता नन्दन-वन,
दिव्य ज्योति के स्रोत फूटते !
मर्यादा की मंज़ुलता का,
कण्ठहार थी मस्त जवानी !
किन्तु बंधी है आज सभ्यता,
वर्बरता के लोह-पाश में !
दीपों के धुंधले प्रकाश में !

जाने कब तक छला करेंगी
नर को मायावी छलनायें !
जाने कब तक तपा करेंगी
जड़तानल में अभिलाषायें !
अपनेपन के भाव न जाने
कब तक जूझेंगे अभाव से !
इस पूजा के पुण्य पर्व में
कब सजीव होंगी प्रतिमायें !
यही सोचता कोई घर से
निकल पड़ा मानो तलाश में !
दीपों के धुंधले प्रकाश में !

—श्री शम्भुनाथजी 'शेष'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंडली द्वारा व्यापार में

विशेष लाभ देखने के प्रकार

[ले०—श्री पं० रामचन्द्र मुखराम जी ज्योतिषी]

जिस प्रकार चन्द्र का प्रभाव समुद्र के ज्वार-भाटे पर नित्य बराबर होता है और उसे संसार के प्राणि-मात्र को प्रत्यक्ष अनुभव में आने से मानना ही पड़ता है, तथा जिस प्रकार स्वाति बूंद से ही सीप द्वारा मोती का होना प्रत्यक्ष है और चन्द्रमा जैसे २ शुक्ल पक्ष में बढ़ता है वैसे २ ही वनस्पतियों के पत्तों में गुण-वृद्धि होती है, ठीक उसी प्रकार ग्रहों का प्रभाव व्यापार की हर एक वस्तु और उसके भाव पर भी बराबर होता है। व्यापार पर ग्रहों का प्रभाव पूर्ण समझ कर प्राचीन काल से ही संसार के गुरु (महर्षियों) विद्वानों ने चार वर्णों के लिये वर्ष में चार त्यौहार निश्चित किये थे जो परंपरा से यथाविधि चले आरहे हैं। वैश्य वर्ण का कर्तव्य (व्यापार) की सफलता के लिये दीपावली त्यौहार निश्चित है। यह त्यौहार तुला राशि पर सूर्य और चन्द्र की युति (कार्तिक कृष्णा ३०) के दिन गोरज समय का शास्त्र में बताया गया है।

शास्त्र में तुला राशि व्यापार की मुख्य राशि है। वास्तव में तराजू से या अनुमान से तोलकर ही भाव की स्थिति निश्चित होती है। खगोल की सीमा १२ राशियों से सम्बद्ध है। प्रारंभ राशि मेष से सप्तम राशि तुला है और यही वाणिज्य स्थान है। जब तुला राशि पर सूर्य (आत्मा) और चन्द्र (मन) हों, तब ही लक्ष्मी पूजन करके वर्ष की जो नूतन वस्तु उत्पन्न हुई हो या होने वाली हो उसका व्यापार आरंभ करने से व्यापार में उत्तम सफलता होती है। इसी कारण दीपावली व्यापारियों का मुख्य त्यौहार माना जाता है और आज तक प्रत्येक भारतीय व्यापारी मानता आरहा है।

द्वितीय धन-स्थान से धन-सुख देखा जाता है। आरम्भ राशि मेष से धन-स्थान में वृषभ राशि होती है; जिसका स्वामी शुक्र ही सभी ग्रहों में धन देनेवाला है। इसमें सहायक स्थान शुक्र की दूसरी राशि तुला है यही व्यापार की राशि है। इसलिये कहा जाता है कि द्यूत, दलाली, आढ़त, वाणिज्य सट्टा; व्याज कमीशन आदि व्यापार के प्रतीक सप्तम स्थान से ही लक्ष्मी का विशेष सम्बन्ध होता है।

व्यापार सम्बन्धी दूसरा स्थान दशम है। कच्ची वस्तु से पक्का सामान बनवा कर विदेश से लाभ लेने तथा कारखानों द्वारा या राज्य से सम्बद्ध कार्य का विचार दशम स्थान से ही किया जाता है। स्वयं के उद्योग का स्थान भी यही है।

सप्तम स्थान से बिना श्रम के सट्टा, जुआ, सुसराल, दलाली, आढ़त, व्याज कमीशन आदि व्यापार से, पर-पौरुष से संचित धन द्वारा वैभव सुख का योग देखना युक्ति युक्त है, क्योंकि सप्तम स्थान स्त्री स्थान है और स्त्री सदा दूसरे के पौरुष पर आश्रित रहती है। अतः पर-पौरुष से संचित द्रव्य का प्रतीक सप्तम स्थान को ही मानना चाहिये। सप्तम से धन-स्थान अर्थात् अष्टम स्थान से भी गुप्त द्रव्य, अचानक लाभ, अकल्पित लाभ, मोटा लाभ, स्वसुराल से लाभ, गुप्त दान, जमीन में गड़े हुए धन का लाभ और सट्टे में लाभ आदि का देखना युक्ति-संगत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार सप्तम स्थान का लाभ-स्थान (मूल का पंचम स्थान) भी दूसरे के श्रम के धंदे में लाभ देखने के लिये तथा बुद्धि का स्थान होने से बुद्धि द्वारा, देव-कृपा द्वारा, केवल मौखिक व्यापार (सट्टा शर्यत और रेस) द्वारा लाभ देखने में सहायक होता है।

सारांश यह कि व्यापार के मुख्य दो स्थान हैं- कर्म-स्थान जिससे १।२।१०।११ स्थानों का सम्बन्ध रहता है और सप्तम स्थान जिससे १।२।५। ७।८।११ स्थानों का सम्बन्ध है। इनमें भी मुख्य ५।७।८।११ हैं। वायदे के सौदे में तो ५।८ स्थान ही धन देनेवाले समझे जासकते हैं।

व्यापार में सफलता और असफलता का विचार करने के लिये शास्त्रोक्त योगायोग इस प्रकार हैं--

स्वयं उपार्जित व्यापार के लिये १०।११।२।६ स्थान मुख्य हैं और बिना श्रम (सट्टा रेस वायदे) के व्यापार के लिये १।७।८।५।११ मुख्य स्थान हैं। सब योगों को प्रबल बनानेवाला स्थान लग्न है।

१-व्यापार स्थान पर शुभ ग्रह या इनके स्वामी गये हों।
२-या परस्पर स्थानों पर ग्रह अन्योन्य सम्बन्ध रखते हों।
३-योग-कारक ग्रह केन्द्र त्रिकोण के स्वामी बन, बलवान् होकर व्यापार के स्थान (१।२।५।७।८।१०।११) में बैठे हों।
४-उपरोक्त स्थानों के स्वामी शुभ स्थान में गये हों।
५-उपरोक्त स्थानों के स्वामी योग-कारक से सम्बन्ध रखते हों।
६-व्यापार के ग्रह गु. बु. मं. सू. श. अधिकारी होकर बलवान् हों।
७-व्यापार के ग्रह योग-कारक ग्रह से सम्बन्ध रखते हों।
८-लग्नेश का व्यापार के ग्रह या स्वामी से सम्बन्ध
९-व्यापार के ग्रह की राशि पर शुभ ग्रह गये हों।
१०-व्यापार-स्थान के अधिपति से योग-कारक ग्रह का सम्बन्ध हो या व्यापार-स्थान के स्वामी का परस्पर स्थान-सम्बन्ध हो।
११-शुक्र से विशेष धन वैभव, बुध से दलाली द्वारा, गुरु से न्याय पूर्वक संतोष से, मङ्गल से अकस्मात्, शनि से भृत्य द्वारा, सूर्य से हिम्मत व देव-कृपा द्वारा चन्द्रसे मन द्वारा लाभ देखना चाहिए।
१२-लग्न तथा लग्नेश से मस्तिष्क शक्ति द्वारा धन-लाभ का विचार होता है।
१३-धनेश से पूर्वार्जित सम्पत्ति व व्यवसाय से लाभ का विचार होता है।
१४-पञ्चम स्थान से बुद्धि द्वारा या केवल शर्यत करने से हिम्मत रोब वायदे के मौखिक व्यापार द्वारा, तथा रेस लाटरी आदि द्वारा मोटी तादाद के लाभ का विचार करना चाहिये।
१५-सप्तम स्थान से कमीशन दलाली।
१६-अष्टम स्थान द्वारा कल्पना से अधिक गुप्त लाभ, सट्टा जुवा अनिश्चित रूप से स्वसुराल द्वारा और मृत्यु-पत्र आदि द्वारा लाभ का विचार होता है।
१७-राज्य स्थान से परिश्रम के धंदे से लाभ का विचार होता है।
१८-लाभ-स्थान से किसी भी व्यापार में अकल्पित तथा धारणा से अधिक लाभ का विचार होता है।
१९-त्रिकोण स्थान लक्ष्मी का है, अतः इसी से ही विशेष धनवान् होने का योग देखना चाहिये।
२०-किसी भी धन देनेवाले स्थान से लग्नेश का सम्बन्ध हो तो विशेष महत्व का योग होता है। बिना सम्बन्ध के धन-योग का महत्व न्यून रहता है।
२१-ग्रह-योग, धन-योग, व्यापार-योग जितने अधिक होंगे और बलवान् होंगे उतना ही धन-योग में महत्व मानना चाहिये।

जिनके ये योग बने हों उन्हें विंशोत्तरी दशा में जब योगकारक ग्रह की दशा अन्तर दशा आवे और जब गोचर ग्रह सुधरे तब लाभ अवश्य होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलित पर विचार

[ले० — श्री पं० रघुवीरशरण जी शर्मा वैद्य]

जन्मपत्र में १२ घर होते हैं, इन्हीं को भाव भी कहते हैं। इन्हीं भावों से जातक का शुभाशुभ फल कहा जाता है। इनके देखने की विधि यह है:—

प्रथम भाव अर्थात् लग्न से शरीर का वर्ण, तिल, मस्से, लहसन, चेचक आदि के चिह्न; सुख, दुख, शारीरिक बल तथा निर्बलता, स्थूल-कृश-ज्ञान-प्रतिष्ठा, कीर्ति, स्वभाव, शरीर-प्रमाण पुत्रादिक बन्धन, राजकीय पद तथा आयु का विचार करें।

द्वितीय भाव से--पैतृक सम्पत्ति तथा स्वोपार्जित सम्पत्ति, कुटुम्ब, धन की स्थिति; स्वर्ण चांदी रत्न आदि का क्रय-विक्रय, वाणी हकलाना आदि तथा कटुभाषी या मृदुभाषी शीघ्रवक्ता अथवा मन्द वक्ता, दक्षिण नेत्र, नौकर-चाकर और मृत्यु आदि का विचार करें।

तृतीय भाव से--सहोदर भाई, साहस, पराक्रम, पिता का मरण, चाचा और मामा आदि का विचार करें।

चतुर्थ भाव से--मित्र, घर, ग्राम, पशु, सुख कृषि, बाग बगीचा, सवारी का सुख और पिता के सुख आदि का विचार करें।

पञ्चम भाव से--बुद्धि, विद्या, यंत्र (मशीन सम्बन्धी ज्ञान) विजय, नीतिशास्त्र का ज्ञान, व्यवस्था (प्रबन्ध की योग्यता) पुत्र-सुख और राज्य के लाभा-लाभ आदि का विचार करें।

छठे भाव से--शत्रु सम्बन्धी बातें, दुष्कर्म-प्रवृत्ति, रोग, पशु सम्बन्धी हानि-लाभ, चिन्ता, मामा सम्बन्धी बात, बन्धन (कारागार) या पराधीनता, सपत्नी (सौत) भूस्वामी (जमीदारी) रक्तविकार और फोड़ा फुन्सी आदि का विचार करें।

सप्तम भाव से--स्त्री-सुख, स्त्री की सुन्दरता, स्त्री का स्वभाव, मैथुन-व्यापार, नष्ट वस्तु (खोई हुई वस्तु) स्मरण-शक्ति, परदेश-यात्रा, या प्रवास (परदेश निवास) विवाह, मुकदमेबाजी और मार-केश आदि का विचार करें।

अष्टम भाव से-पुराना धन, गढ़ा धन, मृत-धन, कर्ज का लेना-देना, नष्ट वस्तु, शत्रु, पारिवारिक चिंता अर्श (बवासीर) रोग, साधारण रोग, मृत्यु, पराजय, आयु तथा स्त्री की मृत्यु आदि बातें देखनी चाहियें।

नवम भाव से-मन (दूषित या शुद्ध चञ्चल या स्थिर) प्रवृत्ति (सुझाव) स्वभाव (मृदु या कठोर) बल, वीर्य पराक्रम, मकान, भाग्योदय का समय, यश, साला, भाई की स्त्री का विचार और धार्मिक या पापी आदि का विचार करें।

दशमभाव से-राज्य से आय अथवा राज्याधिकारी अथवा राजा से राज्याधिकारियों में प्रतिष्ठा, आकाश-वृत्ति (स्वतन्त्र व्यवसाय) कूप आदि का निर्माण, दक्षिण देश की यात्रा, पितृ-सुख आदि देखना चाहिये।

ग्यारहवें भाव से-सब प्रकार के लाभ अथवा आयु धनोपार्जन के उपाय, राज्य से अथवा राज्याधिकारियों से धन प्राप्ति, हाथी, रथ, मोटर आदि की सवारी, ज्येष्ठ भ्राता, कन्या, पशुसुख, तथा पशु व्यापार से हानि-लाभ, मित्र कुटुम्ब सम्बन्धी बातें, तेजी-मंदी और पुत्र-वधू सम्बन्धी बातों पर विचार करें।

बारहवें भाव से-हानि, व्यय, शुभ या अशुभ [illegible] शक्ति, शत्रु से झगड़ा ([illegible]) [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कार्यों की प्रतिरोध शक्ति, बन्दी जीवन से मुक्ति, तथा मृत्यु आदि का विचार करना चाहिये।

ग्रह--वशात् भाव--फल

यह तो हुआ भावों द्वारा फल का वर्णन। इसी प्रकार ग्रहों से भी फल कहना चाहिये, जैसे-सूर्य से पिता का, चन्द्रमा से माता का, मंगल से भाई का, बुध से मातुल वंश का, गुरु से पुत्र का, शुक्र से स्त्री का, शनि तथा राहु से शत्रु सम्बन्धी विचार करें। इसी प्रकार के ग्रहों को शास्त्रकारों ने कारक नाम दिया है।

दूसरा प्रकार—

कारकग्रहों का दूसरा प्रकार बृहत् पाराशरी के अनुसार यह है कि-सूर्य लग्न का, गुरु धन का, भौम तीसरे का, चन्द्रमा चौथे का, गुरु पंचम का, भौम छटे का, शुक्र सप्तम का, शनि अष्टम का, गुरु नवम का, बुध दशम का, गुरु एकादश का और शनि द्वादश भाव का कारक है। अर्थात् उक्तग्रहों से उक्त-भावों का विशेषतः विचार होता है।

(१) सूर्यो गुरुः कुजः सोमो गुरुर्भौमः सितःशनिः।
गुरुश्चन्द्रसुतो जीवो मन्दश्च भावकारकाः।

तीसरा प्रकार—

लग्न (२) आत्म-कारक धन होता है, धन भाव स्त्री कारक, एकादश भाव ज्येष्ठ भ्राता कारक, तृतीयभावं कनिष्ठभ्राता कारक, पञ्चम और सप्तम भाव पुत्र कारक होता है। इसी पाराशरी होरा पूर्व खण्ड अ० ८ में यह भी लिखा है कि-सूर्य की स्थिति से (सूर्य जिस भाव में बैठा हो उस से) नवें भाव में पिता का, चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में माता का, मंगल से तीसरे में भाई का, बुध से पञ्चम भाव में माता मौसी का, गुरु से पञ्चम भाव में पुत्र का, शुक्र से सप्तम भाव में स्त्री का और शनि से अष्टम भाव में मृत्यु का विचार करना चाहिये।

(२) जनुलग्नं च विद्याद्वै आत्माकारकमेवच।
धनभावं विजानीय दारकारकमेव च।
सुते सुतं विजानीयात् तथा सप्तमभावतः।
एकादशे ज्येष्ठ भ्राता तृतीयेतु कनिष्ठकः।
वृ० पा० हो पू० ख ८

उदाहरण—

लग्न से सप्तमभाव में शुक्रग्रह से विचार होता है। इस कथन के अनुसार शुक्र की स्थिति से सप्तम स्थान में विचार करना चाहिये। ऐसे ही लग्न से पंचम भाव में पुत्र का विचार होता है, किन्तु गुरुकी स्थिति से पञ्चम में भी विचार करें। बृहत् पाराशरी होरामें (३) यह भी लिखा है कि पिता सम्बन्धी विचार दशम भाव से तो किया ही जाता है नवम भाव से भी करना चाहिये और सूर्य की स्थिति से जो नवम स्थान तथा दशम स्थान हो उनसे भी देखना चाहिये।

(३) नवमेपि पितुर्ज्ञानं सूर्याच्च नवमे तथा।
यत् किंचिद्दशमे लाभे तत् सूर्याद्दशमे शिवे।

जैमिनीय मत—

ऋषि जैमिनीय का मत है कि मंगल से बहिन छोटे भाई साले और माता का विचार करें, बुध से मामा माता की बहिन (मौसी) आदि का विचार करें। गुरु से पितामह का, शुक्र से पति का और स्त्री का और शनि से पुत्र का विचार करें। इसके अतिरिक्त शुक्र से स्त्री का सास-ससुर का और माता पिता का भी विचार करना चाहिये। ऋषि जैमिनी ने एक प्रकार के कारकों का उल्लेख और भी किया है अर्थात् कोई भी ग्रह किसी भी राशि पर किन्तु अंशकला और विकलाओं में सब ग्रहों से अधिक हो वह ग्रह आत्मकारक होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यदि आत्म-कारक ग्रह का सम्बन्ध शुभ ग्रहों से हो तो अपनी दशा-अन्तर्दशा में शुभ फलदाता या सुखकारी होता है। यदि अशुभ ग्रह से सम्बन्ध हो तो अशुभ फल-दुखकारी होता है। आत्मकारक ग्रह से कम अंश-कला-वाला अमात्य-कारक, अमात्य कारक से न्यून अँशादिवाला भ्रातृकारक, भ्रातृकारक से न्यून अँशादिवाला पुत्रकारक, पुत्रकारक से न्यून अँशादिवाला ज्ञाति-कारक और ज्ञाति-कारक से न्यून अँश-कला विकला वाला ग्रह दार (स्त्री) कारक होता है। प्रसङ्ग-वश जैमिनीय ने अन्य एक आचार्य का मत इस प्रकार दिया है, (१)कोई कोई आचार्य माता-कारक ग्रह से ही पुत्र का विचार करते हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार के कारक हैं। लेख विस्तार-भय-वश नहीं लिखा जा रहा है। इन सब के अतिरिक्त फलित में निम्नलिखित बातों पर भी दृष्टि डालनी आवश्यक है। (१) तीसरे छटे और बारहवें भाव का या इन के स्वामियों का जिस भाव से सम्बन्ध हो जायगा, बस उस भाव का नाश ही समझो। और यदि केन्द्र, त्रिकोण (१-४-७-१० । ५-६) का जिस भाव से सम्बन्ध हो जायगा वह अशुभ भी शुभ बन जायगा। यदि बलवान् ग्रह का बलवान् राशि-युक्त तथा दोष-रहित केन्द्र त्रिकोण से सम्बन्ध हो तो वह राजा बनाता है। (राजा का अर्थ राज्याधिकारी, सेनापति शासक नेता आदि समझना चाहिये) (२) भाग्येश सदा सौम्यग्रह ही शुभ फल देता है क्रूर नहीं *। (३) गुरु पञ्चम घर में शुभ होता है। भौम तीसरे और शनि छटे घर में शुभ होता है। (४) शनि अष्टम घर में दीर्घायु देता है। (५) प्रत्येक ग्रह जिस राशि से आया है जहां बैठा है, और जहां जानेवाला है, इस तरह तीनों ही स्थानों का फल करता है, किन्तु अधिक फल अपने स्थान का ही देता है। (६) अष्टमेश जिस स्थान पर पहुंच जायगा उसी को क्षति पहुँचा देता है। (७) गुरु चन्द्र का योग 'गुरु-चान्द्री-योग' नाम से प्रसिद्ध है, यह शुभ होते हुए भी मनुष्य को चिन्तित रखता है। उक्त सप्त सूत्रों पर प्रत्येक फलवक्ता को दृष्टि डालनी चाहिये।

लग्न—जन्म पत्र में सबसे महत्वपूर्ण स्थान लग्न का है। यदि लग्नेश बलवान् है तो अन्य अशुभ योग कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इसके अतिरिक्त फल कहने के समय भाग्य भाग्येश, सुख सुखेश, दशम दशमेश आदि पर भी दृष्टि डाललें। इनमें से किसी भी भाव के बिगड़ने पर सुख में कमी आ जाती है।

इनके अतिरिक्त गुरु शुक्र मंगल चन्द्रमा बुध की स्थिति, उक्त ग्रहों का मार्गी वक्री, उदय-अस्त, भावोद्धार, चलित चक्र और ग्रह-स्पष्ट में ग्रहों के अँश † द्रेष्काण, नवांश, कुण्डली, होरा आदि तथा विंशोत्तरी दशा अन्तर्दशा (जिससे फल के समय का ज्ञान होता है) भी अवश्य देखें। जिसमें शुभ फल के लिये लग्न बर्गोत्तम नवांश हो, षड्वर्ग में शुभग्रहों का प्राधान्य हो, लग्न लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, लग्न स्पष्ट में आदि अन्त की सन्धि न हो (आदि में ३ अँश से कम, अन्त में २७ अँश से अधिक न हो) लग्न में (तनुभाव में) मेष वृष मिथुन कर्क आदि राशि हो, धनु, मकर कुम्भ राशि न हों। लग्न पाप राशि या पापग्रह के बीच में न हो ये सब बलवान् लग्न के चिन्ह हैं। इन में

(१) मात्रा सह पुत्रमेके समामनन्ति। जै०सू०१।१।१८ *भाग्येशः सर्वदा सौम्यो न क्रूरो फलदायकः। † द्रेष्काण होरा आदि अनेक प्रकार के हैं जिनमें आधुनिक ढंग के वर्त जाते हैं, इन पर प्रत्येक ज्योतिषी को विचार करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभाधिक्य, अशुभाधिक्य और निर्बल तथा बली को भी देख लेना चाहिये।

बलवान् लग्नेश के चिन्ह—

लग्न के अनन्तर लग्नेश के बल पर भी विचार करें, जिसके लक्षण ये हैं-* लग्नेश अपनी राशि का हो, या उच्च राशि का हो। मित्र षड्वर्ग का हो, शुभ दृष्ट या युत हो, दीप्त स्वस्थ और मुदित आदि हो, बाल युवा आदि अवस्थाओं में युवा हो, ६-८-१२ भावों में न बैठा हो और इन भावों के स्वामियों से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखता हो, लग्नेश पर पापग्रहों की दृष्टि न हो, पाप ग्रहों के बीच में भी न बैठा हो, उदय और मार्गी हो, शुभ ग्रह की राशि में हो, लग्नेश मूल त्रिकोण का हो, केन्द्र और त्रिकोण के स्वामियों से सम्बन्ध रखता हो, इत्यादि लक्षण बलवान् लग्नेश के हैं। इसी प्रकार सुख सुखेश, पंचम पंचमेश, सप्तम सप्तमेश आदि जिस भाव का फल कहना हो उस पर विचार करें। ऐसा करने से अवश्य सफलता मिलती है। इतने पर भी यह बात सदैव स्मरणीय है कि यदि लग्न और लग्नेश बलवान हैं तो अन्य भाग्य, दशम, सप्तम आदि भावों का फल यदि योग अच्छे हों तो अच्छा घटित होता है, अन्यथा अन्य भावों का फल भी सारहीन या अत्यल्प ही रहता है।

लग्नेश की स्थिति का फल—

लग्नेश की स्थिति से बारहों भावों का साधारण फल इस प्रकार है—लग्नेश लग्न में हो तो पूर्ण सुखी, द्वितीय भाव में साधारण धनी; तृतीय भाव में भाइयों से सुख, किन्तु उनकी आधीनता में, चतुर्थ भाव में माता तथा गृह आदि का साधारण सुख, पंचम भाव में पुत्र सुख, छठे भाव में दरिद्री तथा दीर्घ रोगी और शत्रुओं की वृद्धि, सप्तम में स्त्री से सुखी किन्तु स्त्री का आज्ञाकारी, अष्टम में दरिद्र तथा रोगी, नवम भाव में धर्म-भीरु, दशम भाव में राज-सन्मान (राज्याधिकारियों से सम्मान-प्राप्ति) और पितृ-सुख, एकादश भाव में साधारण आयवाला और व्यय भाव में रहने से दरिद्र तथा कर्जदार भी रहता है। यह साधारण फल है। शेष अन्य ग्रहों के सम्बन्ध दृष्टि आदि और अन्य ग्रहों की स्थितिवश जो योग बनते हैं उनके आधार पर ही फल ठीक होता है। हमने ऊपर प्रसंगवश ग्रहों का दीप्त और बाल युवा आदि अवस्थाओं का भी वर्णन किया है और उनका ज्ञान आवश्यक भी है, अतः उनका लिखना भी आवश्यक है। वे इस प्रकार हैं—

दीप्तादि अवस्था—

(१०) दीप्त, स्वस्थ, प्रमुदित, शान्त, दीन, दुखी, विकल, खल, और कोपी ये ६ प्रकार की स्थितिवश ग्रहों की अवस्था होती हैं। इनके लक्षण ये हैं—यदि ग्रह उच्च राशि का हो तो दीप्त, स्वगृही (अपनी राशि पर हो) तो स्वस्थ, अधिमित्र का राशि में मुदित, मित्र राशि में शान्त, सम ग्रह को राशि में दीन, शत्रु राशि में दुखी, पाप ग्रह के साथ

* ग्रह अपनी राशि का सबसे बलवान् होता है और उससे कम उच्च राशि का बलवान् होता है।

(१०) दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽति दुःखितः। विकलश्च खलः कोपी नवधा खेचरो भवेत् ॥ उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वर्क्षेऽधिमित्रभे। मुदितो मित्रभे शान्तः समभे दीन उच्यते। शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः। बालो रसांशरसमे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाथ वृद्धः। मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्था कथिता ग्रहाणाम्। फलं तु किंचिद्वितनोति बालश्चार्धं कुमारो यतते तु पुंसाम्। युवा समग्रां खेचरोऽथवृद्धः फलं च दुष्टं मरणं मृताख्यम्। वृ० पा० स० ३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकल (बेचैन) (एक आचार्य का मत है कि अधिशत्रु ग्रह की राशि में विकल होता है) पाप ग्रह की राशि में खल और सूर्य के साथ रहने से कोपी होता है।

बालादि अवस्थायें—

इससे भिन्न ग्रहों की एक अवस्था राशि के अंशों से भी होती है। वह बाल कुमार युवा वृद्ध और मृत नाम से ५ प्रकार की है। यदि ग्रह विषम राशि (मेष सिंह आदि) में हो तो ६ अंश तक उस ग्रह की बाल अवस्था होती है और ६ के बाद १२ अंश तक कुमार १८ अंश तक युवा, २४ अंश तक वृद्ध और इसके बाद ३० अंश तक मृत नाम की अवस्था होती है। इसके विपरीत यदि ग्रह सम राशि (वृष कर्क) आदि पर होता है तो प्रारम्भ के ६ अंश तक मृत, १२ अंश तक वृद्ध १८ अंश तक युवा २४ अंश तक कुमार और ३० अंश तक बाल अवस्था होती है। किसी आचार्य का यह भी कथन है कि बाल युवा और वृद्ध-भेद से अवस्था केवल तीन ही होती हैं तथा वहां समराशि और विषम राशि का भी कोई प्रश्न नहीं है। प्रारम्भ के १० अंश तक बाल इसके बाद २० अंश तक युवा और इसके बाद ३० अंश तक वृध्द अवस्था होती है।

अवस्था का फल

बाल अवस्था थोड़ा फल देती है. आधा फल कुमार अवस्था देती है और समग्र या पूरा फल युवा अवस्था देती है, वृद्ध अवस्था दुष्ट फल (बुरा फल) देती है और मृत अवस्था मरण या तत्सम कष्ट देती है।

—*—

सत्य की आवाज़

१. जिस प्रकार बिना नींव के मकान नहीं बन सकता उस प्रकार बिना सत्य के अनुभव के कोई सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि सेवा वही कर सकता है कि जिसको अपने लिये कुछ न करना हो।

२. यदि स्थायी प्रसन्नता चाहते हो तो सत्य का अनुभव करो।

३. यदि सत्य का अनुभव करना चाहते हो तो असत्य का त्याग करो।

४. त्याग करने योग्य वही वस्तुयें हैं कि जो त्याग करनेवाले का हर समय त्याग कर रही हैं, यदि उनका त्याग अपनी ओर से कर दिया जाय तो फिर उनकी याद नहीं आयेगी। यदि उन्होंने अपनी ओर से त्याग कर दिया तो उनकी याद आयेगी जो फिर सत्य की याद नहीं करने देगी। इस लिये त्याग कर देनेवाली वस्तुओं का त्याग कर देना ही परमावश्यक है। शरीरादि प्रत्येक वस्तुयें जलप्रवाह के समान लगातार अलग हो रही हैं इसलिये उन सब से अपने को ऊपर उठा लेना ही वास्तव में असत्य का त्याग है।

—एक सन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादश राशियों की परिधि में वस्तुओं का समावेश—

व्यापारी को भी इस विषय का अनुभव आवश्यक होता है।

व्यापार में द्वादश राशि का आधिपत्य

[ले० राजवैद्य अमरदत्त मिश्र, एल० एम० ए०, कोमरशीयल एस्ट्रोलोजर]

जिस प्रकार सम्पूर्ण भ-चक्र ((Eclips) द्वादश राशियों से सुसज्जित है उसी प्रकार यह हमारा भू-जगत भी द्वादश राशियों की परिधि में समाविष्ट है। राशियों पर आये हुए ग्रहों के शुभाशुभ फल द्वारा उत्पन्न भूत, भविष्य और वर्तमान को जाननेवाले दैवज्ञ से संसार का कोई भी रहस्य छिपा नहीं रह जाता, क्योंकि वह जानता है कि संसार का अमुक पदार्थ अमुक राशि की परिधि में है और उस पर आज कल इस प्रकार का ग्रह-प्रभाव पड़ रहा है।

व्यापार वस्तु-विनिमय पर निर्भर होता है और प्रत्येक वस्तु राशि और राशिस्थ ग्रह से प्रभावित होती है। जब किसी राशि पर शुभ और बलवान् ग्रह आ जाते हैं तब उस राशि की परिधि में आनेवाली वस्तु अधिक होती है, उसका आयात सुखपूर्वक होता है और स्वभावतः वह सस्ती हो जाती है। इसी प्रकार जब किसी राशि पर अनिष्टकारक क्रूर ग्रह आजाते हैं तब उस राशि की परिधि में आनेवाली वस्तु वर्षाधिक्य अनावृष्टि तथा आयात के अभाव आदि से कम हो जाती है और स्वभावतः मंहगी हो जाती है। इसलिये व्यापारी को भी इस विषय का अनुभव आवश्यक होता है।

पौर्वात्य और पाश्चात्य दोनों ही मतों द्वारा हम नीचे कौन वस्तु किस राशि की परिधि में है, इसका सांकेतिक निर्देश करते हैं। आशा है पाठक इससे अवश्य लाभ उठायेंगे।

मेषाधिकार

अज—अजा, पशु, ऊन वस्त्र, कम्बल, शाल, गलीचा, गेहूँ, मसूर औषधियां सब प्रकार के गोंद, रक्तचन्दन, स्वर्ण इत्यादि मेष राशि के अधिकार में हैं। अर्वाचीन मत से लोहा और मशीनरी को भी मेष राशि के अधिकार में ही माना जाता है।

वृषाधिकार

श्वेत वस्त्र, शालिधान्य, यव, वृषभ, महिष, गो, दुग्ध-घृत, इत्यादि। अर्वाचीन मत से वृष के अधिकार में रुई भी मानी जाती है।

मिथुनाधिकार

सब प्रकार के धान्य, शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाले सब प्रकार के पदार्थ, लता, कमल, कुंकुम, जड़ मूल, रुई, कपास, केसर, कस्तूरी, हल्दी इत्यादि। अर्वाचीन मत से रेल्वे, पुस्तकप्रकाशन, पत्र आदि।

कर्क-अधिकार

कोदों, केला, दूब, फल, पत्र, सब प्रकार की त्वक और चांदी आदि।

सिंह-अधिकार

सिंह, बाघम्बर, मृग, मृग-चर्म, गुड़, रक्त, खाण्ड भूसा, भूसी, तुष, धान्य और रक्त पदार्थ आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्वाचीन मत से सुवर्ण को भी सिंहाधिकार में माना गया है।

कन्या-अधिकार

अलसी, मटर, कुलथ, गेहूँ, मूंग और मोठ इत्यादि। अर्वाचीन मत से कपास की कृषि मजदूरी आदि व्यवसाय करनेवाले।

तुला-अधिकार

उड़द, चना। पाश्चात्य मत से गेहूँ चना चावल और सब खाद्य पदार्थ।

वृश्चिक-अधिकार

ईखादि रसीले पदार्थ गुड़, शक्कर सब प्रकार के मिष्ठान्न, बकरा, बकरी, भेड़, ताम्बा, लोहा, सुगंधित द्रव्य, इत्र, तिल, सुपारी, अलसी आदि। अर्वाचीन मत से काकड़ा हल्दी।

धनु-अधिकार

अश्व, लवण, सब क्षार, रस के पदार्थ, सब प्रकार के शस्त्र, पट-पाट, तिल, तैल, मूल, श्वेत अन्न, जवार रुई कपास सूत वस्त्र इत्यादि। अर्वाचीन मत से समुद्र में होनेवाले पदार्थ।

मकर-अधिकार

गुल्म लता और इनके फल, ईख, लो और काले रंग की धातुयें। अर्वाचीन मत से कोयला तांबा शीशा आदि।

कुम्भ-अधिकार

जल में उत्पन्न होनेवाले सब पदार्थ, लाल पदार्थ, फूल फल, चित्र विचित्र रंग, और जल से बने हुए पदार्थों का कुम्भ अधिकारी है। अर्वाचीन मत से विद्युत सम्बन्धी सब सामान।

मीन-अधिकार

मणि, मुक्ता, रत्न, गज, सर्प, मणि, मत्स्य। अर्वाचीन मत से मछली और लड़ाई का सामान।

संसार में असंख्य पदार्थ हैं, इस राश्यधिकार से भिन्न जो पदार्थ होवें उनका आदि अक्षर जिस राशि के अधिकार में होवे उसकी वही राशि मानें।

राशिस्थ ग्रहों का व्यापार पर प्रभाव

लग्न से उपचय स्थानों (३।६।१०।११) में पड़े हुए क्रूर ग्रह वस्तु का ताल बढ़ाते हैं और सौम्य ग्रह वस्तु का मूल्य बढ़ाते हैं। इसका ग्रह गति राश्यानुसार बुद्धि बल से विचार कर व्यापार करना चाहिये।

गहराई से देखो!

गहराई से देखो, सब से बड़ा दुख कब होता है? जब व्यक्ति अपनी दृष्टि से अपने में कमी का अनुभव करता है तब सब से बड़ा दुख होता है। वह नियम है कि अत्यन्त दुःख होने पर दुःखी अपनी वर्तमान परिस्थिति से ऊपर उठ जाता है, अर्थात् उसे बदल देता है और फिर उस कमी के मिटाने के लिये समर्थ होता है। अतः उन्नतिशील मानव को प्रथम कमी का अनुभव करना आवश्यक है। यदि कमी अनुभव कर मिटाने का प्रयत्न न किया तब भी मानवता नहीं कही जा सकती, क्योंकि मानवता व्यक्ति नहीं है, बल्कि जीवन की एक अवस्था है, जो उन्नति के लिये एक मात्र सर्वोत्तम अवस्था है।

—एक सन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदी सोना रुई आदि के अनुभूत चांस और दैनिक रुख

[लेखक—ज्योतिषाचार्य श्री पं० गणेशनारायण जी शर्मा दैवज्ञ विद्यासागर]

कार्तिक शुक्ल (सुदी) के दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१	गु०	मंदी खेलो	मंदा चले ।।।) १	अच्छी मंदी है
२	शु०	मंदा १।।) होगा	३ बजे पोते करो	मंदी ३) ३।।) तेजी होना चाहती है
३	श०	तेज १) मंदा ।।।)	नजराने हजम	फोन तार देख कर खेलो
४	चं०	उच्छाले में बेचो	तेजी । ।।–) फिर मंदा १)	मंदा ५) ६) हो सकता है
५	मं०	बेचो ।।।) खरीदो	नजराने लगा दो	हिसाब से मन्दा चलेगा
६	बु०	तेजा मे मन्दा	तेज ।।। मन्दा १)	तेजी में बेचो
७	गु०	मन्दी २) २।।)	मन्दो खेलो	मन्दा ४) ४।।) होगी
८	शु०	उच्छाले में बेचो	भाव गिरेंगे	रुख तेजी से मन्दा
९	श०	पहले तेज फिर मन्दा	तेज ।।) बेचो	तेजी २)) मन्दा ४) ५)
११	चं०	तेजी (।। मन्दा २) २।।)	तेजी से मन्दी है	बेचो २ बजे से नफा लो
१२	मं०	खुले पोते करो ।।)	तेजी चलेगी ।।)	खरीदो तेज) ४)
१३	बु०	३ बजे से मन्दा	तेजो ।।) मन्दा ।।।) १)	उछाले में बेचो
१४	गु०	तेजी २ २।)	तेजी ।।।) १)	तेजी चले तो) ५) होगी
१५	शु०	नजराने लगा दो	तेजी ।।) मन्दा रहेगा	२ बजे तक तेजा ३) ३।।)

कार्तिक मास में चांदी सोना और रुई की स्थिति (पोजीशन)

बदी १ को खरीद करलो, दोयज को खुले बाजार बेचो। बदी १० तक उछाले खाकर बाजार में चांदी ५) ६), सोना २) ३), रुई १०) १५) गिरेगी। बदी १२ को पोते करो, बदी १४ को डबल बेचो तेजी चांदी २) २।।), सोना १।।) १।), रुई ४) ५)। बदी ३० को बेचो सुदी ११ तक बाजार गिर जायगा। चांदी ४) ५), सोना २।।) ३), रुई १०) १२) मन्दे रहेंगे। सुदी १२ को पोते करो, चांदी २।।) ३) सोना २) २।) रुई ६) ७) तेज होगी। गुरुअस्तादि योग अच्छी मन्दी के सूचक हैं, इस मास में ५ गुरु ५ शुक्रवार होने से मन्दी अधिक तेजी न्यून है। इसी आइडिये से व्यापार बढ़ावें।

मार्ग शीर्ष कृष्ण (बदी) के दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१	श०	तेजी १।) १।।) बेचो	पहले तेज फिर मन्दा	मन्दी २। बजे से चालू
३	चं०	मंदी २) २।)	मन्दी में माल लो १) १।)	रुख तेजी का है खरीदो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मं०	बाजार रुख देखो	रुख मंदी में अधिक है ।||)	नफा १ बजे तेजी का लो
बु०	तेजी चलेगी १) १।)	१२ बजे ले लो तेज १)	तेजी ५) ६) अचूक है ।
गु०	घटे तो पोते करो १।।)	मंदा ।।) तेजा १।।)	घटे खरीदो ३) ४) तेज
शु०	बेचो मन्दा २) १।।)	मंदो को गर्मी लगा दो	खुले बाजार बेचो
श०	दुतर्फा योग	नजराने लगा दो	तार से व्यापार करो
चं०	खरीदो २) ३) तेज	तेजो ।।) मंदी १)	तेजी ५) ६) हो सकती है
मं०	उछाला ।।।) बेचो मं०१) १।।)	मन्दी ।।।) १)	मंदी ३) ४)
बु०	मंदी चलेगी बेचो ऊँचे में	मंदी ।।।) तेज ।–)	पहले तेज, २ बजे मन्दा
गु०	घटे खरीदो, ४ बजे बेचो	तेजी का रुख है	प्रातः पोते करो, ३ बजे बेचो
शु०	बेचो मंदा ।।।) १।)	बेचो ।।) ।।)	मन्दी ५) ६) होगी

मार्ग शीर्ष शुक्ला (सुदी) के दैनिक रुख

वार	चांदी	सोना	रुई
श०	पोते करो १२ बजे	पोते में नफा है	तेजी ३) ४) हो सकती है
चं०	तेजी ।।।)मन्दा १) नफा लो	नजराने खाओ	नजराने लगा दो
मं०	खुले बाजार से तेजी २) २।।)	तेजी खेलो ।।।) १)	अचूक ४) ५) तेज होगा
बु०	तेजी १।।) २) ४ बजे तक	तेजी ।।) ।।।)	तेजी का नफा लो ३ बजे
गु०	मन्दी ।।।) १) तेज होगा	गिरेगा ३ बजे लो	बाजार रुख देखो
शु०	मन्दी ३।। बजे तक	मंदी ।।)१)हो, पोते करो	मन्दी में खरीदो
श०	नजराने लगादो	दुतर्फा लाभ लो	तेजी में बेचो २ बजे
चं०	पहले तेज फिर मन्दा	तेजी २ बजे तक	तेजी ३) ४) मन्दी १।।) २)
मं०	तेजी १।।) २)	तेजी ।।।) १)	तेजी २।।) ३।।)
बु०	तेजी ।।।) १)	तेजी ।।) ।।≈)	तेजी ३) ४)
गु०	तेजी १।।) २)	तेजी ।।।) १)	तेजी ५) ६)
शु०	मंदा ।।) तेज १)	नजराने लगा दो	दुतर्फा खा लो
श०	दुतर्फा योग है	तेजी मन्दी के झटके	दुतर्फा लगा दो

मार्गशीर्ष माह में सुवर्ण, चाँदी रुई की जनरल पोजीशन

बदी १ को खरीद कर बदी २ को प्रातः बेचो। बदी ५ तक मन्दी चांदी ३।।) ४), सोना २) २।।), ६) ७) उछाला खाकर गिरेगी। बदी ६ बुधवार को खुले बाजार खरीदो, १२ तक चांदी ६) ७), सोना ३।।) ४), रुई १२) १५) तेज होगी। बदी १२ को २ बजे बेचो। सुदी १ को खुले बाजार डबल पोते करो, मन्दी चांदी ३) ४) सोना २) २।।), रुई १०) १२) होगी। तेजी के माल को ५ तक रख लो, तेजी चांदी २।।) ३) सोना १।।) २) रुई ८) १०), सुदी ५ को ४ बजे बेचो, ६ को बन्द बाजार पोते कर लो। १५ तक चांदी ५) ६) सोना २।।) ३) रुई १८) २०) तेज होगी। इस मास में पांच शनिवार होने से कम तेजी अधिक रहेगी। घटे या गिरे भावों में पोते कर, नफा बढ़ाते रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौष कृष्ण (बदी) के दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
२	चं०	तेजी २) २॥)	तेजी ।॥) १) नफा लो	तेजी ४) ५), बेचो ४ बजे
३	मं०	४ बजे तक मंदा १) १॥)	मंदी ॥) होगी, खरीदो	मंदी का रियेक्शन है
४	बु०	तेजी १॥) मन्दा १।)	नजराने खालो	तेजी खुले बाजार १) २)
५	गु०	उछाल में बेचो	२ बजे से मन्दा	बेचो घट जायगा ३) ४)
६	शु०	नजराने लगा दो	दुतर्फा से लाभ है	मन्दी चल रही है ३॥) ४)
७	श०	तेजी २) २।)	तेजी ।॥) १)	तेजी ४), ५) बेचो ५ बजे
९	चं०	तेजी १) १॥) ३ बजे तक	तेजी ।॥) मंदी ॥)	मंदी की गली लगादो, पोते करो
१०	मं०	तेजी का उछाला मंदा १)	१ बजे गिर जायगा	तेजी ३) ४) होगी
११	बु०	दुतर्फी चलेगा मंदा २।)	बाजार रुख देखो	मोटी तेजी मंदी निकलेगी
१२	गु०	तेजी, घटे लेलो	तेजी ।॥) होगी	मन्दी २) २॥) तेजी ३) ३॥)
१३	शु०	तेजी १॥) ४ बजे तक	दुतर्फा योग है	मन्दी चलेगी ३) ३॥)
१४	श०	तेजी १) १।)	तेजी ॥) ।॥)	तेजी ५) ६)

पौष शुक्ला (सुदी) के दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१	चं०	तेजी १॥) २)	तेज ।॥) १)	मंदी १) १॥) तेजी ५) ५॥)
२	मं०	मन्दा ॥) तेज २) २।)	मंदा ।) तेज ।॥) १।)	तार फोन मिलाओ, रुख तेज
३	बु०	तेजी १॥) मन्दी ॥)	तेजी ।॥) मन्दा ।)	तेजी ३) ३॥) मंदा १)
४	गु०	नजराने लगा दो	दुतर्फा योग है	बाजार रुख से खेलो
५	शु०	मंदी २ बजे तक	मंदी ॥) तेजी ।=)	मंदी २॥) ३) तेज ३ बजे से
६	श०	मंदी १) तेजी २) २॥)	मंदी ।) ।=) तेजी १) १।)	खरीदो १ बजे लाभ होगा
८	चं०	मंदा १) १॥)	मंदी ।=) तेजी ।॥=)	खुले मंदा ५) ६)
९	मं०	तेज ।॥) १।)	तेजी ।॥) १।)	तेजी ३) ३।)
१०	बु०	३ बजे तेजी का नफा है	तेजी का १ बजे तक	मंदी २) २।) तेजी ४) ४॥)

पौष मास में चांदी, सोना, रुई की जनरल पोजीशनः——

पौष बदी २ को बेचो, ६ को खरीदो, चांदी ३) ३॥), सोना १) १।), रुई ४) ५) टूट के गिरेगा। उछाले में बदी ६ को पोते करलो और १० को २ बजे बेचो, चांदी ४) ५), सोना १॥), २), रुई १०) १५) तेज होगी। बदी १० को बेच कर १२ को १ बजे ले लो बदी १२ को खरीद कर पौष सुदी ४ को बेचो चांदी ५) ६), सोना २।) ३) रुई १५) २०) झटके खाकर तेज होगी। पौष सुदी ४ को २ बजे से ९ को खुले बाजार तक चांदी ३) ३॥), सोना १।) १॥) रुई ७) १०) टूट जायगी। पौष सुदी ९ से ११ तक तेज। इस मास में ५ रवि व ५ चन्द्रवार हैं अतः अच्छी तेजी मन्दी चलेगी। मंदी में खरीदो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचूक चांस

ता०	चांदी	सोना	रुई
२४ अक्तूबर तेज	१॥) २)	॥।) १।)	४) ४॥)
२७ अक्तूबर मंदा	१॥) १)	॥) ॥।)	३) ३।)
२६ अक्तूबर मंदा	१) १।)	॥) ॥=)	२) २॥)
३१ अक्तूबर मंदा	२) २।)	॥।) १)	४) ४।)
४ नवम्बर तेज	१) १॥)	१) १।)	२) ३)
६ नवम्बर मंदा	१॥) २)	॥) ॥।)	३) ३॥)
१० नवम्बर मंदा	॥।) १।)	॥।) १)	३॥) ४)
१७ नवम्बर तेज	२) २।)	१) १।)	४) ६)
१६ नवम्बर मँदा	१।) १॥)	॥) ॥।)	२) २॥)
१ दिसम्बर मंदा	॥।) १)	॥।) १)	३) ३॥)
२ दिसम्बर तेज	१।) १॥)	॥) ॥=)	४) ४॥)
१० दिसम्बर मंदा	२) २॥)	१) १।)	४) ४॥)
१२ दिसम्बर मंदा	॥।) १)	।=) ॥)	३) ३॥)
१७ दिसम्बर मंदा	१॥) २)	॥।) १)	३) ४)
१६-२० दिसम्बर तेज	३) ३।)	१) १॥)	५) ६)
२३ दिसम्बर तेज	२) २॥)	१॥) २)	४) ४॥)
२५ दिसम्बर मंदा	१) १॥)	१) १।)	३) ३॥)
५ जनवरी मंदा	२) १॥)	१) ॥।)	३) २॥)
१७ जनवरी तेज	॥।) १)	।=) ॥)	२) २॥)
२१ जनवरी मंदा	१) १॥)	॥) ॥।)	३) ३॥)

अलसी, सरसों, तिल, बिनौला, मूंगफली

आश्विन—सुदी १० से १५ तक ॥) ॥=) मन की तेजी इन वस्तुओं में होगी।

कार्तिक—बदी १ से ८ तक घटा बढ़ी चले तो ॥।) १) की मन पर मंदी आवे। बदी ९ से १२ तक तेज बदी १३ से सुदी ३ तक ॥) ॥=) मंदा, बदी ४ से सुदी ११ तक तेजी १) १।) फिर घट बढ़ी चलेगी।

मार्गशीर्ष—बदी १ से ४ तक ।) ।=) मन मंदा, बदी ५ से ९ तक तेजी ॥) ॥=), बदी ११ से १३ तक मंदा, बदी १४ से सुदी ८ तक तेजी घटकर चढ़ेगा १) १।) मन पर तेजी हो। फिर बाजार स्थिर भी रह सकता है।

पौष—इस मास में हर तेल की वस्तु तेजी पर चलेगी, जिस समय मंदी का धमाका उठे ॥।) १) मन पर घटे पोते करो २) २॥) तेज होने पर बेचते रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारिक तेजी मंदी

चांदी, अलसी, सरसों, गुड़ की दैनिक घटबढ़ और अनुभूत चांस

[लेखक—श्री यादवचन्द्र जी जैन, ज्योतिर्विद्]

कातिक शुक्ल पक्ष

कातिक सुदी १ बृह० ता० १३ नवम्बर-चांदी मंदी, सरसों, गुड़, खांड़ मंदे।

कातिक सुदी २ शु० ता० १४ नवं०-चांदी, अलसी, सरसों मंदी।

कातिक सुदी ३ शनि ता० १५ नव०-चांदी मंदी हो।

कातिक सुदी ४ रवि० ता० १६ नव०—६ बजे रात चांदी, गुड़, खांड़, सरसों तेज।

कातिक सुदी ५ सोम० ता० १७ नवं०-चांदी तेज होकर मंदी हो।

कातिक सुदी ५ मं० ता० १८ नवं-चाँदी ३) ४) तेज, सरसों गुड़ में भी अच्छी तेजी।

कातिक सुदी ६ बुध० ता० १६ नवं०-चांदी तेज। अलसी, गुड़ तेज।

कार्तिक सुदी ७ ता० २० नवम्बर चांदी १) २) मंदी

कार्तिक सुदी ८ शुक्र ता० २१ नवं-चांदी मन्दी।

कार्तिक सुदी ११ सोम ता० २४ नवं० दुतर्फा घटा-बढ़ी चले।

कार्तिक सुदी १२ मँ०ता० २५ नवं०-चांदी २) मँदी

कार्तिक सुदी १३ बुध० ता० २६ नवं०-चांदी तेज, सरसों तेज।

कार्तिक सुदी १५ शुक्र ता० २८ नवं-चांदी तेज। इसी दिन रात को १।।) मंदी का रियेकशन आवे।

नोट तथा सारांश—फिर ता० ११-१२ नवं० को तेजी में चांदी बेचो और उस तेजी में बेचे हुए माल को ता० १६-१७ नवं० तक मंदी में खरीद कर नफा लें और डबल खरीद करें। ता० १८-१६ नवं० दोनों दिनों में चांदी में ५) ६) की तेजी आने पर उस खरीदे हुए चांदी के सौदे को बेचो और फिर यहां डबल बेचो और ता० २५ नवं० को फिर डबल खरीदो और नफा लो। ता० २५ नवम्बर को खरीदा हुआ माल ता० २८ नबम्बर तक तेजी में बेच कर नफा लो।

मगसिर मासः—

मगसिर बदी १ शनि ता० २६ नवं-चांदी तेज।

मगसिर बदी ३-४ सोम ता० १ दिसम्बर चांदी तेज

मर्गासर बदी ६ बुध ता० ३ दिसम्बर-चांदी १।।) तेज। अलसी, सरसों, गुड़ तेज।

मगसिर बदी ७ बृह० ता० ४ दिसं०-चांदी तेज। इस तेजी में बेचो, शाम को ४ बजे से मंदी का योग लगा है। अलसी सरसों तेज हों।

मर्गासर बदी ८ शुक्र० ता० ५ दिसं०-चांदी मन्दी

मगसिर बदी ६ शनि ता० ६ दिसं०-चांदी गुड़ खांड़, सरसों, मन्दी।

मगसिरबदी ११ सोम० ता० ८ दिसं०-चांदी तेज।

मगसिर बदी १२ मं० ता० ६ दिसं०-चांदी तेज।

मगसिर वदी १४-१५ बृह० शु० ता ११-१२ दिसं० चांदी घट बढ़ होके तेज।

मगरसिर सुदी १ शनि ता० १३ दिसं० चांदी तेज होकर ४ बजे मन्दी १) १।।)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगसिर सुदी ३ सोम ता० १५ दिसं०—चांदी में तेजी कम, मन्दी अधिक दुतरफा घट-बढ़।

मगसिर सुदी ४ मँ० ता० १६ दिसं०—चांदी २), ३) तेज। परन्तु इसी दिन शाम को ३॥ बजे चांदी, अलसी, सरसों, गुड़ में मंदी।

मगसिर सुदी ६ बृह० ता १८ दिसं०—चांदी मँदी।

मगसिर सुदी ७ शु० ता० १६ दिसं०—चांदी तेज।

मगसिर सुदी ८ शनि ता० २० दिसं०—चांदी तेज हो कर मँदी।

मगसिर सुदी ६ २२ दिसम्बर चांदी मन्दी२) रु०।

मगसिर १० मंगल ता० २३ दिसम्बर—चांदी में घटा बढ़ी।

मगसिर सुदी ११-१२ बुधवार ता० २४ दिसम्बर—चांदी तेज हो तो बेचो।

मगसिर सुदी १५ शनि ता० २७ दिसम्बर—चांदी ३) ४) मंदी।

सारांश मगसिर मास—

ता० २४ दिसम्बर की सुबह तेजो में बेचो और ता० ६ दिसम्बर तक मदी में खरीद के तेजी में बेचने का काम करते रहें, परन्तु नजराना लगाकर करें। क्योंकि दुतर्फा घट बढ़ चलेगी और ता० १२ से २७ दिसम्बर तक हर तेजी के उछाले में बेचो और ता० १२ से २७ नवम्बर तक चांदी में ५) १०) की मन्दी आने पर नफा लें। इस मास चांदी में तेजी कम और मन्दी की विशेषता रहेगी।

पौष मास—

पौष बदी २ सोम ता० २६ दिसम्बर—चांदी मन्दी होकर तेज।

पौष बदी ३ मंगल ता० ३० दिसम्बर—चांदी तेज।

पौष बदी ४ बुध ता० ३१ दिसम्बर से सुदी ७ शनि ता० ३ जनवरी तक—मन्दी के रियेक्शन रहते हुए चांदी में तेजी।

पौष बदी ६ सोमवार ता० ५ जनवरी—चांदी मन्दी।

पौष बदी १० मङ्गलवार ता० ६ जनवरी—चांदी मन्दी होकर तेज। गुड़ तेज।

पौष बदी ११ बुध ता० ७ जनवरी चांदी २) ३)तेज।

पौष बदी १२ बृहस्पति ता० ८ जनवरी—३ बजे दिन में चांदी तेज। (मन्दी का रियेक्शन)

पौष बदी १३ शु० ता० ६ जनवरी—चांदी मन्दी।

पौष बदी १५ तारीख ११ जनवरी—चांदी तेज।

पौष सुदी १ सोम ता० १२ जनवरी २ बजेकी मंदी में चांदी खरीदो। यहां से चांदी में अच्छी तेजी चालू होने वाली है।

पौष सुदी २ मं० ता० १३ जन० चांदी दिन में तेज शाम को मंदी।

पौष सुदी ३-४ बुध बृह० ता० १४-१५ जन० चांदी तेज (मंदी के रियेक्शन)

पौष सुदी ६ शनि ता० १७ जन० चाँदी मंदी

पौष सुदी ८ सोम त० १६ जन० चांदी मंदी

पौष सुदी ६ मं० ता० २० जन० चांदी तेज

पौष सुदी १२ शु० ता० २३ जन० चांदी मंदी।

पौष सुदी १३ शनि ता० २४ जन० चांदी १) २) तेज।

पौष सुदी १४ सोम ता० २५ जन० चांदी बेचो।

पौष मास का सारांश

ता० २६ दिसम्बर से ता० ३ जनवरी तक चांदी में मंदी के रियेक्शन रहते हुए तेजी की विशेषता रहेगी। ता० ३ से ६ जनवरी तक मंदी रहेगी। इस मंदी में खरीदो। ता० १५ जनवरी तक तेजी में बेच कर नफा लो। ता० २० जनवरी कोबेचो और मंदी में नफा खाने के लिये सौदे को रोके रहो।

नोटः—सिर्फ श्री स्वाध्याय के ग्राहक कोई बात समझ में न आने पर ।–) के टिकट श्री मैनेजर तेजी मंदी ज्योतिष कार्यालय पो० कोसी (जि० मथुरा) के पते पर भेज कर मुफ्त पूछ सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदी सोना और रुई की अनुभूत रिपोर्ट

[लेखक—ज्योतिष-भूषण श्री पं० गिरिधारीलाल जी शर्मा दैवज्ञ]

१—प्रथम सप्ताह—

ता० १५ से २२ नवम्बर तक सोना चांदी में ५) से १०) तक अचानक तेजी। रुई पहले ता० १८ तक मंदी होकर तेज होगी। ता० १५-१७-१९ २० अवश्य तेजी। ता० १८-२१ मंदी। ता० १७। १९ को रुई मंदी। ता० २२ को सब वस्तुयें तेज / वहां पर चांदी अवश्य तेज होगी।

२—दूसरा सप्ताह—

ता० २३ से ३० नवम्बर तक सोना चांदी मंदी या साधारण। रुई मंदी। ता० २५-२६-२७ के चार बजे तक चांदी सोना अवश्य मंदे। रुई ता० २४-२६-२८ में अवश्य मंदी। यहां शेयर बाजार में तेजी का योग है और अन्न में बहुत घटा-बढ़ी होगी। मंदी में खरीदो ता० २९-३० को चांदी तेज।

३—तीसरा सप्ताह—

ता० १ से ७ दिसम्बर तक रुई में बहुत घटा-बढ़ी, एक दिन में ५) से १०) तक चले। मंदी से तेजी चलेगी। चांदी सोने में एक दिन तेजी, एक दिन मंदी के क्रम से घटबढ चले। ता० ४ दिसम्बर से शेयरों में कमाने का अच्छा अवसर है। ऊक चूक नहीं होगा, ५०) से १००) तक की शेयर बाजार में तेजी होगी। ता० १। ५। ६ चांदी तेज। ता० २। ४ मंदी। ता० १। ३। ४ रुई मंदी। ता० ४ दिसम्बर से ९० दिन (३ मास) तक प्रत्येक तेल बहुत तेज हो।

४—चौथा सप्ताह—

ता० ८ से १४ दिसम्बर तक घट बढ़ का सामना करना पड़ेगा। पहले मंदी होके बाद तेजी होगी। ता० ८। ९। १३। १४ मंदी। ता० १०। १२ तेजी। ता० १२ को १२ बजे से अच्छी घट-बढ़ होकर तेजी।

५—पांचवां सप्ताह—

ता० १५ से २२ दिसम्बर तक सोना चांदी में धीरे धीरे तेजी होगी। रुई में साधारण घट-बढ़ से मंदी। ता० १५-१६ को विकट घटा बढ़ी है। सोना चांदी में ध्यान से कार्य करो, ता० १७। १८ को मंदी, ता० १८ को रात्रि में तेजी। ता० १९। २०। २१। २२ तेजी। ता० १९ दिसम्बर को रुई चांदी का दोतर्फा लगाना अच्छा है।

६—छटा सप्ताह—

ता० २३ से ३१ दिसम्बर तक घटा बढ़ी का जोर रहेगा। ता० २३-२४ दोनों तेजी नहीं तो एक में तेजी तो कोई नहीं रोकेगा। ता० २५ को सायंकाल जो वस्तु तेज हो वह खरीदो, मंदी को बेचो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—सातवां सप्ताह—

तारीख १ जनवरी १९४८ से ७ जनवरी तक रुई तेज, और वस्तु साधारण। ता० १-२ जनवरी को रुई अवश्य तेज। ता० २-३ चांदी में एक तेजी एक मन्दी की है। ता० ५ को चांदी सोना तेज। ता० ६ मन्दा और ७ तेज।

८—आठवां सप्ताह—

ता० ८ से १४ जनवरी तक रुई चांदी सोने में तेजी का ध्यान है। ता० ८-१०-१२ या १३ को अवश्य तेजी। तारीख ८ को रुई अवश्य तेज। ता० १२-१४ को रुई मन्दा।

९—नौवां सप्ताह—

ता० १५ से २१ जनवरी तक दो दिन तेजी दो दिन मन्दी का योग है। जनरल ध्यान पहले तेजी होकर बाद मन्दी का है। ता० १५ को एक बजे तक जो वस्तु मन्दी हो उसे खरीदो। तारीख १६-१७ को अच्छी घट बढ़ दोतर्फा लगाओ। तारीख १९ को तेजी। २० को घट बढ़ से मन्दी। तारीख २१ जनवरी को सब वस्तु तेज। आगे करनेवाला ईश्वर है।

चांदी और रुई की दैनिक तेजी मंदी

(ले०—श्री पं० मंगलेश्वर जी ज्योतिषी)

चांदी की रिपोर्ट

कार्तिक शुक्ल (सुदी) पक्ष से प्रारम्भ

१ सम।

२-३ तेजी टका २), ३)

४ मंदी १॥), चार बजे तेजी टका १॥)

५ तेजी टका २), २॥)

६ तेजी ॥), तीन बजे मंदी १)

७ मंदी टका १॥), २)

८ सम—

९ से १० तक बाजार काफी मदा टका ४), ५)

११ तेजी टका २)

१२ मदी १॥), २)

१३ तेजी १॥), साढ़े तीन बजे मंदी टका २), ३)

१४ तेजी टका २), शाम को मंदी १॥)

१५ समान रहेगा

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

१ तेजी टका १॥), २)

२ सम

३ मंदी टका २), ३)

४ सम

५ से ७ तक बजार तेज रहेगा। अतः तेजी का व्यापार करें। टका ५), ७)

८-९ मदी टका ३)

१० समान रहेगी

११ मंदी टका २), ३)

१२ तेजी टका २), १॥)

१३ मंदी टका २), ३)

१४-३० मंदी टका ४)

नोट—चांदी में कार्तिक सुदी ४-७-९-१०-१२ इन तिथियों में बाजार मंदा रहेगा। अतः मंदी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार करें। कार्तिक सुदी ३-५-११-१३-१४ इन तिथियों पर बजार तेजी पर चलेगा, अतः तेजी में रहें। मार्गशीर्ष बदी ३-८-६-११-१४-३० इन तिथि पर बजार काफी मंदा पड़ेगा। अतः मंदी का व्यापार करें।

तेजी का योग

५-७-१२ तिथियों में मारकीट तेजी काफी होगी अतः तेजी का ध्यान रखें।

जरीला रुई की दैनिक रिपोर्ट

कार्तिक सुदी

१ तेजी टका २)

मंदी १॥)

तेजी। चार बजे बाजार तेज रहेगा

४ बाजार समान रहेगा

५ तेजी

६ से १० तक एक तर्फा बाजार तेज रहेगा टका ७), ८) तेज।

११ मंदी टका २), ३)

१२ तेजी मामूली।

१३-१४ तेजी टका ३), ५)

१५ तेजी होकर बाजार मंदा टका ४)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

१ मंदा टका २) ४)

२ सम भाव

३ तेजी टका २)

४ क्षय

५-६ मंदा टका ५) ६)

७ से १० तक बाजार एकतर्फा तेजी पर रहेगा अतः तेजी का व्यापार करना चाहिये।

११-१२ मंदा टका २), ४)

१३ सम

१४-३० मंदी ५, ७)

नोट—रुई के बाजार में दीपमाला तक मामूली घटा-बढ़ी तथा बाजार मंदी की चाल पर ही पड़ा रहेगा। बाजार की सुरखी तेजी में आकर आखरी मंदी है दीपावलि तक।

कार्तिक सुदी ६ या मार्गशीर्ष बदी ८ के बाद १५-२० दिन तक रुई में काफी तेजी टका २०-२२ तक होकर फिर साथ ही २०-२५ टका मंदा होगा। इसलिये प्रथम रुई की तेजी होकर उपरोक्त समय पर मंदी काफी है।

---:o:---

एक प्रश्न—

क्या आपकी शान्ति और आपका सुख परिवार में खो गये हैं ? यदि 'हां' तो उन्हें परिवार में खोजिये, जंगल में नहीं। परिवार में खोई हुई वस्तु जंगलों में कैसे मिल सकती है ?

शत्रु नहीं दास—

हम उस योगी से अच्छे हैं जो काम क्रोधादि शत्रुओं को बांधकर एक तरफ डाल देता है। क्योंकि—हम उन्हें शुद्ध करके उन्हीं से ऐसा काम लेते हैं जिससे हम और हमारा संसार दोनों सुखी हों। हम उन्हें शत्रु नहीं दास बनाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व व्रतादि निर्णय

कार्तिक शु० ११ सोमवार ता० २४ नवम्बर हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत
१२ मंगलवार ता० २५ ,, भौमप्रदोष व्रत
१३ बुधवार ता० २६ ,, वैकुण्ठ १४
१४ गुरुवार ता० २७ ,, सत्य-व्रत
१५ शुक्रवार ता० २८ ,, टुकरी १५ श्री गुरु नानक देवजी जन्म

मार्गशीर्ष कृष्ण ४ सोमवार ता० १ दिसम्बर श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८। २६
८ शुक्रवार ता० ५ ,, श्री महाकाल भैरवाष्टमी
११ सोमवार ता० ८ ,, उत्पन्ना एकादशी व्रत
१२ मंगलवार ता० ९ ,, मल्ल १२, भौमप्रदोष व्रत
१३ बुधवार ता० १० ,, जन्मोत्सव श्र० सौ० श्री १०५ मती महाराणी साहिबा बघाट राज्य।
३० शुक्रवार ता० १२ ,, अमावस्या

मार्गशीर्ष शुक्ल २ रविवार ता० १४ ,, चन्द्र-दर्शन
४ मंगलवार ता० १६ ,, धनुःसंक्रांति पुण्यकाल
११ बुधवार ता० २४ ,, मोक्षदा ११ व्रत, श्रीगीता जयन्ती
१२ गुरुवार ता० २५ , प्रदोष व्रत
१५ शनिवार ता० २७ ,, सत्यव्रत, श्रीदत्त-जयन्ती

पौष कृष्ण ३ मंगलवार ता० ३० ,, श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय स्टे० टा ८। २६
८ शनिवार ता० ३ जनवरी स्व० महामना श्री मालवीय जयन्ती
११ मंगलवार ता० ६ ,, सफला एकादशी व्रत (स्मार्त गृहस्थों का)
१२ गुरुवार ता० ८ ,, प्रदोषव्रत
३० रविवार ता० ११ ,, अमावस्या

पौष शुक्ल १ सोमवार ता० १२ ,, चन्द्रदर्शन
२ मंगलवार ता० १३ ,, लोहड़ी
३ बुधवार ता० १४ ,, मकर-संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर मु० ३०
७ रविवार ता० १८ ,, जन्मदिन श्री गुरु गोविन्दसिंह जी
११ गुरुवार ता० २२ ,, पुत्रदा ११ व्रत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फीस में भारी रियायत आज ही आर्डर भेजिये सोना चांदी के बाजारों में तूफान

रिपोर्ट मँगाइये

श्री सत्येश्वर ज्योतिष कार्यालय की रिपोर्टें शत-प्रतिशत सत्य होती हैं

※ हम पचासों बार रिपोर्ट गलत साबित करनेवालों को इनाम की घोषणायें कर चुके हैं।
※ पचासों रिपोर्टें पास होने पर भी व्यापारी हमारी रिपोर्ट से ही व्यापार करते हैं।

कार्तिक २००४ से चैत्र २००५ तक सोना, चांदी, रुई, अलसी, शेयर, आदि के बाजारों में आशातीत भयंकर घट-बढ़ चलेगी।

चतुर और होशियार सट्टे के व्यापारियों को भी यह घट-बढ़ चक्कर में डाल सकती है। इस लिये व्यापारियों को हमारी रिपोर्ट के आधार पर ही व्यापार करना चाहिये।

रियायती मूल्य

१ वस्तु की १२ नवम्बर से १२ मई तक ६ मास की फीस ७२)
२ वस्तु की १२ नवम्बर से १२ मई तक ६ मास की फीस १२०)
३ वस्तु की १२ नवम्बर से १२ मई तक ६ मास का फीस १६१)

यह रियायती मूल्य केवल दीपावली के अवसर पर १२ नवम्बर से १२ दिसम्बर तक है।

१३ दिसम्बर से

१ वस्तु की केवल १ मास की रिपोर्ट फीस ५१) १ वस्तु की केवल ५ मास की रिपोर्ट फीस २००)

※ इस फीस म रियायत नहीं होगी ※

कुछ नियम—

रिपोर्ट मंगाने के लिये फीस मनिआर्डर से भेजें। वी० पी० किसी भी दशा में न की जायगी। १२ दिसम्बर के बाद किसी भी मूल्य में रियायत न होगी।

निम्न लिखित वस्तुओं की रिपोर्टें तय्यार हैं

सोना, चांदी, रुई, अलसी, शेयर, शींगदाना, घी, तेल, खांड़, चपड़ा, लाख, बारदाना, ग्वार, गुड़, बिनौला, काकड़ा, सरसों

सिर्फ १ महीने की रिपोर्ट

१२ दिसम्बर ४७ तक १ वस्तु की एक मास की रिपोर्ट की रियायती फीस २१।—)
रियायती फीस की अवधि और संख्या समाप्त होने पर मनिआर्डर वापिस कर दिये जायेंगे। अतः आज ही मनिआर्डर भेज कर रिपोर्ट मंगायें और धन प्राप्त करें।

ज्योतिषाचार्य पं० हरिशंकर शास्त्री दैवज्ञभूषण

श्री सत्येश्वर ज्योतिष कार्यालय

मु० पो० खिड़कियाँ, जि० होशंगाबाद (सी० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवज्ञ की दृष्टि में संसारचक्र—

हमारे भविष्य की एक झलक

सावधान ! अभी कठिन समय आगे भी आनेवाला है

सं० २००८ से २०१२ वि० तक सारे देश में अराजकता !

सं०२०१५ वि० से पूर्ण सुख शान्ति का साम्राज्य !

स्वतन्त्र भारत का भविष्य, श्री नेहरूजी की कुण्डली पर विचार

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कों और एक वर्ष पहले अपने 'श्रीविश्व विजय-पञ्चाङ्ग' तथा दैनिक 'नवभारत' 'वीर-अर्जुन' आदि पत्र पत्रिकाओं में वर्तमान वर्ष का जो भीषण भविष्यफल हम प्रकाशित कर चुके थे, उसकी सत्यता ने ज्योतिर्विज्ञान को पण्डितों का ढकोसला बता कर मजाक उड़ानेवाले लखनउवे 'नेशनल-हेरल्ड' के सम्पादक मि० चेलापतिराव जैसे पाश्चात्य शिक्षा विभूषित पण्डितम्मन्य लोगों की आँखें भी भलीभाँति खोल दी हैं। ता०१३ अप्रैल १९४७ के 'नवभारत' में स० २००४ के विस्तृत भविष्यफल में 'साम्प्रदायिक वैमनस्य' उपशीर्षक के नीचे स्पष्ट लिखा था कि:—

'इस वर्ष में विशेष कर भारतीय जनता का मन और आत्मा अत्यन्त अशान्त सशंक और किंकर्तव्यमूढ जैसी स्थिति में रहेगा। अनार्य पुरुषों-म्लेच्छ यवनादि की मानसिक स्थिति बहुत विकृत होकर भयंकर कुकृत्यों और षडयन्त्रों की ओर प्रेरित होगी। आर्य अनार्य जनता या कांग्रेस और लोग में स्थायी समझौता न हो सकेगा। (पजाब का नरमेध और दिल्ली में हुए सत्ता उलटने के षड्यंत्र क्या इसका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं हैं ?) ज्येष्ठ आषाढ़ में मंगल शनि की परस्पर नीच राशि में स्थिति और अधिक श्रावण में पञ्चग्रह-योग तथा कार्तिक में शनि-मंगल का युद्ध होगा, ये सब भयानक योग आनेवाली भीषण आपत्तियों की पूर्वसूचना हैं। शनि मंगल रक्तपात मारधाड़ युद्ध उत्पात षड्यंत्र दुर्भिक्षादि दुर्घटनाओं के लिए प्रधान ग्रह माने जाते हैं, अतः ज्येष्ठ से आगे भयंकर रक्तपात, विस्फोट, अग्निकाण्ड, आंधी तूफान, रोग, अपमृत्यु, दुर्भिक्षादि उत्पातों का उपक्रम आरम्भ होगा। १६ अगस्त को पंचग्रह योग और १२ नवम्बर को शनि-मंगल का युद्ध है, अतः वहां से स्थिति अधिक गम्भीर होगी। .... आर्य अनार्य जनता में यत्र-तत्र भयंकर संघर्ष हो जाना निश्चित सा प्रतीत होता है। १५ अगस्त से भयानक संक्रान्तिकाल ही समझना चाहिए।"

इसके अतिरिक्त दिल्ली के सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय दैनिक 'वीर अर्जुन' और 'नवभारत' के ता० ३ जून १९४७ के अंक में चन्द्रग्रहण की सूचना पर 'भारत में भयानक स्थिति' शीर्षकसे हमारी एक भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी। उसमें स्पष्ट लिखा था कि:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"............भारतीय जनता के लिए यह ग्रहण अशान्ति का अकाण्ड ताण्डव करानेवाला सिद्ध होगा। राजनैतिक व साम्प्रदायिक समस्या विषम बन कर **यत्र-तत्र-सर्वत्र कहीं कम तो कहीं अधिक रूप में गृह-युद्ध फूट पड़ेगा, इसमें भयंकर अत्याचार; विस्फोट, निरपराधों और स्त्री तथा बालकों की हत्या एवं जन-धन का संहार होगा।** कृत्रिम एवं प्राकृतिक अग्निकाण्ड अधिक होंगे।.............. शासक अधिकारी वर्ग और सेना के सामने बड़ी विषम समस्या उत्पन्न होगी। संसार के राजतंत्रों में पर्याप्त अशान्ति दिखाई देगी।............ इन ग्रहणों और आगे होनेवाले पंचग्रह-योग, शनि मंगल युद्ध का अनिष्ट परिणाम भारत में सिन्ध, पंजाब, सीमाप्रान्त, काश्मीर, बंगाल आसाम, निजाम-हैदराबाद, गुजरात काठियावाड़ मद्रास, मध्यप्रदेश, ब्रह्मदेश, बम्बई, उड़ीसा, दिल्ली और बिलोचिस्तान में विशेषरूप से होगा उक्त प्रान्तों में साम्प्रदायिक राजनैतिक आर्थिक तथा सामाजिक समस्या को लेकर अतर्कित उलट फेर और भयंकर क्रांति होगी।" इत्यादि

उक्त अंश इतने स्पष्ट और हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष हैं कि इनके ऊपर भाष्य करके बतलाने की अब आवश्यकता नहीं।

स्वतन्त्र भारत का भविष्य

गताङ्क में हमने लिखा था कि—"सत्ता-ग्रहण करने के लिए १५ अगस्त शुभ नहीं है" इसकी व्यक्तिगत सूचना हमने सम्बन्धित मित्रों एवं नेतृवर्ग तक भी पहुंचाई थी। परिणामस्वरूप १४—१५ अगस्त के सन्धिकाल अर्धरात्र में गुरु-पुष्य योग में सत्ता ग्रहण करने का सुयोग साधा गया। अतः हम तो यही कहेंगे कि इसी गुरुपुष्यामृत योग एवं स्थिर लग्न के साथ लेने की दूरदर्शिता से ही **"आजवृषकर्कट लग्ने रक्षति राहुः समस्तदुरितेभ्यः"** के अनुसार विरोधियों के समस्त सत्ता उलट देने के षड्यंत्र असफल बन कर स्वतंत्रता स्थिर रह सकी है। अधिक श्रावण में इस पञ्चग्रही योग वाले अशुभ दिन के अनिष्ट परिणाम से हम बहुत पहले ही शंकित थे, परन्तु उक्त दिन के मुहूर्त को बदलने में हमारे नेता असमर्थ थे। और उधर भारतीयों के सौभाग्य से सैंकड़ों वर्षों के बाद आए हुए इस स्वतन्त्रता-दिवस के शुभ पर्व-कालका भीषण भविष्य सूचित करके हमने जनता के आनन्दोल्लास में बाधक बनना उचित न समझा। अस्तु, ता० १५ अगस्त के दैनिक 'नवभारत' और 'अर्जुन' के स्वाधीनता-अङ्क में "स्वतन्त्र भारत का भविष्य, स्वराज्य चिरस्थाई, प्रारम्भ के कुछ वर्ष चिन्तामय, पाकिस्तान से संघर्ष सन् १९५८ के बाद पूर्ण सुख और पूर्ण स्वराज्य" इन शीर्षकों से हमारा एक विस्तृत लेख प्रकाशित हुआ था। प्रेमी पाठकों के लाभार्थ उस लेख का महत्वपूर्ण आवश्यक अंश यहां भी हम दे रहे हैं। उक्त लेख में हमने पाकिस्तान से संघर्ष और गुप्त शत्रुओं के जिस भयंकर षड्यन्त्र की भविष्यवाणी की थी—वह काश्मीर के आक्रमण और दिल्ली के षड्यंत्र ने प्रत्यक्ष सत्य सिद्ध कर दी है।

स्वतन्त्र भारत उपनिवेश का जन्म-लग्न

इस भारतीय उपनिवेश का जन्मलग्न-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
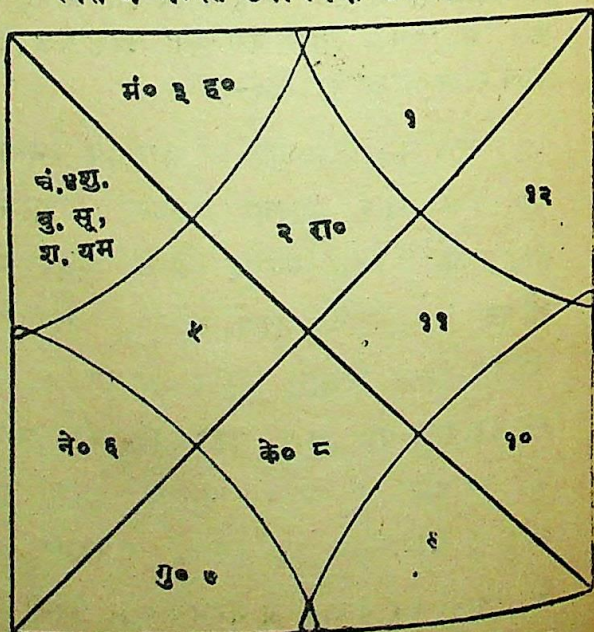
कुण्डली में सब से अधिक महत्त्व-पूर्ण क्रान्ति-कारक योग पराक्रम स्थान कर्क राशि में बन रहा है। कर्क राशिका शनि संसार में अनेक प्रकार के उत्पात, राजनैतिक क्रांति और नये नये उलट फेर करता है। भारत की राशि मकर का यह अधिपति है, अतः भारत पर इसका प्रभाव विशेष रूप से होना स्वाभाविक ही है। आज से ठीक ६० वर्ष पूर्व सं० १६१४ सन् १८५७ ई० में जब शनि कर्क में था उस समय भारतमें इसने अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध जो सैनिक विद्रोह कराया था वह आज भी सन् ५७ के गदर के नाम से संसार की एक प्रमुख ऐतिहासिक घटना है। किन्तु उस समय भारत के राज्येश पंचमेश शुक्रने शनिका साथ नहीं दिया (मिथुन में था) और शत्रुग्रह नीच के मंगल ने (कर्क में) ही पूर्ण सहयोग किया, इस कारण वहाँ भारत स्वतन्त्र न हो सका और वह क्रांति विफल सिद्ध हुई। अब ६० वर्ष के बाद भारत के भाग्य ने फिर पलटा खाया है। इस वर्ष सं० २००४ का सम्राट् और प्रधान मंत्री सूर्य है। इसका शनि के साथ योग इसी वर्तमान श्रावण मास में ही हुआ है। केवल सूर्य का ही नहीं, भारत के पञ्चमेश भाग्येश राज्येश बुध शुक्रने भी इस मासमें शनि से योग किया और १५ अगस्त की सायंकाल को चन्द्रमा ने भी उक्त चार ग्रहों के साथ कर्क में प्रवेश कर पूर्ण पञ्च-ग्रही योग बनाया। यहाँ एक विशेष बात यह भी ध्यान रखने योग्य है कि सैंकड़ों वर्षों के बाद यह पञ्चग्रह योग महाग्रह यम (प्लुटो) के साथ हो रहा है। इस प्रकार ता० १४ अगस्त को सायंकाल ५ बजे चन्द्रमा के कर्क में जाने पर यम सहित षड्ग्रही योग बना। इस योग के बनते ही ७ घण्टे बाद सैंकड़ों वर्षों से पारतन्त्र्याश में बंधा हुआ भारत स्वतन्त्र हुआ है। सौर जगत् के आकाशस्थ ग्रहपिण्डों का प्रभाव इस भूमण्डल के प्राणिमात्र पर कैसे पड़ता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उक्त चमत्कार-पूर्ण ऐतिहासिक घटना है, अस्तु।

आरम्भिक तीन वर्ष कठिनाई के

लग्न स्थिर है और चलित में सू० बु० गु० शु० श० केन्द्र में गये हैं; अतः यह तो निश्चित है कि यह स्वतन्त्रता दीर्घजीवी (चिर-स्थायी) होगी और आगे उत्तरोत्तर भारत का गौरव संसार में बहुत बढ़ेगा। शनि की महादशा में ही भारतीय स्वतन्त्र उपनिवेश का जन्म हुआ है और अभी ढ़ाई वर्ष तक शनिकी ही अन्तर्दशा चलेगी। शनि इस समय अस्त है और कर्क सिंह राशियाँ इसके शत्रु की हैं, अतः ये आरम्भिक तीन वर्ष भारत के लिए विशेष शुभाशाप्रद नहीं कहे जा सकते। सरकार एवं जनता के सामने अनेक विषम समस्याएँ उत्पन्न होकर कठिन अग्नि-परीक्षा का समय उपस्थित होगा। कांग्रेस से कुछ प्रभावशाली नेताओं का तीव्र मतभेद रहेगा। विशेष कर षड्ग्रही योगवाले इसी अगस्त मास में और आगे नवम्बर में जहां शनि मंगल की युति होगी वहाँ से संसार में किसी प्रकार की विशेष अप्रिय घटना घटेगी। भारत में भी रक्त-पात मार-धाड़ चोरी डाके या दुर्भिक्ष एवं जल-प्लावन से जन-धन का विनाश होगा। पूर्व दक्षिण और उत्तरीय भारत में साम्प्रदायिक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक वातावरण अशान्त रहेगा। इसी अवधि में खानों में विस्फोट अग्निकाण्ड और रेल, मोटर तथा जहाजों में दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। परन्तु राज्य की ओर से इन सब आपत्तियों का साहस पूर्वक मुकाबला किया जावेगा। निकट भविष्य में अभी किसी विदेशी आक्रमण का भारत को डर नहीं है। भारत पूर्ण-रूपेण स्वतन्त्र सुखी एवं समृद्ध सं० २०१५ सन् १६५८ के बाद हो सकेगा। इन आरम्भिक ३ वर्षों में पाकिस्तान का सम्बन्ध आन्तरिक रूप में मैत्री पूर्ण न रह कर संघर्षमय बना रहेगा। कुछ देशी राज्य भी प्रजासे संघर्ष मोल लेने का विफल प्रयास करेंगे।

कुण्डली के १२ भावों का विस्तृत फल

(१) लग्न में राहु और लग्नेश शुक्र तीसरे स्थान में अस्त है, अतः आरम्भ में भारतीय सर्वसाधारण जनता की स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। राहु शुक्र के कारण शासन-तन्त्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक विभाग में क्रांतिकारी योजनायें बनेंगी और कई जगह कठोरता से काम लिया जावेगा। कांग्रेसी नेताओं और शासकों की मनोवृत्ति वा नीति में क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा। कई प्रान्तों में विरोधियों की ओर से शासन-शकट के सामने भारी रोड़े अटकाने की कुचेष्टायें की जावेंगी।(दिल्ली में जो कुछ हुआ और भारत में सर्वत्र तलाशियों के द्वारा धीरे-धीरे जिन षड्यंत्रों का रहस्योद्घाटन होता जा रहा है, वह इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है)किन्तु लग्नेश शुक्र पराक्रम स्थान में सूर्य चन्द्र बुध शनि के साथ पड़ा हुआ है अतः आगे राष्ट्रिय सरकार को अधिकांश में सभी वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा। अतः आरम्भिक ३ वर्षों की विषम विघ्नबाधाओं को पार करके आगे क्रमशः भारत का भविष्य उज्वल बनेगा।

(२) धनभाव में मंगल हर्शल पड़े हैं, अतः आरम्भ में भारत की आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। सरकार को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। व्ययेश मंगल धन में हर्शल के साथ है, अतः व्यय विशेष होगा और ब्रिटेन पौण्डपावने या स्टर्लिङ्ग के रूप में भारत को पूरा ऋण नहीं चुकायेगा। मंगल हर्शल आगे चलकर आर्थिक गति-रोध उत्पन्न करेंगे। कुछ नये टैक्स भी लगाए जायेंगे। धनस्थान गुरु से दृष्ट है और धनेश पराक्रम में है, अतः भारत भविष्य में अपने उद्योग से आर्थिक स्थिति को सुधार लेगा। गुरु पूंजीवाद को सर्वथा समाप्त होने से बचाये रक्खेगा।

(३) तीसरे स्थान में विशेष क्रांतिकारी योग पड़ा है। ६ ग्रहों की नवम पर पूर्ण दृष्टि है, अतः भारत के उद्योग व्यवसाय यातायात के साधन रेल, तार, डाक, मोटर, विमान, विश्वविद्यालय एवं विदेशी व्यापार में महत्त्वपूर्ण कार्य होंगे। कर्क मकर दोनों जलचर राशियाँ हैं, अतः समुद्री व्यापार में एवं जहाजरानी पर भारत का पूर्ण अधिकार रहेगा। विज्ञान में भारत पर्याप्त उन्नति करेगा। मोटर रेलवे इन्जिन और जहाज बनाने के बड़े बड़े कारखाने यहाँ खोले जायेंगे। ३ वर्ष बाद शनि में बुध का अन्तर आने पर भारतीय वैज्ञानिक परमाणु-शक्ति का अनुसन्धान करेंगे और उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिलेगी।

(४) चतुर्थेश सूर्य पराक्रम में है और चलित में सूर्य बुध शुक्र शनि चतुर्थ भाव में गये हैं, अतः खेती बाड़ी तथा भूमि के मामलों में पर्याप्त सुधार होगा। कृषि एवं उपज-वृद्धि के लिये नयी योजनायें बनेंगी, नये बांध नहरें और सड़कों का विस्तार होगा, परन्तु सूर्य शनि योग के कारण आगामी ३ वर्ष तक भारत का कृषि उद्योग पूर्ण रूपेण विकसित व समाधान कारक न हो सकेगा। कहीं अवर्षण, कहीं अतिवर्षण तो कहीं प्रकृति-कोप से फसल में हानि होकर उन्नति में बाधा पड़ती रहेगी। गृह-विभाग यशस्वी होगा। अन्न-संकट अभी दो वर्ष तक नहीं मिटेगा। चोर बाजार रिश्वतखोरी और कण्ठरोध (कण्ट्रोल) का उन्मूलन करने के सफल प्रयत्न होंगे।

(५) पंचमेश बुध पराक्रम में ५ ग्रहों के साथ है, अतः विश्वविद्यालयों की शिक्षा-प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। राष्ट्र भाषा हिन्दी का गौरव बढ़ेगा। सट्टा लाटरी और नाटक सिनेमागृह एवं विलास-सामग्री पर नियंत्रण रखा जावेगा और इन पर नये टैक्स भी लगेंगे।

(६) छठे स्थान में गुरु और षष्ठेश शुक्र पराक्रम में है, अतः भारत की जल स्थल नभ सेना में पर्याप्त सुधार होगा। सैनिक संगठन सुदृढ़ होगा। गुरु गुप्त शत्रु भी उत्पन्न करता है। विदेशी गुप्तचर अधिकतर ब्रिटेन और पाकिस्तान के गुप्तचर भारत को हानि पहुंचाने की ताक में रहेंगे, परन्तु शासक-वर्ग की सतर्कता के कारण वे अपने दुष्प्रयत्न में सफल न हो सकेंगे। गुरु आरम्भ में उत्पात का सूचक भी है। (दिल्ली और काश्मीर में इन गुप्त शत्रुओं द्वारा जो कुछ उत्पात हुआ वह सर्व विदित ही है)।

(७) सप्तमेश धन में है और चलित में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु सप्तम में गया है, अतः विदेशों से भारत का सम्बन्ध सहानुभूति-पूर्ण रहेगा। वाणिज्य व्यवसाय में उन्नति होगी। मंगल के कारण दक्षिण अफ्रीका की भारतीय समस्या शीघ्र नहीं सुलझेगी।

(८) अष्टमेश छठे और अष्टम स्थान मंगल से दृष्ट है, अतः अभी भारत में रोग दुर्भिक्ष उपद्रवाद के द्वारा मृत्यु संख्या में कमी न होगी। विदेशों से आर्थिक सम्बन्ध भी आरम्भ में साधारण ही रहेगा।

(६) भाग्येश शनि पराक्रम में और नवम भाव छः ग्रहों से दृष्ट है, अतः एक बार धार्मिक सामाजिक क्रांति भारत में विशेष रूप से होगी। तदनन्तर भारत पूर्ण स्वतन्त्र और समृद्ध होगा। धार्मिक आर्य-प्रकृति के लोगों पर आरम्भ में अनेक आपत्तियां आवेंगी। धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन अधिक प्रबल होंगे।

(१०) दशमेश शनि पराक्रम में है और दशम-भाव पर गुरु की दृष्टि है, अतः भार का राज्य-भाव बलवान् है। परन्तु जब तक शनि कर्क और सिंह राशि में रहेगा तब तक शासन-तन्त्र के सामने नई नई कठिनाइयां आती रहेंगी, पर बाद में पूर्ण सफलता मिलेगी। भारत की राष्ट्रीय सरकार विदेशों में गौरव-पूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।

(११) लाभेश गुरु छठे है, अतः आरम्भ में भारतीय आय या उत्पादन शक्ति सन्तोष जनक न रहेगी। औद्योगिक मामलों में व्यय अधिक होगा।

(१२) व्ययेश मंगल धन भाव में है अतः व्यापारिक औद्योगिक एवं सुरक्षा के सम्बन्ध में व्यय अधिक होगा। शनिदृष्टि के कारण पाकिस्तान से आन्तरिक आर्थिक सम्बन्ध सन्तोष जनक न होंगे। कर्क सिंह के शनि में अभी सीमा-विवाद बढ़ेंगे। थोड़े समय के लिए चाहे भले ही शान्ति दिखाई दे, पर शनि अनार्य जनता के अन्तःकरण को अभी शुद्ध नहीं होने देगा।

आने वाला क्रान्तिकाल

यह तो हम पहले ही कह चुके हैं कि ‘न आरम्भिक तीन वर्षों में भारत को नई-नई उलझनों एवं भयंकर आपत्तियों का सामना करना पड़ेगा’। तदनुसार स्वतन्त्रता के साथ ही जिस भयकर अराजकता एवं शस्त्रास्त्रों से सज्जित भीषण षड्यन्त्रों की बाढ़ आई, उसने राष्ट्रिय सरकार के मार्ग में आरम्भ में ही भयंकर आघात पहुंचाया है। परन्तु राज्य-भाव पर मंगल गुरु की मित्र दृष्टि है और युद्ध में मंगल विजयी हो रहा है, अतः यह हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि शनि के षड्यंत्रों या अनार्य यवनादि लोगों के अत्याचारों पर आर्य-क्षात्रय जाति या भारतीय संघ की अन्त में पूर्ण विजय होगी। शनि शनैः शनैः अनार्यों को पतनोन्मुख बनायेगा। १२ नवम्बर को युद्ध में मंगल विजयी हुआ है, उसी दिन से काश्मीर में भारतीय सेनाने आक्रमण कारी शत्रु (शनि) को बुरी तरह पीछे हटाना प्रारम्भ कर दिया है। वर्तमान ग्रह स्थिति के अनुसार उग्र संघर्ष के बाद अन्त में हैदराबाद को भी भारतीय संघ के सामने झुकना तो पड़ेगा, किन्तु आगे प्रारम्भ होनेवाला सन १६४८ और सं० २००५ वि० भी हमें विशेष शुभाशाप्रद दिखाई नहीं देता। हम तो अपने पूर्व कथनानुसार आनेवाले इन दश वर्षों में सं० २०१४ तक संसार में चारों ओर भय एवं अंधकार को ही विस्तृत हुआ देख रहे हैं। इसमें भी सं० २००८ से सं० २०१२ वि० तक का समय भारत के लिए विशेष अनिष्ट-प्रद प्रतीत हो रहा है।

भारत के एक सुप्रसिद्ध ज्यौतिषी का मत

भारत और पाकिस्तान के भविष्य के सम्बन्ध में भारत के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य और भविष्य-वक्ता उज्जयिनीस्थ श्रद्धेय भाई श्री सूर्यनारायण जी व्यास महोदय का मत भी हमने ‘श्रीस्वाध्याय’ के लिए प्राप्त किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका ता० ११ अक्टूबर का पत्र डाक की वर्तमान धांधली के कारण अब एक मास बाद हमें मिला है, श्री व्यास जी का उक्त पत्र पाठकों के लिए रुचिकर एवं महत्त्वपूर्ण होने से हम उसे अविकल रूप में यहाँ दे रहे हैं—

आपने पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके भविष्य पर मेरे विचार जानने चाहे हैं। मैं बहुत समय से गत अगस्त में होनेवाली पञ्चग्रह युति और शनि मंगल के कर्क पर संयोग को बहुत ही चिन्ता और भयका विषय मानता रहा हूँ।

आज तो सारा देश देख रहा है कि १५ अगस्त के आनन्द की मुस्कान अधरों से मिटी भी नहीं थी कि त्रास और विषाद का भीषण वातावरण ही छा गया है। अवश्य ही आपने १५ अगस्त के दिन की कुण्डली पर विस्तृत विचार किया है। दूसरे किसी ज्योतिषी ने इतना विस्तृत सुन्दर विचार किया देखा नहीं है। इस पर मैंने 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक श्री मुकुटबिहारीजी को भी लिखा था कि श्री पं० हरदेव जी मेरे ही परिवार के हैं, इस लिये उनके विचारों में हमारे विचारों के साथ कोई विषमता की आशंका नहीं होती; बात ठीक ही है।

हाँ, तो प्रस्तुत विषयको लीजिये, मैंने 'जयहिन्द' में बतलाया था कि "संघर्ष का आरम्भ साम्प्रदायिकता और देशी राज्योंसे होगा।" अभी देख रहे हैं कि जूनागढ़, हैदराबाद, भोपाल, और त्रावणकोर ये ही आरम्भके कारण बनगये हैं, परन्तु मेरी धारणा यह है कि यह जूनागढ़ और हैदराबाद के काण्ड तो २८ अक्टूबर के बाद ही सुधर जायेंगे, या फिर अविलम्ब सीधा संघर्ष छिड़ जायेगा। आशा तो है कि २८ अक्टूबर के पश्चात् बढ़ना नहीं चाहिए, अन्यथा यह जूनागढ़ के लिए चिन्ता-प्रद ही होगा। किन्तु, आगे सिंह पर शनि के परिवर्तित हो जाने पर अन्तर्राष्ट्रिय घटना-चक्र बड़ी तेजी से पलटने लगेगा। देश के सीमा-प्रान्तों में अन्दर सुलगती रहनेवाली ज्वाला-मुखियां अपना विस्फोट करती दिखाई देंगी। आनेवाले ४-५ मासों में अन्दरूनी तैय्यारियां होंगी। बाहरी वातावरण का लाभ उठाने का यत्न होगा। बाहरी शक्तियों की छोटी मोटी चकमक झड़ जावेगी, उसका भी प्रभाव यहां होगा। विपरीत समुदाय इसमें सम्पर्क साधेगा। इसके अतिरिक्त आन्तरिक कठिनाइयां खाद्य, अर्थ, व्यवसाय और रोगोपद्रवों को बढ़ती रहेगी। मेरी तो यह मान्यता है कि अब भी देशी राज्यों और सम्प्रदायों का संघर्ष व्यापक गम्भीरता लिए बिना न रहेगा। आनेवाले गम्भीर अराजक प्रसंग में संघर्ष का प्रमुख स्थान भारत बनेगा। रूस राह देख रहा है। ईरान, ईराक, अफगान, अरब, ईजिप्ट आदि चतुर्दिक् व्याप्त शासन भारत को आत्मसात् करने बढ़ेंगे। उत्तर भारत, पूर्व भारत बंगाल, आसाम, गुजरात और दक्षिण के सागर तट-वर्ती देशों से कभी भी गम्भीरता बढ़ सकती है।

श्री पं० नेहरूजी के ग्रह-योग

इधर पंडित नेहरू जी के ग्रह-योग भी बहुत कठिनाई से निकलने वाले हैं। उनका गुरु षष्ठ चला गया है और मंगल में उसी की अन्तर्दशा गत मई १९४७ से आरम्भ हुई है। उसी समय से उन्हें निरन्तर टकराते रहना पड़ा है। पंडित जी की कुण्डली पर १९३८ में मैंने बहुत विस्तार से पत्रों में चर्चा की थी, तब मैंने लिखा था कि नेहरू जी १९४६ से लेनिन की भांति ऊपर उठेंगे। तब का लिखा पूरा परिचय आश्चर्यजनक सत्य हो गया है। पर अप्रैल १९४८ तक गुरु के कारण उन्हें कभी भी चैन नहीं मिलेगा, और शत्रु तो उन से दाव लगाकर विजय भी नहीं पा सकेंगे, क्योंकि उनका गुरु धनु राशि का ही है और आनेवाला गुरु धनुः पर ही होगा। साथ ही उनकी कुण्डली में शनि सिंह राशि पर है। अतएव सिंह का शनि उनकी शासकीय संघर्ष-शक्ति को बहुत बल प्रदान करेगा। लग्न में कर्क का चलनेवाला शनि उनको कष्ट अशांति और विरोध में उतार सकता है, इस लिये आज उनकी जो मनोदशा है वह स्वाभाविक ही है। बीच में ३-४ मास वे अवश्य संघर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गम्भीर घोषणायें कर सकेंगे, तथा सबल हाथों से काम ले सकेंगे। परन्तु चार मास बाद जब पुनः शनि कर्क राशि पर आयेगा और उसके साथ मंगल तथा दूसरे ग्रह उसी राशि पर आयेंगे तब एक बार उन्हें व्यापक षड्यंत्रों का शिकार बनना पड़े तो आश्चर्य नहीं, यह १९४८ में ही होगा। किन्तु उस षड्यंत्र से भी वे निकल जायेंगे और आगे उनको सिंह के शनि मंगल आदि योगों में जो १९४८ के उत्तरार्ध से लेकर १९४९ तक कई कठिन ग्रह-योगों का अवसर ला रहे हैं, व्यापक अराजकता, विदेशी संघर्ष, आन्तरिक एवं बाह्य विद्रोहों का सामना करना पड़ेगा, यह कठिन कसौटी है। १९४८ और १९४९ बीत जाने पर ही शान्ति की सांस ली जा सकेगी। यद्यपि भारत की स्वतन्त्रता को कुचलने के लिए राज्यों और बाहर की शक्तियों के साथ साम्प्रदायिक कुचक्रियों का सहयोग व्यापक विद्रोह तथा निरन्तर संघर्ष का अवसर उपस्थित करेगा, पर भारत पर अब तीसरी ताकत बैठ नहीं सकेगी। हाँ, पाकिस्तान तो स्वप्न की तरह समाप्त हो जायेगा, पर वह अपने नंगे और कराल रूप प्रकट करने के बाद ही। उसी को पीछे लेकर देश में दूसरी ताकतें प्रवेश करने का साहस करेंगी, परन्तु उन्हें यह सौदा सस्ता नहीं पड़ेगा। एशिया की कुछ शक्तियाँ भारत के लिए भी सबल सहायक सिद्ध होंगी। हाँ, आनेवाले दो वर्षों में हमारी अग्नि-परीक्षा अवश्य है। १७ नवम्बर से आनेवाले समय में तो मैं देश के शासक वर्ग से कहूँगा कि पं० नेहरू जी के साहसिक कार्यों पर सावधानी पूर्वक नियंत्रण रखना चाहिए। उन्हें खतरे से गुजरना होगा, उनके प्राणों के साथ खतरा बन जाने की आशंका है। देश की इस महान् विभूति को रक्षित करना आवश्यक है। बापू तो मार्च ४८ तक इन खतरों से खेल ही रहे हैं, उसके बाद भी वे अपनों की सहायता के लिए बाजी लगाये रहेंगे। पर उनकी प्रकृति खून के दबाव की खराबी के ख्याल से मार्च ४८ तक चिन्ता से खाली नहीं है।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक (राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं आर्य ही शान्ति की स्थापना कर सकते हैं। राष्ट्र आर्यों का है।

हमारी मातृभूमि ही हमारा स्वर्ग है

राष्ट्र हमारा पिता है, वह हमारे पुण्य के आलोक से आलोकित हो हमें असीम आनन्द प्रदान करता है

भारत हमारा राष्ट्र है

यही हमारी मातृ एवं पितृ भूमि है, यहाँ हमारी संस्कृति का विकास हुआ है, यह हिन्दू राष्ट्र है।

इस पर हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

हमें उस शान्ति से स्नेह नहीं जो पराधीनता की पोषक है। हम उस क्रान्ति का आदर करते हैं जिसमें जीवन है

क्रान्ति ही शान्ति को जीवन देती है

यदि आप इन भावों से स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

यह एक जीवन शास्त्र है। तृतीय संस्करण शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है, प्रतीक्षा कीजिए।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक भविष्यफल

[एक अनुभवी ज्योतिषी]

कार्तिक शु० १ ता० १३ नवम्बरसे मार्ग० कृष्ण ३० ता० १२ दिसम्बर तक

इस मास में शनि-मंगल-युति (युद्ध) के प्रभाव से संसार में क्रांतिकारी घटनाओं का सूत्रपात होगा। रेलवे आदि यातायात के साधनों में बाधायें और कर्मचारियों में असन्तोष बढ़ेगा। यात्रा और आयात-निर्यात में भारी असुविधा होगी। स्टीमर कम्पनी के शेयरों में तेजा, रुई में ज़बरदस्त घटा-बढ़ी, चांदी में पहले मंदी होकर बाद तेजी तथा सोने में मन्दी का योग है। ता० १६ से २० नवम्बर तक बैंकों और बीमा कम्पनियों के शेयरों में मंदी का योग है। तिल तैल सरसों मूंगफली आदि के भाव में उछाला आवे। मशीनरी का भाव तेज रहे।

मार्ग० शु० १ ता० १३ दिसम्बर से पौष कृ० ३० ता० ११ जनवरी १९४८ तक—

इस मास के आरम्भ में चांदी में मन्दी का योग है। रेलवे स्टीमर बीमा कम्पनियों और तैल कम्पनियों के शेयरों में तेजी की सम्भावना है। इस मास में बाजार भाव में बहुत उथल पुथल होगी। पौष मास में अनेक प्रकार की अप्रिय घटनायें घटेंगी। मध्यप्रान्त दक्षिण भारत और युक्तप्रान्त में षड्यन्त्रों का रहस्योद्घाटन होगा। बाजार भाव में अफवाहों के कारण भारी घबराहट फैलेगी, अतः प्रत्येक व्यापार बहुत सावधानी से करें।

पौष शु० १ ता० १२ जनवरी से माघ कृष्ण ३० ता० १० फरवरी तक—

प्रजा में असन्तोष और किसी अन्तर्राष्ट्रिय-ख्याति-प्राप्त व्यक्ति की मृत्यु होने की सम्भावना दृष्टिगोचर होती है। दक्षिण-भारत गुजरात सिन्ध और बंगाल में अशान्ति, भयंकर शीत, ओले और पर्वतीय प्रदेशों में बर्फ से जनता में बेचैनी रहेगी। राजाओं में असन्तोष, उत्पात। रबर खाण्ड और अन्न के भाव में तेज़ी। इस मास में सभी क्रूर ग्रह वक्री हैं, अतः संसार में दुर्भिक्ष रोग उत्पातादि अशुभ घटनायें अधिक होंगी। भारतीय शासन-सूत्र-सञ्चालकों को बहुत सावधानी से विपत्तियों की गतिविधि का निरीक्षण करते हुए राष्ट्र को आपत्तियों से बचाना चाहिए। ता० ६ फरवरी से मीन का शुक्र चांदी में मन्दी का सूचक है।

क्षमा प्रार्थना

यह अङ्क मेरी अनुपस्थिति में एक अन्य सज्जन के तत्त्वावधान में छपने के कारण शीघ्रता में सुन्दर रूप में न छप सका तथा लेखों का संकलन सम्पादन संशोधन भी इस बार सम्यक् न हो सका। इसका मुझे हार्दिक खेद है। आशा है विद्वान् लेखक एवं सहृदय पाठक विवशता के लिए क्षमा करेंगे।

विनीतः—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्लिमलीग का राष्ट्र-विरोधी प्रचार

[ले०—श्री रामरखसिंहजी सहगल, सम्पादक 'कर्मयोगी']

[चांद और भविष्य के सेवा-निवृत्त सम्पादक तथा कर्मयोगी के वर्त्तमान सम्पादक श्री सहगलजी भारत के सुप्रसिद्ध पत्रकारों में से एक हैं। आप के लेखों एवं कृतियों में पाठकों को उग्र तथा क्रान्तिकारी विचारों का दर्शन करने को मिलता है। प्रस्तुत लेख में राष्ट्रीयता के पुजारी हमारे विद्वान् लेखक ने उस मुस्लिमलीगी राष्ट्र-विरोधी प्रचार का रहस्योद्घाटन किया है जिसकी ओर अन्य पत्रकारों तथा हमारे नेतृ-वृन्द ने सम्भव है जानते हुए भी कुछ भी ध्यान नहीं दिया। परन्तु हमारी इस उपेक्षा और असावधानता का जो परिणाम हुआ है उसे कलकत्ता, नोआखाली तथा पञ्जाब की घटनाओं ने प्रत्यक्ष कर दिया है। आशा है पाठक इस लेख को पढ़कर जनसाधारण में इसका प्रचार करना अपना प्रमुख कर्त्तव्य समझेंगे और अपने भावी गन्तव्य मार्ग का निश्चय कर सकेंगे।

—सम्पादक]

मुसलमानों के उस षडयन्त्र की जिसका सूत्रपात आजसे ५० वर्ष पूर्व हो चुका था—स्कीमें बन चुकी थीं। तबलीग और तनजीम की आड़ में धर्म-परिवर्तन का कार्य इस देश में खुले आम पिछले २५ वर्षों से होता चला आरहा है। बड़े से बड़े और अच्छे से अच्छे समझे जानेवाले प्रत्येक मुसलमान ने वर्ष में कमसे कम एक हिंदू स्त्री को मुसलिम धर्म में दीक्षित करने की शपथ ले रक्खी है, जिसका दुष्परिणाम आज हमारे सामने है। हैदराबाद भोपाल आदि मुसलिम राज्यों ने इन कार्यों में करोड़ों रुपये व्यय किये और भीतर ही भीतर हिन्दुओं को खोखला और मुसलमानों को संगठित करते रहे। बारूद कभी का तैयार पड़ा था, उसमें केवल एक चिनगारी की आवश्यकता थी और वह चिनगारी ब्रिटेन की कूटनीति और कांग्रेस की अदूरदर्शिता ने प्रस्तुत करदी। नवाब भोपाल आज डङ्के की चोट देशी राज्यों में इसका बीजारोपण करते फिर रहे हैं। हैदराबाद से समस्त हथियार वितरण हो रहे हैं और कोई रोकनेवाला नहीं है। समस्त भारत के प्रत्येक नगर (चाहे वह जगह हिंदुस्तान की हो अथवा पाकिस्तान की) में गुण्डों का लीगियों ने एक सुदृढ़ संगठन कर रक्खा है जिससे कुछ बोतलें शराब की और थोड़ा बहुत नगद देकर अनहोनी से अनहोनी बातें सहज ही कराई जा सकती हैं।

गवर्नमेंट आफ इण्डिया के वर्तमान होम-मेम्बर सरदार वल्लभ भाई पटेल के शब्दों में "प्रत्येक सरकारी मुसलिम कर्मचारी लीग का समर्थक है। साधारण चपरासी से लेकर बड़े से बड़ा अफसर पहिले लीगी है फिर सरकारी कर्मचारी।" पञ्जाब पुलिस में ९१ प्रतिशत लीगी मुसलमान हैं और संयुक्त-प्रांत में इनका औसत ८४ प्रतिशत कहा जाता है जो खुले तौर पर लीगियों का साथ देरहे हैं। पञ्जाब के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यहां के अधिकांश काण्डों में पुलिस का भरपूर हाथ रहा है और गुण्डों द्वारा हिन्दू तथा सिक्खों का जितना वध हुआ है उससे ३०० गुना अधिक उन्हें पुलिस की गोलियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का शिकार होना पड़ा है।

जिस षड्यन्त्र की चर्चा हम यहां संक्षेप में करना चाहते हैं उसका पता बहुत कम लोगों को होगा। इस विष-वृक्ष की रूप-रेखा पुस्तकाकार लाखों की संख्या में छाप कर मुसलमानों में गुप्त रूप से बाँटी जा चुकी है। इस बात का सदैव ध्यान रक्खा गया है कि इसकी एक प्रति भी किसी हिन्दू के हाथ में न पड़े। करीब २ वर्ष हुए जबकि किसी बृहत स्कीम की कुछ प्रमुख बातें "खिलाफत-अथवा पाकिस्तान स्कीम" नाम से पञ्जाब मुस्लिम विद्यार्थी संघ की ओर से पुस्तकाकार प्रकाशित हुई थीं। पुस्तक का मूल्य आठ आना रक्खा गया था और यह लाहौर के लायल प्रेस में छपी थी। केवल मुसलमानों के ही हाथ पुस्तक बेची जाती थी, वह भी बहुत जांच कर। इस पुस्तक में कहागया है:—

(१) यद्यपि मुस्लिमलीग मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है, पर चूंकि कांग्रेस की नकल करते हुए अब तक उसे अहिंसा वादी रक्खा गया है; इसलिए वह 'शरियत' के विरुद्ध है। मुसलमानों का धर्म भिक्षा मांगना नहीं है, बल्कि तलवार के जोर से विपक्षियों पर काबू पाना है और सदा से हमारी नीति भी यही रही है। जातीय-सम्मान, स्वतन्त्रता तथा ऐश्वर्य को प्राप्त करने का एकमात्र साधन हिंसा तथा काफिरों पर आतङ्क छा देना है। अहिंसा बनियों का धर्म है।

(२) आज मुसलमानों की दुर्गति इसलिये हो रही है कि उन्होंने अपने उपर्युक्त जातीय गुणों की अवहेलना की है, आज इसीलिये वे हिन्दुओं से पिछड़े हुए हैं, क्योंकि उन्होंने काफिरों को बढ़ने का रास्ता दिया है। जब तक मुसलमान अपने बाप दादों के हिंसा रूपी धर्म में ईमान नहीं लाते, तबतक उनका नीचे गिरते जाना सर्वथा स्वाभाविक ही है।

(३) पाक परवरदिगार ने मुसलमानों की सृष्टि इसीलिये की है ताकि वे संसार भर को विजय करके एक-छत्र हुकूमत करें। हमारे धर्म के अनुसार संसार के प्रत्येक कोने में हमारे ही मजहब का बोलबाला होना चाहिये, फिर हम चुप क्यों बैठे हैं? प्रयत्न करके-और फिर चाहे जो कुछ भी कुर्बानियां करनी पड़ें, हमें एकबार फिलहाल हिंदोस्तान के उन भागों पर तो कब्जा कर ही लेना चाहिये जिनमें हमारा बाहुल्य है। पूर्व में बङ्गाल और आसाम कब्जे में कर लेना चाहिए और पश्चिम में पञ्जाब सिन्ध तथा सीमाप्रांत। इसके बाद मुसलमानों की हुकूमतें कायम हैं ही (बिलोचिस्तान तथा अफगानिस्तान आदि)। लखनऊ पर हमें इस बिना पर कब्जा करलेना चाहिये, क्योंकि वह उर्दू का केन्द्र है। आगरे पर कब्जा करना इस लिए जरूरी है, क्योंकि इस देश में हमारी ऐतिहासिक स्मृतियां आज तक सुरक्षित हैं और देहली पर तो तुरन्त चढ़ाई कर देनी चाहिए, क्यों कि हमारी हुकूमत की यह अन्तिम यादगार और हमारी सभ्यता का यह सदियों केन्द्र रह चुकी है। इस स्कीम के कार्यान्वित करने में कुर्बानियों की आवश्यकता बहुत कम, किन्तु सङ्गठन और साहस की आवश्यकता बहुत अधिक है। हैदराबाद अपनी ही रियासत है। फिलहाल उसमें बीजारोपण मात्र करने की आवश्यकता है। अभी हमें अधिक छेड़-छाड़ नहीं करनी चाहिए। जैसे ही मुस्लिम बाहुल्य प्रदेश हमारे कब्जे में आ जांय हमें तुरन्त समस्त मुसलमानों को एक झण्डे के नीचे एकत्र करके उन्हें हथियारों से सुसज्जित कर देना चाहिए और मौका पाते ही काफिरों के प्रत्येक नगर प्रान्त तथा गावों तक को दबोच लेना चाहिए। मुस्लिम प्रांतों के प्रत्येक मुसलमान को पूरब तथा पश्चिम से एक साथ बीच के प्रान्तों पर खाक की भांति छाजाना चाहिए। संसार की कोई शक्ति हमें छू नहीं सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) पाकिस्तानी प्रान्तों की हकूमत की बागडोर जैसे ही हमारे हाथों में आ जाय और हम अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो जांय वैसे ही हमें हिन्दू-प्रांतों में बसे हुए मुसलमानों को एक बार ही उभार देना चाहिये। पूरब तथा पश्चिम से जब हमारा धावा होगा, उस समय हिन्दू प्रांतोंमें बसनेवाले मुसलमान कमाल कर सकते हैं। वे सहज ही नित्य नया उपद्रव खड़ा करके काफिरों का नातक़ा बन्द कर सकते हैं।

(५) हमें यह विस्मरण न करना चाहिये कि मुसलमानों के अतिरिक्त संसार की कोई भी जाति पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाई है और न वह पवित्र ही है। हमें पृथिवी पर एक भी काफिर जिन्दा न छोड़ना चाहिये। संसार का नक़शा हमें हरे रङ्ग से भर देना चाहिये। पाकिस्तान का वास्तविक स्वरूप और रूप-रेखा यही है और प्रत्येक मुसलमान का फर्ज है कि वह इस सवाब के कार्य में हाथ बंटा कर जिन्नत नसीब करे।

(६) कुछ काफिरों का ऊंचे सरकारी ओहदों पर आसीन होना इस बात का प्रमाण नहीं है कि वे मुसलमानों से अधिक विकसित हैं। किसी बन्दर के दीवार पर चढ़ बैठने से यह साबित नहीं होता कि वह मनुष्य से आकृति में बड़ा है। इतना बलशाली होते हुए भी हाथी इन्सान से ऊंचा नहीं समझा जाता। ठीक इसी प्रकार काफिरों और मुसलमानों की तुलना नहीं की जा सकती। गिरे से गिरा, नीच से नीच मुसलमान तुलनात्मक दृष्टि से वर्धा अथवा लन्दन के ऊँचे से ऊँचे व्यक्ति से भी कहीं ऊँचा है। स्वर्गीय मौलाना शौकतअली इस रहस्य को समझते थे, तभी उन्होंने कहा था कि उनकी दृष्टि में एक मुसलमान भिस्ती तक महत्मा गांधी की अपेक्षा कहीं ऊँचा और पवित्र है। बात बिलकुल स्पष्ट है। अधिक से अधिक यही तो हो सकता है कि मुसलमानों में शिक्षा का अभाव हो, अर्थाभाव हो, उसे नौकरी में ऊँचे सरकारी ओहदे और अधिक प्रतिष्ठा नसीब न हो, लेकिन वह किसी भी काफिर से इसलिये ऊंचा है क्योंकि वह दीन में ईमान लाने वाला है। और सच तो यह है कि मुसलमान हिन्दू ही नहीं मनुष्यमात्र की अपेक्षा कहीं ऊँचा है, यह बात न तो राउन्टेबुल कान्फ्रेंस द्वारा सिद्ध की जा सकती है और न व्यवस्थापिका सभाओं द्वारा, इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण तो पानीपत के मैदान में बहुत पहिले दिया जा चुका है और जो शेष है वह भी बहुत जल्द ही दिया जायगा।

(७) जो मुसलमान नहीं हैं प्रत्येक दृष्टिकोण से उनकी कुर्बानी आवश्यक है और जायज भी। जिस प्रकार अपने स्वास्थ्य और शरीर-रक्षा के लिए शाक सब्जियां तथा भेड़ बकरों अथवा मुर्ग-मुर्गियों को काटना और खाना हमारे लिये आवश्यक है ठीक उसी प्रकार मुस्लिम-हितों की रक्षार्थ काफिरों की कुर्बानी भी आवश्यक है।

(८) यह सच है कि बिना जरूरत मुर्गे को हलाल करना गुनाह है। इसी प्रकार बिना आवश्यकता प्रतीत हुए हमें उन लोगों को भी जीने देना चाहिए जो मुसलमान नहीं हैं, पर मुसलमानों के स्वार्थों में जहां कहीं जरा भी धक्का लगने की सम्भावना हो तो हमें रास्ते का यह कांटा तुरन्त ही साफ करदेना चाहिए और ऐसा करने पर भी हम काफिरों के साथ उपकार ही तो करेंगे। क्या गाजर मूली खाना पाप है? यह तो खाद्य पदार्थों के साथ उपकार करना है, क्योंकि खाद्य योनि से मुक्त कर उन्हें हम अपना आत्मविकास करने का अवसर देते हैं।

(९) हमारी जो हुकूमत कायम हो उसमें हमें इस बात का बहुत सावधानी से ध्यान रखना होगा, कि कोई भी काफिर मुसलमान से ऊंचा पद न प्राप्त कर सके, नहीं, नहीं, किसी मुसलमान की बराबरी तक का दावा उसे नसीब न होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुकूमत तथा मजहब में भेद ही न होना चाहिये। इन दोनों का पारस्परिक सहयोग भी नितान्त आवश्यक है। 'दीन-बारे-हक' (इस्लाम धर्म) के अनुसार मुस्लिम राज्य में बसनेवाले प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा, कि वह अपने को मुसलमान से हेठा समझे। गैर मुसलमानों को पाकिस्तान में केवल वही काम दिये जायेंगे; जो मुसलमानों की शान के खिलाफ हों अथवा जिन्हें वे न करना चाहते होंगे। पाकिस्तान को हुकूमत का वास्तविक स्वरूप प्रजा-तन्त्र (अजमए-उम्मत) और स्वेच्छाचारी (इतायते अमीर) का सम्मिश्रण होगा। साफ शब्दों में यह समझना चाहिये, कि जहां तक मुसलमानों का सम्बन्ध है, वहां तक प्रजातन्त्र शासन-पद्धति काम में लाई जायेगी और जहां काफिरों का सम्बन्ध होगा वहां स्वेच्छाचारी शासन-पद्धति (डिक्टेटरशिप) बरती जायगी। पाकिस्तान के प्रीमियर को 'अमीर-उल-मोमिनीन' के नाम से सम्बोधित किया जायगा, जो मुसलमानों के धार्मिक तथा आत्मिक विकास के लिये जिम्मेदार होगा और काफिरों से पृथ्वी का बोझ हलका करना उसका प्रधान कर्तव्य होगा।

(१०) पाकिस्तान में मुसलमानों के लिये 'जेवरात' (आमदनी का चालीसवां हिस्सा) टैक्स के अतिरिक्त कोई दूसरा टैक्स नहीं लगाया जायगा, पर मूर्ति-पूजकों पर 'हर-ऐ-मोहासिल' (काफिर रहने का दण्ड) तथा 'जजिया' नामक टैक्स लगाये जायेंगे। जो काफिर पाकिस्तान की रक्षा की शपथ लेकर फौज में भर्ती होना चाहेगा, उसे इन टैक्सों से मुक्त कर दिया जायगा, पर प्रत्येक काफिर के लिये यह आवश्यक होगा, कि वह अपने घर पर पाकिस्तान का हरा झण्डा नियमित रूप से फहरावे। पाकिस्तान के हलके की सारी जमीन पाकिस्तान के खलीफा की जायदाद समझी जायगी।

ऊपर जिस विषैली स्कीम का उल्लेख किया गया है उसका अधिकांश भाग पुस्तक के रूप में प्रकाशित होने से पहिले, लाहौर के प्रतिक्रियावादी अँगरेजी दैनिक 'सिविल एण्ड मिलटरी गजट' में वर्षों पूर्व धारा प्रवाहिक लेखमाला के रूप में प्रकाशित होता रहा है, पर न तो कभी ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इस पर एतराज किया और न 'जनता की सरकार' का ध्यान ही इस ओर आज तक आकर्षित हुआ। यह स्कीम किस हद तक सफल-सिद्ध हुई इसका निर्णय देशवासी सहज ही कर सकते हैं। भविष्य में बहुत शीघ्र-आनेवाले बवण्डर से यदि हम सावधान हो सके तो हम इन पंक्तियों का उल्लेख सार्थक और अपना परिश्रम सफल समझेंगे।

(कर्मयोगी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतमें इस्लामीकरणके षड्यन्त्र

(लेखक—श्री पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, सम्पादक 'वैदिक धर्म')

[प्रस्तुत लेख के लेखक श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी महोदय भारत के एक सुप्रसिद्ध विद्वान हैं। आपने अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति की रक्षा तथा वैदिक साहित्य के प्रचार को अपने जीवन का उद्देश्य रक्खा है। इस लेख में हिन्दू जनता की अनवधानता से मुसलमानों द्वारा भारत के इस्लामीकरण के षड्यन्त्र पर अत्यन्त खोजपूर्ण प्रकाश डाला गया है। अतः हिंदू जनता के हित के लिये इस विस्तृत लेख को हम क्रमशः 'श्री स्वाध्याय' में दे रहे हैं। आशा है पाठक इसे पढ़कर स्वयं तथा अपने पार्श्ववर्ती भाइयों को मुस्लिम गुण्डों के इन षड्यन्त्रों से सावधान कर हिन्दू-संस्कृति तथा हिन्दू जातिकी अधिकाधिक सेवा कर सकेंगे।]

—सम्पादक

सिंधपर आक्रमण तथा अहिंसावादियोंका देशद्रोह

खृष्ट शक की सातवीं शताब्दि में अरब के ऊषर मैदान में इस्लाम धर्म का जन्म हुआ, तब से लेकर केवल सौ वर्षों में उसने सिन्ध प्रान्त तक का भूभाग पादाक्रांत कर लिया। ईरान तथा अफगानिस्तान, इन दो देशों को निगल जाने के पश्चात् उसने सिन्ध को अपना भक्ष्य बनाया। सिन्धका अरबीकरण करने का प्रारम्भ उमर के अमल में हुआ। सन ६६४ में मुहालिब नामक एक यवन सरदार मुलतान तक आकर लौट गया था। उसके पश्चात सन ७१२ में मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर प्रत्यक्ष आक्रमण कर दिया। तब अहिंसावादियों ने ठीक समय पर देश-द्रोह कर हिन्दू-राष्ट्र-पुरुष की पीठ में विषलिप्त छुरा भोंका; जिससे वह जर्जर हो गया। इस घातक जहरीले वार से हिन्दुओं की शक्ति क्षीण हो गई तथा समरांगण में उनका पराभव हो गया। भारत की पश्चिमीय सीमा पर अकेला लड़नेवाला शूर राजा दाहिर मारा गया तथा राष्ट्र द्रोही अहिंसावादियों की सहायता से भारत के एक अवयव पर अरबी शासन का प्रयत्न यशस्वी हुआ। मुहम्मद बिन कासिम ने दाहिर की दो सुलक्षणी कन्याओं को गुलाम के नाते सुलतान को अर्पित किया और इस प्रकार हिन्दू-युवतियों के अपहरण की नींव डाल दी।

हिन्दुओं का पुनरुत्थान

यह विध्वंसक्षम आक्रामक टोली सिन्ध प्रान्त पर साधारणतः ३० से लेकर ३५ वर्षों तक अपना अधिकार चला सकी। इस अवधि में क्रान्तिप्रवण हिन्दू जनता संगठित हो गई और उसने इस शासन-सत्ता की जड़ काट डाली; किन्तु इन ३०-३५ वर्षों के दीर्घ कालमें हिन्दू-राष्ट्र पर जो भयानक आघात किये गये, उनकी पूर्ति न हो सकी। इस काल में इस्लामीकरणका विष हिंदूराष्ट्रके शरीरमें बलपूर्वक ठूँसा गया और हिंदू-जनताको बलात्कारपूर्वक, इस्लामधर्मके पिंजड़े में बन्द किया गया। सिन्धमें होनेवाला यह धर्म-परिवर्तन, भारतके इस्लामीकरणका प्रारम्भ है। इस बलात्कारपूर्वक धर्मपरिवर्तनको आगे चलकर इस्लामी खड्ग के सतत साहाय्य मिलनेसे भारतमें सर्वत्र मुसलमानों की संख्या बढ़ती गई। आज जो मुसलमानसमाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय स्वातंत्र्यके मार्गमें रोड़ा बन बैठा है, उसका जन्म सिन्धमें ही हो गया था। इसी सिन्ध प्रान्तमें पाकिस्तानका नेता भी जन्म पा चुका है तथा इसी सिंधमें हिंदुओंके विरोधको दुत्कार कर मुस्लिम लीगी मंत्रिमण्डलने इस्लामियों के बहुमतके जोरपर पाकिस्तानका प्रस्ताव मान्य करवा लिया है। यह बात भावी अरिष्टकी सूचक ही है। हिंदूजनताके साथ विश्वासघात कर अहिंसाका शुभ्र ध्वज फहरवाते हुए मुहम्मद बिन कासिमके लिये ठट्ठानगरके द्वार उन्मुक्त करनेवाले अहिंसावादी ही थे, यह बात राष्ट्रघातकी सूचक है।

ऐतिहासिक कालमें इस्लामियोंकी संख्या बढ़नेका कारण हिंदुओंके सहकार्यके बलपर पुष्ट प्रतिगामी इस्लामी राज्य-पद्धति ही है। इस राजसत्ताके बलपर मुसलमान सुलतानोंने बलपूर्वक हिंदुओंके इस्लामीकरण के कार्यमें भी नूतन धर्मपरिवर्तित पूर्व-हिंदुओंका ही अधिक साहाय्य हुआ। जो अग्निकाण्ड, विध्वंस तथा हत्याकाण्ड इस्लामी पद्धति के नाम से प्रसिद्ध हैं, उनको इन नवजात मुसलमानों ने ही चित्रलसे लेकर कन्याकुमारी तक सर्वत्र फैला दिया। इन्हीं नूतन-जात मुसलमानोंके साहाय्यसे पराई मुसलमानइस्लामी आक्रमण का आतंक भारतके कोने कोने तक फैला सके। आज भी उन्हीं मुसलमानोंके वंशज परदेशी मुसलमानों की सहायता से भारत पर पुनरपि सुलतानी राज्य-शासन निर्माण करनेकी करतूतें बड़ी तन्मयतासे करते हुए दिखाई दे रहे हैं। भारतके अनाजपानीसे पुष्ट होकर भी खुदको "दुरानी" कहलानेवाले एक इस्लामी लेखकने उन धर्मपरिवर्तित नव-मुसलमानोंकी आन्तरिक इच्छा अपनी पुस्तक में बड़े जोरदार शब्दोंमें व्यक्त की है। हिन्दूजनता एफ० के० दुर्रानीके ये वाक्य बड़े गौर से पढ़े,—

मुसलमानोंका ध्येय—

"लेकिन मुसलमान इस वास्तविकताको भी न भुलायें, कि भारत एक भौगोलिक एकतामें बँधा हुआ है। यहां की एक-एक इञ्च भूमि हमारे पूर्वजोंने अपना रक्त बहाकर क्रमशः प्राप्त की थी। हम अपने पूर्वजोंके प्रति विश्वासघाती नहीं हो सकते। भारत हमारी पैतृक सम्पत्ति है और उसपर इसलामका पुनरधिकार होना ही चाहिये। हमारा अन्तिम आदर्श एक होकर धार्मिक और राजनीतिक दृष्टिसे भी भारतको इसलामके झण्डेके नीचे लाना होगा। भारतकी राजनीतिक मुक्ति अन्य प्रकारसे सम्भव नहीं।"

'मीनिंग आफ पाकिस्तान'

धर्मान्तरके मार्ग—

ऐतिहासिक कालमें हिन्दुओंको धर्मपरिवर्तित कर इस्लामके अनुयायियोंकी संख्या बढ़ानेके लिये जिन उपायोंका अवलम्बन किया गया, उन्ही उपायोंका तथा मार्गोंका अवलम्ब आज भी किया जा रहा है। यह स्पष्टतया दिखाई देता है कि राजसत्ताके आश्रयसे इस्लाम-प्रसारका कार्य यथापूर्व चल रहा है। भारत की अनेक मुस्लिम रियासतें तथा मुस्लिम जमींदार इस इस्लामीकरणके कार्यमें प्रत्यक्ष रूपसे अपना भार उठा रहे हैं। सर्वसाधारण मुसलमान भी कट्टर उपदेशकके समान इस्लाम-प्रचारका कार्य उत्साह तथा लगनसे करता है। जो मुसलमान नेता इस उद्देश्यसे यत्न कर रहे हैं, कि ये सारे प्रयत्न सुसूत्रबद्ध हों, उनमें आत्मीयता तथा संगठन निर्माण हो तथा हिन्दुओंको बलात्कारसे धर्मपरिवर्तित कर उन्हें मुसलमान बनाने का कार्य बड़े परिमाण पर हो, उन सबका प्रमुख नेता है ख्वाजा हसन निजामी। इस व्यक्तिने 'दाइए इस्लाम' नामक एक छोटीसी पुस्तक लिखकर उसमें यह बताया है कि इस्लाम प्रचारके कार्यमें कौन कठिनाइयां होंगी। उन्हें दूर कर इस्लाम का प्रचार तथा प्रसार कौन, कहां तथा कैसे करे इसके लिये किन मार्गोंका कहां अवलम्बन किया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस महत्वपूर्ण पुस्तकमें लिखी हुई योजना तथा पद्धतिके अनुसार भारतके कोने-कोनेमें इस्लामीकरण का कार्य बड़े जोरोंसे शुरू हुआ है। वे गुट्ट-जिनके द्वारा भारतवर्षमें चलनेवाला इस्लामीकरणका कार्य चलाया जाता है तथा जिनका उल्लेख ख्वाजा-हसन निजमीने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में कर उनका मार्ग-दर्शन किया है,-इस प्रकार हैं-(१) फकीर अव-लियाके नामसे पहचाने जानेवाले। (२) उल्मा, मुसलमानी मोलवी, मुल्ला, काजी इत्यादि। इसी गुट्टमें मुसलमान शिक्षकोंकाभी अन्तर्भाव होता है। (३) सब श्रेणियोंके मुसलमान नौकर। (४) मुसलमान राजा जमींदार, मालगुजार इत्यादि। (५) इस्लामी नेता, सम्पादक तथा शायर (६) हकीम, डाक्टर इत्यादि। (७) गायिका, वेश्यायें तथा गाने बजाने का उद्योग करनेवाले लोग। (८) तांगा तथा इक्का चलानेवाले, वृत्तपत्रोंके वार्ताहर तथा फेरीवाले व्यापारी इत्यादि।

इन आठ गुट्टों के व्यतिरिक्त बलपूर्वक हिन्दू अबलाओंका अपहरण करनेवाला गुण्डोंका वर्ग, स्त्रियों तथा बच्चों को भगाकर उनका क्रय-विक्रय करनेवाला वर्ग—ये भी हिन्दुओंको निगलनेका कार्य मनःपूर्वक किया करते हैं। हिन्दू-समाजकी अभूतपूर्व तथा अश्रुतपूर्व शिथिलिता, अहिंसाका प्राबल्य, स्वराज्यके लिये मुसलमानोंसे चापलूसी करनेकी प्रति दिन बढ़नेवाली प्रवृत्ति, चालाक इस्लामी नेताओंके सामने सदैव नग्न होनेवाला ढीला अदूरदर्शी, हिंदु-संगठनकी ओर केवल दुर्लक्ष ही नहीं, बल्कि उसका विरोध करनेवाला नेतावर्ग, हिन्दुओंका बलात्कार-पूर्वक धर्मपरिवर्तन, हिन्दूअबलाओंका अपहरण तथा मुसलमानोंका हिन्दुओंपर होनेवाला सशस्त्र आक्रमण, इनके सहायक ही हो जाते हैं।

ख्वाजा हसन निजामीने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक में उपरिलिखित भिन्न गुट्टोंको इस्लाम-प्रसारका कार्य करनेके लिये मार्गदर्शन किया है। उसमें हसन निजामी फकीरोंके सम्बन्धमें लिखता है—"चूंकि फकीर अपना जीवन इस्लामको दे देते हैं; अतः उन पर इस्लाम-प्रसारका बहुत ही बड़ा तथा महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व आ पड़ता है।" इन फकीरोंके प्रभावपर हिन्दूलोगोंकी जो श्रद्धा है, उसके विषयमें हसन निजामीके दर्पोद्गार देखिये—"मुसलमानोंमें लक्षा-वधि आत्मिक शक्तिशाली फकीर हैं। उनके प्रति प्रत्येक हिन्दूकुटुम्ब में आदर है। इतना ही नहीं बल्कि हिन्दू उनके दैवी सामर्थ्यके सामने सदैव नम्र हुआ करते हैं। पाश्चात्य-शिक्षालंकृत हिन्दू भी उनके प्रभाव से प्रभावित-होकर फकीर और पीरोंके एकनिष्ठ भक्त बने हुए हैं।" निजामी आगे चलकर लिखता है,—"यदि किसीके सन्तान नहीं होती और उसके सब प्रयत्न असफल हो जाते हैं, तो फिर वह किसी फकीरकी ओर जाता है और उस फकीरके आशी-र्वादोंसे वह सन्तान प्राप्त कर लेता है!"

हिन्दू-समाजकी ओर प्रखर दृष्टिसे देखनेपर उपरिलिखित उद्गारोंकी सत्यता प्रमाणित होती है। ये मुसलमान फकीर भीख मांगनेके उद्देश्यसे चारों ओर घूम सकते हैं। इस घूमने-फिरनेमें वे हिन्दू-समाजका सूक्ष्मतम परीक्षण तथा निरीक्षण कर सकते हैं। भीख मांगनेके बहाने हिन्दू-समाजमें निर्भयतासे घूमनेवाले फकीर लोग भीख मांगते-मांगते सामाजिक जासूसी करते हैं, परन्तु यह बात हिन्दुओंके ध्यानमें नहीं आती। इस सामाजिक जासूसीके साथ वे हिन्दूसमाजके मर्म-स्थानभी देखे बिना नहीं रहते और इस प्रकार हिंदुओंके विषयमें सांगोपांग जानकारी मिलनेके बाद अवसर पाते ही चटसे इस्लामका प्रचार शुरू कर देते हैं। बच्चोंके लिये मनौती करनेवाली स्त्रियोंकी तालिका भी उनके पास हुआ करती है। सास बहुओंके झगड़े, पितृहीन अनाथ बच्चे, विशेषतः तारुण्य में प्रवेश करनेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112786

लड़कियां, पीड़ित सधवायें तथा विधवायें, सौतेली मांकी पीड़ासे दुखी युवतियां; परित्यक्त सधवायें तथा संकटग्रस्त विधवायें, बूढ़े पतिकी तारुण्यसम्पन्न पत्नियां तथा लहरी पतियों की अप्रिय स्त्रियां, इन सबोंके नामोंकी सूची भी उन फकीरों के पास हुआ करती है तथा इन महत्वपूर्ण बातोंका उपयोग इस्लाम के प्रसारके लिये बड़ी चालाकीसे करने में वे फकीर कुशल हुआ करते हैं।

फकीरों के चमत्कार—

नगरों तथा गांवों की हिन्दू बस्तीमें भीख मांगनेके बहाने ये फकीर सामान्यतः दोपहरमें ही घूमा करते हैं। इस समय पुरुष घरमें नहीं होते, बूढ़े आराम किया करते हैं, चारों ओर शान्ति रहती है। तब ये धूर्त फकीर कई चमत्कारोंके द्वारा-हिन्दू स्त्रियोंके अन्तःकरण अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। जैसे बालों में से दूध निकालना, नींबू काटकर उसमेंसे लहू टपकाना, खाली हाथोंमेंसे अबीर आदि पदार्थोंका ढेर निर्माण करना, धागेमें अंगूठी बांधकर उस धागेको जला देना और अंगूठीको वैसेही निराधार लटकाये हुए रखना इत्यादि। तब वह प्रभावित स्त्रियां अपने दुःखोंका निवारण करनेके लिये फकीरोंसे ताबीज; यंत्रतंत्र इत्यादिकी याचना करती हैं। फकीर तो इसी बातका चाहता है। पहली बार वह एक कौड़ी भी न लेते हुए एकाध ताबीज या गण्डा मंत्रित करके ला देता है और पीरकी पूजाके लिये केवल फूल ले जाता है। इस समय यदि भिक्षा मिल जाये तो उसे लेनेसे यह इंकार नहीं करता। इतनी भूमिका बांधनेपर वह एक-एक कदम आगे बढ़ता है। भोली हिन्दू स्त्री पीरकी मनौती करती है तथा समय पाकर उस फकीरके साथ पीरका दर्शनभी कर आती है। इसी प्रकार भोली हिन्दू स्त्रियां मुसलमानोंके पंजेमें फँस जाती हैं। मैंने ऐसे कई सुशिक्षित तथा अशिक्षित हिन्दू देखे हैं, जो प्रतिज्ञा कर यह कहते हैं कि फकीरोंके चमत्कारोंसे तथा जन्तरमन्तरसे तन्दुरुस्त होकर उन्हें आर्थिक लाभ हुआ!

इनलोगोंके साथ जाकर मैंने इन चमत्कारोंको देखा है और फकीरोंके साथ सम्भाषण भी किया है। कुछ फकीरोंके शरीरोंमें सातों देवियां तथा पीर, इत्यादिका संचार होनेका नाटक भी मैंने देखा है। ये देवीदेवता तथा पीर-पैगम्बर बारूदकी एक धड़ाकेबाज आवाज़के साथ डरकर गुप्त हुए मैंने देखे हैं। यह सुननेपर कि एक फकीरके शरीरमें हनूमान्का संचार होता है, मैं उसे देखने गया था। उस मुसलमान फकीरके शरीरमें संचरित टूटी-फूटी उर्दू में बोलनेवाला हनूमान् और कुरसीके नीचे रखे एक पटाके की धड़ाकेबाज आवाज़के साथ उस हनूमान्का तिरोधान हो जाना—ये प्रसंग मैंने अपनी आंखों देखे हैं। इस संचारकी विद्याके कारण भोलेभाले अशिक्षित लोग तो ठगे जाते ही हैं, परन्तु आश्चर्य तब होता है, जब पढ़े लिखे आंग्लभाषाविभूषित लोगभी इन तथा-कथित संचार होनेवाले फकीरोंके चंगुलमें फसते हैं। मैंने यह अनुभव किया है, कि उन फकीरोंपर इन मूर्ख अरण्यपण्डितोंकी अनन्य श्रद्धा हुआ करती है। मेरे एक मित्रके घर देवताओं के सिंहासन पर एक मुसलमान फकीर अवलियाका चित्र रखा था और नित्य उसका पूजन होता था, यह मुझे मालूम था। उस अवलियाके आत्मिक सामर्थ्यकी अनेक कथायें भी मैं अपने उस मित्रके मुखसे कई बार सुन चुका था।

एक दिन मैंने अपने मित्रोंको उस मुसलमान अवलियाका सप्रमाण सत्य वृत्तान्त बताया और उस मुसलमानकी पूजा करने पर उनकी खिल्ली भी उड़ाई। इससे वे मेरे मित्र मुझपर अति रुष्ट हो गये और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीविश्वविजय-पंचांग

हमें यह सूचित करते हुए खेद हो रहा है कि हमारे 'श्रीविश्व-विजय-पंचांग' के प्रकाशक श्री मेहरचन्द्र लक्ष्मण दास (सैद मिट्ठा बाजार लाहौर) का लाहौर का पाकिस्तान में चले जाने से पुस्तकालय, प्रेस आदि पर्वस्व लुट जाने के कारण सं० २००५ के पंचांग का प्रकाशन अभी तक नहीं हो पाया है। गत दो तीन वर्षों में ही इस राष्ट्रिय विचारों से ओत-प्रोत पंचाङ्ग ने जिस सज-धज के साथ निकल कर जनता की सेवा की है, उससे इसकी लोकप्रियता प्रचार के अभाव में भी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इसके फलस्वरूप गत दो तीन मासों में कार्यालय में इसकी माँग के सैकड़ों पत्र आये और आ रहे हैं, जिनमें अधिकांश का हम कार्याधिक्य के कारण अभी तक उत्तर नहीं दे पाये हैं। किसी प्रकाशक के अभाव में इस कार्यालय के पास इतना तो साधन है नहीं कि यह इसे शीघ्र प्रकाशित कर सके; परन्तु हमारे कृपालु सहायकों तथा पाठकों में से कोई सज्जन यदि इसे प्रकाशित करना चाहें तो वे नीचे लिखे पते पर हमें सूचित करें। कार्यालय उनका इस कृपा का आभारी होगा।

निवेदकः—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

अध्यक्ष—श्रीविश्वविजय पंचांग कार्यालय, सोलन (शिमला)

स्थायी लाभ के लिये— श्रीस्वाध्याय में

विज्ञापन दीजिये

श्रीस्वाध्याय प्रत्येक शिक्षित परिवार के पास पहुंचता है। 'श्रीस्वाध्याय' व्यापार का पथप्रदर्शक है। व्यापारी इसे पूंजी की तरह सुरक्षित रखते हैं। इसलिये प्रत्येक उच्च घराने में इसका आदर है।

आप अपने व्यापार का सम्बन्ध

यदि उच्च घरानों से करना चाहते हैं। यदि आप अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते हैं; तो 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी 'हेमन्ताङ्क' में विज्ञापन दीजिये।

प्रामाणिक विश्वस्त व्यवसाइयों के कुछ चुने हुये विज्ञापन ही 'श्रीस्वाध्याय' में लिये जायेंगे इसलिये विज्ञापनदाता अभी से अपना विज्ञापन भेज कर आगामी अंक के लिये स्थान रिजर्व करा लें। अश्लील विज्ञापन प्रकाशित न होंगे। शुल्क (रेट्स) आदि के लिए निम्न पते पर शीघ्र लिखें।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

The Manager "Shri Swadhyaya,

SOLAN (*Simla Hills*)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामहिम श्री मत्स्मृतबाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्र के लिये परम कल्याणकारी व सन्मार्ग-प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत् में हलचल सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गई। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अत: यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं? और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली-भांति परिचित होकर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। ... २) रु० मात्र।

'श्रीस्वाध्याय' के संस्थापक उक्त आचार्य चरणों द्वारा निर्मित 'श्रीपञ्चुरामस्तोत्र' और 'श्रीसप्तपदी-हृदय' राष्ट्रभाषानुवाद सहित तथा आप ही के द्वारा सम्पादित 'श्रीपंचस्तवी' ये तीनों अद्भुत पुस्तकें 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकोंको मार्ग-व्ययके लिये ... आनेके टिकट प्राप्त होने पर भेजी जाती हैं। पुराने ग्राहकों को उक्त पुस्तकें अब नहीं मिलेंगी।

'श्रीस्वाध्याय' के गतांक

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदंक १॥) रु० २—हेमन्तांक २॥) रु०
३—बसन्तांक १॥) रु० ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०
चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०।

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदंक ४) रु० २—हेमान्तांक २) रु०
३—बसन्तांक १॥) रु० ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०
चारों अंकों की पूरी फाइलका मूल्य ८) रु०

तृतीय वर्ष की फाइल—

१—नववर्षांङ्क ५॥) रु० २—हेमन्तांक २) रु०
३—बसन्तांक १।।।) रु० ४—ग्रीष्मांक १।।।) रु०
चारों अंकोंकी पूरी फाइल का मूल्य १०) रु०।

चतुर्थ वर्ष की फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य २—हेमन्तांक ३) रु०
३—बसन्तांक ३) रु० ४—ग्रीष्मांक २ रु०

पंचम वर्ष की फाइल—

१—नववर्षांक ५) रु० २—हेमन्तांक १) रु०
३—साहित्यांक २) रु० ४—ग्रीष्मांक अप्राप्य
तीनों अंकों का इकट्ठा मूल्य ७) रु०

छठे वर्ष की फाइल—

१—नववर्षांक ३) रु० २—हेमन्तांक ४) रु०
३—बसन्तांक १) रु० ४—ग्रीष्मांक १) रु०
चारों अंकों की पूरी फाइल का मूल्य ७) रु०

श्रीराष्ट्रालोक ?

पाकिस्तान के निर्माण ने जहां हिन्दू-हितों को कल्पनातीत हानि पहुंचाई है, वहां श्रीस्वाध्याय कार्यालय भी अछूता नहीं रहा। गत ज्येष्ठ मास में स्यालकोट निवासी श्रीमान् ला० कस्तूरीलालजी आनन्द के द्वारा राष्ट्रभाषानुवाद सहित 'श्री राष्ट्रालोक' की २००० प्रतियां प्रकाशित हुई थीं। परन्तु खेद है कि उसकी १७५० प्रतियां स्यालकोट में पाकिस्तान की भेंट हो जाने के फल स्वरूप अब दुबारा छपने तक हम पाठकों की मांग पूरी करने में असमर्थ हैं। अत: ग्राहकों से निवेदन है कि वे 'श्रीराष्ट्रालोक' के दूसरे प्रकाशन तक प्रतीक्षा करने की कृपा करें। शीघ्र ही नये प्रकाशन का प्रबन्ध किया जा रहा है।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा धारा प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar